

श्री भगवत्-पुष्पदन्त-भूतबलि-प्रणीतः

षट्खंडागमः

श्रीवीरसेनाचार्य-विरचित-धवला-टीका-समन्वितः ।

तस्य

प्रथम-खंडे जीवस्थाने

हिन्दीभाषानुवाद-तुलनात्मकटिप्पण-गणितोदाहरण-प्रस्तावनानेरुपरिशिष्टे सम्पादित

द्रव्यप्रमाणानुगमः ३



सम्पादक

अमरावतीस्थ-किंग-एटर्नर्ड-कालेज-संस्कृताध्यापक, एम् ए, एल् एल् बी, इत्युपाधिप्रायी

हीरालालो जैनः

सहसम्पादकी

पं. फूलचन्द्रः सिद्धान्तशास्त्री * पं. हीरालाल सिद्धान्तशास्त्री, न्यायतीर्थः

संशोधने सहायको

व्या वा, सा सु, प. देवकीनन्दनः

सिद्धान्तशास्त्री

*

डा. नेमिनाथ-तनय आदिनाथ.

उपाध्याय, एम् ए, टी डि

प्रकाशक

श्रीमन्त सेठ शितावराय लक्ष्मीचन्द्र

जैन-साहित्योद्धारक-फाउन्ड-कार्यालय

अमरावती (वरार)

वि स १९९८]

वीर-निर्माण-समत् २४६७

[ई स १९४१

मूल्य रूप्यक-दशकम्

प्रकाशक

श्रीमन्त सेठ शिवावराय लक्ष्मीचन्द्र,
जैन-साहित्योद्धारक-फंड-कार्यालय,
अमरावती [वरार]



मुद्रक-

टी. एम्. पाटील,
मॅनेजर
सरस्वती प्रिंटिंग प्रेस, अमरावती [वरार]

THE
ṢAṬKHAṆḌĀGAMA
OF

PUSPADANTA AND BHŪTABALI

WITH
THE COMMENTARY DHAVALĀ OF VIRASENA

VOL III

DRAVYA-PRAMĀṆĀNUGAMA

Edited

with introduction, translation, notes and indexes

BY

HIRALAL JAIN, MA, LL B

C P Educational Service, King Edward College, Amraoti

ASSISTED BY

Pandit Phoolchandra
Siddhanta Shāstri

*

Pandit Hiralal Siddhanta Shāstri,
Nyayatirtha

Pandit Devakinandana,
Siddhanta Shāstri

With the co operation of

*

Dr A. N. Upadhye,
M A, D Litt

Published by

Shrimanta Seth Shitabrai Laxmichandra,

Jains Sahitya Uddharaka Fund Karyālaya

AMRAOTI (Berar)

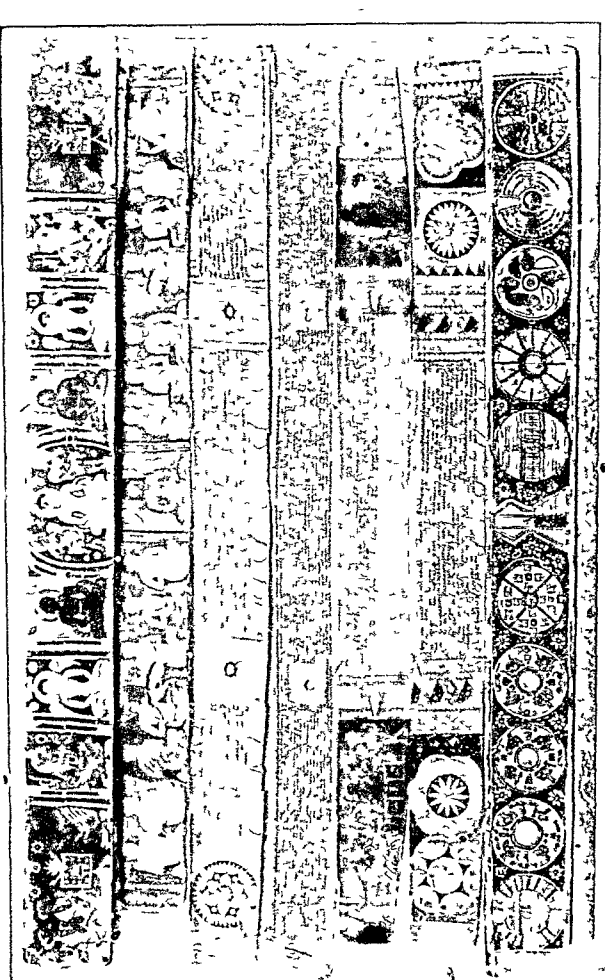
1941

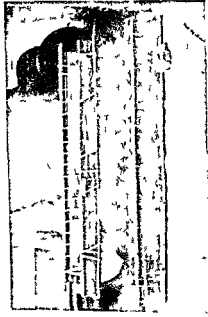
Price rupees ten only

Published by—
Shrimant Seth Shitabrat Laxmichandra,
Jama Sahitya Uddharaka and Karyalaya,
AMRAOTI (Berar)



Printed by—
T M Patil, Manager,
Saraswati Printing Press
AMRAOTI (Berar)

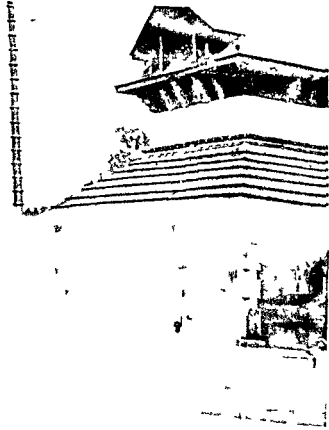
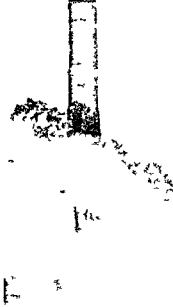




२ मूडयिर्लीमें सिद्दा त प्रयोंकी मतिया यधी इई



३ मूडयिर्लीसा सिद्दान्त मोदिर (गुणरमदि)



श्री

अतिगय क्षेत्र मूडनिद्रीकी जिस सम्मान्य
भट्टारक परम्पराने इन अनुपम सिद्धान्त ग्रंथोंकी
चिरकालसे यही सायबानी और सतर्कतापूर्ण
रक्षा की, तथा अत्र सुअनसर प्राप्त होने पर
विद्वत्संसारको उनका लाभ दिया, उमीके भूतपूर्व
और वर्तमान गुरुओंके सत्प्रयत्नोंकी स्मृतिमें यह
ग्रन्थ विशेष रूपसे समर्पित है ।

प्राक् कथन

हमें यह प्रकट करते हुए अत्यंत हर्ष होता है कि गत द्वितीय भागके प्राक् कथनमें हमने मूडविदी सिद्धांतमग्नके अधिकारियोंके सहयोगसूत्री जो सूचना प्रकट की थी, वह क्रियात्मक रूपमें परिणत हुई। इसके प्रमाण पाठक इसी भागके साथ प्रकाशित साहित्यसामग्रियों देखेंगे। हमने महाशयके अंतर्गत प्रयत्नरचनाके स्वरूपमें एक स्वता लेखकेद्वारा जो चिन्ता और जिज्ञासा प्रकट की थी, उसने उक्त सिद्धांतमग्नका क्रियात्मक शक्तिका जागृत कर दिया। शीघ्र ही हमें एक महारक स्वामी चारुकीर्तिजी द्वारा महाशयके स्वरूपमें अनेक सूचनाएँ और उसका परिचय भी प्राप्त हुआ और उसी सिटिसिलेम सिद्धांतप्रयोगके ताडपत्रों, मन्दिरों व अधिकारियों व कार्यकर्ताओंके चित्र भी उन्होंने भिजवानेकी कृपा की, व ताडपत्रीय प्रतियासे पाठ-मिगनकी सुविधा भी करा दी। इस पुण्य कार्यमें हमारे सदा सहायक प. लौकनाथजी श्यात्री ने उक्त महाशयल-परिचय और मूडविदीका कुछ इतिहास भी लिख भेजनेकी कृपा की, तथा वे अपने दो सहयोगी प. नागशान्ती श्यात्री और प. देवकुमारजी श्यात्री के साथ मिगन कार्योंमें दत्तचित्त भी हो गये। इस सम्मन सहयोगक फलस्वरूप इस भागके साथ हम मूडविदी, बहाली सिद्धांतप्रतियों, मन्दिरों और अधिकारियोंके चित्र व परिचय और इतिहास पाठकोंके समुख प्रस्तुत कर रहे हैं। यही नहीं, अब तक प्रकाशित तीनों भागोंके पाठका ताडपत्रीय प्रतियोंसे मिगन व तत्सम्बन्धी निष्कर्ष अत्यन्त परिधनपूर्ण सुस्पष्टिग करक पाठकोंके विचारार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं। एक ध्यान देने योग्य तर्पका ताल यह है कि मूडविदीमें धरतमिद्धांतकी एक संपूर्ण ताडपत्रीय प्रतिके अनिश्चित दो और ताडपत्रीय प्रतियाँ हैं। यद्यपि ये बहुत अरिग प्रुटित हैं— इनके बीचके सैकड़ों पत्र अप्राप्य हो गये हैं— तथापि जिनमें हैं उतने पाठमशोधनकी दृष्टिमें महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि, इनमें परस्पर पाठभेद भी पाये जाते हैं जहाँसे हमारे मिगनमें दिये हुए 'ब' राडके पाठभेदोंकी उत्पत्ति समझ है। विशेषतः मिगन 'ब' राडमें दिये हुए भाग एकके पृष्ठ २२८ से अन्तमग्नके पाठभेद तो यहीं से उत्पन्न हुए प्रकट होते हैं। यथाशक्ति इन प्रुटित प्रतियोंके मिगन लेनेका भी हमने प्रयत्न किया है, किन्तु वर्तमान परिस्थितिसे इनका उनना और उसप्रकार उपयोग नहीं हो पाया चितना सूक्ष्मताकी दृष्टिसे अभीष्ट है। यथासम्भ इन् प्रतियोंका विशेष परिचय देने और उपयोग केनेका भी प्रयत्न किया जाना। इस महान् सांस्कृतिक निमित्तों समुदायके बनानेमें सहायताके लिये मूडविदीके उक्त महाशयकारोंके हम जिनका उपकार माने, पांडा है।

१ राड लेख जैन गुरु, जैन विद्वान् जैन सदेव, जैन बोधक आदि पत्रोंमें नवम्बर १९४० में प्रकट हुआ था। उक्त लेखक अत्यन्त वृषणाशील एकके समाचार टकर दिसम्बर १९४० के जैन सिद्धान्त मासिकमें प्रकाशित हो उठा है।

प्रस्तुत भागके पाठ-संशोधन व अनुवादमें सम्पादकोंको विशेष कठिनाईका साम्हना करना पडा है। एक तो यहाँका विषय ही उदा सूक्ष्म है, और दूसरे उसपर धनलाकारने अपने समयके गणित शास्त्रकी गहरी पुठ जमाई है। इसने हमें बटा हैरान किया, तथापि किसी अज्ञात शक्तिकी प्रेरणा, जनताकी सद्भावना और विद्वानोंके सहयोगसे वह कठिनाई भी अन्तत हल हो ही गई, और अब हम यह भाग भी पूर्ण भागोंके समान कुछ आत्मनिश्चासके साथ पाठकोंके हाथमें सौंपते हैं। मूल भागमें सामान्य विषय-प्ररूपणके अतिरिक्त कोई २८० शब्दाए उठाकर उनका समाधान किया गया है। इसके गहन, अपरिचित और दुरूह भागको अनुवादमें वीजगणित और अकगणितके कोई २८० उदाहरणों तथा ५० विशेषार्थों व ३३३ पादटिप्पणोंद्वारा सुगम और सुबोध बनानेका प्रयत्न किया गया है। इसका गणित बैठानेमें हमें हमारे कालेजके सहयोगी, गणितके अध्यापक प्रोफेसर काशीदत्तजी पाडे, एम ए, से विशेष सहायता मिली है। उन्होने कई दिनोंतक लगातार घंटों हमारे साथ बैठ बैठकर करण-गाथाओंको समझने समझाने व अन्य गणित व्यवस्थित करनेमें बड़ी रुचि और लगनसे खूब परिश्रम किया है। गाथा न २८ (पृ ४७) का गणित नागपुरके वयो-वृद्ध गणिताचार्य, हिस्ल्य कालेजके भूतपूर्व गणिताध्यापक प्रोफेसर जी के. गर्दने बैठा देने की कृपा की है, तथा उसीका दूसरा प्रकार, एन पृ ५०-५१ पर दिये हुए पश्चिम-त्रिकुल्यका जो गणित सत्रथी सामजस्य प्रस्तावनाके पृ ६६ पर 'अर्थसत्रथी विशेष सूचना' शीर्षकसे दिया गया है वह लखनऊ विश्वविद्याल्यके गणिताचार्य व 'हिन्दू गणितशास्त्रका इतिहास' के लेखक डॉक्टर अघधेश नारायणसिंहजीने लगाकर भेजनेकी कृपा की है। इस अत्यन्त परिश्रम पूर्णक दिये हुए सहयोगके लिये उपर्युक्त सभी सज्जनोंके हम बहुत ही कृतज्ञ हैं। इस भागमें यदि कुछ सुन्दर और महत्त्वपूर्ण सम्पादन कार्य हुआ है तो वह इसी सहयोगका परिणाम है। हा, जो कुछ त्रुटिया और खलन रहे हों उनका उत्तरदायित्व हमारे ही ऊपर है, क्योंकि, अन्तत समस्त सामग्रीको वर्तमान रूप देनेका निम्बेदारी हमारी ही रही है।

इन सिद्धान्त प्रयोगोंकी ओर विद्वान् पाठक नितने आकर्षित हुए हैं, यह उन अभिप्रायोंसे स्पष्ट है जो या तो समालोचनादिके रूपमें विविध पत्रोंमें प्रकाशित हो चुके हैं, या जो विशेष पत्रों द्वारा हमें प्राप्त हुए हैं। उन सभी सदभिप्रायोंके लिये हम लेखकोंके विशेष आभारी हैं। इन अभि-प्रायोंमें ऐसी अनेक सैद्धान्तिक व अन्य शब्दाए भी उठाई गई हैं जो प्रयत्नसूक्ष्म अध्ययनसे पाठकोंके हृदयमें उत्पन्न हुईं। नितने ही अक्षम उन शब्दाओंके उत्तर भी हम यथाशक्ति उन उन पाठकोंको व्यक्तिगत रूपसे भेजते गये हैं। अब हम उनमेंसे कुछ महत्त्वपूर्ण शब्दाए और उनके समाधान, इस भागकी भूमिकामें पृष्ठक्रमसे व्यवस्थित करके प्रकाशित कर रहे हैं, जिससे प्रथमराजके सभी पाठ-कोंको लाभ हो ओर इस सिद्धान्तके समझने समझाने में सहायता पहुचे। गहन सिद्धान्तोंके अर्थपर प्रकाश डालनेवाले अभिमतों का हम सदैव आदर करेंगे।

सम्पादन-समधी हमारी शेष साधन-सामग्री और सहयोगप्रणाली पूर्ववत् ही इस भागके लिए भी उपलब्ध रही। हमें अमरावती जैन मन्दिरकी हस्तलिखित ग्रन्थिके अतिरिक्त आराके सिद्धान्तमयन और कारजाके महावीर ब्रह्मचर्याश्रमकी प्रतियोंका मिलानके लिये लाभ मित्रता रहा, तथा सहारनपुरकी ग्रन्थिके नोट किये हुए पाठभेद भी समुपलब्ध रहे। अतएव हम उनके अधिकारियोंके बहुत आभारी हैं। मूडिन्द्रिय प्रतियोंके मिलान प्राप्त हो जानेसे हमने इन प्रतियोंके परस्पर पाठभेद व झूटे हुए पाठ आदि देना आवश्यक नहीं समया।

हमारे सम्पादनकार्यमें निम्नरूपसे सहायक प देवकीनन्दनजी सिद्धान्तशास्त्री गत तीन चार मास बहुत हा व्याधिग्रसित रहे, जिसकी हमें अत्यन्त चिन्ता और आशुल्का रही। यद्यपि अभी भी वे बहुतही दुर्बल हैं, तथापि व्याधि दूर हो गई है और वे उत्तरोत्तर स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं जिसका हमें परम हर्ष है। हमें आशा और निश्वास है कि वे शीघ्र ही पूर्ण स्वास्थ्य लाभ करने अपनी विद्वत्ताका लाभ हमें देते रहनेमें समर्थ होंगे।

हमारे सहयोगी प. फूलचन्द्रजी सिद्धान्तशास्त्रीका नरजान पुत्र गत परमा मासमें अत्यन्त दृग्ण हो गया, जिससे परमरीके अतमें पटितजीको अकस्मात् देश जाना पडा। यथाशक्ति खूब उपचार करने पर भी दुर्दैवमें पटितजीको पुत्र-भियोगका अपार दुःख सहन करना पडा, जिसका हमें भी अत्यन्त शोक है, और शेष कुटुम्बकी सहायुभूतिसे हृदय द्रवित होता है। तबसे फिर पटितजी वापिस नहीं आ सके। चूँकि इस समय पटित कुलचन्द्रजा हमारे सम्मुख नहीं हैं, इससे हमें यह निस्संकोच प्रकट करते हुए हृष होता है कि प्रस्तुत कठिन प्रथमो वर्तमान स्वरूप देनेमें पटितजीका भारी प्रयास रहा है, जिसके लिये शेष सम्पादकत्व उनका बहुत आभारी है।

प्रथम भागके प्रकाशित होनेसे ठीक आठ माह पश्चात् ही दूसरा भाग जुलाई १९४० में प्रकाशित हुआ था। मार्च १९४१ में आठ माहके पश्चात् ही यह तीसरा भाग प्रकाशमें आ रहा है। जो कुछ सहयोग और सहायुभूति इस महत्त्वपूर्ण साहित्यके प्रकाशनमें मित्र रही है उससे आशा और निश्वास होता है कि यह पुण्य कार्य सुचारु रूपसे प्रगतिशील होता जायगा।

किंग एडवर्ड कॉलेज,

अमरावती

१-४-४१

हीरालाल जैन

प्रस्तावना

INTRODUCTION.

I Cooperation of the Moodbidri Authorities and Collation of the Palmleaf Manuscripts

It will be noticed with the greatest pleasure by every one interested in the publication of this series that the present Volume is appearing with the full cooperation of the authorities at the pontifical seat at Moodbidri where the old palmleaf MSS of this unique work are deposited and worshipped. The publication of the first two volumes and our ceaseless efforts, as well as of those who realised the value and importance of this venture brought about this miraculous and most welcome change in the outlook of those who had so far stood apart and looked upon the undertaking with doubts and misgivings. The immediate occasion for the change was provided by the publication of my article in which anxiety was expressed concerning the real contents of the palmleaf MSS which goes by the name of Mahābhārata. It aroused a sensation amongst those who had any idea of the possible contents of those MSS and stirred the hearts of all concerned. An examination of the palmleaf MSS was, therefore, immediately arranged and I was soon informed by telegrams and letters about the results of that examination. The contact thus established proved lasting and the collation of the Dhavalā MSS with the published part of the work was carried out. The collation of the rest of the work is also proceeding thanks to the sympathetic attitude of the authorities and the cooperation of a band of learned people there.

As a result of the search, two more old but incomplete palmleaf MSS of Dhavalā have been discovered. These would prove of immense value in settling the text more accurately. At present, the collation of all these palmleaf MSS in a thorough and accurate manner was not possible but it might be hoped that this will also be accomplished in the near future. The result of the Moodbidri collations, so far, has been that of the 483 variants noticed in the text of the three volumes yet published, including the present volume 149 contribute towards the improvement of the text in the matter of sense or expression or both, 62 appear to be optionally acceptable, 157 are phonetic options of the Prakrit language, while 120 are unacceptable, being scribal or other errors. These have been properly classified by us in an appendix and the general results are embodied in the Hindi Introduction (page 49). It was necessary to amend the translation very slightly only at 78 places in it. Our principles of text constitution and translation as laid down by us in the Introduction to Volume I, are thus mostly borne out by this collation. The position of the euphonic ya may have to be reconsidered, but we must wait for more material. Of the 19 expressions which were not found in the available MSS but were thought to be necessary by us and were, therefore, added and placed within brackets in the

present Volume 13 have been found almost verbatim in the palmleaf Ms. We re-examined the remaining 6 additions and found that even if we omit them from their allotted positions we have to infer the sense from the context.

2 Contents of the Mahādhavala manuscript

The examination of the Mahādhavala palmleaves corroborated our doubts as well as fulfilled our hopes. The Ms. has been found to contain on the first twenty-seven leaves a work which has been cited as *Sattakamma Panchika*. A careful examination of the extracts received by us from that work reveals the fact that it is a gloss on the first four out of the eighteen *Adhikaras* or chapters contained in the supplementary part of *Dhavalā* which is entirely the composition of *Virasena* without any strata of old *Sutras*. The author and the date of this gloss remain yet obscure.

The rest of the Mahādhavala Ms. contains the *Mahābandha*, presumably the composition of *Āchārya Bhutabali* himself. This is indicated by the nature of the contents examined in the light of what has been said about the *Mahābandha* of *Bhutabali* in the *Dhavalā* and *Jayadhavala*.

3 Subject matter of this volume

The subject matter of this volume is the enumeration of souls in each of the fourteen stages of spiritual advancement (*Gunasthānas*) and in the different varieties of life and existence called the soul quests (*Mārganāsthānas*). These have been calculated in terms of infinite (*Ananta*) innumerable (*Asamkhyata*) and numberable (*Samkhyāta*) and the standards have been first explained and defined. Living beings are infinite in number. Of these the major bulk which also is infinite in number consists of beings that are on the lowest rung of the spiritual ladder the first stage of mental evolution (*Mithyātvas*). Of the rest again the major part are the absolved beings (*Mukta* or *Siddha*) who are also infinite. The beings in the stages from the 2nd to the 5th are innumerable while those in the last nine stages (6th to 14th) are in all just three less than nine crores. The author of *Dhavalā* has illustrated these quantities arithmetically by taking the entire living creation to be 10 out of which 13 would fall under the first category while the remaining 3 would include the *Siddhas* and all the souls of the other thirteen stages. We have tried to carry this illustration further by splitting up the 3 as well so as to allot 2 to the *Siddhas* and distribute the remaining 1 among the thirteen stages according to their quantitative order. (See Intro page 37).

The soul quantities according to the subdivisions falling under the *Mārganāsthānas* have been defined and illustrated in his own way by the author. But we have tried to work the same out in figures that are consistent with the *Gunasthāna* distribution, keeping the entire *Jivātma* as 10 the *Mithyādrishṭis* as 13 the *Siddhas* 2 and the rest comprised within 1. The categories falling under the fourteen *Mārganāsthānas* are 63 of which 23 are infinite 32 innumerable, and 8 numberable. It would be interesting to note that the entire human race is said to be innumerable but those that are found in the stages from the 2nd to the 14th are three less than eight hundred and seventy-eight crores. These are spread over all

the two and half Dvīpas or mainlands over which the human population is spread
(Page 38-43)

4 Scientific Importance of the Work

The distribution of souls in the various stages of spiritual advancement and the varieties of life and existence is based upon certain Jain dogmas which are in their nature inscrutable. An attempt has been made by the authors of the Sūtras and the Commentary to put the distribution in a precise mathematical form. The authors have made full use of the mathematical knowledge of their times, which reveals a considerably high state of development during the earliest centuries of the Christian era when the Sūtras were composed as well as during the latter part of the 8th and the earlier part of the 9th century when the commentary was written. The author of the Sūtras shows a clear conception of infinity and orders of infinity within infinity in their application to matter, time and space. Within the sphere of finite numbers he mentions figures from one to hundred, thousand, tens and hundreds of thousands, and crores also their multiples, squares and square roots, as well as the fundamental operations of arithmetic, namely, addition, subtraction, multiplication and division. The commentator has amplified this knowledge considerably in the light of what was known at his time. Several practical methods of division have been explained. There is a free use of the place value notation. The use of fraction has been frequently made in order to arrive at quotients with particular divisors or to determine divisors when a particular quotient is given. This indicates the knowledge of fractions at that stage. The processes of evolution and involution are identical with those current in modern mathematics. Thus, we notice the use of powers (Vargita-samvargita) and roots (Varga-mulā) This indicates that the author of Dhavalā had a clear knowledge of the law of indices and possibly of the theory of logarithms, as may be inferred from the relations shown between the Varga-śālākās and Ardhacchedas †. The rule of three was an operation well known to the author for the purposes of showing variations. We also find the use of the summation of an arithmetic series. The author is also found to have employed the mensuration formula for a circle. The ratio of the circumference to the diameter is taken as a little less than $\sqrt{10}$, and it is just possible that approximations to this value in a fractional form to a fair degree of accuracy were known to the author.

It may be hoped that the work will considerably widen our knowledge about the state of mathematics and its application to the problems of life in ancient India. As I have already acknowledged in my foreword, my colleague Professor K. D. Panday, M. A., has interpreted for me many of the author's formulas and has also assisted in framing the illustrations, while Dr. Avadhesh Narain Singh, D. Sc., Professor

† The number of times that a particular figure is multiplied by itself is its Varga-śālākās, while the number of times that a particular figure is successively halved is its ardhacchedas.

of Mathematics in the Lucknow University and the author of the History of Hindu Mathematics has contributed the interpretations of formulae which are set forth by us on page 66 of the Hindi Introduction. Both the scholars are at present studying the work from the point of view of its mathematical importance and some of my remarks above are based upon information already supplied by them. The emendation of the text of the verse 28 as well as its explanation and illustration as given in our translation are the contributions of Professor G R Garde, M A the well known Sanskritist and Mathematician of Nagpur.

5 Other Topics

Other topics discussed in the Hindi Introduction are as follows —

1 An account of the palmleaf manuscripts as well as of the institutions and personalities of Moodbidri together with a short history of the place has been given with illustrations. It appears that the Jaina institutions of Moodbidri date from about the 11th century with a back ground that may be about four centuries older. The foundation of the pontifical seat was laid during the 12th century and the zenith of prosperity was reached during the following two or three centuries. (Page 16)

2 A little more light is shed on what have been called by the author of Dhavalā the Northern and Southern Schools of thought (Uttari Pratiṣṭhā and Dakṣiṇa pratiṣṭhā) to which we had drawn attention in the Introduction to Vol I page 33 & 37 and which are cited more than once in the text now presented (Page 92 94 98 of the text) One mention of these Schools noticed by us in the Jayadhavalā associates one school with Arya Manḍu and the other with Nāgahastī. An attempt is being made by us to get more light on this important subject (page 15)

3 Our conclusions about the authorship of Namokara Mantra expressed in the Introduction to Vol II created a considerable stir amongst people who have come to regard the sacred formula as eternal. A reconsideration of the pertinent text in the light of the readings obtained from the palmleaf Ms. of Moodbidri corroborates our previous conclusions so far as the linguistic expression of the sacred formula in its present form is concerned. But there is no contradiction in regarding the sense of the formula as even older than Pushpadanta (Page 16)

4 After the publication of the first Vol a great interest in the subject matter of the work was aroused and a number of questions were received by us from time to time for more light about the text and its interpretation. We tried to satisfy the curiosity of our inquirers then and there and now we reproduce here in a properly arranged form a set of twenty four questions with answers because we considered them important from one point of view or another. It will be seen from these that our principles of text constitution and interpretation are fully justified. (Page 18-31)

१ चित्र परिचय.

१

ऊपरसे नीचेकी ओर प्रथम सचित्र ताडपत्र श्रीधवल ग्रथका है। इसके मध्यमें एक तीर्थंकरका चित्र है, जिसके दोनों ओर अनुमानत यक्ष-यक्षिणी खडे किये गये हैं। इसके दोनों ओर दो दो तीर्थंकरोंके और चित्र हे, तथा उनके एक ओर यक्ष और दूसरी ओर यक्षिणी चित्रित हैं। फिर दोनों छोरोंपर प्रवचन करते हुए आचार्य व श्रोता श्रावकोंके चित्र हैं।

दूसरा सचित्र ताडपत्र भी श्रीधवल ग्रथराजका है। बीचमें तीर्थंकर विराजमान हैं, और आजू बाजू सात सात भक्त वन्दना करते हुए दिखाये गये हैं।

तीसरा ताडपत्र श्रीधवलका कनाडी लिपिमें हस्त-लिखित है।

चौथा ताडपत्र कनाडी लिपिमें हस्त लिखित श्रीमहाधवल ग्रथका है।

पाचवा ताडपत्र श्रीजयधवल ग्रथका है। बीचमें कनाडीका हस्तलेख तथा आजू बाजू चित्र हैं।

छठवा ताडपत्र श्रीमहाधवलका २७ वा पत्र है, जहा 'सत्तकम्मपचिका' पूरी हुई कही जाती है। इसके भी बीचमें हस्तलेख और आजू बाजू चक्राकार चित्र हैं।

सातवा ताडपत्र त्रिलोकसार ग्रथके भीतरका है।

२

नीचेसे ऊपरकी ओर प्रथम ग्रथ श्रीधवल सिद्धान्त (पट्टखडागम) है। इसके ताडपत्रोंकी लम्बाई २ फुट, चौड़ाई २॥ इच, तथा पत्र सख्या ५९२ है। प्रत्येक पृष्ठ पर प्राय १४ पक्तिय हैं, और प्रत्येक पक्तिमें लगभग १३८ अक्षर है। इसप्रकार प्रत्येक ताडपत्रपर श्लोक-सख्या लगभग १२०॥ आती है, जिससे कुल ग्रथका प्रमाण ७१४८४ श्लोकोंके लगभग आता है।

अभीतक यही समझा जाता था कि धवलकी प्राचीन ताडपत्रीय प्रति एकमात्र यही है। किन्तु अब खोजसे ज्ञात हुआ है कि वहां धवलकी दो और भी ताडपत्रीय प्राचीन प्रतियां हैं, जिनकी ताडपत्रोंकी सख्या क्रमश ८०० और ६०५ है। इनमें पाठभेदभी कहीं कहीं बहुत कुछ पाया जाता है। किन्तु इन दोनों प्रतियोंके बीच-बीच के अनेक ताडपत्र अप्राप्य हैं, और इस प्रकार ये दोनोही प्रतियां बहुत कुछ श्रुति हैं। इनका प्रशस्तियों आदि सहित विशेष परिचय आगेके भागमें देनेका प्रयत्न किया जायगा।

दूसरा ग्रथ श्रीमहाधवल कहलाता है। इसके ताडपत्रोंकी लम्बाई २ फुट ४ इच, चौड़ाई २॥ इच तथा पत्रसख्या २०० है। प्रत्येक पृष्ठपर प्राय १३ पक्तियां, और प्रत्येक पक्तिमें

लगभग १७० अक्षर हैं। इस प्रकार प्रत्येक ताडपत्रपर श्लोक सर्या १३८ आती है, जिससे कुट्टप्रथका प्रमाण २७६०० श्लोकोंके लगभग आता है। कि तु बड़े बड़े पारिभाषिक शब्दोंके सूक्ष्म-रूप बनाकर लिखे गये हैं, इससे श्रेय प्रमाण अधिक भी हो सकता है।

तीसरा प्रथ श्रीजयधवल सिद्धांत है। इसके ताडपत्रोंकी लम्बाई २। पुट, चौड़ाई २।। इंच, तथा पत्रसर्या ५१८ है। प्रत्येक पृष्ठपर प्राय १३ पक्तियां, और प्रत्येक पक्तिमें लगभग १३८ अक्षर हैं। इस प्रकार प्रत्येक ताडपत्रपर श्लोक सर्या लगभग १२० आती है, जिससे कुट्ट प्रथका प्रमाण ६११२४ श्लोकोंके लगभग आता है।

३

यह मूडविद्वीका वही सुप्रसिद्ध मंदिर है, जहां सिद्धांत प्रथोंकी ताडपत्रीय प्रतिपा शता-द्विंशोसे विराजमान हैं। इन्होंने कारण यह मंदिर 'सिद्धान्त मन्दिर' या 'सिद्धान्त बसदि' कहलाता है। अनेक रत्नमयी प्रतिमाये भी यहां विराजमान हैं, जिनके दर्शनके लिये प्रतिवर्ष दूर दूरसे यात्री आते हैं। यहांके मूडनायक श्रीपार्श्वनाथ तीर्थंकर हैं। यहीं मठारक गरी है, जिससे इसे 'शुरु बसदि' भी कहते हैं। इसका सब कार्यभार एक पचायतक आर्धान है, जिसमें यह 'पंचायती मन्दिर' भी कहलाता है।

४

यह मूडविद्वीका 'बड़ा मन्दिर' है। यहां के मूडनायक श्री चन्द्रप्रभ तीर्थंकर हैं, जिनकी मूर्ति सुवर्ण आदि पच धातुओंकी बना मानी जाती है। इसकी इमारत तीन मजिलकी है। दूसरे मजिलपर 'सहस्रकूट चैत्यालय' बहुत हा मनोह है। तीसरे मजिलमें छोटी बड़ी ४० प्रतिमाए विराजमान हैं जो स्फटिकमयी हैं। इसलिये इस मजिलको 'सिद्धकूट' भी कहते हैं। मन्दिरके समुख एक 'मानस्तम' और एक 'चञ्जस्तम' खडा है। तीनों मजिलोंमें स्तमोंकी सर्या कोई एक हजार है, जिससे इस मंदिरका नाम 'सहस्रस्तम' या हजार स्तमना मंदिर प्रसिद्ध हुआ है। अपनी अनुपम सुदरताके कारण यह मंदिर 'त्रिभुवन तिलक चूडामणि' भी कहलाता है।

५

ये मूडविद्वीके स्वर्गीय मठारक श्रीचारुकीर्ति स्वामी हैं। आप सस्कृतके अच्छे सिद्धान्त थे, तथा अन्य अनेक भाषाओंके भी जानकार थे। आपके समयमें मूडविद्वी में अच्छी धर्मप्रभावना हुई। आपने कई जगह कितने ही जैनमंदिरोंका जीर्णोद्धार कराया व पचरुल्याणादि कराये। आपके ही सुसमय में श्रीधवल और आजयधवल, इन दोनों सिद्धांत प्रथोंकी प्रतिलिपिया हुई थीं, और तीसरे सिद्धांत प्रथ महाधवलकी प्रतिलिपिका कार्य भी प्रारम्भ हो गया था। अजैन जनतामें आपका अच्छा गौरव और सम्मान रहा।

६

ये मूडविद्रीके वर्तमान भट्टारक श्रीचारुकीर्ति स्वामी हैं, जो सिद्धान्त बसदिके मुख्य अधिकारी हैं। आप अपनी मातृभाषा कनाडी के अतिरिक्त संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी आदि अनेक भाषाओंके ज्ञाता हैं। उत्तर भारतमें भी आप दीर्घकाल तक रह चुके हैं। आपके ही समयमें श्रीमहाधवलकी प्रतिलिपि पूर्ण हुई। आपके ही सरल स्वभाव और उदार विचारोंका यह सुफल है कि वहांकी पचायतद्वारा श्रीमहाधवलकी प्रतिलिपि जिज्ञासु समाज को प्राप्य बनानेका प्रस्ताव स्वीकृत हो गया है। आप जीर्णोद्धारादि धार्मिक कार्योंमें खूब दत्तचित्त रहते हैं। प्रयोंका जीर्णोद्धार कार्य भी आपकी दृष्टिके ओझल नहीं रह सका। हमारे सिद्धान्त-प्रयोगके सशोधन व प्रकाशन कार्यमें अब हमें आपकी पूर्ण सहायभूति और सहायता मिल रही है, जिसके सुफल पाठक इस प्रथमभागमें तथा आगे भी देखेंगे।

७

आप मूडविद्रीके नगरसेठ श्रीदेवराजजी सेठी हैं। सिद्धान्तमन्दिरके आप पंच हैं, और भट्टारकजीके सकार्योंमें आपकी सम्मति और सहयोग रहता है। आप भी सिद्धान्तप्रयोगके सुप्रचार के पक्षपाती हैं।

८

आप मूडविद्री सिद्धान्तमन्दिरके पंच श्रीयुक्त धर्मपालजी हैं। आप एक बड़े उत्साही युवक हैं, और सिद्धान्तप्रयोगके सुप्रचार करानेमें आपकी विशेष रुचि है।

९

सरस्वती भूषण पं. लोकराजजी शास्त्रीका पैतृक निवासस्थान मूडविद्री ही है। आपका विद्याभ्यास स्वनामधन्य स्वर्गीय प गोपालदासजी बरैयाकी अध्यक्षतामें मोरेना विद्यालयमें हुआ था। तत्पश्चात् आपने मूडविद्रीकी जैन संस्कृत पाठशालामें बीस वर्ष तक अध्यापन कार्य किया, और अनेक ऐसे योग्य विद्वान् उत्पन्न किये जो अब उस प्रान्तमें धर्म और समाजकी भारी सेवा कर रहे हैं। आपने अपने निरंतर कठिन परिश्रमसे धीरवाणीविलास सिद्धान्तभवनकी स्थापना की है जिसमें मुद्रित व हस्तलिखित ताडपत्रादि चार हजार प्रयोगसे ऊपरका सग्रह है। यहासे आप एक धीरवाणी प्रथमालाका भी संपादन करते हैं, जिसमें सोलह ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। आप मूडविद्रीके भट्टारसे अलम्य प्रयोगकी प्रतिलिपि कराकर मुंबई, आरा, इंदौर, सहारनपुर, कलकत्ता आदि शाखभट्टारोंको भेज चुके हैं, जिसकी श्रेयस ८५००० से भी ऊपर हो गई है। आपका सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य सिद्धान्तप्रयोगकी प्रतिलिपियोंसे सबंध रखता है। जैसा हम प्रथम भागकी भूमिकामें कह आये हैं, महाधवलकी नागरी प्रतिलिपि पहले पहल आपके द्वारा ही सन् १९१८ से १९२२ तक की गई थी। सन् १९२४ में आपने सहारनपुर पहुँचकर वहाकी धवला और जयधवलाकी कनाडी और नागरी प्रतियोंका मिलान करवाया था। वर्तमानमें हमारी

महाध्वजनी प्रतिस्वधी शकाओंपर आपने ही अपने दो तीन सहयोगी विद्वानोंसहित उक्त प्रतिकी जांच पढताल की, और बहुमूल्य परिचय भेजनेकी कृपा की। हमारे प्रकाशित व प्रकाशनीय प्रयाशोंका तादृशपत्नीय प्रतिपोंसे मिलान भी आपके ही द्वारा किया जा रहा है। आपकी आयु इस समय पचास वर्षकी है। लगभग दस वर्षसे आसूसी व्याधिसे पीडित होते हुए भी आप साहित्यसेवाके कार्यसे विश्रान्ति नहीं लेते, और प्रस्तुत सिद्धांतप्रकाशन कार्यमें तो आप अत्यंत तमयताके साथ जी तोड़कर सहयोग दे रहे हैं, जिसके सुकल पाठक इस मार्गमें तथा आगे प्रकाशनीय भागोंमें देखेंगे।

२ मूडविद्रीका इतिहास

दक्षिण भारतका कर्नाटक देश जैन धर्मके इतिहासमें अपना एक विशेष स्थान रखता है। दिग्म्बर जैन सम्प्रदायके अधिकांश स्मृतियाँ और प्राचीनतम ज्ञात आचार्य और प्रपकार इसी प्रान्तमें हुए हैं। आचार्य पुण्यदत्त, समतभद्र, पूज्यपा, वीरसन, जिनसेन, गुणभद्र, नेमिचन्द्र, चामुण्डराय आदि महान् प्रपकारोंने इसी भूभागको अलंकृत किया था।

इसी दक्षिण कर्नाटक प्रान्तमें ही मूडविद्री नामका एक छोटासा नगर है जो शताब्दियोंसे जैनियोंका तीर्थक्षेत्र बना हुआ है। कहा जाता है कि यहाँ जैनधर्मका विशेष प्रभाव सन् ११०० ईस्वीके लगभग होम्सल-नरेश बडालदेव प्रथमके समयसे बना। तेरहवीं शताब्दिमें यहाँकी पार्श्वनाथ बसदिको तुट्टरके आल्प नरशोंसे राज्यसम्भान मिल्य। पंद्रहवीं शताब्दिमें विजय-नगरके हिन्दू नरेशोंके समय इस स्थानकी कीर्ति विशेष बढी। शक १३५१ (सन् १५२९) के देवराय द्वितीयके एक शिलालेखमें उल्लेख है कि बेणुपुर (मूडविद्री) उसके भन्जनोके लिये सुप्रसिद्ध है। वे शुद्ध चारित्रि पाठसे हैं, शुभ कार्य करते हैं, और जैनधर्मकी कथाओंका श्रवण करते हैं। यहाँके स्थानीय राजा भैरवसेने अपने गुरु वीरसन मुनिका प्रेरणासे यहाँके चन्द्रनाथ मन्दिर को दान दिया था। सन् १४५१-५२ में यहाँकी होस बसदि (त्रिमुक्क तिलक चूडामणि व बडा मन्दिर) का ' भैरादेरी मण्डप ' नामसे प्रसिद्ध मुखमण्डप विजयनगर नरेश मल्लिकार्जुन इम्मडिदेवरायके राज्यमें बनाया गया था। विरुपाक्ष नरेश के राज्यमें उनके सामन्त विश्वरु ओडेयरेने सन् १४७२-७३ में इसी बसदिको भूमिदान दिया था। यहाँ सब मिलाकर अठारह बसदि (जिनमन्दिर) हैं, जिनमें सबसे प्रसिद्ध ' गुरु बसदि ' है जहाँ सिद्धान्त प्रयोगोंकी प्रतिष्ठा सुशिक्षित हैं और जिसके कारण यह ' सिद्धान्त बसदि ' भी कहलाती है। यह नगर ' जैन वाशी ' नामसे भी प्रसिद्ध है। यहाँ अब जैनियोंकी जनसंख्या बहुत कम रह गई है, किन्तु जैन सभारमें इसका प्राबल्य कम नहीं हुआ। यहाँकी गुरुपरपरा और सिद्धान्त रक्षाके लिये यह स्थान जैन धार्मिक इतिहासमें सदैव अमर रहेगा।

मूडविद्वीके पडित लोकनायजी शाखाने मूडविद्वीका निम्न इतिहास लिखकर भेजनेकी कृपा की है। कनाडी भाषामें चांसको 'विदिर' कहते हैं। वासोंके समूह को उदकर यहाँके सिद्धान्त मंदिरका पता लगाया गया था, जिससे इस ग्रामका 'विदुरे' नाम प्रसिद्ध हुआ। कनाडीमें 'मूड' का अर्थ पूर्व दिशा होता है, और पश्चिम दिशाका वाचक शब्द 'पडु' है। यहाँ मूडकी नामक प्राचीन ग्राम पडुविदुरे कहलाता है, और उससे पूर्वमें होनेके कारण यह ग्राम मूडविदुरे या मूडविदुरे कहलाया। वश और वेणु शब्द वास के पर्यायवाची होनेसे इसका वेणुपुर अथवा वशपुर नामसे भी उल्लेख किया गया है। अनेक व्रती साधुओंका निवासस्थान होनेसे इसका नाम व्रतिपुर या व्रतपुर भी पाया जाता है।

यहाँ की गुरुबसदि अपरनाम सिद्धान्त बसदिके सम्बन्धमें यह दत्तकथा प्रचलित है कि लगभग एक हजार वर्ष पूर्व यहाँपर वासोंका सघन वन था। उस समय श्रृणवेल्गुल (जैनविद्वी) से एक निर्भय मुनि यहाँ आकर पडुवस्ती नामक मंदिरमें ठहरे। पडुवस्ती नामक प्राचीन जिनमंदिर अब भी यहाँ विद्यमान है, और उस मंदिरसे सैकड़ों प्राचीन ग्रंथ स्वर्गीय मट्टारकजीने मठमें निराजमान किये हैं। एक दिन उक्त निर्भय मुनि जब बाहर शौचको गये थे तब उन्होंने एक स्थानपर एक गाय और व्यात्रको परस्पर काँडा फरते देखा, जिससे वे अत्यन्त विस्मित होकर उस स्थानकी विशेष जाँच पटताल करने लगे। उसी खोजबीनके फलस्वरूप उन्हे एक बांसके भिरेमें छुपी हुई व पत्थरों आदिसे घिरी हुई पार्श्वनाथ स्वामीकी काले पापाणकी नौ हाथ प्रमाण खड्गासन मूर्तिके दर्शन हुए। तत्पश्चात् जैनियोंकेद्वारा उसका जीर्णोद्धार कराया गया, और उसी स्थानपर 'गुरुबसदि का निर्माण हुआ। उक्त मूर्तिके पादपाठपर उसके शक ६३६ (सन् ७१४) में प्रतिष्ठित किये जानेका उल्लेख पाया जाता है। उसके आगेका गद्दीमडप (लक्ष्मी मडप) सन् १५३५ में चोलसेठीद्वारा निर्मापित किया गया था। इस बसदिके निर्माण का व्यय छह करोड़ रुपया कहा जाता है जिसमें सम्भवत वहाँ की रत्नमयी प्रतिमाओंका मूल्य भी सम्मिलित होगा। इस मंदिरके गुप्तगुहमें सुवर्णकलशोंमें 'सिद्ध रस' स्थापित है, ऐसा भी कहते हैं।

एक किंवदन्ती है कि होशल नरेश विष्णुवर्धनने सन् १११७ में वैष्णव धर्म स्वीकार करके हलेबीहु अर्थात् दोरसमुद्रमें अनेक जिन मंदिरोंका ध्वंस कर डाला, व जैनधर्मपर अनेक अन्य अत्याचार किये। उसी समय एक भयकर भूकंप हुआ और भूमि फटकर एक विशाल गर्त वहाँ उत्पन्न होगया, जिसका सबध नरेशके उक्त अत्याचारोंसे बतलाया जाता है। उनके उत्तराधिकारी नारासिंह और उनके पश्चात् धीरे बह्मालदेवने जैनियोंके क्षोभको शान्त करनेके लिये नये मन्दिरोंका निर्माण, जीर्णोद्धार, भूमिदान आदि अनेक उपाय किये। वीर बह्मालदेवने तो अपने राज्यमें शान्ति-स्थापनाके लिये श्रृणवेल्गुलसे मट्टारक चारुकीर्तिजी पडिताचार्यको आमंत्रित किया। वे दोरसमुद्र

पट्टखे और उन्होंने अपनी विद्या व बुद्धिके प्रभापसे वहाँका सब उपद्रव शांत किया, जिससे जैन-धर्मकी अष्टी प्रभावना हुई। इसका कुछ उल्लेख विष्णुकी शासन लेखमें भी पाया जाता है, जो इस प्रकार है—

“कर्णाङ्क सिद्धसिंहासनाधीश्वर महालाराय प्रार्थिते श्री धारणीरिपदिताचार्यर् इतु कीर्तिय पडेवर”

तिवें रायननेदु ने—

छवादिबडे तछ मयनपरिधिपिनइ ॥

डुबलकायि सूठदु य—

श बडेदेसन्बडे पडितायन नोंत ॥

दोरममुद्रसे चारुकीर्तिजी महाराज अपने शिष्योंमहिन मूडवित्री आये और उन्होंने वहाँ गुरुगीठ (महारक गद्दा) स्थापित की, यहाँ आने समय उन्होंने पासही नन्दर नाममें भी महारक गद्दी स्थापित की थी, किंतु वर्तमानमें वहाँ कोई अलग महारक नहीं है, वहाँके मठका सब प्रभु मूडवित्री मठसे ही होता है। यह मूडवित्रीमें महारक गद्दी स्थापित होनेका इतिहास है, जिसका समय सन् ११७२ ईस्वी बतलाया जाता है। तबसे मगरकोका नाम चारुकीर्ति ही रखा जाता है, यद्यपि उसके साथ साथ कुछ स्वतंत्र नामों, जैसे वर्धमानसागर, अततमागर, नेमि सागर आदिका भा उल्लेख पाया जाता है। धवलवादि सिद्धान्त ग्रंथोंकी प्रतिष्ठा यहाँ धारवाड जिलेके बकापुरमें लार्ई गई, ऐसी भी एक जनश्रुति है। इस मठसे दक्षिण कर्नाटकमें जैनधर्मका खूब प्रचार व उन्नति हुई। वर्तमानमें मठकी संपत्तिसे वार्षिक आय लगभग दस हजारकी है।

३ महावधकी खोज

१ खोजका इतिहास

पट्टखण्डागमका सामान्य परिचय उमके प्रथम दो भागोंमें प्रकाशित भूमिकाओंमें दिया जा चुका है। वहाँ हम बतला आये हैं कि धरसेनाचार्यसे आगमका उपदेश पातर पुण्यदत्त और भूतबलि आचार्योंने उसकी छह खंडोंमें प्रथमचर्चा की, जिनमेंसे प्रथम पाँच खंड उपलब्ध शोधवर्ककी प्रतिष्ठोंके अंतर्गत पाये जाते हैं और छठे खंड महावधके सम्बन्धमें धवल तथा जय-धवलमें यह सूचना पाई जाती है कि महावध स्वयं भूतबलि आचार्यका रक्षा हुआ प्रथम है, उसमें अधविधानके चार प्रकारों प्रकृति, शिष्टि, अनुभाग और प्रदेश का खूब विस्तारसे वर्णन किया गया है, तथा यह वर्णन इतना विशद और सर्वमान्य हुआ कि यनिवृषभ और वीरसेन जैसे आचार्योंने अपनी अपनी प्रथमचर्चामें उसकी सूचनामात्र दे देना पर्याप्त समझा, उस विषयपर और कुछ विशेष कहनेकी उन्हें गुजायश नहीं दिखी।

१ दशो लोकनापशास्त्रीकृत मू-विदय चरित (कनाडी)

२ दशो प्रथम भाग, भूमिका पृ १३ आदि, व द्वि भाग भूमिका पृ १५ आदि

इस महाध्वका अभीतक कोई प्रति प्रकाशमें नहीं आई । किन्तु हम सब यह आशा करते रहे हैं कि मूडविद्रीके सिद्धान्तभवनमें जो महाध्वल नामकी कनाडी प्रति ताडपत्रोंपर तृतीय सिद्धान्तग्रन्थ रूपसे सुरक्षित है, वही भूतबलिकृत महात्रय ग्रन्थ है । इस आशाका आधार अभी-तक केवल हमारा अनुमान ही था, क्योंकि न तो कोई परीक्षक विद्वान् उस प्रतिका अच्छीतरह अवलोकन कर पाया था और न किसीने उसके कोई निस्तृत अवतरण आदि देकर उसका सुपरिचय ही कराया था । उस प्रतिका जो कुछ थोडासा परिचय उपलब्ध हुआ था, वह मूड-विद्रीके प लोकनायजी शास्त्रीकी कृपासे उनके वीरवाणीखिलास जैन सिद्धान्त भवनकी प्रथम वार्षिक रिपोर्ट (१९३५) के भीतर पाया जाता था । उस परिचयमें दिये गये महाध्वल प्रतिके प्रारम्भिक भागके सूक्ष्म अवलोकनसे मुझे ज्ञात हुआ कि वह ग्रन्थरचना महाध्व खडकी नहीं है, किन्तु सतकर्मके अन्तर्गत शेष अठारह अनुयोगद्वारोंकी एक ' पचिका ' है, जिसे उसके कर्ताने ' पचियरूपेण विवरण सुमहत्तय ' कहा है । उन अवतरणोंसे महाध्वका कहीं कोई पता नहीं चला । मैंने अपनी इस आशाकाको एक लेखके द्वारा प्रकट किया और इस बातकी प्रेरणा की कि महाध्वलकी प्रतिका शीघ्रही पर्यालोचन किया जाना चाहिए और महाध्वका पता लगानेका प्रयत्न करना चाहिये । इस लेखके फलस्वरूप मूडविद्रीमठके भट्टारकस्वामी व पचोने उस प्रतिकी जाचकी व्यवस्था की, और शीघ्र ही मुझे तारद्वारा सूचित किया कि महाध्वल प्रतिके भीतर सत्कर्म-पचिका भी है, और महाध्व भी है । तत्पश्चात् वहांसे प लोकनायजी शास्त्रीद्वारा सप्रह किये हुए उक्त प्रतिमेंके अनेक अवतरण भी मुझे प्राप्त हुए, जिनपरसे महाध्वल प्रतिके अन्तर्गत ग्रन्थरचनाका यहा कुछ परिचय कराया जाता है ।

२ सत्कर्मपचिका परिचय

महाध्वल प्रतिके अन्तर्गत ग्रन्थरचनाके आदिमें ' सतकर्मपचिका ' है, जिसकी उत्पानिका का अवतरण अनेक दृष्टियोंसे महत्वपूर्ण है । यद्यपि यह अवतरण पूर्ण प्रकाशित ध्वलाके दोनों भागोंकी भूमिकाओंमें यथास्थान उद्धृत किया जा चुका है, तथापि वह उक्त रिपोर्टपरसे लिया गया था, और कुछ त्रुटित था । अब यह अवतरण हमें इस प्रकार प्राप्त हुआ है ।

योच्छामि सत्कर्ममे पचियरूपेण विवरण सुमहत्तय ।

“ महाकर्मपयडिपाहुदस्त कदिवेदणाओ (दि-) षड्वीसमणियोगहारिसु तत्थ कदिवेदणा ति जाणि अणियोगहारणि वेदणासुद्धि, पुणे पास कम्म-पयडि-वधण चत्तारि अणियोगहारिसु तत्थ वध-वध-णिज्जणामणियोहेदि सह वग्गणासुद्धि, पुणे वधविधानणामणियोगो महाधम्मि, पुणे वधगणियोगो सुद्धा वधमि सप्यवचेण परुविदाणि । पुणे तेहिंतो सेसट्टारसाणियोगहारणि सत्तकर्ममे सव्वाणि परुविदाणि । एो वि एत्ताद्दगीमीरत्तादो अण्यथिसमपदानन्थे थोरुद्धयेण पचियसरूपेण भणिससामो । ”

इस उत्पानिकासे सिद्धान्तग्रन्थोंके सम्बन्धमें हमें निम्न लिखित अस्सत उपयोगी और महत्वपूर्ण सूचनाएँ बहुत स्पष्टतासे मिल जाती हैं—

१ महाकर्मप्रवृत्तिपाहुडके चौबीस अनुयोगद्वारोंमेंसे प्रथम दो अर्थात् कृति और वेदना, वेदनाखंडके अंतर्गत रचे गये हैं। फिर अगले स्पर्श, कर्म, प्रश्रुति और वधनके चार भेदोंमेंसे वध और बंधनीय वधणाखंडके अंतर्गत हैं। वधनिधान महावका नियम है, तथा वधक सुराबध खंडम सन्निहित है। इस स्पष्ट उल्लेखसे हमारा पूर्व वचलाई हुई खंड व्यवस्थाकी पूर्णत पुष्टि हो जाती है, और वेदनाखंडके भीतर चौबीसों अनुयोगद्वारोंको मानने तथा वर्गणाखंडको उपलब्ध धवलाती प्रतियोंके भातर नहीं माननेवाले मतका अर्द्धी तरह निरमन हो जाता है।

२ उक्त छह अनुयोगद्वारोंसे शेष अठारह अनुयोगद्वारोंकी भ्रपरचानाका नाम सचकर्म (स कर्म) है, और इसी सचकर्मके गभीर नियमको स्पष्ट करनेके लिए उसके थोड़े थोड़े अवतरण लेकर उनके विषयमर्दोंका अर्थ प्रस्तुत प्रथम पचिन्नारूपसे समयाया गया है।

अत्र प्रश्न यह उपस्थित होता है कि शेष अठारह अनुयोगद्वारोंसे वर्णन करनेवाला यह सचकर्म प्रथम कौनसा है? इसके लिए स कर्मपचिन्नाका आगेका अवतरण देखिए, जो इस प्रकार है—

त जहा । अत्र ताव जीवद्रव्यस्य योग्यद्रव्यमत्रलक्ष्यि पञ्जायैसु परिणमणाविहाण उच्यते—जीवद्रव्य दुविद, ससारीजीवो मुक्कजीवो चदि । तत्र विच्छतासत्रमद्रसायजागेहि परिणद्रव्यसारीजीवो जीव भव सेत योग्यल विवाङ्मरवकम्मपागले अधियूण पञ्जा वेदितो पुत्तुत्त—उचिरहपलसकूपपञ्जायमणेयभेयभिषण ससरदो जीवो परिणमदि चि । एदमि पञ्जायाण परिणमण पारगठणिवधण हादि । पुणो मुक्कजीवस्त ण्य विष गिवधण गण्ठि, किंत्तु सन्धाणेण पञ्जायतर गच्छदि । पुणो—

जस्त वा दव्यस्त सहावो दव्यतरपडिवद्धो इदि ।

पदसन्धो ण्य जीवद्रव्यस्य सहावो णाणदसणाणि । पुणो दुग्धिजीवाण णाणसहावविवक्खिद्ध-
लीवेदितो वीदरिह जाणयोग्यादि-सववद-माण परिच्छेदणसहावेण पञ्जायतरगमणविवधण होदि । ण्य दमण वि वत्त-२ ।

यहां पञ्जिकाकार कहते हैं कि वहांपर अर्थात् उनके आभारभूत प्रथके अठारह अधि-
कारोंमेंसे प्रथमानुयोगद्वार निवर्तनकी प्ररूपणा सुगम है। विशेष केवल इतना है कि उस निवधन-
का निशेष छह प्रकारसे वतलाया गया है। उनमें तृतीय अर्थात् द्रव्यनिक्षेपके स्वरूपकी प्ररू-
पणमें आचाय इस प्रकार कहते हैं। जिसका खुलासा यह है कि यहां पर पुद्गलद्रव्यके अवल-
नसे जीवद्रव्यके पर्यायोंमें परिणमन विधनका कथन किया जाता है। जीवद्रव्य दो प्रकारका
है, ससारी व मुक्क। इनमें मियात्त, असम, कपाय और योगसे परिणत जीव ससारी है।
वह जीवविपाकी, भ्ररिपाकी, क्षेत्रिपाका और पुद्गलविपाकी कर्मपुद्गलोंको बांधकर अनतर
उनके निमित्तसे पूर्वके छह प्रकारके फलरूप अनेक प्रकारका पर्यायोंमें ससरण करता है, अर्थात्
किता है। इन पर्यायोंका परिणमन पुद्गलके निमित्तसे होता है। पुन मुक्कजीवके इस प्रकारका
परिणमन नहीं पाया जाता है। किंतु वह अपने स्वभावसे ही पर्यायान्तरकी प्राप्त होता है। ऐसी
स्थितिमें 'जस्त वा दव्यस्त सहावो दव्यतरपडिवद्धो इदि' अर्थात् 'जिस द्रव्यका स्वभाव द्रव्यान्तरसे
प्रतिबद्ध है' इति।

इस प्रकरणके मिलानके लिए हमने वीरसेन स्वामीके ध्वलान्तर्गत निबन्धन अधिकारको निकाला। वहा आदिमें ही निबन्धनके छह निक्षेपोंका कथन विद्यमान है और उनमें तृतीय द्रव्य-निक्षेपका कथन शब्दशः ठीक यही है जो पञ्जिकाकारने अपने अर्थ देनेसे ऊपरकी पक्तिमें उद्धृत किया है और उसीका उन्होंने अर्थ कहा है। यथा—

गिब्रघणेति अणियोगद्वारे गिब्रघण ताव अपयदगिब्रघणगिराकरणट्ट गिब्रिखवियम्ब । त जहा-
णामगिब्रघण, ठवणगिब्रघण, दम्बगिब्रघण, खेतगिब्रघण, कालगिब्रघण, भागगिब्रघण चेदि छम्बिह गिब्रघण
होदि ।

इसके पश्चात् नाम और स्थापना निबन्धनका स्वरूप बतलाया गया है और उसके पश्चात् द्रव्यनिबन्धनका वर्णन इस प्रकार है—

ज दम्ब जाणि दम्बाणि अरिस्तदूण परिणमदि, जस्स वा सहस्स (द्वस्स) सहायो
द्वन्तरपडिबद्धो त दम्बगिब्रघण । (ध्वला क प्रति, पत्र १२६०)

प्रतिमें 'सहस्स' पद अशुद्ध है, वहां 'द्वस्स' पाठ ही होना चाहिए। यहां वाक्यके ये शब्द 'जस्स वा द्वस्स सहायो द्वन्तरपडिबद्धो' ठीक वे ही हैं, जो पञ्जिकामें भी पाये जाते हैं, और इन्हीं शब्दोंका पञ्जिकाकारने 'एथ जीवद्वस्स सहायो णाणदसणाणि' आदि वाक्योंमें अर्थ किया है। यथार्थतः जितना वाक्यांश पञ्जिकामें उद्धृत है, उतने परसे उसका अर्थ व्यवस्थित करना कठिन है। किन्तु ध्वलाके उक्त पूरे वाक्यको देखनेमात्रसे उसका रहस्य एकदम खुल जाता है। इसपरसे पञ्जिकाकारकी शैली यह जान पड़ती है कि आधारग्रन्थके सुगम प्रकरणको तो उसके अस्तित्वकी सूचनामात्र देकर छोड़ देना, और केवल कठिन स्थलोंका अभिप्राय अपने शब्दोंमें समझाकर और उसी स्थितियोंमें मूलके विरक्षितपदोंको लेकर उनका अर्थ कर देना। इस परसे पञ्जिकाकारकी उस प्रतिज्ञाका भी स्पष्टीकरण हो जाता है, जहां उन्होंने कहा है कि 'तस्साङ्गभीरत्तादो अन्यविसमपदाणमत्थे थोरद्वयेण पचियमरूवेण भणिसामो' अर्थात् उन अठारह अनुयोगद्वारोंका विषय बहुत गहन होनेसे हम उनके अर्थकी दृष्टिसे निमग्नपदोंका व्याख्यान करते हैं, और ऐसा करनेमें मूलके केवल थोड़ेसे उद्धरण लेंगे। यही पचिकाका स्वरूप है। मूलग्रन्थके वाक्योंको अपनी वाक्यरचनामें लेकर अर्थ करते जाना अन्य टीकाग्रन्थोंमें भी पाया जाता है। उदाहरणार्थ, विधानन्दिशत अष्टसहस्रोंमें अरुलकदेवकृत अष्टशती इसीप्रकार गुथी हुई है। पञ्जिकाकी यह विशेषता है कि उसमें पूरे ग्रन्थका समावेश नहीं किया जाता, केवल विषयपदोंको प्रहण कर समझाया जाता है।

सत्कर्मपचिकाके उक्त अवतरणके पश्चात् शास्त्रीजीने लिखा है—

"इस प्रकार छह द्रव्योंके पर्यायान्तरका परिणमन विधान विवरण होनेके बाद निम्न प्रकार प्रतिज्ञा वाक्य है—

सपदि पक्कमाहियारस्स उक्कस्सपक्कमद्वस्स उच्चप्पायहुगविवरण कस्सामो । त जहा—अपचक्खण-
माणस्स उक्कस्सपक्कमद्वस्स थोव । कुदो ?" इत्यादि ।

आगे चलकर कहा गया है—

चत्वारि भ्रष्टराण णात्पुष्पागोदाण पुणो प्कारस पयणाण सगसेसलपणवधपयविसूचयणमिदि ।
उत्तरप्रपयदीणमप्याबहुग गयपारोहि पदविद । मग्गेहि पुणो सूचिदपयडीणमप्याबहुग गमउत्तप्याबहुगवरेण
परुविद । एव पक्कमाणिभोगो गदो ।

आगे चलकर पुन आया है—

एय पयदीसु जहणपक्कमदव्वाण अप्याबहुग उत्तो । त जहा-स-वत्थोवमपक्कत्ताणमाणे पक्कम
दव्व । कुदा ? इत्यादि ।

यहाँ लघुर्क निबधन अधिकारके पश्चात् प्रथम अधिकारका प्रारम्भ बतलाया है और
क्रमश उसने उत्कृष्ट और जघप्य प्रक्रम द्रव्यके अल्पबहुत्वका कथन किया है, तथा इस बातकी
सूचना की है कि चौंसठ प्रकृतियोंका अल्पबहुत्व प्रयत्नकारने स्वयं कर दिया है, अतः हम यहाँ केवल
उत्ते द्वारा सूचित प्रकृतियोंका अल्पबहुत्व उक्त मयोजक अल्पबहुत्वके बलसे करते हैं । धवला
भी निबधन अनुयोगद्वारके पश्चात् आठवें अनुयोग प्रक्रमका वर्णन है, और यहाँ उत्तरप्रकृति-
प्रक्रमके उत्कृष्टउत्तरप्रकृतिप्रक्रम और जघप्यउत्तरप्रकृतिप्रक्रम ऐसे दो भेद करके वर्णन प्रारम्भ
किया गया है । तथा यहाँ यह सब अल्पबहुत्व पाया जाता है जो पचिकाकारने स्वीकार किया
है और जिसके सम्बन्धमें शकादि उठाकर उचित समाधान किया है ।

उत्तरपयन्पिपक्कमो हुविहो, उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो जहणउत्तरपयन्पिपक्कमो चेदि । तत्थ
उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो हुविहो, उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो जहणउत्तरपयन्पिपक्कमो चेदि । तत्थ
उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो हुविहो, उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो जहणउत्तरपयन्पिपक्कमो चेदि । तत्थ
उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो हुविहो, उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो जहणउत्तरपयन्पिपक्कमो चेदि । तत्थ
उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो हुविहो, उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो जहणउत्तरपयन्पिपक्कमो चेदि । तत्थ

प्रक्रम अधिकारके पश्चात् पचिकामें उपक्रमका वर्णन इस प्रकार प्रारम्भ होता है—

उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो हुविहो, उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो जहणउत्तरपयन्पिपक्कमो चेदि । तत्थ
उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो हुविहो, उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो जहणउत्तरपयन्पिपक्कमो चेदि । तत्थ
उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो हुविहो, उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो जहणउत्तरपयन्पिपक्कमो चेदि । तत्थ
उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो हुविहो, उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो जहणउत्तरपयन्पिपक्कमो चेदि । तत्थ
उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो हुविहो, उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो जहणउत्तरपयन्पिपक्कमो चेदि । तत्थ
उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो हुविहो, उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो जहणउत्तरपयन्पिपक्कमो चेदि । तत्थ
उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो हुविहो, उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो जहणउत्तरपयन्पिपक्कमो चेदि । तत्थ
उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो हुविहो, उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो जहणउत्तरपयन्पिपक्कमो चेदि । तत्थ
उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो हुविहो, उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो जहणउत्तरपयन्पिपक्कमो चेदि । तत्थ
उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो हुविहो, उत्तरसत्तत्तरपयन्पिपक्कमो जहणउत्तरपयन्पिपक्कमो चेदि । तत्थ

यहाँ उपक्रमके चार भेदोंका उल्लेख करके प्रथम बधन उपक्रमके, पुन प्रकृति, स्थिति,
अनुभाग और प्रदेशरूप चार प्रभेदोंके विषयमें यह बतलाया गया है कि इनका अर्थ जिसप्रकार
सतकम्पपाहुडमें किया गया है उसप्रकार करना चाहिए । उस सतकम्पपाहुडमें भी प्रकृतमें वेदना-
नुपेन्द्राके तीन और प्रकृति अनुयोगद्वारके चार अर्थिकारोंसे अभिप्राय है । यहाँ भी पचिकाकार
स्पष्ट धवलाके निम्न उल्लिखित प्रकरणका निरण कर रहे हैं—

जो सो कम्मोवक्कमो सो चउन्विहो, बधणउवक्कमो उदीरणउवक्कमो उवसामणउवक्कमो विपरिणामउवक्कमो चेदि । जो सो बधणउवक्कमो सो चउन्विहो, पयडिबधणउवक्कमो ठादिबधणउवक्कमो अणुमागबधणउवक्कमो पदेमबधणउवक्कमो चेदि । एत्थ पदेसि चउणहमुवक्कमाणजहा सतकम्मपयडिपाहुडे परूविद् तहा परूयेयव्वं । जहा महाउपे परूविद्, तहा परूवणा एत्थ किण कौरदे ? ण, तस्स पदमसमयबधमिं चव वावारादो । ण च तमेत्थ वोतु जुठ, पुणरुत्तदोसप्पसगादो । (धवला क पंत १२६७)

यहां जो बधनके चारों उपक्रमोंका प्ररूपण महाबधके अनुसार न करके सतकम्मपाहुडके अनुसार करनेका निर्देश किया गया है, उसीका पंचिकाकारने स्पष्टीकरण किया है कि महाकम्मपयडिपाहुडके किन किन विशेष अधिकारोंसे यहां सतकम्मपाहुड पदद्वारा अभिप्राय है ।

पंचिकामें उपक्रम अधिकारके पश्चात् उदयअनुयोगद्वारका कथन है जैसा उसके अन्तिम भागके अन्तरणसे सूचित होता है । यथा—

उदयाणियोगहार गद ।

यहांके कोई विशेष अवतरण हमें उपलब्ध नहीं हुए । अत धवलासे मिलान नहीं किया जा सका । तथापि उपक्रमके पश्चात् उदय अनुयोगद्वारका प्ररूपण तो है ही । उक्त पंचिका यहीं समाप्त हो जाती है । इससे जान पड़ता है कि इस पंचिकामें केवल निबधन, प्रक्रम, उपक्रम और उदय, इन्हीं चार अधिकारोंका विवरण है । शेष मोक्ष आदि चौदह अनुयोगोंका उसमें कोई विवरण यहां नहीं है । इससे जान पड़ता है कि यह पंचिका भी अधूरी ही है, क्योंकि पंचिकाकी उल्यानिकामें दी गई सूचनासे ज्ञात होता है कि पंचिकाकार शेष अठारहों अधिकारोंकी पंचिका करनेवाले थे । शेष प्रथम भाग उक्त प्रतिमें छूटा हुआ है, या पंचिकाकारद्वारा ही किसी कारणसे रचा नहीं गया, इसका निर्णय वर्तमानमें उपलब्ध सामग्री परसे नहीं हो सकता ।

यह पंचिका किसकी रची हुई है, कब रची गई, इत्यादि खोजकी सामग्रीका भी अभी अभाव है । पंचिका प्रतिकी अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री जिनपदकमलमधुव्रत-

ननुपम सत्पानदाननिरत सम्य-

कवनिधान किंसे वधू-

मनसिजनेने शान्तिनाथ नेसेद् धरेयोल् ॥

धरेयोल् पुरजिदनुपम चारुचारित्रनाहुद्धतधर्यं साद्रिपर्यंत रदिय नेनिसि पंविगुणानीकांदि सन्नक्तियादेशदि सत्कर्मदा पचिय विस्तरदि श्रीमाघणदिप्रतिग चरेसिद् राणादि शान्तिनाथ ॥

उदधिदमुदादि सक्क-

मंद पजियननुपमाननिवांगसुल-

प्रदम चरेथिसि शान्त

मदरहित माघर्णदिपतिपतिगिचं ॥

श्री माघनदिसिद्धावदेवण सत्कर्मपजिय श्रीमधुदयान्णिय प्रतिसमान चरेद् ॥ मगल महः ॥

पं लोकनाथजी शास्त्रीकी सूचनानुसार इस “ अन्तिम प्रशस्तिमें दो तीन कान्डीमें

कदवृत्त पद्य हैं जो कि शान्तिनाथ राजाके प्रशसात्मक पद्य हैं। उक्त राजाने 'सत्कर्मपत्रिका' को विस्तारसे लिखवाकर भक्तिके साथ श्री माधनद्याचार्यजीको दे दिया। प्रति लिखनेवाला श्री उदयदिव्य है।"

इसके ताडपत्रोंकी सरया २७ और प्रथम-प्रमाण लगभग ३७२६ श्लोकके है।

३ महाभद्र-परिचय

मूडविद्विनी महाभद्र नामसे प्रसिद्ध ताडपत्रीय प्रतिके पत्र २७ पर पूर्वाक्त सत्कर्मपत्रिका समाप्त हुई है। २८ या ताडपत्र प्राप्त नहीं है। आगे जो अधिकार-समाप्तिका ध नवीन अधिकार-प्रारम्भकी प्रथम सूचना पाई जाती है वह इसप्रकार है—

एव पद्मदिमयुक्तिरुत्तमा समस्त (त्त)। गो सो सत्त्वबधो णा सत्त्वबधो इत्यादि।

तथा 'एव काल समस्त'। एव अतर समस्त' इत्यादि।

य लोकनायकी शास्त्रोंके शब्दोंमें 'इस रीतिसे भगवच्चय, भागामाग, परिमाण, क्षेत्र, स्पर्शन, फाल, अतर, भाव और अल्पबहुत्वका वर्णन है'। अल्पबहुत्वकी समाप्ति पुष्पिका इसप्रकार है—

एव परत्याणभद्राअपरावहुग समस्त। एव पद्मदिवधो समस्तो।

इस थोड़ेसे विवरणसे ही अनुमान हो जाता है कि प्रस्तुत प्रयोजना महाभद्रके विषयसे संग्रह रखती है। हम प्रथम भागकी भूमिकाके पृष्ठ ६७ पर धवला और जयधवलाके दो उद्धरण दे चुके हैं, जिनमें कहा गया है कि महाभद्रका विषय बधविधानके प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश, इन चारों प्रकारोंका विस्तारसे वर्णन करना है। इन प्रकारोंका कुछ और विषय-विभाग धवला प्रथम भागके पृष्ठ १२७ आदि पर पाया जाता है जहाँ जीवहानकी प्ररूपणाओंका उद्गम-स्थान बतलाने हुए कहा गया है—

बधाविहाण चरन्विह। त जहा-पयदिवधो द्विदिवधो अनुभागबधो पद्मबधा चेदि। तस्य जो सो पयदिवधो सो दुविहो, मूलपयदिवधा उत्तरपयदिवधा चेदि। तस्य जो सो मूलपयदिवधो सो मयो। जो सो उत्तरपयदिवधो सो दुविहो, पद्मगुणपयदिवधो अ-वोगाडउत्तरपयदिवधा चेदि। तस्य जो सो पद्मगुणपयदिवधो तस्य चउवास अणियागद्धारणि जाद्वन्वाणि भवति। त जहा-समुविचक्षण सत्त्वबधो णोसत्त्वबधा सत्त्वबधो अनुवत्त्वबधो जहण्णबधो अजहण्णबधो सादिमबधा अजाण्णियबधा धुवबधो अद्भवबधो बध सामिठविधयो बधकालो बधेतर बधसणियासो जाणाजीवेहि भगविवधो भागामाग, गुणमो परिमाणानुगमो क्षेत्रानुगमो पौसणानुगमो कालानुगमो अंतरानुगमो भावानुगमो अपरावहुगानुगमो चेदि।

यहाँ प्रकृतिबध विधानके एकैकोत्तरप्रकृतिबधके अन्तर्गत जो अनुयोगद्वार गिनाये गये हैं, उनमेंसे आदिके समुत्कीर्तना सर्वबध और नोसर्वबध, इन तान, तथा अन्तके भगविवधादि नो अनुयोग-द्वारोंका उल्लेख महाभद्रकी उक्त प्रयोजनाके परिचयमें भी पाया जाता है। अतः यह भाग महाभद्रके प्रकृतिबधविधा अन्वितरकी रचनाका अनुमान किया जा सकता है। यह प्रकृतिबध ताडपत्र ५० पर अर्थात् २३ पत्रोंमें समाप्त हुआ है।

प्रकृतिबध अधिकारकी समाप्तिके पश्चात् महाभद्रके प्रयोजना इसप्रकार है—

‘ णमो अरहताण ’ इत्यादि

एथो ङिद्विबधो दुविधो, मूलपगदिङ्गिद्विबधो चैव उत्तरपगदिङ्गिद्विबधो चैव । एथो मूलपगदिङ्गिद्विबधो पुञ्जगमणिजो । तस्य इमाणि चत्वारि अणियोगद्वाराणि णाद्वेषाणि भवन्ति । त जहा-ङ्गिद्विबधोऽणयरूपाणा, गित्थेयपरूपाणा अद्धारुडयपरूपाणा अप्पावहुगत्ति । एव भूयो ङिद्विअप्पावहुग समत्त । एव मूलपगदिङ्गिद्विबधो (धे) चउञ्चीसमणियोगद्वार समत्त ।

मुजगारबधेत्ति ।

‘ इसप्रकार मुजगारबध प्रारभ होकर काल, अन्तर इत्यादि अल्पबहुत्त तक चला गया है ।’

एव जीवसमुदाहरेत्ति समत्तमणियोगद्वाराणि । एव ङिद्विबध समत्त ।

बधविधानके इस स्थितिवधनामक द्वितीय प्रकारका भी कुछ परिचय धवला प्रथम भागसे मिलता है । पृ १३० पर कहा गया है—

ङ्गिद्विबधो दुविधो, मूलपयङ्गिद्विद्विबधो उत्तरपयङ्गिद्विद्विबधो चेदि । तस्य जो सो मूलपयङ्गिद्विद्विबधो सो थप्पो । जो सो उत्तरपयङ्गिद्विद्विबधो तस्स चउञ्चीम अणियोगद्वाराणि । तजहा-अद्धारुडेदो, सत्त्वबधो इत्यादि ।

यहां स्थितिवधके मूलप्रकृति और उत्तरप्रकृति, इसप्रकार दो भेद करके उनमेंसे प्रथमको अप्रकृत होनेके कारण छोड़कर प्रस्तुतपयोगी द्वितीय भेदके श्रौचीस अनुयोगद्वार बतलाये गये हैं । इनसे पूर्वाक्त महाधवलकी रचनाके महाबधसे सबधकी सूचना मिलती है ।

यह स्थितिवध ताडपत्र ५१ से ११३ अर्थात् ६३ पत्रोंमें समाप्त हुआ है ।

इनसे आगे महाधवलमें क्रमश अनुभागबध और फिर प्रदेशबधका विवरण पाया जाता है । यथा—

एव जीवसमुदाहरेत्ति समत्तमणियोगद्वाराणि । एव उत्तरपगदिअणुभागबधो समत्तो । एव अणुभागबधो समत्तो । × × × ×

जो सो पदेसबधो सो दुविधो, मूलपगदिपदेसबधो चैव उत्तरपगदिपदेसबधो चैव । एत्तो मूलपयदिपदेसबधो पुञ्ज गमणीयो भागाभागसमुदाहारो अट्टविधबधगस्स आउगभावो × × × × एव अप्पावहुग समत्त । एव जीवसमुदाहरेत्ति समत्तमणियोगद्वार । एव पदेसबध समत्त ।

एव बधविधानेत्ति समत्तमणियोगद्वार । एव चट्टुबधो समत्तो भवदि ।

अनुभागबध ताडपत्र ११४ से १६९ अर्थात् ५६ पत्रोंमें, व प्रदेशबध १७० से २१९ अर्थात् ५० पत्रोंमें समाप्त हुआ है ।

यहाँ महाधवल प्रतिकी प्रपरचना समाप्त होती है । इस संक्षिप्त परिचयसे स्पष्ट है कि महाधवल प्रतिके उत्तर भागमें बधविधानके चारों प्रकारों—प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशक विस्तारसे वर्णन है, तथा उनके भेद-प्रभेदों व अनुयोगद्वारोंका विवरण धवलादि प्रयोगों से किये गये विषय-विभागके अनुसार ही पाया जाता है । अतएव यही भूतबलि आचार्यकृत महाबध हो सकता है । दुर्भाग्यतः इसके प्रारम्भका ताडपत्र अप्राप्य होनेसे तथा यथेष्ट अवतरण न मिलनेसे जितनी जैस चाहिये उतनी छानबीन प्रपकी फिर भी नहीं हो सकी । तथापि अनुभागबध विधानकी समाप्तिसे

पथात् प्रतिमें जो पांच छह कनाडीके कद-वृत्त पद्य पाये जाते हैं, उनमेंसे एक शास्त्रीजीने पूरा उद्धृत करके भेजनेकी कृपा की है, जो इस प्रकार है—

सकलधरिग्राविनुत—

प्रकृतिपरधीस मल्लिकार्जुने वरसि सत्यु—

प्याकर-महाबधद पु—

स्वक श्रीमाघनदिसुनिगळि गितळ्

इस पद्यमें कहा गया है कि श्रीमती मल्लिकार्जुना देवीने इस सत्युप्याकर महाबधकी पुस्तकको लिखाकर श्रीमाघनदि मुनिको दान की। यहाँ हमें इस ग्रन्थके महान्ध होनेका एक महत्त्वपूर्ण प्राचीन उल्लेख मिल गया। शास्त्रीजीकी सूचनानुसार शेष कनाडी पद्योंमेंसे दो तीनोंमें माघन-पाचार्यके गुणोंकी प्रशंसा की गई है, तथा दो पद्योंमें शान्तिसेन राजा व उनकी पत्नी मल्लिकार्जुना देवीका गुणगान है, जिससे महान्ध प्रतिभा दान करनेवाला मल्लिकार्जुना देवी किसी शान्तिसेन नामक राजाकी रानी सिद्ध होती हैं। ये शान्तिसेन व माघनदि नि सदेह थे ही हैं जिनका सत्कर्मपजिकाकी प्रशंसामें भी उल्लेख आया है। प्रतिके अन्तमें पुन ५ कनाडीके पद्य हैं जिनमेंसे प्रथम चारमें माघनदि मुनाद्रकी प्रशंसा की गई है व उन्हें 'वतिपति', 'व्रतनाथ' व 'वतिपति' तथा 'सैद्धातिरामेसर' जैसे विशेषण लगाये गये हैं। पाचवें पद्यमें कहा गया है कि रूपवती सेनरधूने श्रीपचमीत्रनके उद्यापनके समय (यह शक) श्रीमाघनदि वतिपतिको प्रदान किया। यथा—

धीपचमिय नोंतुप्यापनेय माडि वरसि राध्यातमना।

रूपवती सेनरधू जितकोप श्रीमाघनदि वतिपति गितळ् ॥

यहाँ सेनरधूसे शान्तिसेन राजाकी पत्नीका ही अभिप्राय है। नामके एक भागसे पूर्ण-नामको सूचित करना सुप्रचलित है।

यह अन्तकी प्रशस्ति धीरयाणीविलास जैनसिद्धांत भवनकी प्रथम वार्षिक रिपोर्ट (१९३५) में पूर्ण प्रकाशित है।

उक्त परिचयमें प्रतिके डिलाने व दान किये जानेका कोई समय नहीं पाया जाता। शान्तिसेन राजाका भी इतिहासमें जल्दी पता नहीं लगता। माघनदि नामके मुनि अनेक हुए हैं जिनका उल्लेख श्रवणवेश्मोला आदिके शिलालेखोंमें पाया जाता है। जब शान्तिसेन राजाके उल्लेखादि सन्धी पूर्ण पद्य प्राप्त होंगे, तब धीरे धीरे उनके समयादिके निर्णयका प्रयत्न किया जा सकेगा।

हम ऊपर यह आये हैं कि इस प्रतिमें महान्ध रचनाके प्रारम्भका पत्र २८ वां नहीं है। शास्त्रीजीका सूचनानुसार प्रतिमें पत्रन १०९, ११४, १७३, १७४, १७६, १७७, १८३, १८४, १८५, १८६, १८८, १९७, २०८, २०९ और २१२ भी नहीं हैं। इसप्रकार कुल १६ पत्र नहीं मिल रहे हैं। किन्तु शास्त्रीजीकी सूचना है कि कुछ लिखित ताडपत्र बिना पत्र-संख्याके भी प्राप्त हैं। संभव है यदि प्रयत्न किया जाय तो इनमेंसे उक्त त्रुटिकी कुछ पूर्ति हो सके।

४ उत्तरप्रतिपत्ति और दक्षिणप्रतिपत्ति पर कुछ और प्रकाश

प्रथम भागकी प्रस्तावनामें^१ हम वर्तमान प्रथमाग अर्थात् द्रव्यप्रमाणप्ररूपणामें कै तया अन्यत्रसे तीन चार ऐसे अन्तरणोंका परिचय करा चुके हैं जिनमें ' उत्तरप्रतिपत्ति ' और ' दक्षिण-प्रतिपत्ति ' इसप्रकारकी दो भिन्न भिन्न मान्यताओंका उल्लेख पाया जाता है । वहाँ हम कह आये हैं कि ' हमने इन उल्लेखोंका दूसरे उल्लेखोंकी अपेक्षा कुछ विस्तारसे परिचय इस कारणसे दिया है क्योंकि यह उत्तर और दक्षिण प्रतिपत्तिका मतभेद अत्यन्त महत्वपूर्ण और विचारणीय है । सम्भव है इनसे धबलाकारका तात्पर्य जैनसमाजके भीतरकी किन्हीं विशेष सांप्रदायिक मान्यताओंसे ही हो ' यहाँ हमारा संकेत यह था कि समस्त यह श्वेताम्बर और दिगम्बर मान्यता भेद हो और यह बात उक्त प्रस्तावनाके अन्तर्गत अपेजी वक्तव्यमें मैंने व्यक्त भी कर दी थी कि—

“ At present I am examining these views a bit more closely They may ultimately turn out to be the Svetambara and Digambara Schools ”

उक्त अन्तरणोंमें दक्षिणप्रतिपत्तिको ' पवाइजमाण ' और ' आहरियपरपरागय ' भी कहा है । अब श्रीजयध्वजमें एक उल्लेख हमें ऐसा भी दृष्टिगोचर हुआ है जहाँ ' पवाइजत ' तथा ' आहरियपरपरागय ' का स्फार्थ खोलकर समझाया गया है और अज्जमखुके उपदेशको वहाँ ' अपवाइजमाण ' तथा नागहस्ति क्षमाश्रमणके उपदेशको ' पवाइजत ' बतलाया है । यथा—

को पुण पवाइजतोवण्णो णाम बुत्तमेद ? स'वाहरियसम्मदो चिरकालमञ्जोच्छिण्णसपदायकमेणा-
गच्छमाणो जो सिस्मपरपराप् पवाइजजे पण्णविज्जदे सो पवाइजजतोवण्णो सि भण्णते । अथवा अज्जमखु
भववत्ताणमुवण्णो एत्थापवाइजमाणो णाम । णागह'सिखण्णणामुवण्णो पवाइजजतो सि वेत्त'वो ।

(जयधबला भ पत्र ९०८)

अर्थात् यहाँ जो ' पवाइजत ' उपदेश कहा गया है उसका अर्थ क्या है ? जो सर्व आचार्योंको सम्मत हो, चिरकालसे अव्युच्छिन्नसंप्रदाय-क्रमसे आ रहा हो और शिष्यपरपरासे प्रचलित और प्रज्ञापित किया जा रहा हो वह ' पवाइजत ' उपदेश कहा जाता है । अथवा, भगवान् अज्जमखुका उपदेश यहाँ (प्रकृत विषयपर) ' अपवाइजमाण ' है, तथा नागहस्ति-क्षमणका उपदेश ' पवाइजत ' है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

अज्जमखु और नागहस्तिके भिन्न मतोपदेशोंके अनेक उल्लेख इन सिद्धान्त ग्रन्थोंमें पाये जाते हैं, जिनकी कुछ सूचना हम उक्त प्रस्तावनामें दे चुके हैं । जान पटता है कि इन दोनों आचार्योंका जैनसिद्धान्तकी अनेक सूक्ष्म बातोंपर मतभेद था । जहा वीरसेनस्वामीके समुख ऐसे मतभेद उपस्थित हुए, वहा जो मत उन्हें प्राचीन परपरागत ज्ञात हुआ, उसे ' पवाइजमाण ' कहा ।

१ बदलुभाग माग, १ भूमिका पृष्ठ ५७

२ देखो पृ ९२, ९४, ९८ आदि, मूल व अनुवाद

तथा निम्न मन्त्री उन्हें प्रामाणिक प्राचान परंपरा नहीं मिली, उसे 'अपवाद्गजमाण' कहा है। प्रस्तुत उद्धरणसे अनुमान होता है कि उक्त प्रतिपत्तियोंसे उनका अभिप्राय किही विशेष गद्दी हुई मत-घातोंसे नहीं था। अर्थात् ऐसा नहीं था कि किसी एक आचार्यका मत सर्वथा 'अपवाद्गजमाण' और दूसरेका सर्वथा 'पवाद्गजमाण' हो। किंतु इन्हें दक्षिणप्रतिपत्ति और उत्तरप्रतिपत्ति क्यों कहा है यह फिर भी विचारणीय रह जाता है।

५. णमोकारमंत्रके सादित्व-अनादित्वका निर्णय।

द्वितीय भागकी प्रस्तावना (पृ ३३ आदि) में हम प्रगत कर चुके हैं कि धवलाकारने जीवद्वयखंड व वेदनाखंडके आदिमें जो शास्त्रके निबद्धमगल व अनिबद्धमगल होनेका विचार किया है उसका यह निष्कर्ष निकलना है कि जीवद्वयके आदिमें णमोकारमगलरूप मगल भगवान् पुण्यदत्त होनेसे यह शास्त्र निबद्धमगल है, किंतु वेदनाखंडके आदिमें 'णमो जिणाण' आदि नमस्कारात्मक मगलनाक्य होनेपर भी वह शास्त्र अनिबद्धमगल है, क्योंकि वे मगलसूत्र स्वयं भूत-बलिका रचना न होकर गौतमगणप्रकृत हैं। वेदनाखंडमें भी निबद्धमगलत्व तभी माना जा सकता है, जब वेदनाखंडको महाकर्मप्रकृतिपादुड मान लिया जाय और भूतबली आचार्यको गौतम गणधर, अन्य किसी प्रकारसे निबद्धमगलत्व सिद्ध नहीं हो सकता। इस विवेचनसे धवलाकारका यह मत स्पष्ट समझमें आता है कि उपलब्ध णमोकारमंत्रके आदि रचयिता आचार्य पुण्यदत्त ही हैं।

प्रथम भागमें उक्त विवेचनसंबन्धी मूलपाठका संपादन व अनुवाद करते समय हस्तलिखित प्रतियोंका जो पाठ हमारे समुच्च उपरिष्ठत था उसका सामञ्जस्य बैठाना हमारे लिये कुछ कठिन प्रतीत हुआ, और इसीसे हमें वह पाठ कुछ परिवर्तित करके मूठमें रचना पडा। तथापि प्रतियोंका उपलब्ध पाठ यथावत् रूपसे वहीं पादटिप्पणमें दे दिया था। (देखो प्रथम भाग पृ ४१)। किंतु अब मूडविद्वाकी ताडपत्रीय प्रतिसे जो पाठ प्राप्त हुआ है वह भी हमारे पादटिप्पणमें दिये हुए प्रतियोंके पाठके समान ही है। अर्थात्—

“ जा सुवस्सादीण सुपक्कतारेण कयदेवताणमोक्कतारे त णिवद्धमगल । जो सुवस्सादीण सुवक्कतारेण निबद्धदेवताणमावहाते वमणिवद्धमगल ”

अब वेदनाखंडके आदिमें दिये हुए धवलाकारके इसी विषयसंबन्धी विवेचनके प्रकाशमें यह पाठ समुचित जान पड़ता है। इसका अर्थ इसप्रकार होगा—

“ जो सूत्रप्रथके आदिमें सूत्रकारद्वारा देवनामस्कार किया जाता है, अर्थात् नमस्कार-वाक्य स्वयं रचकर निबद्ध किया जाता है उसे निबद्धमगल कहते हैं। और जो सूत्रप्रथके आदिमें सूत्रकारद्वारा देवनामस्कार निबद्ध कर दिया जाता है, अर्थात् नमस्कारवाक्य स्वयं न रचकर किसी अन्य आचार्यद्वारा पूर्वपठित नमस्कारनाक्य निबद्ध कर दिया जाता है, उसे अनिबद्धमगल कहते हैं। ”

इसप्रकार मूढविद्वोक्तीं प्रति व प्रचलित प्रतियोगे पाठनी पूर्णतया रक्षा हो जाती है, उसका वेदनाखण्डके आदिमें किये गये विवेचनसे ठीक सामजस्य बैठ जाता है, तथा उससे धवलाकारके णमोकारमन्त्रके कर्तृत्वसम्बन्धी उस मतकी पूर्णतया पुष्टि हो जाती है जिसका परिचय हम विस्तारसे गत द्वितीय भागकी प्रस्तावनामें करा आये हैं। णमोकारमन्त्रके कर्तृत्वसम्बन्धी इस निष्कर्ष-द्वारा कुछ लोगोंके मतसे प्रचलित एक मान्यताको बड़ी भारी ठेस लगती है। वह मान्यता यह है कि णमोकारमन्त्र अनादिनिधन है, अतएव यह नहीं माना जा सकता कि उस मन्त्रके आदिकर्ता पुष्पदन्ताचार्य हैं। तथापि धवलाकारके पूर्वोक्त मतके परिहार करनेका कोई साधन व प्रमाण भी अबतक प्रस्तुत नहीं किया जा सका। गभीर विचार करनेसे ज्ञात होता है कि णमोकारमन्त्रसम्बन्धी उक्त अनादिनिधनत्वकी मान्यता व उसके पुष्पदन्ताचार्यद्वारा कर्तृत्वकी मान्यतामें कोई विरोध नहीं है। भावकी (अर्थकी) दृष्टिसे जबसे अरिहतादि पंच परमेष्ठीकी मान्यता है तभीसे उनको नमस्कार करनेकी भावना भी मानी जा सकती है। किंतु 'णमो अरिहताण' आदि शब्द-रचनाके कर्ता पुष्पदन्ताचार्य माने जा सकते हैं। इस बातकी पुष्टिके लिये मैं पाठकोंका ध्यान श्रुतान्तरसम्बन्धी कथानककी ओर आकर्षित करता हू। धवला, प्रथम भाग, पृ ५५ पर कहा गया है कि—

‘सुवमोद्गुण अचक्रो विथयरादो, गयदो गणहरदेवादो वि’

अर्थात् सूत्र अर्धप्ररूपणाकी अपेक्षा तीर्थंकरसे, और प्रथमरचनाकी अपेक्षा गणधरदेवसे अनतीर्ण हुआ है।

यहाँ फिर प्रश्न उत्पन्न होता है—

द्रव्यभावाभ्यामकृत्रिमत्वत् सदा स्थितस्य सुवस्य कथमवतार इति ?

अर्थात् द्रव्य-भावसे अकृत्रिम होनेके कारण सर्वदा अवस्थित श्रुतका अवतार कैसे हो सकता है ?

इसका समाधान किया जाता है—

एतन्मन्त्रमभविष्यद्यदि द्रव्याधिकृतयो ऽ विप्रक्षिप्यत् । पयत्प्राविक्नयपेज्ञायामवतारस्तु पुनर्घटत् पृव ।

अर्थात् यह शक्यता तो तत्र बनती जब यहाँ द्रव्यार्थिक नयकी निरक्षा होती। परतु यहाँ-पर पर्यायार्थिक नयकी अपेक्षा होनेसे श्रुतका अवतार तो बन ही जाता है।

आगे चलकर पृष्ठ ६० पर कर्ता दो प्रकारका बतलाया गया है, एक अर्थकर्ता व दूसरा प्रथकर्ता। और फिर निस्तारके साथ तीर्थंकर भगवान् महावीरको श्रुतका अर्थकर्ता, गौतम गणधरको द्रव्यश्रुतका प्रथकर्ता तथा भूतत्रलि-पुष्पदन्तको भी खडसिद्धान्तकी अपेक्षा कर्ता या उपतत्कर्ता कहा है। यथा—

‘तय कत्ता सुविदो, अचक्रता गयक्ता चेदि । महावीरोऽथकर्ता । एवविधो महावीरोऽर्थकर्ता । तदो भावसुदस्स अथपदाण च विथयरो कत्ता । वित्थयरादो सुदपज्जापण गोदमो परिणदो चि दव्व-

सुदस्स गोदमा वसा । तथा गधरयणा जादति । तदो ण्य खड्गसिद्धत पट्टण भूदवलि-पुप्फयथाहरिया वि क्कारो उच्चति । तदा मूलवत्तत्ता बहुमाणभट्टारो, अणुतत्तत्ता गादमसामी, उवततत्तत्ता भूदवलि-पुप्फ यत्ताद्यो घात्तरायदोममोहा मुणिवरा । किमर्थं कता प्ररूप्यत ? शास्त्रस्य प्रामाण्यप्रदर्शनार्थम्, 'वक्त्वा प्रामाण्याद् यच्चनप्रामाण्यम्' इति न्यायान् । (षट्खण्डागम भाग १, पृष्ठ १ - ७२)

उसी प्रकार, स्वयं धरल ग्रथ आगम है, तथापि अर्थकी दृष्टिसे अत्यन्त प्राचीन होनेपर भी उपलभ्य शब्दरचनाकी दृष्टिसे उसके कर्ता वीरसेनाचार्य ही माने जाते हैं । इससे स्पष्ट है कि णमोकारमत्तको द्रयार्थिक नयसे पुष्पदत्ताचार्यसे भी प्राचीन मानने व पर्यायार्थिक नयसे उपलब्ध भाषा व शब्दरचनाके रूपमें पुष्पदत्ताचार्यकृत माननेमें कोई विरोध उत्पन्न नहीं होता । वर्तमान प्राकृत भाषामक रूपमें तो उसे सादि ही मानना पडेगा । आज हम हिन्दी भाषामें उसी मन्त्रको 'अरिहतोंको नमस्कार' या अग्नेजीमें 'Bow to the Worshipful' आदि रूपमें भी उच्चारण करते हैं, किंतु मन्त्रका यह रूप अनादि क्या, बहुत पुराना भी नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि, हम जानते हैं कि स्वयं प्रचलित हिन्दी या अग्नेजी भाषा ही कोई हजार आठसौ वर्षसे पुरानी नहीं है । हा, इस बातकी खोज अवश्य करना चाहिये कि क्या यह मन्त्र उक्त रूपमें ही पुष्पदत्ताचार्यके समयसे पूर्वकी किसी रचनामें पाया जाता है ? यदि हां, तो फिर विचारणाय यह होगा कि धवलाकारके तत्सबधी कथनोंका क्या अभिप्राय है । किन्तु जनतक ऐसे कोई प्रमाण उपलब्ध न हों तबतक अब हमें इस परम पावन मन्त्रके रचयिता पुष्पदत्ताचार्यको ही मानना चाहिये ।

६ शंका-समाधान

षट्खण्डागम प्रथम भागके प्रकाशित होनेपर अनेक विद्वानोंने अपने विशेष पत्रद्वारा अथवा पत्रोंमें प्रकाशित समालोचनाओंद्वारा कुछ पाठसम्बन्धी व सैद्धांतिक शक्य उपस्थित की हैं । यहाँ उन्हीं शकाओंका संक्षेपमें समाधान करनेका प्रयत्न किया जाता है । ये शका-समाधान यहाँ प्रथम भागके पृष्ठक्रम से व्यवस्थित किये जाते हैं ।

पृष्ठ ६

१ शंका--'वियलियमलमूद्वसणुत्तिलया' में 'मलमूद' की जगह 'मलमूल' पाठ अधिक ठारु प्रतीत होता है, क्योंकि सम्यग्दर्शनके पचीस गठ दोषोंमें तीन मूदता दोष भी सम्मिलित हैं ।

(विवेकानुदय, भा० २०-२०-४०)

समाधान--'मलमूद' पाठ सद्धारनपुरकी प्रतिके अनुसार रखा गया है और मूडविद्रीसे जो प्रनिमिळन होकर सरोधन पाठ आया है, उसमें भी 'मलमूद' के स्थानपर कोई पाठ-परिवर्तन नहीं प्राप्त हुआ । तथा उसका अर्थ सब प्रकारके गठ और तीन मूदताएँ करना असंगत भी नहीं है ।

२ शंका—गाथा ४ में 'महु' पाठ है, जिसका अनुवाद 'मुझपर' किया गया है। समझमें नहीं आता कि यह अनुवाद कैसे ठीक हो सकता है, जब कि 'महु' का संस्कृत रूपान्तर 'मधु' होता है।
(विवेकाम्युदय, ता० २०-१०-४०)

समाधान—प्रकृतमें 'महु' का संस्कृत रूपान्तर 'मह्यम्' करना चाहिए। देखो हैम ध्याकरण 'महु मञ्जु हमि हस्त्रात्' ८, ४, ३७९ इसीके अनुसार 'मुझपर' ऐसा अर्थ किया गया है।

३ शंका—गाथा ४ में 'दागवरसीहो' पाठ है। पर उसमें नाश करनेका सूचक 'हर' शब्द नहीं है। 'वर' की जगह 'हर' रखना चाहिए था। (विवेकाम्युदय, ता० २० १० ४०)

समाधान—हमारे सन्मुख उपस्थित समस्त प्रतियोंमें 'दागवरसीहो' ही पाठ था और मूढविद्वीसे उसमें कोई पाठ-परिवर्तन नहीं मिला। तब उसमें 'वर' के स्थानपर जबरदस्ती 'हर' क्यों कर दिया जाय, जब कि उसका अर्थ 'हर' के बिना भी सुगम है। 'वादीभिंसिह' आदि नामोंमें विनाशत्रोवरु कोई शब्द न होते हुए भी अर्थमें कोई कठिनाई नहीं आती।

पृष्ठ ७

४ शंका—गाथा ५ में 'दुम्भत' पाठ है जिसका अर्थ किया गया है 'दुष्कृत अर्थात् पापोंका अन्त करनेवाले' यह अर्थ किसप्रकार निकाला गया, उक्त शब्दका संस्कृत रूपान्तर क्या है, यह स्पष्ट करना चाहिए।
(विवेकाम्युदय, २० १० ४०)

समाधान—'दुम्भत' का संस्कृत रूपान्तर है 'दुष्कृतान्त' जिसका अर्थ दुष्कृत अर्थात् पापोंका अन्त करनेवाले सुस्पष्ट है।

५ शंका—गाथा ५ में '—वह मया दत्त' पाठ है, जिसका रूपान्तर होगा '—वत् सदा दत्त'। इसमें हमें समझ नहीं पड़ता कि 'दन्त' शब्दसे इन्द्रियदमनका अर्थ किसप्रकार लाया जा सकता है।
(विवेकाम्युदय, २० १० ४०)

समाधान—प्राकृतमें 'दत्त' शब्द 'दान्त' के लिये भी आता है। यथा, 'दत्तेण विषेण चरति धीता' (प्राकृतसूक्तारणमाला) पाइअसदमहण्णओ कोपमें 'दत्त' का अर्थ 'जितेन्द्रिय' दिया गया है। इसीके अनुसार 'निरन्तर पचेन्द्रियोंका दमन करनेवाले' ऐसा अनुवाद किया गया है।

६ शंका—गाथा ६ में 'विगिहयवमहपर' का अर्थ होना चाहिये 'जिन्होंने ब्रह्मा-द्वैतकी व्यापकताको नष्ट कर दिया है और निर्मलज्ञानके रूपमें ब्रह्मकी व्यापकताको बढ़ाया है'।
(विवेकाम्युदय, २०-१० ४०)

समाधान—जब काव्योंमें एकही शब्द दो बार प्रयुक्त किया जाता है तब प्राय दोनों जगह उसका अर्थ भिन्नभिन्न होता है। किन्तु उक्त अर्थमें 'वमह' का अर्थ दोनों जगह 'मय' से लिया गया है, और उनमें भेद करनेके लिए एकमें 'अद्वैत' शब्द अपनी ओरसे ढाढा मगा

है, जिसके लिए मूलमें सर्वथा कोई आधार नहीं है। प्राकृतमें 'वम्मह' शब्द 'ममय' के लिए आता है। हैम प्राकृतव्याकरणमें इसके लिए एक स्वतंत्र सूत्र भी है— 'ममथे व' ८, १, २४२ इसकी वृत्ति है 'ममथे मस्य वो भवति, वम्महो'। इसीके अनुसार हमने अनुवाद किया है, जिसमें कोई दोष नहीं।

पृष्ठ १५

७ श्रुति—आगमें मूल 'सम्महसुत्त' इति लिखितमस्य भवन्निरथ वृत्त 'सम्मत्तितके'। सम्मत्तितर्कव्य श्वेताम्बरीयप्रथमस्थित, तस्य निदश आचार्य वृत्त वा सम्महसुत्त नाम त्रिमपि दिग्म्बरीय ग्रन्थ वतत ।
(प सम्मनलाकजा तरुतार्थ, पत्र ता ४१४१)

अर्थात् मूलके 'सम्महसुत्त' से सम्मत्तितर्कका अर्थ लिया है जो श्वेताम्बरीय ग्रन्थ है। आचार्यने उसीका उल्लेख किया है या इस नामका कोई दिग्म्बरीय ग्रन्थ भी है।

समाधान—'नाम उवणा दविय' इत्यादि गाथा उद्धृत करके जो सम्मत्तिसूत्रका उल्लेख किया है वह सम्मत्तितर्क नामका प्राप्त ग्रन्थ ही प्रतीत होता है, क्योंकि यह गाथा तथा उससे पूर्व उद्धृत चार गाथाएँ वहाँ पाई जाती हैं। सम्मत्तितर्कके कर्ता सिद्धसेनका स्मरण महापुराण आदि अनेक 'दिग्म्बर ग्रन्थोंमें भी पाया जाता है, जिससे अनुमान होता है कि ये आचार्य दोनों सम्प्रदायोंमें सम्मत्त रहे हैं। इससे अब कोई ग्रन्थ इस नामका जैन साहित्यमें उपलब्ध भा नहीं है।

पृष्ठ १९

८ श्रुति—'वषथनिरवेष्टो मगलमहो नाममगल' इत्यत्र तस्य मगलस्याधारनिपयेव्यष्ट विषेणजीवाधारकथने भाषाया जिनप्रतिमाया उदाहरण प्रदत्त, तत्कथ मगल्लते । अजीवीदाहरणे जिनमन्त्रमुदादिपवामिति ।
(प सम्मनलाक जा तर्कतार्थ, पत्र ता ४-१४१)

अर्थात् नाममगलके आठ प्रकारके आधार—कथनमें भाषानुवादमें अजीव आधारका उदाहरण जिनप्रतिमाका दिया गया है, सो कैसे सगत है? जिनमन्त्रका उदाहरण अधि-
क पा'।

समाधान—ध्वलाकारने नाममगलका जा लक्षण दिया है और उसके जो आधार बतलाये हैं, उनसे तो यही ज्ञात होता है कि एक या अनेक चेतन या अचेतन मगल द्रव्य नाममगलके आधार होते हैं। उदाहरणार्थ, यदि हम पार्श्वनाथ तीर्थंकरका नामोच्चारण करें तो यह एक जीवाश्रित नाममगल होगा। यदि हम चौबीस तीर्थंकरोंका नामोच्चारण करें तो यह अनेक जीवाश्रित नाममगल होगा। यदि हम अमरेश्व पार्श्वनाथ, या केशरियानाथ आदि प्रतिमाओंका नामोच्चारण करें तो यह अजीवाश्रित नाममगल होगा, इत्यादि। इस प्रकार जिनप्रतिमा नाममगलका आधार बन जाती है, जिसका कि उन्नी पृष्ठपर दा हुई टिप्पणियोंसे यथोचित समर्थन हो जाना है। इस प्रकार पण्डितजी द्वारा सूत्राया गया जिनप्रतिमा भी अजीव नाममगलका आधार माना जा सकता है।

पृष्ठ २९

९ शंका—पृ० २९ पर क्षेत्रमण्डके कथनमें लिखा है 'अर्धाष्टारम्यादि पचविंशत्युत्तर पचपञ्च शयत्रमागसरीर' जिसका अर्थ आपने 'साढ़े तीन हायसे लेकर ५२५ धनुष तकके शरीर' किया है, और नीचे फुटनोटमें 'अर्धाष्ट इत्यत्र अर्धचतुर्थ इति पाठेन भाष्यम्' ऐसा लिखा है। सो आपने यह कहासे लिखा है और क्यों लिखा है ? (नानकचदजी, पृ १-४-४०)

समाधान—कैरठज्ञानको उत्पन्न करनेवाले जीवोंकी सबसे जघन्य अरगाहना साढ़े तीन हाय (अरलि) और उकृष्ट अरगाहना पांचसौ पचीस धनुष प्रमाण होती है। सिद्धजीवोंकी जघन्य और उकृष्ट अरगाहना इमालिए पूर्वोक्त बनलाई है। इसके लिए त्रिभोकसारकी गाथा १४१-१४२ देखिये। सस्कृतमें साढ़े तीनको 'अर्चतुर्थ' कहते हैं। इसी बातको ध्यानमें रखकर 'अर्धाष्ट' के स्थानमें 'अर्चतुर्थ' का सशोभन सुझाया गया है, वह आगमानुकूल भी है। 'अर्धाष्ट' का अर्थ 'साढ़े सात' होता है जो प्रचलित मायताके अनुकूल नहीं है। इसी भागके पृष्ठ २८ की टिप्पणीकी दूसरी पक्तिमें त्रिभोरुपशक्ति का जो उद्धरण (आहुदहःपण्णदी) दिया है उसमें भी सुझाए गये पाठकी पुष्टि होती है।

पृष्ठ ३९

१० शंका—धरतराजमें क्षापोपशमसम्पत्त्वकी स्थिति ६६ सागरसे न्यून बतलाई है, जब कि सर्वार्थसिद्धिमें पूरे ६६ सागर और राजनार्तिकमें ६६ सागरसे अधिक बतलाई है ? इसका क्या कारण है ! (नानकचदजी, पृ १-४-४१)

समाधान—सर्वार्थसिद्धिमें क्षापोपशमिकसम्पत्त्वकी उकृष्ट स्थिति पूरे ६६ सागर वा राजनार्तिकमें सम्पादरशनसामायकी उकृष्ट स्थिति साधिक ६६ सागर और धरता ठीका पृ ३९ पर सम्पादरशनकी अनेका मण्डली उकृष्ट स्थिति देशोन छयासठ सागर कही है। इस मतभेदका कारण जाननेके पूर्व ६६ सागर किम प्रकार पूरे होते हैं, यह जान लेना आवश्यक है।

धवशाकारने जीवद्वाराण छडकी अन्तरप्ररूपणामें ६६ सागरकी स्थितिके पूरा करने का क्रम इसप्रकार दिया है —

पकी तिरिश्चो मणुस्वो वा एतद-त्राविद्ववातियवेवेमु चोदयतागरोपमाअट्टिदिण्णु उपरण्णो । एक गागरोवम गमिय विदिदमागरोवमादिममण सन्नत पटिवण्णो । तेरम सागरोवमाणि तथ्य अट्टिय सम्मलण सर सुदो मणुमे जादो । तथ सजम मज्जमायवम वा अणुगालिय मणुमाउण्ण्य-त्राचीनमागरोवमाअट्टिदि ण्णु भातगण्णुददेवु उववण्णो । ततो सुदो मणुमे जादो । तथ सजममणुमारिय उवरिमगेवम देवेमु मणुमा उण्ण्यपट्टीसमागरोवमाअट्टिदिण्णु उववण्णो । अतोमुहुत्ताअविदिमागरोवमपरिमसमण परिणामपचपण्ण सम्गामिण्णु उव । × × × पयो उवाविद्वमो अउण्णोउवापण्णु उवो । पसमण्णो पुग देण केण वि पवारोण हायट्टी पूरेदम ।

अर्पण्—फोरे एक तियेव अयवा मणुप च्चैदद सागरोपमकी आयुरिपतिवाळे छातव

कापिष्ठ कल्पवासी देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहाँपर एक सागरोपम काल मितान्तर दूसरे सागरोपमके आदि समयमें सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ और तेरह सागरोपम तक वहाँ रहकर सम्यक्त्वके साथ ही च्युत होकर मनुष्य हो गया। उस मनुष्यमयमें समयको अथवा समयमासयमको परिपालनकर इस मनुष्यभवसम्बन्धी आयुसे कम बाईस सागरोपम आयुकी स्थितिनाले आरण अभ्युन कल्पके देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहाँसे च्युत होकर पुन मनुष्य हुआ। इस मनुष्यमयमें समयको धारणकर उपरिम प्रैतयकमें मनुष्य आयुसे कम इकतीस सागरोपम आयुकी स्थितिनाले अहमिन्द्र देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहाँ पर अतर्मुहूर्त कम उयासठ सागरोपमके अंतिम समयमें परिणामोंके निमित्तसे सम्यग्मिथ्याको प्राप्त हुआ। x x x यह उत्पात्तिक्रम अभ्युपनजननोंके व्युत्पादनार्थ कहा है। परमार्थसे तो जिस किसी भी प्रकारसे उयासठ सागरोपमकालको पूरा करना चाहिए।

सर्वार्थसिद्धिकार जो क्षायोपशमिकसम्यक्त्वकी स्थिति पूरे ६६ सागर बना रहे हैं, यह पट्टखंडागम के दूसरे खंड सुदाबधके आगे बनाये जानेवाले सूत्रोंके अनुसार ही है, उसमें धवला से कोई मतभेद नहीं है। भेद केवल धवलाके प्रथम भाग पृ ३९ पर बताई गई देशोन ६६ सागरकी स्थितिसे है। सो वहाँपर ध्यान देनेकी बात यह है कि धवलाकार वेदकसम्यक्त्व या सम्यक्त्वसामान्यकी स्थिति नहीं बता रहे हैं, किंतु मगलकी उत्कृष्ट स्थिति बता रहे हैं, और वह भी सम्यग्दर्शनकी अपेक्षासे, जिसका अभिप्राय यह समझमें आता है कि सम्यक्त्व होने पर जो असंख्यातगुणश्रेणी कर्म-निर्जरा सम्यक्त्वकी जीवके हुआ करती है, उसीकी अपेक्षा मगल अर्थात् पापको गलनेवाला होनेसे वह सम्यक्त्व मगलरूप है, ऐसा कहा गया है। किंतु जो जीव ६६ सागर पूर्ण होनेके अंतिम मुहूर्तमें सम्यक्त्वको छोड़कर नाचेके गुणस्थानोंमें जा रहा है, उसके सम्यक्त्वकालमें होनेवाली निर्जरा बढ़ हो जाती है, क्योंकि परिणामोंमें सत्केशकी वृद्धि होनेसे वह सम्यक्त्वसे पतनो मुख हो रहा है। अतएव इस अंतिम अतर्मुहूर्तसे कम ६६ सागर मगलकी उत्कृष्ट स्थिति बताई गई प्रतीत होती है।

अब रही राजवार्तिकमें बनाये गये साधिक ६६ सागरोपमकालकी बात सो उस विषयमें एक बात खास ध्यान देनेकी है कि राजवार्तिककार जो साधिक छयासठ सागरकी स्थिति बता रहे हैं वह क्षायोपशमिकसम्यक्त्वकी नहीं बता रहे हैं किंतु सम्यग्दर्शनसामान्यकी ही बता रहे हैं, और सम्यग्दर्शनसामान्यकी अपेक्षा वह अधिकता उन भी जाती है। उसका कारण यह है कि एकबार अनुत्तरादिकमें जाकर आये हुए जीवके मनुष्यमयमें क्षायिकसम्यक्त्वकी उत्पत्तिकी भी समाधान है। पुन क्षायिकसम्यक्त्वको प्राप्तकर समय हो अनुत्तरादिकमें उत्कृष्ट स्थितिमें प्राप्त हुआ। ऐसे जीवके साधिक छयासठ सागर का स्थान खंडकी अन्तर प्ररूपणाके है, और क्षायोपश ही रहता है।

‘ उच्छस्तेण छावट्टि सागरोन्माणि सादिरैयाणि ॥ त जहा—पच्छो अट्टावीमसवकम्मिओ पुब्बको डाउअमणुसेसु उववण्णो अट्टवरिसिओ वेद्दगमम्मत्तमप्पमत्तगुण च जुगव पट्टिवण्णो १ तदो पमत्तापमत्तपरा वत्तसहस्स कादूण २ उवसमसेदीपाओग्गविसोहीए विसुद्धो ३ अपुब्बो ४ अणियट्ठी ५ सुहुमो ६ उवसतो ७ पुणो वि सुहुमो ८ अणियट्ठी ९ अपुब्बो १० होदूण हेट्ठा पट्टिय अतरिदो देसूणपुब्बकोट्ठिं सज्जममणुपाले-दूण मद्दो तेत्तीससागरोवमाउट्टिदीएसु देवेषु उववण्णो । तत्तो चुदो पुब्बकोडाउणसु मणुसेसु उववण्णो । खह्य पि ट्ठिय सत्तम कादूण काल गदो । तेत्तीमसागरोवमाउट्टिदीएसु देवसु उववण्णो । तत्तो चुदो पुब्ब-कोडाउणसु मणुसेसु उववण्णो X सज्जम पट्टिवण्णो । अतोमुहुत्तावसेसे ससारे अपुब्बो जादो लद्धमत्तर ११ अणियट्ठी १२ सुहुमो १३ उवसतो १४ भूओ सुहुमो १५ अणियट्ठी १६ अपुब्बो १७ अप्पमत्तो १८ पमत्तो जादो १९ अप्पमत्तो २० उवरि छ अतोमुहुत्ता अट्टहि वस्सेहि छब्बीसतोमुहुत्तेहि य ऊणा पुब्बकोट्ठीहि सादिरैयाणि छावट्टिसागरोवमाणि उच्छस्सतर होदि ’

यह विवरण उपशमक जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तरकाल बताते हुए अन्तरप्ररूपणोंमें आया है । अर्थात् कोई एक जीव उपशमश्रेणीसे उतरकर साधिक छयासठ सागरके बाद भी पुन उपशमश्रेणीपर चढ सकता है । उक्त गद्यका भाव यह है—

‘ मोहकर्मकी अट्टाईस प्रवृत्तियोंकी सत्ता रखनेवाला कोई एक जीव पूर्वकोटिकी आयु-वाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ और आठ वर्षका होकर वेदकसम्यक्त्व और अप्रमत्त गुणस्थानकी युगपत् प्राप्त हुआ । पश्चात् प्रमत्त अप्रमत्त गुणस्थानोंमें कईबार था जा कर उपशमश्रेणीपर चढा और उतरकर आठ वर्ष और दश अन्तर्मुहूर्त कम पूर्वकोटी वर्षनक सयमको पालके मरणकर तेतीस सागरकी आयुवाला देव हुआ । वहासे च्युत होकर पूर्वकोटीकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ । यहांपर क्षायिकसम्यक्त्वकी भी धारण कर तथा सयमी होकर मरा और पुन तेतीस सागरोपम की स्थिति वाले देवोंमें उत्पन्न हुआ । वहासे च्युत हो पुन पूर्वकोटीकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ और यथा-समय सयमको धारण किया । जब उसके ससारमें रहनेका काल अन्तर्मुहूर्त प्रमाण रह गया, तब पहले उपशमश्रेणीपर चढा, पीछे क्षपकश्रेणीपर चढकर निर्वाणको प्राप्त हुआ । इसप्रकारसे उपशमश्रेणीवाले जीवका उत्कृष्ट अन्तर आठ वर्ष और छब्बीस अन्तर्मुहूर्तोंसे कम तीन पूर्वकोटियोंसे अधिक छयासठ सागरोपमकाल प्रमाण होता है ।

इस अन्तरकाल में रहते हुए भी वह बराबर सम्यग्दर्शनसे युक्त बना हुआ है, भले ही प्रारम्भमें ३३ सागर तक क्षायोपशमिकसम्यक्त्वी और बाद में क्षायिकसम्यक्त्वी रहा हो । इस प्रकार सम्यग्दर्शनसामान्यकी दृष्टिसे साधिक छयासठ सागरकी स्थितिका कथन युक्तिसंगत ही है और उसमें उक्त दोनों मतोंसे कोई विरोध भी नहीं आता है ।

सुशब्दके कालानुयोगद्वारमें भी सम्यक्त्वमार्गणाके अन्तर्गत सम्यक्त्वसामान्यकी उत्कृष्ट स्थिति ६६ सागरसे कुछ अधिक दी है । यथा—

सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिद्धी केवचिर कात्तादो होदि ! जहण्णेण अतोमुहुत्त । उच्छस्तेण छावट्टिसाग-रोवमाणि सादिरैयाणि ।

इस सूत्रकी व्याख्यामें कहा गया है कि कोई मिथ्यादृष्टि जीव तीनों कारणोंको करके प्रथमोपशमसम्पत्त्वको ग्रहण कर अतनुद्धर्तकालके बाद वेदकसम्पत्त्वको प्राप्त होकर उसमें तीन पूर्वकैटिबोंसे अत्रिक व्यालास सागरोपम विनाकर बादमें क्षायिकसम्पत्त्वको धारणकर और चौथीस सागरोपमकाले देवोंमें उत्पन्न होकर पुन पूर्वकोटाका आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले जीवके सारिक ६६ सागरकाल सिद्ध हो जाता है।

किंतु वेदकसम्पत्त्वका उत्पन्न स्थिति बतलाते हुए पूरे ६६ सागर ही दिये हैं, यथा—

वेदकसम्पत्त्वाद्देवैर्विचर कालान्ते ह्येति ? अहश्मणे अतोमुद्धृत । वद्वरसण छावद्विसागरोपमाणि ।
(धवला अ प, ५०७)

इस सूत्रका व्याख्या करते हुए कहा गया है कि मनुष्यभगकी आयुसे कम देवायुवाले जीवोंमें उत्पन्न कराना चाहिए और इसी प्रकारसे पूरे ६६ सागर काल वेदकसम्पत्त्वकी स्थिति पूरी करना चाहिए।

वक्त सारे कथनका भाव यह हुआ कि सम्बन्धदर्शनसामान्यकी अपेक्षा साधिक ६६ सागर, वेदकसम्पत्त्वकी अपेक्षा पूरे ६६ सागर, और भगवत्पर्यायकी अपेक्षा देशान्त ६६ सागरकी स्थिति कही है, इसलिए उनमें परस्पर कोई मत-भेद नहीं है।

पृष्ठ ४२

११. श्रुत्वा—जमो अरिहताणमिन्ध्र अरिमाहस्तस्य हननात् अरिहता शेषघातिनामविनामावि
त्वात् अरिहता इति प्रतिपादितम् । तदभीष्टमाचार्ये । पुन अन्तरमाल् उच्यते वा ' रवो ज्ञानरगावरणादय
मोहोऽपि रच, तयो हननात् अरिहता, इति लिखितम् तदत्र अरहता इति पद प्रतीयते । भवद्विरपि श्रीमू
लाचारादिप्रधानां गाथापिपण्णो निम्न लिखितं तत्र गाथायामपि अरहता लिखितम् । आचार्योणासुभयम
भीष्ट प्रतीयते ' जमो अरिहताण, जमो अरहताण ' परन्तु तत्रयत्र कथने ' जमो अरिहताण ' लिखितम् ।
इत्यत्र लेखकस्मृतिस्तु नास्ति वाच्यत् प्रयोजनम् ?
(५० हम्मनलाज, पृ ४११)

अर्थात् धनलाकारने जमोकारमत्रके प्रथम चरणके जो विविध अर्थ किये हैं उनसे अनुमान होता है कि आचार्यको अरिहत और अरहत दोनों पाठ अभीष्ट हैं। किन्तु आपने केवल ' अरिहता ' पाठ ही क्यों लिखा ?

समाधान—जमोकारमत्रके पाठमें तो एकही प्रकारका पाठ रखा जा सकता है। तो भी ' जमो अरिहताण पाठ रचनेमें यह निशेधता है कि उससे अरिहता और अर्हत् दोनों प्रकारके अर्थ उभरे जा सकते हैं। प्राकृत व्याकरणानुसार अर्हत् शब्दके अरहत, अरुहत व अर्हित तीनों प्रकारके पाठ हो सकते हैं। अतएव अरिहत पाठ रचनेसे उक्त दोनों प्रकारके अर्थों की शुभांश रहती है। यह बात अरहत पाठ रचनेसे नहीं रहती (देखो परिशिष्ट पृ ३८)

१२ श्रुत्वा—' अपरिवादीयं पुण सयत्तुप्रपागा समेजसहस्तम् ' । और यदि परिपाटी
प्रमकी अपेक्षा न की जाय तो उस समय सत्यान हजार सकल श्रुतके धारी हुए। भगवान् महावीरके

समयमें तो गिने जुने ही श्रुतऋषि ही हुर हैं । सत्यात हजार सकल श्रुतके धारियोंका पता तो शास्त्रोंसे नहीं लगता । अत यह अश विचारणीय प्रतीत होता है । (पृष्ठ ६५)

(जैनसंदेश, १५ फरवरी १९४०)

समाधान—त्रिलोऋषिप्रवृत्ति, हरिवंशपुराण आदिमें भगवान् महावीरके तीर्थकाळमें पूर्वधारी ३००, केवलज्ञानी ७००, त्रिपुलमती मनःपर्ययज्ञानी ५००, शिक्षक ९९००, अवधिज्ञानी १३००, वैक्रियिकऋद्धिधारी ९०० और वादी ४०० बतलाये हैं । इनमें यद्यपि पूर्वधारी केवल तीनसौ ही बतलाये हैं, पर केवलज्ञानी केवलज्ञानोत्पत्तिके पूर्व श्रेणी-आरोहणकाळमें पूर्वविद् हो चुके हैं और त्रिपुलमती मनःपर्ययज्ञानी जीव तद्मन-भोक्षगामी होनेके कारण पूर्वविद् होंगे । अवधिज्ञानी आदि साधुओंमें भी कुछ पूर्वविद् हों तो आश्चर्य नहीं । पर अवधिज्ञान आदिकी विशेषताके कारण उनकी गणना पूर्वविदोंमें न करके अवधिज्ञानी आदिमें की गई हो । इस प्रकार परिपाटी क्रमके बिना भगवान् महावीरके तीर्थकाळमें हजारों द्वादशांगधारी माननेमें कोई आपत्ति नहीं दिखाई देती है ।

पृष्ठ ६८

१३ शंका—‘ घटगारवपट्टिचद्वे ’ का अर्थ ‘ रसगारवके आधीन होकर ’ उचित नहीं जचता । गारव (गारव !) दोषका अर्थ मैंने किसी स्थानपर देखा है, किन्तु स्मरण नहीं आता । ‘ घट ’ का अर्थ रस भी समझमें नहीं आता । स्पष्ट करनेकी आवश्यकता है ।

(जैनसंदेश, १५ फरवरी १९४०)

समाधान—‘ गारव ’ पदका अर्थ गौरव या अभिमान होता है, जो तीन प्रकारका है—ऋद्धिगारव, रसगारव और सातगारव । यथा—

तत्रो गारवा पञ्चत्ता । त जहा—इद्धिगारवे रसगारवे सातगारवे । स्था ३, ४

ऋद्धियोंके अभिमानको ऋद्धिगारव, दधि दुग्ध आदि रसोंकी प्राप्तिसे जो अभिमान हो उसे रसगारव, तथा शिष्यों व भक्तों आदि द्वारा प्राप्त परिचर्याके सुखको सातगारव या सुखगारव कहते हैं ।

उक्त वाक्यसे हमारा अभिप्राय ‘ रसादि गारवके आधीन होकर ’ से है । मूलपाठका संस्कृत रूपांतर हमारी दृष्टिमें ‘ घृत्तगारवप्रतिचद्वे ’ रहा है । प्रतिधोंमें ‘ घट ’ के स्थानपर ‘ दध ’ पाठ भी पाया जाता है जिससे यदि दधिका अभिप्राय लिया जाय तो उपलक्षणासे रसगारवका अर्थ आजाता है ।

पृष्ठ १४८

शंका १४.—प्रतिमास प्रमाणज्ञापमाणञ्च ’ इत्यादि वाक्यमें प्रतिमासका अनध्यवसायरूप अर्थ ठीक प्रतीत नहीं होता । मेरी समझमें उसका अर्थ वहाँ ज्ञान सामान्य ही होना चाहिए, क्योंकि ज्ञानका प्रामाण्य और अप्रामाण्य वाद्यार्थ पर अवलम्बित है, अत यह विसवादी भी हो

कि उससे पूर्वके 'शरीरस्य स्थौल्यनिवर्तक' इत्यादिसे, क्योंकि उसी शास्त्रीय परिभाषाके करनेपर, जो उससे पहले नहीं की गई है, शकाकारने 'तथापि' से शकाका उत्पान किया है।

(जैनसंदेश, १५ फरवरी १९४०)

समाधान—यहांपर 'तथापि' से शका मान लेनेपर 'शरीरस्य स्थौल्यनिवर्तक कर्म वादर-
मुच्यत' इसे आगमिक परिभाषा मानना पड़ेगी। परन्तु यह आगमिक परिभाषा नहीं है।
धवलाकारने स्वयं इसके पहले 'न वादरशब्देऽयं स्थूलपर्याय' इत्यादि रूपसे इसका निषेध कर
दिया है। अतः शकाकारके मुखसे ही स्थूल और सूक्ष्मकी परिभाषाओंका कहलाना ठीक है, ऐसा
समझकर ही उन्हें शकाके साथ जोड़ा गया है।

पृष्ठ २९७

१८ शंका—'ऋद्धेरप्यभावात्' पाठ अशुद्ध प्रतीत होता है, उसके स्थानमें 'ऋद्धेरप्य-
भावात्' पाठ ठीक प्रतीत होता है।

(जैनसंदेश, १५ फरवरी १९४०)

समाधान—उक्त पाठके ग्रहण करनेपर भी 'ऋद्धेरपरि' इतने पदका अर्थ ऊपरसे ही
जोड़ना पड़ता है, और उस पाठके लिए प्रतियोंका आधार भी नहीं है। इसलिए हमने उपलब्ध पाठको
अ्योंका ल्यों रख दिया था। हालहमें धवला अ पत्र २८५ पर एक अन्य प्रकरण सम्बन्धी एक
वाक्य मिला है, जो उक्त पाठके सशोऽनमें अधिक सहायक है। यह इस प्रकार है—'पमचेत्तेजा-
हार णरिथि, लदीण ववरि लदीणमभागा।' इसके अनुसार उक्त पाठको इस प्रकार सुधारना चाहिए
'ऋद्धेरपरि ऋद्धेरभावात्' अथवा 'ऋद्धे ऋद्धेरप्यभावात्' तदनुसार अर्थ भी इस प्रकार होगा—
'क्योंकि, एक ऋद्धिके ऊपर दूसरी ऋद्धिका अभाव है'।

पृष्ठ ३००

१९ शंका—६० वीं गाथा (सूत्र) का अर्थ करते हुए लिखा है कि 'तत्र कर्मणकाय-
योग स्यादिति'। जिसका अर्थ आपने 'इपुगतिको छोडकर शेष तीनों त्रिपुहगतियोंमें कर्मणकाय-
योग होता है, ऐसा किया है। सो यहां प्रश्न होता है कि इपुगतिमें कौनसा काययोग होता है ?

(नातकचदनी, पृष्ठ १-४४०)

समाधान—इपुगतिमें औदारिकमिश्रकाय और वैक्रियिकमिश्रकाय, ये दो योग होते
हैं, क्योंकि उपपातक्षेत्रके प्रति होनेवाली ऋजुगतिमें जीव आहारक ही होता है। अनाहारक केवल
विपहवाला गतियोंमें ही रहता है। इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि पाणिमुक्ता, लगलिका
और गोमूत्रिका, इन तीन गतियोंके अन्तिम समयमें भी जीव आहारक हो जाता है, क्योंकि,
अन्तिम समयमें उपपातक्षेत्रके प्रति होनेवाली गति ऋजु ही रहती है। इस व्यवस्थाको ध्यानमें
रखकर ही सर्वार्थसिद्धिमें 'एक द्वौ त्रीचानाहारक' इस सूत्रकी व्याख्या करते हुए यह कहा है कि
'उपपातक्षेत्र प्रति ऋजुयां गता आहारक। इत्येषु त्रिषु समयेषु अनाहारकः।'

सकता है और अविस्मरणीय भी। अनप्यवसाय विसवादी ज्ञानका भेद है। उसमें जिस तादृशे विसवादिख और अविस्वादिखका चर्चा दी गई है वह स्याद्वादकी दृष्टिके अनुकूल होते हुए भी चित्तको नहीं लगता।
(जिनमदश, १५ परबरी १९४०)

समाधान—यद्यपि प्रतिभासका जो अर्थ किया गया है, वह स्वयं शक्यकारके मतसे भी सदेव नहीं है, तथापि यदि प्रतिभासका अर्थ ज्ञानसामान्य भी ले लिया जाय, तो भी कोई आपत्ति नहीं आती है। ऐसी अवस्थामें अनुवाद पक्ति १२ में 'और अनप्यवसायरूप जो प्रतिभास है' के स्थानमें 'और जो नान सामान्य है' अर्थ करना चाहिए।

पृष्ठ १९६

१५ शका—'अप्यवसाय' पदान्तराभावात् आप्यवसायविच्छेदस्यार्थानुयाया वचनपरत्तरात् 'व्याभावात्'। यहाँ 'विच्छेद' के स्थानमें 'विच्छेद' पाठ अष्टा जचता है। उससे वाक्यरचना भी ठीक हो जाता है।
(जिनमदश, १५ परबरी १९४०)

समाधान—प्राप्त प्रतियोसे जो पाठ समुपलब्ध हुआ उसकी यथाशक्ति सगति अनुवादमें बैठा ला गई है। मूढविद्वासे भी उस पाठके स्थानपर हमें कोई पाठांतर प्राप्त नहीं हुआ। तथापि 'विच्छेदस्य' के स्थानपर 'विच्छेद स्यात्' पाठ स्वीकार कर लेनेसे अर्थ और अधिक सीधा और सुगम हो जाता है। तदनुसार उक्त शक्यकार अनुवाद इस प्रकार होगा—

शका—असंज्ञको व्याख्याता नहीं मानने पर आर्य-परम्पराका विच्छेद हो जायगा क्योंकि, अर्थरूप वचन-रचनाको आर्षपना प्राप्त नहीं हो सकता है।

पृष्ठ २१३

१६ शका—संस्कृत (मूठ) में जो 'नवक' शब्द आया है उसका अर्थ आपने कुछ न करने 'नवक' ही लिखा है। सो इसका क्या अर्थ है ?
(नानशब्दकी पत्र १४४०)

समाधान—'नवक' का अर्थ नवीन है, इसलिए सर्वत्र नवीन बधनेवाले समयप्रवृत्तियों को नवक समयप्रवृत्त कह सकते हैं। पर प्रकृतमें निवृत्त प्रकृतिके उपशमन और क्षणिक द्विचरमावली और चरमावली अर्थात् अतकी दो आवृत्तियोंके कालमें बधनेवाले समयप्रवृत्तियों को नवकसमयप्रवृत्त कहा है। इस नवकसमयप्रवृत्तिका उस निवृत्त प्रकृतिके उपशमन या क्षणिक कालके भीतर उपशमन या क्षय न होकर उपशमन या क्षणिककालके अनंतर एक समय कम आवृत्तीकालमें उपशमन या क्षय होता है। एक समय कम दो आवृत्तीकालमें उपशमन या क्षय होता है, इसके लिए प्रथमभाग पृष्ठ २१४ का विशेषार्थ देखिये। विशेषके लिए देखिये लक्ष्मिस्वप्नसार।

पृष्ठ २५०

१७ शका—शक्यकार प्रारम्भ प्रथम पक्तिमें आये हुए 'तथापि' शब्दसे जान पड़ता है

कि उससे पूर्वके 'शरीरस्य स्थौत्यनिर्वर्तक' इत्यादिसे, क्योंकि उसी शास्त्रीय परिभाषाके करनेपर, जो उससे पहले नहीं की गई है, शकाकारने 'तथापि' से शकाका उत्थान किया है।

(जेनसदेश, १५ फरवरी १९४०)

समाधान—यहाँपर 'तथापि' से शका मान लेनेपर 'शरीरस्य स्थौत्यनिर्वर्तक कर्म पादर-मुख्ये' इसे आगमिक परिभाषा मानना पड़ेगा। परन्तु यह आगमिक परिभाषा नहीं है। धरलाकारने स्वयं इससे पहले 'न चादरस्योऽथ स्थूलपर्याय' इत्यादि रूपसे इसका निषेध कर दिया है। अतः शकाकारके मुखसे ही स्थूल और सूक्ष्मका परिभाषाओंका कहलाना ठीक है, ऐसा समझकर ही उन्हें शकाके साथ जोटा गया है।

पृष्ठ २९७

१८ शंका—'ऋद्धेरपयभावात्' पाठ अशुद्ध प्रतीत होता है, उसके स्थानमें 'ऋद्धेरपयभावात्' पाठ ठीक प्रतीत होता है।

(जेनसदेश, १५ फरवरी १९४०)

समाधान—उक्त पाठके ग्रहण करनेपर भी 'ऋद्धेरपरि' इतने पदका अर्थ ऊपरसे ही जोटना पड़ता है, और उस पाठके लिए प्रतियोगका आचार भी नहीं है। इसलिए हमने उपलब्ध पाठको अर्थका लोभ रख दिया था। हाँहाँमें धरला अ पत्र २८५ पर एक अन्य प्रकरण सम्बन्धी एक वाक्य मिला है, जो उक्त पाठके सशोभनमें अधिक सहायक है। वह इस प्रकार है—'पमसेवेजाहार पण्थि, छद्दीए ववति हृद्धिणमभावात्'। इसके अनुसार उक्त पाठको इस प्रकार सुधारना चाहिए 'ऋद्धेरपरि ऋद्धेरभावात्' अथवा 'ऋद्धे ऋद्धेरपयभावात्' तदनुसार अर्थ भी इस प्रकार होगा—'क्योंकि, एक ऋद्धिके ऊपर दूसरी ऋद्धिका अभाव है'।

पृष्ठ ३००

१९ शंका—६० वीं गाथा (सूत्र) का अर्थ करते हुए लिखा है कि 'तत्र कार्मणकाययोग स्यादिति'। जिसका अर्थ आपने 'इपुगतिको छोड़कर शेष तीनों विग्रहगतियोंमें कार्मणकाययोग होता है, ऐसा किया है। सो यहाँ प्रश्न होता है कि इपुगतिमें कौनसा काययोग होता है ?

(नानकवदजो, पृष्ठ १४४०)

समाधान—इपुगतिमें औदारिकमिश्रकाय और भैक्रियिकमिश्रकाय, ये दो योग होते हैं, क्योंकि उपपातक्षेत्रके प्रति होनेवाली ऋतुगतिमें जीव आहारक ही होता है। अनाहारक केवल निग्रहवाला गनियोंमें ही रहता है। इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि पाणिमुक्ता, लालिका और गौमूत्रिका, इन तीन गतियोंके अन्तिम समयमें भी जीव आहारक हो जाता है, क्योंकि, अन्तिम समयमें उपपातक्षेत्रके प्रति होनेवाली गति शत्रु ही रहती है। इस व्यवस्थाको ध्यानमें रखकर ही सर्वार्थसिद्धिमें 'एक द्वौ श्री-यानाहारक' इस सूत्रकी व्याख्या करते हुए यह कहा है कि 'उपपातक्षेत्रके प्रति ऋतुगती गन्तौ आहारक'। इत्येषु त्रिषु समयेषु अनाहारक ।'

२९६ में कहा है—पुसङ्गिभ्यङ्ग जंणिगीये ' अर्थात् योनिमताके पूर्वांश ९७ प्रकृतियोंमेंसे पुरुषवेद और नपुंसक वेदको घटाकर श्री वेदके मित्रा देनेपर ९६ प्रकृतियोंका उदय होता है। मनुष्यनियोंके विषयमें कहा है—'मनुसिणिए खीसाह्वा' ॥३०॥ अर्थात् पूर्वांश १०० प्रकृतिमेंसे खीवेदके मिला देनेपर और तीर्थकर आदि ५ प्रकृतिया निकाल देनेपर मनुष्यनियोंके ९६ प्रकृतियोंका उदय होता है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि यहाँ योनिमती उस कहा है जिसके खीवेदका उदय हो। ऐसे जीवके द्रव्य वेद कोई भी रहेगा तो भी वह योनिमती कहा जायगा। अब रही योनिमताके १४ गुणस्थान की बात, सो कर्मभूमिज खियोंके अतके तीन सदननोंका हा उदय होता है, ऐसा गो० कर्मकांड की गाथा ३२ से प्रगट है। परंतु शुक्लयाज, क्षपकश्रेण्यारोहणादि कर्म प्रथम सदननबाटके ही होते हैं। इससे यह तो स्पष्ट है कि द्रव्यखियोंके १४ गुणस्थान नहीं होते हैं। पर गोमटसारमें खीवेदके १४ गुणस्थान बतलाये अस्थ हैं, इसलिए वहाँ द्रव्यसे पुरुष और भावसे खीवेदका ही योनिमती परसे ग्रहण करना चाहिए। इस विषयमें गोमटसार और धवलसिद्धांतमें कोई मतभेद नहीं है। द्रव्यकांके आदिके पांच गुणस्थान हा होते हैं। गोमटमारकी गाथा न १५० में भाव-वेदकी सुपत्तासे ही योनिमतीका ग्रहण है। गाथा न १५६ और १५९ में टीकामारने योनि-मतीसे द्रव्यकांका ग्रहण किया है, किंतु वहाँ भा परिणतिम खीभाव हो, ऐसा नहीं कहा गया है।

टिप्पणियोंके विषयमें

२३ श्लोका—धरजके पुटनाटोंमें दिये गये भगवती आगधनाकी गाथाआका मूलराधनाके नामसे उल्लेखित किया गया है, यह ठीक नहीं। जयति प्रथकार शिवार्थ स्वयं उसे भगवती आगधना लिखते हैं, तब मूलराधना नाम उचित प्रतीत नहीं होता। मूलराधनादपण ता प आशावर्जीकी टीका का नाम है, किम उहोंने अन्य टीकाओंसे व्यावृत्ति करनेके लिए लिया था। यदि आपने निर्मा प्रार्थन प्रनिमें प्रथका नाम मूलराधना देया हो तो कृपया लिखतका अनुग्रह कीजिए।

(प० परमानन्दजी शर्मा, पृ २९ १० ३९)

समाधान—टिप्पणियाका साथ जा प्रथनाम दिये गये हैं वे उन टिप्पणियोंके आधारभूत प्रनाशिन प्रथोंके नाम हैं। शाङ्गपुरमें जो प्रथ छपा है, उसपर प्रथका नाम 'मूलराधना' दिया गया है। वही प्रति हमारा टिप्पणियोंका आधार रहा है। आपण उमीका नामोलेख कर लिया गया है। प्रथके नामाणि सम्भार्य इतिहासमें जानके लिए यह उपयुक्त स्थल नहीं था।

२४ श्लोका—टिप्पणियोंमें अत्रिभक्त तुष्टना इनेताम्ना प्रथोंपरसे की गई है। अच्छा होता यदि इस कार्यमें दिग्गन्ध प्रथोंपर और भी अत्रिभक्त के साथ उपयोग किया जाता। इससे तुष्टनाव्याप और भी अत्रिभक्त प्रथान्तरपरसे सम्बल हाता।

(अनेकाव, १, २ पृ. २०१)

(जैनसदस्य, १५ फरवरी १९४०)

(जैनसदस्य, ३ अक्टूबर १९४०)

समाधान—प्रथम भागमें कुल टिप्पणियोंकी संख्या ८५५ है। उनमेंसे दिगम्बर ग्रन्थोंसे ६२२ और श्वेताम्बर ग्रन्थोंसे २२८ तथा अन्य ग्रन्थोंसे ५ टिप्पणियां ली गई हैं। यदि ग्रन्थ-संख्याकी दृष्टिसे भी देखा जाय तो टिप्पणियोंमें उपयोग किये गये ग्रन्थोंकी संख्या ७७ है, जिनमें दिगम्बर ग्रन्थ ४०, श्वेताम्बर ग्रन्थ ३०, अजैन ग्रन्थ १, १ कोप, व्याकरण, अलंकारादि विषयक ग्रन्थोंकी संख्या ६ है। इससे स्पष्ट है कि अग्निभाषा तुलना किन ग्रन्थोंपरसे की गई है। जहां जिस ग्रन्थकी जो टिप्पणी उपयुक्त प्रतीत हुई वह ली गई है। इसमें ध्येय यही रखा गया है कि इस सिद्धान्त विषयमें सम्पूर्ण रचनेवाले सभी साहित्यकी ओर पाठकोंकी दृष्टि जा सके।

७ द्रव्यप्रमाणानुगम

१ द्रव्यप्रमाणानुगमकी उत्पत्ति

पट्टखंडागमके प्रस्तुत भागमें जीवद्रव्यके प्रमाणका ज्ञान कराया गया है, अर्थात् यहाँ यह बतलाया गया है कि समस्त जीवराशि कितनी है, तथा उसमें भिन्न भिन्न गुणस्थानों व मार्गणास्थानोंमें जीवोंका प्रमाण क्या है। स्वभावतः प्रश्न उत्पन्न होता है कि इस अत्यन्त अगाध विषयका वर्णन आचार्योंने किस आधारपर किया है? यह तो पूर्वभागोंमें बतला ही आये हैं कि पट्टखंडागमका बहुभाग विषय-ज्ञान महावीर भगवान्की द्वादशावगणोंके अगभूत चौदह पूर्वोंमेंसे द्वितीय आप्रायणीय पूर्वके कर्मप्रकृति नामक एक अधिकार-विशेषमेंसे लिया गया है। उसमेंसे भी द्रव्यप्रमाणानुगमकी उत्पत्ति इस प्रकार बतलाई गई है—

कर्मप्रकृतिपाहुड, अपरनाम वेदनाकृत्स्नपाहुड (वेयणकसिणपाहुड) के कृति, वेदना आदि चौबीस अधिकारोंमें छठवा अधिकार 'वधन' है, जिसमें वधका वर्णन किया गया है। इस वधन के चार अर्थाधिकार हैं, वध, वधक, वधनीय और वधविधान। इनमेंसे वधक नामक द्वितीय अधिकारके एकजीवकी अपेक्षा स्वामित्व, एकजीवकी अपेक्षा काल, आदि ग्यारह अनुयोगद्वार हैं। इन ग्यारह अनुयोगद्वारोंमें से पाँचवा अनुयोगद्वार द्रव्यप्रमाण नामका है और वहाँसे प्रकृत द्रव्यप्रमाणानुगम लिया गया है। (देख पट्टखंडागम, प्रथम भाग, पृ १२५-१२६)

यहाँ प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि जब जीवज्ञानकी सत्, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अंतर और अन्ववहुत्त, ये छह प्ररूपणार्थ वधविधानके प्रकृतिस्थानवध नामक अवान्तर अधिकारके आठ अनुयोगद्वारोंमेंसे ली गई हैं, तब यह द्रव्यप्रमाणानुगम भी वहाँसे क्यों नहीं लिया, क्योंकि, वहाँ भी तो यह अनुयोगद्वार यथास्थान पाया जाता था? इसका उत्तर यह दिया गया है कि प्रकृतिस्थानवधके द्रव्यानुयोगद्वारोंमें 'इस वधस्थानके वधक जीव इतने हैं' ऐसा केवल सामान्य रूपसे कथन किया गया है, किन्तु मिथ्यादृष्टि आदि गुणस्थानोंकी अपेक्षा कथन नहीं किया गया। वधक अधिकारों

पर्यन्त, बंदी, नदी, कुट, जगती (मोट), वन (क्षेत्र) का प्रमाण प्रमाणागुणमें लिया जाता है, तथा भृगार, वाग्श, दण्ड, देश, पट्ट, युग, गणन, शकट, हल, मूस, नक्ति, तोमर, मिहामन, बाण, नाली, अश्व, चामर, दृढभि, पीठ, छत्र तथा मनुष्योंका निगस न नगर, उद्यानादिका प्रमाण आमागुणमें लिया जाता है। छह अगुणोंका पाद, दो पादोंकी विहस्ति (बलिस्त), दो विहस्तियोंका द्वाय, दो द्वायोंका किष्कु, दो किष्कुओंका दंड, युग, धनु, मुसल व नाली, दो हजार दंडोंका एक कोश तथा चार कोशोंका एक योजन होता है। (नि प १, ९८-११६)

द्वयका अविभागी अंश = परमाणु	८ जू	= य
अनतानत परमाणु = अवसन्नासन्नस्कध	८ य	= उत्सेधांगुल
८ अवसन्नासन्नस्कध = सन्नासन्नस्कध	(५०० उत्सेधांगुल = प्रमाणांगुल)	
८ सन्नासन्नस्कध = वृटेणु	६ अंगुल	= पाद
८ वृटेणु = त्रसेणु	२ पाद	= विहस्ति
८ त्रसेणु = रषेणु	२ विहस्ति	= द्वाय
८ रषेणु = उत्तम भो भू बालाम	२ द्वाय	= किष्कु
८ उ भो भू वा = मध्यम " " "	२ किष्कु	= दंड, युग, धनु,
८ म भो भू वा = जघन्य " " "		मुसल या नाली
८ ज भो भू वा = कर्मभूमि बालाम	२००० दंड	= कोश
८ क भू बालाम = शिक्षा	४ काश	= योजन
८ शिक्षा = जू		

अगुणसे आगेके प्रमाण भी आन, उल्लेख व प्रमाण अगुणके अनुमार तीन तीन प्रकारके होते हैं। एक प्रमाण योजन अर्थात् दो हजार कोश लम्ब, चौड आर गहर कुटके आश्रयमें अद्वापत्य नामक प्रमाण निरालनेका प्रकार उपर कालप्रमाणमें बता आये है। उमी अद्वापत्यके अर्धच्छेद प्रमाण अद्वापत्योंका परस्पर गुणा करनेपर सूच्यगुलका प्रमाण आता है। सूच्यगुणमें वर्ग को प्रतरांगुल और धनको घनांगुल कहते हैं। अद्वापत्यके अस्वयान्तरे भागप्रमाण, अपना मन्तातरसे अद्वापत्यके जितने अर्धच्छेद हों उमके अस्वयान्तरे भागप्रमाण, घनांगुलोंके परस्पर गुणा करनेपर जगधेणीका प्रमाण आता है। जगधेणीके सानमें भाग प्रमाण रज्जु होता है, जा नियक् लोंकने मय विस्तार प्रमाण है। जगधेणीके जगको जगप्रतर तथा जगधेणिक घनका लोका रहते हैं।

ये सत्र अर्थात् पन्थ, सागर, सूच्यगुल प्रतरांगुल, घनांगुल, जगधेणी, जगप्रतर आर लोका उपना मान हैं, निराल उपयुक्त यथास्मद् द्रव्य, क्षेत्र और काल, इन तीना अपेक्षाओंसे बनगये गय प्रमाणोंमें लिया गया है। उनका तात्पर्य द्रव्यप्रमाणमें लन्नी सपाम, कालप्रमाणमें उतने समयसे तथा क्षेत्रमात्रमें लन ही अन्तःप्रदेशोंसे समझना चाहिये।

१ एक शक्ति बिजनी का उपचार आधी आधी की जा सके, वरन उस शक्तिके अपरच्छेद कहे जाते हैं।

४. भावप्रमाण—पूर्वोक्त तीनों प्रकारके प्रमाणोंके ज्ञानको ही भावप्रमाण कहा है। (देखो सूत्र ५)। इसका अभिप्राय यह है कि जहा जिस गुणस्थान व मार्गणास्थानका द्रव्य, काल व क्षेत्रकी अपेक्षासे प्रमाण बतलाया गया है वहा उस प्रमाणके ज्ञानको ही भावप्रमाण समझ लेना चाहिये।

३ जीवराशिका गुणस्थानोंकी अपेक्षा प्रमाण-प्ररूपण

सर्व जानराशि अनन्तानन्त है। उसका बहुभाग मिथ्यादृष्टिगुणस्थानवर्ती है तथा शेष एक भाग अन्य तेरह गुणस्थानों और सिद्धोंमें विभाजित है। इनमें भी मिथ्यादृष्टि और रिद्ध क्रम-हिनिरूपसे अनन्तानन्त हैं। सासादनादि चार गुणस्थानोंके जीव प्रत्येक राशिमें असख्यात हैं, तथा शेष प्रमत्तादि नौ गुणस्थानोंके जीव स्ख्यात हैं जिनकी कुल स्ख्या तीन वम नौ करोड निश्चित है। यद्यपि अनन्तको सरयामे उतारना भ्रामक हो सकता है, तथापि धबलाकारने उक्त राशियोंके क्रमिक प्रमाणका बोध करानेके लिये सर्व जीवराशिको १६ और इनमेसे मिथ्यादृष्टिराशिको १३, तथा सासादनादि तेरह गुणस्थानोंके जीवों और सिद्धोंका मयुक्त प्रमाण ३ अंकोंके द्वारा सूचित किया है। अब हम यदि इसा अकरुद्धिदिके आधारसे सभी गुणस्थानों व सिद्धोंका अलग अलग प्रमाण कल्पित करना चाहें, तो स्थूलत इसप्रकार किया जा सकता है—

चौदह गुणस्थानोंमें जीवराशियोंके प्रमाणकी सद्यष्टि

गुणस्थान	प्रमाण	अंकसंद्यष्टि
१ मिथ्यादृष्टि	अनन्त	१३
*२ सासादन	असरय	१४
३ मिश्र	”	१६
४ अरिग्निसम्यग्दृष्टि	”	३३
५ सयतासयत	”	१४
६ प्रमत्तविरत	५९३९८२०६	} १५
७ अप्रमत्तविरत	२९६९९१०३	
८ अपूर्णकरण	८९७	
९ अनिवृत्तिव्रतण	८९७	
१० सूक्ष्ममाम्पराय	८९७	
११ उपशान्तमोह	२९९	
१२ क्षीणमाह	५९८	
१३ मयोगिकेन्द्रगी	८९८५०२	
१४ अयोगिकेन्द्रगी	५९८	
सिद्ध	अनन्त	
सर्वनीत्यादि	अनन्त	१६

१ सासादनेसे सपतासपत तक चारों गुणस्थानोंके जाव समुच्चय व पृथक् पृथक् रूपसे भी पत्न्योपमके

चौदहों गुणस्थानोंकी जीराशियोंके प्रमाण-प्ररूपणके पश्चात् उनका भागाभाग और फिर उनका अल्पबहुत्व बतगाया गया है। भागाभागमें सामान्य राशिका छेन्न विभाग करते हुए सबसे अल्प राशि तक आवे हैं। अल्पबहुत्वमें समे छोटी राशिसे प्राग्भ करने गुणा और योग (सान्निह्य) करते हुए समे बड़ी राशि तक पहुँचे हैं। इस अल्पबहुत्वका तीन प्रकारसे प्ररूपण किया गया है, स्वस्थान, परस्थान और सर्वपरस्थान। स्वस्थानमें केवल अग्रहणकाठ और निरक्षित राशिका अल्पबहुत्व ऋणाय गया है। परस्थानमें अग्रहणकाठ, भाग तथा अन्य चो राशिया उनके प्रमाणक नीचमें आ पड़ती हैं उनका और निरक्षित राशिका अल्पबहुत्व दिखाया गया है। तथा सर्वपरस्थानमें उक्त राशियाके अतिरिक्त अन्य राशियोंमें भी अल्पबहुत्व दिखाया गया है। (पृ १०१-१२१)

४ जीराशिका मार्गणास्थानोंकी अपेक्षा प्रमाण प्ररूपण

गुणस्थानोंमें जात्रप्रमाण-प्ररूपणके पश्चात् गति आदि चारह मागणाओं व उनके भेद-प्रभेदोंमें जीराशिका प्रमाण निर्दिष्टा गया है और यहा प्रत्येक राशिका प्रमाण, भागाभाग और अल्पबहुत्व यथाक्रमसे समझाया गया है। जिसप्रकार गुणस्थानोंमें प्रथम मिथ्यादृष्टिक प्रमाण समझानोंमें आचार्यने गणितकी अनेक प्रक्रियाओंका उपयोग करने दिखाया है, उसी प्रकार मागणास्थानोंमें प्रथम नरकान्तिक प्रमाणप्ररूपणमें भी गणितविस्तार पाया जाता है। (दृष्टा पृ १२१-२०५)

उक्त प्रमाण विवेचन बड़ी सूक्ष्मता और गहराईके साथ किया गया है, किन्तु आचार्यने अरुसदृष्टि कायम नहीं रखा, जिसमें सामान्य पाठकाजी विषयका बोध होना सुगम नहीं है। अतएव हम यहापर उन सप्त मार्गणाओंकी पृथक् पृथक् प्रमाण प्ररूपण अरुसदृष्टिया आचार्यद्वारा कल्पित अनेक आशयसे ज्ञानेका प्रयत्न करने हैं, जिसका मुख्य उद्देश्य अनन्त, असत्यात व सत्यातके भीतर राशियोंके अल्पबहुत्वका कुछ स्थूल बोध कराना मात्र है। प्रत्येक मार्गणाके भीतर संपूर्ण जात्रराशिका समुच्चय प्रमाण १६ ही रखा गया है। किन्तु सूक्ष्म दृष्टिस पराक्षण करनेपर एक दृसगी मार्गणाओंकी अरुसदृष्टियोंमें परस्पर वैषम्य दृष्टिगोचर हो सकता है। यह सर्वजीराशिके लिये केवल १६ जैसी अल्प सान्या लक्ष समस्त मार्गणाओंके प्रभेदोंको उदाहरण करनेमें प्राय अनिवार्य ही है। एक राशि दूसरी राशिसे जितनी विशेष व नितनी गुणित अतिरिक्त है उतना अनुमान इन अनेकसे वादापि नहीं करना चाहिये। यहा तो सिर्फ एक मार्गणाके भीतर राशिवांजी परस्पर अतिरिक्ता या अल्पताका ही क्रम जाना जा सकता है। यद्यपि गणितके सूक्ष्म विचारसे यह वैषम्य भी समझ दूर किया जा सकता था, किन्तु उससे फिर सदृष्टिया सुगम होने की अपेक्षा दुर्गम सी हो जाती, जिसमें हमारा अभिप्राय पूर्ण नहीं होता। चूँकि यहाँ प्रत्येक मार्गणाके भीतर जीराशियोंका प्रमाणक्रम निर्दिष्ट करना अभीष्ट है, अतएव राशिया बहुत्रमे अल्पत्वकी श्रेण क्रमसे रखी गई हैं, उनके रूपक्रमसे नहीं। हा, सिद्ध सर्वत्र अत-

अधरयात्रे माग ह। इनमें भी अरुसदृष्टिगोचर सबसे अधिक, इनके असत्यातमें माग निरक्षितस्थानीय, इसके सत्यातमें माग साक्षात्तगुणस्थानीय तथा इनके असत्यातमें माग सत्यातयुक्त जीव हैं।

की ओर ही रखे हैं। कहीं कहीं राशिके जो अरु दिये गये हैं उनसे कुछ अधिक प्रमाण निश्चित है, क्योंकि, उसमें कोई अन्य अल्प राशि भी प्रविष्ट होती है। ऐसे स्थानोंपर अरुके आगे धनका चिन्ह + बना दिया गया है, और अरु देकर टिप्पणीमें उस निश्चित राशिका उल्लेख कर दिया गया है। इस दिशामें यह प्रयत्न, जहा तक हम ज्ञात हैं, प्रथम ही है, अतः सावधानी रखने पर भी कुछ त्रुटियां हो सकती हैं। यदि पाठकोंके ध्यानमें आएं, तो हमें अवश्य सूचित करें।

चौदह मार्गणास्थानोंमें जीवराशियोंके प्रमाणकी संदृष्टिया

(मार्गणा शीर्षकके आगे दी गई पृष्ठसंख्या उस मार्गणाके भागाभागीनी सूचक है।)

१ गति मार्गणा (पृ २०७)

निर्योच	देव	नारक	मनुष्य	सिद्ध	सर्व जीव
अनत	असरय	असरय	असरय	अनत	अनत
२००	१२	८	४	३२	१६
१६	१६	१६	१६	१६	

२ इन्द्रिय मार्गणा (पृ ३१९)

१ इन्द्रिय	२ इन्द्रिय	३ इन्द्रिय	४ इन्द्रिय	५ इन्द्रिय	अनीन्द्रिय	सर्व जीव
अनत	असरय	असरय	असरय	असरय	अनत	अनत
१८२	१४	१२	१०	६	३२	१६
१६	१६	१६	१६	१६	१६	

३ काय मार्गणा (पृ ३४१)

घनस्पति	वायु	जल	पृथिवी	तेज	अस	अकाय	सर्व जीव
अनत	असरय	असरय	असरय	असरय	असरय	अनत	अनत
१७६	१६	१२	१०	६	४	३२	१६
१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	

४ योग मार्गणा (पृ ४१२)

काय	घचन	मन	अयोगी	सर्व जीव
अनत	असरय	असरय	अनत	अनत
१८४	२४	१६	३२	१६
१६	१६	१६	१६+	

१ यहाँ यह सिद्धोका प्रमाण अयोगिकवलयोंके सातिरेक समझना चाहिये।

५ वेद मार्गणा (पृ ४२१)

मनुसक	स्त्री	पुरुष	अधेय	सर्व जीव
अनंत	असह्य	असह्य	अनंत	अनंत
$\frac{२००}{१६}$	$\frac{२०}{१६}$	$\frac{४}{१६}$	$\frac{३२}{१६} +$	१६

६ कर्माय मार्गणा (पृ ४३१)

लोक	माया	श्लोघ	मान	अकवायी	सर्व जीव
अनंत	अनंत	अनंत	अनंत	अनंत	अनंत
$\frac{८२}{१६}$	$\frac{५०}{१६}$	$\frac{४८}{१६}$	$\frac{४४}{१६}$	$\frac{३२}{१६} +$	१६

७ ज्ञान मार्गणा (पृ ४४२)

कुमति	विभग	मति	अग्रधि	मन पर्यय	केवल	सर्व जीव
कुशुन		धुत				
अनंत	असह्य	असह्य	अग्रय	सह्यात	अनंत	अनंत
$\frac{८१२}{६४}$	$\frac{३९}{६४}$	$\frac{३०}{६४}$	$\frac{४}{६४}$	$\frac{१}{६४}$	$\frac{३२८}{६४} +$	१६

८ सयम मार्गणा (पृ ४५१)

असयमी	वेशस	सामा	यथाख्या	परि धि	सू सा	सिद्ध	सर्व जीव
		छेत्रो					
अनंत	असह्य	सह्यात	सह्यात	सह्यात	सह्यात	अनंत	अनंत
$\frac{८३२}{६४} +$	$\frac{३०}{६४}$	$\frac{२}{६४}$	$\frac{२०}{६४}$	$\frac{३}{६४}$	$\frac{१}{६४}$	$\frac{१२८}{६४}$	१६

९ दर्शन मार्गणा (पृ ४५०)

मयभू	धभू	अग्रधि	केवल	सर्व जीव
अनंत	असह्य	असह्य	अनंत	अनंत
$\frac{८३२}{६४}$	$\frac{९०}{६४}$	$\frac{४}{६४}$	$\frac{१२८}{६४} +$	१६

२ यदा विद्योका प्रमाण ९ के गुणस्थानके अवेद भागस उपाक समस्त गुणस्थानाकी राशियोंस सातिरे

३ यदा विद्योका प्रमाण ११ के और उपाक समस्त गुणस्थानोंकी राशियोंसे सातिरेक है ।

४ यदा विद्योका प्रमाण १३ के और १४ के गुणस्थानोंकी राशियोंसे सातिरेक है ।

५ यदा विद्योका प्रमाण २ सरे, ३ सरे और ४ य गुणस्थानाकी राशियोंसे सातिरेक है ।

६ यदा विद्योका प्रमाण १३ के और १४ के गुणस्थानोंकी राशियोंसे सातिरेक है ।

१० लेइया मार्गणा (पृ ४६६)

कृष्ण	नील	कापोत	पीत	पद्म	शुक्ल	अलेइय	सर्व जीव
अनत	अनत	अनत	असरय	असरय	असरय	अनत	अनत
$\frac{७६}{१६}$	$\frac{६७}{१६}$	$\frac{६५}{१६}$	$\frac{८}{१६}$	$\frac{६}{१६}$	$\frac{२}{१६}$	$\frac{३२}{१६} +$	१६

११ भव्य मार्गणा (पृ ४७३)

भव्य	अभव्य	सिद्ध	सर्व जीव
अनत	अनत	अनत	अनत
$\frac{१९६}{१६}$	$\frac{२८}{१६}$	$\frac{३२}{१६}$	१६

१२ सम्यक्त्व मार्गणा (पृ ४७८)

मिथ्याद	क्षायोप	क्षायिक	ओपश	मिश्र	सासा	सिद्ध	सर्व जीव
अनत	असरय	असरय	असरय	असरय	असरय	अनत	अनत
$\frac{२०८}{१६}$	$\frac{६}{१६}$	$\frac{४}{१६}$	$\frac{३}{१६}$	$\frac{२}{१६}$	$\frac{१}{१६}$	$\frac{३२}{१६}$	१६

१३ सजा मार्गणा (पृ ४८३)

असधी	सधी	अनुभव	सर्व जीव
अनत	असरय	अनत	अनत
$\frac{१९९}{१६}$	$\frac{२५}{१६}$	$\frac{३२}{१६} +$	१६

१४ आहार मार्गणा (पृ ४८५)

आहारक	अनाहारक		सर्व जीव
अनत	बधक	अबधक	अनत
११	अनत	अनत	१६
	३	२	

७ यद्दं सिद्धाका प्रमाण १४ वें गुणस्थान राशिसे सातिरेक है ।

८ यद्दं सिद्धाका प्रमाण १२ व ओर १४ वें गुणस्थानोंकी राशिसे सातिरेक समझना चाहिये ।

मार्गणास्थानोके भीतर त्रतलाई गई राशियोंका बहुवसे अल्पत्वका और क्रम जहातक हमारे विचारमें जाया है, निम्न प्रकार है—

अनन्त

असर्वात

सर्वात

- १ असयमी
- २ अचक्षुदर्शनी
- ३ कुमति
- ४ सुधुत
- ५ मिथ्यादृष्टि
- ६ नपुसत्रेदी
- ७ तिर्यच
- ८ असङ्गी
- ९ वाययोगी
- १० एकेंद्रिय
- ११ घनस्पतिकायिक
- १२ मव्य
- १३ आहारक
- १४ अनाहारक
- १५ कृष्ण लेक्ष्या
- १६ नील
- १७ कापोत
- १८ लेभ क्षपार्या
- १९ माया
- २० शोध
- २१ मान
- २२ सिद्ध
- २३ अमव्य

- २४ वायुकायिक
- २५ जल
- २६ पृथिवी
- २७ तेज
- २८ दल
- २९ घचनयोगी
- ३० द्वीन्द्रिय
- ३१ त्रीन्द्रिय
- ३२ चतुरिन्द्रिय
- ३३ अचक्षुदर्शनी
- ३४ पचेन्द्रिय
- ३५ सङ्गी
- ३६ मनोयोगी
- ३७ विभगज्ञानी
- ३८ देवगति
- ३९ खात्रेदी
- ४० नारक
- ४१ पुरुषवेदी
- ४२ मनुष्य
- ४३ पीतलेक्ष्या
- ४४ पद्म
- ४५ मतिज्ञानी
- ४६ धृत
- ४७ अवधि
- ४८ अवधिदर्शनी
- ४९ शुद्ध लेक्ष्या
- ५० क्षायोपशमिकसम्यक्त्वो
- ५१ क्षायिक
- ५२ औपशमिक
- ५३ मिश्र
- ५४ सासादन
- ५५ देशसयत

- ५६ सामायिकसयत
- ५७ छेदोपस्थापना
- ५८ यथासयात
- ५९ कथलज्ञानी
- ६० केवलदर्शनी
- ६१ परिहारसयत
- ६२ मन पर्ययज्ञानी
- ६३ सुक्षमभाषगयसयत

अनन्त राशियां २३, असर्वात राशिया २४ ५५=३२, सर्वात ५६-६३=८, कुल ६३.

इस प्रमाण-प्ररूपणमें स्वभावरत पाटकोंका मनुष्योंके प्रमाणके सम्प्रथम विशेष कोतुक हो सकता है। इस आगमानुसार सर्व मनुष्योंका सत्या असत्यात है। उनमें गुणस्थानोंकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणमें असायान, कालप्रमाणसे असायातासत्यात कल्पकाल (अत्रमपिणियों-उत्तमपिणियों) के समय प्रमाण, तथा क्षेत्रप्रमाणसे जगद्रेणोंके असत्यातमें भाग अर्थात् असत्यात करोट योचन क्षेत्रप्रदेश प्रमाण है। द्वितीयादि गुणस्थानर्तों जात्र सत्यात ह, जो इस प्रकार हैं—

२ सासादन गुणस्थानर्तों मनुष्य ५२ करोड (व मतातरसे ५० करोट)

३ मिश्र " " १०४ करोट (पूर्वोक्तसे दगुने)

४ असयनसम्यग्दृष्टि " " ७०० करोट

५ सयनासयन " " १३ करोट

उठसे चौदहें गुणस्थानतकके मनुष्योंकी सत्या बही है जो उपर गुणस्थान प्रमाण-प्ररूपणमें दिखा अथि हैं, क्योंकि, ये गुणस्थान कत्रल मनुष्योंके ही होते हैं, देवतोंके नह। अन जिनका प्रमाण सख्यात है, ऐसे द्वितीय गुणस्थानसे चौदहें गुणस्थान तकके कुठ मनुष्योंका प्रमाण ५२+१०४+७००+१३=८६९=९ करोट, अर्थात् कुल तीन क्रम आठमो अठहत्तर करोड होता है। आजकी समारमगी मनुष्यगणनामें यही प्रमाण चागुनेसे भी अधिक हो जाता है। मिथ्यादृष्टियोंको मिलाकर तो उसकी अधिकता गहून ही नट जाता है। जैन सिद्धान्तानुसार यह गणना दाई द्वीपर्तों विदेह आदि समस्त क्षेत्रोंकी है जिसमें पर्याप्तकोंके अनिगिक निवृत्त्यपर्याप्तक और लच्यपर्याप्तक मनुष्य भी सम्मिलिन हैं।

नाना क्षेत्रोंमें मनुष्य गणनाका अत्पत्रहुत्र इस प्रकार बतलाया गया है—अन्तर्द्वीपोंके मनुष्य सबसे थोड़े हैं। उनसे सायानगुणे उक्तकुम् और देवकुम्के मनुष्य ह। इसीप्रकार हरि ओर रम्यक, हैमवत ओर हैणवत, भरत ओर पेरगत्र, तथा विदेह इन क्षेत्रोंका मनुष्यप्रमाण पूर्व पूर्वसे क्रमश सत्यानगुणा है। (दसो पृ १९)

एक रात और उल्लेखनीय है कि र्तमान हुटारसर्पिणाम पत्रप्रभ तीर्थकरका ही शिष्य-परिवार सबसे अधिक हुआ है, जिसकी सत्या तीन लाख तीस हजार ३,३०,००० था।

उपर्युक्त चौदह गुणस्थानों ओर मार्गणा-स्थानोंमें जीवद्रव्यके प्रमाणका ज्ञान भगवान् भूतत्रलि आचार्यने १९२ सूत्रोंमें कराया है, जिनका विषयक्रम इस प्रकार है—

प्रथम सूत्रमें द्रव्यप्रमाणातुगमके ओष ओर आदेश द्वारा निर्देश करनेकी सूचना देकर दूसरे, तीसरे, चाथे ओर पाचवें सूत्रोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानके जायोंका प्रमाण क्रमश द्रव्य, कात्र, क्षेत्र और भात्रका अपेक्षा बतलाया है। छठवें सूत्रमें द्वितीयसे पाचवें गुणस्थान तकके जायोंका तथा आगेके सात्रवें और आठवें सूत्रमें क्रमश दृष्टे और सात्रवें गुणस्थानोंका द्रव्य-प्रमाण बतलाया है। उसी प्रकार ९ वें आर १० वें सूत्रमें उपशामक तथा ११ वें व १२ वें में क्षपकों ओर अयोग-केवली जीयोंका तथा १३ वें व १४ वें सूत्रमें सयोगिकेवलियोंका प्रवेश और सचय-कालकी

अपेक्षासे प्रमाण कहा गया है। सूत्र न १५ से मार्गणास्थानोंमें प्रमाणका निर्देश प्रारम्भ होता है, जिसके प्ररूपणकी सूत्र-संख्या निम्न प्रकार है—

सूत्रसे	सूत्रतक कुल सूत्र	सूत्रसे	सूत्रतक कुल सूत्र
नरकगति १५	- ३३ = ९	ज्ञान मार्गणा १४१	- १४७ = ७
तिर्यचगति २४	- ३९ = १६	सयम " १४८	- १५४ = ७
मनुष्यगति ४०	- ५० = १३	दर्शन " १५५	- १६१ = ७
देवगति ५३	- ७३ = २१	लक्ष्या " १६२	- १७१ = १०
इन्द्रिय मार्गणा ७४	- ८६ = १३	भव्य " १७२	- १७३ = २
काय " ८७	- १०० = १६	सम्पत्त्व " १७४	- १८४ = ११
योग " १०३	- १२३ = २१	सङ्गी " १८५	- १८९ = ५
वेद " १२४	- १३४ = ११	आहार " १९०	- १९२ = ३
कषाय " १३५	- १४० = ६		

५ मतान्तर और उनका खडन

ध्वलाकारने अपने समयकी उपलब्ध सैद्धांतिक सम्पत्तिका जितना भरपूर उपयोग किया है वह प्रयत्नके अवलोकनसे ही पूर्णतः ज्ञात हो सकता है। सूत्रों, व्याख्यानो और उपदेशोंका जो साहित्य उनके समुच्चय उपस्थित था, उसका सिद्धान्तलोकन प्रथम भागकी भूमिकामें कराया जा चुका है। प्रस्तुत प्रथमभागमें भी जहाँ प्रवृत्त नियमके विशेष प्रतिपादनके लिये ध्वलाकारको सूत्र, सूत्रसूक्ति व व्याख्यानका आधार नहीं मिला, वहाँ उन्होंने 'आचार्य परंपरागत जिनोपदेश' 'परम गुरुपदेश', 'गुरुपदेश', व 'आचार्य-यचन' के आश्रयसे प्रमाणप्ररूपण किया है। किंतु विशेष ध्यान देने योग्य कुछ ऐसे स्थल हैं, जहाँ आचार्यने भिन्न भिन्न मतोंका स्पष्ट उल्लेख करके एकरा खडन और दूसरेका मडन किया है। यहाँ हम इसाप्रकारके मत मतान्तरोका कुछ परिचय कराते हैं—

(१) सूत्रकारने प्रमाणप्ररूपणामें प्रथम द्वयप्रमाण, फिर काठप्रमाण, और तत्पश्चात् क्षेत्र प्रमाणका निर्देश किया है। सामान्य क्रमानुसार क्षेत्र पहले और काठ पश्चात् उल्लिखित किया जाता है, फिर यहाँ काठका क्षेत्रसे पूर्व निर्देश क्यों किया गया? इसका समाधान ध्वलाकार करते हैं कि काठकी अपेक्षा क्षेत्रप्रमाण सुक्ष्म होता है, अतएव 'जो स्थूल और अल्प वर्णनीय हो, उसका पहले व्याख्यान करना चाहिये।' इस नियमके अनुसार काठप्रमाण पूर्व और क्षेत्रप्रमाण उसके अनंतर कहा गया है। इस स्थलपर उन्होंने सूक्ष्मत्वके सवधमें कुछ आचार्याकी एक भिन्न मायताका उल्लेख किया

१ परमगुरुपदेशो जागिरजदे। इदमेविय होदि ति वष ण वदं आशियपरंपरागदमिणवदेतादो।
अप्यमवचजदाल पमाण गुरुवदशदो बुचद (पृ ८९) और भी दक्षिणे पृ १११, ३५१, ४०६, ४७१

है कि जो बहुप्रदेशोंसे उपचित हो वही सूक्ष्म होता है, और इस मतकी पुष्टिमें एक गाथा भी उद्धृत की है जिसका अर्थ है कि काल सूक्ष्म है, किन्तु क्षेत्र उससे भी सूक्ष्मतर है, क्योंकि, अगुलके असह्यातवें भागमें असह्यात कल्प होते हैं। धवलाकारने इस मतका निरसन इसप्रकार किया है कि यदि सूक्ष्मत्वकी यही परिभाषा मान ली जाय तत्र तो द्रव्यप्रमाणका भी क्षेत्रप्रमाणके पश्चात् प्ररूपण करना चाहिये, क्योंकि, एक गाथानुसार, एक द्रव्यागुलमें अनन्त क्षेत्रागुल होनेसे क्षेत्र सूक्ष्म और द्रव्य उनसे सूक्ष्मतर होता है। (पृष्ठ २७-२८)

(२) तिर्यक् लोकेके विस्तार और उसी सत्रधसे रज्जूके प्रमाणके सबधमें भी दो मतोंका उल्लेख और विवेचन किया गया है। ये दो भिन्न भिन्न मत त्रिलाकप्रज्ञप्ति और परिकर्मके भिन्न भिन्न सूत्रोंके आधारसे उत्पन्न हुए ज्ञान होते हैं। रज्जूका प्रमाण लानेकी प्रक्रियामें जम्बूद्वीपके अर्धच्छेदोंको रूपाधिकर करनेका विधान परिकर्मसूत्रमें किया गया है जिसका 'एक रूप' अर्थ करनेसे कुछ व्याख्यानकारोंने यह अर्थ निकाला है कि तिर्यक्लोकका विस्तार स्वयभूरमण समुद्र की बाहिरी वेदिकापर समाप्त हो जाता है। किन्तु त्रिभोकप्रज्ञप्तिके आधारसे धवलाकारका यह मन है कि स्वयभूरमण समुद्रसे बाहर असह्यात द्वीपसागरोंके विस्तार परिमाण योजन जाकर तिर्यक्लोक समाप्त होता है, अतः जम्बूद्वीपके अर्धच्छेदोंमें एक नहीं, किन्तु सत्यातरूप अधिक बढ़ाना चाहिये। इस मनका परिकर्मसूत्रसे विरोध भी उन्होंने इसप्रकार दूर कर दिया है कि उस सूत्रमें 'रूपाधिक' का अर्थ 'एकरूप अधिक' नहीं, किन्तु 'अनेक रूप अधिक' करना चाहिये। एक रूपनाले व्याख्यानको उन्होंने सच्चा व्याख्यान नहीं, किन्तु व्याख्यानाभास कहा है। अपने मतकी पुष्टिमें धवलाकारने कहा जो अनेक युक्तियाँ और सूत्रप्रमाण दिये हैं उनसे उनकी सप्राहक और समालोचनात्मक योग्यताका अंश परिचय मिलता है। इस विवेचनके अन्तमें उन्होंने कहा है—

‘ एसो अर्थो जइवि पुत्राडरियसपदायविरुद्धो, तो वि ततजुत्तिचलेण अम्हेहि परुविदो। तदो इदमिथ्य वेत्ति गेहासग्गहो काय’ओ, अइदिय थविसए छदुवेथयियथिदजुत्तीण णिण्णयहेउत्ताणुववत्तीदो। तम्हा उवएम् एदुधूण विसेसणिण्णयो एथ काय’ओ ।’

अर्थात् हमारा किया हुआ अर्थ यद्यपि पूर्वाचार्य-संप्रदायके विरुद्ध पड़ता है, तो भी तत्र-युक्तिके बलसे हमने उसका प्ररूपण किया। अतः 'यह इसीप्रकार है' ऐसा दुःसह नहीं करना चाहिये, क्योंकि, अतीन्द्रिय पदार्थोंके विषयमें अज्ञानों द्वारा निरूपित युक्तियोंके एक निश्चयरूप निर्णयके लिये हेतु नहीं पाया जाता। अतः उपदेशको प्राप्त कर विशेष निर्णय करनेका प्रयत्न करना चाहिये। यह प्रयत्नकरी कैसी निष्पक्ष, निर्मल, शोधक बुद्धि और जिज्ञासा प्रकट हुई है?

(पृ ३४ से ३८)

(३) एक मुहूर्तमें कितने उच्छ्वास होते हैं, यह भी एक मतभेदका विषय हुआ है। एक मत है कि एक मुहूर्तमें केवल ७२० प्राण अर्थात् आसो-ऽन्नास होते हैं। किन्तु धवलाकार कहते हैं कि यह मत न तो एक स्वस्य पुरुषके आसो-ऽन्नासोंकी गणना करनेसे सिद्ध होता है,

और न केवळी द्वारा भाषित प्रमाणभूत अथ सूत्रमे इसका सामञ्जस्य बैठता है। उन्होंने एक प्राचीन गाथा उद्धृत करके बतलाया है कि एक मुहूर्तक उच्छ्वासोंका ठीक प्रमाण ३७७३ है, और इसी प्रमाण द्वारा सूत्रके एक दिवसमें १,१३,१९० प्राणोंका प्रमाण सिद्ध होता है। पूर्वोक्त मतसे तो एक दिनमें केवल २१,६०० प्राण होंगे, जो किसी प्रकार भा सिद्ध नहीं। (पृ ६६-६७)

(४) उपशान्तक जीवोंका सात्याके नियममें उत्तरप्रतिपत्ति और दक्षिणप्रतिपत्ति, ऐसी दो भिन्न मायताएँ दी हैं। प्रथम मतानुसार उक्त जातोंकी संख्या ३०४, तथा द्वितीय मतानुसार उनसे ५ कम अर्थात् २९९ है। इस मतभेदकी प्ररूपक दो गाथाएँ मा उद्धृत की गई हैं। उनमेंसे एकमें एक तीसरा मत और स्फुटित होना है, जिसके अनुसार उपशान्तकोंकी संख्या पूरे ३०० है। इन मतभेदोंका धरणाकारने कोई उहापोह नहीं किया, उन्होंने केवलमात्र उनका उल्लेख ही किया है।

(५) इन्हीं उत्तर आ दक्षिण प्रतिपत्तियाँका मतभेद प्रसक्तमयन रात्रिके प्रमाण प्ररूपणमें भी पाया जाता है। उत्तरप्रतिपत्तिके अनुसार प्रसक्तका प्रमाण ४,६६,६६,६६४ है, किन्तु दक्षिणप्रतिपत्त्यनुसार यह प्रमाण ५,०३,९८,२०६ अलग है। इन मतभेदोंके बीच निर्णय करनेका भी धरणाकारने यहाँ कोई प्रयत्न नहीं किया। किन्तु दक्षिणप्रतिपत्तिके प्रमाणमें जो कुछ आचार्योंने यह झका उठा है कि सर तार्थक्योंमें सबसे बड़ा शिष्यपरिार पद्मप्रभुवामीका ही था, किन्तु यह परिार भी मात्र ३,३०,००० ही था। तब फिर जो सभ सयनोंकी पूरा संख्या ८९९९९९९७ एक प्राचीन गाथाका प्ररूपक है, वह कैसे सिद्ध हो सकता है? इसका परिार धरणाकारने यह किया है कि इस दृष्टान्तमेंगी वादलों तार्थक्योंके साथ भले हा भयनोंका उक्त प्रमाण पूर्ण न होता हो, किन्तु अथ उत्सर्पिणा-अम्मर्षिणियोंमें तो तार्थक्योंका शिष्यपरिार बड़ा पाया जाता है। दूसरे, मत और पेरगत क्षेत्रोंकी अवेशा मनुष्योंका प्रमाण विरह क्षेत्रमें संप्रदानगुणा पाया जाता है, अतः वर उक्त प्रमाण पूरा हो सकता है। इसलिये उक्त प्रमाणमें कोई दृग्ग नहीं है। (पृ ९८-९९)

(६) पंचेन्द्रिय नियम योनिमता मिथ्यादृष्टियाँका अरहाकार देवोंके अरहाकारालके आश्रयसे बनलाया गया है। किन्तु धरणाकारका मत है कि क्लिन ही आचार्योंका उक्त व्याख्यान घटित नहीं होता है, क्योंकि, मानव्यतर देवोंका अरहाकाराल तीनसौ योचनोंका अगुलोंका वर्गमा बनलाया गया है। यहाँ जाइ यह दाका कर सकता है कि पंचेन्द्रिय नियम योनिमता मिथ्यादृष्टि सभ अरहाकाराल ही गत है और मानव्यतर देवोंका अरहाकाराल ठीक है, यह कैसे जाना जाता है यहाँ धरणाकार कहते हैं कि हलाक के प्रसक्त आग्रह नहीं ह, किन्तु जब दो बातोंमें विरोध ता उनमसे कोई एक ता असत्य माना ही चाहिये। किन्तु इतना समाधानपूर्वक कह चुकने धरणाकारका अपनी निष्ठापरक बुद्धिमा प्रेरणा हुई और वे यह उठे— अहवा दोषिग वि वषहाणा भमशाणि, एमा भ्रमंग पद्मजा।' अर्थात् उक्त दोनों ही व्याख्यान असत्य हैं, यह हम प्रतिज्ञापूर्वक कह सकते हैं। इसका आगे धरणाकारने सुशान्त सूत्रके आमतसे उक्त दोनों अरहाकारालोंको अस्ति करके उनमें यथाचित प्रमाण-प्रेषण करनेका उपदेश दिया है। (पृ २३१-२३२)

(७) सासादनसम्पत्तियोंका प्रमाण एक प्राचीन गाथामें ५२ करोड और दूसरी गाथामें ५० करोड पाया जाता है । धरलाकारने प्रथम मत ही ग्रहण करनेका आदेश किया है, क्योंकि, वह प्रमाण आचार्य-परंपरागत है । (पृ २५२)

(८) सूत्र ४५ में मनुष्य पयाप्त विम्याद्ये राशिका प्रमाण बतलाया है 'कोडाकोटाकोडीसे ऊपर और कोटाकोटाकोटाकोडीसे नीचे अथात् छठवें वर्गके ऊपर और सातवें वर्गके नीचे । किन्तु एक दूसरा मत है कि मनुष्य-पर्याप्तराशि वादाळ वर्गके (४२९४९६७२९६) अर्थात् द्विरूप वर्गधारके पाचवें वर्गस्थानके घनप्रमाण है । धरलाकारने इस दूसरे मतका परिहार किया है और उसके दो कारण दिये हैं । एक तो वादाळका घन २९ अरु प्रमाण होकर भी कोडाकोडा-कोडाकोटीके ऊपर निकल जाता है, जिससे सूत्रके अरु-सीमाओंका सर्वथा उल्लंघन हो जाता है । दूसरे यदि टाई द्वापके उस भागका क्षेत्रफल निकाला जाय जहा मनुष्य विशेषतासे पाये जाते हैं, तो उसका क्षेत्रफल केवल २५ अरु प्रमाण प्रतरागुलोंमें आता है, जिसमें उस २९ अरु प्रमाण मनुष्यराशिका वहा निवास असंभव सिद्ध होता है । यश नहीं, सर्वार्थसिद्धिके देवोंका प्रमाण मनुष्य पयाप्तराशिसे सख्यातगुणा कटा गया है जबकि सर्गार्थसिद्धि विमानका प्रमाण केवल जम्बूद्वीपके बराबर है । अतएव उक्त प्रमाणसे इन देवोंकी अगगाहना भी उनकी निश्चित निवास-भूमिमें असंभव हो जायगी । अत उक्त राशिका प्रमाण सूत्रके अर्थात् कोडाकोडाकोडा कोटीसे नीचे ही मानना उचित है । (पृ २५३ २५८)

(९) आहारमिश्रकाययोगियोंका प्रमाण आचार्य-परंपरागत उपदेशसे २७ माना गया है, किन्तु सूत्र न १२० में उनका प्रमाण 'सत्यात' शब्दके द्वारा सूचित किया गया है । इसपरसे धरलाकारका मत है कि उक्त राशिका प्रमाण निश्चिन २७ नहीं मानना चाहिये, किन्तु मध्यम सख्यातकी अन्य कोई सत्या होना चाहिये, जिसे जिनेन्द्र भगवान् ही जानते हैं । यद्यपि २७ भी मध्यम सत्यातका ही एक भेद है और इसलिये उसके भी उक्त प्रमाणप्ररूपणमें ग्रहण करनेकी संभावना हो सकती है, किन्तु इसके विरुद्ध धरलाकारने दो हेतु दिये हैं । एक तो सूत्र में केवल 'सत्यात' शब्द द्वारा ही वह प्रमाण प्रकट किया गया है, किसी निश्चित सत्या द्वारा नहीं । दूसरे मिश्रकाययोगियोंमें आहारकाययोगी सख्यातगुणे कहे गये है । दोनों विकल्पोंमें यहाँ सामजस्य बन नहा सकता, क्योंकि, सर्व अपर्याप्तकालसे जधन्य पयातकाल भा सख्यातगुणा माना गया है । (पृ ४००)

६ गणितकी विशेषता

धरलाकारने अपने इस अयभागके आदिमें ही मगलाचरण गाथामें कहा है कि—' गमिङ्गल विण भणिमो दब्बणिओण गणितसार' अर्थात् जिनेन्द्रदेवकी नमस्कार कल्पके हम द्रव्यप्रमाणानुयोगका कथन करते हैं, जिसका सार भाग गणितशास्त्रमें सम्बन्ध ग्वना है, या जो गणित-शास्त्र-प्रधान है । यह प्रतिज्ञा इस अयमें पूर्णरूपसे निवाही गई है । धरलाकारने इस अयभागमें गणितज्ञानका सूत्र उप-

योग किया है, जिसमें तत्कालीन गणितशास्त्रकी अन्वयान्ना हमें बहुत अच्छा परिचय मिल जाता है। धरदारूपमें शताब्दियों पूर्व रचे गये भूतगणित आचार्यके सूत्रोंमें जो गणितशास्त्रसम्बन्धी उल्लेख हैं, वे भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। उनमें एकमें गणितशास्त्र, सप्तम, शतसहस्र (लक्ष), कोटि, बोटानोटानोटोटी व योगशास्त्रादिनामोंकी तर्ककी गणना, व उसमें भा उपर सन्ध्यात, असन्ध्यात, अनत और अनतानतका ध्यान, गणितकी मूल प्रक्रियाओं जैसे मानिके, हीन, गुण और अग्रहार या प्रतिभाग अर्थात् जोड़ बारी, गुणा, भाग, र्ग और वर्गमूल, तथा प्रथम, द्वितीय आदि सातवें तक र्ग व वर्गमूल, घन, अयायाम्यास आदिनामोंके रूप उपयोग किया गया है। क्षेत्र और कालक्रमधी विधेय गणना-मानों जैसे अणु, याचन, श्रेणी, जाग्रत व लाक तथा आपन्न, अतर्मुद्ग, आसर्पिणी-उत्सर्पिणी, पन्थोपन, तथा विषम विक्रमसूची (पक्षिगण्य श्रेयआयाम), इन सबका भी सूत्रोंमें खूब उपयोग पाया जाता है, तिनके स्वरूपपर ध्यान देनेमें आनसे लगभग दो हजार वर्षपूर्वके एतद्देशीय गणितज्ञानका अच्छा दिग्दर्शन मिल जाता है।

धरदारारकी रचनामें अन्वयान्त, अन्वयान्ताम्बयान्त तथा जनत और अन्वयान्ततमे आत्मिक प्रवेशों और तात्पर्योंका और भी सूक्ष्म निदर्शन किया गया है, जिसका स्वरूप हम ऊपर दिखा जये हैं। इस विषयमें धरदारारद्वारा अर्धश्रेय और वर्गश्रेयोंके परम्पर सन्ध्यात तथा वर्गित-संगित राशिका जो परिचय दिया गया है वह गणितकी विशेष उपयोगी वस्तु है। (देखो पृ १८-२६)। सर्व जीवशास्त्रिका उसके अन्तर्गत राशियोंका भाग-प्रतिभाग दिखानेके लिये धरदारार ने धुरगणित (भागद्वारा विभाग) स्थापित करनेकी क्रिया और उससे भाग देनेकी प्रक्रियाएँ जैसे राटित, भाजित, मिश्रित आ अपन्न विस्तारसे दी हैं, जो गणितज्ञोंको रचिकर सिद्ध होगी। (देखो पृ ४१)। धुरगणित भाग देनेपर विरहित मिथ्यादृष्टिगोशिका क्यों आती है, इसका कारण समझानेमें भाग्य और भाजकके हानि-वृद्धिसम्बन्धी तात्पर्य और सन्ध्यात वतलाया गया है और क्षेत्र-गणितसे समझाया गया है, वह गणितशास्त्रका एक महत्वपूर्ण भाग है। (देखो पृ ४२ आदि)। अन्तरण गाथा २४ से ३२ तकरी भा गाथाओंमें इसी सन्ध्यात वट सुत्र नियम गृह्यपर्यं उद्धृत किये गये हैं और उनका उपयोग विरहित राशिका लनेके लिये यथासम्भार और यथास्थान भागके अनेक विस्तारोंमें बतलाया गया है। अन्वयान्त विस्तृत निश्चित भाग्य और भाजकसे नीचेकी सन्ध्यात लेकर वही भजनफल उत्पन्न कर वतलाया गया है, और वही द्विक्रम अर्थात् वर्गभागमें, अष्टरूप अर्थात् घनधारामें और घनायन-धामोंमें अथवा निश्चित सन्ध्यात प्रथम, द्वितीय व तृतीय वर्गमूल लेकर भाजकको कम कर वही भजनफल उत्पन्न कर दियाया है। उपरि विस्तृतमें निश्चित भाग्य व भाजकसे ऊपरकी अर्थात् वर्ग, घन व घनायनपर गणित प्रदण करके वही भजनफल उत्पन्न किया गया है। इस प्रक्रियामें धरदारार-द्वारा तान और विस्तृत कर दिखाने हैं, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार। गृहीत तो है, अथवा उनमें ऊपरके भाग्य आर भाजकसे द्वाय निश्चित भजनफल उत्पन्न किया गया है। किन्तु गृहीतगृहीत में निश्चित भजनफल भी एक वया राशिका भाजक बन जाता है और उससे

धका उसी भाजक्रमे भाग देनेसे निश्चिन भजनफल प्राप्त होता है। गृहीतगुणनारमें धित भजनफलका विमक्षित राशिमें भाग देनेसे जो लब्ध आया उसका उसी भाजर शेषे गुणा करके उत्पन्न हुए भजनफलका विमक्षित राशिके वर्गमें भाग देकर निश्चित भजनफल त किया गया है। ये सब निरूप्य वर्गात्मक राशियोंमें ही घटित होते हैं। इनका पूर्ण स्वरूप ५२ से ८७ तक देखिये। प्रमाणराशि, फलराशि और इच्छाराशि, इनकी त्रैराशिक क्रियाका पयोग जगह जगह दृष्टिगोचर होता है। (पृ ९५, १००)

मनुष्यगति प्रमाणके प्ररूपणमें राशि दो प्रकारकी बतलाई है ओज ओर युग्म। इनमेंसे ल्येकरके पुन दो विभाग किये गये हैं। किसी राशिमें चारका भाग देनेसे यदि तीन शेष रहें तो ह तेजो ज राशि, यदि एक शेष रहे तो क्लिओज राशि, यदि चार शेष रहें (अर्थात् कुछ शेष रहे) तो कृतयुग्म राशि तथा यदि दो शेष रहें तो बादरयुग्म राशि कहलाती है। इनमेंसे तुष्यराशि तेजो ज कहीं गई है। (पृ २४९)

८ मूढविद्वित्री ताडपत्रीय प्रतियोंके मिलानका निष्कर्ष

यह तो पाठकोंको विदित ही है कि इन सिद्धान्तप्रयोगोंकी प्राचीन प्रतिया केवल एकमात्र मूढ-द्वित्रीक्षेत्रके सिद्धान्तमन्दिरमें प्रतिष्ठित हैं। पूर्ण प्रकाशित दो भागोंके लिये हमें इन प्राचीन प्रतियोंके ठ-मिलानका सुअसर प्राप्त नहीं हो सका था। किन्तु हर्षकी बात है कि अब हमें वहाके भट्टारक-रामी और पचोंका सहयोग प्राप्त हो गया है, जिसके फलस्वरूप ताडपत्रीय प्रतियोंके मिलानकी मस्था हो गई है। पूर्ण प्रकाशित दोनों भागों ओर इस तृतीय भागका मूल पाठ वहाकी ताडपत्रीय तियोंसे मिलाया जा चुका है ओर उससे जो पाठभेद हमें प्राप्त हुए हैं उनपर खूब विचार कर हमने न्हें चार श्रेणियोंमें विभाजित किया है—

(अ) वे पाठभेद जो अर्थ व पाठकी दृष्टिसे अधिक शुद्ध प्रतीत हुए। (दखो परिशिष्ट २० आदि)

(ब) वे पाठभेद जो शब्द और अर्थ दोनों दृष्टियोंसे दोनों ही शुद्ध हैं, अतएव जो समवन चीन प्रतियोंके पाठभेदोंसे ही आये हैं। (दखो परिशिष्ट पृ २९ आदि)

(स) वे पाठभेद जो प्राकृतमें उच्चारणभेदसे उत्पन्न होते हैं और निरूप्यरूपसे पाये जाते हैं। (दखो परिशिष्ट पृ ३२ आदि)

(द) वे पाठभेद जो अर्थ या शब्दकी दृष्टिसे अशुद्ध हैं ओर इस कारण ग्रहण नहीं किये जा सकते। (दखो परिशिष्ट पृ ३८ आदि)

इस श्रेणी-विभागके अनुमार मूढविद्वित्रीय प्रतियोंका पाठ-मिलान इस भागके साथ प्रकाशित ा रहा है। संक्षेपमें यह पाठभेद-परिस्थिति इस प्रकार आती है—

(अ) श्रेणिके पाठभेद भाग १ में ६०, भाग २ में २५ और भाग ३ में ६२, इस प्रकार कुल १४७ पाये गये हैं। भेद प्राप्त करने के लिये जोडा है, और अर्थकी दृष्टिसे तो अत्यंत अल्प। यह हम जानते हैं कि इन पाठभेदोंके कारण अनुवादमें किंचित् भी परिवर्तन करनेकी आवश्यकता वास्तव में भाग १ में १९, भाग २ में १० और भाग ३ में ३२, इस प्रकार कुल ६१ स्थानोंपर पडा है। शेष ८८ स्थानोंका पाठपरिवर्तन वास्तविक हानिपर भी उमसे हमारे लिये हुए भाषानुवादमें कोई परिवर्तन आवश्यक प्रतीत नहीं हुआ।

(ब) श्रेणिके पाठभेद भाग १ में ३०, भाग २ में कोई नहीं, और भाग ३ में ३२, इस प्रकार कुल ६२ पाये गये, और वसमें मा किंचित् अनुवाद-परिवर्तन केवल प्रथम भागमें १७ स्थानोंपर आवश्यक समझा गया है।

(ग) श्रेणिके पाठभेद भाग १ में ६०, भाग २ में ३० और भाग ३ में ६७, इस प्रकार कुल १५७ पाये गये हैं। इनमें अल्प कोई भेदकी तो समाप्ता ही नहीं है। इनमेंके अधिकांश पाठभेद जो कि अल्प प्रतियोग्य भाषा पाये जाने थे, किन्तु हमने प्राकृत व्याकरणके नियमोंके अनुसार परिवर्तन किये हैं। (दृष्टव्य 'पाठ सहीबनक नियम,' पृष्ठ भाग १, पृष्ठ १०१)

(घ) श्रेणिके पाठभेद भाग १ में ३८, भाग २ में १५, भाग ३ में ६७, इस प्रकार कुल १२० पाये गये। इनमेंके अधिकांश तो स्पष्ट अनुवाद हैं, और जहाँ उनका शुद्ध होनेकी समाप्ता हो सकती है, वहाँ टिप्पणा देकर स्पष्ट कर दिया गया है कि वे पाठ प्रकृतमें क्यों नहीं पाए जा सकते।

इस प्रकार कुल पाठभेद १४२+६२+१५७+१२०=४८१ पाये हैं। संक्षेपमें यह परिचय इस प्रकार है—

भाग	मूल पाठमें भेद					अनुवाद परिवर्तन		
	अ	ब	स	ड	कुल	अ	ब	कुल
१	६०	३०	६०	३८	१९०	१०	१७	३६
२	०	५	३०	१५	७०	१०	५	१०
३	६२	३२	६७	६७	२२८	३०	५	३२
कुल	१२२	६७	१५७	१२०	४८१	६०	२७	८७

मूलपाठ संपादनमें अर्थ और शब्दांकी दृष्टिसे कुछ आवश्यक परिवर्तन हुए हैं। प्रतिक्रिया अत्र न हानिम हमने वे पाठ कोष्ठोंके अन्दर दिये जाते हुए पाठोंके अर्थ परिचय में दिये हैं। जो जहाँ पडे थे। किन्तु यह जातना प्रकृत में पाठ स्थिति प्रतीत हुए निम्न पाठक सुलभता के लिये क पाठ कही है।

भागका विषय उद्धृत कुछ मूक्षम है, अतएव यहांके स्वल्न बडे ही गभीर विचारके पश्चात् ध्यानमें आसके और उनका पाठ बगलाकारकी शैलीमें ही बटे विचारके साथ रखना पडा। ऐसे पाठ प्रस्तुत भाग में १९ हैं। हमें यह प्रकट करते हुए हर्ष होता है कि मूडविद्दीके मिगनसे इन पाठोंमें के १२ पाठ जैसे हमने रखे हैं वैसे ही शब्दश ताडपत्रीय प्रतियोंमें पाये गये। एक पाठमें हमारे रखे हुए 'खग्गा' के स्थानपर 'बग्गा' पाठ आया है, किन्तु विचार करनेपर यह अशुद्ध प्रतीत होता है, वहा 'खग्गा' ही चाहिये। शेष ६ पाठ मूडविद्दीकी प्रतियोंमें नहीं पाये गये। किन्तु वे पाठ अशुद्ध फिर भी नहीं हैं। यथार्थत तहा अर्थकी दृष्टिसे उही अभिप्राय पूर्वापर प्रसंगसे लेना पडता है। बगलाकारकी अन्यत्र शैलीपरसे ही ये पाठ निहित किये गये हैं^१।

१ देखो पृष्ठ २६४, ३५४, ३८३, ३८४, ३९२, ४१२, ४२४, ४३५, ४४४, ४५९

२ देखो पृष्ठ ४८६

३ देखो पृष्ठ ६१, २४८, ३४८, ३५३, ४४०

द्रव्यप्रमाणानुगम विषयसूची

क्रम न	विषय	पृष्ठ न	क्रम न	विषय	पृष्ठ न
	१				
	विषयकी उ-धानिका	१-१०			
१	द्रव्यप्रमाणानुगमकी ओक्षा निर्देश भेद कथन	१	१०	धानन्, पानन्, उभयानन्त, विस्तारानन्त सर्वातन्त और भावानन्तके भेद और स्वरूप	१५-१६
२	द्रव्यशब्दकी निरुक्ति और भेद	२	११	प्रत्ययों में गणनातल प्रयोजनकी सिद्धि और शेष दश अन्तोंके कथन करनेका हेतु	१६-१७
३	जीवद्रव्यका साधारण और असाधारण लक्षण	२	२०	गणनातलके तीन भेद-परीत, युक्त और अनतानन्त	१८
४	अजीवद्रव्यके रूपी और अरूपी भेद या उनके लक्षण	२-३	२१	मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणमें विवक्षित अन्तानन्तका प्रतिपादन	१८
५	द्रव्यप्रमाणानुगममें प्रकृत द्रव्यका निर्देश	४	२२	अन्तानन्तके जघ-यादि तीन भेद, तथा मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणमें मध्यम अन्तानन्तके ग्रहणका परिश्रमके प्रमाणपूर्वक प्रतिपादन	१९
६	प्रमाण शब्दकी निरुक्ति तथा द्रव्यप्रमाण शब्दका समास-विच्छेद	४-५	२३	अथवा, मिथ्यादृष्टिराशि तीन वार वगित स्वयं गितराशिसे अन्तगुणी तथा छह द्रव्यप्रक्षेपतराशिसे अन्तगुणी हीन है, इसका सोपान्तिक प्रतिपादन और इन राशियोंके उत्पत्तिप्रमका प्ररूपण	१९-२६
७	द्रव्यका लक्षण	५-६	२४	कालकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका निरूपण, तथा क्षेत्रप्रमाणके पूर्व काठप्रमाणके प्रतिपादनकी सार्थकता	२७
८	छद्मों समासोंके लक्षण व उदाहरण	६-७	२५	कालकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी गणना करनेका प्रकार तथा इस गणनामें केवल अतीत कालक ग्रहणका प्रतिपादन	२८-२९
९	सव्ययी सर्वथा एकरूपताका परिहार	७	२६	अतीतकालसे मिथ्यादृष्टिराशि बर्द्ध है, इसका सोलह-प्रतिक अल्प बहु उमे समर्थन	३०-३१
१०	द्रव्यप्रमाणानुगमका अर्थ	८	२७	क्षेत्रकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टिराशिका प्रमाण-प्रतिपादन	
११	निर्देशका स्वरूप और उसके भेदोंका स्पर्शकरण	८-१०			
	२				
	जोषसे द्रव्यप्रमाणनिर्देश	१०-१०१			
१२	मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण प्ररूपण	१०			
१३	अन्तके ११ भेद, नामानन्त और स्थापनानन्तका स्वरूप	११			
१४	द्रव्यानन्तके भेद	१२			
१५	भागम और भातका लक्षण	१२			
१६	भागम द्रव्यानन्तका स्वरूप	१२			
१७	नोभागम द्रव्यानन्तके भेद, उनका स्वरूप और तद्विषयक शका-समाधान	१३-१५			
१८	सादप्रतानन्त, गणनानन्त अपदेशी	१३-१५			

क्रम न	विषय	पृष्ठ न	क्रम न	विषय	पृष्ठ न
२८	क्षेत्रकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टिराशिके मापनेका प्रकार	३२	४४	गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार	५४
२९	लोक, जगच्छ्रेणी और राजुका स्वरूप	३३	४५	द्विरूपधारा में गृहीत उपरिम विकल्प- द्वारा मिथ्यादृष्टिराशिकी उत्पत्ति	५४
३०	मध्यलोक विस्तारके सत्रधमें मत भेद तथा ध्वलाकारका तत्संबधी सयुक्तिक निर्णय	३४-३८	४६	घनधारामें गृहीत उपरिम विकल्प	५७
३१	क्षेत्रप्रमाणके प्ररूपणकी सार्यकता	३८	४६	घनाघनधारामें गृहीत उपरिम विकल्प	५८
३२	भावप्रमाणका स्वरूप व उसके भेद	३८-३९	४७	गृहीतगृहीत-उपरिम विकल्पमें तीनों धाराओंके द्वारा मिथ्यादृष्टिराशिकी उत्पत्ति	५९
३३	सूत्रमें भावप्रमाणके नहीं कहनेमें हेतु	३९	४८	गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पमें तीनों धाराओंके द्वारा मिथ्यादृष्टिराशिकी उत्पत्ति	६१
३४	भावप्रमाणकी अपेक्षा खलित, भाजित, विरलित और अपहृत नामक गणितकी प्रक्रियाओंके द्वारा मिथ्यादृष्टिराशिके लानेकी विधि	३९	४९	सासादनसम्यग्दृष्टिसे लेकर सय- तासयत गुणस्थानतक प्रत्यक गुण- स्थानचर्चा जीर्णका प्रमाण	६३
३५	वर्गस्थानमें खडित, आदिके द्वारा मिथ्यादृष्टिराशिके प्रमाण निरूपणकी प्रतिष्ठा	४०	५०	सासादनसम्यग्दृष्टियोंका प्रमाण	६३
३६	मिथ्यादृष्टिराशि लानेके लिए ध्रुव राशिकी स्थापना व उसके द्वारा खडित, भाजित, विरलित और अपहृत विधिओंसे मिथ्यादृष्टिराशिका प्रमाण प्ररूपण	४१	५१	क्षेत्र और कालकी अपेक्षा सासा- दनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणकी प्ररू- पणा नहीं करनेका कारण	६३
३७	मिथ्यादृष्टिराशिका प्रमाण तथा तत्संबधी गणितका शास्त्रीय कारण	४२-४६	५२	कालप्रमाणसंबधी आवली, उच्छ्रुल, स्तोक, लय, नाली, मुहूर्त, भिन्न- मुहूर्त और अन्तर्मुहूर्तका स्वरूप	६६
३८	गणितसंबधी नौ कारण-गाथाएँ	४६-४९	५३	एक मुहूर्तमें प्राणोंकी सख्यासिद्धि और मतान्तरका खडन	६६
३९	सर्वजीवराशिमसे मिथ्यादृष्टि और सिद्ध तेरस गुणस्थानोंके प्रमाण पृथक् करनेकी निरुक्ति	५१	५४	असयतसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्या- दृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और सय- तासयत अवहारकालोंका कथन	६७
४०	विकल्पके अधस्तन और उपरिम भेद, तथा वर्गधारामें मिथ्यादृष्टि राशि लानेके लिए अधस्तन विकल्पकी असम्भत्ता	५२	५५	ओषसम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादन- सम्यग्दृष्टि और सयतासयतोंका अवहारकाल आवलीके असख्या- तयें भाग न होकर 'असयतात आवली प्रमाण है' इन बातका समर्थन व विरोध-परिहार	६८
४१	घनधारामें अधस्तन विकल्प	५२	५६	सासादनसम्यग्दृष्टि आदि राशि योंके अनयस्थित रहने पर भी उनके निश्चित प्रमाण लानेके लिए निश्चित भागद्वारका समर्थन	७०
४२	घनाघनधारामें अधस्तन विकल्प	५३			
४३	उपरिम विकल्पके तीन भेद गृहीत,				

क्रम न	विषय	पृष्ठ न	क्रम न	विषय	पृष्ठ न
५७	खण्डित, भाजित विरलित, अपहत, प्रमाण कारण और निकटिके द्वारा वर्गधारा में सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणका प्ररूपण			पात्तिने अनुसार उपशामकों और क्षपकोंकी सख्याका मतभेद	९४
५८	अधस्तनविकल्पमें द्विरूपवर्गधारा आदिका आशय लेकर सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणका प्ररूपण	७१	७१	एक एक गुणस्वानमें उपशामक और क्षपकोंका सयुक्त प्रमाण	९५
५९	उपरिमविकल्पके तीनों भेदोंमें द्विरूपवर्गधारा आदिका आशय लेकर सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणका प्ररूपण	७३	७२	सयोगिके रलियोंका प्रवेश घ कालकी अपेक्षा प्रमाण	९५
६०	सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असयतसम्यग्दृष्टि और सयतासयत की प्ररूपणा खण्डित आदि विधिसे सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणके समान उनके पृथक् पृथक् अद्यहारकालके द्वारा करनका निर्देश	७७	७३	सयोगिनेचली जिनोंकी लक्षपृथक् सख्याके निकालनेका विधान	९५
६१	सासादनसम्यग्दृष्टि आदिके अद्यहारकाल, प्रमाण और पर्योपमकी अकसदृष्टि	८७	७४	यथाख्यातसयतोंका, सर्वसयतराशिका तथा उपशामक और क्षपकोंका प्रमाण	९७
६२	प्रमत्तसयतोंका प्रमाण	८७	७५	प्रमत्त और अप्रमत्तसयतोंकी राशिके निकालनेका एक नया प्रकार	९७
६३	अप्रमत्तसयतोंका प्रमाण	८८	७६	दक्षिणप्रतिपत्तिवाली सर्व सयतोंकी सख्यापर आक्षेप और समाधान	९८
६४	अप्रमत्तसयतोंके प्रमाणसे प्रमत्तसयतोंके देने प्रमाणका कारण	८९	७७	उत्तरप्रतिपत्तिकी अपेक्षा प्रमत्तसयत आदिका प्रमाण	९९
६५	घारों उपशामकोंका प्रवेशकी अपेक्षा प्रमाण	९०	७८	ओघ भागाभाग प्ररूपण	१०१
६६	घारों उपशामकोंका कालकी अपेक्षा प्रमाण घ उनकी सख्याके जोड़नेका प्रकार	९०	७९	अल्पबहुत्वके स्थानकी प्रतिज्ञा और स्वतन्त्र अल्पबहुत्व अनुयोग द्वारके होते हुए भी यहां उसके कहनेका कारण	११४
६७	घारों क्षपक और अयोगिके रलीका प्रवेशकी अपेक्षा प्रमाण	९०	८०	अल्पबहुत्वके दो भेद स्वस्थान और सर्वपरस्थान	११४
६८	घारों क्षपक और अयोगिके रलीका कालकी अपेक्षा प्रमाण घ उनकी सख्याके जोड़नेका प्रकार	९१	८१	मिथ्यादृष्टिराशियोंमें स्वस्थान अल्पबहुत्वका अभाव	११४
६९	उपशामकों और क्षपकोंकी सख्याके स्थानका कारण	९२	८२	सासादनादि राशियोंमें स्वस्थान अल्पबहुत्व	११४
७०	उत्तरप्रतिपत्ति और दक्षिण प्रति	९३	८३	ओघ सर्वपरस्था / अल्पबहुत्व	११६
			३		
		९३		आदेशसे द्रव्यप्रमाणनिर्देश	१२१-४८७
		९४		१ गतिमार्गणा	१२१-३०५
				(नरकगति)	
			८४	सामान्य नारक मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण	१२१

क्रम न	विषय	पृष्ठ न	क्रम न	विषय	पृष्ठ न
८५	असत्प्रातके नामादि ग्यारह भेद और उनका स्वरूप	१२३ १२५		विकल्पके द्वारा उक्त राशिकी प्ररूपणा	१५०
८६	प्रकृतमें गणनासख्यानसे प्रयोजन तथा शेष असत्प्रातके वर्णनकी सार्थकता	१२५	९९	सासादनसे लेकर अस्यतसम्प-दृष्टि गुणस्थान तक प्रत्येक गुण स्थानमें सामान्य नारकियोंका प्रमाण	१५६
८७	गणनासत्प्रातके जघन्यपरीता-सख्यात आदि नौ भेद, तथा प्रकृतमें मध्यम असत्प्रातासत्प्रातका ग्रहण	१२६	१००	गुणस्थान-प्रतिपक्ष सामान्य नारकियोंको गुणस्थान-प्रतिपक्ष ओघप्रमाणके समान मान लेने पर आनेवाले दोषका परिहार	१५६
८८	तीन चार वर्गित सर्वांगितराशिसे असख्यातगुणी तथा छह द्रव्य प्रक्षितराशिसे असत्प्रातगुणी हीन राशिसे प्रयोजन और उक्त राशियोंका स्वरूप निदर्शन	१२८	१०१	ओघ अस्यतसम्पदृष्टि-अग्रहार-कालके आश्रयसे गुणस्थान प्रतिपक्ष देव, तिर्यंच आर नार-कियोंके प्रमाण लानेके लिए अब द्वारकाल उत्पन्न करनेकी विधि और उनका प्रमाण	१५७
८९	सामान्य नारक मिथ्यादृष्टियोंका कालकी अपेक्षा प्रमाण व हेतु	१२९	१०२	प्रथम पृथिवीमें नारकियोंका प्रमाण	१६१
९०	क्षेत्रप्रमाणसे पहले काल प्रमाणके वर्णनकी सार्थकता	१३०	१०३	सामान्य नारकोंके प्रमाण समान प्रथम पृथिवीके नारकोंका प्रमाण माननेपर उत्पन्न होनेवाली आपत्तिका परिहार और विशेष पताका प्रतिपादन	१६१
९१	नारक मिथ्यादृष्टियोंकी कालकी अपेक्षा गणना करनेका प्रकार	१३१	१०४	प्रथम नारकोंके मिथ्यादृष्टि नार-कोंको विष्कभसूची और अग्रहार-काल	१६२
९२	नारकसामान्य मिथ्यादृष्टियोंका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	१३१	१०५	उक्त नारकोंका प्रकारान्तरसे अवधारकाल	१६४
९३	नारकसामान्य मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कभसूचीका प्रमाण	१३३	१०६	प्रत्येक पृथिवीके प्रति अवधार-काल, प्रक्षेप शलाकाए और विष्कभसूचीमें अपनयनरूप-सत्प्रातके प्रमाणका प्रतिपादन	१६६
९४	सूत्रपाठित 'अंगुल' शब्दसे सूच्यगुलके ग्रहणका सप्रमाण समर्थन	१३४	१०७	सामान्य अवधारकालमात्र छह पृथिवियोंके द्रव्यका आश्रय लेकर प्रत्येक पृथिवीमें अवधारकाल प्रक्षेप-शलाकाए निकालनेका विधान	१७१
९५	वर्गस्थानमें खटित आदिके द्वारा विष्कभसूचीका प्ररूपणा	१३५	१०८	उक्त सातों अवधारकालोंके मिला नकी विधि और उनसे प्रथम	
९६	नारकसामान्य मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाण लानेके लिए विष्कभसूचीके थलसे भागहारकी उत्पत्ति	१४१			
९७	वर्गस्थानमें प्रमाण आदिके द्वारा अग्रहारकालका निरूपण	१४२			
९८	नारक सामान्य मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण अग्रहारकालसे किस प्रकार आता है, यह बता कर प्रमाण, कारण, निश्चि और				

क्रम न	विषय	पृष्ठ न	क्रम न	विषय	पृष्ठ न
	पृथिवीके अवहारकालके उत्पन्न करनेका क्रम	१७५		चतुर्लानेवाली अक्सदृष्टि	१९७
१०९	प्रकारान्तरसे प्रथम पृथिवीके अवहारकाल लानेकी विधिया	१७७	१०१	दूसरीसे सातवीं पृथिवी तकके मिथ्यादृष्टि तारकियोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	१९८
११०	छठी और सातवीं पृथिवियोंका सयुक्त अवहारकाल	१७९	१२२	जगद्वेष्टनाके कितने कितने धर्म मूर्तोंके परस्पर गुणा करनेसे किस किस पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण आता है, इसका स्पष्टीकरण और उसमें प्रमाण	२००
१११	पाचवीं, छठी और सातवीं पृथिवियोंका सयुक्त अवहारकाल	१८०	१२३	तृतीयादि पृथिवियोंके द्रव्यके आश्रयसे दूसरी पृथिवीके द्रव्य उत्पन्न करनेकी विधि	२०१
११२	चौथी पाचवीं, छठा और सातवीं पृथिवियोंका सयुक्त अवहारकाल	१८२	१२४	प्रथम पृथिवीके आश्रयसे दूसरी पृथिवीके द्रव्य उत्पन्न करनेकी विधि और इसी प्रकार शेष पृथिवियोंके द्रव्य उत्पन्न करनेकी सूचना	२०३
११३	तीसरीसे सातवीं तक पांच पृथिवियोंका सयुक्त अवहारकाल	१८३	१८५	दूसरीसे सातवीं पृथिवीतक गुण स्थान प्रतिपन्न जावोंका प्रमाण	२०६
११४	दूसरीसे सातवीं तक छह पृथिवियोंका सयुक्त अवहारकाल	१८४	१८६	दूसरीसे सातवीं पृथिवी तक गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंका प्रमाण ओघप्ररूपणाके समान फटनेसे उत्पन्न होनेवाले दोषका परिहार और सातों पृथिवियोंके गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंके अवहारकालोंका प्रतिपादन	२०६
११५	दूसरी आदि छह पृथिवियोंके सयुक्त अवहारकालसे प्रथम पृथिवीके अवहारकालके लानेकी विधि	१८५	१८७	नरकगति-सम्बन्धी भागाभाग	२०७
११६	हानिरूप और प्रक्षेपरूप अशोंका ज्ञान करानेके लिये अक्सदृष्टि, तथा प्रक्षेपरूप राशिकी विधि	१८६	१८८	नरकगति-सम्बन्धी अल्पबहुत्व (तिर्यचगति)	२०८
११७	राशिके हानिरूप विधानका अक्सदृष्टि द्वारा स्पष्टीकरण	१८७	१८९	मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयतासयत गुणस्थानतक सामान्य तिर्यचोंका प्रमाण, तथा सामान्य तिर्यचोंका प्रमाण ओघप्रमाणके समान माननेपर आनेवाले दोषका परिहार	२१५
११८	सामान्य अवहारकालके एकविरलनके प्रति प्राप्त सामान्य द्रव्यके सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाण सङ्ग करके उनका सातों पृथिवियोंमें विभाजन और इनपरसे प्रथम पृथिवीके अवहारकालकी उत्पत्ति	१८९	१९३	सामान्य तिर्यच मिथ्यादृष्टियोंकी ध्रुवराशि और गुणस्थान प्रतिपन्न	
११९	सङ्ग शलाकाओंका आश्रय करके प्रकारान्तरसे प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालकी उत्पत्ति	१९३	१९६		
१२०	नरकगतिके सामान्य और विशेष रूपसे अवहारकाल, त्रिष्वमूर्त्वी और प्रक्षेप अवहारकाल	१९६			

क्रम न	विषय	पृष्ठ न	क्रम न	विषय	पृष्ठ न.
	सामान्य तिर्यचोंका अवहारकाल	२१६		पर्याप्तोंका प्रमाण	२२९
१३१	जहा राशिका अनन्तरूप प्रमाण वताया हे घडा भी कालप्रपणासे द्रव्यप्ररूपणाकी सूक्ष्मता सिद्ध होती है, इसका स्पष्टीकरण	२१७	१४२	पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	२२९
१३०	पचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य और कालकी अपेक्षा प्रमाण	२१७	१४३	पचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टि योनि मतियोंका अवहारकाल और उसके विषयमें मतभेद	२३०
१३३	असत्यातासत्यात अपसर्पिणी-उत्सर्पिणीकालोंके बतितने पर पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टिराशि के विच्छेद होनेकी शकाका समाधान	२१८	१४४	पचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टि योनि-मतियोंके अवहारकालका खंडित आदिके द्वारा कथन	२३३
१३३	पचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टिराशि का क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण व उनके अवहारकालकी सिद्धि	२१९	१४५	पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंकी विष्कम्भ सूची और द्रव्यका वर्णन	२३७
१३५	पचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालका खंडित आदिके द्वारा प्ररूपण	२२०	१४६	सासादन गुणस्थानसे लेकर सयतासयत तक प्रत्येक गुणस्थानमें पचेन्द्रिय तिर्यच योनि-मतियोंका प्रमाण तथा उसे ओघवत् कहनेसे उत्पन्न हुई आपत्तिका परिहार	२३७
१३६	पचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भसूची और द्रव्यका समर्थन	२२५	१४७	पचेन्द्रियतिर्यच योनिमती असयतसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादन और सयतासयतका अवहारकाल	२३८
१३७	सासादन गुणस्थानसे लेकर सयतासयत तक प्रत्येक गुणस्थानमें पचेन्द्रिय तिर्यचोंका प्रमाण	२२६	१४८	पचेन्द्रियतिर्यच पर्याप्तोंमें असयत सम्यग्दृष्टि पुरुषवेदियोंसे असयतसम्यग्दृष्टि स्त्रीवेदियोंके, और स्त्रीवेदियोंसे, नपुंसकवेदियोंके उत्तरोत्तर कम होनेका कारण	२३८
१३८	द्रव्यप्रमाणके आदिमें कथन करनेका प्रयोजन, व द्रव्य-प्रमाण अन्य प्रमाणोंसे स्तोरु हे, इसमें हेतु	२२७	१४९	पचेन्द्रियतिर्यच तीनवेदवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंसे पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती असयतसम्यग्दृष्टि जीव कम हैं, या अधिक हैं, इस विषयमें उपदेशका अभाव	२३८
१३९	द्रव्यप्रमाणसे कालप्रमाणके सूक्ष्मत्वकी सिद्धि	२२८	१५०	पचेन्द्रियतिर्यच अपर्याप्तोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण व अवहारकालका निरूपण	२३९
१४०	पचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिथ्या दृष्टियोंका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण, तथा उनके अवहारकालका स्पष्टीकरण	२२८	१५१	तिर्यचगाति सम्यन्धी भागाभाग और अल्पवहुत्व	२४०
१४१	सासादन गुणस्थानसे लेकर सयतासयत तक पचेन्द्रिय तिर्यच				

क्रम न	विषय	पृष्ठ न	क्रम न	विषय	पृष्ठ न
	(मनुष्यगति)			मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण होता है,	
१५२	सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	२४४	१६४	देव वेदात्ते मनुष्य पर्याप्तोंका अवधारकाल और उनका प्रमाण	२५४
१५३	सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका अवधारकाल व खडित आदिके द्वारा उसका कथन	२४६	१६५	धादात्तेके घनप्रमाण मनुष्य पर्याप्तराशि है, इस मतका खडन और सूत्रप्रतिपादित मतका समर्थन	२५५
१५४	मध्यम विकल्प और उपरिम विकल्पमें भेद	२४७	१६६	सासादनगुणस्थानसे लेकर सयतासयततक प्रत्येक गुणस्थान में पर्याप्त मनुष्योंका प्रमाण	२५९
१५५	मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवधारकालका जगध्रेणामें भाग देने पर रूप अधिक मिथ्यादृष्टिराशि आती है, इसमें प्रमाण	२४९	१६७	प्रमत्तसयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें पर्याप्त मनुष्योंका प्रमाण	२६०
१५६	भोज और युग्म राशियोंके भेद प्रभेद और उनके लक्षण	२४९	१६८	मनुष्यनियोंमें मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण व अवधारकाल निरूपण	२६०
१५७	यदा जीवस्थानमें मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवधारकालका जगध्रेणीमें भाग देनेपर रूप अधिक सासादनात्ते तेरह गुणस्थानवर्ती अपनयनराशि आती है, इसका समकथन	२५०	१६९	सासादन गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली तक प्रत्येक गुणस्थानमें मनुष्यनियोंका प्रमाण, तथा गुणस्थान प्रतिपन्न मनुष्यनी गुणस्थान प्रतिपन्न सामान्य मनुष्योंके सख्यातवें भाग होती है, इसमें हेतु	२६१
१५८	मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंके अवधारकालका कथन	२५१	१७०	लघ्वपर्याप्त मनुष्योंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	२६२
१५९	सासादन गुणस्थानसे लेकर सयतासयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें सामान्य मनुष्योंका प्रमाण	२५१	१७१	मनुष्यगतिस्मरन्धी भागाभाग और अल्पबहुच	२६४
१६०	सासादनमध्यदृष्टि और सम्यग्मिथ्यागति मनुष्योंके प्रमाणमें मतभेद	२५२		(देवगति)	
१६१	प्रमत्तसयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक मनुष्योंका प्रमाण	२५२	१७२	सामान्यदेवोंमें मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण	२६६
१६२	पर्याप्त मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण और खडित आदिके द्वारा उसका कथन	२५२	१७३	सख्यात, असख्यात और अन्तके लक्षण व परस्पर भेद	२६७
१६३	पर्याप्त मनुष्यराशियोंके गुणस्थान प्रतिपन्नराशिके घटा देनेपर	२५३	१७४	काल और क्षेत्रकी अपेक्षा सामान्य देव मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण	२६८
			१७५	सासादन गुणस्थानसे लेकर असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक	

क्रम न	विषय	पृष्ठ न	क्रम न	विषय	पृष्ठ न
	प्रत्येक गुणस्थानमें सामान्य देवोंका प्रमाण	२६९		सापादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असत्यतसम्यग्दृष्टि देवोंका प्रमाण, तथा सनत्कुमारसे लेकर शतार सहस्रवार कल्पतक मिथ्यादृष्टि देवोंका प्रमाण और भ्रातृहार	२८०
१७६	असत्यतसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंका अवधारकाल	२६९	१८८	आनत प्राणत कल्पसे लेकर नव प्रत्येक तक मिथ्यादृष्ट्यादि चारों गुणस्थानवर्ती देवोंका प्रमाण	२८१
१७७	भजनवासि मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	२७०	१८९	अनुदिशोंसे लेकर अपराजित अनुत्तरविमानतक असत्यतसम्यग्दृष्टि देवोंका प्रमाण	२८१
१७८	सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असत्यतसम्यग्दृष्टि भजनवासियों का प्रमाण	२७१	१९०	गुणस्थान प्रतिपन्न सर्व देवोंके अवधारकाल	२८२
१७९	वानव्यन्तर मिथ्यादृष्टि देवोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	२७२	१९१	आनतादि उपरिम गुणस्थान-प्रतिपन्न देवोंका प्रमाण पल्योपमके अस्यथातर्षे भाग है, यह चन्दन 'इसके द्वारा अन्तर्मुहूर्तसे पल्योपम अपहृत होता है' ऐसा विशेषित करके क्यों कहा? इसकी सफलता	२८५
१८०	वानव्यन्तर और योनिमतियोंके अन्धारकालमें मतमेद् और उसका निर्णय	२७३	१९२	सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देवोंका प्रमाण	२८६
१८१	सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असत्यतसम्यग्दृष्टि वानव्यन्तरोंका प्रमाण	२७४	१९३	देवगतिसवधी भागाभाग	२८६
१८२	ज्योतिषी देवोंका प्रमाण, व उस प्रमाणको सामान्य देवराशिके समान कहनेसे आनेवाले दोषका परिहार	२७५	१९४	देवगतिसवधी अल्पबहुत्वा	२८८
१८३	ज्योतिषी देवोंका अन्धारकाल	२७६	१९५	चतुर्गतिसवधी भागाभाग	२९५
१८४	सौधर्म और पेशान कल्पवासी मिथ्यादृष्टि देवोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	२७६	१९६	चतुर्गतिसवधी अल्पबहुत्व	२९७
१८५	सौधर्म और पेशान मिथ्यादृष्टि देवोंकी विष्कम्भसूची	२७७		२ इन्द्रियमार्गाणा	३०५-३२९
१८६	गुहाधर्म सामान्यसे जीवोंका प्रमाण कहते समय जो विष्कम्भसूचिपा यतलाई हैं, वे ही यहा विशेषरूपसे जीवोंका प्रमाण बताते समय कही गई हैं, अत यह कथन परस्पर विरुद्ध है, इस प्रकार उपग्रह हैं शकाका समाधा	२७८	१९७	सामान्य एकेंद्रिय, यादर एकेंद्रिय, सूक्ष्म एकेंद्रिय और इन तीनोंके पर्याप्त तथा अपर्याप्तका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३०५
१८७	सौधर्म और पेशान कल्पवासी		१९८	उक्त नौ राशियोंकी ध्रुवराशिया	३०७
			१९९	रहित आदिके द्वारा उक्त नौ राशियोंका घर्णन	३०८
			२००	पर्याप्त और अपर्याप्त विक्रमप्रय जीवोंका द्रव्यकी अपेक्षा प्रमाण	३१०
			२०१	प्रवृत्तमें पर्याप्त और अपर्याप्त	

क्रम न	विषय	पृष्ठ न	क्रम न	विषय	पृष्ठ न
	तथा ष्टीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतु रिन्द्रिय पक्षे किनका ग्रहण किया गया है इसका स्पर्ष्टीकरण	३११	२१३	अपर्याप्तकालमें गुणस्थान प्रति पन्न जीव लक्ष्यपर्याप्तक नहीं होते, इसका समर्थन	३१८
२०२	सयोगिके जलके पचेन्द्रियत्वका समर्थन	३११	२१४	इन्द्रियमार्गणाकी अपेक्षा भागा भाग	३१८
२०३	त्रिकलत्रय जीवोंका कालकी अपेक्षा प्रमाण	३१२	२१५	इन्द्रियमार्गणाकी अपेक्षा अल्प बहुत्व	३२२
२०४	ष्टीन्द्रियादि राशिया सर्वथा भायसहित होनेसे विच्छिन्न नहीं होती हैं, फिरभी ये असरयाना सख्यात अपसर्पिणियों और उसर्पिणियोंके द्वारा विच्छिन्न होती हैं, ऐसे विरोधका परिहार	३१२	३ क्रियामार्गणा		३२९-३८६
२०५	विकलत्रयजीवोंका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३१३	२१६	पृथिवीकायिक, अष्कायिक, तैज स्कायिक, वायुकायिक, तथा वाद्पृथिवीकायिक, वाद्तरअष्का यिक, वाद्तरतैजस्कायिक, वाद्तर वायुकायिक, वाद्तरवनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर तथा इन पांच गद् रोंके अपर्याप्त। सूक्ष्मपृथिवीका यिक, सूक्ष्मअष्कायिक, सूक्ष्म तैजस्कायिक, सूक्ष्मवायुकायिक, तथा इन चार सूक्ष्मोंके पर्याप्त और अपर्याप्तोंका प्रमाण	३२९
२०६	पचेन्द्रियसामान्य और पचेन्द्रिय पयाप्तोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३१४	२१७	पृथिवीकायिकका अर्थ, प्रसंगसे कर्मके भेदोंका उल्लेख, तथा वाद्तर का स्वरूप	३३०
२०७	विकलत्रयोंके प्रमाण प्रतिपद्क सूत्रके साथ पचेन्द्रियोंके प्रमाण का प्रतिपद्क सूत्र क्यों नहीं कहा, इसका स्पर्ष्टीकरण	३१५	२१८	पृथिवीकायिक आदिके प्रत्येक होते हुए उर्ध्व 'प्रत्येकशरीर' यह विशेषण क्यों नहीं लगाया जाता है, इसका स्पर्ष्टीकरण	३३१
२०८	विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रियोंका अवधारकाल तथा द्रव्यप्रमाण	३१५	२१९	सूक्ष्म, पर्याप्त और अपर्याप्त इनके स्वरूपोंका स्पर्ष्टीकरण	३३१
२०९	सासादनगुणस्थानसे लेकर अयोगिकेयगी गुणस्थान तक पचेन्द्रियसामान्य और पचेन्द्रिय पयाप्तोंका प्रमाण	३१७	२२०	विग्रहगतिमें विद्यमान वनस्पति कायिक जीव प्रत्येक है, या साधारण, इस शकाका समा धान	३३२
२१०	जिनकी इन्द्रिया नष्ट हागइ है, ऐसे सयोगी अयोगी जिनको पचेन्द्रिय कैसे कहा जा सकता है, इस शकाका समाधान	३१७	२२१	तैजस्कायिकराशिसे उच्यत कर नेकी विधि	३३४
२११	लक्ष्यपर्याप्त पचेन्द्रियोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३१७	२२२	चौर्यागार कितनी गुणकारशला काओंके जानेपर तैजस्कायिक राशि उच्यत होती है, इससे	
२१२	लक्ष्यपर्याप्त पचेन्द्रियोंके प्रमाण का प्रतिपद्क सूत्र पचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाण प्रतिपद्क सूत्रके साथ नहीं कहनेका कारण	३१८			

क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं
	लेकर इस विषयमें अनेक मतान्तरोंका उल्लेख, और कौन मत पूर्व परंपरागत है, इसका समर्थन			खण्डित आदिसे राशिका कथन	३५१
२२३	प्रकारांतरसे तैजस्कायिक-राशिके उत्पन्न करनेका विधान	३३७	२३५	वाद्रतैजस्कायिक पर्याप्तराशिका प्रमाण	३५५
२२४	खण्डित आदिके द्वारा तैजस्कायिकराशिका वर्णन	३३९	२३६	वाद्रवायुकायिक पर्याप्तराशिका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३५५
२२५	तैजस्कायिकराशिके पृथिवी, जल और वायुकायिकराशिके उत्पन्न करनेकी प्रक्रिया, तथा इन्हीं तीनों राशियोंके अवधारकाल	३४०	२३७	वाद्रवायुकायिक पर्याप्तराशिका प्रमाण	३५६
२२६	प्रकृतोपयोगी करणसूत्र, तथा उक्त चारों राशियोंके सूक्ष्म, सूक्ष्मपर्याप्त, सूक्ष्मअपर्याप्त और वाद्रराशिसम्बन्धी अवधारकाल	३४१	२३८	भेद प्रभेदयुक्त घनस्पतिकायिक जीवोंका द्रव्य प्रमाण	३५६
२२७	वाद्रतैजस्कायिक आदि राशियोंके अर्धच्छेद	३४२	२३९	'जिनका शरीर घनस्पतिरूप होता है उन्हें घनस्पतिकायिक कहते हैं' घनस्पतिकायिकका ऐसा अर्थ करनेपर विग्रहगतिमें स्थित जीवोंको घनस्पतिकायिकत्व कैसे प्राप्त होता है, इस शकका समाधान	३५७
२२८	वाद्रतैजस्कायिकराशिकी सत्तरह प्रकारकी प्ररूपणा	३४४	२४०	भेद प्रभेदयुक्त घनस्पतिकायिक जीवोंका काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३५८
२२९	वाद्रघनस्पति प्रत्येक शरीर-राशिकी सत्तरह प्रकारकी प्ररूपणा, तथा दूसरी वाद्रराशियोंकी पूर्वोक्त राशियोंके समान प्ररूपण करनेकी सूचना	३४४	२४१	पूर्वोक्त जीवराशियोंकी ध्रुव-राशिया	३५९
२३०	सप्रतिष्ठित और अप्रतिष्ठित प्रत्येकघनस्पतिमें भेद	३४६	२४२	वसकायिकसामान्य और वसकायिकपर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीवोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३६०
२३१	सूत्रमें वाद्रघनस्पतिप्रत्येकशरीरका ही प्रमाण कहा, उनके भेदोंका नहीं, इसका कारण	३४७	२४३	सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिके वली गुणस्थानतक वसकायिक सामान्य और वसकायिकपर्याप्तोंका प्रमाण	३६२
२३२	वाद्रपृथिवीकायिक पर्याप्त, वाद्रअकायिक पर्याप्त और वाद्रघनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर पर्याप्त राशियोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३४८	२४४	लघ्व्यपर्याप्त वसकायिकोंका प्रमाण	३६२
२३३	उक्त तीनों राशियोंके भागहार	३४८	२४५	लघ्व्यपर्याप्त वसकायिकोंका प्रमाण लघ्व्यपर्याप्त पंचेन्द्रियोंके प्रमाणके समान करनेसे उत्पन्न हुई आपत्तिका परिहार	३६३
२३४	वाद्रतैजस्कायिक पर्याप्तराशिका प्रमाण, अवधारकाल व	३५०	२४६	कायमार्गणासम्बन्धी भागामाग	३६३
			२४७	कायमार्गणासम्बन्धी अव्यवहृत्य	३६५

क्रम न	विषय	पृष्ठ न	क्रम न	विषय	पृष्ठ न
	४ योगमार्गणा	३८६-४१३		द्वनसम्यग्दृष्टियोंका प्रमाण और अवहारकाल	३९७
२४८	पांचों मनोयोगी तथा सत्य, उमय और असत्य इन तीन घचनयोगी जीवोंका प्रमाण	३८६	२६१	औदारिकमिश्रकाययोगी असयत-सम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवली जिनोंका प्रमाण	३९७
२४९	उक्त आठ राशिया देवोंके सख्यातथें भाग क्यों हैं? इसका समर्थन	३८६	२६२	वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण व अवहारकाल	३९८
२५०	सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयतासयततक उक्त आठों राशियोंका प्रमाण तथा उसका ओघप्ररूपणाके समान घचन करनेमें हेतु	३८७	२६३	वैक्रियिककाययोगी सासादन-सम्यग्दृष्टि, और असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण व अवहारकाल	३९९
२५१	प्रमत्तसयतसे लेकर सयोगिकेवली तक उक्त आठों राशियोंका प्रमाण	३८७	२६४	वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्या-दृष्टियोंका प्रमाण	४००
२५२	प्रमत्तसयतादि गुणस्थानोंमें आठ राशियोंका प्रमाण ओघसमान न कहनेका कारण	३८८	२६५	वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादन सम्यग्दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल	४०१
२५३	घचनयोगी और अनुभयघचन योगी मिथ्यादृष्टिजीवोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षाप्रमाण	३८८	२६६	आहारककाययोगी प्रमत्तसयतों का प्रमाण	४०१
२५४	सासादनादि गुणस्थानघतों उक्त राशियोंका प्रमाण	३९०	२६७	आहारकमिश्रकाययोगी प्रमत्त सयतोंका प्रमाण व मतान्तर परिहार	४०२
२५५	स्वभेद युक्त मनोयोगी, घचन योगी और काययोगी जीवोंके अवहारकाल और जीवराशिया	३९०	२६८	कर्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टिजीवों का प्रमाण व ध्रुवराशि	४०२
२५६	काययोगी और औदारिककाय योगी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण	३९५	२६९	कर्मणकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल	४०३
२५७	सासादनगुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली तक काययोगी और औदारिककाययोगियोंका प्रमाण, ध्रुवराशि तथा अवहारकाल	३९५	२७०	कर्मणकाययोगी सयोगिजिनोंका प्रमाण	४०४
२५८	औदारिकमिश्रकाययोगी मिथ्या दृष्टियोंका प्रमाण और ध्रुवराशि	३९६	२७१	योगमागणा सम्बन्धी भागाभाग	४०४
२५९	औदारिककाययोगीराशिके संख्या तथें भाग औदारिकमिश्रकाय योगीराशिके होनेमें हेतु	३९६	२७२	योगमागणा सम्यग्दृष्टि अल्पवहुत्व	४०८
२६०	औदारिकमिश्रकाययोगी सासा-	३९६		५ वेदमार्गणा ४१३-४२४	
			२७३	खीवेदी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण, देवियोंके प्रमाणकी खुदाबघसे सिद्धि और खीवेदियोंका अवहारकाल	६१३
			२७४	सासादन सम्यग्दृष्टिसे लेकर सयतासयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें खीवेदियोंका	

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं	क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं
	प्रमाण	४१४		६ कपायमार्गणा	४२४-४३६
२७५	स्त्रीवेदी असयतसम्यग्दृष्टियोंके कम होनेका कारण	४१५	२८८	क्रोध, मान, माया और लोभ-कपायी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुण-स्थानसे लेकर सयतासयत गुण-स्थान तरु प्रत्येक गुणस्थानमें जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल	४२४
२७६	प्रमत्तसयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपकके सवेदभाग तक स्त्री-वेदियोंका प्रमाण	४१५	२८९	प्रमत्तसयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्ति गुणस्थानतरु चारों कपायवाले जीवोंका प्रमाण	४२८
२७७	पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण व अवहारकाल	४१६	२९०	लोभकपायी उपशमक, व क्षपक सुदमसाम्प्रायिकसयतोंका प्रमाण	४२९
२७८	सासादनसम्यग्दृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपकके सवेद भाग तक पुरुष वेदियोंका प्रमाण व अवहारकाल	४१६	२९१	अरुपायी जीवोंमें उपशान्तकपाय-धीतरागछद्मस्थोंका प्रमाण और द्रव्यकर्म चार प्रकारका होनेसे चार भेदोंमें विभक्त मूल उप-शान्तकपायराशि प्रत्येक मूलोघ-प्रमाणको कैसे प्राप्त होती है, इस शकाका समाधान	४३०
२७९	मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयतासयत तकके नपुंसक वेदि-योंका प्रमाण व अवहारकाल	४१७	२९२	अकपायी क्षीणकपायधीतराग-छद्मस्थ और अयोगिकेवली जिनोंका प्रमाण	४३०
२८०	प्रमत्तसयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक क्षपकके सवेद भाग तक नपुंसकवेदियोंका प्रमाण	४१८	२९३	अकपायी सयोगिकेवली जिनोंका प्रमाण	४३१
२८१	स्त्रीवेदी प्रमत्तादिराशिसे भी नपुंसकवेदी प्रमत्तादिराशिसे सख्यातवें भाग होनेका कारण	४१९	२९४	कपायमार्गणासम्बन्धी भागाभाग	४३१
२८२	अपगतवेदी उपशामकोंका प्रवेश-की-अपेक्षा प्रमाण	४१९	२९५	कपायमार्गणासम्बन्धी अल्प-घटुत्व	४३३
२८३	उपशान्तकपायजीवके उपशामक सज्ञा कैसे है, इस शकाका समाधान	४१९		७ ज्ञानमार्गणा	४३६-४४६
२८४	अपगतवेदी उपशामकोंका सचय कालकी अपेक्षा प्रमाण	४२०	२९६	मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्या-दृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका प्रमाण, धुराशि और अवहारकाल	४३६
२८५	अपगतवेदी तीनों क्षपक और अयोगिज्वलियोंका प्रमाण	४२०	२९७	विभगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल	४३७
२८६	अपगतवेदी सयोगिकेवलियोंका प्रमाण	४२१	२९८	विभगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका प्रमाण	४३८
२८७	वेदमार्गणासम्बन्धी भागाभाग व अल्पघटुत्व	४२१	२९९	मति, श्रुत, और अवाधिज्ञानी जीवोंमें असयतसम्यग्दृष्टि गुण-	

क्रम न	विषय	पृष्ठ न	क्रम न	विषय	पृष्ठ न
	स्थानसे लेकर क्षीणकपाय गुण			इस विषयका ऊहापोहात्मक	
	स्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें			शका-समाधान	४५३
३००	जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल	४३९	३१४	चन्द्रदर्शनी जीवोंमें सासादन-	
	अवधिज्ञानियोंमें प्रमत्तसयत			सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर	
	गुणस्थानसे लेकर क्षीणकपाय			क्षीणकपाय गुणस्थानतक के	
	गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें			जीवोंका प्रमाण	४५४
	जीवोंका प्रमाण	४४१	३१५	अचन्द्रदर्शिनियोंमें मिथ्यादृष्टि	
३०१	मन पर्ययज्ञानियोंमें प्रमत्तसयत			गुणस्थानसे लेकर क्षीणकपाय	
	गुणस्थानसे लेकर क्षीणकपाय			गुणस्थानतकके जीवोंका प्रमाण	
	गुणस्थानतक जीवोंका प्रमाण	४४१		व ध्रुवराशि	४५५
३०२	केवलज्ञानियोंमें सयोगिकेवली			३१६ अवधिदर्शनी जीवोंका प्रमाण व	
	और अयोगिकेवली जिनोंका प्रमाण	४४२		अवहारकाल	४५५
३०३	ज्ञानमार्गणा सम्बन्धी भागामाग	४४२	३१७	केवलदर्शनी जीवोंका प्रमाण	४५६
३०४	ज्ञानमार्गणासम्बन्धी अल्पबहुत्व	४४४	३१८	ध्रुतदर्शन और मन पर्ययदर्शन	
	८ सयममार्गणा	४४७-४५२		फ्यों नहीं होता है, इस शका	
३०५	सयमी जीवोंमें प्रमत्तसयत गुण			का समाधान	४५६
	स्थानसे लेकर अयोगिकेवली			३१९ ज्ञानमार्गणासम्बन्धी भागामाग	४५७
	गुणस्थानतकका प्रमाण	४४७	३२०	ज्ञानमार्गणासम्बन्धी अल्पबहुत्व	४०८
३०६	सामायिक और छेदोपस्थापन,			१० लेश्यामार्गणा	४५९-४७१
	सयतोंमें प्रमत्तसयत गुणस्थानसे			३२१ कृष्ण, नील और कापोत लेश्या-	
	लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान			वालोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे	
	तक प्रत्येक गुणस्थानका प्रमाण			लेकर असयतसम्यग्दृष्टि गुण	
	व दोनों सयतोंके भेदाभेद विषय			स्थानतक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती	
	यक शकाका समाधान	४४७		जीवोंका प्रमाण व ध्रुवराशि	४५९
३०७	परिहार विगुहिसयमवाले प्रमत्त			३२२ तेजोलेद्यावाले जीवोंमें मिथ्या-	
	और अप्रमत्तसयतोंका प्रमाण	४४९		दृष्टि जीवोंका प्रमाण व अवहार	
३०८	सूक्ष्मसांप्रदायसयमवाले उप			काल	४६१
	शमक व क्षपकोंका प्रमाण	४४९	३२३	तेजोलेद्यावाले जीवोंमें सासा-	
३०९	यथास्यातसयमी, सयमासयमी			दन सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे	
	और असयमी जीवोंका पृथक्			लेकर अप्रमत्तसयत गुणस्थान	
	पृथक् प्रमाण	४५०		तकके जीवोंका प्रमाण	४६२
३१०	सयममार्गणासम्बन्धी भागामाग	४५१	३२४	पद्मलेद्यावाले जीवोंमें मिथ्या	
३११	सयममार्गणासम्बन्धी अल्पबहुत्व	४५१		दृष्टि जीवोंका प्रमाण व अवहार	
	९ दर्शनमार्गणा	४५३-४५९		काल	४६३
३१२	चन्द्रदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंका			३२५ पद्मलेद्यावाले जीवोंमें सासाद /	
	द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा			गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसयत	
	प्रमाण	४५३		गुणस्थानतकके जीवोंका प्रमाण	४६३
३१३	चन्द्रदर्शनी जीव किसे कहते हैं,			३२६ शुक्रलेद्यावाले जीवोंमें मिथ्या	

क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं	क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं
	दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयता-सयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुण स्थानमें जीवोंका प्रमाण व अव-हारकाल	४६३	३३९	उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें असयत सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकपाय गुणस्थानतकके जीवोंका प्रमाण	४७६
३२७	शुक्ललेद्यावाले जीवोंमें प्रमत्त सयत गुणस्थानसे लेकर सयोगि-केरली गुणस्थानतक प्रत्येक गुण स्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण	४६५	३४०	सासादनसम्यग्दृष्टि,सम्यग्मिथ्या-दृष्टि और मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल	४७७
३२८	लेद्यामार्गणास्रधी भागाभाग	४६६	३४१	सम्यक्त्वमार्गणास्रम्बन्धी भागा-भाग	४७९
३२९	लेद्यामार्गणास्रधी अल्पबहुत्व	४६७	३४२	सम्यक्त्वमार्गणास्रम्बन्धी अल्प बहुत्व	४७९
	११ भव्यमार्गणा	४७२-४७३	३४३	प्रमत्तसयत वेदकसम्यग्दृष्टियोंसे क्षयिकसम्यग्दृष्टि सयतासयत जीव सत्यातगुणे कैसे हो सकते हैं, इस शकाका समाधान	४८०
३३०	भयसिद्धिक जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीवोंका प्रमाण	४७२		१३ सज्ञीमार्गणा	४८२-४८३
३३१	अभव्यसिद्धिक जीवोंका प्रमाण	४७२	३४४	सज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण व अग्रहारकाल	४८२
३३२	भव्यमार्गणास्रम्बन्धी भागाभाग और अल्पबहुत्व	४७३	३४५	सज्ञी जीवोंमें सासादन गुणस्था-नसे लेकर क्षीणकपायगुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण	४८२
	१२ सम्यक्त्वमार्गणा	४७४-४८१	३४६	असज्ञी जीवोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	४८३
३३३	सम्यग्दृष्टि जीवोंमें असयत सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीवोंका प्रमाण	४७४	३४७	सज्ञीमार्गणास्रधी भागाभाग व अल्पबहुत्व	४८३
३३४	क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें असयत सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर उप-शान्तकपाय गुणस्थानतक के जीवोंका प्रमाण	४७४		१४ आहारमार्गणा	४८३-४८७
३३५	क्षायिकसम्यग्दृष्टि सयतासयत सख्यात ही फ्यों होते हैं, इस शकाका समाधान	४७५	३४८	आहारक जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें आहारक जीवोंका प्रमाण व ध्रुव-राशि	४८३
३३६	क्षायिकसम्यग्दृष्टि चारों क्षपक व अयोगिकेवली जिनोंका प्रमाण	४७५	३४९	अताहारक जीवोंका प्रमाण, ध्रुवराशि व अवहारकाल	४८४
३३७	क्षायिकसम्यग्दृष्टि सयोगिकेवली जिनोंका प्रमाण	४७६	३५०	अनाहारक अयोगिकेरली जीवों का प्रमाण	४८५
३३८	वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें असयत सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसयत गुणस्थानतकके जीवोंका प्रमाण	४७६	३५१	आहारमार्गणास्रम्बन्धी भागाभाग	४८५
			३५२	आहारमार्गणास्रम्बन्धी अल्प बहुत्व	४८५

१० अर्थसंबंधी विशेष सूचना

१. पृष्ठ ४७ की गाथा न २८ का प्रतियोगे उपलब्ध पाठको रखते हुए अर्थ

दो हारोंके अतरसे एक हारमें भाग देने पर जो लब्ध आता है उससे भाजित पूर्ण लब्धका, तथा दोनों हारोंसे अलग अलग भाजित भाग्यके भननफटाका अतर हानिवृद्धिरूप होना है। (अर्थात् उपर्युक्त दोनों प्रक्रियाओंका फल बराबर ही होता है और समानरूपसे घटता बढ़ता है।)

उदाहरण (बीजगणितसे) —

$$\text{भाग्य} = \text{अ}, \text{हार (भाजक)} = \text{व और स, पूर्णलब्ध} \frac{\text{अ}}{\text{व}} = \text{क}$$

$$(१) \text{ यदि स से व छोटा है तो — } \frac{\text{अ}}{\text{व}} - \frac{\text{अ}}{\text{स}} = \text{क} - \frac{\text{स}}{\text{स} - \text{व}}$$

$$(२) \text{ यदि स से व बड़ा है तो — } \frac{\text{अ}}{\text{स}} - \frac{\text{अ}}{\text{व}} = \text{क} - \frac{\text{स}}{\text{व} - \text{स}}$$

(अरुगणितसे) —

$$\text{भाग्य} = ३६, \text{हार (भाजक)} = ६ \text{ और } ९,$$

$$\text{पूर्णलब्ध} = \frac{३६}{६} = ६, \text{दूसरा लब्ध} \frac{३६}{९} = ४, \text{हागत} ९ - ६ = ३$$

$$\frac{९}{३} = ३, \frac{६}{३} = २, ६ - ४ = २$$

२. पृष्ठ ५०-५१ परके पश्चिम विकल्पका स्पष्टीकरण

पृ ५०-५१ पर मूलमें जो पश्चिमविकल्प बतलाया गया है, उसके सम्बन्धमें हमारे समुख दो आपत्तिया उपस्थित हुईं, कि एक तो वह धक्काकार द्वारा स्वीकृत अकसदृष्टिसे घटित नहीं होता, और दूसरे प्रकृतमें उसका कोई फल नहीं दिखाई देता। इन्ही आपत्तियोंको दूर करनेके लिये मूलमें प्राप्त पाठ रखकर भी अनुवादमें हमने उस पाठका सशोधन सुझाया है। तथापि एक तरहसे बीजगणित द्वारा मूलमें दिया हुआ गणित सिद्ध भी हो सकता है। जैसे —

मानलो, जीनराशि = क, मिष्यादृष्टिराशि = अ, सिद्धतेरसराशि = व, अ = क - व
 अब चूकि क अनन्तराशि है, अतएव — क + १ = क, क - १ = क

अब मूल पाठानुसार—

$$\frac{क^2}{क + \frac{अ}{व}} = \frac{क^2}{क + \frac{क - व}{व}} = \frac{क^2}{(क - १) + \frac{क}{व}} = \frac{क^2}{क + \frac{क}{व}}$$

$$= क - \frac{क}{व + १} = क - \frac{क}{व}$$

किन्तु यह उदाहरण बनता तभी है, जब यह मान लिया जाय कि अनन्तमें एक घटाने व एक बढ़ानेसे अनन्त ही रहता है। अतएव यह उदाहरण अकसदृष्टिसे नहीं बतलाया जा सकता।

११ पाठसंबंधी विशेष सूचना

पृ २८८ की पक्ति ९ में 'एव जोइसिय' 'आदिसे लगाकर पृ २९०

पक्ति २ के 'एगपदचादो' तकका पाठ प्रतियोंमें व मूडत्रिद्वीकी प्रतिमें निम्न प्रकार है, जो धवला-कारकी अन्यत्र पाठ व्यवस्थासे कुछ भिन्न है। हमने उसे मुद्रणमें अन्यत्रकी व्यवस्थानुसार कुछ हेरफेरसे रख दिया है और उसका कारण भी वहीं दे दिया है। किन्तु पाठकोंकी सूचनाके लिये वह पूरा पाठ प्रतियोंके अनुसार यहाँ दिया जाता है—

परत्यागे पयद । सव्वत्थोवो असजदसम्माइट्टिअवहारकालो । एव णेयव्व जाव पलिदोवमो त्ति । तदो उवरि मिच्छाट्टिअवहारकालो असखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सगअवहारकालस्स असखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवमो । अहवा पदरगुलस्स असखेज्जदिभागो असखेज्जाणि सूचिअगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? सूचिअगुलस्स असखेज्जदिभागमेत्ताणि । को पडिभागो ? पलिदोवमस्स सखेज्जदिभागो । उवरि सत्याण भगो । एव जोइसियवाणवत्तराण पि णेयव्व । भवणवासियाण सत्यागे सव्वत्थोवा मिच्छाट्टिविक्खमसूई । अवहारकालो असखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सगअवहारकालस्स असखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? विक्खमसूई । अहवा सेवीए असखेज्जदिभागो असखेज्जाणि सेट्ठिपडमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? विक्खमसूचि-वग्गो । अहवा घणगुल । सेटी असखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सगविक्खमसूई । दव्वमसखेज्जगुण । को गुण-गारो ? विक्खमसूई । पदरमसखेज्जगुण । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोमो असखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेटी । सात्तणादीण भूलोवभगो । भवणवासियाण सव्वत्थोवो असजदसम्माइट्टिअवहारकालो । एव णेयव्व जाव पलिदोवमो त्ति । तदो उवरि भवणवासियमिच्छाट्टिविक्खमसूई असखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सग विक्खमसूई असखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवमो । अहवा पदरगुलस्स असखेज्जदिभागो अस खेज्जाणि सूचिअगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? सूचिअगुलपदमवग्गमूलस्स असखेज्जदिभागमेत्ताणि । को पडि-भागो ? पलिदोवमो । उवरि सगसत्याणभगो । सोइस्मादि जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति सत्याणप्पावद्दुग्ग णायिय णेयव्व । उवरि परत्याण णत्थि, तत्थ सेसगुणट्ठाणणमभत्तादो । सव्वट्ठे सत्याण दि णत्थि एरूपद-चादो ।

शुद्धिपत्र



(पुस्तक १)

पृष्ठ	पक्ष	अशुद्ध	शुद्ध
६७	१६	नानाप्रकारकी उ-बल ओर निर्मल घणल, निर्मल ओर नानाप्रकारकी विनयसे	
१८८	४	उपदेशप्रव्यम्	उपदेशप्रयम्
२०५	२५	शुक्ला—	×
”	२९	इसलिये	शुक्ला— तो फिर
२५१	१	तत्प्रतिघात	तद्प्रतिघात
३४५	८	-स-तापा-यूनतया	-स-तापान्पूनतया
”	२६	सतापसे न्यून नहीं है,	सतापरूप है,

(पुस्तक २)

४३३	२८	आहार, भय और मैथुन	भय, मैथुन और परिग्रह
५३७	४	द्वयेण छहेस्सा, भायेण तेज पम्म शुक्लेस्साओ,	द्वय भावेहिं छहेस्साओ,
”	१५	द्रयसे छहों लेदयाए, मानसे तेज, पप्र और शुक्लेदयाए,	द्रव्य और मानसे छहों लेदयाएँ,

(पुस्तक ३)

९	२	अविशेष	अविशेष
”	१२	अविशेष	अविशेष
१५	२	कडय रुजगदीव	कडय रुजग दीव
”	१४	कटरु, रुचरुसद्दाप	कटरु (ककण), रुचक (ताराज) व द्वीप
१५	३४	चेत्तद्व्यतिरिक्त	चेत्तद्व्यतिरिक्त
”	१२	नोआगमद्रयानत	नोआगमद्रव्यानत
१६	१४	अप्रदेशानत	अप्रदेशानत
१८	६	तस्स	तस्य तस्स
२६	२८	पसखेवा	पसखेवा
२७	३०	असखेज्जा	असखेज्जा
२८	७	रासग्धि	रासिग्धि
”	८	अयादिरज्जादि	अयादिरिज्जादि

पृष्ठ	पाक्ति अशुद्ध	शुद्ध
	१३ व्यख्यान	व्याख्यान
३०	२६ शतप्रयक्तन	शतपृथक्त्व
३२	१० कोद्वेषण	कोड्वेषण
३३	३० कौदोके समान	या कुडव (कुडे) से
३३	२९ घणयमाणो	घणपमाणो
३४	३ छिण्णाविसिट्ठ	छिण्णावसिट्ठ
३५	३० बेगद	बेसद
३८	२ णेहासग्गहो	णेहासग्गहो
३९	१६ भां हो चाहिये,	ही है, ऐसा असत् आमह नहीं करना चाहिये,
४१	५ सहिय	सुहिय
४१	५ असत्तेज्ज	असत्तेज्ज
५१	१४ क-न (मिध्यादृष्टि)	क-अ (मिध्यादृष्टि)
८८	६ विरदाण णु कमेण	विरदाणणुकमेण
८९	३ पमत्तसज्जदा ण	पमत्तसज्जदाण
११२	६ दसगुणद्वारासिणा	दसगुणद्वानारासिणा
१२६	३ ज	ज
१३५	७ अखसेज्जदि	असत्तेज्जदि
१५७	२७ जिनविम्भ	जिन और जिनविम्भ
१७६	१६ जणश्रेणी	जगश्रेणी
१७६	२२ $\frac{१०४८५७६}{१२३}$	$\frac{१०४८५७६}{१९३}$
१९०	सव्वहीणरूपाणि	सव्वहाणिरूपाणि
२०७	६ त्तिअयहारकाला	त्ति अयहारकाला
२१७	६ पविदिय	पविंदिय
१७१	२ ताप	तीप
२२१	११ गुणिय	गुणिय
२५७	२२-२४ यहां धरलाके स्पष्ट है	x
२६०	१० मणुसिणीण	मणुसिणीण
२६२	४ असत्तेज्जस-	असत्तेज्जस
२६३	८ पक्खिण्णपदि	पक्खिण्णपदि
२६४	११ पादेसु	पाठेसु
२६४	९ के	को
२८१	१ सासणदीण	सासणादीण
२८७	५ असदसम्माइट्ठिणो	असज्जसम्माइट्ठिणो

शुद्धिपत्र

— ५३ —

(पुस्तक १)

पृष्ठ	पाके	अशुद्ध	शुद्ध
६७	१६	नानाप्रकारकी उज्वल और निर्मल धवल, निर्मल और नानाप्रकारकी विनयसे विनयसे	
१८८	४	उपदेशपद्यम्	उपदेश्यम्
२०५	२५	शका—	×
"	२९	इसलिये	शका— तो फिर
२११	१	तत्प्रतिघात	तद्प्रतिघात
३४५	८	-सतापा न्यूनतया	-सन्तापान्यूनतया
"	२६	सतापसे न्यून नहीं है,	सतापरूप है,

(पुस्तक २)

४३३	२८	आहार, भय और मैथुन	भय, मैथुन और परिग्रह
५३७	४	दब्धेण छल्लेस्सा, भावेण तेज पम्म सुज्जलेस्साओ,	द्वय भावेर्हि छल्लस्साओ,
"	१५	द्रयसे छहों लेदयाए, भासे तेज, पम्म और सुज्जलेदयाए,	द्रव्य और भासे छहों लेदयाए,

(पुस्तक ३)

९	२	अवशेष	अविशेष
"	१२	अशेष	अविशेष
१५	२	कडय दज्जगदीव	कडय दज्जग दीव
"	१४	कटक, रूचकराद्वाप	कटक (ककण), रचक (तानीज) व द्वीप
१५	३४	चेत्तद्व्यतिरिक्त	चेत्तद्व्यतिरिक्त
"	१२	नोआगमद्रव्यान्त	नोआगमद्रव्यानन्त
१६	१४	अप्रदेशानन्त	अप्रदेशानन्त
१८	६	तस्म	तस्य तस्स
२६	२८	दुग्धेया	पग्धेवा
२७	३०	असधेया	असधेजा
२८	७	रासिग्धि	रासिग्धि
"	८	अपाहिरज्जदि	अपाहिरिज्जदि

द्वपमाणाणुगमो

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२९०	२	पदत्थादो	पदत्तादो
"	१०	पदार्थ	पदत्व
"	२४	सर्वासिद्धि	सर्वार्थसिद्धि
२९१	१४	सम्यग्दृष्टियोंका	सम्यग्दृष्टियोंका
२९२	५	असखेज्जदिभाग	असखेज्जदिभाग
२९६	२६	चार	चार
३०२	१	ग्रह्य ग्रहोत्तर	ग्रह्य ग्रहोत्तर
३०६	१०	णादरेद्व्यामिदि	णादवेद्व्यामिदि
"	११	णादरेद्व्य	णादवेद्व्य
"	२६	प्रारम्भ	प्रारम्भ
"	२८	"	"
३०७	४	सराग-	सराग-
"	६	ज तेण	जतेण
"	१६	सरागस्वरूपसे	एकस्वरूपसे
"	१९	उस अतीत	जाते हुए
३१२	८	वत्तादो	वत्तीदो
३१८	९	सखेज्ज	सखेज्ज
३३०	४	-कम्मत्त	कम्मत्त
३५९	११	पुत्त	पुत्त
३६६	५	यादरेद्व्यामिदि	यादरेद्व्यामिदि
३६७	२	तेसिमपज्जत्ता ।	तेसिमपज्जत्ता
३६९	६	याउण	याउण
३८१	२	पज्जत्ता	पज्जत्ता
४४०	१०	आवलिपाए	आवलिपाए
४४७	९	पुत्तिल्ल	पुत्तिल्ल
४८०	१०	सव्यसम्मत्तेसुप्पायण-	सव्यसम्मत्तेसु पायण

द्वयपमाणाणुगमो

मंगलाचरणम्

पञ्च परमेष्ठि-वदण

(धनला तर्गतम्)

सिद्धा दद्वद्धमला विसुद्ध-बुद्धी य लद्ध-सञ्चत्था ।

तिहुण-सिर-सेहरया पसियतु भडारया सञ्चे ॥ १ ॥

तिहुण-भ्रवणप्पसरिय-पच्चक्खमोह-फिरण-परिपेढो ।

उद्धओ वि अणत्थमणो अरहत्त-दिवापरो जयऊ ॥ २ ॥

ति-रयण-खग्ग-णिहाएणुत्तारिय-मोह-सेण्ण-सिर-णिरहो ।

आहरिय-राठ पसियउ परिनालिय-भनिय-जिय-लोओ ॥ ३ ॥

अण्णाणयघयारे अणोरपारे भमत-भनियाण ।

उज्जोओ जेहि कओ पसियतु सया उवज्झाया ॥ ४ ॥

सघारिय-सीलहरा उचारिय-चिरपमाद-दुस्सीलभरा ।

साह जयतु सञ्चे सिर-सुह-पह-सठिया हु णिग्गलिय-भया ॥ ५ ॥

जयउ धरमेण-णाहो जेण महारुम्म-पयडि-पाहुड-सेलो ।

सुद्धिमिरेणुद्धरिओ समप्पिओ पुप्फयत्तस्स ॥ ६ ॥



सिरि-भगवंत पुष्पदंत-भूदवलि-पणीदे

छक्खंडागमे

जीवट्टाणं

तस्स

सिरि-वीरसेणाहरिय-विरइया टीका

धवला

केमलणाणुओइयछद्वमणिजियं पवाईहि ।

णमिऊण जिण भणिमो दव्पणिओगं गणियसारं ॥१॥

सपहि चोदसण्ह जीवसमासाणमत्थित्तमवगदाण सिस्ताण तेसिं चेत्त परिमाण-
पडिचोहणद्ध भूदवलियाहरियो सुत्तमाह—

दव्वपमाणाणुगमेण दुविहो णिदेसो ओघेण आदेसेण य ॥१॥

जिन्हाने केवल्लभानके द्वारा छह द्रव्योंको प्रकाशित किया है और जो प्रवादियोंके द्वारा नहीं जीते जा सके ऐसे जिनेन्द्रदेवको मैं (वीरसेन आचार्य) नमस्कार करके गणितकी विसमें मुख्यता है ऐसे द्रव्यानुयोगका प्रतिपादन करता हू ॥ १ ॥

निशेपार्थ—द्रव्यानुयोगका दूसरा नाम द्रव्यप्रमाणानुगम या सख्याप्ररूपणा है। यद्यपि द्रव्य छह हैं फिर भी इस अधिकारमें गुणस्थानों और मार्गणास्थानोंका आश्रय लेकर केवल जीवद्रव्यकी सख्याका ही प्ररूपण किया गया है।

जिन्होंने चौदहों गुणस्थानोंके अस्तित्वको जान लिया है ऐसे शिष्योंको अब उन्हीं चौदहों गुणस्थानोंके अर्थात् चौदहों गुणस्थानवर्ती जीवोंके परिमाण (सख्या) के ज्ञान करानेके लिये भूलयलि आचार्य आगेका सूत्र कहते ह—

द्रव्यप्रमाणानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है, ओघनिर्देश और आदेश-
निर्देश ॥ १ ॥

द्रवति द्रोप्यति अद्रुद्रवत्पर्यायानिति द्रव्यम् । अथवा द्रवते द्रोपते अद्रापि पर्याय इति द्रव्यम् । त च द्रव्यं दुग्धि, जीवद्रव्यं अजीवद्रव्यं चेदि । तत्त जीवद्रव्यस्म लक्षणं बुद्धे । त जहा, चरगदपचरणो नमगदपचरसो चरगददुग्धो नमगदअद्रुकासो सुहुमो अमृत्ती जगुरुमल्लुओ अमयेनपदेमिओ अणिद्धिसठाणो चि एद् जीवस्म माहारणलक्षण । उद्गुर्गै भौत्ता मपरप्यगाम रो चि जीवद्रव्यस्म अमाहारणलक्षण । उच च—

अरसमरुनमगव अत्त चेदणागुणमसद ।

जाण अलिगमहण जीवगणिदिठमटाण' ॥ १ ॥

अ त अजीवद्रव्यं त दुग्धि, रूपि जजीवद्रव्यं अरूपि-जजीवद्रव्यं चेदि । तत्त अ त रूपि-अजीवद्रव्यं तस्स लक्षणं बुद्धे— रूपरसगन्धस्पर्शान्त पुद्गला ' रूपि अजीवद्रव्यं

जो पर्यायोंको प्राप्त होता है, प्राप्त होगा और प्राप्त हुआ है उसे द्रव्य कहते हैं । अथवा, जिसके द्वारा पर्याय प्राप्त की जाती है, प्राप्त की जायगी और प्राप्त की गई थी उसे द्रव्य कहते हैं । यह द्रव्य दो प्रकारका है, जीवद्रव्य और अजीवद्रव्य । उनमेंसे जीवद्रव्यका लक्षण कहते हैं । यह इन्म प्रकार है, जो पाच प्रकारके वर्णसे रहित है, पाच प्रकारके रससे रहित है, दो प्रकारके गन्धसे रहित है, अष्ट प्रकारके स्पर्शसे रहित है, सूक्ष्म है अमूर्ति है, अगुरुलघु है, असरयातप्रेदशी है और जिसका कोई स्थान अर्थात् आकार निर्दिष्ट नहीं है वह जीव है । यह जीवसाधारण लक्षण है । अर्थात् यह लक्षण जीवको छोड़कर दूसरे धर्मोंदि अमूर्त द्रव्योंमें भी पाया जाता है, इसलिये इसे जीवका साधारण लक्षण कहा है । परन्तु ऊर्जागतिस्वभावत्त, भोक्तृत्व और स्वप्नप्रमाशक्त्य यह जीवका असाधारण लक्षण है । अथान् यह लक्षण जीवद्रव्यको छोड़कर दूसरे किसी भी द्रव्यमें नहीं पाया जाता है, इसलिये इसे जीवद्रव्यका असाधारण लक्षण कहा है । कहा भी है—

जो रसरहित है, रूपरहित है, गन्धरहित है, अथवा अर्थात् स्पर्शगुणकी व्यक्तिये रहित है, चेतनागुणयुक्त है, शब्दपर्यायसे रहित है, जिसका स्थानके द्वारा ग्रहण नहीं होता है और जिसका स्थान अनिदिष्ट है अथान् मय स्थानान्त रहित जिसका स्वभाव है उसे जीवद्रव्य जानो ॥ १ ॥

अजीवद्रव्य दो प्रकारका है, रूपी अजीवद्रव्य और अरूपी अजीवद्रव्य । उनमें जो रूपी अजीवद्रव्य है उसका लक्षण कहते हैं । रूप, रस, गन्ध और स्पर्शमे युक्त पुद्गल रूपी

१ प्रवच २, ८०, पथा १३४

२ 'स्पर्शगन्धस्पर्शान्त पुद्गला' तत्त्वाधनु ५, २३

शब्दादि । तं च सूत्रि-अजीवद्वयं छत्रिह, पुट्रि-जल-छाया चउरिदियनिसय-रुम्म-
कलध-परमाणू चेदि । उक्त च—

पुट्रि जल च छाया चउरिदियनिसय-रुम्म-परमाणू ।

उत्रिहमेथ मणिय पोगरुद्वय जिणरोहिं ॥ २ ॥

जं त अरुमि-अजीवद्वय तं चउत्रिहं, धम्मद्वय अधम्मद्वयं आगासद्वयं काल-
द्वयं चेदि । तस्य धम्मद्वयस्स लक्षणं पुत्रे-उगदपंचरणं उगदपंचरसं वगद-
दुग्धं उगदअहवांसं जीव-पोगगलाणं नमगागमगकारण अससेअपदेसियं लोगपमाणं
धम्मद्वय । एव चेत्त अधम्मद्वय पि, गत्रि जीव-पोगगलाण एदं द्विदिहेद् । ए-
मागासद्वय पि, गत्रि आगामद्वयमगतपदेसिय मवगय जोगाहणलक्षणं । एवं चेत्त
कालद्वयं पि, गत्रि स-परपरिणामहेरु अपदेसियं लोगपदेसपरिमाणं । एदाणि छ

वजीवद्वय है, जैसे शब्दादि । वह रूपी अजीवद्वय छह प्रकारका है, पृथिवी, जल, छाया,
नेत्रको छोटकर शेष चार इन्द्रियोंके विषय, कर्मस्वन्व और परमाणु । कहा भी है—

जिनेन्द्रवने पृथिवी, जल, छाया, नेत्र इन्द्रियके अतिरिक्त शेष चार इन्द्रियोंके
विषय, कर्म और परमाणु, इसप्रकार पुट्रलद्वय उह प्रकारका कहा है ॥ २ ॥

त्रिशेषार्थ—ऊपर जो पुट्रलके छह भेद बतलाये हैं वे उपलक्षणमात्र हैं, इसलिये
उपलक्षणसे उस उस जातिके पुट्रलोंका उस उस भेदमें ग्रहण हो जाता है । ग्रन्थान्तरोंमें जो
पुट्रलके स्थूल स्थूल, स्थूल, स्थूल सूक्ष्म, सूक्ष्म स्थूल, सूक्ष्म आर सूक्ष्म सूक्ष्म, ये छह भेद
गिनये हैं और उनका दृष्टांतोंद्वारा स्पष्टीकरण करनेके लिये उपर्युक्त पृथिवी आदि छह प्रकार
बतलाये हैं, इससे भी यही सिद्ध होता है कि ये पृथिवी आदि नाम उपलक्षणरूपसे लिये
गये हैं ।

अरूपी अजीवद्वय चार प्रकारका है, धर्मद्वय, अधर्मद्वय, आकाशद्वय और काल
द्वय । उनमेंसे धर्मद्वयका लक्षण कहते हैं । जो पाच प्रकारके वर्णसे रहित है, पाच प्रकारके
रससे रहित है, दो प्रकारके गन्धसे रहित है, आठ प्रकारके स्पर्शसे रहित है, जीव और
पुट्रलोंके गमन और आगममें साधारण कारण है, असंख्यप्रदेशों ह और लोकाकाशके
परान्त है वह धर्मद्वय है । इसीप्रकार अधर्मद्वय भी है, परन्तु इतनी विशेषता है कि यह
जीव और पुट्रलोंकी स्थितिमें साधारण कारण है । इसीप्रकार आकाशद्वय भी है, पर इतनी
विशेषता है कि आकाशद्वय अनन्तप्रदेशी, सर्वगत और अग्राह्यलक्षणवाला है । इसीप्रकार

१ गो जी ६०१ पुट्रि जल च छाया चउरिदियनिसय-रुम्मपाओग्गा । धम्मातादा एव उभेया
पोगला होति ॥ पथा ८३

२ लोगागामपदेमे एवेके जे टिया हु एत्तका । एत्थान राखी इव ते कालागू जम्मदवाणि ॥ दव स
२२१ गो जी ५८९

द्व्याणि । एदेसु उसु दव्येसु केण दव्येण पगद ? जस्म सताणिओगदारे चोद्दसमग्गण-
 द्वाणेहि चोद्दमजीवसमासाणमरियत्त पस्सिद जीवदव्यस्म तेण पगद । त ँध णव्वदि
 त्ति भण्णिदे 'मिच्छादिट्ठी केणडिया' इदि भेसदव्याण परिमाणमुज्झिदूण जीवदव्य-
 परिमाणपरूरुयसुत्तादो जाणिज्जदि जीवदव्येणैरेण चेव पगद, ण अप्णदव्योहि ति ।
 प्रमीयन्ते अनेन अर्था इति प्रमाणम् । दव्यस्म पमाण दव्यपमाण । एव तत्पुुरिसममासे
 कीरमाणे दव्यादो पमाणस्स भेदो दुक्कदि, जहा देवदत्तस्स कपलो त्ति । एत्थ देवदत्तादो
 कवलस्सेव भेदो ण, अमेदे पि उत्पलमवो ड्चेवमादिसु तत्पुुरिसममासदसणादो । अधवा
 दव्यादो पमाण केण पि सरूणेण भिण्ण चेव, अप्णहा त्तिसेसिय त्तिसेसणभावाणुवर

कालद्रव्य भी है, पर इतनी विशेषता है कि कालद्रव्य अपने ओर दूसरे द्रव्योंके परिणमनमें
 साधारण कारण है, अप्रदेशी अर्थात् एकप्रदेशी है आर लोकाकाशके जितने प्रदेश हैं उतने ही
 कालाणु हैं । इसप्रकार ये छह द्रव्य हैं ।

शंका--इन छह द्रव्योंमेंसे यहा प्रष्टतमें किस द्रव्यसे प्रयोजन है, अर्थात् किस
 द्रव्यके द्वारा प्रष्ट विषय कहा जायगा ?

समाधान--सत्प्ररूपणानुयोगद्वारमें चोदहों मार्गणास्थानाके द्वारा जिस जीवद्रव्यके
 चोदहों जीवसमासोंके अस्तित्वका निरूपण कर आये हैं, प्रष्टतमें उमी जीवद्रव्यसे
 प्रयोजन है ।

शंका--यह कैसे जाना ?

समाधान--'मिथ्यादृष्टि जीव स्मिने ह' इसप्रकार शेष पाच द्रव्योंके परिमाणको
 छोडकर एक जीवद्रव्यके परिमाणके निरूपण करनेवाला सूत्रमें यह जाना जाता है कि प्रष्टतमें
 एक जीवद्रव्यसे ही प्रयोजन है अथ द्रव्योंमें नहीं ।

त्रिसके द्वारा पदार्थ मापे जाते हैं या जागे जात हैं उमें प्रमाण कहते हैं और द्रव्यके
 प्रमाणको द्रव्यप्रमाण कहते हैं ।

शंका--इसप्रकार 'द्रव्य प्रमाण' हा दोनों पदोंमें तत्पुरुष समास करने पर द्रव्यसे
 प्रमाणका भेद प्राप्त होता है, जैसे 'देवदत्तना कम्बल' ?

समाधान--देवदत्तसे कम्बलका जिसप्रकार भेद है, प्रष्टतमें उसप्रकारका भेद नहीं है,
 क्योंकि, अमेवके रहने पर भी 'उत्पलगन्ध' इत्यादि पदोंमें तत्पुरुष समास देखा जाता है ।
 इसका यह तात्पर्य है कि 'उत्पलगन्ध' इत्यादि पदोंमें 'उत्पलस्य गन्ध उत्पलगन्ध' इत्यादि
 रूपसे तत्पुरुष समासके रहने पर भी जिसप्रकार उत्पलसे गन्धका भेद नहीं होता है, उसी
 प्रकार यहा पर मा द्रव्यसे प्रमाणका सवधा भेद नहीं समझना चाहिये ।

अथवा, द्रव्यसे प्रमाण किसा अपेक्षासे भिन्न ही है । यदि द्रव्यसे प्रमाणका कथिचित्
 भेद न माना जाय तो द्रव्य और प्रमाणमें विशेष्य विशेषणभाव नहीं बन सकता है । अथवा,

तीदो । अधवा कम्मधारयसमासो कादव्वो दव्वमेव पमाण दव्वपमाणमिदि । एत्थ वि
ण दव्वपमाणाणमेयतेण एगत्तं, एरुत्थ समासाभावादो । अधवा दुदसमासो कादव्वो ।
त जधा, दव्व च पमाण च दव्वपमाणमिदि । दुंदममासो अवयवपहाणो चि दव्व-
पमाणाण पुध पुध परूवण पावेदि । ण च सुत्ते पुध पुध दव्व-पमाणाण परूवणा कदा ।
जदि नि समुदयपहाणो दुदसमासो आसइज्जदि तो वि अवयवदिदरित्तसमुदायाभावादो
अनयवाण चेव परूवणा पावेदि । ण च सुत्ते अनयवाण समूहस्स वा परूवणा कदा ।
तदो ण दुदसमामो कीरदि चि ? ण एस दोसो, दव्वस्स पमाणे परूविदे दव्वं पि
परूविदमेव । कुदो ? दव्वदिदरित्तपमाणाभावादो । तिकालगोयराणतपज्जयाणमण्णोणा-
जहवुत्ती दव्व । वुत्त च—

नयोपनयेजाताना त्रिकालाना समुच्चय ।

अभिभाट्टभासस्सन्धो दव्वमेकमेकभा' ॥ ३ ॥

सखाणं दव्वस्मेको पज्जाओ, तदो ण दोण्हमेगतमिदि । वुत्त च—

द्रव्य और प्रमाण इन दोनों पदोंमें 'द्वयमेव पमाण दव्वपमाण' अर्थात् द्रव्य ही प्रमाण
द्रव्यप्रमाण है, इसप्रकार कर्मधारय समास करना चाहिए । यहा पर भी द्रव्य और
प्रमाण इन दोनोंमें एकान्तसे एतत्त्व अर्थात् अभेद नहीं है, क्योंकि, सर्वथा एकार्थमें अर्थात्
अभेदमें समास ही नहीं हो सक्ता है । अथवा, द्रव्य और प्रमाण इन दोनों पदोंमें द्वन्द्वसमास
करना चाहिये । वह इसप्रकार है, द्रव्य और प्रमाण द्रव्यप्रमाण ।

सूत्रा—द्वन्द्वसमास अवयवप्रधान होता है, इसलिये द्रव्य और प्रमाणका पृथक् पृथक्
प्ररूपण प्राप्त हो जाता है । परन्तु सूत्रमें द्रव्य और प्रमाणका पृथक् पृथक् कथन नहीं किया
है । यद्यपि समुदायप्रधान भी द्वन्द्वसमास हो सक्ता है, तो भी अवयवोंको छोडकर समुदाय
पाया नहीं जाता है, इसलिये समुदायप्रधान द्वन्द्वसमासके करने पर भी अवयवोंकी ही प्ररू-
पणा प्राप्त होती है । परन्तु सूत्रमें अवयवोंकी अथवा समूहकी प्ररूपणा नहीं की गई है । इस
लिये द्रव्य और प्रमाण इन दोनों पदोंमें द्वन्द्वसमास नहीं किया जा सकता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, द्रव्यके प्रमाणके प्ररूपण कर देने पर
द्रव्यका भी प्ररूपण हो ही जाता है, क्योंकि, द्रव्यको छोडकर उसका प्रमाण नहीं पाया जाता है ।

त्रिकालगोवर अनन्त पर्यायोंकी परस्पर अपृथग्वृत्ति द्रव्य है । कदा भी है—

जो नैगमादि नय और उनकी शाखा उपशाखारूप उपनयोंके विषयभूत त्रिकालवर्ती
पर्यायोंका अभिन्न सधन्धरूप समुदाय है उसे द्रव्य कहते हैं । वह द्रव्य कथंचिन् पकरूप
और कथंचिन् अनेकरूप है ॥ ३ ॥

द्रव्यकी एक पर्याय संग्रहान है, इसलिये द्रव्य और प्रमाणमें एकत्व अर्थात् सर्वथा
अभेद नहीं है । कदा भी है—

विश्रित्तयात् । आत्मेण, जदेश प्रथमात्, पृथारण विभजन विभक्तीकरणमित्यादय पर्यायशब्दाः । गत्यात्त्रिभिन्नानुर्त्तनीयममामप्ररूपणमात्रेण । ' जहा उद्देशो तदा णिदेशो ' इति नृद् आदेश यथा कादृण जोषपरुणदृष्टमुत्तममुत्त भणदि—

ओघेण मिच्छाड्डी द्वापमाणेण केयडिया, अणता' ॥ २ ॥

ओषमह्चारणाभाते जोषात्मेपपरुणासु क्त्वेमा परुणेत्ति गोदारम्म चित्त मा घुलिस्तति चि तचित्तस्म विरक्तुपायणदृ बोधेणेत्ति भणित् । मिच्छादिद्विगुहणाभाते क्दमम्म जीवममामम्म उमा परुणा इदि सोत्तरम्म मद्देशे हात्त, तम्म मद्देशुपात्ति णितरणदृ मिच्छादिद्विगुहण क्द । द्वापमाणेत्ति उभयय क्कडिया इदि सामणेण पुच्छिडे इमा पुच्छा । क्क द्वापमिया, कि मेत्तमिया, कि फालिमिया, कि या भाव मिया, इदि सदो होत्त, तणितरणदृ द्वापमाणमत्त क्द । क्कडिया इदि पुच्छा ।

सपूर्ण जीवराशिने क्कन क्कनेरी विरता नहा नी गर्द ह ।

आदेशमे क्कन क्कनेरा आदेशनिदश क्कन = । मरश, पृथग्भात्, पृथारण, विभजन, विभक्तीकरण इत्यदिक् पर्यायवाची शब्द ह । आदेशानुदशना प्ररूपमें स्वप्नोक्करण इत्यप्रकार ह कि गति आदि मार्गणात्तेके भेदात्मे भेदको प्राप्त एव आदेश गुणस्वात्तिका प्ररूपण करना आदेशनिर्दश ह ।

' उद्देशके अनुसार निदश करना चाहिये ' एसा समग्रम् आदेशको रचित वरके पहले ओघनिर्दशना प्ररूपण करके लिखे जायगा सब कहते ह—

ओघमे मिच्छाट्टि जीव द्वापप्रमाणकी अपेक्षा कितने ह, अनन्त ह ॥ २ ॥

ओघ शब्दके उच्चारण नहा करने पर ओघ धार आदेश प्ररूपणाओंमेंसे ' यह कौनसी प्ररूपणा हे ' इसप्रकार श्रोताना चित्त मत घुने, इसलिये उममें चित्तकी स्थिरता उत्पन्न करनेके लिये सूत्रमें 'ओघसे' यह पद कहा है । सूत्रम मिच्छाट्टि पदके ग्रहण नहीं करने पर कानसे जीवसमामनी यह प्ररूपणा ह इसप्रकार श्रोतानो सदेह हो सकता है, इसलिये उसकी सदेहोत्पत्तिके निवारण करनेके लिये सूत्रमें मिच्छाट्टि पदका ग्रहण किया है । सूत्रम 'ओघसे' इस प्ररूपणा न कर ' कितन ह ' इसप्रकार सामान्यसे पूछने पर यह पृच्छा न्या वालविषयक ह, अथा न्या भावविषयक ह, । स देहके निवारणाव सूत्रम ' द्वापप्रमाण ' पदको रूप हे ।

बहिरथो बह्व्रीहि पर तपुरुपस्य च ।

पूर्वमव्ययीभासस्य द्व द्वस्य तु पदे पदे ॥ ७ ॥

संख्यापूर्वकस्तत्पुरुषो द्विगुः समासः, यथा पञ्चनदमित्यादि । एकाधिकरणः तत्पुरुष कर्मधारय इति । एतथ चोदगो भगदि- संसा एका चेत्, एगदिरिचदुनादीण- मभावादो । सा च एकमसा स्वप्पदत्थाणमत्थि ति जाणिज्जदि, अण्णहा तेसिमत्थि चाणुत्तत्तीदो । तदो किं तीए संसापरूपाणए इदि । एतथ परिहारो बुच्चदे- सयल- पयत्थाण जदि एका चेत् ससा णियमेण भग्दि तो स्वप्पदत्थाण एवादो अचग्दि- रिचाणं एगत्त पसज्जेज्ज । तथा च एगद्वदसणे सयलद्वदसण, एगद्वभिणासे सयलद्व- निणासो, एयद्वुप्पत्तीए सयलद्वुप्पत्ती जाएज्ज । ण च एत्तं, तथा अदमणादो । तम्हा पदत्थभेदो इच्छिडद्वो । संते तव्भेदे तत्थ द्वियससाए भेदो भग्दि चेत्, भिण्णद्वद्विय- ससाणाणमेगत्तविरोधादो । होदु एकससा चेत् नहुवा, ण तदो अण्णा ससा चे ण,

समाधान—क्योंकि यहाँ पर उनका अर्थ घटित नहीं होता है, इसलिये अन्य समासोंका ग्रहण नहीं किया ।

शंका—उन छहों समासोंका क्या अर्थ है ?

समाधान—अन्य अर्थप्रधान बहुव्रीहि समास है । उत्तर पदार्थप्रधान तत्पुरुष समास है । अव्ययीभाव समासमें पूर्व पदार्थप्रधान है । इन्द्र समासकी प्रत्येक पदमें प्रधानता रहती है ॥ ७ ॥

सत्यापूर्वक तत्पुरुषको द्विगु समास कहते हैं, जैसे पचनद इत्यादि । जहाँ पर दो पदार्थोंका एक आधार दिखाया जाता है ऐसे तत्पुरुषको कर्मधारय समास कहते हैं ।

शंका—यहाँ पर शंकाकार कहता है कि सत्या एकरूप ही है, क्योंकि, एरुको छोटकर दो आदिक सत्याए नहीं पाई जाती है । और वह एकरूप सत्या सपूर्ण पदार्थोंमें रहती है ऐसा जाना जाता है । यदि ऐसा न माना जाय तो उन सपूर्ण पदार्थोंका अस्तित्व ही नहीं बन सकना है, इसलिये यहाँ पर उस सत्याकी प्ररूपणासे क्या प्रयोजन है ?

समाधान—आगे उपर्युक्त शंकाका परिहार करते हैं । सपूर्ण पदार्थोंके नियमसे एक ही सत्या होती है, यदि ऐसा मान लिया जाय तो वे सपूर्ण पदार्थ एकरूप सत्यासे अभिन्न हो जाते हैं, इसलिये उन सबको एकत्वका प्रसंग आ जाता है । और ऐसा मान लेने पर एक पदार्थका ज्ञान होने पर सपूर्ण पदार्थोंका ज्ञान, एक पदार्थके विनाश होने पर सपूर्ण पदार्थोंका विनाश और एक पदार्थकी उत्पत्ति होने पर सपूर्ण पदार्थोंकी उत्पत्ति होने लगेगी । परन्तु ऐसा ही नहीं, क्योंकि, ऐसा देखा नहीं जाता है, इसलिये पदार्थोंमें भेद मान लेना चाहिये । इसप्रकार पदार्थोंमें भेदके सिद्ध हो जाने पर उनमें रहनेवाली सत्यामें भेद सिद्ध हो ही जाता है, क्योंकि, अनेक पदार्थोंमें रहनेवाली सत्याओंमें एकरूप अर्थात् अभेद माननेमें विरोध आता है ।

शंका—एक यह सत्या ही अनेक रूप हो जाओ, परन्तु उसमें भिन्न संख्या नहीं

एयद्रियमि जे अत्यप-जया वयणप-जया चावि ।

तीन्णणगदभूदा तावदिय त एवदि दव्व' ॥ ४ ॥

एव ताण भेदो मरदु णाम, किंतु दव्वगुणपरुणणादारेणव दव्वस्म परुणणा भवदि, अण्णहा दव्वपरुणणोवायाभावादो । उच्च च—

नाना मतामप्रनहत्तदेकमेकामतामप्रनहच्च नाना ।

अगागिभावात्तव वस्तु यत्तत् क्रमेण नाम्नाभ्यमन तरुपम्' ॥ ५ ॥

तदो दव्वगुणे पमाणे परुषिट्ठे दव्व परुषिट्ठे चैव । एव सुत्ते दव्वपमाणाण परु-
षणा अत्थि चि दुदसमासो वि ण तिरुज्जदे । मेमममामाणमेत्थ समसो णत्थि । ते सव्वे
पि समामा केत्थिया ? छन्चेव भवति । उच्च च—

बहुवाहययाभानो द्वन्द्वस्तत्पुरुषो द्विगु ।

कर्मधारय इत्येते समामा पर् प्रतीतिता ॥ ६ ॥

किमिदि इदरोसिं समसो णत्थि ? एत्थ तदन्वाभावादो । को तेसिमत्थो ?

एक द्रव्यमें अतीत, अनागत और 'अपि' शब्दसे वर्तमान पर्यायरूप जितने अर्थ पर्याय और व्यञ्जनपर्याय ह तत्रमाण वह द्रव्य होता है ॥ ४ ॥

यद्यपि इसप्रकार द्रव्य और प्रमाणमें भेद रहा आवे, फिर भी द्रव्यके गुणोंकी प्ररूपणाके द्वारा वा द्रव्यकी प्ररूपणा हो सकती है, क्योंकि, द्रव्यके गुणोंकी प्ररूपणाके बिना द्रव्यप्ररूपणाका कोई उपाय नहीं है । कहा भी है—

अपने गुणों और पर्यायोंकी अपेक्षा नानाम्परुपताको न छोड़ता हुआ वह द्रव्य एक है धोर अचयरूपसे एरुपनेको नहीं छोड़ता हुआ वह अपने गुणों और पर्यायोंकी अपेक्षा नाना है । इसप्रकार अनन्तरूप जो वस्तु है वही, है जिन, जापके मतमें क्रमश अगागीभावासे पञ्चनोंद्वारा कही जाती है ॥ ५ ॥

अत द्रव्यके गुणरूप प्रमाणके प्ररूपण कर देने पर द्रव्यका कथन हो ही जाता है । इसप्रकार सूत्रमें द्रव्य और प्रमाणकी प्ररूपणा है ही, अतएव द्वन्द्वसमास भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है । इसप्रकार तत्पुरुष, कर्मधारय और उ-उ समासको छोड़कर शेष समासोंकी यहा समाचना नहीं है ।

शुक्रा—ये सपूर्ण समास कितने हैं ?

समाधान—ये समास छह ही ह । कहा भी है—

बहुमीदि, अत्रयाभाव, उ-उ, तत्पुरुष, द्विगु और कर्मधारय, इसप्रकार ये छह समास कहे गये हैं ॥ ६ ॥

शुक्रा—यहा द्रव्यप्रमाण इम पदमें उपर्युक्त तीग समासोंको छोड़कर दूसरे समासोंकी समाचना क्यों नहीं है ?

बहिर्या बहुनीहि पर तत्पुस्तस्य च ।

पूर्वमव्ययीभानस्य द्व द्वस्य तु पदे पदे ॥ ७ ॥

सत्यापूर्वस्तत्पुरुषो द्विगुः समासः, यथा पञ्चनदमित्यादि । एकाविकरणः तत्पुरुष कर्मधारय इति । एत्य चोदगो भगदि-सखा एका चेत्, एगत्तिरिचदुवादीण-ममादादौ । सा च एकमसा सव्यपदस्थाणमत्थि ति जाणिञ्जदि, अण्णहा तेषिमत्थि चाणुवत्तीदौ । तदो किं तीए सखापरूपणाए इदि । एत्थ परिहारो बुच्चदे-सयल-पयत्थाणं जदि एका चेत् सखा णियमेण भग्दि तो सव्यपदस्थाण एकादो अव्यदि-रित्ताणं एगत्त पसज्जेज्ज । तथा च एगद्दसणे सयलद्दसणं, एगद्दणिणासे सयलद्द-णिणासो, एयद्दुप्पत्तीए सयलद्दुप्पत्ती जाएज्ज । ण च एवं, तथा अदसणादौ । तम्हा पदत्वभेदो इच्छिडव्वो । संते तव्वभेदे तत्थ द्वियसखाए भेदो भग्दि चेत्, भिण्णद्द्विय-सखाणाणमेगत्तविरोधादौ । होदु एकसंखा चेत् बहुवा, ण तदो अण्णा सखा चे ण,

समाधान—क्योंकि यहा पर उनका अर्थ घटित नहीं होता है, इसलिये अन्य समासका ग्रहण नहीं किया ।

शंका—उन छहों समासोंका क्या अर्थ है ?

समाधान—अन्य अर्थप्रधान बहुनीहि समास है । उत्तर पदार्थप्रधान तत्पुरुष समास है । अव्ययीभाव समासमें पूर्व पदार्थप्रधान है । इच्छ समासकी प्रत्येक पदमें प्रधानता रहती है ॥ ७ ॥

सत्यापूर्वक तत्पुरुषको द्विगु समास कहते हैं, जैसे पचनद् इत्यादि । जहा पर दो पदार्थोंका एक आधार दिनाया जाता है ऐसे तत्पुरुषको कर्मधारय समास कहते हैं ।

शंका—यहा पर शकाकार कहना है कि सत्या पररूप ही है, क्योंकि, एकको छोटकर दो आदिक सत्याए नहा पाई जाती हैं । और वह एकरूप सत्या सपूर्ण पदार्थोंमें रहती है ऐसा जाना जाता है । यदि ऐसा न माना जाय तो उन सपूर्ण पदार्थोंका अस्तित्व ही नहीं बन सकता है, इसलिये यहा पर उस संख्याकी प्ररूपणासे क्या प्रयोजन है ?

समाधान—आगे उपर्युक्त शंकाका परिहार करते हैं । सपूर्ण पदार्थोंके नियमसे एक ही सत्या होती है, यदि ऐसा मान लिया जाय तो वे सपूर्ण पदार्थ एकरूप सत्यासे अभिन्न हो जाते हैं, इसलिये उन सबको एक्त्त्रका प्रसग आ जाता है । और ऐसा मान लेने पर एक पदार्थका हान होने पर सपूर्ण पदार्थोंका हान, एक पदार्थके विनाश होने पर सपूर्ण पदार्थोंका विनाश और एक पदार्थकी उत्पत्ति होने पर सपूर्ण पदार्थोंकी उत्पत्ति होने लगेगी । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, ऐसा देखा नहीं जाता है, इसलिये पदार्थोंमें भेद मान लेना चाहिये । इसप्रकार पदार्थोंमें भेदके सिद्ध हो जाने पर उनमें रहनेवाली सत्यामें भेद सिद्ध हो ही जाता है, क्योंकि, अनेक पदार्थोंमें रहनेवाली सत्याओंमें एक्त्त्र अर्थान् अमेद् माननेमें विरोध आता है ।

शंका—एक यह संख्या ही अनेक रूप हो जाओ, परन्तु उससे भिन्न सत्या नहीं

अतिशय्य कथन वा निर्देश. । स द्विभिधः द्विप्रकारः शरीरस्वभावप्रकृतिशीलधर्माणां निर्देश इव । ओघेण, ओघ वृन्द समूहः संपातः समुदयः पिण्ड अवशेषः अभिन्नः सामान्यमिति पर्यायशब्दाः । गत्यादिमार्गणस्थानैरविशेषितानां चतुर्दशगुणस्थानानां प्रमाणप्ररूपणमोघनिर्देश. । चतुर्दशगुणस्थानविशिष्टसकलजीवराशिप्ररूपणादादेश. किञ्च स्यादिति चेन्न, सर्वजीवराशिनिरूपणं प्रति प्रतिज्ञाभावात् । क प्रतिज्ञास्याचार्यस्येति चेत्, जीवसमासप्रमाणनिरूपणे प्रतिज्ञा । सा कुतोऽपसीयत इति चेत्, ' एत्तो इमेसि चोद्महं जीवममासाण ' इत्यादिद्वयादवसीयते । सर्वजीवराशिव्यतिरिक्तचतुर्दशगुणस्थानानामभावात्तथापि सर्वजीवराशिरेव निरूपितस्स्यादिति चेन्न, जीवसमुदायस्या-

निश्चय होता है उस प्रकारके कथन करनेको निर्देश कहते हैं । अथवा, कुतीर्थ अर्थात् सर्वथा एतान्तवादके प्रस्थापक पाखण्डियोंको उल्लुघन करके अतिशयरूप कथन करनेको निर्देश कहते हैं । यह निर्देश शरीरके स्वभाव, रूप, प्रकृति, शील और धर्मके निर्देशके समान दो प्रकारका है । उनमेंसे एक ओघनिर्देश है । ओघ, वृन्द, समूह, संपात, समुदय, पिण्ड, अवशेष, अभिन्न और सामान्य ये सब पर्यायवाची शब्द हैं । इस ओघनिर्देशका प्रकृतमें स्पष्टीकरण इसप्रकार हुआ कि गत्यादि मार्गणस्थानोंसे विशेषताको नहीं प्राप्त हुए केवल चौदहों गुणस्थानोंके अर्थात् चौदहों गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणका प्ररूपण करना ओघनिर्देश है ।

शंका — यह ओघनिर्देश चौदहों गुणस्थानविशिष्ट संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणका प्ररूपण करनेवाला होनेसे आदेशनिर्देश क्यों नहीं कहलाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, ओघनिर्देशमें संपूर्ण जीवराशिके निरूपणकी प्रतिज्ञा नहीं की गई है ।

शंका—तो फिर आचार्यने ओघनिर्देशकी किस विषयमें प्रतिज्ञा की है ?

समाधान—आचार्यने ओघनिर्देशसे जीवसमासोंके (गुणस्थानोंके) प्रमाणके निरूपणमें प्रतिज्ञा की है ।

शंका—आचार्यने ओघनिर्देशसे जीवसमासोंके प्रमाणके निरूपणमें प्रतिज्ञा की है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—' एत्तो इमेसि चोद्महं जीवममासाण ' इत्यादि सूत्रसे जाना जाता है कि ओघनिर्देशसे जीवसमासोंके विषयमें आचार्यकी प्रतिज्ञा है ।

शंका—संपूर्ण जीवराशिको छोड़कर चौदह गुणस्थान पाये नहीं जाते हैं, इसलिये चौदह गुणस्थानोंके निरूपण करने पर भी तो संपूर्ण जीवराशिका ही निरूपण हो जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, ओघनिर्देशके निरूपणमें समस्त जीवसमुदाय अविध-क्षित है ।

विशेषार्थ—यद्यपि गुणस्थानोंमें संपूर्ण जीवराशिका अन्तर्भाव हो जाता है, फिर भी एक जीवके भी एक पर्यायमें संपूर्ण गुणस्थान सम्भव हैं, इसलिये यह कहा गया है कि ओघनिर्देशमें

विवक्षितत्वात् । आदमेण, आत्मा प्रथमभार प्रथमरण विमजन विभक्तीकरणमित्यादयः पर्यायान्तरम् । गत्यादिभिन्नवस्तुर्द्वितीयममामप्ररूपमादेशः । 'जहा उन्नेयो नहा णिरेयो' इति ऋग्वेदे आत्मेयं वाप कादूण ओघपरस्परणद्वमुत्तरसुच भगदि—

ओघेण मिच्छादृष्टी दृश्यमाणेण केपडिया, अणता ॥ २ ॥

ओघमद्वाराणाभावे जापदेमपरस्परणामु रुद्रमेमा परस्परणेति मोदारस्म चित्त मा धुलिस्मदि चि तचिचस्म विरक्तुप्यायणदृ ओघेणेति भाषि, द । मिच्छादिद्विगहणाभावे रुद्रमस्म जीवममामस्म इमा परस्परणा इदि मोदारस्म संदेहो होज, तस्म संदेहुपचि णिरारणदृ मिच्छादिद्विगहण कः । दृश्यमाणेणेति उभयिष्य केपडिया इदि मामण्णेण पुच्छिडे इमा पुच्छा । किं द-विषया, किं सेचविषया, किं कालविषया, किं मा भार विषया, इति संदेहो हो-ज, तणिरारणदृ द-रणमाणगमह्य कः । केपडिया इदि पुच्छा ।

सपूर्ण आराशिजे नया स्तनेमी चित्तया नहा मी गर्द ह । आदेशसे उभय स्तनेसे आदेशादिश कहे ह । आदेश, पृथग्भावा, पृथग्करण, विमजन, विभक्तीकरण इत्यादिन पर्यायवाची शब्द ह । आदेशनिर्देशका प्रष्टनमें स्पर्शीकरण इसप्रकार ह कि गति आत्मा भागीणाओंके भेदमें भेदसे प्राप्त हुए चौरह गुणस्थानोंका प्ररूपण करना आदेशनिर्देश ह ।

'उद्देशके अनुसार निर्देश करना चाहिये' एसा समझकर आदेशको स्वयं गित करके पहले आपनिर्देशना प्ररूपण करनेके लिये योगेना सूत्र रहो ह—

ओघमे मिच्छादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणका अपक्षा कितने ह, अनन्त ह ॥ २ ॥

ओघ शब्द उच्चारण नहा करने पर ओघ आर आदेश प्ररूपणाओंमेंसे 'यह कानसी प्ररूपणा है' इसप्रकार श्रोताना चित्त मत घुले, इसलिये उसके चित्तकी स्थिरता उत्पन्न करनेके लिये सूत्रमें 'ओघमे' यह पद कहा ह । सूत्रमें मिच्छादृष्टि पदके ग्रहण नहा करने पर कानस जीवसमामसो यह प्ररूपणा ह इसप्रकार श्रोतानो संदेह हो सक्ता है, इसलिये उसकी सन्देहोत्पत्तिके निवारण करनेके लिये सूत्रमें मिच्छादृष्टि पदना गहण किया है । सूत्रमें 'द्रव्यप्रमाणते' इस पदको न क-का कित ह' इसप्रकार सामान्यमे पृछने पर यह पृच्छा क्या द्रव्यविषयक ह, क्या भेजविषयक ह, क्या कालविषयक ह, क्या मात्रविषयक ह, इसप्रकारना संदेह हो सकता ह अत उम संदेहके निवारणाय सूत्रमें 'द्रव्यप्रमाण' पदको ग्रहण किया हे । 'कितने ह' यह पद प्ररूपण हे ।

१ मामा यन वापु आत्मा मि गच्छ ॥ इति वा । म ये च मि आत्मा परावृत्तयता ॥ वा वा १२२ मिच्छादृष्टि । पृथग् २, २

पुच्छामन्तरेण 'ओषेण मिन्डाडट्टी द्रव्यप्रमाणेण जगता' इति विष्णु वृत्ते ? न, अस्य स्वरुत्वनिराकरणद्वारेणाप्तकर्तृत्वप्रतिपादनफलत्वात् । तदपि किं फलमिति चेन्न, 'प्रस्तुप्रामाण्याद्वचनप्रामाण्यम्' इति न्यायात् वचनस्यास्य प्रामाण्यप्रदर्शनफलम् भूतवत्यादीनामाचार्याणां क व्यापार इति चेन्न, तेषां व्याख्यातृत्वाभ्युपगमात् । अर्णत इति प्रमाण वृत्त, अत्र वृत्ते संश्लेषजाभंगेऽजाण पडिणियत्ती । न च अर्णतमणययिन न जहा--

णाम दृश्या दभिय सस्मन् गणणापदेशियमणत ।

एषो उच्यतेसो त्रिवारो सत्र भासो य ॥ ८ ॥

तत्र णामाणत जीवाजीवमिस्यद्वयस्त कारणणिग्रेक्या मण्णा अणता इति । ज त दृश्याणत णाम त कट्टकम्मेसु वा चित्तकम्मेसु वा पोत्तकम्मेसु वा लेप्पकम्मेसु वा लेण

शंका--'चित्ते ह' इत्यप्रकारके प्रदत्तके चिना ही 'ओषधिदेशन मिन्धादि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा अनन्त ह' इस प्रकारका सत्र क्यों नहा कहा ?

समाधान--नहीं, क्योंकि, अपने कर्तृत्वका निराकरण करके आप्तके कर्तृत्वका प्रतिपादन करना 'चित्ते ह' इस पदके द्वारा चिना ही फल है ।

शंका--अपने कर्तृत्वका निराकरण करके आप्तकर्तृत्वके प्रतिपादन करनेका भाग क्या पत्र है ?

समाधान--नहा, क्योंकि, 'वस्तुकी प्रमाणतासे वचनोंमें प्रमाणता आती है' इस न्यायके अनुसार 'अनन्त ह' इस वचनही प्रमाणता दिखाना इसका फल है ।

शंका--अत्र कि 'ओषेण मिन्डाडट्टी' इत्यादि वचनके कर्ता आप्त मिद ही जाने । तो फिर भूतवलि जादि आचार्यानां व्यापार कहा पर होता है ?

समाधान--नहीं, क्योंकि, उनको आप्तके वचनका व्याख्याता स्वीकार किया है इसलिये आप्तके वचनके व्याख्यान करनेमें उनका व्यापार होता है ।

सूत्रमें दिये गये 'जगता' इस पदके द्वारा मिन्धादि जीवोंका प्रमाण कहा गया है मिन्धादि जीव अनन्त ह, इस प्रकार काल करने पर सशत बार असंख्यत्वकी निवृत्ति हो जाती है । वह अनन्त अनेक प्रकारका है, जो इसप्रकार ह--

गामानन्त, सशपतानन्त, द्रव्यानन्त, शब्दप्रतानन्त, गणनानन्त, अपदेशिकानन्त, पशानन्त, उभयानन्त, विस्मयानन्त, सर्वाणन्त आर भाषाणन्त, इसप्रकार अनन्तके ग्यारो भेद ह ॥ ८ ॥

उनमेंसे कारणके चिना ही जीव, अजीव और मित्र उच्यते अनन्त ऐसी सत्ता पर गाम अनन्त है ।

चाष्टकर्म, चित्रकर्म, पुस्तकर्म, लिप्यकर्म, लेखकर्म, शकर्म, भित्तिकर्म, गृहकर्म

१ तीव्रिषदमे मन्दादिह ५५ जहापत्ता । परिपटवता ५५ विचारिता मण्यमिभयति, लिप्यप्या

कर्मसु वा सेलकर्मसु वा भित्तिरुम्मसु वा गिहकर्मसु वा भेडकर्मसु वा दतकर्मसु
वा अकरो वा राडयो वा जे च अणे वृषणाण वृत्रिदा अणतमिदि त सञ्च वृषणाणत
णाम । ज त दन्त्राणत त दुग्धि आगमदो णोआगमदो य । आगमो गधो सुदणण
मिद्धतो पवयणमिदि णगदो । अत्रोपयोगिनः श्लोकाः--

पूनापरविरुद्धादेर्व्यपेतो दोषसहते ।

धोत्ररु सर्वभाजानामाप्त याद्वनिरागम ॥ ९ ॥

आगमो ह्याप्तवचनमाप्त दोषक्षय विदु ।

त्यक्तदोषोऽवृत्त वाक्य न श्रूयद्वेत्पसमनात् ॥ १० ॥

रागाद्वा द्वेषाद्वा मोहाद्वा वाक्यसु यत्रे ह्यनृतम् ।

यस्य तु भैते दोषास्तस्यावृत्तकारण नास्ति ॥ ११ ॥

तन्थ आगमदो दन्त्राणत अणतपाहुडजाणओ अणुरजुत्तो । अवगम्य विस्मृता

भेडकर्म अथवा दन्तकर्ममें अथवा अक्ष (पासा) हो या काटी हो, अथवा दूसरी कोई वस्तु हो
उसमें, यह अनन्त है इसप्रकारकी स्थापना करना यह मय स्थापनान्त है ।

द्रव्यानन्त आगम और भोआगमके भेदमें दो प्रकारका है । आगम, प्रत्य, ध्रुतज्ञान,
सिद्धान्त आर प्रवचन ये पदार्थवाची शब्द हैं । इस विषयमें उपयोगी श्लोक है—

पूर्वापर विरुद्धादि दोषोंके समूहसे रहित आर सपूर्ण पदार्थोंके द्योतक आप्तवचनको
आगम कहते हैं ॥ ९ ॥

आप्तके वचनको अगम जानना चाहिये और जिसने जन्म, जरा आदि अठारह
दोषोंका नाश कर दिया है उसे आप्त जानना चाहिये । इसप्रकार जो त्यक्तदोष होता है वह
असत्यवचन तदा बोलता है, क्योंकि, उसके असत्यवचन बोलनेका कोई कारण ही समन
नहीं है ॥ १० ॥

रागसे, द्वेषसे अथवा मोहसे असत्य वचन बोला जाता है, परन्तु जिसके ये रागादि
दोष नहीं रहते हैं उसके असत्य वचन बोलनेका कोई कारण भी नहीं पाया जाता है ॥ ११ ॥

अनन्ताविषयक शास्त्रको जाननेवाले परन्तु वर्तमानमें उसके उपयोगसे रहित जीवको

विषयमात्रेण नाम । वधस्य पाण्डुलिप्यसदादादि जाणि रूप विरियाए निष्पारवाणि रूवाणि छिपणदि वा कदाणि
पीत्तकम्माणि नाम । लपयादि लेखिज्जण जाणि निष्पारदाणि रूवाणि ताणि लेप्पकम्माणि नाम । मथ रट्टणदि
नभेणि पत्रदसु घण्टिदाणि रूवाणि ताणि लेक्कम्माणि नाम । वट्टणदि पासादेसु घण्टिदरवाणि गिहकम्माणि नाम ।
तेण अथ वृद्धसु घण्टिदरवाणि मिथिकम्माणि नाम । दसिदतादिषु घण्टिदरवाणि दत्तकम्माणि नाम । मिडिदि
घण्टिदरवाणि मिथिकम्माणि नाम । यदला १२०९.

वगमाना अगमिष्यता वा किमिति द्रव्यागमव्यपदेशो न स्यादिति चेन्न, शक्तिरूपो-
पयोगस्य श्रुतावरणवयोपशमलक्षणस्य साम्प्रत तत्रामच्चात् । आगमादणो णोआगमो । ज
त णोआगमदो दव्याणत त तिविह, जाणुगसररीरदव्याणत भत्रियदव्याणतं तव्यदिरिच-
दव्याणतं चेदि । तत्र जाणुगसररीरदव्याणतं अणतपाहुडजाणुगसररीर तिकालजाद । कथं
अणतपाहुडादो आधारत्तणेण तदिरिचस्स सररीरस्स अणतत्रएसो ? ण, असिस्स धात्रदि
परमुसद धात्रदि इच्चेमदिसु तदो वदिरिचस्स त्रि आधारपुरुस्स आधेयववदेसदंस-
णादो । भत्रु वट्टमाणम्हि आधारस्स आधेयोत्रयारो णादीदाणागदकालेसु त्रि ? ण एस दोसो,
णहु-भत्रिस्सरज्जम्हि त्रि पुरिसे राया आगन्डदि त्रि त्रहारदसणादो । पज्जयपज्जणो

आगमद्रव्यानन्त कहते ह ।

शुक्रा—जिनको पहले ज्ञान था किन्तु पश्चात् विस्मृत हो गया है, अर्थात् छूट गया
है अथवा जो भविष्यकालमें जानेंगे उ हैं भी द्रव्यागम यह सज्ञा क्यों न दी जाय ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, श्रुतज्ञानावरण कर्मका क्षयोपशम है लक्षण जिसका ऐसा
शक्तिरूप उपयोग वर्तमानमें उन जीवोंके नहीं पाया जाता है, इसलिये उन्हें द्रव्यागम यह
सज्ञा नहीं प्राप्त हो सकती ह ।

आगमसे अन्यको नोआगम कहते हैं । वह नोआगम द्रव्यानन्त तीन प्रकारका है,
ज्ञायकशरीर नोआगमद्रव्यानन्त, भव्य नोआगमद्रव्यानन्त और तद्गतिरिच नोआगमद्रव्यानन्त ।
उनमेंसे, अनन्तविषयक शास्त्रको जाननेवालेके तीनों कालोंमें होनेवाले शरीरको ज्ञायकशरीर
नोआगमद्रव्यानन्त कहते हैं ।

शुक्रा—अनन्तविषयक शास्त्र अर्थात् अनन्तविषयक शास्त्रका ज्ञाता आधेय है और
उसका शरीर आधार है, अतएव अनन्तविषयक शास्त्रके ज्ञातासे आधारतया शरीर भिन्न है,
इसलिये उस शरीरको अनन्त यह सज्ञा कैसे प्राप्त हो सकती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, सो तरवार (सो तरवारवाले) दोड़ती है, सो फरसा
(सो फरसावाले) दोड़ते हैं इत्यादि प्रयोगोंमें तरवार और फरसासे भिन्न परन्तु उनके
आधारभूत पुरुषोंमें भी जिसप्रकार आधेयरूप तरवार और फरसा यह सज्ञा देखी जाती है,
उसीप्रकार प्रकृतमें भी आधारभूत शरीरमें आधेयका व्यवहार जान लेना चाहिये ।

शुक्रा—वर्तमान कालमें आधारभूत शरीरमें आधेयका उपचार भले ही हो जाओ,
परन्तु अतीत और अनागतकालीन शरीरोंमें यह व्यवहार नहीं हो सकता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, जिसकी राजारूप पर्याय नष्ट हो गई है,
अथवा जिसे भविष्यमें राजारूप पर्याय प्राप्त होगी, ऐसे पुरुषमें भी जिसप्रकार ' राजा जाता
है ' यह व्यवहार देखा जाता है, उसीप्रकार प्रकृतमें भी समझ लेना चाहिये ।

शुक्रा—पर्याय और पर्यायीमें भेद न होनेके कारण वहा पर आधार आधेयभाव नहीं

भेदाभासादो ण तत्त्व आधाराधेयभासो । अह जइ एत्थं वि जावाराधेयभासो होज्ज,
जाणुगमरीरभणियाण पुणरुत्तं दुक्खेज्जेत्ति । जइ एव, तो एदं परिहरिय वणुसद
धुनदीदि एदं गहेय्य । न वसुधुतायामत्राय व्यवहार', धनुष्यपमार्यं भुजानेप्यपि
धनु प्रत भुक्त इति व्यवहारदर्शनात् । न घृतकुम्भदृष्टान्तो पठते, पठस्य घृतव्यप
देशानुपलम्भतो दृष्टा तदार्थान्तिरुयो सामर्थ्याभासान् । ज त भणियाणत त जणत

पाया जाता है । फिर भी यदि यहा भी आपरा अधेयभाव माता जावे, तो शायकशरीर आर
भावा इन दोनोंके कानमें पुनरुत्तता प्राप्त नै जायगी ?

समाधान— यदि ऐसा है तो इस दृष्टान्तको छोडकर 'सो धनुष (सो धनुषपात्रे)
भोजन करते ह' प्रथममें इस दृष्टान्तको लेना चाहिये । धनुषको वारण करनेरूप अन्तर्गम
ही सो धनुष भोजन करते ह यह व्यवहार गहा होता ह किन्तु गुणको दूर करके भोजन
करनेवाटाम भी 'सो धनुष भोजन करते ह' इसप्रकार व्यवहार देना जाता है । किन्तु यहा पर
घृतकुम्भका दृष्टान्त लागू नहीं होता है, क्योंकि, घटके घृत इसप्रकारका व्यवहार नहीं पाया
जानेके कारण दृष्टा त ओर दृष्टा तमें सामर्थ्य नहा ह ।

निशेपार्थ— नोभागमद्रव्यनिक्षेपक नीन भेद किये हैं, शायकशरीर, भावी और
नद्रवतिरिज । इनमेंमे शायकशरीरमें शायक शरीर निजालभावी शरीर लिया जाता है और
भावीमें जो वर्तमानमें शायक नहा है किन्तु आगे होगा उसका ग्रहण किया जाता है । अथ यदि
जो पर्याय पदल हो चुकी है या आगे होगी उसे ही शायकशरीरका अर्थात् आर भावी मान
ते तो शायकशरीरभावी नोभागमद्रव्यमें और भावी नोभागमद्रव्यमें कोई अंतर नहा रह
जायगा । इसलिये शायकशरीरमें सबधप्राप्त भिन्न गवारम आधेयका उपचार किया जाता है
और भावीमें वही वस्तु आगे होनेवाली पर्यायरूपने कही जाती है ऐसा समझना चाहिये ।
यथापि ऊपर आधारमें आधेयका उपचार दिखानेके लिये 'असिसद धावदि' इत्यादि
दृष्टान्त के आये ह जिससे यह समझमें आ जाता है कि जिसप्रकार तग्वारधारी सा
पुरुषोंके दोहनेका सौ तरवारों दोहनी ह इत्यादि रूपसे व्यवहार होता है उसीप्रकार अन्त
आदि निययक शायके शायके शरीरको भी नो भागमद्रव्यानन्त आदि कह सकते ह । परंतु
जो शरीर अभा प्राप्त नहा दृष्टा है या प्राप्त होगा उसे केने नोभागमद्रव्यानन्त आदि
कह सकते हैं, क्योंकि, उपचार समस्त पदार्थमें होता है । इसका समाधान यह है कि
जिसप्रकार धनुषको दूर रखकर भोजन करने पर भी 'धनुषद भुंजदि' यह व्यवहार बन
जाता है, उसीप्रकार अतान और अनागत शरीरकी अपेक्षा भी उपचारसे आधार आधेयभावा
मान कर नोभागमद्रव्यानन्त आदि सज्ञा बन जाती है । प्रथममें घृतकुम्भका दृष्टा त इसलिये
लागू नहीं होता है कि घटमें घा इसप्रकारका व्यवहार नहीं देनेसे वहा आधार आधेयभावा
रभावना ही नहा है ।

पाहुहुजाणुमभाभी जीयो । ज त त्वदिरिक्तद्व्याणतं त द्विह, क्रम्माणत णोरुम्मा-
णतमिदि । ज त क्रम्माणत त क्रम्मस्म परेमा । ज त णोरुम्माणत तं रुडय-रुजगदी-
ममुहादि एयपडेसादि पोग्गलद्वय या । आगममप्रिगम्य प्रिस्मृतः क्वान्तर्भवतीति चेत्-
द्वितिरिक्तद्व्यानन्ते । जं तं सस्मदाणंत त वम्मादिद्वयगय । कुदो ? सासयत्तेण
द्व्याण विणासाभावादो । ज तं गणणाणंत त न्हुवण्णणीय सुगम च । ज त उपदेसियाणत
त परमाण । नोकर्मद्व्यानन्ते द्वयत्त प्रत्यविशिष्टयो । शाश्वताप्रदेशानन्तयोरन्तर्भावः
किमिति न स्यादिति चेत् ? उच्यते— न तावच्छाश्वतानन्त नोकर्मद्व्यानन्तेऽन्तर्भवति,
तयोमदान् । अन्तो विनाशः, न प्रियते अन्तो विनाशो यस्य तदनन्तम् । द्वय शाश्वतम-
नन्त शाश्वतानन्तम् । नोकर्म च द्वयगतानन्त्यापेक्षया कटकदीना यास्तान्ताभावापेक्षया
च अनन्तम्, ततो नानयोरैकत्वमिति । एकप्रदेशे परमाणौ तद्व्यतिरिक्तापरो द्वितीयः

जो जीव भविष्यकालमें अनन्तविषयक शाश्वतको जानेगा उसे भावी नोआगमद्व्यानन्त
कहते हैं । तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्व्यानन्त दो प्रकारका है, कर्मतद्व्यतिरिक्त नोआगमद्व्यानन्त
आर नोकर्मतद्व्यतिरिक्त नोआगमद्व्यानन्त । ज्ञानावस्थादि आठ कर्मके प्रदेशोंको कर्मतद्व्य-
तिरिक्त नोआगमद्व्यानन्त कहते हैं । कटक, रुचकररुहीप और समुद्रादि अवस्था एक प्रदेशादि
पुद्गलद्रव्य ये सब नोकर्मतद्व्यतिरिक्त-नोआगमद्व्यानन्त हैं ।

शुद्धा—जो आगमका अध्ययन करके भूल गया है उसका द्रव्यनिक्षेपके किस भेदम
अन्तर्भाव होता है ?

समाधान—ऐसे जीवका तद्व्यतिरिक्त नोकर्मद्व्यानन्तमें अन्तर्भाव होता है ।

शाश्वतानन्त धर्मादि द्रव्योंमें रहता है, क्योंकि, धर्मादि द्रव्य शाश्वतत्व होनेसे
उनका कभी भी विनाश नहीं होता है ।

जो गणनामन्त है वह न्हवण्णणीय और सुगम है । एक परमाणुको अप्रदेशिकानन्त
कहते हैं ।

शुद्धा—द्रव्यत्वके प्रति अविशिष्ट ऐसे शाश्वतानन्त और अप्रदेशिकानन्तका नोकर्म
द्व्यानन्तमें अन्तर्भाव क्यों नहीं हो जाता है ?

समाधान—शाश्वतानन्तका नोकर्मद्व्यानन्तमें तो अन्तर्भाव होता नहीं है, क्योंकि,
इन दोनोंमें परस्पर भेद है । आगे उसीका स्पष्टीकरण करते हैं । अन्त विनाशको कहते हैं,
जिसका अन्त अर्थात् विनाश नहीं होता है उसे अनन्त कहते हैं । जो धर्मादिक द्रव्य
शाश्वत अनन्त है उसे शाश्वतानन्त कहते हैं । और नोकर्म द्रव्यगत अनन्तताकी अपेक्षा आर
कटकनादिके घस्तुत अन्तके अभावकी अपेक्षा अनन्त है, इसलिये इन दोनोंमें एकत्व नहीं
हो सकता है । एकप्रदेशी परमाणुमें उस एक प्रदेशको छोड़कर अन्त इस सगारो प्राप्त होने
वाला दूसरा प्रदेश नहीं पाया जाता है, इसलिये परमाणु अप्रदेशिकानन्त है । ऐसी स्थितिमें

प्रदेशोऽन्तव्यपदेशभात् नास्तीति परमाणुरप्रदेशानन्त । तथा च ऋचमय नोऽर्कमद्रव्यानन्ते
 द्रव्यगतानन्तमरथापेक्षया अनन्तव्यपदेशभाज्यन्तर्भवेत् । द्रव्य प्रत्येकत्वं तत्रास्ति इति
 चेद् ? अस्तु तथैकत्वं न पुनरन्येनान्येन प्रकारेणायातानन्त्ये प्रति । ज त एयाणत त
 लोगमज्जादो एगमेदिं पेकसमाणे अताभावादो एयाणतं । ण दव्याणते दव्यभेदमसि
 उणाद्विदे एदमणत पददि, एगदव्यस्सागासस्म पज्जससाणदसणाभासमसिदूण द्विदचादो ।
 जहा अपारो मागरो, अथाह जलमिदि । ज त उभयाणत तं तथा चेत् उभयदिमाए
 पेस्रमाणे अताभावादो उभयादेसाणतं । ज त नित्थाराणत त पदरागारेण आगाम
 पेकसमाणे अताभावादो भवदि । ज त सजाणत त घणागारेण आगास पेस्रमाणे अता
 भावादो सजाणत भवदि । ज त भायाणत त दुप्पिह आगमदो णोआगमदो य । आगमदो
 भायाणत अणतपाहुडजाणगो उरजुत्तो । ज त णोआगमदो भायाणत त तिकालपाद
 अणतपज्जपरिणत्तीजादिदव्य ।

एदमु अणतेसु केण अणतेण पयद ? गणणाणतेण पयद । त ऋध जाणिज्जदि ?

द्रव्यगत अनन्त सरथाकी अपेक्षा अनन्त सज्ञाको प्राप्त होनेवाले नोऽर्कमद्रव्यानन्तमें यह
 अपेक्षा अनन्त कमे अतर्भूत हो सकता है, अर्थात् नहीं हो सकता है, इसलिये अपेक्षा अनन्त
 मा स्पष्ट है ।

शंका—द्रव्यके प्रति एकत्व तो उनमें पाया ही जाता है ?

समाधान—इन अनन्तोंमें यदि द्रव्यक प्रति एकत्व पाया जाता है तो रहा आवे,
 परन्तु इतने मात्रसे इन अनन्तोंमें अन्य अन्य प्रकारसे आवे हुए अनन्तके प्रति एकत्व नहीं
 हो सकता है ।

लोकके मध्यसे आकाश प्रदेशोंकी एक श्रेणिको देखने पर उसका अन्त नहीं पाया
 जाता है, इसलिये उसे एकानन्त कहते हैं । द्रव्यभेदका आश्रय लेकर स्थित द्रव्यानन्तमें यह
 एकानन्त अतर्भूत नहीं होता है, क्योंकि, यह एकानन्त एक आकाशद्रव्यका अन्त नहीं
 दिशाई देनेके कारण उसका आश्रय लेकर स्थित है, जैसे अपार समुद्र, अथाह जल इत्यादि ।
 लोकके मध्यसे आकाश प्रदेशपत्तिको दो दिशाओंमें देखने पर उसका अन्त नहीं पाया जाता है,
 इसलिये उसे उभयानन्त कहते हैं । आकाशको प्रतरूपसे देखने पर उसका अन्त नहीं पाया
 जाता है, इसलिये उसे निस्तारानन्त कहते हैं । आकाशको घनरूपसे देखने पर उसका अन्त
 नहीं पाया जाता है, इसलिये उसे सर्पानन्त कहते हैं । आगम और नोआगमकी अपेक्षा
 भायानन्त दो प्रकारका है । अनन्तविषयक शास्त्रको जाननेवाले ओर वर्तमानमें उसके
 उपयोगसे उपयुक्त जीवको आगमभावानन्त कहते हैं । त्रिकालजात अनन्त पर्यायोंसे परिणत
 जीजादि द्रव्य नोआगमभावानन्त है ।

प्रश्न—इन ग्यारह प्रकारके अनन्तोंमेंसे प्रष्टतमें किस अनन्तसे प्रयोजन है ?

समाधान—प्रष्टतमें गणनानन्तसे प्रयोजन है ।

‘मिच्छादिद्वी क्रैरडिया’ इति सिस्सेण पुच्छिउडे ‘अणता’ इति पमाणपरूपणादो जाणि-
ज्जदि। ण च सेम-अणताणि पमाणपरूपयाणि तत्थ तधादसणादो । जदि गणणाणतेण पग्द
सेस दसविध-अणतपरूपण किमद्द कीरदे ? बुचदे—

अगयणिवारण्ह पयदस्स परूपणाणिमित्त च ।

ससयत्रिणासण्ह तच्चयनभारण्ह च’ ॥ १२ ॥

उत्त च पुत्राहरिण्हि—

जत्थ व्ह जाणेज्जो अपरिमिद तत्थ णिक्खिणे सूरी ।

जत्थ न्ह अ ण जाणइ चउत्थो तत्थ णिक्खेणो’ ॥ १३ ॥

अथवा णिक्खेणिसिद्धमेद वणिज्जमाणं वचचारस्सुप्पयोत्थाण कुज्जा इदि
णिक्खेणो कीरदे । तथा चोक्तम्—

प्रमाण-नयनिक्षेपैर्याऽर्थो नाभिसमीक्ष्यते ।

युक्तं चायुक्तम् भाति तस्यायुक्तं च युक्तम् ॥ १४ ॥

शुक्रा—यह कैसे जाना जाता है कि प्रकृतमें गणनानन्तसे प्रयोजन है ?

समाधान—‘मिथ्यादृष्टि जीव कितने हैं’ इसप्रकार शिष्यके द्वारा पूछने पर ‘अनन्त
है’ इत्यादि रूपसे प्रमाणना प्ररूपण करनेसे जाना जाता है कि प्रकृतमें गणनानन्तसे प्रयोजन
है । इस गणनानन्तको छोड़कर शेष अनन्त प्रमाणके प्ररूपण करनेवाले नहीं हैं, क्योंकि, शेष
अनन्तोंमें गणनारूपसे कथन नहीं देखा जाता है ।

शुक्रा—यदि प्रकृतमें गणनानन्तसे प्रयोजन है तो गणनानन्तको छोड़कर शेष दश
प्रकारके अनन्तोंका प्ररूपण यहाँ पर किसलिये किया है ?

समाधान—अप्रकृत विषयके नियारण करनेके लिये, प्रकृत विषयके प्ररूपण करनेके
लिये, सशयका विनाश करनेके लिये, और तत्परार्थका निश्चय करनेके लिये यहाँ पर सभी
अनन्तोंका कथन किया है ॥ १० ॥

पूर्वाचार्योंने भी कहा है—

जहाँ जीवादि पदार्थोंके विषयमें बहुत जानना चाहे, वहाँ पर आचार्य सभीका निक्षेप
करे । तथा जहाँ पर बहुत न जाने, तो वहाँ पर चार निक्षेप अत्रय्य करना चाहिये ॥ १३ ॥

अथवा निक्षेपके विना वर्णन किया गया यह विषय कदाचित् वक्ताको उन्मार्गमें ले
जाये, इसलिये यहाँ पर सभी अनन्तोंका निक्षेप किया है । कहा भी है—

प्रमाण, नय और निक्षेपोंके द्वारा जिस पदार्थकी समीक्षा नहीं की जाती है उसका
अर्थ युक्त होते हुए भी अयुक्तसा प्रतीत होता है और कभी अयुक्त होते हुए भी युक्तसा

नान् प्रमाणमित्याहुः पायो न्यास उच्यते ।

नयो ज्ञातुरभिप्रायो युक्तितोऽर्थपरिमह ॥ १५ ॥

अतः गणनागतं तं पि तिविद्, परिचाणत जुचाणत जगताणतमिदि । अणता इदि सामण्णेण युते एदम्हि चेणाणते मि-ठाइडि-नीया होंति इदेरेसु अणतेसु ण होंति चि ण जाणिज्जदे, अणता इदि बहुयणणिडेमादो । जत्थ तिण्णिं पि अणताणि अत्थि तस्म चेन अणताणतस्म गहण होदि इदि चे ण, मि-ठाइडिणीण बहुत्तमभेत्तिय बहु यणुप्पचीदो । अह्मा तिण्णिं पि अणताणि सभेदे अस्सिऊण अणंतवियप्पाणि । तत्थ एदस्स बहुत्तविकत्ताए उह्वयण अणभेदस्स' णेदि ण जाणिज्जदे ? एत्थ परिहारेो मुच्चदे- 'अणताणताहि औसप्पिणि-उम्सप्पिणीहि ण अणहिरति कालेण' चि ज्ञापकाद उमीयते यथा अनन्तानन्ता मिथ्यादृष्टय इति, व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिरिति

प्रतीत होता है ॥ १५ ॥

विद्वान् पुरुष सम्यग्ज्ञानसे प्रमाण कहते हैं, नामादिकके द्वारा वस्तुमें भेद करनेके उपायको न्यास या निक्षेप कहते हैं और ज्ञाताके अभिप्रायको नय कहते हैं । इसप्रकार युक्तिसे मथात् प्रमाण, नय आर निक्षेपके द्वारा पदार्थका ग्रहण अथवा निर्णय करना चाहिये ॥ १५ ॥

गणनान्तत तीन प्रकारका है, परीतानन्त, युक्तान्त और अनन्तानन्त ।

श्री १-सूत्रमें 'अणता' इसप्रकार मिथ्यादृष्टियोंका परिमाण सामान्यरूपसे कहा गया है, पर इतने बंधन करनेमात्रसे अनन्तके तीन भेदोंमेंसे इसी अनन्तमें मिथ्यादृष्टि जीव अर्थान् मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण पाया जाता है दूसरे अनन्तोंमें नहीं, यह बात नहीं जानी जाती है, क्योंकि, सूत्रमें अनन्तके किसी भी भेदका उल्लेख न करके केवल उसका बहुवचनरूपसे निदर्श किया है । जहाँ पर तीनों अनन्त पाये जाते हैं वहाँ उसी अनन्तानन्तका ग्रहण होता है, सो भी नहीं है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि जीवोंके उल्लेखकी अपेक्षा उसके अनन्त शब्दका बहुवचन प्रयोग बल सक्तता है । अथवा तीनों अनन्त अपने अपने भेदोंका आश्रय करने अनन्त विकल्परूप है । उनके इसी भेदकी विरक्षासे बहुवचन दिया है अन्य भेदकी अपेक्षासे नहीं, यह भी नहीं जाना जाता है ?

समाधान-आगे पूरान्त शब्दका परिहार करते हैं- 'मिथ्यादृष्टि जीव कालकी अपेक्षा अनन्तानन्त अर्थमपिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होते हैं' इस शब्दक सूत्रसे जाना जाता है कि मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त होते हैं । अथवा, 'व्याख्यानसे

१ प्रतिशु 'प्रमाण नय युक्तम् । ज्ञान प्रमाण परिमह' इति एतेन वाक्योपकारिणादस्य एवमपि प्रायते । ८ प गा १० ११)

२ प्रतिशु 'अणभेदस्स' इति वाक्य ।

एसो सञ्चजीवरासीदो किञ्चूणमिच्छादिद्विरासीदो य अणतगुणहीणो चि कध जाणिञ्जदि ?
 बुचदे- जहणपरिचाणतस्स अद्दच्छेदणाणमुवरि तस्सेव वग्गसलागाओ रुग्गहियाओ
 पक्खित्ते जहणण अणताणतस्स वग्गसलागा भवति । जहणणपरिचाणतस्स अद्दच्छेदणाहि
 दुग्गुणिदाहि जहणणपरिचाणते गुणिदे जहणणमणताणतस्स अद्दच्छेदणयसलागा हवति ।
 एदाओ च जहणणपरिचाणतादो असस्येज्जगुणाओ तस्सेव उपरिमवग्गादो असस्येज्ज-
 गुणहीणाओ । एदाणमुवरि जहणण-अणताणतस्स वग्गसलागाओ जहणणपरिचाणतस्स
 अद्दच्छेदणाहितो त्रिसेसाहियाओ पक्खित्ते पढमवारवग्गिदसग्गिदरासिस्स वग्गसलागा
 भवति । जहणण अणताणतस्स अद्दच्छेदणाओ जहणण-अणताणतेण गुणिदे पढमवार-
 वग्गिदमग्गिदरासिस्स अद्दच्छेदणयमलागा भवति । एदाओ जहणण-अणताणतादो

(यदि हम २५६ को २५६ से इतने ही बार गुणा करें तो जो मख्या उत्पन्न होगी वह ६४७ अकवाली होगी । इसप्रकार इकाईरूप छोटोंकी २ सरयाको तीनबार वर्गितसवगित करने पर ६४७ अकवाली महासरया उत्पन्न होती है । इस परसे किसी भी मूलराशिसे उत्पन्न हुई विचार वर्गितसवर्गित राशिके विस्तारका अनुमान लगाया जा सकता है ।)

शुद्धा— तीनबार वर्गितसवगित करनेसे उत्पन्न हुई यह महाराशि सपूर्ण जीवराशिसे और सपूर्णजीवराशिसे कुछ बम् (द्वितीयादि शेष तेरह गुणस्थानसबन्धी राशि और सिद्ध राशि प्रमाण बम्) मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे अनन्तगुणी हीन है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— जघन्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंमें उसीकी अर्थात् जघन्य परीतानन्तकी एक अधिक वर्गशलाकाए मिला देने पर जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाए उत्पन्न होती है । तथा जघन्य परीतानन्तके द्विगुणित अर्धच्छेदोंसे जघन्य परीतानन्तके गुणित करने पर जघन्य अनन्तानन्तकी अर्धच्छेदशलाकाए होती है । ये जघन्य अनन्तानन्तकी अर्धच्छेदशलाकाए जघन्य परीतानन्तसे असरयातगुणी है और उसीके अर्थात् जघन्य परीतानन्तके उपरिम वर्गसे असरयातगुणी हीन हैं । इन जघन्य अनन्तानन्तकी अर्धच्छेद शलाकाओंमें, जो जघन्य परीतानन्तकी अर्धच्छेदशलाकाओंसे अधिक हैं, ऐसी जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाए मिला देने पर प्रथमवार वर्गितसवर्गित राशिकी वर्गशलाकाए होती हैं । जघन्य अनन्तानन्तके अर्धच्छेदोंको जघन्य अनन्तानन्तसे गुणित करने पर प्रथमवार वर्गितसवर्गित राशिकी अर्धच्छेदशलाकाए

तत्रमे पुण जायइ णताणत रहु त च निक्खुचो । वग्गसु तह न त होइ णतखवे खिवसु छ इमे ॥ ५
 प्र ५, ८४

१ वग्गिदवारा वग्गसलागा रासिस्स अद्दच्छेदस्स । अद्दिदवारा वा खलु दलवारा होंति अद्दच्छेदी ॥
 रि मा ७६

२ त्रिराजिजमाणारामि दिण्णस्सद्द्विद्विही सग्गुणिदे । अद्दच्छेदा होंति ह सव्वधुप्पणरासिस्स ॥
 रि सा १०७

अणतगुणाओ तस्मेउ उवरिमवग्गादो अणतगुणहीणाओ । एदाणमुवरि पढमवारवग्गिदस वग्गिदरासिस्स वग्गसल्लागाओ पक्खिउत्ते विदियमारवग्गिदसग्गिदरासिस्स वग्गमल्लागा हवति' । पढमवारवग्गिदसग्गिदरामिस्स अद्धच्छेदणाहि पढमारवग्गिदसग्गिदरामि गुणिदे विदियमारवग्गिदसग्गिदरासिस्स अद्धच्छेदणयसल्लागाओ भवति । एदाओ पढम वारवग्गिदसवग्गिदरासीदो अणतगुणाओ तस्मेउ उवरिमवग्गणादो अणतगुणहीणाओ । एदाणमुवरि विदियमारवग्गिदसग्गिदरासिस्स वग्गमल्लागाओ पक्खिउत्ते तदियमारवग्गि

होती है । ये प्रथमवार वर्गितसवर्गित राशिकी अर्धच्छेदशलाकाए जघ य अनन्तान्तसे अनन्तगुणी है और उसीके अर्थात् जघ य अनन्तान्तके उपरिम वर्गसे अनन्तगुणी हीन है । इन प्रथमवार वर्गितसवर्गित राशिकी अर्धच्छेदशलाकाओंमें प्रथमवार वर्गितसवर्गित राशिकी वर्गशलाकाए मिला देने पर दूसरीवार वर्गितसवर्गित राशिकी वर्गशलाकाए होता है । तथा प्रथमवार वर्गितसवर्गित राशिकी अर्धच्छेदशलाकाओंके द्वारा प्रथमवार वर्गितसवर्गित राशिकी गुणित करने पर दूसरीवार वर्गितसवर्गित राशिकी अर्धच्छेदशलाकाए होती है । ये दूसरीवार वर्गितसवर्गित राशिकी अर्धच्छेदशलाकाए प्रथमवार वर्गितसवर्गित राशिकी अनन्तगुणी है, और उसीके, अर्थात् प्रथमवार वर्गितसवर्गित राशिकीके उपरिम वर्गसे अनन्तगुणी हीन है । इन दूसरीवार वर्गितसवर्गित राशिकी अर्धच्छेदशलाकाओंमें दूसरीवार वर्गितसवर्गित राशिकी वर्गशलाकाए मिला देने पर तीसरीवार वर्गितसवर्गित राशिकी वर्गशलाकाए होता है ।

निशेपार्थ—जो राशि विरलिन देघमसे उत्पन्न होती है उसके अर्धच्छेद विरलिन राशिकी देयराशिकी अर्धच्छेदोंसे गुणा करने पर जाते है । तथा उसकी वर्गशलाकाए विरलिन राशिकी अर्धच्छेदोंमें देयराशिकी अर्धच्छेदोंके अर्धच्छेद या वर्गशलाकाए मिला देने पर होता है । गणितके इस नियमके अनुसार जघ य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंसे जघन्य परीतानन्तको गुणा कर देने पर जघ य युक्तानन्तके अर्धच्छेद और जघन्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंमें उसका वर्गशलाकाए मिला देने पर जघन्य युक्तानन्तकी वर्गशलाकाए उत्पन्न होगी । फिर भी प्रथममें जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाए और अर्धच्छेद लाना है । परन्तु जघन्य अनन्तानन्त जघ य युक्तानन्तके उपरिम स्वरूप है, और वर्गसे उपरिम वर्गकी वर्गशलाकाओं और अर्धच्छेदोंको छानेके लिये यह नियम है कि विवक्षित वर्गके अर्धच्छेदोंसे उपरिम वर्गके अर्धच्छेद हूने और विवक्षित वर्गकी वर्गशलाकाओंसे उपरिम वर्गकी वर्गशलाकाए एक अधिक होती हैं । इसलिये जघन्य युक्तानन्तके अर्धच्छेदोंको हूना कर देने पर जघन्य अनन्तानन्तके अर्धच्छेद और जघन्य युक्तानन्तकी वर्गशलाकाओंमें एक और मिला देने पर जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाए

होंगे। इस सपूर्ण व्यवस्थाको ध्यानमें रखकर यह कहा गया है कि जघन्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंमें उसीकी एक अधिक वर्गशलाकाए मिला देने पर जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाए और जघन्य परीतानन्तकी द्विगुणित अर्धच्छेदशलाकाओंसे जघन्य परीतानन्तको गुणित कर देने पर जघन्य अनन्तानन्तकी अर्धच्छेदशलाकाए होती हैं। इसीप्रकार वर्गितसवर्गित राशिकी वर्गशलाकाए और अर्धच्छेद लानेकी पद्धतिके अनुसार प्रथम, द्वितीय और तृतीय चार वर्गितसवर्गित राशिके अर्धच्छेद और वर्गशलाकाओंके सयन्धमें भी समझ लेना चाहिये।

उदाहरण (बीजगणितसे)—

जघन्य परीतानन्तको वर्गितसवर्गित करनेसे जघन्य युक्तानन्त उत्पन्न होता है। तथा जघन्य युक्तानन्तके वर्गप्रमाण जघन्य अनन्तानन्त है।

$$\begin{array}{r}
 \text{अ} \\
 \text{२} \\
 \text{मान लो जघन्य परीतानन्तका मान } २
 \end{array}$$

$$\begin{array}{r}
 \text{अ} \\
 २ + \text{अ} + १ \quad \text{क} \\
 २ \quad \quad \quad २ \\
 \text{परीतानन्तकी वर्गितसवर्गित राशिके} \\
 \text{उपरिम वर्ग प्रमाण जघन्य अनन्तानन्त} = २ \quad \quad \quad = २ \text{ (मान लो)}
 \end{array}$$

$$\begin{array}{r}
 \text{क} \\
 २ + \text{क} \quad \text{ख} \\
 २ \quad \quad २ \\
 \text{अनन्तानन्त प्रथमचार वर्गितसवर्गित} = २ \quad \quad \quad = २ \text{ (मान लो)}
 \end{array}$$

$$\begin{array}{r}
 \text{ख} \\
 २ + \text{ख} \quad \text{ग} \\
 २ \quad \quad २ \\
 \text{द्वितीयचार वर्गितसवर्गित} = २ \quad \quad \quad = २ \text{ (मान लो)}
 \end{array}$$

$$\begin{array}{r}
 \text{ग} \\
 २ + \text{ग} \\
 २ \\
 \text{तृतीयचार वर्गितसवर्गित} = २
 \end{array}$$

२ सख्यासे लेकर जितनीवार वर्ग करनेसे विवक्षित राशि उत्पन्न होती है उतनी उस वर्गराशिकी वर्गशलाकाए होती है। जैसे ४ की वर्गशलाका १ और १६ की २ होती है, क्योंकि, २ का एकवार वर्ग करनेसे ४ और २ चार वर्ग करनेसे १६ उत्पन्न होते हैं। तथा विवक्षित राशिको जितनीवार आधा आधा करते हुए एक शेष रहे उतने उस राशिके अर्धच्छेद होते हैं। जैसे १६ के अर्धच्छेद ४ होते हैं। बीजगणितसे २ राशिके अर्धच्छेद २ होंगे और वर्गशलाका ४ होगी।

दसवग्गिदरासिस्म वग्गसलागा भवति । एमो वग्गमलागरासी पढमवारवग्गिदमवग्गिद-
 रामीदो उवरि एगमपि वग्गद्वान ण च वड्ढिदो, तेणेदेसि दोण्ह रासीण वग्गसलागाओ
 सरिसाओ । एदाण च वग्गसलागाओ जहण्णपरिचाणतादो असरेज्जगुणाओ । जदि
 एसो रासी सच्चजीववग्गसलागरासिणा सरिसो ह्यदि तो तिण्णिवारवग्गिदसवग्गिदरासिणा
 सच्चजीवरासी पि सरिसो होज्ज, ण च एव । त क्व ? 'जहण्ण अणताणत वग्गिज्जमाणे
 जहण्ण अणताणतस्म हेट्ठिमवग्गणद्वानेहिंतो उवरि अणतगुणवग्गद्वानाणि गत्तूण सच्च-
 जीवरासिणवग्गसलागा उत्पज्जदि' ति परियम्मे बुत्त । गुणमारो पि जम्हि जम्हि अणतय
 वग्गिज्जदि तम्हि तम्हि अजहण्ण जणुक्कसाणताणतय वेत्तन् । ण च तदियवारवग्गिद-

अथ आगे इत सब राशियोंकी वर्गशलाकाए और अर्धच्छेद लिखे जाते हैं—

	ज	प	अ	ज	अ	अ	प्र	व	स	द्वि	ष	स	तृ	व	स
			अ	अ	अ	अ	क	क	क	ख	ख	ख	ग	ग	ग
			२ + अ + १	२ + अ + १	२ + अ + १	२ + क	२ + क	२ + क	२ + ख	२ + ख	२ + ख	२ + ग	२ + ग	२ + ग	२ + ग
प्रमाण	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
			अ	अ	अ	क	क	क	ख	ख	ख	ग	ग	ग	ग
वर्ग श	अ	अ	२ + अ + १	२ + अ + १	२ + अ + १	२ + क	२ + क	२ + क	२ + ख	२ + ख	२ + ख	२ + ग	२ + ग	२ + ग	२ + ग
			अ	अ	अ	क	क	क	ख	ख	ख	ग	ग	ग	ग
अर्धच्छेद	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२

यह तीसरीवार वर्गितसवर्गित राशिकी वर्गशलाकाराशि प्रथमवार वर्गितसवर्गित
 राशिसे ऊपर एक भी वर्गस्थानसे वृद्धिसे प्राप्त नहीं हुई है, अर्थात् प्रथमवार वर्गितसवर्गित
 राशिसे उपरिम वर्गके भीतर ही तीसरीवार वर्गितसवर्गित राशिकी वर्गशलाकाराशि आती
 है, इसलिये इन दोनों राशियोंकी, अर्थात् प्रथमवार वर्गितसवर्गित राशिकी वर्गशलाकाए और
 तृतीयवार वर्गितसवर्गित राशिकी वर्गशलाकाओंकी वर्गशलाकाए समान है, जो वर्गशलाकाए
 जघन्य परीतानन्तसे असरघातगुणी है। यदि यह तृतीयवार वर्गितसवर्गित राशिकी वर्गशलाका
 राशि संपूर्ण जीवोंकी वर्गशलाकाराशिसे समान होती है, ऐसा मान लिया जाये, तो
 तीसवार वर्गितसवर्गितराशिके समान संपूर्ण जीवराशि भी हो जाये। परन्तु ऐसा है नहीं।

शंका—यह कैसे ?

समाधान — 'जघन्य अनतानन्तके उत्तरोत्तर वर्ग करने पर जघन्य अनन्तानन्तके
 अघस्तन वर्गस्थानोंसे ऊपर अनन्तगुणे वर्गस्थान जाकर संपूर्ण जीवराशिकी वर्गशलाकाए
 उत्पन्न होती है,' इसप्रकार परिकर्ममें कहा है। गुणकार भी जहा जहा अनन्तरूप देवनेमें
 आता है वहा वहा अजघन्यानुत्पद्य अथान् मध्यम अनतानन्तरूप गुणकारका ग्रहण करना

संलग्निदरासिवग्गसलागाओ हेट्टिमवग्गणट्ठाणेहिंतो उवरि परियम्म उच्च-अणतगुणवग्गण-
ट्ठाणाणि गंतूणुप्पणाओ, किंतु हेट्टिमवग्गट्ठाणादो उवरि सादिरेयजहण्ण-परिचाणंत-
गुणमद्धानं गंतूणुप्पणाओ । केण कारणेण ? जहण्णपरिचाणंतस्स अद्दच्छेदणाहिंतो
विसेसाहियाहि जहण्ण-अणताणंतस्स वग्गसलागाहि तदियवारवग्गिदसवग्गिदरासिवग्ग-
सलागाण वग्गसलागाओ हेट्टिमअद्धानेणूणाओ अवहिरिज्जमाणे सादिरेयजहण्णपरिचाणत-
मागच्छदि त्ति । ण च जहण्ण-अणताणतादो हेट्टिम-अद्धानं पड्च सादिरेयजहण्णपरि-
चाणतगुणं गंतूण सच्चजीवरासिवग्गसलागाओ उप्पणाओ, किंतु अणताणंतगुण गंतूण
सच्चजीवरासिवग्गसलागाओ' । कुदो ? 'अणताणतपिसए अजहण्णमणुक्कस्स-अणताणतेणव
गुणगारेण भागहारेण वि होदच्च' इदि परियम्मवयणादो । ण च एदस्स जहण्णपरि-
चाणतादो विसेसाहियस्स असरेज्जत्तमसिद्ध, सते एए णट्ठंतस्स' अणंतत्तिरोहादो । ण

चाहिये । परंतु नृतीयवार वगितसवगित राशिकी वर्गशलाकाए जघन्य अनन्तानन्तके अधस्तन
वर्गस्थानसे ऊपर परिकर्मसूत्रमें कहे गये अनन्तगुणे वर्गस्थान जाकर नहीं उत्पन्न होती हैं,
किंतु जघन्य अनन्तानन्तके अधस्तन वर्गस्थानोंसे ऊपर कुछ अधिक जघन्यपरीतानन्तगुणे
वर्गस्थान जाकर उत्पन्न होती हैं । इससे प्रतीत होता है कि सपूर्ण जीवराशिकी वर्गशलाका-
ओंसे तीनवार वगितसवगित राशिकी वर्गशलाकाए अनन्तगुणी न्यून हैं ।

शुका — ऐसा किस कारणसे है ?

समाधान—जो कि जघन्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंसे अधिक हैं ऐसी जघन्य अनन्ता
नन्तकी वर्गशलाकाओंके द्वारा जघन्य अनन्तानन्तके अधस्तन वर्गस्थानसे न्यून तीसरीवार
वगितसवगित राशिकी वर्गशलाकाओंकी वर्गशलाकाए अपहृत करने पर कुछ अधिक जघन्य
परीतानन्त आता है । परंतु जघन्य अनन्तानन्तके अधस्तन वर्गस्थानोंकी अपेक्षा जघन्य
अनन्तानन्तसे कुछ अधिक जघन्य परीतानन्तगुणे वर्गस्थान जाकर सपूर्ण जीवराशिकी
वर्गशलाकाए नहीं उत्पन्न होती हैं, किंतु जघन्य अनन्तानन्तसे अनन्तानन्तगुणे वर्गस्थान जाकर
सपूर्ण जीवराशिकी वर्गशलाकाए उत्पन्न होती हैं । क्योंकि, 'अनन्तानन्तके विषयमें गुणकार
और भागद्वार अजघ-यानुत्कृष्ट अर्थात् मध्यम अनन्तानन्तरूप ही होना चाहिये' इसप्रकार
परिकर्मसूत्रका वचन है । ऊपर जो जघन्य परीतानन्तसे विशेषाधिक कह आये हैं यह
विशेषाधिक असख्यातरूप है यह बात असिद्ध नहीं है, क्योंकि, व्यय होने पर समाप्त
होनेवाली राशिकी अनन्तरूप माननेमें विरोध आता है । इसप्रकार कथन करनेसे अर्धपुद्गल

१ तस्मिन्नेकवार वगित द्विकवारान तस्य जघन्यमृत्पथे । ततो न तस्थानानि गत्वा वगशलाका । नि सा
गा ६९ टीका । तस्मिन्नेकवार वगित जघन्यद्विकवाएनतमृत्पथे । तत अनतानतवर्गस्थानानि गत्वा जीवराशेर्वर्गशलाका
राशि । गो जी जा प्र टी (पर्याप्तिरूपणा) ।

२ प्रतिपु ' गिद्धतस्त ' इति पाठ ।

अद्वपोग्गलपरियट्टेण त्रियहिचारो, उत्रयारेण तस्स आणतियादो । को वा छद्द्व
त्रियत्तरामी ? उच्चदे- तिण्णिवारवग्गिदमग्गिदरासिद्धि—

निद्धा निगोदजीवा वणप्पदी कालो य पोग्गला चैय ।

सच्चमलोगागाम उप्पदे णतपग्गेरा' ॥ १६ ॥

एदे छप्पस्सेउपक्खित्ते छद्द्वपक्खित्तरामी होदि । एदस्म अजहण्णमणुवस्स
अणताणतयस्म जत्तियाणि रूपाणि तत्तियमेत्तो' मिन्डाड्ढिरासी । एद वध णव्वदि त्ति
भणिदे अणता इदि उयणादो । एद वयणममच्चण किं ण अल्लिपदि त्ति भणिदे
अमच्चकारणुम्भुजजिणउयणम्मलविणिग्गयत्तादो । ण च पमाणपडिग्गहिओ पयत्थो
पमाणतरेण परिग्गिज्जदि, अवट्टाणादो ।

परिवर्तनके साथ व्यभिचार हो जायगा सो भी यात नहीं है, क्योंकि अर्धपुद्गलपरिवर्तन
कालको उपचारसे अनन्तरूप माना है ।

शुद्धा—जिसमें छद्द्व द्रव्य प्रक्षिप्त विद्ये गये ह वह राशि कौनसी है ?

समाधान—तीनवार वगितसर्गित राशिम-सिद्ध, निगोदजीव, वनस्पतिक्रायिक,
पुद्गल, कालके समय और अलोकाराश ये छद्द्व अनन्त राशिया मिला देना चाहिये ॥ १६ ॥

प्रक्षिप्त करने योग्य इन छद्द्व राशियाके मिला देने पर छद्द्व द्रव्य प्रक्षिप्त राशि
होती है । इसप्रकार तीनवार वगितसर्गित राशिसे अनन्तगुणे और छद्द्व द्रव्य प्रक्षिप्त
राशिसे अनन्तगुणे हीन इस मध्यम अनन्तानन्तकी जितनी सख्या होती है तन्मात्र मिथ्यादृष्टि
जीवराशि है ।

शुद्धा—मिथ्यादृष्टिराशि इतनी ह, यह उसे जाना जाता है ?

समाधान—सूत्रम 'अणता' ऐसा वदवचनान्त पद दिया है, जिससे जाना जाता
ह कि मिथ्यादृष्टिराशि मध्यम अनन्ता तत्रमाण होती है ।

शुद्धा—यह वचन असत्यपनेसे क्या नहीं प्राप्त हो जाता ह ?

समाधान—असत्य बोलनेके कारणोंसे रहित जिनेद्रदेवके सुग्वमलसे निबले हुए
ये यजन है, इसलिये एद अप्रमाण नहीं माना जा सकता । जो पदार्थ प्रमाणप्रसिद्ध है उसकी
दूसरे प्रमाणोंके द्वारा परीक्षा नहीं की जाती ह, क्योंकि, यह पदार्थ प्रमाणसे
अव्यभिचर है ।

१ ति प प २३ विद्धा तिसादगादिदवक्कदिपो मत्तपमा कण्ठशुवा । काल अणगागाम उच्चदणत
दुम्मवा ॥ ति ता ९९ विद्धा निगावर्त्त वा वणरमद वात्त पुग्गला वध । सच्चमलगानहं पुण त्रियग्गिड ववल
पाने ॥ क प ४ ८५

२ त्रिपु ' उविवागिमतो ' इति वात् ।

अणंताणंताहि ओसपिणि-उस्सपिणीहि ण अवहिरंति का-
लेण ॥ ३ ॥

किमद्दु खेत्तपमाणमड्ढम्म कालपमाणं वुच्चदे ? ' जं यूलं अप्पवणणीय त
पुच्चमेव भाणियच्च ' इदि णायादो । कव कालपमाणादो खेत्तपमाणं वुच्चवणणिज्ज ? वुच्चदे-
खेत्तपमाणे लोको परुवेदव्वा । सो वि सेट्ठिपरुवणाए विणा ण जाणिज्जदि त्ति सेट्ठी
परुवेदव्वा । सा वि रज्जुपरुवणाए विणा ण जाणिज्जदि त्ति रज्जु परुवेदव्वा । रज्जु
वि मगच्छेदणाहि विणा ण जाणिज्जदि त्ति रज्जुच्छेदणा परुवेदव्वा । ताओ वि दीव-
सागरपरुवणाए विणा ण जाणिज्जदि त्ति दीवसागरा परुवेदव्वा त्ति । ण च कालपमाणे
एव महती परुवणा अत्थि, तदो कालादो खेत्तं सुहुममिदि जाणिज्जदे । के वि आइरिया
एव भणति वहुवेहि पदेमेहि उअचिद सुहुममिदि । उअ च—

सुहुमो य हएदि कालो ततो य सुहुमदर हएदि खेत्त ।

अगुल-असखभागे हवति कप्पा असखेज्जा' ॥ १७ ॥ इदि ॥

कालकी अपेक्षा मिच्छाईष्टि जीव अनन्तानन्त असर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके
द्वारा अपहृत नहीं होते हे ॥ ३ ॥

शुद्धा—क्षेत्रप्रमाणको उद्घनन करके कालप्रमाणका कथन क्यों किया जा रहा है ?

समाधान—' जो स्थूल और अव्यवर्णनीय होता है उसका पहले ही कथन करना
चाहिये ' इस न्यायके अनुसार पहले कालप्रमाणका कथन किया जा रहा है ।

शुद्धा—कालप्रमाणकी अपेक्षा क्षेत्रप्रमाण व्यवर्णनीय कैसे है ?

समाधान—क्षेत्रप्रमाणमें लोक प्ररूपण करने योग्य है । उसका भी जगच्छेणीके
प्ररूपणके बिना ज्ञान नहीं हो सकता है, इसलिये जगच्छेणीका प्ररूपण करना चाहिये ।
जगच्छेणीका भी रज्जुके प्ररूपण किये बिना ज्ञान नहीं हो सकता है, इसलिये रज्जुका प्ररूपण
करना चाहिये । रज्जुका भी उसके अर्धच्छेदोंका कथन किये बिना ज्ञान नहीं हो सकता है,
इसलिये रज्जुके छेदोंका प्ररूपण करना चाहिये । रज्जुके छेदोंका भी छीपों और सागरोंके
प्ररूपणके बिना ज्ञान नहीं हो सकता है, इसलिये छीपों और सागरोंका प्ररूपण करना चाहिये ।
परन्तु कालप्रमाणमें इसप्रकार बड़ी प्ररूपणा नहीं है, इसलिये कालप्रमाणकी प्ररूपणाकी अपेक्षा
क्षेत्रप्रमाणकी प्ररूपणा अतिसूक्ष्मरूपसे चणित है, यह यात जानी जाती है ।

कितने ही आचार्य ऐसा कथन करते हैं कि जो बहुत प्रदेशोंसे उपचित होता है वह
सूक्ष्म होता है । कदा भी है—

कालप्रमाण सूक्ष्म है, और क्षेत्रप्रमाण उन्मभे भी सूक्ष्म है, क्योंकि, अगुलके असख्या

१ सुहुमो य होए कालो ततो एहुमय रवर खेव । अगुलवेदीमेवे ओसपिणीओ असखेज्जा ॥ वि मा
पृ १४, गा २१८.

तेण कारणेण मि-ठाइद्विरामी ण अग्रहिरिज्जदि, सञ्चे समया अवहिरिज्जति । अदीदकालो धोरो मि-ठाइद्विरामी बहुगो ति रुध णञ्चेद ? मोलस-पडिय अप्पावहु गादो । कथ सोलसपडिय अप्पावहुग ? सव्वत्थोवा उट्टमाणद्धा, अग्रसिद्धिया अणत-गुणा । को गुणमारो ? जहण्णजुत्ताणत । सिद्धकालो अणतगुणो । को गुणमारो ? छम्मासट्टममाणेण रूराहिण्ण उिण्ण अदीदकालस्स अणतिममाणो । अणाइस्स अदीदकालस्स कथ पमाण ठविज्जदि ? ण, अण्णहा तस्सामायपयगादो । ण च अणादि ति जाणिदे सादिच पावेदि, विरोहा । सिद्धा ससेज्जगुणा । को गुणमारो ? रुग्गसदंपुधच । असिद्धकालो अससेज्जगुणो । को गुणमारो ? ससेज्जगुणायाओ । अदीदकालो विसे-साहिओ । केचियमेत्तेण ? सिद्धकालमेत्तेण । अग्रसिद्धिया मिच्छाउट्टी अणतगुणा । को

इसलिये मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण समाप्त नहीं होता है, परन्तु अतीतकालके सपूर्ण समय समाप्त हो जाते हैं ।

शुद्धा—अतीतकाल स्तोक है और मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण उससे अधिक है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—सोलह राशिगत अल्पबहुत्वसे यह जाना जाता है कि अतीतकालसे मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण अधिक है ।

शुद्धा—सोलह राशिगत अल्पबहुत्व विमप्रकार है ?

समाधान—वर्तमानकाल ससे स्तोक है । अभय जीयोंका प्रमाण उससे अनन्तगुणा है । यद्वा पर गुणकार क्या है ? जघय युत्तानत्त यद्वा पर गुणकाररूपसे अभीष्ट है । अभयराशिसे सिद्धकाल अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? छद्महीचोके अष्टम भागमें एक मिला देने पर जो समयसन्ध्या आवे उससे भन्न अतीतकालका अनन्तवा भाग गुणकार है ।

शुद्धा—अतीतकाल अनादि है, इसलिये उसका प्रमाण कैसे स्थापित किया जा सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, यदि उसका प्रमाण नहीं माना जाय तो उसके अभावका प्रसंग आ जायगा । परन्तु उसके अनादित्वका ज्ञान हो जाता है, इसलिये उसे सादित्वकी प्राप्ति हो जायगी, सो बात भी नहीं है, क्योंकि, ऐसा जाननेमें विरोध आता है ।

सिद्धकालसे सिद्ध सत्प्रायगुणे है । गुणकार क्या है ? यद्वा पर शतप्रवक्त्वरूप गुणकार लेना चाहिये । सिद्ध जीयोंसे असिद्धकाल असत्प्रायगुणा है । गुणकार क्या है ? यद्वा पर सत्प्राय वापलिकाय गुणकार है । असिद्धकालसे अतीतकाल विशेष अधिक है । कितना विशेष अधिक है ? सिद्धकालका जितना प्रमाण है, उतने विशेषसे अधिक है । अर्थात्

गुणगारो ? भ्रसिद्धियमिच्छाडिपमाणतमभागो । भ्रसिद्धिया प्रिसेसाहिया । केत्तिय-
मेत्तेण ? तेरसगुणद्वानमेत्तेण । मिच्छाडिप्टी विससाहिया । केत्तियमेत्तेण ? तेरसगुणद्वान-
मेत्तेण पमाणेणूण-अभ्रसिद्धियमेत्तेण । संसारत्था प्रिसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? तेरम-
गुणद्वानमेत्तेण । मच्चे जीवा प्रिसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? सिद्धजीवमेत्तेण । पोग्गल-
द्वन्द्वमणत्तगुण । को गुणगारो ? सच्चजीपेहि अणत्तगुणो । एसद्धा अणत्तगुणा । को गुण-
गारो ? सच्चपोग्गलद्वन्द्वो अणत्तगुणो । सच्चद्वान प्रिसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? वद्ध-
माणातीदकालमेत्तेण । अलोमागासमणत्तगुण । को गुणगारो ? सच्चकालादो अणत्तगुणो ।
सच्चगास प्रिसेसाहिय । केत्तियमेत्तेण ? लोमागासपदेसमेत्तेण । जेण अदीदकालादो
मिच्छाडिप्टी अणत्तगुणा तेण मच्चे समया अरहिरिज्जति मिच्छाडिप्टीरासी ण अवहिरिज्जति

असिद्धकालमें सिद्धकालका प्रमाण मिला देने पर अतीतकालका प्रमाण हो जाता है। अतीत कालसे भव्य मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? भव्य मिथ्यादृष्टियोंका अनन्तवा भाग गुणकार है। भव्य मिथ्यादृष्टियोंसे भव्य जीव विशेष अधिक है। कितने अधिक हैं ? सासादन गुणस्थानसे लेकर अयोगिनेवली गुणस्थानतक जीवोंका जितना प्रमाण है उतने विशेषरूप अधिक हैं। अर्थात् भव्य मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणमें सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणके मिला देने पर समस्त भव्य जीवोंका प्रमाण होता है। भव्य जीवोंसे सामान्य मिथ्यादृष्टि जीव विशेष अधिक है। कितने विशेषरूप अधिक है ? भव्य राशिमेंसे सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणको कम कर देने पर जो राशि अशिश्ट रहे उतने विशेषसे अधिक है। अर्थात् भव्यराशिमेंसे सासादन आदि तेरह गुण स्थानवालोंका प्रमाण कम करके भव्यराशिको मिला देने पर सामान्य मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण होता है। सामान्य मिथ्यादृष्टियोंसे ससारी जीव विशेष अधिक है। कितने अधिक है ? सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंका जितना प्रमाण है उतने विशेषसे अधिक है। ससारी जीवोंसे सपूर्ण जीव विशेष अधिक है ? कितने अधिक है ? सिद्ध जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक है। सपूर्ण जीवरशिसे पुद्गलद्रव्य अनन्तगुणा है। यहा पर गुणकार क्या है ? यहा पर सपूर्ण जीवरशिसे अनन्तगुणा गुणकार है। पुद्गलद्रव्यसे अनागतकाल अनन्तगुणा है। यहा पर गुणकार क्या है ? यहा पर सपूर्ण पुद्गलद्रव्यसे अनन्तगुणा गुणकार है। अनागतकालसे सपूर्ण काल विशेष अधिक है। कितना अधिक है ? वर्तमान आर अतीत कालमात्र विशेषसे अधिक है। सपूर्ण कालसे अलोकाकाश अनन्तगुणा है। यहा पर गुणकार क्या है ? सपूर्ण कालसे अनन्तगुणा यहा पर गुणकार है। अलोकाकाशसे सपूर्ण आकाश विशेष अधिक है। कितना अधिक है ? लोकाकाशके जितने प्रदेश हैं उतना विशेषरूप अधिक है। इसप्रकार इस रूपवहत्वसे यह प्रतीत हो जाता है कि अतीतकालसे मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं, अत अतीतकालके सपूर्ण समय अपहृत हो जाते हैं, परन्तु मिथ्यादृष्टि जीवराशि अपहृत नहीं होता है, यह बात सिद्ध हो जाती है।

णाम ? तिरियलोगस्त मज्झिमवित्थरो । कथं तिरियलोगम्म रुद्धत्तणमाणिज्जन्दे ? जत्तियाणि दीपसागररूपाणि जम्बूदीपच्छेदणाओ च रूपाहियाओ केसिं च आइरियाणमुपएसेण सरोज्जरूपाहियाओ विरलिय विग करिय जण्णोण्णवत्त्वरसिणा टिण्णाविमिद्ध गुणिदे रज्जु णिप्पज्जदि । एसो एति सेटीए सत्तममागो' । कम्मि तिरियलोगस्त पज्जयमाण ?

श्रीमान्—रज्जु किसे कहते हैं ?

समाधान—तिर्यग्लोकके मध्यम विस्तारको रज्जु कहते हैं ।

श्रीमान्—तिर्यग्लोककी चावई कैसे विनागी जाती है ?

समाधान—जितना द्वीपों और सागरोंका प्रमाण है उतना तथा एक अधिक जम्बूद्वीपके छेदको विरलित करके तथा उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे, अर्धच्छेद करनेके पदवात् अवशिष्ट राशिको गुणित कर देने पर रज्जुका प्रमाण उत्पन्न होता है । अथवा, कितने ही आचार्योंके उपदेशसे जितना द्वीपों और सागरोंका प्रमाण है उसको बार सत्प्रात अधिक जम्बूद्वीपके छेदोंको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे, छेद करनेके पदवात् अवशिष्ट राशिको गुणा कर देने पर रज्जुका प्रमाण उत्पन्न होता है । यह जगत्केणीका सातवा भाग आता है ।

विशेषार्थ—रज्जुके विषयमें दो मत पाये जाते हैं । किाने ही आचार्योंका ऐसा मत है कि स्वयभूरमण समुद्रकी यात्रा वेदिना पर जाकर रज्जु समाप्त होती है । तथा कितने ही आचार्योंका ऐसा मत है कि असत्प्रात द्वीपों और समुद्रोंकी चौड़ाईसे रुके हुए क्षेत्रसे सत्प्रात गुणे योजन जाकर रज्जुकी समाप्ति होती है । स्वयं धीरसेन स्वामीने इस दूसरे मतको अधिक महत्व दिया है । उनका कहना है कि ज्योतिषियोंके प्रमाणको लानेके लिये २५६ अंगुलके वर्ग प्रमाण जो भागहार घतलाया है उससे यही पता चलता है कि स्वयभूरमण समुद्रसे सत्प्रातगुणे योजन जाकर ही मध्यलोककी समाप्ति होती है । इन दोनों मतोंके अनुसार रज्जुका प्रमाण निकालनेके लिये रज्जुके जितने अर्धच्छेद हों उतने स्थानपर २ रख कर परस्पर गुणा करके जो लघु आवे उसका अर्धच्छेद करनेके अनन्तर जो भाग अवशिष्ट रहे उससे गुणा कर देना चाहिये । इसप्रकार करनेसे रज्जुका प्रमाण आ जाता है । जितने द्वीप और समुद्र हैं उनमें एक अधिक या सत्प्रात अधिक जम्बूद्वीपके अर्धच्छेद मिला देने पर रज्जुके अर्धच्छेद हो जाते हैं । इनके निकालनेकी प्रक्रिया इसप्रकार है—

मध्यसे रज्जुके दो भाग करना चाहिये, यह प्रथम अर्धच्छेद है । अनंतर आधा आधा

१ जगत्दीप सत्तममागा रज्जुय भावते । नि य पत्र ६ जगत्पिपत्तमागो रज्जु । वि सा ७ उदारणागाराण अट्टाङ्गाण जत्तिया तमया । इग्गणादुण्णविधरदीवादिहिरुद्ध एरइया ॥ वृ क्ष १, ३

विण्द्वादचलयाणं बाहिरभागे । तं ऋध जाणिञ्जदि ' लोमो वादपदिद्विदो ' त्ति वियाह-
पण्णचीयणादो । सयभूरमणसमुद्दाहिरवेदियाए परदो केत्तियमद्वाणं गतूण तिरियलोग-
समत्ती होदि त्ति भणिदे असरेज्जदीयसमुद्दरुद्दरुद्दजोयणेहितो सरेज्जगुणाणि गतूण
होदि । एदं कुदो णवेदे ? जोटमियाणं पेळपण्णंगुलमदवग्गमेत्तभागहारपरुयसुत्तादो,

करनेसे (पहले मनके अनुसार) दूसरा अर्धच्छेद स्वयभूरमण समुद्रमें, तीसरा अर्धच्छेद
स्वयभूरमण द्वीपमें, इनप्रकार एक एक अर्धच्छेद उत्तरोत्तर एक एक द्वीप ओर एक एक
समुद्रमें पडता है । किन्तु लघण समुद्रमें दो अर्धच्छेद पडेंगे । उनमेंसे पहला डेढलाख योजन
भीतर जाकर और दूसरा पचास हजार योजन भीतर जाकर पडता है । इनमेंसे दूसरा अर्ध
च्छेद जम्बूद्वीपका मान लेने पर जितने द्वीप ओर समुद्र है उतने अर्धच्छेदोंका प्रमाण आ
जाता है । अन्तमें पचास हजार योजन लघण समुद्रके ओर इतने ही योजन जम्बूद्वीपके अन्-
तिष्ठ रहते हैं । इनको मिला देने पर एक लाख योजन होता है । इस एक लाख योजनके १७
अर्धच्छेद करने पर एक योजन अवशिष्ट रहता है, जिसके १९ अर्धच्छेद करनेके बाद एक
सूच्यगुल शेष रहता है । पत्यके अर्धच्छेदोंके वर्ग प्रमाण एक सूच्यगुलके अर्धच्छेद होते हैं ।
इसप्रकार पहले मतके अनुसार जितने द्वीप ओर समुद्र है उनही सख्यामें १+१७+१९=३७
अर्धच्छेद अधिक पत्यके अर्धच्छेदोंके वर्ग प्रमाण अर्धच्छेद मिला देने पर रज्जुके कुल
अर्धच्छेद होते हैं । तथा दूसरे मतके अनुसार इस सख्यामें सख्यात और मिला देने पर
रज्जुके सपूर्ण अर्धच्छेद होते हैं, क्योंकि, इस मतके अनुसार सख्यात अर्धच्छेद ही जानेके
बाद स्वयभूरमण समुद्रमें अर्धच्छेद प्राप्त होता है ।

शंका—तिर्यग्लोकका अन्त कहा पर होता है ?

समाधान—तीनों वातचलयोंके बाह्य भागमें तिर्यग्लोकका अन्त होता है ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—' लोक वातचलयोंसे प्रतिष्ठित है ' इस व्याख्याप्रशप्तिके ध्यनसे जाना
जाता है कि तीनों वातचलयोंके बाह्य भागमें लोकका अन्त होता है ।

स्वयभूरमण समुद्रकी धाष्ट वेदिकामे उस ओर कितना स्थान जाकर तिर्यग्लोककी
समाप्ति होती है ऐसा पूछने पर आचार्य उत्तर देते हैं कि असख्यात द्वीपों ओर समुद्रोंके व्याससे
जितने योजन रहे हुए हैं उनसे सख्यान् गुणा जाकर तिर्यग्लोककी समाप्ति होती है ।

शंका—यह किससे जाना जाता है ?

समाधान—ज्योतिषी देवोंके दोसा छप्पन अगुल्लोंके वर्गमात्र भागद्वारके प्ररूपक

१ मज्झिम सन्निव ने वेसयत्थणअशुत्तदीण । अ लद्ध मो रावी जादिमियसुत्तण सव्वाण । नि प पर
२०१ तिण्णिमयजोयणाण वेगदल्लयणभगुल्लण च । वदिदिदपदा वेत्तजोहियियाण च परिमाण ॥ गा जी १९०
वेसयत्थणगुलमपयणपडिभागो पयसस । अट्ट ए १४२ पृ १९२

‘दुग्धुणुणो दुग्धुणो गिरतरो तिरियलोगे’ चि तिलोयपण्णत्तिसुत्तादो य णव्वदे । ण च एद वक्खण जत्तियाणि दीपसागररूपाणि अदुदीपच्छेदणानि च रूपाहियाणि चि परियम्म-सुत्तेण सह विरुद्धं, रूपेहि जहियाणि रूपाहियाणि चि महणादो । अण्णाइरिय वक्खणेषण सह विरुद्धं चि ण, एदस्म वक्खणस्म ज भदत्त तेण वक्खणाणामायेण विरुद्धदाए एदस्स समवहणादो । त वक्खणाभासमिदि जुदो णव्वदे ? जोइसियभाग-हारसुत्तादो चदाइच्चिंविषयमाणपरुयतिलोयपण्णत्तिसुत्तादो च । ण च सुत्तविरुद्ध वक्खण होइ, अइप्पसमादो । किं च ण त वक्खण घट्टे, तम्हि वक्खणेषे अलब्धिज्जमाणे सेठीए सत्तमभागम्हि अट्टसुण्णदसणादो । ण च सेठीए सत्तमभागम्हि अट्टसुण्णओ अरिय, तदरियत्तविहाययसुत्ताणुवल्लभादो । तदो तन्व अट्टसुण्णणिणामगट्ट केत्तिएण वि रासिणा

सूत्रसे और ‘तिर्यग्लोम दोके धर्मसे लेकर उत्तरोत्तर दूना दूना है’ इस त्रिलोकप्रशप्तिके सूत्रसे जाना जाता है कि असरयात द्वीपों और समुद्रोंके व्याससे होने हुए क्षेत्रसे सख्यातगुणा जाकर तिर्यग्लोककी समाप्ति होती है। और यह व्याख्यान ‘जितने द्वीपों और सागरोंकी सख्या है और जम्बूद्वीपके रूपाधिक जितने छेद हैं उतने रज्जुके अर्धच्छेद हैं’ परिकर्म सूत्रसे इस व्याख्यानके साथ भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है, क्योंकि, यहा पर रूपसे अधिक अर्थात् एकसे अधिक ऐसा ग्रहण न करके रूपसे अधिक अर्थात् बहुत प्रमाणसे अधिक ऐसा ग्रहण किया है।

शंका — यह व्याख्यान अन्य आचार्योंके व्याख्यानके साथ तो विरोधको प्राप्त होता है ?

समाधान - नहीं, क्योंकि, यह व्याख्यान जिसलिये सगत है इसलिये दूसरे व्याख्यानभासोंसे इसके विरुद्ध पढ़ने पर भी यह व्याख्यान प्रमाणरूपसे अवस्थित ही रहता है।

शंका — अन्य आचार्योंका व्याख्यान व्याख्यानभास है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — ज्योतिषियोंके भागहारके प्ररूपन सूत्रसे और चंद्र तथा सूर्यके विम्बोंके प्रमाणके प्ररूपक त्रिलोकप्रशप्तिके सूत्रसे जाना जाता है कि पूर्वार्ध व्याख्यानके विरुद्ध जो अन्य आचार्योंका व्याख्यान पाया जाता है वह व्याख्यानभास है। और सूत्रविरुद्ध व्याख्यान हीक नहा कहा जा सकता है, अन्यथा अतिप्रसंग दोष न जायगा। तथा यह अन्य आचार्योंका व्याख्यान घटित भी तो नहीं होता है, क्योंकि, उस व्याख्यानके अवलम्बन करने पर जगच्छेदोंके सप्तम भागका जो प्रमाण घतलाया है उसके अतमें आठ शून्य दिखाई देते हैं। परन्तु जगच्छेदोंके सप्तम भागरूप प्रमाणमें अन्तके आठ शून्य नहीं पाये जाते हैं, क्योंकि, अन्तमें आठ शून्योंके अस्तित्वका विधायक कोई सूत्र नहीं पाया जाता है। इसलिये

१ अट्टसुण्णत्तिसुत्तादो य द्वाणेषु णव्व सुण्णानि । छर्त्तानसत्तदुग्धुणव्वडा तिचउका हाति अक्कमा॥ एदेहि दुग्धुणुणो जम्बुद्वीपस्येहि मज्जिदाए । सन्दिशो लद्ध माण चदान जोइसिदाण ॥ तत्तियमेत्तानि रविणो इवति ॥ १२, १३, १४ ॥ ति ५ प २०१

अहिष्ण होद्व्यं । हंतो नि अमंखेज्जभागमहिओ संखेज्जभागमहिओ वा ण होदि,
तदणुगमहकारिसुत्ताणुवलभादो । तदो दीपसमुद्दरुद्धसेत्तायामादो संखेज्जगुणेण वाहिर-
खेत्तेण होद्व्यमण्णाहा पुच्चुत्तसुत्तेहि सह पिरोहप्पसमादो' । ' जो मच्छो जोयणसहस्सिओ
सयभूरमणसमुद्दस्स वाहिरिल्लए तडे वेयणसमुग्घाएण समुद्दो काउलेस्सियाए लग्गो' ति
एद्वेण वेयणासुत्तेण सह पिरोहो ऋण्ण होदि ति भणिदे ण, सयभूरमणसमुद्दस्स वाहिर-
वेदियादो परभागद्धिट्ठपुढरीए वाहिरिल्लतडत्तणेण गहणादो । तो नि काउलेस्सियाए
महामच्छो ण लग्गदि ति णासकणिज्ज, पुढविद्धिट्ठपदेसम्भि चए हेट्ठा वादवलायणम-

रज्जुके प्रमाणके अन्तमें बतलाये हुए आठ श्रुतियोंके नष्ट करनेके लिये जो कुछ भी राशि हो
वह अधिक ही होना चाहिये । अधिक होती हुई भी वह राशि असरयातवामाग अधिक अथवा
सरयातवामाग अधिक तो ही नहीं सफती है, क्योंकि, इसप्रकारके कथनही पुष्टि करनेवाला कोई
सूत्र नहीं पाया जाता है । इसलिये जितने क्षेत्र विस्तारको ढीपों और समुद्रोंने रोक रक्खा
है उससे सख्यातगुणा वाहिरी अर्थात् अन्तके समुद्रसे उस ओरका क्षेत्र होना चाहिये, अन्यथा
पहले कहे गये सूत्रोंके साथ विरोधका प्रसंग आ जायगा ।

'जो एक हजार योजनका महामत्स्य है वह वेदनासमुद्रातस पीडित हुआ स्वयभूरमण
समुद्रके बाह्य तट पर कापोतलेदया अर्थात् तनुवातवलयसे लगता है, इस वेदनाखंडके
सूत्रके साथ पूर्वार्क व्याख्यान विरोधको न्यो नहीं प्राप्त होता है ऐसा किसीके पृच्छने पर
आचार्य कहते हैं कि फिर भी इस कथनका पूर्वार्क कथनके साथ विरोध नहीं आता है,
क्योंकि, यहा पर 'बाह्य तट' इस पदमे स्वयभूरमण समुद्रकी बाह्य वेदिकाके परभागमें
स्थित पृथिवीका ग्रहण किया गया है ।

शंका—यदि ऐसा है तो महामत्स्य कापोतलेदयासे ससक्त नहीं हो सकता है ?

समाधान—ऐसी आशङ्का नहीं करनी चाहिये, क्योंकि, पृथिवीस्थित प्रदेशोंमें अध-
स्तन वातवलयका अवस्थान रहता ही है ।

निशेषार्थ—यहा ऐसा अभिप्राय जानना चाहिये कि समुद्रकी वेदिका और

१ स्वाहियदीवसागररूवाणि विरलिय विग करिय अण्णोण्णसथ कानूण तथ तिण्णि रूवाणि अवणिय
जोयणलवसेण गुणिदे दीवसमुद्दरुद्धतिरियलोग्गेषेत्तायाप्पतादो । ण च एचियो थव तिरियलोगणिकसमो जगसेटीए
सत्तममागिम्म पचसुण्णाणुवलभादो । ण च एदम्हादो र व्हाविस्समो ऊणो हादि रज्जुअम्भतरभूदस्स चउब्बीसजायणमेत्त
वादनद्धवखेतस्स व हाणुवलभादो । ण च तचियमेच पक्खिचे पचसुण्णओ भिट्ठि तिहाणुवलभादो । तम्हा सयलदीन
सायरविवक्कादो वादि केत्तिएण वि खेत्तेण होद्व्यं । धरला ८८१ ति प प २२५

२ जो मच्छो जोयणसहस्सओ सयभूरमणसमुद्दस्स वाहिरिट्ठए तड्ड अण्णिदो ॥ ८ ॥ वेयणसमुग्घादेण
समुद्दो ॥ ८ ॥ काउलेस्सियाए लग्गो, काउलेस्सिया णाम तदियो वादवलओ ॥ ९ ॥ ए धवला पव ८८१ ८८२

वह्याणादो' । एते अत्यो जडनि पुञ्जाइरियसपदायनिरुद्धो तो नि ततञ्जुत्तिलेण अम्हेहिं पन्निदो । तदो इदमित्थ वेत्ति षेहासगहो कायव्यो, अइदिपत्थनिसण छदुपेत्थनियपिद-
जुत्तीण णिणयहेउत्ताणुववत्तीदो । तम्हा उअएस लडण त्रिसेसणिणयो एत्थ कायव्यो
त्ति । येत्तपमाणपरूरण किमट्ट कीरदे ? अससेज्जपदेसे लोगागासे अणतलोममेत्तो नि
जीवरासी सम्माइ त्ति जाणाणणट्ट । अट्टमु माणेसु लोमपमाणेण मिणिज्जमाणे एत्थिलोगा
होति त्ति जाणाणणट्ट वा । तो नि ते केत्तिपा हाति त्ति भणिं दे एगलोमणेण मिन्डाइट्ठि-
रासिभिह भागे हिदे लद्धरूपमेत्ता लोगा होति ।

तिण्हं पि अधिगमो भावपमाण ॥ ५ ॥

घातचलयके मध्यभागमें जो पृथिवी हे वहा घातचलयकी समाप्ता है । और इसलिये महात्मस्य
वेदनात्ममुद्रातरे समय उससे स्पश कर सकता है । इसलिये स्वयम्भूरमणकी याहा वेदिकाके
उस ओर अलग्घात हीमें आर समुद्राके व्याससे सग्यातगुणो पृथिवीके सिद्ध हो जाने पर
भी 'वेदनात्ममुद्रातसे पाठित हुआ महात्मस्य घातचलयमे ससप्त होता है' वेदनात्मउके इस
घचनके साथ उक्त नयनका कोई विरोध नहा आता है ।

यद्यपि यह अथ पुर्याचार्योक्त सप्रदायके विरुद्ध है, तो भी आगमके आधारपर युक्तिके
बलसे हमने (वीरसेन आचार्यने) इस नयनका प्रतिपादन किया है । इसलिये यह अर्थ इसप्रकार
भी हो सकता है, इस विकल्पका सप्रह यहा पर छोडना नहीं चाहिये, क्योंकि, अतीन्द्रिय
पदायोंके विषयमें छम्भस्य जीवोंके द्वारा कल्पित युक्तियोंके विरुद्ध रहित निर्णयके लिये हेतुता
नहा पाई जाती है । इसलिये उपदेशको प्राप्त करके इस विषयमें विशेष निर्णय करना चाहिये ।

शंका—यहा पर क्षेत्रप्रमाणका प्ररूपण किसलिये किया है ?

समाधान—असग्यात प्रदेशों लोकाकाशमें अनन्तलोकप्रमाण जीवराशि समा जाती
है इस बातके ज्ञान करानेके लिये यहा पर क्षेत्रप्रमाणका प्ररूपण किया है । अथवा, आठ
प्रकारके प्रमाणोंमेंसे लोकप्रमाणके द्वारा जीवोंकी गणना करने पर इतने लोक हो जाते हैं इस
बातके ज्ञान करानेके लिये यहा पर क्षेत्रप्रमाणका प्ररूपण किया है । तो भी ये लोक कितने
होते हैं ऐसा पूछने पर आचार्य उत्तर देते हैं कि एक लोकका अर्थात् एक लोकके जितने
प्रदेश हैं उनका मिध्यादृष्टि जीवराशिमें भाग देने पर जितनी सग्या लब्ध आवे तत्रप्रमाण
लोक होते हैं ।

उपर्युक्त तीनों प्रमाणाका ज्ञान ही भावप्रमाण है ॥ ५ ॥

१ भाष्यो पुनर्वरियदवेण महामञ्जो सयसुरमणवाशिरेइयाए वाहिरे माग छागणालण सामाने पुञ्जीदो ।
तथ तिव्ववणानसेण वेणसस्सवादेण समुपादो जाव लोमणलीण वाशिपवतो ए गो ति वत्त हादि ।
भवत्ता पण ८८२

अधिगमो णाणपमाणमिदि एगद्धो । सो वि अधिगमो पंचत्रिधो मदि सुद-ओहि-
मणपज्जय-केवलणाणभेदेण । एकैकं तिविहं द्वयं खेत्तं कालभेएण । द्वयत्थिविसयणाणं
द्वयभापपमाणं । खेत्तप्रिसिद्धद्वयस्स णाण खेत्तभावपमाणं । तहा कालस्स पि उत्तव्य ।
सुत्ते भावपमाणं ण वुत्त ? ण, तस्स अणुत्तसिद्धीदो । ण च भापपमाणमत्तरेण तिहं
पमाणं सिद्धी भयदि, सहियपमाणाभावे गउणपमाणस्तासंभवादो, भावपमाणं बहु-
वण्णणीयमिदि वा हेदुनादहेदुवादाण अउवारणसिस्साणमभावादो वा । अधवा एयं
भावपमाणं वत्तव्य । त जहा— मिच्छाद्द्विरासिणा सव्वपज्जए भागे हिदे जं भागलद्धं त
भागहारमिदि कट्टु सव्वपज्जयस्सुपरि सडिदं भाजिद-पिरिलिद-अग्रहिदाणि वत्तव्वाणि ।
त जहा— सव्वपज्जए भागहारमेत्ते खडे कदे तत्थ एगसडपमाणं मिच्छाद्द्विरासी
होदि । सडिदं गदं । तेणेउ भागहारेण सव्वपज्जए भागे हिदे भागलद्धपमाणं मिच्छा-
द्द्विरासी होदि । भाजिदं गदं । तं चेउ भागहार पिरिलेदूणं सव्वपज्जयं समखडं काट्टण

अधिगम और ज्ञानप्रमाण ये दोनों पर्यायवाची शब्द हैं। वह ज्ञानप्रमाण भी मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन पर्ययज्ञान और केवलज्ञानके भेदसे पांच प्रकारका है। तथा उन पांचोंमेंसे प्रत्येक ज्ञानप्रमाण द्रव्य, क्षेत्र और कालके भेदसे तीन तीन प्रकारका है। उन तीनोंमेंसे द्रव्योंके अस्तित्व विषयक ज्ञानको द्रव्यभावप्रमाण कहते हैं। क्षेत्रविशिष्ट द्रव्यके ज्ञानको क्षेत्रभावप्रमाण कहते हैं। इसीप्रकार कालभावप्रमाणके विषयमें भी जानना चाहिये।

शुद्धा— सूत्रमें भावप्रमाणका स्वतंत्र कथन नहीं किया है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, उसकी बिना कहे ही सिद्धि हो जाती है। दूसरे भाव प्रमाणके बिना शेष तीन प्रमाणोंकी सिद्धि भी नहीं हो सकती है, क्योंकि, योग्य अर्थात् मुख्य प्रमाणके अभावमें गौणप्रमाणका होना असंभव है। अथवा, भावप्रमाण बहुवर्णनीय है, अथवा, हेतुवाद और अहेतुवादके अवधारण करनेवाले शिष्योंका अभाव होनेसे सूत्रमें स्वतन्त्ररूपसे भावप्रमाणका कथन नहीं किया है।

अथवा, इस भावप्रमाणका कथन करना चाहिये। वह इस प्रकार है, मिथ्यादृष्टि जीवराशिका संपूर्ण पर्यायोंमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आये उसे भागहाररूपसे स्थापित करके संपूर्ण पर्यायोंके ऊपर खण्डित, भाजित, विरलित और अपहृत इनका कथन करना चाहिये। आगे उन्हीं चारोंका स्पष्टीकरण करते हैं—

संपूर्ण पर्यायोंके भागहारप्रमाण खंड करने पर जितने खंड आये, उनमेंसे एक खण्डका जितना प्रमाण हो तन्मात्र मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है। इसप्रकार खण्डितका वर्णन समाप्त हुआ।

पूर्वोक्त भागहारका ही संपूर्ण पर्यायोंमें भाग देने पर जो भजनफल लब्ध आये तत्प्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है। इसप्रकार भाजितका वर्णन समाप्त हुआ।

पूर्वोक्त भागहारको ही विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर

दिग्णे तदथ बहुसुखाणि च्छाडिय एगसंडगहिदे मिच्छाइट्टिरासिपमाण होदि । विरलिद गद । त चैव भागहार सलागभूद ठेदूण मिच्छाइट्टिरासिपमाण सच्चपज्जण अरहिरिअदि, सलागाणे एगरुअ अरणिज्जदि । पुणो मिच्छाइट्टिरासिपमाण सच्चपज्जयम्मि अवहिरि-ज्जदि, सलागादो एग रूममणिज्जदि । एव पुणो पुणो कीरमाणे सच्चपज्जओ व सला गाओ च जुगन णिट्ठिदाओ । तदथ एगमारमवहारिदपमाण मिच्छाइट्टिरासी होदि । अरहिद गद । मिच्छाइट्टिरासिस्स पमाणनिमए सोदाराण णिच्छयुप्पावणद्ध मिच्छाइट्टि-रासिस्स पमाणपरूण वग्गट्टाणे सडिद भाजिद-विरलिद अवहिद-पमाण कारण णिरुत्ति-नियप्पेहि वत्तइस्सामो । सुत्ताभाणे कथमेद बुब्बदे ? सुत्तेण सूचिदत्तादो । त जहा—

सिद्धतेरसगुणट्टाणपमाण मिच्छाइट्टिरासिभाजिदसिद्धतेरसगुणट्टाणपमाणवग्ग च

सपूर्ण पर्यायोंके समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर उनमेंसे बहुत गण्डोंको छोडकर और एक खण्डके ग्रहण करने पर मिथ्यादाष्टि जीवराशिका प्रमाण होता है । इसप्रकार विरलितका वर्णन समाप्त हुआ ।

उसी भागद्वारको शलाकारूपसे स्थापित करके सपूर्ण पर्यायोंमेंसे मिथ्यादाष्टि जीव राशिके प्रमाणको कम करना चाहिये, एकवार कम किया इसलिये शलाकाराशिके प्रमाणको कम करना चाहिये । दूसरीवार मिथ्यादाष्टि जीवराशिके प्रमाणको शेष सपूर्ण पर्यायोंमेंसे घटा देना चाहिये । दूसरीवार मिथ्यादाष्टि जीवराशिके प्रमाणको कम किया इसलिये शलाकाराशिके प्रमाणको कम कर देना चाहिये । इसप्रकार पुन पुन करने पर सपूर्ण पर्यायों और उसीप्रकार शलाकाराशि युगपत् समाप्त हो जाती हैं । यहा पर सपूर्ण पर्यायोंमेंसे जितना प्रमाण एकवार घटाया गया है तत्प्रमाण मिथ्यादाष्टि जीवराशि होती है । इसप्रकार अपहतका कथन समाप्त हुआ ।

अब आगे मिथ्यादाष्टि जीवोंकी राशिके विषयमें श्रोताओंको निश्चय उत्पन्न करानेके लिये धर्मस्थानमें गण्डित, भाजित, विरलित, अपहत, प्रमाण, कारण, निरुक्ति और त्रिकल्पके द्वारा मिथ्यादाष्टि जीवराशिका प्रमाण बतलाते हैं ।

शुक्रो—धर्मस्थानमें खण्डित आदिके द्वारा मिथ्यादाष्टि जीवराशिके प्रमाणका प्ररूपक सूत्र नहीं होने पर इसका कथन क्यों किया जा रहा है ?

समाधान—सूत्रसे सूचित होनेके कारण इसका कथन किया है, जो इसप्रकार है—

सिद्ध और सासादनसम्यग्दष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ता जीवराशिको तथा सिद्ध और तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिके धर्ममें मिथ्यादाष्टि जीवराशिके प्रमाणका भाग देने पर

होदि । विरलिद् गद् । त चेत् ध्रुवराशिं मलागभूद् ठेपेऊण मिन्डाडिट्टिरासिपमाण
 सच्चजीवरासिउपरिमवर्गमिद् अण्णीय ध्रुवरासीदो एगरूपमवणिज्जदि । पुणो वि मिच्छा
 इट्टिरासिपमाण सच्चजीवरासिउपरिमवर्गमिद् अण्णीय ध्रुवरासीदो एग रूपमवणिज्जदि ।
 एव पुणो पुणो कीरमाणे सच्चजीवरासिउपरिमवर्गो च ध्रुवरासी च जुगत्त णिट्टिदा ।
 तत्थ एगवर्गमवणिदपमाण मिन्डाडिट्टिरासी होदि । जयहिद् गद् । तस्स पमाणं
 केत्तिय ? सच्चजीवरासिउपरिमवर्गमूलाणि चि ।
 त जहा—

सच्चजीवरासिपट्टमवर्गमूल विरलेऊण एकेवस्य रूपस्य सच्चजीवरासिं समरुद्ध

भत एक खड १३ प्रमाण मिथ्यादष्टि जीवराशि ह् ।

पूर्वाक्त ध्रुवराशिको शलाकारूपसे स्थापित करके और मिथ्यादष्टि जीवराशिके
 प्रमाणको सपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके प्रमाणमेंसे निकालकर शलाकाभूत ध्रुवराशिमसे
 एक कम कर देना चाहिये । फिर भी मिथ्यादष्टि राशिके प्रमाणको शेष सपूर्ण जीवराशिके
 उपरिम वर्गके प्रमाणमेंसे न्यून करके ध्रुवराशिमें एक और कम कर देना चाहिये । इसप्रकार
 पुन पुन करने पर सपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग और ध्रुवराशि युगपत् समाप्त हो जाती
 है । इसमें एकवार निकाली हुई शलाका जितना प्रमाण हो उता मिथ्यादष्टि जीवराशि है ।
 इसप्रकार अपहतका वर्णन समाप्त हुआ ।

उद्धारण (अपहन)—

शलाकारूप ध्रुवराशि	१० १/३	जीवराशिका उपरिम वर्ग	२५६
	-१		-१३
	१८ १/३		२४३
	-१		-१३
	१७ २/३		२३०

इस क्रमसे उपरिम वर्गमेंसे मिथ्यादष्टि राशिका प्रमाण और ध्रुवराशिमेंसे एक एक
 घटाते जाने पर शलाकाराशि और उपरिम वर्गराशि एक साथ समाप्त होंगे । इनमें एकवार
 घटाई जानेवाली संख्या १३ प्रमाण मिथ्यादष्टि है ।

शंका— उस मिथ्यादष्टि जीवराशिका प्रमाण कितना है ?

समाधान— सपूर्ण जीवराशिके अनन्त बहुभागप्रमाण मिथ्यादष्टि जीवराशिके प्रमाण
 है, जो प्रमाण सपूर्ण जीवराशिके अनन्त प्रथम वर्गमूलाके बराबर होता है । उसका स्पष्टाकरण
 इसप्रकार है—

सपूर्ण जीवराशिके प्रथम वर्गमूलको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक

काऊण दिग्ने रूत्र पडि सच्चजीवरासिपदमवग्गमूलप्रमाण पावदि । पुणो सिद्धतेरसगुण-
 ट्ठाणेहि भजिदमच्चजीवरासिपदमवग्गमूल पुच्चविरलणाए हेट्ठा विरलिय उचरिमविरलणाए
 एगपदमवग्गमूलं घेत्तूण समसुड करिय दिग्णे रूत्रं पडि सिद्धतेरसगुणट्ठाणप्रमाणं
 पावेदि । तत्थुवरिमविरलणयरूवूणमेत्तमच्चजीवरासिपदमवग्गमूलाणि रूवूणहेट्ठिमविर-
 लणमेत्तमिद्धतेरसगुणट्ठाणप्रमाणाणि च घेत्तूण मिच्छाद्दिग्गिरासी होदि । प्रमाणं गदं । केण
 कारणेण ? सच्चजीवरासिणा सच्चजीवरासिउपरिमवग्गे मागे हिदे किमागच्छदि ? सच्च-

एकके ऊपर जीवराशिको समान लण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक
 एकके प्रति सपूर्ण जीवराशिका प्रथम वर्गमूल प्राप्त होता है । अनन्तर सिद्धराशि और सासादन
 आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका सपूर्ण जीवराशिके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर जो
 लब्ध आवे उसे पहले विरलनके नीचे विरलित करके उपरिम विरलनके एकके प्रति प्राप्त
 सपूर्ण जीवराशिके प्रथम वर्गमूलको ग्रहण करके और उसके समान लण्ड परके अधस्तन
 विरलनके प्रत्येक एकके ऊपर देयरूपसे स्थापित करने पर प्रत्येक एकके प्रति सिद्धराशि और
 सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । यहा पर उपरिम
 विरलनमें प्ररूपण किये गये सपूर्ण जीवराशिके एक कम प्रथम वर्गमूलको और एक कम
 अधस्तन विरलनमात्र सिद्ध और सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणको मिला
 देने पर मिध्यादष्टि जीवराशिका प्रमाण होता है । इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण (प्रमाण)— जीवराशि = १६, प्रथम वर्गमूल = ४, सिद्धतेरस = ३

(१ विरलन वर्गमूत्र) $\frac{४}{१} \frac{४}{१} \frac{४}{१} \frac{४}{१} \quad \frac{३}{३} = १\frac{१}{३}$ सिद्धतेरसका प्रथम वर्गमूलमें
 भाग देने पर लब्ध

(२ विरलन) $\frac{३}{१} \frac{१}{३}$

(अत मिध्यादष्टि राशिका प्रमाण प्रथम विरलनकी शेष तीन राशिया ४+४+४=१२
 और हमारे विरलनमें प्रथम राशि (सिद्धतेरस) को छोड़कर दूसरी राशि १ मिला देने पर
 मिध्यादष्टि राशिका प्रमाण १२+१=१३ आ जाता है ।)

किम कारणसे ?

ज्ञाना— सपूर्ण जीवराशिका सपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर कौनसी
 राशि आती है ?

समाधान— सपूर्ण जीवराशिका सपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर
 सपूर्ण जीवराशि ही आती है ।

उदाहरण (धीजगणितसे)— जीवराशि = क, $\frac{क}{क} = क$

जीवरासी चंद्र आगच्छति । दुभागमहियसञ्चजीवरासिणा सञ्चजीवरासिउपरिमवर्गमे
 भागे हिदे निभागच्छति ? तिभागहीणसञ्चजीवरासी आगच्छति । केण कारणेण ?
 सञ्चजीवरासिउपरिमवर्गमे पुञ्चापरायामेण तिणिग खडाणि करिय तत्थेगखड धेत्तण
 खड करिय सपिदे सञ्चजीवरासिदुभागवित्थार वेत्ति । भागायामत्तेत्त होदि । एद अधिय
 निरुणात् दिण्णे एकेक्खस्स रूपस्स तिभागहीणसञ्चजीवरासी पाप्पेदि । तिभागमहिय-
 सञ्चजीवरासिणा सञ्चजीवरासिउपरिमवर्गमे भागे हिदे निभागच्छति ? चउत्तभागहीण-

(अज्ञातितसे)—२' ६ - १६ = १६

श्रुति—दूसरा भाग अधिक सपूर्ण जीवरासिका सपूर्ण जीवरासिके उपरिम वर्गमें
 भाग देने पर कौनसी राशि आती है ?

समाधान—तीसरा भाग हीन सपूर्ण जीवरासि आती है ।

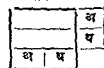
उदाहरण (ज्ञानगणितसे)— $\frac{क^१}{क + \frac{क}{२}} = \frac{०}{२} क = क - \frac{क}{२}$

(अज्ञातितसे)— १६ का दूसरा भाग ८ है। अतः द्वितीय भाग ८ अधिक १६ = २४ का
 २५६ में भाग देने पर १० $\frac{२}{३}$ आता है, जो जीवरासि १६ का तीसरा भाग हीन है ।

श्रुति—दूसरा भाग अधिक सपूर्ण जीवरासिका सपूर्ण जीवरासिके उपरिम वर्गमें
 भाग देने पर तीसरा भाग हीन जीवरासि किस कारणसे आती है ?

समाधान—सपूर्ण जीवरासिके धर्मरूप क्षेत्रके पूर्ण और जीवरासिवर्ग

पश्चिमके विस्तारसे तीन खण्ड करके और उनमेंसे एक खण्ड ग्रहण
 करके उसके भी दो खण्ड करके समित अर्थात् प्रसारित कर देने पर
 सपूर्ण जीवरासिका दूसरा भागरूप विस्तार जाना जाता है । यहाँ
 भागायाम क्षेत्र है । इससे अधिक विस्तार राशिके प्रत्येक पत्रके ऊपर
 द्वैयरूपसे देने पर प्रत्येक पत्रके प्रति तीसरा भागहीन सपूर्ण जीवरासि प्राप्त होती है ।



श्रुति—तीसरा भाग अधिक सपूर्ण जीवरासिका सपूर्ण जीवरासिके उपरिम वर्गमें
 भाग देने पर क्या आता है ?

समाधान—चौथा भाग हीन सपूर्ण जीवरासि आती है । यहाँ पर भी कारणका
 पहलेके समान कथन करना चाहिये । अर्थात् सपूर्ण जीवरासिके धर्मरूप क्षेत्रके पूर्ण और
 पश्चिम विस्तारसे चार खण्ड करके और उनमेंसे एक खण्डके तीन खण्ड करके प्रसारित कर
 देने पर सपूर्ण जीवरासिका तीसरा भागरूप विस्तार जाना जाता है । अन्तर इन खण्डोंको

सव्वजीवरासी आगच्छदि । एत्थ त्रि फारण पुव्वं व वत्तव्वं । एव सखेज्जभागव्वमहिय-
सव्वजीवरासिणा तस्सुपरिमवग्गे भागे हिंदे किमागच्छदि ? सखेज्जभागहीणमव्वजीव-
रामी आगच्छदि । उक्कस्ससखेज्जभागव्वमहियसव्वजीवरासिणा तदुवरिमवग्गे भागे हिंदे
किमागच्छदि ? जहण्णपरिचासखेज्जभागहीणसव्वजीवरासी आगच्छदि । असखेज्जभाग-
व्वमहियसव्वजीवरासिणा तदुवरिमवग्गे भागे हिंदे किमागच्छदि ? असखेज्जभागहीण-
सव्वजीवरासी आगच्छदि । उक्कस्स-असखेज्जसखेज्जभागव्वमहियसव्वजीवरासिणा तदु-
वरिमवग्गे भागे हिंदे किमागच्छदि ? जहण्णपरिचाणंतभागहीणसव्वजीवरासी आगच्छदि ।

अधिक धिरलन राशिके प्रत्येक एकके ऊपर दे देने पर चोथा भाग हीन सपूर्ण जीवराशि
आ जाती है ।

$$\text{उदाहरण (बीजगणितसे)} — \frac{क^2}{क + \frac{क}{३}} = \frac{३}{४} क = क - \frac{क}{४}$$

(अनुगणितसे) — (१६ का तीसरा भाग ५ $\frac{१}{३}$ है, अतः तृतीय भाग ५ $\frac{१}{३}$ +१६=२१ $\frac{१}{३}$
का २ $\frac{१}{३}$ में भाग देने पर १२ आते हैं, जो जीवराशि १६ का चौथा भाग हीन है ।)

शंका—इसीप्रकार सख्यातया भाग अधिक सपूर्ण जीवराशिका सपूर्ण जीवराशिके
उपरिम वर्गमें भाग देने पर क्या आता है ?

समाधान - सख्यातया भागहीन सपूर्ण जीवराशि आती है ।

$$\text{उदाहरण (बीजगणितसे)} — \frac{क^2}{क + \frac{क}{न}} = \frac{न}{न+१} क = क - \frac{क}{न+१} \text{ (सख्यात = न)}$$

शंका—उत्कृष्ट सख्यातया भाग अधिक सपूर्ण जीवराशिका सपूर्ण जीवराशिके
उपरिम वर्गमें भाग देने पर क्या आता है ?

समाधान - जघन्य परीतासख्यातया भाग हीन सपूर्ण जीवराशि आती है ।

शंका—असख्यातया भाग अधिक सपूर्ण जीवराशिका सपूर्ण जीवराशिके उपरिम
वर्गमें भाग देने पर क्या आता है ?

समाधान—असख्यातया भाग हीन सपूर्ण जीवराशि आती है ।

शंका—उत्कृष्ट असख्यातासख्यातया भाग अधिक सपूर्ण जीवराशिका सपूर्ण जीव-
राशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर कौनसी राशि आती है ?

समाधान—जघन्य परीतानन्तया भाग हीन सपूर्ण जीवराशि आती है ।

अणतभागम्बहियसव्वजीवराशिणा तदुवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? अणतभाग हीणसव्वजीवराशी आगच्छदि । सव्वत्थ कारण पुव्व व वत्तव्व । एत्थ उव्वज्जतीओ गाहाओ—

अणहारविट्ठिणणहारारो ह् उव्वअणहारो ।

स्वहिओ हाणीण होन्नि ह् वड्डीए निवरादो ॥ २४ ॥

अणहारविसेसेण व णिण्णहारारु उव्वस्वप्प जे ।

एवहियउणा नि व अवरारो हाणिण्ण्णीण ॥ २५ ॥

उव्वविसेसच्छिण्ण उव्व स्वहियउणय चाणि ।

अण्णहारहाणिण्ण्णीणहारो से मुणेय वा ॥ २६ ॥

अण्ण— अन्ततत्रा भाग अधिक सपूर्ण जीवराशिमा सपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर कौन्सी राशि आती है ?

समाधान—अन्ततत्रा भाग हीन सपूर्ण जीवराशि आती है । सर्वत्र कारणमा कथन पहलेके समान करना चाहिये । अथ यदा पर उपयुक्त गायाए दी जाती है—

भागद्वारम उर्साके वृद्धिम्ब अशके रहने पर भाग देनेसे जो लघु भागद्वार (हर) आता है वह दानिमें रूपाधिक और वृद्धिमें इससे विपरीत अर्थात् एक कम होता है ॥ २४ ॥

उदाहरण (बीजगणितसे)—

$$(१) \frac{क^१}{क + क} = क - \frac{क}{न + १}, \quad (२) \frac{क^१}{क - क} = क + \frac{क}{न - १}$$

$$(अकगणितसे)— (१) \frac{१}{१ + १} = \frac{१}{२} = १ - \frac{१}{२} \quad (२) \frac{१}{१ - १} = \frac{१}{०} = १ + \frac{१}{०}$$

भागद्वार विशेषसे भागद्वारके छिन अर्थात् भाजित करने पर जो सख्या आती है उसे रूपाधिक अथवा रूपयून कर देने पर यह कमसे दानि और वृद्धिमें भागद्वार होता है ॥ २५ ॥

लघु विशेषसे लघुको छिन अर्थात् भाजित करने पर जो सख्या उत्पन्न हो उसे एक अधिक अथवा एक कम कर देने पर यह कमसे भागद्वारकी दानि और वृद्धिका भागद्वार होता है ॥ २६ ॥

उदाहरण गाथा २५-२६ के (बीजगणितसे)— $\frac{क}{क} = १, \quad \frac{क}{स} = म१$

लद्धतरसगुणिदे अत्रहोरे भजमाणरासिग्धि ।
 पत्रिल्लत्ते उप्पज्जद्दलद्धस्मट्टियस्स जो रासी ॥ २७ ॥
 हारान्तरह्वनहारह्वनेन हतस्यं पूर्वउच्चस्य ।
 हारह्वनभाज्यशेषे स चात्तर हानिवृद्धी स्त ॥ २८ ॥

$$\text{वृद्धिका} - \frac{क}{प + म} = \frac{क}{प \left(१ + \frac{म}{प} \right)} = \frac{\frac{क}{प}}{१ + \frac{म}{प}} = \frac{क}{१ + \frac{म}{प}}$$

$$\text{हानिका} - \frac{क}{प - म} = \frac{क}{म \left(\frac{प}{म} - १ \right)} = \frac{\frac{क}{म}}{\frac{प}{म} - १} = \frac{क}{प - म}$$

(अरुगणितसे)—

$$\text{वृद्धिका} - ३\frac{१}{२} = ४, ३\frac{१}{२} = ६, \frac{१}{२} \text{ टिन्न अत्रहार} + १ = \frac{३}{२} + १ = \frac{५}{२},$$

$$९ - \frac{३}{२} = \frac{१५}{२} \text{ हानिरूप अत्रहार। } ३६ - \frac{१५}{२} = १० \text{ वृद्धिरूप लब्ध}$$

$$\text{हानिका} - ३ - १ = २, ९ - \frac{३}{२} = १८, \frac{३}{२} = २ = ६ - ४ \text{ हानिरूप लब्ध}$$

(भागहारके स्थानमें लब्ध लेकर प्रक्रिया करनेसे पहलेके समान ही भागहार आ जाता है ।)

दो लब्ध राशियोंके अन्तरसे भागहारको गुणित करके आर इससे जो उत्पन्न हो उसे भज्यमान राशिमें मिला देनेपर अधिक लब्धकी जो भज्यमान राशि होगी वह उत्पन्न होती है ॥ २७ ॥

$$\text{उदाहरण (वाजगणितसे)} - \frac{अ}{ब} = स, \frac{क}{घ} = ड, घ (स - ड) + क = घस = अ$$

(अरुगणितसे)—भज्यमान राशि ४० और ३६: भाजक ४, ४०-४=१०; ३६-४=२, १०-२=१ लब्धान्तर ४×१=४+३६=४० अधिक लब्धकी भज्यमान राशि ।

हारान्तरसे अर्थात् हारके पर सटसे हारको अपहृत करके जो लब्ध आवे उससे पूर्व लब्धको गुणित करने पर उत्पन्न हुई राशिका (और नये लब्धका) भागहारसे भाजित भाज्य-शेष ही अन्तर है जो हानि और वृद्धिरूप होता है ॥ २८ ॥

१ प्रतिपु ' हवस्य ' इति पाठ ।

२ प्रतिपु ' शेषस्य च ' इति पाठ । त्रिन्तु अत्रमास्थयती अत्र स्वाट्ट पाठ उपलभ्यते ।

अणतभागम्बहियसच्चजीवरासिणा तदुवस्मिन्मग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? अणतभाग
हीणमध्वजीवरासो आगच्छदि । सच्चत्थ कारण पुच्च व चत्तच्च । एत्थ उतउज्जतीश्री
गाहाश्री—

अवहारवट्टिरुणवहारो इ उच्चभवहारो ।

एत्थिओ हाणीए होदि इ वट्टीए विवरीदो ॥ २४ ॥

अवहारविसेसेण य उिण्णवहारदु उच्चरुणा जे ।

एवाहियऊणा वि य अवहारो हाणिमट्टीण ॥ २५ ॥

उच्चसिसेसच्चिउण्ण उच्च एत्थिउणय चावि ।

अवहारहाणिमट्टीणवहारो सो मुणैय वो ॥ २६ ॥

प्रश्न— अनन्तया भाग अधिक सपूर्ण जीवराशिका सपूर्ण जीवराशिने उपरिम वर्गमें
भाग देने पर कौनसी राशि आती है ?

समाधान— अनन्तया भाग हीन सपूर्ण जीवराशि आती है । सर्वत्र धारणका कथन
पहलेके समान करना चाहिये । अथ यदा पर उपयुक्त भाग दिए जाती है—

भागहारमें उसीके वृद्धिरूप अंशके रहने पर भाग देनेसे जो लब्ध भागहार (हर)
आता है वह हानिम रूपाधिक और वृद्धिमें हमसे विपरीत अर्थात् एक कम होता है ॥ २४ ॥

उदाहरण (नीजगणितसे)—

$$(१) \frac{क'}{क + \frac{क}{न}} = क - \frac{क}{न + १}, \quad (२) \frac{क'}{क - \frac{क}{न}} = क + \frac{क}{न - १}$$

$$(अकगणितसे)— (१) \frac{१}{१ + \frac{१}{३}} = \frac{३}{४} = १ - \frac{१}{४} \quad (२) \frac{१}{१ - \frac{१}{३}} = \frac{३}{२} = १ + \frac{१}{२}$$

भागहार विशेषसे भागहारके छिन्न अर्थात् भाजित करने पर जो सरया आती
है उसे रूपाधिक अथवा रूपयून कर देने पर वह हमसे हानि और वृद्धिमें भागहार
होता है ॥ २५ ॥

एतच्च विशेषसे लब्धको छिन्न अर्थात् भाजित करने पर जो सरया उत्पन्न हो उसे एक
अधिक अथवा एक कम कर देने पर वह हमसे भागहारकी हानि और वृद्धिका भागहार
होता है ॥ २६ ॥

उदाहरण याथा २५ २६ के (नीजगणितसे)— $\frac{क}{क} = ५, \quad \frac{क}{क} = ५।$

पक्खेवरासिगुणिदो पक्खेणेणाहिण लद्धेण ।

भजिओ हु भागहारो अण्णेज्जो होइ अनहारे ॥ ३० ॥

जे अहिया अनहारे रूवा तेहि गुणित्तु पुब्बफल ।

अहियनहारेण हिण लद्ध पुब्बफल ऊण ॥ ३१ ॥

जे ऊणा अनहारे रूवा तेहि गुणित्तु पुब्बफल ।

ऊणनहारेण हिण लद्ध पुब्बफल अहिय' ॥ ३२ ॥

भागहारको प्रक्षेपराशिसे गुणा कर देने पर ओर प्रक्षेपसे अधिक लघ्वराशिका भाग देने पर जो लब्ध आता है वह भागहारमें अपनेय राशि होती है ॥ ३० ॥

उदाहरण (बीजगणितसे)— $\frac{अ}{व} = क$, इष्ट ख, प्रक्षेप राशि (ख-क),

$$\text{अपनेय भागहार व} - \frac{व(क-ख)}{ख} = \frac{वक}{ख}$$

(अकगणितसे)— $\frac{३६}{४} = ९$, इष्ट १२, प्रक्षेप ३, अपनेय भागहार ४— $\frac{३ \times ४}{१२} = १$ — $९-१=८$

भागहारम जितनी अधिक सख्या होती है उससे पूर्व फलको गुणित करके तथा अधिक अघहारसे हत अर्थात् भाजित करने पर जो आवे उसे पूर्वफलमेंसे घटा देने पर नया लब्ध आता है ॥ ३१ ॥

उदाहरण (बीजगणितसे)— $\frac{अ}{व} = स$, नया भागहार— $घ + ड$

$$\text{नया लब्ध} = \frac{अ}{घ + ड} = \frac{वस}{घ + ड} = स - \frac{सड}{घ + ड}$$

अर्थात् $\frac{सड}{घ + ड}$ इसे पुराने भजनफल स में से घटा देने पर नया भजनफल आ जाता है ।

(अकगणितसे)— $\frac{३६}{४} = ९$, १२ नया भागहार; भागहारमें अधिक ३।

$$\frac{४ \times ३}{१२} = १, ४ - १ = ३ \text{ नया भजनफल}$$

भागहारमें जितनी न्यू सख्या होती है उससे पूर्व फलको गुणित करके तथा न्यून भागहारसे हत करने पर जो आवे उसे पूर्वफलमें जोड़ देने पर नया लब्ध आता है ॥ ३२ ॥

अवणयणरासिगुणितो अवणयणेणूणएण लद्धेण ।
 भन्दिो ह् भागहारो पक्केपो होदि अवहारो ॥ २९ ॥

उदाहरण (बीजगणितसे) —

भज्यमान राशि— न, भाजक—स = अ × य;
 (१) लब्ध—क, शेष—र (वृद्धिरूप)
 (२) लब्ध—(क + १), शेष—र' (हानिरूप)
 $n = (अ × य) क + र - (१)$
 और $n = (अ × य) (क + १) - र' - (२)$

(१) से $\frac{n}{अ} = य × य + \frac{र}{अ}$ — वृद्धिरूप

(२) से $\frac{n}{अ} = य (क + १) - \frac{र'}{अ}$ — हानिरूप

(अकगणितसे) —

भज्यमान राशि—२६३; द्वार—७२; द्वारातर—९;
 (१) $\frac{२६३}{७२} = ३\frac{४७}{७२}$ पूर्व लब्ध—३
 भाज्य शेष—४७
 $\frac{२६३}{९} = ८ × ३ + \frac{४७}{९}$ (द्वारातरद्वतद्वार—८)
 $= २९ + \frac{२}{९}$ — (वृद्धिरूप)

(२) $\frac{२६३}{७२} = ४ - \frac{२०}{७२}$

$\frac{२६३}{९} = ८ × ४ - \frac{२१}{९} = ३० - \frac{७}{९}$ (हानिरूप)

भागहारको अपनयन राशिसे गुणा कर देने पर और अपनयनराशिको लब्धराशिमेंसे घटाकर जो शेष रहे उसका भाग दे देने पर जो लब्ध आता है वह भागहारमें प्रक्षेपर्राशि होती है ॥ २९ ॥

उदाहरण (बीजगणितसे) — $\frac{अ}{य} = क$, इष्ट ख, अपनयन राशि क—ख

$य + \frac{य(य-ख)}{ख} = \frac{यक}{ख}$ प्रक्षेप अवहार

(अकगणितसे) — भज्यमान ३६; भाजक ४; इष्ट ६; $३६-४=२$; $९-६=३$ अपनयन

राशि) $\frac{४×३}{६} = २$ प्रक्षेप भागहार

च्छदि चि ण सदेहो (१) । कारण गदं । तस्स का णिरुत्ती ? सिद्धतेरसगुणद्व्याणपमाणेण सव्वजीवरासिं भागे हिदे ज भागलद्ध त निरलेउण एकेकस्म रूणस्स सव्वजीवरासिं समखड करिय दिण्णे रुं पडि सिद्धतेरसगुणद्व्याणपमाण पाणदि । तत्थ चहुखडा मिच्छाद्विरासिपमाणं होदि । एय खड सिद्धतेरसगुणद्व्याणपमाण हवदि । णिरुत्ती गदा ।

यहा कारण यतलाया जा रहा है, अर्थात् सर्वजीवराशि च सिद्धतेरस गुणस्थानवर्ती राशिकी अपेक्षा ध्रुवराशिके द्वारा मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण निश्चित करना । तदनुसार पाठ कुछ निम्न प्रकार होना चाहिये वा—

सिद्धतेरसगुणद्व्याणेण मिच्छाद्विभिज्जिदसिद्धतेरसगुणद्व्याणगणेण च अचभहियसव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिउपरिमगगे भागे हिदे किमागच्छदि ? सिद्धतेरसगुणद्व्याणहीणसव्वजीवरासी आगच्छदि चि ण सदेहो ।

अर्थात् सिद्धतेरस गुणस्थानवर्ती राशिसे अधिक और मिथ्यादृष्टि राशिसे भाजित सिद्धतेरसगुणस्थानवर्गसे अधिक् सर्व जीवराशिका सर्व जीवराशिके उपरिमवर्गमें भाग देने पर क्या आता है ? सिद्धतेरसगुणस्थान राशिसे हीन सर्वजीवराशि आती है, इसमें सदेह नहीं ।

$$\text{उदाहरण (बीजगणितसे)} — \frac{क^2}{अ + \frac{अ}{ब} + क} = २ = क - ब \text{ (मिथ्यादृष्टि)}$$

$$\text{(अकगणितसे)} — \frac{१६^2}{३ + \frac{१}{२} + १६} = १३ = १६ - ३ \text{ (मिथ्यादृष्टि)}$$

शंका— इसकी अर्थान् मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणके निकालनेकी निराक्ति क्या है ?

समाधान— सिद्धराशि और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती राशिका सपूर्ण जीवराशिमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका विरलन करके ओर उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सपूर्ण जीवराशिको समान खण्ड करके देयरूपसे स्थापित कर देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सिद्ध और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण प्राप्त होता है । उसमें अर्थात् विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त खण्डोंमें एक भाग कम बहुभागरूप मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण है ओर एक भाग सिद्ध और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण है । इसप्रकार निश्चितता वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण सर्वजीवराशि १६, सिद्धतेरस ३, $\frac{१}{२} = ०.५$

३ ३ ३ ३ ३ १ इसप्रकार एक खण्ड ३ सिद्ध और सासादनादि तेरह गुणस्थान
१ १ १ १ १ १ १ वर्ती जीवराशिका प्रमाण और शेष बहुभाग १३ मिथ्यादृष्टि
३ राशिका प्रमाण हुआ ।

एदाहि माहाहि पडियोहियम्म मिस्सस्स पच्छिमवियप्पो वत्तप्पो । त जहा, मिद्ध तेरसगुणट्टाणोअट्ठिदमिन्नाइदिभागम्महियसञ्जीवरासिणा सच्च नीवराभिमउधरिमग्गे माणे हिदे किमागच्छदि ? मिद्धतेरसगुणट्टाणमजिदमञ्जीवरासिपामहीणसच्चजीवरासी आग

उदाहरण (वीजगणितसे)— $\frac{अ}{ब} = स$; य - उ नया भागद्वार;

$$नया लघ = \frac{अ}{ब-उ} = \frac{यस}{ब-उ} = स + \frac{सउ}{ब-उ}$$

$\frac{सउ}{ब-उ}$ इसे पुराने भजनफल स में जोड़नेसे नया भना फल आ जाता है ।

(अङ्कगणितसे)— $\frac{३६}{१२} = ३$, ९ नया भागद्वार;

$$\frac{३ \times ३}{९} = १, ३ + १ = ४$$
 नया भजनफल

इन गणनाओंके द्वारा जो शिष्य प्रतिबोधित किया जा चुका है उसको पश्चिम विक्षेप बतलाया जाता है । यह इसप्रकार है—

शुक्रा—सिद्धराशि और सासादनसम्यग्दष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका मिथ्यादष्टि जीवराशिमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे अधिक सपूर्ण जीवराशिका सपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर कौनसी राशि आती है ?

समाधान—सिद्धराशि और सासादनसम्यग्दष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती राशिका सपूर्ण जीवराशिमें भाग देने पर जो प्रमाण लघ आवे उतनी कम सपूर्ण जीवराशि आती है, इसमें कुछ भी संदेह नहीं है । इसप्रकार कारणना वर्णन समाप्त हुआ ।

निशेपार्थ—यहां पर जो अन्तिम विक्षेप बतलाया गया है उसका गणित पूर्ण निश्चित सबेत्तोंके अनुसार निम्न प्रकार बँटता है—

उदाहरण (वीजगणितसे)—

$$\frac{क'}{ब} = क - \frac{क}{अ}$$

(अङ्कगणितसे)—

$$\frac{१६}{१६ + १३} = १६ - \frac{१६}{३}$$

निम्न एक तो गणितसे ये राशिया समान नहीं सिद्ध होतीं, और दूसरे उनका जो फल निकलता है वह मिथ्यादष्टि राशिका प्रमाण न होनेसे प्रवृत्तमें उभका कोई उपयोग दिखाई नहीं देता । बहुत कुछ सोच विचार करने पर भौद्धम इस विषयमें ठीक निर्णय पर नहीं पहुँच सके । तथापि विषयके ध्यापर प्रसंगको देखते हुए यहाँ अन्तिम विक्षेपमें यहाँ बात आना चाहिये जिससे यह प्रकरण प्रारम्भ हुआ है, और जिसका कि

चञ्चि ण सदेहो (?) । कारण गदं । तस्म का णिरुत्ती ? सिद्धतेरसगुणद्वानपमाणेण सव्वजीवरासिं भागे हिंदे ज भागलद्ध त निरलेऊण एक्केक्कस्म रूप्पस्म सव्वजीवरासिं समसुड करिय दिण्णे रुं पडि सिद्धतेरसगुणद्वानपमाण पापदि । तत्थ बहुसुडा मिथ्याद्विरासिपमाणं होदि । एयं सुड सिद्धतेरसगुणद्वानपमाण हवदि । णिरुत्ती गदा ।

यह्वा कारण यतलाया जा रहा है, अर्थात् सर्वजीवराशि च सिद्धतेरस गुणस्थानवर्ती राशिकी अपेक्षा ध्रुवराशिके द्वारा मिथ्याद्विपमाणा प्रमाण निश्चित करना । तदनुसार पाठ कुछ निम्न प्रकार होना चाहिये या—

सिद्धतेरसगुणद्वानेण मिथ्याद्विभजिदिसिद्धतेरसगुणद्वानणुगेण च अचमहियसव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिउत्तरिमवगे भागे हिंदे किमागञ्चदि ? सिद्धतेरसगुणद्वानणीणसव्वजीवरासी आगञ्चदि ति ण सदेहो ।

अर्थात् सिद्धतेरस गुणस्थानवर्ती राशिसे अधिक और मिथ्याद्विपमाणा राशिसे भाजित सिद्धतेरसगुणस्थानवर्गसे अधिक सर्व जीवराशिका सर्व जीवराशिके उपरिमवर्गमें भाग देने पर क्या आता है ? सिद्धतेरसगुणस्थान राशिसे हीन सर्वजीवराशि आती है, इसमें सदेह नहीं ।

$$\text{उदाहरण (त्रीजगणितसे)} — \frac{क^3}{अ + \frac{अ}{ब} + क} = २ = क - ब \text{ (मिथ्याद्विपमाणा)}$$

$$\text{(अकगणितसे)} — \frac{१६^3}{३ + \frac{१६}{३} + १६} = १३ = १६ - ३ \text{ (मिथ्याद्विपमाणा)}$$

शंका— इसमें अर्थात् मिथ्याद्विपमाणा जीवराशिके प्रमाणके निकालनेकी निराक्ति क्या है ?

समाधान— सिद्धराशि और सासादनसम्यग्द्विपमाणा आदि तेरह गुणस्थानवर्ती राशिका सपूर्ण जीवराशिमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका विरलन करके ओर उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सपूर्ण जीवराशिकी समान खण्ड करके देयरूपसे स्थापित कर देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सिद्ध और सासादनसम्यग्द्विपमाणा आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिकी प्रमाण प्राप्त होता है । उसमें अर्थात् विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त खण्डोंमें एक भाग कम बहुभागरूप मिथ्याद्विपमाणा जीवराशिका प्रमाण है ओर एक भाग सिद्ध और सासादनसम्यग्द्विपमाणा आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिकी प्रमाण है । इसप्रकार निश्चितता वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण सर्वजीवराशि १६, सिद्धतेरस ३, $\frac{१६}{३} = ५\frac{१}{३}$

३ ३ ३ ३ ३ १ इसप्रकार एक खण्ड ३ सिद्ध और सासादनादि तेरह गुणस्थान
१ १ १ १ १ १ वर्ती जीवराशिका प्रमाण ओर शेष बहुभाग १३ मिथ्याद्विपमाणा
३ राशिका प्रमाण हुआ ।

जो सो वियप्पो मो दुविहो, हेट्टिमवियप्पो उपरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेट्टि मवियप्प वचइस्सामो । त जहा, वेरूपे हेट्टिमवियप्पो णत्थि । कारणं सच्चनीपरामीदो धुरामी अ-महिओ जादो ति । अट्टरूपे हेट्टिमवियप्प वचइस्सामो । धुरासिणा सच्च जीरासिं गुणेऊण सच्चजीवरासिघणे भागे हिदे मिच्छाड्डिरामी आगच्छदि । केण कारणेण ? जदि सच्चजीवरासिणा तस्म घणो अत्रहिरिज्जदि तो सच्चजीवरासिउपरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो नि धुरासिणा सच्चजीवरासिउपरिमवग्गो भागे हिदे मिच्छाड्डिरासी आगच्छदि ? एव मिच्छाड्डिरासिमागमण मणेणापहारिय गुणेऊण भागग्गहणं कद । एत्थ दुगुणादिकरण वचइस्सामो । त जहा, सच्चजीवरासिणा सच्चजीवरासिघणे ओत्रड्डिदे सच्चजीवरासिउपरिमवग्गो आगच्छदि । दुगुणिदसच्चजीवरासिणा सच्चजीवरासिघण ओत्रड्डिदे सच्चजीवरासिउपरिमवग्गस्स दुभागो आगच्छदि । तिगुणिदसच्चजीवरासिणा सच्चजीवरासिघणे ओत्रड्डिदे सच्चजीवरासिउपरिमवग्गस्स तिभागो आगच्छदि । अणेण

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तनविकल्प और उपरिमविकल्प । इन दोनोंमेंसे अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं । यह इसप्रकार है—

द्विरूपवर्गधारामें (प्रत्यक्षमें) अधस्तनविकल्प समझ नहीं है, क्योंकि, संपूर्ण जीवराशिसे ध्रुवराशिका प्रमाण अधिक है । अब अष्टरूप अर्थात् घनधारामें अधस्तनविकल्प बतलाते हैं । ध्रुवराशिसे संपूर्ण जीवराशिको गुणित करके जो लब्ध आये उसका संपूर्ण जीवराशिके घनमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है क्योंकि, यदि संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिका घन अपहृत किया जाता है तो संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गका प्रमाण आता है । और फिर ध्रुवराशिके प्रमाणका संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणके उपरिमवर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है । इसप्रकार मिथ्यादृष्टिरासि आता है इस यातनेो मनमें निश्चित करके पहले गुणा करके अनंतर भागका प्रदण किया है ।

उदाहरण—जीवराशि १६, ध्रुवराशि १९६३, $१६ \times १९६३ = \frac{५०६१६}{३}$;

जीवराशि १६ का घन $४०९६ - \frac{५०६१६}{३} = १३$ मिथ्यादृष्टि

अब यहाँ पर त्रिगुणादिकरणविधिसे बतलाते हैं । यह इसप्रकार है— संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिके घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गका प्रमाण आता है ($४०९६ - १६ = २१२०$) । त्रिगुणित संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिके घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिके उपरिमवर्गका दूसरा भाग आता है ($४०९६ - ३२ = ४०६४$) । त्रिगुणित संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिने घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिके उपरिमवर्गके प्रमाणका तीसरा भाग आता है ($४०९६ - ४८ = ४०४८$) । इसप्रकार इसी विधिसे जबतक ध्रुवराशिका प्रमाण

विहाणेण गुणमारो ऋषेद्व्यो जाय पुत्रासिपमाण पत्तो त्ति । पुणो धुवरासिगुणिद-
मव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिघणे ओत्रद्विदे सव्वजीवरासिउपरिमव्वग्गस्म धुवरासिभागो
आगच्छदि सो चेय मिच्छाद्दृष्टिरासी । एदेण कारणेण धुवरासिणा सव्वजीवरासिं गुणेऊण
सव्वजीवरासिघणे ओत्रद्विदे मिच्छाद्दृष्टिरासी आगच्छदि त्ति ।

घणाघणे पचइस्सामो । पुत्रासिणा सव्वजीवरासिं गुणेऊण तेण घणपढमव्वग्गमूल
गुणेऊण घणाघणपढमव्वग्गमूले ओत्रद्विदे मिच्छाद्दृष्टिरामी आगच्छदि । केण कारणेण ?
घणपढमव्वग्गमूलेण घणाघणपढमव्वग्गमूले ओत्रद्विदे मव्वजीवरासिस्म घणो आगच्छदि ।
पुणो वि मव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिघणे ओत्रद्विदे सव्वजीवरासिउपरिमव्वग्गो
आगच्छदि । पुणो वि धुवरासिणा सव्वजीवरासिउपरिमव्वग्गो भागे हिदे मिच्छाद्दृष्टिरासी
आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति षट्ठु गुणेऊण भागव्वहण कद । एत्थ दुगुणादिकरणे
कदे हेट्ठिमपियप्पो सम्पपदि ।

१०६३ प्राप्त नहीं हो जाता है तबतक गुणनारको वसते जाना चाहिये । पुन धुवराशिसे
सपूर्ण जीवराशिको गुणित करने पर जो लब्ध आवे उससे सपूर्ण जीवराशिके घनके अपवर्तित
करने पर, सपूर्ण जीवराशिके उपरिमवर्गमें धुवराशिका भाग देने पर जो लब्ध आवे,
तत्प्रमाण भाग आता है, और वही मिथ्यादाष्टि जीवराशिका प्रमाण है । इसी कारणसे यद्
कहा कि धुवराशिसे सपूर्ण जीवराशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे सपूर्ण जीव
राशिके घनके अपवर्तित करने पर मिथ्यादाष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{1}{2} \times \frac{1}{13} = \frac{1000}{13}, \frac{1000}{13} - \frac{1000}{13} = \frac{1000}{13} \times \frac{1}{13} = 13 \text{ मि}$$

अथ घनाघनमें अधस्तन विकल्पको घत करने हैं । धुवराशिसे सपूर्ण जीवराशिको
गुणित करके जो गुणनफल आवे उससे जीवराशिके घनके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो
गुणनफल आवे उसके द्वारा घनाघनके प्रथम वर्गमूलको उद्धतित करने पर मिथ्यादाष्टि जीव
राशिका प्रमाण आता है, क्योंकि, घनके प्रथम वर्गमूलसे घनाघनके प्रथम वर्गमूलको उद्धतित
करने पर सपूर्ण जीवराशिका घन आता है । अनन्तर सपूर्ण जीवराशिसे सपूर्ण जीवराशिके
घनके अपवर्तित करने पर सपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग आता है । अनन्तर धुवराशिका
सपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादाष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।
घनाघनधारामें इसप्रकार जीवराशिका प्रमाण आता है, ऐसा समझ कर पहले गुणा करके,
अनन्तर, भागका प्रदण किया है । यदा पर द्विगुणाधिकरणके कर लेने पर अधस्तन विकल्प
समाप्त हो जाता है ।

उदाहरण—१६ के घनका प्रथम वर्गमूल ६४, घनाघनका प्रथम वर्गमूल २६२४४;

$$\frac{1000}{13} \times 16 < 64 = \frac{26244}{13}, \frac{26244}{13} - \frac{26244}{13} = 13 \text{ मि.}$$

उपरिमत्रियन्त्रो त्रिप्रहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणमारो चेदि । तत्र गहिद वत्तइस्सामो । धुवरासिणा सव्वजीवरासिउपरिमत्रग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? मिच्छा इट्ठिगामी आगच्छदि । तस्म भागहारस्म अद्धच्छेदणयमेत्तवार रासिस्म अद्धच्छेदण ऋद मिच्छाइट्ठिरामी चेत्त अरचिद्धे । केग कारणेण ? धुवरासिस्म अद्धच्छेदणयमलगा जदि सव्वनीवरासिअद्धच्छेदणयमलगाहि सरिसा त्ति घेत्तति तो धुवरासि अद्धच्छेदण उदिदुत्तु च्चरासिदरासिपमाण सव्वजीवरासि मिच्छाइट्ठिरासिणा सद्धिदपमाण होदि । एत्त होदि त्ति ऋदण सव्वजीवरासिअद्धच्छेदणय सलागभूद इत्तेज्ज सव्वजीवरासिउपरिमत्रग्गे अद्धच्छेदण उिप्पे सव्वनीवरासि आगच्छदि । पुणो मिच्छाइट्ठिगामिणेत्तद्विसव्वजीवरासिणा उपरिम

उपरिमत्रियन्त्र तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार । उनमेंसे पहले गृहीत उपरिमत्रियन्त्रो दिखलाते हैं—

शुक्रा — सुवरासिका सपूर्ण जीवरासिके उपरिमत्रियन्त्रे भाग देणे पर कौनसी राशि आती है ?

समाधान—मिथ्यादृष्टि जीवरासि आती है ($24 - 24 = 0$) ।

धुवरासिप्रमाण भागहारने जितने अर्धच्छेद हैं उतनीवार जीवरासिके उपरिमत्रियन्त्रे रासिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि जीवरासि ही आ जाती है ।

उदाहरण—सुवरासि १९ है । इसमेंसे १६ के अर्धच्छेद ४ होने हैं । शेष ३ के चौथे अर्धच्छेद पर $\frac{3}{4}$ अधिक रहता है, इसलिये १९ के १ के अधिक ४ अर्धच्छेद हुए । अतएव जीवरासि १६ के वर्ग २५ के इतनीवार अर्थात् $4 + \frac{3}{4}$ वार अर्धच्छेद करने पर १३ आ जाते हैं ।

शुक्रा—भागहाररासिके अर्धच्छेदप्रमाण जीवरासिके उपरिमत्रियन्त्रे अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि राशि किस कारणसे आती है ?

धुवरासिकी अर्धच्छेदशलाकाए सपूर्ण जीवरासिकी अर्धच्छेदशलाकाओंके बराबर होती है, यदि ऐसा ग्रहण कर लिया जाता है तो धुवरासिकी अर्धच्छेदशलाकाओंके छिन्न परसे शेष रहती हुई रासिका प्रमाण, सपूर्ण जीवरासिकी मिथ्यादृष्टि रासिके चण्डित करने पर जो छिन्न आता है, उतना होता है ($24 - 24 = 0$) । इनप्रकार होता है, इसलिये सपूर्ण जीवरासिके अर्धच्छेदोंके शलाकारूपसे स्थापित करके सपूर्ण जीवरासिके उपरिमत्रियन्त्रे अर्धच्छेदोंके बराबर छिन्न करने पर सपूर्ण जीवरासिका प्रमाण आ जाता है । अनन्तर मिथ्यादृष्टि जीवरासिके द्वारा उद्घातित सपूर्ण जीवरासिके प्रमाणसे ऊपर उत्पन्न की हुई सपूर्ण जीवरासिके भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवरासि आती है ।

उदाहरण—जीवरासि १६ के अर्धच्छेद ४ के बराबर जीवरासिके वर्ग २५ के अर्धच्छेद करके पर १६ अर्ध आते हैं । अनन्तर मिथ्यादृष्टिके प्रमाणसे भाजित जीवरासिके प्रमाण

सर्वजीवरासिभिर्हि भागे हिदे मिच्छाद्द्विरासी आगच्छदि । अधना धुरासिअद्दच्छेदणया
 दे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स अद्दच्छेदणयसरिसा हवंति तो अद्दद्वेण छिण्णाअमिद्ध-
 सेवमाणं मिच्छाद्द्विरामिणा एगरूपां खड्दिदेगसडवमाणं होदि । पुणो धुरासिअद्द-
 छेदणए सलागा काळण सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे अद्दद्वेण छिण्णे एगरूपमागच्छदि ।
 तो तमेगरूप मिच्छाद्द्विरासिभजिदेगरूपण भागे हिदे मिच्छाद्द्विरासी आगच्छदि च्ति ।
 धना धुरासिणा सव्वजीवरासिस्सुवरिमवग्ग गुणेउण तदुवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छा-
 द्विरासी आगच्छदि च्ति । केण कारणेण ? सव्वजीवरासिउवरिमवग्गेण तदुवरिमवग्गे भागे
 दे सव्वजीवरासिस्स उवरिमवग्गे आगच्छदि । पुणो धुरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे
 भागे हिदे मिच्छाद्द्विरासी आगच्छदि च्ति । तस्स भागहारस्स अद्दच्छेदणयमेत्ते रासिस्स

का जीवराशिके प्रमाण १६ में भाग देने पर १३ मिथ्यादृष्टिका प्रमाण लब्ध आता है ।

अथवा, धुराशिके अर्धच्छेद यदि सपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके अर्धच्छेदोंके
 मान होते हैं तो उत्तरोत्तर अर्धाधरूपसे छिन करनेके अनन्तर अवशिष्ट रही राशिका प्रमाण,
 म्यादृष्टि जीवराशिसे एक रूपको खटित करके जो एक भाग आता है, उतना होता है ।
 अनन्तर धुराशिके अर्धच्छेदोंको शलाकारूपसे स्थापित करके सपूर्ण जीवराशिके उपरिम
 वर्गको अर्धाधरूपसे छिन करने पर एक आता है । अनन्तर उस एकको मिथ्यादृष्टि जीव
 शिके प्रमाणस भक्त करने द्वारा भाजित करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आ जाती है ।

उदाहरण— १६ के उपरिम वर्ग २५६ के अर्धच्छेद ८ के बराबर धुराशि १९१ के
 अर्धच्छेद करने पर आठवा अर्धच्छेद $\frac{1}{2}$ होता है जो १ में मिथ्यादृष्टिके प्रमाण १३ के भाग
 देने पर जो लब्ध आता है उतनेके बराबर है । पुन इन ८ अर्धच्छेदोंको शलाका करके
 १६ के इतनी बार अर्धच्छेद करने पर १ आता है । पुन इस १ में $\frac{1}{2}$ का भाग देने पर १३
 लब्ध आते हैं, यही मिथ्यादृष्टिराशि है ।

अथवा, धुराशिके द्वारा सपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध
 आये उसका उसके उपरिम वर्गमें (जीवराशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें) भाग देने पर
 म्यादृष्टि जीवराशि आ जाती है, क्योंकि, सपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गका उसके
 उपरिम वर्गमें भाग देने पर सपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग आता है । पुन धुराशिका
 सपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण— सर्व जीवराशिका उपरिम वर्ग २५६, सर्व जीवराशिके उपरिम वर्ग २५६

का उपरिम वर्ग ६५५३६,

$$\frac{256}{13} \times \frac{256}{1} = \frac{65536}{13}, \quad \frac{65536}{1} - \frac{65536}{13} = 13 \text{ मि}$$

उक्त भागहारके अर्धच्छेदप्रमाण उक्त राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि

अर्धच्छेदणए रुडे मिच्छाडद्विरासी आगच्छेदि । एदस्म भागहारस्म अर्धच्छेदणयसलागा केविया ? सच्चजीरामीदो उररि दोणिण वग्गहाणाणि चाडिदाणि त्ति दो रूपे पिरलिय विग करिय ञ्णोण्णमत्थरासिरूणेण गुणितमच्चजीरामिअर्धच्छेदणयमेत्ता होऊण अतिमभागहारेण अरिया भवति । एव भागहारस्म विगच्छेदणए सलागा कारूण तीहि तीहि सरूवेहि रामिम्मि भागे हिदे वि मिच्छाडद्विरासी आगच्छेदि । एए चउक्कादिच्छेदणयसलागाहि वि रामिम्मि छिज्जमाणे मिच्छाडद्विरासी आगच्छेदि त्ति परूदेव्व । एए सखेज्जासखेज्जाणतेसु उरगट्टणेसु उररि वत्तच्च । एएरि भागहारच्छेदणाओ सकलज्जमाणे एए सकलेदव्वाओ । त जहा, मच्चजीरामीदो चडिदद्वानमेत्तउरगमलागाओ पिरलिय विग करियण्णोण्णमत्थरासिरूणेण सच्चजीरामिच्छेदणए गुणिदे भागहार

जावराशि आती है ।

शका—इस भागहारकी अर्धच्छेदशलाकाए कितनी है ?

समाधान—सपूर्ण जीवराशिके ऊपर दो वर्गस्थान जाकर वह भागहार उत्पन्न हुआ है, इसलिये दोन विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो सख्या उत्पन्न हो उसमेंसे एक कम करके शेष राशिके द्वारा सपूर्ण जीवराशिसे अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो प्रमाण आवे उसे अन्तिम भागहारसे अधिक करने पर अर्धच्छेदशलाकाए होती है ।

उदाहरण— $2 \times 2 = 4 - 1 = 3 \times 4 = 12$ पूण, ओर $\frac{3}{2}$ अधिक उक्त भागाहारके पुल

अर्धच्छेद होते हैं ।

इसीप्रकार भागहारके त्रिकच्छेदोंको शलाका करके तीन तीनका राशिमें भाग देने पर भी मिथ्यादाष्टि जीवराशि आ जाती है । इसीप्रकार चतुर्थ आदि छेद शलाकाभाके द्वारा भी राशिके छिन्न करने पर मिथ्यादाष्टि जीवराशि आती है, ऐसा कथन करना चाहिये ।

उदाहरण— $\frac{2 \times 6}{2 \times 2}$ के $\frac{2 \times 2}{2 \times 2}$, $\frac{2 \times 2}{2 \times 2}$ इसप्रकार २ त्रिकछेद हैं अत इतनीवार २५६ में ३ का भाग देने पर १३ लघ आ जाते हैं ।

इसीप्रकार सरघात असख्यात ओर अनन्त वर्गस्थानोंके ऊपर भी कथन करना चाहिये । इतनी विशेषता है कि भागहारके अर्धच्छेदोंका सफलन करते समय इसप्रकार सफलन करना चाहिये । आगे उसीका स्पष्टीकरण करते हैं—

सपूर्ण जीवराशिसे जितने वर्गस्थान ऊपर गये हों उतनी वर्गशलाकाओंका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमेंसे एक कम करके शेष राशिसे सपूर्ण जीवराशिसे अर्धच्छेदोंको गुणित करने

छेदणया भवति । सर्वत्र दुगुणादिकरणं पि वचनं । तदो त्रैरूपधारापरूवणा समत्ता भवति ।

अद्विरूपधाराए गहिदं उच्यस्तामो । उवरासिणा सर्वजीवरासिउपरिमवग्गस्सु-
परिमवग्ग गुणेऊण तेण घणउपरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाद्विष्टिरासी आग-
च्छदि । केण कारणेण ? सर्वजीवरासिउपरिमवग्गस्सुपरिमवग्गेण घणउपरिम-
वग्गे भागे हिदे सर्वजीवरासिउपरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि धुवरासिणा
सर्वजीवरासिउपरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाद्विष्टिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि
त्ति कट्टु गुणेऊण भागगहण कदे । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स
अद्वच्छेदणए कदे पि मिच्छाद्विष्टिरासी चेउ अचिह्वेदे । तस्स भागहारस्स अद्व-
च्छेदणया केत्तिया ? एगरूपं विरलिय विमं करिय अण्णोणव्भत्थरासिणा तिगुणं-

पर भागहार राशिके अर्धच्छेद होते हैं । सर्वत्र द्विगुणादिकरणका भी कथन करना चाहिये ।
तब जाकर द्विरूप वर्गधाराका प्ररूपण समाप्त होता है ।

अत्र अद्विरूपधारा अर्थात् घनधारामें गृहीत उपरिम विकल्पको घतलाते हैं—
धुवराशिके द्वारा सपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो
लघु आवे उसका जीवराशिके घनके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्याद्विष्टि जीवराशि
आ जाती है, क्योंकि, सपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गका जीवराशिके घनके
उपरिम वर्गमें भाग देने पर सपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग आता है । अनन्तर धुवराशिका
सपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्याद्विष्टि जीवराशि आती है । घनधारामें इस
प्रकार मिथ्याद्विष्टि जीवराशि आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण
क्रिया है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१६}{१} \times \frac{१६}{१} \times \frac{२५६}{१३} = \frac{१६७७७२१६}{१३},$$

$$\frac{१६७७७७२१६}{१} - \frac{१६७७७२१६}{१३} = १३ \text{ मिथ्याद्विष्टि}$$

उक्त भागहारके अर्धच्छेदप्रमाण उक्त राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्याद्विष्टि
जीवराशि ही आ जाती है ।

शुका — उक्त भागहारके अर्धच्छेद कितने हैं ?

समाधान — एकका चिरलन करके और उसे दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो
राशि आवे उसे त्रिगुणित करके और उसमेंसे एक कम करके जो राशि रहे उससे सपूर्ण

रूपेण गुणितसंघनीपरासिच्छेदणयमेत्ता ह्यति । उपरि सत्रय दोरुपादीणमणोण
 च्छत्रासिणा तिगुणरूपेण गुणितसंघनीपरासिच्छेदणयमेत्ता ह्यति । एतं संज्ञेना
 संज्ञेज्जाणतेसु णेयव्य । सत्रय दुगुणादिकरण कायव्य । एत क्त्रे अट्टपरुणा
 संज्ञेत्ता भवति ।

घणाघणे गहिद वच्छस्मामो । धुरासिणा सत्रजीपरासिउपरिमयगस्सुपरिमयग
 गुणेऊण तेण घणउपरिमयगस्सुपरिमयग गुणेऊण तेण घणाघणउपरिमयगे भागे हिदे
 मिच्छाहद्विरासी आगच्छदि । केण ऋरणेण ? घणउपरिमयगस्सुपरिमयगेण घणाघण-
 उपरिमयगे भागे हिदे घणउपरिमयगो आगच्छदि । पुणो नि सत्रजीपरासिउपरिम
 यगस्सुपरिमयगेण घणउपरिमयगे भागे हिदे सत्रजीपरासिउपरिमयगो आगच्छदि ।
 पुणो नि धुरासिणा सत्रजीपरासिउपरिमयगे भागे हिदे मिच्छाहद्विरासी आगच्छदि ।
 एतमागच्छदि ति ऋ गुणेऊण भागगहण कद । तस्म भागहारस्म अट्टच्छेदणयमेत्ते

जीवराशिके अर्धच्छेदोंको गुणित करने पर जो सत्या आये उतने उक्त भागहारके अर्धच्छेद
 होने हैं ।

उदाहरण— $2 = 2 \times 3 = 6 - 1 = 4 \times 5 = 20$ अर्धच्छेदा पर अंतिम ११३ होगा ।

ऊपर सत्र दो सत्या आदिका परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसे
 त्रिगुणित करके और उस त्रिगुणित राशिमेंसे एक कम करके शेष राशिसे सपूर्ण जीवराशिके
 अर्धच्छेदोंको गुणित करने पर अर्धच्छेदोंका प्रमाण होता है । इसीप्रकार सत्यात असत्यात
 और अनन्त स्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये । सत्र द्विगुणादिकरण भी करना चाहिये । इस
 प्रकार करने पर घनाधारा समाप्त होती है ।

अथ घनाधनधारामें गृहीत उपरिम निष्कर्षको बतलाते हैं—धुरासिसे सपूर्ण
 जीवराशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आये उससे
 जीवराशिके घनके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आये उसका
 घनाधनके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है, क्योंकि, घनके
 उपरिम वर्गके उपरिम वर्गका घनाधनके उपरिम वर्गमें भाग देने पर घनका उपरिम वर्ग आता
 है । फिर सपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गका घनके उपरिम वर्गमें भाग देने पर
 सपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग आता है । फिर धुरासिका सपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें
 भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है । घनाधनधारामें इसप्रकार मिथ्यादृष्टि जीव
 राशि आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनंतर भागका ग्रहण किया है ।



उदाहरण— $16^3 \times 16^3 \times 16^3 = 65536 \times 65536 \times 65536$
 $65536 \times 65536 \times 65536 = 281474976768$
 $281474976768 \times \frac{16}{16} \times 16677776 = 12$ मिथ्यादृष्टि

रासिस्त अर्धच्छेदण क्ते नि मिच्छाद्द्विरासी आगच्छदि । तस्त भागहारस्त अर्ध-
च्छेदणया केचित्था ? एगरूप निरलेखण निग करिय अण्णोण्णम्भत्थरासिणा णवगुण-
रूपणेण सव्वजीरामिच्छेदण गुणिदमेत्ता । उवरि सव्वत्थ चड्ढिदद्धानसलागाओ
निरालिय निग करिय अण्णोण्णम्भत्थरासिणा णवगुणरूपणेण गुणिदसव्वजीरामिच्छेदण-
यमेत्ता भवन्ति । एण सखेज्जासरोज्जाणतेसु णेयव्व । सव्वत्थ दुगुणादिकरणं पि कायव्वं ।
एणं क्ते घणाघगपररूपणा समत्ता भवदि ।

गहिदगहिद वचइस्मामो । सव्वजीवरामित्तरिभवगसस्त अण्णंतिमभागेण मिच्छाद्द्वि-
रासिणा उत्तरि इच्छिदग्गमे भागे हिदे जो भागलद्धो तेण तमिह चेर वग्गे भागे हिदे

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हैं उत्तनीवार उक्त राशिके अर्धच्छेद करने पर भी
मिथ्यादृष्टि जीवराशि आ जाती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ६८ अर्धच्छेद होंगे, पर अन्तिम अर्धच्छेद $१\frac{१}{३}$ होगा ।
अत इतनीवार उक्त भाग्य राशिके छेद करने पर लब्ध १३ मिथ्यादृष्टि राशि आती है ।

शक्या—उक्त भागहारके अर्धच्छेद कितने हैं ?

समाप्तान—एकरा विरलन करके और उसे दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो
राशि उत्पन्न हो उमे नौ से गुणा करके जो लब्ध आये उसमेंसे एक कम करके जो राशि शेष
रहे उसे सपूर्ण जीवराशिके अर्धच्छेदोंसे गुणित कर देने पर जो राशि आवे उतने उक्त
भागहारके अर्धच्छेद हैं ।

$$\text{उदाहरण—} 7 = 2 \times 2 = 28 - 1 = 17 \times 2 = 68$$

१

आगे सर्वत्र जितने स्थान ऊपर जायें तत्प्रमाण शलाकाओंका विरलन करके और
उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि
उत्पन्न हो उसे नौसे गुणा करके जो लब्ध आये उसमेंसे एक कम करके शेष राशिको सपूर्ण
जीवराशिके अर्धच्छेदोंसे गुणित कर दे । ऐसा करने पर घनाघनधारामें निष्कृष्ट भागहारके
अर्धच्छेद आ जायेंगे । इसीप्रकार घनाघनधाराके सत्पयात, असत्पयात और अनन्त वर्गस्थानोंमें
भी लगा लेना चाहिये । सर्वत्र द्विगुणादिकरण भी कर लेना चाहिये । इसप्रकार करने पर
घनाघनधाराकी प्ररूपणा समाप्त होती है ।

अथ गृहीतगृहीत उपरिम चिकरूपको यतलाते हैं—सपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके
अनन्तिम भागरूप मिथ्यादृष्टि जीवराशिका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध
आवे उसका उसी वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उपरिम वर्ग २५६ का इच्छित वर्ग ६५५३६,

$$\frac{६५५३६}{१} - \frac{१३}{१} = \frac{६५५३६}{१३}, \quad \frac{६५५३६}{१} - \frac{६५५३६}{१३} = १३ \text{ मिथ्यादृष्टि}$$

मिन्डाइद्विरासी आगच्छदि । तस्म भागहारस्म अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे पि मिन्डाइद्विरासी चेव अवचिद्वेदे । तस्मद्वच्छेदणया केत्तिया ? मिच्छाइद्विरासि-अद्वच्छेदणएणूणतमजिदरासिअद्वच्छेदणयमेत्ता । एव सरोज्जासरोज्जाणतेसु णेयव्व । वेरुवपरुवणा गदा । अद्वरूव वत्तइस्सामो । सच्चजीवराभिघणस्स अणतिमभागेण उपरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जो भागलद्वो तेण तम्हि चेव वग्गे भागे हिदे मिच्छाइद्विरासी आगच्छदि । तस्म भागहारस्म अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे पि मिन्डाइद्विरासी आगच्छदि ति । एव सरोज्जासरोज्जाणतेसु णेयव्व । एवमद्वरूवपरुवणा गदा । घणाघणे वत्तइस्सामो । घणाघणपटभवग्गमूलस्स अणतिमभागेण उपरि इच्छिदवग्गे

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादष्टि जीवराशि ही आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके १२ अर्धच्छेद होंगे, पर अन्तिम अर्धच्छेद ११^३ होगा। अत इतनीवार उक्त मन्व्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादष्टि राशि १३ आती है ।

शुद्धा—उक्त भागहारके अर्धच्छेद कितने हैं ?

समाधान—जिस राशिमें मिथ्यादष्टि राशिका भाग दिया गया है उसके अर्धच्छेदोंमेंसे मिथ्यादष्टि राशिके अर्धच्छेद कम कर देने पर उक्त भागहारके अर्धच्छेद होते हैं । इसीप्रकार सख्यात, असख्यात और अनन्त घर्गस्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये । इसप्रकार गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पमें छिरूपयर्गधाराकी प्ररूपणा समाप्त हुई । अब गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पमें अरूप अर्थात् घनधाराकी यतलाते ह—

सपूर्ण जीवराशिके घनके अन्तिम भागका ऊपर इच्छित वग्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका उसी वग्गमें भाग देने पर मिथ्यादष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—घनराशि ४०९६ का इच्छित वग्ग १६७७७२१६:

$$\frac{४०९६}{१} - \frac{१३}{१} = \frac{१६७७७२१६}{१३}, \frac{१६७७७२१६}{१} - \frac{१६७७७२१६}{१३} = १३ \text{ मिथ्यादष्टि}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भाग्य राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके २० अर्धच्छेद होंगे पर अन्तिम अर्धच्छेद ११^३ होगा। अत इतनीवार उक्त मन्व्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादष्टि राशि १३ आती है ।

इसीप्रकार सख्यात, असख्यात और अनन्त स्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये । इसप्रकार गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पमें घनधाराकी प्ररूपणा समाप्त हुई । अब घनाघनधारामें गृहीत गृहीत उपरिम विकल्पकी यतलाते ह—

घनाघनके प्रथम यर्गमूलके अन्तिम भागका ऊपर इच्छित वग्गमें भाग देने पर जो

भागे हिंदे जो भागलद्धो तेण तम्हि चैन वग्गे भागे हिंदे मिच्छाद्द्विरासी आगच्छदि । तस्म भागहारस्म अद्दच्छेदणयमेत्ते रासिस्म अद्दच्छेदण कदे पि मिच्छाद्द्विरासी चैन आगच्छदि । (एण सखेज्जासखेज्जाणतेसु णेयच्च) । एण घणाघणपरूखणा गदा । गहिद गहिद गद ।

गहिदगुणगार वत्तडस्मामो । वेरूणे सच्चजीवरासिउवरिमवग्गस्स अणंतिमभागेण उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिंदे जो भागलद्धो तेण तमेव वग्ग गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिंदे मिच्छाद्द्विरामी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्दच्छेदणयमेत्ते रासिस्म अद्दच्छेदण कदे पि मिच्छाद्द्विरामी चैन अनचिद्धे । एण सखेज्जासखेज्जाणतेसु णेयच्च ।

भाग लघ्न आवे उसका उनी वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—घनाघनका प्रथम वर्गमूल २६०१४४,

$$\frac{२६०१४४^२}{१} - \frac{१३}{१} = \frac{२६२१४४^२}{१३}, \quad \frac{२६२१४४^२}{१} - \frac{२६०१४४^२}{१३} = १३ \text{ मिथ्यादृष्टि}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भाग्य राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि राशि ही आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ३२ अर्धच्छेद होंगे पर अन्तिम अर्धच्छेद १३ होता है ।

अत इतनीवार उक्त भक्ष्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि राशि १३ आती है ।

(इसीप्रकार सख्येय, असख्येय और अनन्त वर्गस्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये) ।

इसप्रकार गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पमें घनाघनकी प्ररूखणा समाप्त हुई । इसप्रकार गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पका कथन समाप्त हुआ ।

अय गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पको यतलाते हैं—द्विरूप वर्गधारामें सपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके अनन्तवर्ष भागका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लघ्न आवे उससे उसी वर्गराशिको गुणित करके जो लघ्न आवे उसका उक्त वर्गराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उपरिम वर्ग २५६ का इच्छित वर्ग ६५५३६,

$$\frac{६५५३६}{१} - \frac{१३}{१} = \frac{६५५३६}{१३}, \quad \frac{६५५३६}{१३} \times \frac{६५५३६}{१} = \frac{६५५३६^२}{१३},$$

$$\frac{६५५३६^२}{१} - \frac{६५५३६^२}{१३} = १३ \text{ मिथ्यादृष्टि}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भाग्य राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि ही आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके २८ अर्धच्छेद होते हैं । अन्तिम अर्धच्छेद १३ होता है ।

अत इतनीवार उक्त भक्ष्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि राशि १३ आती है ।

इसप्रकार सख्यात, असख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये । इसप्रकार

वेरूपप्रवणता गदा । अद्वैतवे वचनस्तमो । घनस्म अणतिमभागेण उतरि इच्छितवर्गमे भागे हिदे जो भागलद्वो तेण तमेव वर्ग गुणेऊण तस्सुपरिमवर्गमे भागे हिदे मिच्छाद्विद्वारासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्वैतवेदणयमेवे रासिस्म अद्वैतवेदणए कदे वि मिच्छा- इद्विद्वारासी चेव आगच्छदि । एव सपेज्जातमेज्जाणतेसु जेयव्व । अद्वैतप्रवणता गदा । घणाघणे वचनस्तमो । घणाघणपदमवर्गमूलस्स अणतिमभागेण उतरि इच्छितवर्गमे भागे हिदे जो भागलद्वो तेण तमेव वर्ग गुणेऊण तस्सुपरिमवर्गमे भागे हिदे मिच्छाद्विद्वारासी

शुद्धीतगुणकार उपरिम विकल्पमें ठिकरूप वर्गधाराकी प्ररूपणा समाप्त हुई । अब अष्टरूप धारामें शुद्धीतगुणकार उपरिम विकल्पको घतलाते हैं—

घनके अनन्तिम भागका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उससे उसी वर्गराशिको गुणित करके लब्ध राशिका उक्त वर्गराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—घनराशि ४०६ का इच्छित वर्ग १६७७७२१६ ।

$$\frac{१६७७७७२१६}{१} - \frac{१३}{१} = \frac{१६७७७७२१}{१३} \text{ या } \frac{१६७७७७२१६}{१३} \times \frac{१६७७७७२१६}{१}$$

$$= \frac{१६७७७७२१६}{१३}, \frac{१६७७७७२१६}{१} - \frac{१६७७७७२१६}{१३} = १३ \text{ मिथ्यादृष्टि}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भाग्य राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि ही आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ४४ अर्धच्छेद प्रमाण उक्त राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि राशि १३ लब्ध आती है ।

इसीप्रकार सषयात, असरयात और अन त स्थानोंमें भी गया लेना चाहिये । इसप्रकार शुद्धीतगुणकार उपरिम विकल्पमें अष्टरूप प्ररूपणा समाप्त हुई । अब घनाघनधारामें उसीको घतलाते हैं—

घनाघनके प्रथम वर्गमूलके अनन्तिम भागका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे उसी वर्गराशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका उक्त वर्ग राशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—घनाघनके प्रथम वर्गमूल २६२१५४ का इच्छित वर्ग ६८७१०७७७३६ ।

$$\frac{६८७१०७७७३६}{१} - \frac{१३}{१} = \frac{६८७१०७७७३६}{१३},$$

$$\frac{६८७१०७७७३६}{१} \times \frac{६८७१०७७७३६}{१३} = \frac{६८७१०७७७३६}{१३},$$

$$\frac{६८७१०७७७३६}{१} - \frac{६८७१०७७७३६}{१३} = १३ \text{ मिथ्यादृष्टि}$$

आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्म अद्वच्छेदणए ऋदे पि मिच्छा-
इडिरासी चेत्त आगच्छदि । एत्त सत्तेज्जामत्तेज्जाणंतेसु णेयव्वं । घणाघणपरुखणा गदा ।

सासणसम्माइडिपहुडि जाव संजदासंजदा ति द्वयपमाणेण
केवडिया ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोवम-
मवहिरिज्जदि अंतोमुहुत्तेण ॥ ६ ॥

एत्थ तात्त सासणसम्माइडिरासिस्म पमाणपरुखण वत्तइस्सामो । सासणसम्माइडि
द्वयपमाणेण केवडिया ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । सेत्तकालपमाणेहि किमिदि

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीघार उक्त भाग्य राशिके अर्धच्छेद करने
पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि ही आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ६८ अर्धच्छेद होते हैं, अत इतनीघार उक्त भज्यमान
राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि राशि १३ आती है ।

इसीप्रकार सख्यात, असख्यात और अनन्त स्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये । इसप्रकार
शुद्धांतगुणकार उपरिम चिकल्पमें घनाघनपरुखणा समाप्त हुई ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयतासयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुण-
स्थानवर्ती जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने है ? पल्योपमके असख्यातमें भागमात्र हैं ।
इन चार गुणस्थानोंमें प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणकी अपेक्षा अन्तर्मुहूर्तसे पल्योपम
अपहत होता है ॥ ६ ॥

उनमेंसे पहले यद्वा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण वतलते हैं—

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितनी है ? पल्योपमके
असख्यातमें भागमात्र है ।

विश्लेषार्थ—आगे अकसदृष्टिसे सासादनसम्यग्दृष्टि आदि चार गुणस्थानवर्ती
जीवराशिका प्रमाण लानेके लिये पल्योपमका प्रमाण ६५५३६ और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव
राशिका प्रमाण लानेके लिये अवहारकालका प्रमाण ३० कल्पित किया है । इसप्रकार सासा
दनसम्यग्दृष्टिके अवहारकाल ३२ का ६५५३६ प्रमाण पल्योपममें भाग देने पर सासादन
सम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण २०४८ आता है जो कि पल्योपमके असख्यातमें भागमात्र है ।
अर्धपरुखणा भी इसीप्रकार जान लेना चाहिये ।

शुद्धा—यद्वा क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाणकी अपेक्षासे भी सासादासम्यग्दृष्टि

१ सासादनसम्यग्दृष्ट्य सम्यग्दृष्टिपल्योपमवत्सम्यग्दृष्ट्य सयतासयतत्त पल्योपमामरयेयमागप्रमिता ।
स ति , १, ८ मिच्छासावयनामणदिस्माविदा दुवारणनाया । पञ्जासखे ज्जदिमममसगुण सखसखगुण ॥ गो जी ६२५
पल्यामस्यात्तमागच्छ परे गुणवत्तुत्थय । प स ५९ सासायणइचवरो होति अमरया ॥ पञ्चत्त २, २२

सासणसम्माडट्टिपरूणणा ण परूविदा ? ण, एत्थ मिच्छाडट्टिस्सिप त्थि परूदेव्वस्स कारणाभावा । किं तत्थ कारणं ? युच्चदे—असरोज्जपएसिए लोए कधमणतो जीवरासी सम्मादि त्ति जादसदेहणिराकरण्ह खेत्तपमाण युच्चदे । आयनिरिहिदस्स सिज्झनतीरे जेक्खियय सव्वयस्स सव्वनीरामिस्स किं वोच्छेदो होदि, ण होदि त्ति जादसदेह णिराकरण्ह कालपमाण परूविज्जदि । ण च एदेसु कारणेसु एक पि कारणमेत्थ सभनइ, अणुत्तलभादो । तम्हा खेत्तकालपरूणणा सामणादीण गये ण परूविदा । एत्थ

जीवराशिका प्ररूपण क्योँ नहोँ किया ?

समाधान—नहोँ, क्योँकि, जिसप्रकार मिथ्यादृष्टि जीवराशिका क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाणकी अपेक्षासे प्ररूपण करनेका कारण था, उसप्रकार यहा पर उक्त दोनोँ प्रमाणोँके द्वारा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्ररूपण करनेका कोई कारण नहोँ हे । अतएव उक्त प्रमाणोँके द्वारा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्ररूपण नहोँ किया ।

दूसरा— यहा पर उक्त दोनोँ प्रमाणोँके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्ररूपण करनेका क्या कारण हे ?

समाधान—असुर्यात प्रदेशोँ लोकमें अनन्तप्रमाण जीवराशि कैसे समा जाती हे, इसप्रकारसे उत्पन्न हुए सदेहके दूर करनेके लिये क्षेत्रप्रमाणका कथन किया जाता हे । तथा अपरहित और सिद्धयमान जावोँकी अपेक्षा व्ययसहित सपूर्ण जीवराशिका विच्छेद् होता हे या नहोँ, इसप्रकार उत्पन्न हुए सदेहके दूर करनेके लिये कालप्रमाणका प्ररूपण किया जाता हे । परंतु इन कारणोँमेंसे यहा पर एक भी कारण सभव नहोँ हे, क्योँकि, यहा पर कोई भी कारण नहोँ पाया जाता हे । अत क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाणके द्वारा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्ररूपण प्रथमें नहोँ किया ।

विशेषार्थ—शकाकारका कहना हे कि जिसप्रकार पहले मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणका प्ररूपण करते समय 'अणत्ताणताहि ओसप्पिणउत्सत्विणीहि ण अवहिरति कालेण' इस सूत्रके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका कालकी अपेक्षा प्रमाण कहा हे, और 'खेत्तेण अणत्ताणता लोण' इस सूत्रके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण कहा हे, उसीप्रकार प्रवृत्तमें भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण क्षेत्र और कालप्रमाणकी अपेक्षासे कहना चाहिये । शकानारकी इस शकाका समाधान इसप्रकार समझना चाहिये कि मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त होते हे, अतएव उनका असुर्यातप्रदेशोँ लोकाकाशमें रहना असभव हे ऐसी शका किसीको हो सकती हे । अत इसके परिहारके लिये मिथ्यादृष्टि जीव राशिका क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा प्ररूपण किया । दूसरे, मोक्षको जानेवाले जीवोँकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका व्यय तो निरन्तर चालू हे पर उनकी वृद्धि कभी भी नहोँ होती इसलिये उनका अभाव हो जायगा, ऐसी शका भी किसीको हो सकती हे, अतएव इसके परिहार के लिये कालप्रमाणकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्ररूपण किया कि अनन्तानन्त

भागहारपमाणमतोमुहुत्तमिदि सामणसम्माइडिआदिरासिपमाणविसयणिण्णयुप्पायणद्धं परू-
विद । तं च अतोमुहुत्तमणेयत्रियप्प, तदो एत्तियमिदि ण जाणिज्जदि । तत्थ णिच्छय-
जणणणिमित्त किंचि अद्वापरूपण कस्सामो । तं कध ? असखेज्जे समए घेत्तूण एया
आवलिया हइदि । तप्पाओग्गसंखेज्जावलियाओ घेत्तूण एगो उस्सासो हवदि । सत्त
उस्सासे घेत्तूण एगो थोवो हइदि । सत्त थोत्रे घेत्तूण एगो लवो हवदि । अठतीस लवे
अद्दलं च घेत्तूण एगा णालिया हवदि । उत्त च—

आवलि असखसमया सखेज्जाणलिसमूह उस्सासो ।

सत्तुस्सासो थोवो सत्तव्योवा लवो एको ॥ ३३ ॥

उत्सर्पिणियों और अवसर्पिणियोंके हो जाने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि समाप्त नहीं हो सकती है । परन्तु सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सयन्धमें इन दोनों प्रश्नोंमेंसे कोई प्रश्न उपस्थित नहीं होता है, क्योंकि, वे केवल पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण हैं । अतः उनकी लोकाकाशमें अवस्थिति कैसे होगी, यह धात नहीं कही जा सकती है । और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव, यद्यपि मिथ्यात्प गुण-स्थानको प्राप्त होते रहते हैं इसलिये उनका व्यय होता है, फिर भी उपशमसम्यग्दृष्टि जीवों-मेंसे उसी अनुपातसे सासादन गुणस्थानको भी प्राप्त होते रहते हैं, अतएव व्ययके समान आय भी निरन्तर चालू है । इसलिये उनका अभाव हो जायगा, यह भी नहीं कहा जा सकता है । इसप्रकार क्षेत्र और कालप्रमाणकी अपेक्षा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका प्रमाण कहनेके लिये कोई कारण नहीं होनेसे उक्त प्रमाणोंके द्वारा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका कथन नहीं किया ।

सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीवराशिका प्रमाण कहते समय भागहारका प्रमाण जो अन्तर्मुहूर्त कहा है वह सासादनसम्यग्दृष्टि आदि राशियोंके प्रमाण विषयक निर्णयके उत्पन्न करनेके लिये कहा है । परन्तु वह अन्तर्मुहूर्त अनेक प्रकारका है, इसलिये प्रकृतमें इतना अन्तर्मुहूर्त विवक्षित है, यह नहीं जाना जाता है । इसलिये विवक्षित अन्तर्मुहूर्तके विषयमें निश्चय उत्पन्न करनेके लिये थोड़ेमें कालका प्ररूपण करते हैं ।

शंका—वह कालप्ररूपणा किसप्रकार है ?

समाधान—असख्यात समयकी एक आवली होती है । ऐसी तद्योग्य सख्यात आवलियोंका एक उच्छ्वास होता है । सात उच्छ्वासोंका एक स्तोक होता है । सात स्तोकोंका एक लव होता है, और सोढे अठतीस लवोंकी एक नाली होती है । कहा भी है—

असख्यात समयोंकी एक आवली होती है । सख्यात आवलियोंके समूहको एक उच्छ्वास कहते हैं । सात उच्छ्वासोंका एक स्तोक होता है और सात स्तोकोंका एक लव होता है ॥ ३३ ॥

अन्तीसद्वल्वा णाली वे णालिया मुहुत्तो दु ।

एगसमएण हाणो भिण्णमुहुत्तो भवे सेस' ॥ ३४ ॥

अट्टस अणलससस य गिरुहदस्स य जिणेहि जतुस्स ।

उस्सासो गिस्सासो एगो पाणो त्ति आहिदो एमो' ॥ ३५ ॥

तिण्णि सहस्सा सत्त य सयाणि तेहत्तरिं च उस्सासा ।

एगो होदि मुहुत्तो सञ्चोसि च न गणुयाण' ॥ ३६ ॥

सत्तसएहि वीसुत्तरोहि पाणेहि एगो मुहुत्तो होदि त्ति केवि भणति, पाइयपुरि-
सुस्सासे दहूण तण्ण घडदे । कुदो ? केवलिसासिदत्थादो पमाणभूदेण अण्णेण सुत्तेण
सह निरोहादो । कध निरोहो ? जेणेद चउहि गुणिय सन्नूण णवसद पक्खिचे सुत्तुत्तुस्सा-

सादे अबर्तम ल्योंकी एक नाली होती है, और दो नालियोंका एक मुहूर्त होता है ।
तथा मुहूर्तमेंसे एक समय कम करने पर भिन्नमुहूर्त होता है, और शेष अर्थात् दो, तीन आदि
समय कम करने पर अन्तर्मुहूर्त होते हैं ॥ ३४ ॥

जो सुखी है, आलस्यरहित है और रोगादिकी चिन्तासे मुक्त है, ऐसे प्राणोंके पचासो
चूग्रासको एक प्राण कहते हैं, ऐसा जिनेन्द्रदेवने कहा है ॥ ३५ ॥

सभी मनुष्योंके तीन हजार सातसौ तेहत्तर उच्छ्वासोंना एक मुहूर्त होता है ॥ ३६ ॥

कितने ही आचार्य सातसो बीस प्राणोंना एक मुहूर्त होता है, ऐसा कहते हैं, परंतु
प्राहत अर्थात् रोगादिसे रहित स्वस्थ मनुष्यके उच्छ्वासोंको देखते हुए उन आचार्योंका इस
प्रकार कथन करना घटित नहीं होता है, क्योंकि, जो केरली भाषित अर्थ होनेके कारण प्रमाण
है, ऐसे अन्य सूत्रके कथनके साथ उन कथनका विरोध आता है ।

शुभा—सूत्रके कथनसे उक्त कथनमें केसे विरोध आता है ?

समाधान—क्योंकि ऊपर कहे गये सान्तसौ बीस प्राणोंको चारसे गुणा करके जो

१ गो जी ५७१ होति दु असनसमया आबलिणामो तव्व वसमातो । सल्ले जावलिणिवहो सो वेव पाणो
त्ति निवहादो ॥ सपुसससो थोव सत्त धवा लव ति णाद'वो । सत्तदिदल्लिदल्लवा णाला वे णालिया मुहुत्त
व ॥ नि प पन ५ ग सा १ ३२ ३६ असखि'जाण ममयाण सपुदयसमिदिसमागमेण सा एया
आबलिअधि वचचइ, सत्तञ्जाओ आबलिअ उमासा ससि'जाओ आबलिआना नातासा, सत्त पाणूणि स थोव,
सत्त थोवाणि से लवे । लवणं सत्तहवाण एस सुहुत्त विआहिदु । अतु पृ १६४ 'या प्र पृ ५००

२ गा जी ५०४ टी इट्टस अणवगट्टस निववकिट्टस जतुणो । एगे उपासनीसाथे एस पाणु ति
उचचइ । अतु पृ १६६ 'या प्र पृ ५००

३ आम्पानल्लसानुपइत्तमनुआ'इस'सि'सप्तमन्तविमित । जाहुपइत्तप् ॥ गो जी जी प्र टा,
१२५ तिण्णि सहस्सा सत्त य मया'द टहुत्तमि च उस्सासा । एव सुत्तवा माणआ स रहिं अणतनाणाहिं । अतु पृ
१२५ 'या प्र पृ ५०

सपमाण पात्रदि । एकरीससहस्स-उस्सयमेत्तपाणेहि सन्नञ्जरियाण दिवसो होदि । एत्थ पुण एगलक्ख तेरहसहस्सणउदि सयपाणेहि दिवसो होदि । पाणेहि विप्पडिवण्णाण सवञ्जरियाणं कालववहारो कथ घडदे ? ण, केणलिभासिददिनसमुहुत्तेहि समाणदिवस-मुहुत्तञ्चुगमादो । एव परूणदिमुहुत्तुस्सासे ठवेऊण तत्थ एगो उस्सासो घेत्तव्वो । संखेज्जात्रलियाहि एगो उस्सासो णिप्फज्जदि त्ति सो उस्सासो संखेज्जात्रलियाओ कयाओ । तत्थ एगमावलियं घेत्तूण असखेज्जेहि समएहि एगावलिया होदि त्ति अससज्जा समया कायव्वा । तत्थ एगसमए अवणिदे सेसकालपमाणं भिण्णमुहुत्तो उच्चदि । पुणो वि अरणेगे समए अवणिदे सेसकालपमाणमतोमुहुत्तं होदि । एव पुणो पुणो समया अरणेयव्वा जाव उस्सासो णिट्ठिदो त्ति । तो वि सेसकालपमाणमतोमुहुत्त चेव होइ । एवं सेसुस्सासे वि अरणेयव्वा जावेगात्रलिया सेसा त्ति । सा आत्रलिया वि

गुणनफल आवे उसमें सात कम नो सा अर्थात् आठसौ तेरानवे और मिलाने पर सूर्यमें कहे गये मुहूर्तके उच्छ्रासोंका प्रमाण होता है, इसलिये प्रतीत होता है कि उपर्युक्त मुहूर्तके उच्छ्रासोंका प्रमाण सूर्यविरुद्ध है । यदि सातसौ बीस प्राणोंका एक मुहूर्त होता है, इस कथनको मान लिया जाय तो केवल इत्नीस हजार छह सौ प्राणोंके द्वारा ही ज्योतिषियोंके द्वारा माने हुए दिन अर्थात् अहोरात्रका प्रमाण होता है । किन्तु यदा आगमानुकूल कथनके अनुसार तो एक लाख तेरह हजार और एक सौ नव्वे उच्छ्रासोंके द्वारा एक दिन अर्थात् अहोरात्र होता है ।

शंका— इसप्रकार प्राणोंके द्वारा दिवसके विषयमें विवादको प्राप्त हुए ज्योतिषियोंके कालव्यवहार कैसे बन सकता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, केवलीके द्वारा कथित दिन और मुहूर्तके समान ही ज्योतिषियोंके दिन और मुहूर्त माने गये हैं, इसलिये उपर्युक्त कोई दोष नहीं है ।

इसप्रकार केवलीके द्वारा प्रतिपादित एक मुहूर्तके उच्छ्रासोंको स्थापित करके उनमेंसे एक उच्छ्रास ग्रहण करना चाहिये । सूर्यात आवलियोंसे एक उच्छ्रास निष्पन्न होता है, इसलिये उस एक उच्छ्रासकी सूर्यात आवलिया बना लेना चाहिये । उन आवलियोंमेंसे एक आवलीको ग्रहण करके, असूर्यात समयसे एक आवली होती है, इसलिये उस आवलीके असूर्यात समय कर लेना चाहिये ।

यदा मुहूर्तमेंसे एक समय निकाल लेने पर शेष कालके प्रमाणको भिन्नमुहूर्त कहते हैं । उस भिन्नमुहूर्तमेंसे एक समय और निकाल लेने पर शेष कालका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त होता है । इसप्रकार उत्तरोत्तर एक एक समय कम करते हुए उच्छ्रासके उत्पन्न होने तरु एक एक समय निकालते जाना चाहिये । वह सब एक एक समय कम किया हुआ काल भी अन्तर्मुहूर्तप्रमाण ही होता है । इसीप्रकार जब तक आवली उत्पन्न नहीं होती है तब तक शेष रहे हुए एक उच्छ्रासमेंसे भी एक एक समय कम करते जाना चाहिये । ऐसा करते हुए जो आवली उत्पन्न होती है उसे भी अन्तर्मुहूर्त कहते हैं ।

ज्जरुडयसम्माइड्ढीणं संभरुप्पसगादो । सखेज्जावलियभागहारुप्पायणविहाण वुच्चदे । त जहा, वासपुधत्तमंतरिय जड सोहम्मदेवेषु सखेज्जाण खइयसम्माइड्ढीणमुप्पत्ती लब्भइ तो सखेज्जपलिदोवमेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओरुड्ढिदाए सखेज्जात्रलियाहि पलिदोवमे रुडिय तत्थेगरुडमेत्ता खइयसम्माइड्ढी हंतो । उउसमसम्माइड्ढीणमउहारकालो पुण उसखेज्जावलियमेत्तो, खइयसम्माइड्ढी-हिंतो तेसिं असखेज्जगुणहीणत्तणहाणुउत्तीदो । सासणसम्माइड्ढि-सम्माभिच्छा-इड्ढीण पि अवहारकालो असखेज्जावलियमेत्तो, उउसमसम्माइड्ढीहिंतो तेसिमसखेज्ज-गुणहीणत्तणहाणुवत्तीदो । ' एदेहि पलिदोवममउहिरदि अतोमुहुत्तेण कालेण ' इत्ति सुत्तेण सह विरोहो वि ण होदि, सामीप्यार्ये वर्तमानान्त, शब्दग्रहणात् । मुहूर्तस्यान्तः

योंकी उत्पत्ति का प्रसंग आ जायगा । अत्र आगे सरयात आवलीरूप भागहारके उत्पन्न करनेकी विधि कहते हैं । यह इसप्रकार है—

एक वर्षपृथक्त्वके अनन्तर यदि सौधर्म देवोंमें सरयात क्षायिक सम्यग्दृष्टियोंकी उत्पत्ति प्राप्त होती है तो सरयात पल्योपमकी स्थितिवाले देवोंमें कितने क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव प्राप्त होंगे, इसप्रकार त्रैराशिक विधिके अनुसार फलराशि सख्यातकी इच्छाराशि सरयात पल्योपमसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें प्रमाणराशि वर्षपृथक्त्वका भाग देने पर अर्थात् सरयात आवलियोंसे पल्योपमके खटित करने पर जो भाग लब्ध आवे उतने एक सण्ड प्रमाण क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव होते हैं । उपशमसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल तो असरयात आवलीप्रमाण है, अन्यथा उपशमसम्यग्दृष्टि जीव क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे असरयातगुणे हीन बन नहीं सकते हैं । उसीप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि ओर सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका भी अवहारकाल असरयात आवलीप्रमाण है, अन्यथा उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे उक्त देवों गुणस्थानवाले जीव असरयातगुणे हीन बन नहीं सकते हैं । ' इन गुणस्थानोंमेंसे प्रत्येक गुणस्थानकी अपेक्षा अन्तर्मुहूर्तप्रमाण कालसे पल्योपम अपहृत होता है ' इस पूर्वोक्त सूत्रके साथ उक्त कथनका विरोध भी नहीं आता है, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तमें जो अन्तर् शब्द आया है उसका सामीप्य अर्थमें ग्रहण किया गया है । इसका तात्पर्य यह हुआ कि जो मुहूर्तके समीप हो उसे अन्तर्मुहूर्त कहते हैं ।

विशेषार्थ—अन्तर्मुहूर्तका पल्योपममें भाग देने पर जो लब्ध आवे उतना सासादन आदि चार गुणस्थानोंमेंसे प्रत्येक गुणस्थानवाले जीवोंका प्रमाण है, यह पूर्वोक्त सूत्रका अभिप्राय है । पर टीकाकार वीरसेनस्वामीने यह मिद्ध किया है कि सासादन, मिथ्र और देशविरतके अवहारकालका प्रमाण असरयात आवलिया है । अथ यहा यह प्रश्न उत्पन्न होता

१ एदेहि पलिदोवममउहिरदि अतोमुहुत्तेण कालेणेत्ति सुत्तेण वि ण विरोहो, तस्स उवयारिगिभणणत्तो ।

अन्तर्मुहूर्त' । कुतः पूर्वनिपातः ? राजदन्तादित्वात्' । कुतः ओत्वम् ? 'एष छच्च समाणा' इत्येतन्मात् । ग्देण सणक्कुमारादिगुणपडिगुणानमनहारकालाण पि असंखेज्जावलियत्त पसाहिय । एत्थ चोद्गो भणदि । एदाओ रासीओ अणद्धिदाओ ण होंति, हाणिगद्धिसज्जुद चादो । ण च हाणिगद्धीओ णत्थि चि वोत्तु सक्किज्जे, आयच्चयाभावे मौक्खामाणादो अणादिअपञ्जमिदसासणादिगुणकालाणुत्तलद्धीदो च । जदि एदाओ रासीओ अवद्धिदाओ तो एदे भागहारा घडति, अण्णहा पुण ण घडति । अण्णद्धिदरासिभागहारेणापि अण्णद्धिदमूक्खेणेण अवहणा होंति । एत्थ परिहारो वुच्चे- सासणसम्माहट्टिरासीणमुक्खस्मसचय

हे कि उक्त तीनों गुणस्थानोंकी सख्या लानेके लिये यदि अवहारकालका प्रमाण असख्यात आवलिया मान लिया जाता है तो सूत्रमें आये हुए अन्तर्मुहूर्त प्रमाण भागहारके साथ उक्त असख्यात आवलीप्रमाण भागहारका विरोध आता है, क्योंकि, उत्पट्ट एक अन्तर्मुहूर्तमें सख्यात आवलिया ही होती है, असख्यात नहीं । इस पर धीरसेनन्वामीने यह समाधान किया है कि यहा पर अन्तर्मुहूर्तमें आये हुए अन्तर् शब्दसे मुहूर्तके समीपवर्ती कालका ग्रहण करना चाहिये जिससे अन्तर्मुहूर्तका अभिप्राय मुहूर्तसे अधिक भी हो सकता है ।

शंका — यहा पर अन्तर् शब्दका पूर्व निपात कैसे हो गया है ?

समाधान—क्योंकि, अन्तर् शब्दका राजद तादि गणमें पाठ होनेसे पूर्वनिपात हो गया है ।

शंका — अन्तर् शब्दमें अर्के स्थानमें ओत्व कैसे हो गया है ?

समाधान—'एष छच्च समाणा' इस नियामक चवनके अनुसार यहा पर ओत्व हो गया है ।

इस उपर्युक्त कथनसे गुणस्थानप्रतिपत्र सानत्कुमार आदि कल्पवासी देवोंसबकी अवहारकाल असख्यात आवलीप्रमाण सिद्ध कर दिया गया ।

शंका— यहा पर शंकाकार कहता है कि ये उपर्युक्त जीवराशिया अवस्थित नहीं होती हैं, क्योंकि, इन राशियोंकी हानि और वृद्धि होती रहती है । यदि कहा जाय कि इन राशियोंकी हानि और वृद्धि नहीं होती है, सो भी कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, यदि इन राशियोंका आय और व्यय नहीं माना जाय तो मोक्षका भी अभाव हो जायगा । तथा अनादि अनपर्ययस्वरूपसे साम्राज्य आदि गुणस्थानोंका काल भी नहीं पाया जाता है, इसलिये भी इन राशियोंकी हानि और वृद्धि मान लेना चाहिये । यदि इन उपर्युक्त राशियोंको अवस्थित माना जाये तो ये भागहार बन सकते हैं, अन्यथा नहीं, क्योंकि, अनवस्थित राशियोंके भागहारोंका भी अनवस्थितरूपसे ही सङ्ग्राह माना जा सकता है ?

समाधान—आगे पूर्वोक्त शंकाका परिहार किया जाता है । क्योंकि सासादन

विकालगोयरमस्सिऊण जम्हा पमाणपरूवण कद तम्हा षड्विहाणीओ णत्थि चि भागहार-
परूवण घडदि चि । सासणसम्माइडिअवहारकालेण चलिदोपमे भागे हिदे सासणसम्मा-
इडिरासी आगच्छदि । सासणसम्माइडिण पमाणपरूवण चग्गट्टाणे खंडिद भाजिद विरलिद-
अअहिद-पमाण-कारण णिरुत्ति त्रियप्पेहि वचइस्सामो । त जहा—

पलिदोपमे अससेज्जावलियमेत्तएडे कए तत्थ एगएउड सासणसम्माइडिरासि-
पमाणं होदि । एउडिदं गद । अससेज्जावलियाहि पलिदोपमे भागे हिदे ज भागलदं त
सासणसम्माइडिरासिपमाण होदि । भाजिदं गद । अससेज्जावलियाओ विरलेऊण
एकैकस्स रूपस्स पलिदोवमं समएउड करिय दिण्णे तत्थ एगएउडपमाणं सासणसम्मा-
इडिरासी होदि । विरलिदं गद । सासणसम्माइडिअवहारकाल सलागभूद ठवेऊण

सम्यग्दष्टि आदि राशियोंके त्रिकालविषयक उत्कृष्ट सचयका आश्रय लेकर प्रमाण कहा गया
है, इसलिये उस अपेक्षासे वृद्धि और हानि नहीं है । अत पूर्वोक्त भागहारोंका कथन करना
थन जाता है ।

सासादनसम्यग्दष्टिविषयक अवहारकालका पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्य-
ग्दष्टि जीवराशि आ जाती है ।

अथ वर्गस्थानमें खण्डित, भाजित, विरलित, अपहृत, प्रमाण, कारण, निरुक्ति और
विकल्पके द्वारा सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण कहते हैं । वह इसप्रकार है—

असख्यात आधलीके समयोंका जितना प्रमाण हो उतने पल्योपमके खण्ड करने पर
उनमेंसे एक खण्डके घरानर सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण होता है । इसप्रकार
खण्डितका घर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—पल्योपमप्रमाण ६५३६ के सासादनसम्यग्दष्टिविषयक अवहारकाल
३२ प्रमाण खण्ड करने पर २०४८ आते हैं । यही सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण है ।

असख्यात आधलियोंका पल्योपममें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उतना सासा-
दनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण है । इसप्रकार भाजितका कथन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—६५३६ - ३२ = २०४८ सासादनसम्यग्दष्टि

असख्यात आधलियोंको विरलित करके उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति पल्यो-
पमको समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर उनमेंसे एक खण्ड प्रमाण सासादनसम्यग्दष्टि
जीवराशि होती है । इसप्रकार विरलितका घर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—२०४८ २०४८ २०४८

इसप्रकार ३२ चार विरलित करके
१ १ १ ६५३६ को उक्त विरलित राशिके
प्रत्येक एक पर समानरूपसे दे देने पर २०४८ सासादनसम्यग्दष्टि राशि आ जाती है ।

सासादनसम्यग्दष्टिविषयक अवहारकालको शलाकारूपसे स्थापित करके पल्योपममेंसे

पलिदोषमहि सासणसम्माइट्टिरासिपमाण अणिज्जदि, अनहारकालादो एगस्समव
णिज्जदि, पुणो त्ति सासणसम्माइट्टिरासिपमाण पलिदोषमहि अणिज्जदि, अनहारकालादो
एगरूपमणिज्जदि । एव पुणो पुणो कीरमाणे पलिदोषमो अनहारकालो च जुगव
णिज्जिदो । तत्थ एगारमवहिदपमाण सासणसम्माइट्टिरामी होदि । अरहिदं गढ । तस्स
पमाण पलिदोषमस्स अससेज्जदिभागो अससेज्जाणि पलिदोषमपढमवग्गमूलाणि त्ति ।
पमाण गढ । केण कारणेण ? पलिदोषमपढमवग्गमूलेण पलिदोषमे भागे हिदे पलिदोषम
पढमवग्गमूलमागच्छदि । तस्सेन विदियवग्गमूलादो पलिदोषमे भागे हिदे विदियवग्गमूलस्स

सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिके प्रमाणको घटा देना चाहिये । पल्योपममेंसे सासादनसम्यग्दष्टि
जीवराशिको एकवार कम क्रिया, इसलिये अवहारकालरूप शलाकाराशिममेंसे एक कम कर
देना चाहिये । फिर भी पल्योपममेंसे सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिके प्रमाणको घटा देना
चाहिये । दूसरीवार यह क्रिया हुई, इसलिये अवहारकालरूप शलाकाराशिममेंसे एक और कम कर
देना चाहिये । इसप्रकार पुन पुन करने पर पल्योपम और अवहारकाल एक साथ समाप्त
हो जाते हैं । इस क्रियामें एकवार जितनी राशि घटाई जाये उतना सासादनसम्यग्दष्टि जीव
राशिका प्रमाण है । इसप्रकार अपहनका कथन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—शलाका राशि ३२ पल्योपम ६५५३६ इस क्रमसे पल्योपममेंसे
१ २०४८ २०४८ और शलाकारूप
३१ ६३४८८ भागद्वारमेंसे एक एक कम
१ २०४८ करते जाते पर दोनों
३० ६१४४०

राशिया एक साथ समाप्त होता हैं । इनमेंसे एकवार घटाई जानेवाली सख्या २०४८ प्रमाण
सासादनसम्यग्दष्टि हैं ।

उस सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण पल्योपमका असख्यातवा भाग है, जो
पल्योपमके असख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । इसप्रकार प्रमाणका घर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—पल्योपम ६५५३६ का प्रथम वर्गमूल २५६ है और सासादनसम्यग्दष्टि
जीवराशिका प्रमाण २०४८ है । २५६ का २०४८ में भाग देने पर ८ आते हैं । इस ८ सख्याको
असख्यातरूप मान लेते पर यह सिद्ध हो जाता है कि पल्योपमके असख्यात प्रथम वर्गमूल
प्रमाण सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशि होती है ।

शुद्धा—किस कारणसे पल्योपमके असख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण सासादनसम्य
ग्दष्टि जीवराशि आती है ?

समाधान—पल्योपमके प्रथम वर्गमूलका पल्योपममें भाग देने पर पल्योपमका प्रथम
वर्गमूल आता है । उसीके दूसरे वर्गमूलका पल्योपममें भाग देने पर, दूसरे वर्गमूलका जितना

जत्तियाणि रूपाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । तदियवग्गमूलेण पलिदोवमे भागे हिदे त्रिदियतदियवग्गमूलाणि अण्णोण्णवत्थे कए तत्थ जत्तियाणि रूपाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि आगच्छति । एदेण क्रमेण असरेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण द्विदअसरेज्जात्रलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे असरेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि आगच्छति चि ण सदेहो । कारणं गदं । तस्स का णिरुत्ती ? असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमपढमवग्गमूले भागे हिदे तत्थ जत्तियाणि रूपाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि । अधवा असरेज्जात्रलियाहि पलिदोवमत्रिदियवग्गमूले भागे हिदे जं भागलद्ध तेण त्रिदियवग्गमूल गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूपाणि तत्तियाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि । अधवा असरेज्जात्रलियाहि पलिदोवमतदियवग्गमूले भागे हिदे ज भागलद्ध तेण त्रिदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा त्रिदियवग्गमूल गुणेऊण तत्थ जत्तियाणि रूपाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि आगच्छति । एदेण क्रमेण असरेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण असंखेज्जात्रलियाहि पदरात्रलियाए भागे हिदाए ज

प्रमाण हो उतने प्रथम वर्गमूल लब्ध आते है । पल्योपमके तीसरे वर्गमूलका पल्योपममें भाग देने पर दूसरे और तीसरे वर्गमूलके प्रमाणका परस्पर गुणा करनेसे जो प्रमाण आवे उतने प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं । इस क्रमसे असख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर जो असख्यात आवलिया स्थित है उनका पल्योपममें भाग देने पर असख्यात प्रथम वर्गमूल आते है । इसमें सदेह नहीं है । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—पल्यके प्रथम वर्गमूल २५६ का ६५५३६ में भाग देने पर २५६ लब्ध आते हैं । दूसरे वर्गमूल १६ का ६५५३६ में भाग देने पर दूसरे वर्गमूल १६ चार २५६ अर्थात् ४०९६ लब्ध आते है । तीसरे वर्गमूल ४ का ६५५३६ में भाग देने पर, दूसरे वर्गमूल १६ और तीसरे वर्गमूल ४ को परस्पर गुणा करनेसे जो ६४ लब्ध आते हैं, उतने अर्थात् ६४ चार प्रथम वर्गमूल २५६ अर्थात् १६३८४ लब्ध आते है । इसीप्रकार उत्तरोत्तर नीचे जाने पर असख्यात प्रथम वर्गमूल लब्ध आयेगे इसमें नेई सदेह नहीं ।

ज्ञाता—असख्यात प्रथम वर्गमूल आते हैं, इसकी निहक्ति क्या है ?

समाधान—असख्यात आवलियोंका पल्योपमके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर जो प्रमाण आवे उतने प्रथम वर्गमूल होते है । अधवा, असख्यात आवलियोंका पल्योपमके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उससे द्वितीय वर्गमूलको गुणित कर देने पर जितना प्रमाण आवे उतने पल्योपमके प्रथम वर्गमूल होते हैं । अधवा, असख्यात आवलियोंका पल्योपमके तीसरे वर्गमूलमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे तीसरे वर्गमूलको गुणित करके उस गुणित राशिसे दूसरे वर्गमूलको गुणित करके वहा जितना प्रमाण आवे उतने प्रथम वर्गमूल होते हैं । इसी क्रमसे असख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर असख्यात आवलियोंका प्रतरावलीमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे प्रतरावलीको गुणित करके, उस गुणित राशिसे प्रतरा-

भागलद्ध तेण पदरात्रलिय गुणेऊण तेण गुणिदराभिणा तदुपरिमरगम गुणेऊण एउमुपरि
मुपरिमवग्गट्ठाणाणि विदियवग्गमूलताणि गिरतर सव्वाणि गुणिदे तत्थ जत्तियाणि
रूपाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि हवति त्ति । गिरुत्ती गदा ।

त्रियप्पो दुपिहो, हेट्ठिमत्रियप्पो उपरिमत्रियप्पो चेदि । तरथ वेरूने हेट्ठिमत्रियप्प
वत्तइस्सामो । असरेज्जावलियाहि पलिदोपमपढमवग्गमूले भागे हिदे ज भागलद्ध तेण
पलिदोवमपढमवग्गमूले गुणिदे सामणसम्माइट्ठिरासी होदि । अवग्गा अवहारकालेण पलि
दोपमत्रियवग्गमूले भागे हिदे ज भागलद्ध तेण त्रियवग्गमूल गुणेऊण तेण गुणिद-
रासिणा पढमवग्गमूले गुणिदे मासणसम्माइट्ठिरासी होदि । अधग्गा अवहारकालेण
पलिदोपमत्रियवग्गमूले भागे हिदे ज भागलद्ध तेण त्रियवग्गमूल गुणेऊण तेण गुणिद-
रासिणा त्रियवग्गमूल गुणेऊण पुणो त्रि तेण गुणिदराभिणा पढमवग्गमूलं गुणिदे

धर्मीके उपरिम वर्गको गुणित करके, इसप्रकार द्वितीय वर्गमूलपर्यंत सव उपरिम उपरिम वर्ग
स्थानोंको निरतर गुणित करने पर वहा जितना प्रमाण आध उतने प्रथम वर्गमूल होत है।
इसप्रकार निरुत्तिका कथन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—असख्यात आवलीप्रमाण ३० का भाग पत्यके प्रथम वर्गमूल २५६ में देने
पर ८ लब्ध आते हैं । इसप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि २०४८ में ८ ही प्रथम वर्गमूल
होते हैं । द्वितीय वर्गमूल १६ म ३२ का भाग देने पर ३ लब्ध आता है । इसका द्वितीय वर्ग
मूलसे गुणा करने पर ८ लब्ध आते हैं । तृतीय वर्गमूल ४ में ३२ का भाग देने पर ८ लब्ध
आता है । इसका, दूसरे १६ आर तीसरे ४ वर्गमूलसे परस्पर गुणनफल ६४ से, गुणा कर देने
पर ८ लब्ध आते हैं । इसप्रकार सर्वत्र समझ लेना चाहिये ।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तनविकल्प और उपरिमविकल्प । उन दोनोंमेंसे पहले
ठिरूपवर्गधारामें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं—

असख्यात आरलियोंसे पत्योपमके प्रथम वर्गमूलको गुणित करने पर सासादन
सम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है ।

उदाहरण—पत्योपम ६५३६ का प्र वर्गमूल २५६ असख्यात आवलिया ८

$$२ \times ८ = २०४८ \text{ सा}$$

अथवा अवहारकालका पत्योपमके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर जो भाग लब्ध
आये उससे द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके उस गुणित राशिसे प्रथम वर्गमूलके गुणित
करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है ।

उदाहरण—२०१३६ का द्वितीय वर्गमूल १४० अवहारकाल ३२,

$$१६ - ३२ = ३, १६ \times ३ = ८, २५६ \times ८ = २०४८ \text{ सा}$$

अथवा, अवहारकालका पत्योपमके तृतीय वर्गमूलमें भाग देने पर जो भाग लब्ध
उसमें तृतीय वर्गमूलको गुणित करके उस गुणित राशिसे द्वितीय वर्गमूलको गुणित
करके भी उस गुणित राशिसे प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि

सासणसम्माइडिरासी होदि । एदेण कमेण अमखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेद्दा ओसरिऊण असखेज्जावलियाहि पदरावलियाए भागे हिदाए जं भागलद्ध तेण पदरावलियं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा तदुपरिमग्ग गुणेऊण एवमुपरिमग्गट्ठाणाणि पढमवग्गमूलताणि सव्वाणि निरतर गुणिदे सासणसम्माइडिरासी होदि । जदि वि निरुत्तिं भण्णमाणे एसो अत्थो पुच्चं परूविदो तो वि ण पुणरुत्तो होदि, तिण्णि वि उग्गधाराओ अस्सिऊण हिदेहेट्ठिमत्रियप्पसत्रधत्तादो । वेरूणे हेट्ठिमत्रियप्पो गदो ।

अट्टरूणे हेट्ठिमवियप्पं चत्तइस्सामो । असखेज्जावलियाहि पलिदोवमपढमउग्गमूलं गुणेऊण तेण घणपल्लपढमउग्गमूले भागे हिदे सासणसम्माइडिरासी होदि । केण कारणेण ? पलिदोवमपढमउग्गमूलेण घणपल्लपढमउग्गमूले भागे हिदे पलिदोवममागच्छदि । पुणो असखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइडिरासी आगच्छदि । एवमाग-

जीवराशि होती है ।

उदाहरण—६५३६ का तृतीय वर्गमूल ४।

$$४ - ३२ = ६, ४ \times ६ = २४, १६ \times ६ = ९६, २५६ \times ६ = १५३६$$

इसी क्रमसे अक्षरयात वर्गस्यात नीचे जाकर अक्षरयात आवलियोंका प्रतरावलीमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे प्रतरावलीको गुणित करके उस गुणित राशिले प्रतरावलीके उपरिम वर्गको गुणित करके इसीप्रकार प्रथम वर्गमूलपर्यन्त उपरिम उपरिम सपूर्ण वर्गस्यानोंको निरन्तर गुणित करने पर सासादनसम्बन्धे जीवराशि होती है ।

उदाहरण—प्रतरावलि = २।

$$२ - ३२ = ३०, २ \times ३० = ६०, ४ \times ३० = १२०,$$

$$१६ \times ३० = ४८०, २५६ \times ६० = १५३६०$$

यद्यपि निरुक्ति का कथन करते समय यह विषय पहले यद्वा पर कइ आवे हैं, तो भी इस विषयके यद्वा पर पुन कथन करनेसे पुनरुक्त दोष नहीं होता है, क्योंकि, यद्वा पर तीनों ही वर्गधाराओंका आश्रय लेकर स्थित अधस्तन विकल्पना सयन्ध है । इसप्रकार द्विरूप वर्गधारामें अधस्तन विकल्पका कथन समाप्त हुआ ।

अथ घनधारामें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं । अक्षरयात आवलियोंसे पल्योपमके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनपल्यके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर सासादनसम्बन्धे जीवराशि होती है, क्योंकि, पल्योपमके प्रथम वर्गमूलसे घनपल्यके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर पल्योपमका प्रमाण आता है । अनन्तर अक्षरयात आवलियोंसे पल्योपमके भाजित करने पर सासादनसम्बन्धे जीवराशि आती है । घनपल्यमें इसप्रकार सासादनसम्बन्धे जीवराशि आती है, ऐसा समझ कर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

उदाहरण—पल्योपमका प्रथम वर्गमूल २५६। घनपल्यका प्रथम वर्गमूल १६७७७२१६।

$$२५६ \times ३२ = ८१९२, १६७७७२१६ - ८१९२ = १६७७६४००$$

चूडि ति कट्टु गुणेऊग भागगहण कद । अदरूरे हेडिमरियप्पो भरदु णाम, वेरूवे हेडिमरियप्पो ण घडदे । केण कारणेण ? अरहारकालेण पलिदोममादो हेडिमरियप्पो-
 ट्टाणाणि भागे हिदे सासणसम्माडडिरासी ण उप्पज्जदि ति । ण एम दोमो, पलिदोम
 मादो हेडिमरियप्पोणाणि अरहारकालेणोत्तिय तप्पाओग्गमग्गट्टाणाणि गुणिदे केवल
 मोवडिदे च जत्थ रासी आगच्छदि तो हेडिमरियप्पो ति अरुग्गममादो । मिच्छा
 इडिरासिपरूणए नि एदमिह णए अवलभिज्जमाणे वेरूवे हेडिमरियप्पो अत्थि ति
 वत्तव्वो ? एमा परूणणा जेण अरहारकालपहाणा तेण पलिदोममादो हेडिमरियप्पोणाणि
 अवहारेणोवट्ठिय जिदि सासणसम्माडडिरासी उप्पाइदु सक्किज्जदे तो हेडिमरियप्पोस्त नि
 समवो होज्ज । ण च एव वेरूणधाराण समभइ । एद णयमस्सिऊग मिच्छाडडिरासि-
 परूणणाए हेडिमरियप्पो णत्थि ति भणिद । एसो णओ एत्थ पहाणो । एवमट्टरू-
 पवणा गत्ता ।

शुद्धा—घनधारा में अधस्तन विकल्प रहा अये, परन्तु छिन्न वगधारा में अधस्तन
 विकल्प घडित नहीं होता है क्योंकि, अवहारकालका पल्योपमसे नाचिके वर्गस्थानों में भाग
 दिया जाता है तो सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशि उ पन्न नहीं होती है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, पल्योपमसे नाचिके वर्गस्थानोंको अथ
 वारकालसे अपघतित करके जो लघु अये उसमें उसके योग्य वर्गस्थानोंके गुणित करने पर
 अथवा, केवल अपघतित करने पर, अर्थात् पल्योपमको अवहारकालमें भाजित करने पर, जहा
 पर सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशि आती है यह अधस्तन विकल्प यहा पर स्वीकार
 किया गया है ।

उदाहरण—पल्योपमका अधस्तन वर्गस्थान = ४ ६ २५६ - ३२ = ८, २५६ × ८
 = २०४८ सा अथवा ६ ५३६ - ३२ = २०४८ सा

शुद्धा—मिथ्यादष्टि जीवराशिकी प्ररूपणामें भी इस नयके अचलभ्यन करने पर
 द्विरूपवर्गधारा में अधस्तन विकल्प घन जाता है, इसलिये यहा पर उसका कथन करना
 चाहिये था ?

समाधान—क्योंकि यह प्ररूपणा अवहारकालप्रधान है, इसलिये पल्योपमसे नाचिके
 वर्गस्थानोंको अवहारकालसे भाजित करके यदि सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशि उत्पन्न करना
 शक्य है तो यहा पर अधस्तन विकल्प भी समभव है । परन्तु मिथ्यादष्टि जीवराशिना प्रमाण
 निकालने समय द्विरूपवगधारा में इसप्रकार अधस्तन विकल्प समभव नहीं है । इसी
 समयका आशय करके मिथ्यादष्टि जीवराशिकी प्ररूपणामें अधस्तन विकल्प नहीं होता, ऐसा
 कहा है । यह नय यहा पर प्रधान है । इसप्रकार घनधारा समाप्त हुई ।

विशेषार्थ—सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिना प्रमाण निकालनेके लिये अस्तरयात आधली

घणाघणे वत्तइस्सामो । असखेज्जाअलियाहि पलिदोअमपढमअग्गमूल गुणेऊण तेण
घणपल्लविदियअग्गमूल गुणेऊण तेण घणाघणपल्लविदियअग्गमूले भागे हिदे सासणसम्मा-
इडिरासी आगच्छदि । केण ऋरणेण ? घणपल्लविदियअग्गमूलेण अणाघणपल्लविदियअग्गमूले
भागे हिदे घणपल्लपढमअग्गमूलमागच्छदि । पुणो त्रि पलिदोअमपढमअग्गमूलेण घणपल्ल-
पढमअग्गमूले भागे हिदे पलिदोअमपढमअग्गमूलेण पणो त्रि अमखेज्जाअलियाहि पलिदोअम
भागे हिदे सासणसम्माइडिरासी आगच्छदि । एअमागच्छदि त्ति ऋडु गुणेऊण भागअग्गहण
कदं । एत्थ दुगुणादिकरणे कदे हेट्ठिमवियणो समप्पदि ।

उपरिमवियणो त्रिणिहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ
वेरूअधाराए गहिद वत्तइस्सामो । अमखेज्जाअलियाहि पलिदोअम भागे हिदे सासणसम्मा-

प्रमाण जो भागद्वार हे वह पल्योपमके प्रथम वर्गमूलसे छोटा है, इसलिये यहा पर अधस्तन
विकल्प बन जाता है । परन्तु मिथ्यादाष्टि जीवराशिका प्रमाण निकालनेके लिये जो भागद्वार
कहा आये है वह जीवराशिके उपरिम वर्गके प्रथम वर्गमूलरूप जीवराशिके बडा है, अतएव
यहा पर द्विरूपवर्गधारामें अधस्तन विकल्प किसी प्रकार भी सम्भव नहीं है ।

अथ घनाघनधारामें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं—असख्यात आवलियोंसे पल्यो
पमके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आये उससे घनपल्यके द्वितीय वर्गमूलको गुणित
करके जो लब्ध आये उसका घनाघनपल्यके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दाष्टि
जीवराशिका प्रमाण आता है, क्योंकि, घनपल्यके द्वितीय वर्गमूलका घनाघन पल्यके द्वितीय
वर्गमूलमें भाग देने पर घनपल्यका प्रथम वर्गमूल आता है । अनन्तर पल्योपमके प्रथम वर्ग
मूलका घनपल्यके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर पल्योपम आता है । अनन्तर असख्यात आव-
लियोंका पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दाष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है । घनाघन
धारामें इसप्रकार सासादनसम्यग्दाष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, ऐसा समझकर पहले गुणा
करके अनन्तर भागका ग्रहण क्रिया ।

उदाहरण—पल्योपमका प्रथम वर्गमूल २५६, घनपल्यका द्वितीय वर्गमूल ४००६,
घनाघन पल्यका द्वितीय वर्गमूल ६८७१० ४७६७३६,

$$\frac{६८७१०४७६७३६}{३२ \times २५६ \times ४००६} = २०४८ \text{ सा}$$

यहा पर द्विगुणाधिकरणके कर लेने पर अधस्तन विकल्प समाप्त हो जाता है ।

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार । उनमेंसे
पहले द्विरूप वर्गधारामें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—असख्यात आवलियोंका
पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दाष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—६५५३६ - ३२ = २०४८ सा

इन्द्रिरामी आगच्छदि । तस्म भागहारस्म अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्म अद्वच्छेदणए कदे
 पि सासणसम्माइन्द्रिरामी आगच्छदि । एव तिय चउक् पचाटिछेदणाणि पि अवलयिय
 मासणसम्माइन्द्रिरामी उवाएदवो । अवरा असरेज्जात्रलियाहि पलिदोवम गुणेऊण
 पदरपळे भागे हिदे सासणसम्माइन्द्रिरामी जागच्छदि । केण कारणेण ? पलिदोवमेण
 पदरपळे भागे हिदे पलिदोवममागच्छदि । पुणे पि असरेज्जात्रलियाहि पलिदोवमे
 भागे हिदे सासणसम्माइन्द्रिरामी आगच्छदि । एवमागच्छदि ति कट्टु गुणेऊण भागगहण
 वत् । तस्म भागहारस्म अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्म अद्वच्छेदणए कदे सासणसम्माइन्द्रि

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हैं उतनीवार पत्योपम राशिके अर्धच्छेद करने
 पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—३२ भागहारके ' अर्धच्छेद होते हैं, अत इतनीवार ६' ५३६ के अर्धच्छेद
 करने पर २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है ।

इसप्रकार त्रिकछेद, चतुष्कछेद और पचछेद आदिका अवलयन करके भी सासादन
 सम्यग्दृष्टि जीवराशि उत्पन्न कर लेना चाहिये ।

$$\begin{array}{r} \text{उदाहरण—३० के त्रिकछेद} \\ \begin{array}{r} १ \quad २ \quad ३ \\ ३० \quad ३२ \quad ३२ \\ ३ \quad ९ \quad २७ \end{array} \\ \begin{array}{r} ६' ३६ \text{ के त्रिकछेद} \\ \frac{६१ \ ३२}{३} \quad \frac{६१ \ ३६}{९} \quad \frac{६१ \ ५३६}{२७} \\ \frac{२१५३६}{२७} - \frac{३२}{२७} = २०४८ \text{ सा} \end{array} \end{array}$$

इसीप्रकार चतुष्कछेद आदि के भी उदाहरण बना लेना चाहिये ।

अथवा, असरपात आणलियाँसे पत्योपमको गुणित करके जो लब्ध आवे
 उसका प्रतरपत्यमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता
 है । इसका कारण यह है कि पत्योपमका प्रतरपत्यमें भाग देने पर पत्योपम
 आता है, और फिर असरपात आणलियाँका पत्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि
 जीवराशिका प्रमाण आ जाता है । द्विरूपवर्गीयारामें इसप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि जीव
 राशिका प्रमाण आता है, अतएव पहले गुणा करके अनंतर भागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{६५५३६}{६५५३६ \times ३२} = २०४८ \text{ सासादनसम्यग्दृष्टि}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हैं उतनीवार उक्त भवमान राशिके अर्धच्छेद
 करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—३२ × ६५५३६ रूप भागहारके २१ अर्धच्छेद होते हैं, इसलिये इतनीवार
 ६५५३६ × ६ ५३६ के अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है ।

१ प्रतिशु ' मेसे सरित्त्व वेदणए' इति १३३ ।

रासी आगच्छदि । तस्म अद्वच्छेदणयसलागा केत्तिया ? अमरेजेज्जावलियाद्वच्छेदण-
याहियपलिदोवमद्वच्छेदणयमेत्ता । अधया असरेजेज्जावलियाहि पलिदोवम गुणेऊण तेण
गुणितरासिणा पदरपल्ल गुणेऊण तस्सुपरिमरगगे भागे हिदे सासणसम्माइडिरासी आग
च्छदि । केण कारणेण ? पदरपल्लेण तस्सुपरिमरगगे भागे हिदे पदरपल्लो आगच्छदि ।
पुणो वि पलिदोवमेण पदरपल्ले भागे हिदे पल्लो आगच्छदि । पुणो असरेजेज्जावलियाहि
पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइडिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि ति कट्टु गुणेऊण
भागगहण कद । तस्म भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि
सासणसम्माइडिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयसलागा केत्तिया ?
पलिदोवमादो उरिरे चडिदद्वानमलमाओ विरलिय निग करिय अण्णोण्णभत्थरासि-
रूपणेण पलिदोवमस्म अद्वच्छेदणाओ गुणिय असरेजेज्जावलियाणं छेदणापकिसत्तमेत्ता ।

शंका — उक्त भागहारकी अर्धच्छेद शलाकाए कितनी है ?

समाधान — असरपात आवलियोंके अर्धच्छेदोंको पर्योपमके अर्धच्छेदोंमें मिला देने
पर जितना प्रमाण आवे उतनी उक्त भागहारकी अर्धच्छेद शलाकाए है ।

उदाहरण—३२ के अर्धच्छेद ५ और ६५५३६ के अर्धच्छेद १६ इन दोनोंका जोड़ २१
होता है । यही ३२ × ६५५३६ के अर्धच्छेद जानना चाहिये ।

अथवा, असरपात आवलियोंसे पर्योपमकी गुणित करके जो गुणा की
हुई राशि लब्ध आवे उससे प्रतरपल्यकी गुणित करके जो राशि लब्ध आवे
उसका प्रतरपल्यके उपरिम वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका
प्रमाण आता है, क्योंकि, प्रतरपल्यका प्रतरपल्यके उपरिम वर्गमें भाग देने
पर प्रतरपल्य आता है । पुन पर्योपमका प्रतरपल्यमें भाग देने पर पर्योपम आता है ।
पुन असरपात आवलियोंका पर्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण
आता है । द्विरूप वर्गधारामें इसप्रकार भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है,
इसलिये पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

उदाहरण— $\frac{६५५३६' \times ६५५३६'}{३२ \times ६५५३६ \times ६५५३६} = २०४८$ सा

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों, उतनीवार उक्त राशिके अर्धच्छेद करने पर भी
सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—३२ × ६५५३६ × ६५५३६ रूप भागहारके ५३ अर्धच्छेद होते हैं, इसलिये
इतनीवार ६५५३६' × ६५५३६' प्रमाण भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ आते हैं ।

शंका—उक्त भागहारकी अर्धच्छेदशलाकाए कितनी है ?

समाधान—पर्योपमसे ऊपर दो स्थान आवे ह, इसलिये दोका विरलन करके
ओर उस विरलित राशिके प्रत्येक पररूपको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न
होये उसमेंसे एक कमा कर जो शेष रहे उससे पर्योपमके अर्धच्छेदोंकी गुणित करके जो
लब्ध आवे उसमें असख्यात आवलियोंके अर्धच्छेदोंके मिला देने पर उक्त भागहारकी अर्धच्छेद

रिमवग्ग गुणेऊण तेण घणाघणपल्ले भागे हिदे सासणसम्माडट्टिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? घणपल्लउवरिमवग्गेण घणाघणपल्ले भागे हिदे घणपल्लो आगच्छदि । पुणो वि पदरपल्लेण घणपल्ले भागे हिदे पलिदोपमो आगच्छदि । पुणो वि अससेज्जावलियाहि पलिदोपमे भागे हिदे सामणसम्माडट्टिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहण कद । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्म अद्वच्छेदणए कदे वि सामणसम्माडट्टिरासी आगच्छदि । तस्म अद्वच्छेदणयसलामा केत्तिया ? रूणणमहि रूवेहि पलिदोपमस्म अद्वच्छेदणए गुणिय अमसेज्जावलियद्वच्छेदणयपक्खित्तमेत्ता । अधरा अससेज्जावलियाहि पदरपल्ल गुणेऊण तेण घणपल्लउवरिमवग्ग गुणेऊण तेण पुणो घणाघणपल्ल गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे सासणसम्माडट्टिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? घणाघणेण उवरिमवग्गे भागे हिदे घणाघणो आगच्छदि । पुणो वि

वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनाघनपल्यम भाग देने पर सासादन सम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है क्योंकि, घनपल्यके उपरिम वर्गका घनाघनपल्यमें भाग देने पर घनपल्य आता है । पुन प्रतरपल्यका घनपल्यमें भाग देने पर पल्योपम आता है । पुन असरयात आवलियोंका पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है । घनाघनधारामें इसप्रकार सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशि आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनंतर भागना ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{६५३२^३ \times ६५३६^३ \times ६५३६^३}{३२ \times ६५३६^३ \times ६५३६^३ \times ६५३६^३} = २०४८ \text{ सा}$$

उक्त भागद्वारके जितने अर्धच्छेद हों उतनावार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण आ जाता है ।

उदाहरण—उक्त भागद्वारके अर्धच्छेद १३३ होते ह, इसलिये उतनीवार उक्त भज्य मान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशि २०४८ आती है ।

प्रश्ना— उक्त भागद्वारकी अर्धच्छेदशलाकाय कितनी है ?

ममाधान— नोमेंसे एक कम करके जो शेष रहते हैं उनसे पल्योपमके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें असरयात आवलियोंके अर्धच्छेद मिला देने पर उक्त भाग द्वारके अर्धच्छेद होते ह ।

$$\text{उदाहरण—} २ - १ = ८ \times १० = १२८ + ५ = १३३$$

अथवा, असरयात आवलियासे प्रतरपल्यको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनपल्यके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें घनाघनपल्यको गुणित करके आवे हुए लब्धका घनाघनपल्यके उपरिम वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, क्योंकि, घनाघनपल्यका उसके उपरिम वर्गमें भाग देने पर घनाघनपल्य

प्रश्न 'घनपल्ल' शिवाय ।

घणपल्लुरिमत्रगेण घणाघणे भागे हिदे घणपल्लो आगच्छदि । पुणो वि पदरपल्लेण
 घणपल्ले भागे हिदे पलिदोत्रमो आगच्छदि । पुणो वि अससेजापलियाहि पलिदोवमे
 भागे हिदे सासणसम्माइडिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि चि कड्डु गुणेऊण भागग्गहण
 कद । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्मा-
 इडिरासी आगच्छदि । तस्सद्धच्छेदणयमलागा केत्तिया ? एगघणाघणत्रग्गसलाग विरलिय
 त्रिग करिय अण्णोण्णवभत्थकदणत्रगुणरूवृणराभिणा पलिदोवमद्धच्छेदणए गुणिय अस-
 सेजापलियाण अद्धच्छेदणयपक्खित्तमेत्ता । एउ दोण्णि-चत्तारि-आदि-त्रग्गट्टाणाणि
 विरलिय त्रिगुणिदण्णोण्णवभत्थणवगुणरूवृणरासिणा पलिदोत्रमद्धच्छेदणा गुणिय सादिरेगा

आता है । पुन घनपल्यके उपरिम वर्गका घनाघनपदयमें भाग देने पर घनपल्य आता है ।
 पुन प्रनरपल्यका घनपदयमें भाग देने पर पदयोपम आता है । पुन असख्यात आयलियोंका
 पदयोपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है । घनाघनधारामें
 इसप्रकार भी सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, इसलिये पहले गुणा करके
 अनन्तर भागका गहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{६५५३६^३ \times ६५५३६^३}{३७ \times २५,३६ \times ६५५३६^३ \times ६५५३६^३ \times ६५५३६^३} = २७८ \text{ सा}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भव्यमान राशिके अर्धच्छेद
 करने पर भी सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके २७७ अर्धच्छेद होते हैं, अत इतनीवार उक्त भाग्य
 राशिके अर्धच्छेद करने पर २७८ प्रमाण सासादनसम्यग्दष्टि राशि आती है ।

शुका—उक्त भागहारकी अर्धच्छेदशलाकाय कितनी होती है ?

समाधान—घनाघनरूप एक वर्गशलाकाका विरलन करके ओर उसे दो रूप करके
 परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुए दोको नासे गुणा करने पर जो राशि उत्पन्न हो उसमेंसे एक
 कम करके जो शेष रहे उससे पदयोपमके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें
 असख्यात आयलियोंके अर्धच्छेदोंके मिला देने पर उक्त भागहारके अर्धच्छेदोंका प्रमाण
 भा जाता है ।

$$\text{उदाहरण—} २ = २ \times २ = ४ - १ = १७ \times १५ = २७७ + ५ = २७७$$

इसप्रकार दो वर्गस्थान या चार वर्गस्थान आदि ऊपर गये हों तो दो या चार
 आदिका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा
 करनेसे जो राशि आवे उसे नासे गुणा करके जो लब्ध आवे उसमेंसे एक कम करके, जो शेष
 रहे उसे पदयोपमके अर्धच्छेदोंसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें असख्यात आयलियोंके
 अर्धच्छेद मिला कर सर्वत्र भागहारके अर्धच्छेद उत्पन्न कर लेना चाहिये । सर्वत्र द्विगुणादि-

करिय भागहारद्वन्द्वेदणया उप्पाएदच्चा । सव्यत्थ दुग्णादिकरणं कादच्च । गहिद-
परुवणा गदा ।

गहिदगहिद वचइस्सामो । त जहा, पलिदोवमस्स असरोज्जदिभागेण वेरुप
धाराए उवरि इन्दिउदवग्गे भागे हिदे ज भागलद्ध तेण तग्ग्हि चैव वग्गे भागे हिदे
सामणसम्माइद्विरासी आगच्छदि । तस्म भागहारस्स अद्वन्द्वेदणयमेत्ते रासिस्स
अद्वन्द्वेदणए कदे पि सासणसम्माइद्विरामी आगच्छदि । एवमुपरि सव्यत्थ कापव्व ।
वेरुवपम्पणा गदा । अहम्मे वचइस्सामो । घणपल्लपदमग्गमूलस्म असरोज्जदिभागेण
सासणसम्माइद्विरामिणा उवरि इन्दिउदवग्गे भागे हिदे ज भागलद्ध तेण तग्ग्हि चैव
वग्गे भागे हिदे सासणसम्माइद्विरासी आगच्छदि । तस्म भागहारस्स अद्वन्द्वेदणयमेत्ते

करण कर लेना चाहिये । इसप्रकार गृहीत उपरिमविकल्पक प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं । यह इसप्रकार है— पल्लोपमये
असत्यातर्वे भाग (सासादानसम्यग्द्विराशि) का द्विरूपवर्गधाराम ऊपर इच्छित वर्गमें भाग
देने पर जो भाग ल'घ आये उसका उसी इच्छित वर्गमें भाग देने पर सासादानसम्यग्द्वि
जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—६' ५३६ का इच्छित वर्ग ६५' ३६'

$$\frac{६५५३६'}{२०४८} = ६५' ३६" \times ३२ \quad \frac{६५' ३६"}{६५' ३६" \times ३२} = २०४८ \text{ सा}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हा उतनीवार उक्त भाज्य राशिके अर्धच्छेद करने
पर भी सासादानसम्यग्द्वि राशि आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके २१ अर्धच्छेद है, अत इतनीवार उक्त भाज्यमान राशिके
अर्धच्छेद करने पर २०४८ प्रमाण सासादानसम्यग्द्वि राशि आती है ।

इसप्रकार ऊपरके वर्गस्थानोंमें भी सर्वत्र करना चाहिये । इसप्रकार द्विरूपवर्गधारिका
प्ररूपणा समाप्त हुई । अब घनधारामें गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—

घनपल्लके प्रथम वर्गमूलके असत्यातर्वे भागरूप सासादानसम्यग्द्वि जीवराशिका
ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग ल'घ आये उसका उसी इच्छित वर्गमें भाग देने
पर सासादानसम्यग्द्वि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—घन ६५' ३६' का प्रथम वर्गमूल २५२'

$$\frac{२५२'}{२५२' \times ३२} = २०४८, \frac{६५' ३६" \times ६५' ३६"}{२०४८} = ६५' ३६" \times ३२$$

$$\frac{६५' ३६"}{६५' ३६" \times ३२} = २०४८ \text{ सा}$$

रासिस्म अद्वच्छेदण ऋदे वि सासणसम्माइट्टिरासी आगच्छदि । एवं सव्यत्थ परू-
वेदव्य । अद्वरूपरूणणा गदा । घणाघणे वत्तइस्सामो । घणाघणपल्लविदियवग्गमूलस्स
असंखेज्जदिभागेण सासणसम्माइट्टिरासिणा उररि इच्छिदवग्गे भागे हिदे ज भागलद्व तेण
तम्हि चेव वग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्टिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स
अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदण ऋदे वि सासणसम्माइट्टिरासी आगच्छदि ।
गहिदगहिदे गदो ।

गहिदगुणगार वत्तइस्सामो । पलिदोपमस्स अतखेज्जदिभागेण सासणसम्माइट्टि-
रासिणा उररि इच्छिदवग्गे भागे हिदे ज भागलद्व तेण तमेव वग्ग गुणेऊण तस्सुउरिम-

उक्त भागहारके अर्धच्छेदप्रमाण उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी
सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ८५ अर्धच्छेद होते हैं, अत इतनीवार उक्त भज्यमान
राशिके अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टिराशि आती है ।

इसीप्रकार सर्वत्र प्ररूपण करना चाहिये । इसप्रकार घनधारा समाप्त हुई । अथ
घनाघनधारामें गृहीतगृहीत उपरिम विकल्प बतलाते हैं—

घनाघनपर्यके द्वितीय वर्गमूलके असख्यातवें भागरूप सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिके
प्रमाणका घनाघनपर्यके ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका उसी
वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—घनाघन ६५३६ का द्वितीय वर्गमूल १६; १६ का असख्यातवा भाग
 २×१६ ,

$$\frac{१६}{२ \times १६} = २०४८, \quad \frac{६५३६ \times ६५३६}{२०४८} = ६५३६ \times ३२$$

$$\frac{६५३६ \times ६५३६}{६ \times ३६ \times ३२} = २०४८$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद
करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके २७७ अर्धच्छेद होते हैं, अत इतनीवार उक्त भज्य
मान राशिके अर्धच्छेद करने पर २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है । इसप्रकार
गृहीतगृहीत उपरिम विकल्प समाप्त हुआ ।

अथ गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—पर्योपमके असख्यातवें भागरूप
सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्रमाणका पर्योपमके ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो
भाग लब्ध आवे उससे उसी इच्छित वर्गको गुणित करके आई हुई लब्ध राशिका इच्छित
वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

वर्गमे भागे हिदे सासणसम्माइट्टिरासी आगच्छदि । तस्म भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदण कदे पि सासणसम्माइट्टिरासी अवचिद्धेदे । एयं सव्वत्थ वत्तव । वेरुवपरूपाणा गदा । अट्टरूने वत्तइस्सामो । घणपल्लपढमउग्गमूलस्स असत्तेज्जदिभागेण सासणसम्माइट्टिरासिणा उपरि इच्छिद्धवग्गे भागे हिदे ज भागलद्ध तेष तमेव वग्ग गुणेऊण तस्सुपरिमवग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्टिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रामिम्म अद्धच्छेदण कदे पि सासणसम्माइट्टिरासी अवचिद्धेदे । एयं सव्वत्थ वत्तव । अट्टरूपरूपाणा गदा । घणाघणे वत्तइस्सामो । घणाघण

$$\text{उदाहरण—} \frac{६५५३६^१}{२०४८} = ६५५३६ \times ३२, \quad ६५^१ ३६^१ \times २५^१ ३६^१ \times ३२ = ६५५३६^१ \times ३२$$

$$\frac{६५५३६^१ \times ६५^१ ३६^१}{६५५२५ \times ३२} = २०४८ \text{ सा}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भयमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशि ही आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ५३ अर्धच्छेद होते हैं, अतएव इतनीवार उक्त भयमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दष्टि राशि आती है ।

इसीप्रकार सर्वत्र करना चाहिये । इसप्रकार द्विरूपप्ररूपणा समाप्त हुई । अब अष्ट रूपमें गृहीतगुणकार उपरिम चिह्नरूपको बतलाने हैं—

घनपत्थके प्रथम वर्गमूलके असरपातवें भागरूप सासादनसम्यग्दष्टि राशिका घन पत्थके ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे उसी इच्छित वर्गको गुणित करके भाई हुई लब्ध राशिना इच्छित वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर सासादन सम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—६५५३६^१ का प्रथम वर्गमूल २५६^१;

$$\frac{२५६^१}{३२ \times २६} = २०४८, \quad \frac{६५५३६^१ \times ६५५३६^१}{२०४८} = ६५५३६^१ \times ३२;$$

$$६^१ ५६^१ \times ६५^१ ३६^१ \times ३२ = ६^१ ५३६^१ \times ३२;$$

$$\frac{६५५३६^१ \times ६५५३६^१}{६^१ ३६^१ \times ३२} = २०४८ \text{ सा}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भयमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशि आती है ।

उक्त भागहारके १८^१ अर्धच्छेद होते हैं, अतएव इतनीवार उक्त भयमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दष्टि राशि आती है ।

इसीप्रकार सर्वत्र करना चाहिये । इसप्रकार अष्टरूप प्ररूपणा समाप्त हुई । अब

विदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण सासणसम्माइडिरासिणा उपरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे ज भागलद्ध तेण तमेव वग्गं गुणेऊण तस्सुपरिमवग्गे भागे हिदे सासणसम्माइडिरासी जागन्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे पि सामणमम्माइडिरासी अवचिद्धदे । एव सच्चत्थ घणाघणधाराए वत्तव्वं । गहिदगुणमारो गदो । एव सासणसम्माइडिपरूवणा समत्ता । एव सम्मामिच्छाड्डिअसंजदसम्माइडिअसजदासजदाण च उच्चव्वं । णवरि विसेसो अप्पणो अवहारकालेहि गहिदादभो उच्चवा । एत्थ एदेसिं संदिद्धिं उच्चस्सामो—

वर्त्तस सोलस चत्तारि जाण सदसहिदमद्ववीस च ।

एदे अवहारत्था हवति सदिट्ठिणा दिट्ठा ॥ ३७ ॥

घनाघनधारामें गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पको घतलाते हैं—

घनाघनके द्वितीय वर्गमूलके असरयातवें भागरूप सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका घनाघनपरत्यके ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे उसी इच्छित वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका उसी इच्छित वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

$$\begin{aligned} \text{उदाहरण—} \frac{१६}{२ \times १६} &= ००४८, \quad \frac{६५७३६' \times ६५७३६'}{००४८} = ६५७३६' \times ३०, \\ ६५७३६' \times ६५७३६' \times ३२ &= ६५७३६' \times ३०, \\ \frac{६५७३६'}{६५७३६' \times ३२} &= २०४८ \text{ सा} \end{aligned}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ५६५ अर्धच्छेद होते हैं, इसलिये इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दष्टि राशि आती है ।

सर्वत्र घनाघनधारामें आगे भी इसीप्रकार कहना चाहिये । इसप्रकार गृहीतगुणकार उपरिम विकल्प समाप्त हुआ ।

इसप्रकार सासादनसम्यग्दष्टि प्रपणा समाप्त हुई ।

इसीप्रकार सम्यग्मिध्याहृष्टि, असयतसम्यग्दष्टि और सयतासयत जीवराशिके प्रमाणका खण्डित, भाजित आदिके द्वारा कथन करना चाहिये । इतनी विशेषता है कि अपने अपने अवहारकालके द्वारा ही खण्डित, भाजित आदिका कथन करना चाहिये । आगे इन सबकी अक्षमदष्टि घतलाते हैं—

सासादनसम्यग्दष्टिसंघन्धी अवहारकालका प्रमाण ३२, सम्यग्मिध्याहृष्टिसंघन्धी अवहारकालका प्रमाण १६, असयतसम्यग्दष्टिसंघन्धी अवहारकालका प्रमाण ४, और सयता

पण्णहा च सहस्सा पचसया मत्तु उउत्तरा तीस ।
 पलिदोवम तु एय त्रियाण सदिट्ठिणा दिट्ठ ॥ ३८ ॥
 तिमहस्स अडयाठ्ठ एण्णउदी चैय चदुसहस्साणि ।
 सोलसहस्साणि पुणो तिण्णिसया चउरसीदीवा ॥ ३९ ॥
 पचसय मारुत्तमुदिदाइ तु लद्धदव्वाइ ।
 सासण भिस्सासजद-भिरदाविरदाण णु कमेण ॥ ४० ॥

सासणसम्माइट्ठी ३२, सम्मामिच्छाइट्ठी १६, असजदसम्माइट्ठी ४, सनदासन्द १२८; एदे अग्रहारकाला । सासणसम्माइट्ठिद्वयपमाण २०४८ सम्मामिच्छाइट्ठिद्वयपमाण ४०९६ असजदसम्माइट्ठिद्वयपमाण १६३८४ सजदामजदद्वयपमाण ५१२ । पलिदोवमपमाण ६५५३६' ।

पमत्तमंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, कोटिपुधत्तं ॥ ७ ॥

पमत्तमजदग्गहर्णं सेसणुणट्ठाणाण पडिसेहट्ठ । कोटिपुधत्तमहण सेमसराणिता

सयतसयधी अग्रहारकालका प्रमाण १०८ जानना चाहिये । सम्यग्ज्ञानियोंके द्वारा दैते गये ये अग्रहारार्थ हैं ॥ ३७ ॥

पंसठ हजार पाचसौ छत्तीसको पन्न्योपम जानना चाहिये ऐसा सम्यग्ज्ञानियोंके अथलोकन किया है ॥ ३८ ॥

सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण २०४८, सम्यग्मिथ्यादष्टि जीवराशिका प्रमाण ४०९६, असयतसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण १६३८४ और सयतासयत जीवराशिका प्रमाण ५१२ जाता है ॥ ३९-४० ॥

सासादनसम्यग्दष्टिसयधी भागहार ३२, सम्यग्मिथ्यादष्टिसयन्धी भागहार १६, असयतसम्यग्दष्टिसयधी भागहार ४ और सयतासयतसयधी भागहार १२८ है । सासादन सम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण २०४८, सम्यग्मिथ्यादष्टि जीवराशिका प्रमाण ४०९६, असयत सम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण १६३८४ और सयतासयत जीवराशिका प्रमाण ५१२ है । तथा पन्न्योपमका प्रमाण ६५५३६ समझना चाहिये ।

प्रमत्तमयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने है ? कोटिपुधत्तत्वप्रमाण ह ॥ ७ ॥

शेष गुणस्वरानोंका प्रतिपेक्ष करनेके लिये प्रमत्तसयतपदका ग्रहण किया है । शेष सयताओंका निराकरण करनेके लिये कोटिपुधत्तत्व पदका ग्रहण किया है ।

१ प स पृ ८

२ प्रमत्तमयत का पृथक्त्वसंख्या । पृथक्त्वमित्यागमसंज्ञा तिसृणो काटानामुपरि जवानामधः । स नि १, ८ पक्ष य तेगच्छा णवद्विसंख्यउत्तर पद । यो जी ६२४

रुणहं । पुधत्तमिदि तिण्ह कोडीणमुअरि णण्ह कोडीणं हेड्डो जा संखा सा घेत्तवा ।
मा अणेगणियप्पादो इमा होदि च्चि ण जाणिज्जेदे ? ण, परमगुरुवदेसादो जाणिज्जेदे ।
त्तय पमत्तसजदा ण पच कोडीओ तेणउदिलक्खा अट्टाणउदिसहस्सा छउत्तर विसद च
५९३९८२०६ । एदमेत्तिय होदि च्चि कय णच्चदे ? आइरियपरपरागदजिणोवदेसादो ।

अप्पमत्तसंजदा द्व्यपमाणेण केवडिया, संखेज्जा' ॥८॥

जदि मि एद संखेज्जा इदि वयण सव्वसखेज्जवियप्पाणं साहारण हवदि तो
मि कोडिपुधत्त ण पूरेदि च्चि णच्चदे । त कध ? पुध सुत्तारभण्णहाणुअवत्तीदो, 'पमत्तद्धादो
अप्पमत्तद्धा संखेज्जगुणहीणो' च्चि सुत्तादो ण । अप्पमत्तसंजदाण पमाण गुरुवदेसादो बुच्चदे ।
दो कोडीओ छण्णउदिलक्खा णवणउदिसहस्सा तिरहियसय च । अकदो मि एत्तिया हवंति
३९६९९१०३ । उत्त च-

शुंका—पृथक्त्व इस पदसे तीन कोटिके ऊपर और नौ कोटिके नीचे जितनी सख्या
है, वह लेना चाहिये । परन्तु वह मध्यकी सख्या अनेक विकल्परूप होनेसे यही सख्या यहाँ
ली गई है यह नहीं जाना जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, यह परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है । उसमें प्रमत्त-
सयत जीवोंका प्रमाण पाच करोड़ तेरानवे लाख अठानवे हजार दोसौ छह ५९३९८२०६ है ।

शुंका—यह सख्या इतनी है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—आचार्यपरपरासे आये हुए जिनेन्द्रदेवके उपदेशसे यह जाना जाता है
कि यह सख्या इतनी ही है ।

अप्रमत्तसयत जीव द्व्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सख्यात हे ॥ ८ ॥

यद्यपि सूत्रमें आया हुआ 'संखेज्जा' यह वचन, सख्यात सख्याके जितने भी विकल्प
हैं, उनमें समानरूपसे पाया जाता है तो भी वह कोटिपृथक्त्वको पूरा नहीं करता है, अर्थात्
यहा पर कोटिपृथक्त्वसे नीचेकी सख्या इष्ट है, यह जाना जाता है ।

शुंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यहा पर पूर्वोक्त अर्थ इष्ट न होकर यदि कोटिपृथक्त्वरूप अर्थ ही इष्ट
होता तो अलगसे सूत्र बनानेकी कोई आवश्यकता नहीं थी । अथवा, 'प्रमत्तसयतके कालसे
अप्रमत्तसयतका काल सख्यातगुणा हीन है' इस सूत्रसे भी जाना जाता है कि यहा पर
कोटिपृथक्त्वरूप अर्थ इष्ट नहीं है ।

अय गुरुपदेशसे अप्रमत्तसयत जीवोंका प्रमाण कहते हे—

अप्रमत्तसयत जीवोंका प्रमाण दो करोड़ छयानवे लाख निन्यानवे हजार एकसौ तीन

तिगहिय सद णणउदी उणउदा अपमत्त ने कोडी ।

पचे य तेणउदा णणउद विस्सा छउत्तरा चेय ॥ ४१ ॥

अपमत्तद्व्यादो पमत्तद्व्य कण काण्णेण दुगुण ? अपमत्तद्व्यादो पमत्तद्व्या
दुगुणत्तादो ।

चट्टण्हमुवसामगा दव्वपमाणेण केवडिया; पवेमेण एक्को वा
दो वा तिण्णि वा, उक्कस्सेण चउवण्णं ॥ ९ ॥

एगोगुणद्व्याणम्हि एगसमयम्हि चारित्तमोहणीयमुत्सामेतो जहण्णेण एगो जीरो
पणिसइ, उक्कस्सेण चउवण्ण जीरो पणिसति । एद सामण्णदो भवति । तिसेमदो पुण
अट्ट समयाहिय तामपुत्त-भतरे उत्सममेहिपाओग्गा अट्ट समयो हवति । तत्थ
पट्टमसमए एगजीरमाट काऊण वा उक्कस्सेण सोलप जीरो त्ति उत्समसेहिं चटति ।
निदियसमए एगजीरमाड काऊण जा उक्कस्सेण चउवीम जीरो त्ति उत्सममेहिं चडति ।
तदियसमए एगजीरमाड काऊण जा उक्कस्सेण तीस जीरो त्ति उत्समसेहिं चडति ।
चउत्थसमए एगजीरमाड काऊण जा उक्कस्सेण छतीस जीरो त्ति उत्समसेहिं चडति ।

है । अकोंसे भी अपमत्तसयत २० ६९९१०३ इतने ही ह । वद्दा भी हे—

अपमत्तसयत जायोंका प्रमाण पाव करोड तेरानवे लग्न अट्टानवे हजार दोसो छह हे
आर अपमत्तसयत जीवोंका प्रमाण दो करोड च्यानेवेलाख निन्यानवे हजार एकसो तीग हे ॥४१॥

शुद्धा—अपमत्तसयतके उच्यते अपमत्तसयतस्य द्रव्य किम् कारणसे दूना हे ?

समाधान—पर्योकि, अपमत्तसयतस्य कालमे अपमत्तसयतस्य कात्त दुगुणा है ।

चारों गुणस्थानोंके उपशामरु द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा किन्तने है ? प्रवेशकी अपेक्षा
एक या दो अथवा तीन और उत्कृष्टरूपमे चौपन होते हैं ॥ ९ ॥

उपशामश्रेणीके प्रत्येक गुणस्थानमें एउ समयमें चारित्तमोहनीयका उपशाम करता हुआ
जघन्यसे एक जीव प्रवेश करता है और उत्कृष्टरूपमे चोचन जीव प्रवेश करते हे । यह कथन म्मामा
न्यसे है । विशेषकी अपेक्षा तो आठ समय अधिक चपपृथनत्वके भीतर उपशामश्रेणीके योग्य
(रगातार) आठ समय होते हैं । उनमेंसे प्रथम समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे
सोल्ह जीवतक उपशामश्रेणी पर चढते ह । दूसरे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे
चौपौन जीवतक उपशामश्रेणी पर चढते हैं । तीसरे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे
तीस जीवतक उपशामश्रेणी पर चढते हैं । चौथे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे

१ गो वा ६२५ वा तत्र 'पचने य तणउदा णणउदित्तपणउत्तर पमदे' इति पाठ । प स ६२, ६३

२ अन्तर्गत उपशामका प्रश्न एको वा दो वा त्रयो वा । उपर्यन्त चतु पचासत् । स मि १, ८

३ अन्तर्गत उपशामका प्रश्न एको वा दो वा त्रयो वा । उपर्यन्त चतु पचासत् । स मि १, ८

पंचमसमए एगजीवमाइ काऊण जा उक्स्सेण वायाल जीवा त्ति उपसममेहिं चडति ।
 छट्ठसमए एगजीवमाइ काऊण जा उक्स्सेण अडदाल जीवा त्ति उपसमसेट्ठिमारुहंति ।
 सत्तमद्वमदोसु समएसु एक्कीवमाइ काऊण जाउक्स्सेण चउत्तण जीवा त्ति उपसमसेट्ठि
 चडति । उच्च च—

सोत्तसय चउवीस तीस छत्तीस तह य वायाल ।

अडदाल चउत्तण चउत्तण होइ अतिमए ॥ ४२ ॥

अद्धं पडुच्च संखेजा ॥ १० ॥

पुब्बुत्तेसु अट्ठसु समएसु एगेगगुणट्ठाणम्मि उक्स्सेण संचिदसञ्चजीवे एगट्ठं कदे
 चउत्तरतिसयमेत्ता हवंति । तेमि सपेत्तेण मेलात्तणविहाण बुच्चदे । अट्ठ गच्छं द्विविय
 सत्तारममाइ काऊण छउत्तर करिय सरुलणसुत्तेण मेलाविदे एगेगगुणट्ठाणम्मि सचिद-

छत्तीस जीव तक उपशमश्रेणी पर चढते है । पाचवें समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्ट
 रूपसे व्यालीस जीव तक उपशमश्रेणी पर चढते है । छठे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्ट
 रूपसे अडतालीस जीव तक उपशमश्रेणी पर चढते है । सातवें और आठवें इन दोनों समयोंमें एक
 जीवको आदि लेकर उत्कृष्ट रूपसे चौवन चौवन जीव तक उपशमश्रेणी पर चढते है । कहा भी है—

निरन्तर आठ समयपर्यन्त उपशमश्रेणी पर चढनेवाले जीवोंमें अधिकसे अधिक प्रथम
 समयम सोत्तह, दूसरे समयमें चौवीस, तीसरे समयमें तीस, चौथे समयमें छत्तीस, पाचवें
 समयमें व्यालीस, छठे समयमें अडतालीस, सातवें समयमें चौवन और अन्तिम अर्थात् आठवें
 समयमें भी चौवन जीव उपशमश्रेणीपर चढते हैं ॥ ४० ॥

कालकी अपेक्षा उपशमश्रेणीमें सचित हुए सभी जीव सख्यात होते है ॥ १० ॥

पूर्वाक्त आठ समयोंमें एक एक गुणस्थानमें उत्कृष्टरूपसे सञ्चित हुए सपूर्ण
 जागोंको एकत्रित करने पर तीनसौ चार होते है । आगे सक्षेपसे उन्हींके जोड करनेकी
 विधि कहते है—

आठको गच्छरूपसे स्थापित करके, सन्नहको आदि अर्थात् मुख्य करके और छट्ठको
 उत्तर अर्थात् चय करके 'पदमेगेण विहाण' इत्यादि सक्ख्य च्छत्रके नियमानुसार जोड
 करने पर प्रत्येक गुणस्थानमें उपशमरु जीवोंकी सचित राशिका प्रमाण तीनसौ चार
 या जाता है ।

उदाहरण— $८ - १ = ७ - २ = १\frac{१}{२} \times ६ = ०१ + १७ = ३८ \times ८ = ३०४$

१ गो जी ६२७ प से ६५, ६७

२ स्वकाल सपुदिता सन्धेया । स पि १, ८ अद्धं पडुच्च सेटीए हंति सव्व वि सखेज्जा ।
 पव्व २, २३

३ पदमेगेण विहाणं दुमानिद उत्तरेण सगुणिद । पमवत्तुद पदशुणिद पदगणिद त विजाणाहि । नि सा-

११५ एरहीन पद वृद्धया ताडित भाजित सिमि । आदियुत्त परान्यस्तमीसित गणित मत्तम् ॥ ५ व ७७.

उत्सामगण प्रमाण हवति । सउत्सप्रमाणजीवमहिदा सत्वे समया जुगम ण लहति
 त्ति के वि पुब्बुत्तप्रमाण पचूण कर्त्ति । एद पचूण वक्खणं पवाइज्जमाण दक्खिण
 माइरियपरंपरागपमिदि ज बुत्त होइ । पुब्बुत्तप्रमाणमपवाइज्जमाण वाउ आइरियपर
 परा अणागदमिदि णायव्व ।

चउण्ह खवा अजोगिकेवली दव्वप्रमाणेण केवडिया, पवेसेण
 एको वा दो वा तिण्णि वा, उक्खसेण अटोत्तरसदं ॥ ११ ॥

अट्टममयाहिय-ठ मासम्भरे खवगसेठिपाओग्गा अट्ट समया हवति । तेसिं
 समयणं त्रिसेसविवक्खमकाऊण सामण्णपरूण कीरमाणे जहण्णेण एगो जीवो खवग-
 गुणद्वान पडिवज्जति । उक्खसेण जटोत्तरसयमेत्तजीवा सउगगुणद्वान पडिवज्जति ।
 त्रिसेसमास्मिदूण परुविज्जमाणे पढमसमए एगजीवमाइ काऊण जा उक्खसेण वत्तीम जीवा
 त्ति खवगसेठि चडति । त्रिदियसमए एगजीवमाइ काऊण जा उक्खसेण अडदालीस जीवा
 त्ति खवगसेठि चडति । त्रिदियसमए त्रि एगजीवमाइ काऊण जा उक्खसेण सट्टि जीवा त्ति
 खवगसेठि चडति । चउत्थममए एगजीवमाइ काऊण जा उक्खसेण राहत्तरि जीवा त्ति

अपने इस उत्कृष्ट प्रमाणवाले जावासे शुक्त सपूर्ण समय एउसाथ नहीं प्राप्त होते हैं,
 इसलिये कितने ही आचार्य पूर्वाक्त प्रमाणमेंसे पाच कम करते हैं । पूर्वोक्त प्रमाणमेंसे पाच
 कमका यह ध्याप्यान प्रवाहरूपसे आ रहा है, दक्षिण है और आचार्य परंपरागत है, यह इस
 कथनका तात्पर्य है । तथा पूर्वाक्त ३०४ का व्याख्यान प्रवाहरूपसे नहीं आ रहा है, वाम दे,
 आचार्य परंपरासे अनागत है, ऐसा जानना चाहिये ।

चारों गुणस्थानोंके अणु और जयोगिकेवली जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने
 हैं ? प्रवेशकी अपेक्षा एक या दो अथवा तीन और उत्कृष्टरूपसे एकसौ आठ है ॥ ११ ॥

आठ समय अधिक छह महीनाके भीतर क्षपणश्रेणीसे योग्य आठ समय होते हैं । उन
 समयोंके विशेष कथनकी विवक्षा न करके सामान्यरूपसे प्ररूपण करने पर जघन्यसे एक जीव
 क्षपण गुणस्थानको प्राप्त होता है । तथा उत्कृष्टरूपसे एकसौ आठ जीव क्षपण गुणस्थानको
 प्राप्त होते हैं । विशेषका भाश्य लेकर प्ररूपण करने पर प्रथम समयमें एक जीवको आदि
 लेकर उत्कृष्टरूपमें यत्तीस जीवतक क्षपणश्रेणी पर चढ़ते हैं । दूसरे समयमें एक जीवको आदि
 लेकर उत्कृष्टरूपसे अड़तालीस जीवतक क्षपणश्रेणी पर चढ़ते हैं । तिसरे समयमें एक जीवको
 आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे साठ जीवतक क्षपणश्रेणी पर चढ़ते हैं । चौथे समयमें एक जीवको

१ सर्वाहृष्टप्रमादिल्लो लव्य-त न यत्त क्षणा । आवापरपरिना पंचमी रहितस्तत ॥ पं सं १८

२ चत्वार क्षपण अयोगिकेवलीमद्वय प्रवेशन एक वा द्वौ वा त्रया वा । उत्तरेणाटोत्तरसत्त्वा
 * वि १. ८ छत्रगा साजाजीवी पगाइ जाव होति जट्टसयं । पञ्च २, २४

खवगसेहिं चडति । पचमसमए एगजीनमाइं काऊण जा उक्कस्सेण चउरासीदि जीना ति खवगसेहिं चडति । छट्ठमसमए एगजीनमाइं काऊण जा उक्कस्सेण छण्णउदि जीना ति खनगसेहिं चडति । सत्तमसमए अट्ठमसमए च एगजीनमाइं काऊण जा उक्कस्सेण अट्ठुत्तरसयजीना ति खनगसेहिं चडति । उच च—

वचीसमट्टदाळ सट्ठी वाइतरां य चुळसीई ।

छण्णउदा अट्ठुत्तरसदमट्ठुत्तरसय च वेदव्व' ॥ ४३ ॥

अद्धं पडुच्च संखेज्जा' ॥ १२ ॥

अट्ठममयसचिदसव्वजीने उक्कस्सेणै एगट्ठे कटे अट्ठुत्तरछस्सयमेत्तजीना हवति । तिस्से मेलानणविहाणं बुच्चदे । त जहा—अट्ठ गच्छ डुणिय चोचीसमाइं काऊण वारसुत्तरं करिय सकलणसुत्तेण मेलानिडे खनगरासी मिलदि । एत्थ करणगाहा—

आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे उद्भूत जीवतक क्षपकश्रेणी पर चढते हैं । पाचवें समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे चौरासी जीवतक क्षपकश्रेणी पर चढते हैं । छठे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे छयानवे जीवतक क्षपकश्रेणी पर चढते हैं । सातवें और आठवें समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे प्रत्येक समयमें एकसौ आठ जीवतक क्षपकश्रेणी पर चढते हैं । कदा भी है—

निरन्तर आठ समयपर्यन्त क्षपकश्रेणी पर चढनेवाले जीवोंमें पहले समयमें बत्तीस, दूसरे समयमें अठतालिस, तीसरे समयमें साठ, चौथे समयमें उद्भूत, पाचवें समयमें चौरासी, छठे समयमें छयानवे, सातवें समयमें एकसौ आठ और आठवें समयमें एकसौ आठ जीव क्षपकश्रेणी पर चढते हैं, ऐसा जानना चाहिये ॥ ४३ ॥

कालकी अपेक्षा संचित हुए क्षपक जीव सख्यात होते हैं ॥ १२ ॥

पूर्वोक्त आठ समयोंमें संचित हुए सपूर्ण जीवोंको एकत्रित करने पर सपूर्ण जीव छहसौ आठ होते हैं । आगे उसी सख्याके जोड़ करनेकी विधि कहते हैं—आठको गच्छरूपसे स्थापित करके चोतीसको आदि अर्थात् मुल करके और बारहको उत्तर अर्थात् चय करके 'पद्ममेण विहीण' इत्यादि सकलनसूत्रके नियमानुसार जोड़ देने पर क्षपक जीवोंकी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है ।

उदाहरण— $1-1=0$, $0-2=2\frac{1}{2}$, $2\frac{1}{2} \times 12=32$, $32+38=70$, $70 \times 8=560$

अब यहा इसी विषयमें करणगाथा दी जाती है—

१ गा जी ६२८ प ६ ७९-८०

२ स्वकालेन समुदिता सरयया । स सि १, ८ अट्ठाए सपपुट्टुच । पचस २, २४

३ प्रतिपु 'जीवे ण' इति पाठ ।

जीवा केवलणाण उप्पाएति, दोसु समएसु दो दो जीवा जदि केवलणाण उप्पाएति, तो अट्टसमयसच्चिदमजोगिणिणा वामीम भवति । अट्टसु सिद्धसमएसु जदि चामीम सजोगिणिणा लभति तो तिणिलक्ख-छव्वीससहस्स-सत्तसय अट्टाणीसमेच सिद्धसमएसु केत्तिया सजोगिणिणा लभति चि तेरासिए ऋए अट्टलक्ख-अट्टाणउदिसहस्स दुराहिय पचसदमेत्ता सजोगिणिणा लद्धा हवति । युत्त च—

अण्येय सयसहस्सा अट्टाणउदा तद्दा सहस्साइ ।

सग्गा जोगिणिणाण पचसद विउत्तर जाण' ॥ ४८ ॥

एदीए दिसाए चट्टएहि पयारेहि सजोइरासिस्स पमाणमाणेयव्व । त जहा-जम्हि पुच्चिल्लसिद्धकालस्स अट्टमेत्तो सिद्धकालो लभइ तम्हि तेरासियमेउमाणेयव्व । त जहा— अट्टसु सिद्धसमएसु जदि चउत्तालीसमेत्ता सजोगिणिणा लभति तो एकक लएव तिसट्टिसहस्स तिणिसय चउत्तालीसमेत्त सिद्धसमयाण केत्तिया सजोगिणिणा लभति चि तउरासिए कदे पुच्चिल्लो चेव सजोगिरासी उप्पज्जदि । जम्हि आउ व्णे पुच्चिल्ल सिद्धकालस्स चउत्तागमेत्तो सिद्धकालो लभइ तम्हि एव तइरासिअ कायव्व । अट्टसु सिद्धसमएसु जदि अट्टरासीदि सजोगिणिणा लभति तो एग्गासीदिसहस्स छस्सय वासीदि

छट्ट सिद्ध समयोंमें तीन तीन जीव, और दो समयोंमें दो दो जीव यदि केवलज्ञान उत्पन्न करते हैं, तो आठ समयोंमें सञ्चित हुए सयोगी जिन बाधोंसे होते हैं । इसप्रकार यदि आठ सिद्ध समयोंमें बाधोंसे सयोगी जिन प्राप्त होते हैं तो तीन लाख छव्वीस हजार सातसौ अट्टाईस सिद्ध समयोंमें कितने सयोगी प्राप्त होंगे, इसप्रकार प्रैराशिक करने पर आठ लाख अट्टानवे हजार पावसौ दो सयोगी जिन प्राप्त हो जाते हैं । कहा भी है—

सयोगी जीवोंकी सरया आठ लाख अट्टानवे हजार पावसौ दो जानो ॥ ४८ ॥

इसी दिशासे अनेक प्रकारसे सयोगी जीवोंकी राशि लाना चाहिये । आगे उसीका स्पर्शकरण करते हैं—

जहा पर पहलेके सिद्धकालका अर्धमात्र सिद्धकाल प्राप्त होता है वहा पर इसप्रकार प्रैराशिक लाना चाहिये । यह इसप्रकार है—आठ सिद्ध समयोंमें यदि चवालीस सयोगी जिन प्राप्त होते हैं, तो एक लाख त्रैसठ हजार तीनसौ चौंसठ सिद्ध समयोंमें कितने सयोगी जिन प्राप्त होंगे, इसप्रकार प्रैराशिक करने पर पूजात्त ८९,८५०२ सयोगी जीवोंकी ही राशि आ जाती है । अथवा, जिसमें पहलेके सिद्धकालका चवा भागमात्र सिद्धकाल प्राप्त होता है वहा पर इस प्रकार प्रैराशिक करना चाहिये । आठ सिद्ध समयोंमें यदि अठ्ठासी सयोगी जिन प्राप्त होते हैं तो एकपासी हजार छट्टसौ ध्यासीमात्र सिद्ध समयोंमें कितने सयोगी जिन प्राप्त होंगे इस

मेत्तसिद्धसमयाणं केत्तिया सजोगिजिणा लब्धंति चि तेरासिए कए सो चैव रासी लब्धदि' । एवमण्णत्थ त्रि जाणिऊण वत्तव्य । जहक्खादसजदाणं पमाणवण्णणा गाहा-

अट्टेव सयसहस्ता णणउदिसहस्त चैव णवयसया ।

सत्ताणउदी य तहा जहक्खादा होंति ओघेण ॥ ४९ ॥

एवं परूदिदसव्य सजदरासिमेगट्टे कदे अट्टकोडीओ णवणउदिलक्खा णवण-
उदिसहस्ता णणसद सत्ताणउदिमेत्तो होदि ८९९९९९७ । एदम्हादो रासीदो उव-
सामग सवगपमाणमवणोयव्य । तेसिं पमाणपरूणगाहा—

णव चैव सयसहस्ता उब्बीससया य होंति अडसीया ।

परिमाण णायव्व उवसम-खवगाणमेद तु ॥ ५० ॥

एदमणिय तीहि भागो हायव्वो । लद्धमप्पमत्तरासी हवदि । दुगुणिदे पमत्तरासी

प्रकार त्रेराशिक करने पर यही पूर्वोक्त ८९८५०२ संयोगी जीवराशि ही आ जाती है । इसी प्रकार अन्यत्र भी जानकर कथन करना चाहिये ।

प्रमाणराशि	फलराशि	इच्छाराशि	लब्ध प्रमाण
८ समय	२२ केवली	समय ३२६७२८	८९८५०२
८ समय	४४ केवली	१६३३६४	८९८५०२
८ समय	८८ केवली	८१६८२	८९८५०२

अत्र यथाख्यात सयतोंकी सख्याका वर्णन करनेवाली गाथा देते हैं—

सामान्यसे यथाख्यातसयमी जीव आठ लाख निन्यानत्रे हजार नौसौ सत्तानचे होते हैं ॥ ४९ ॥

इसप्रकार प्ररूपण की गई सपूर्ण सयत जीवोंकी राशिको एकत्रित करने पर कुल सख्या आठ करोड निन्यानचे लाख निन्यानचे हजार नौसौ सत्तानचे ८९९९९९७ होती है । इस राशिमेंसे उपशमक और क्षपक जीवोंके प्रमाणको निकाल देना चाहिये । उपशमक और क्षपक जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करनेवाली गाथा इसप्रकार है—

उपशमक और क्षपक जीवोंका परिमाण नौ लाख दो हजार छह सौ अठ्ठासी जानना चाहिये ॥ ५० ॥

सयतोंकी सपूर्ण राशिमेंसे इस उपशमक और क्षपक जीवराशिको निकालकर तीनका भाग देना चाहिये । जो तीसरा भाग लब्ध आया उतना अप्रमत्तसयत जीवराशिका प्रमाण

हृदि । युक्तं च—

सत्तादा अहता छण्णवमज्जा य सज्जदा सव्वे ।

तिगभनिदा विगगुणिदापमत्तरामी पमत्ता दु ॥ ५१ ॥

एमा दक्खिणपडिवत्ती । एसा गाहा ण भदिया त्ति के त्ति आइरिया जुत्तिवलेण भणंति । का जुत्ती ? बुद्धदे—सव्वतित्थयरोहिंती पउमप्पहमडारओ बहुसीसपरिवारो तसिसहस्साहिय तिण्णिलम्पमेत्तमुणिगणपरिवुदत्तादो । तेषु सत्तरसएण गुणिदेसु एक्कसद्विलक्खाहियपचक्रोडिमत्ता सज्जदा होति । एदे च पुच्छिण्णगाहाए जुत्तसज्जदाण पमाण ण पावेंति । तदो गाहा ण भदिएत्ति । एत्थ परिहारो बुद्धदे—सव्वोसपिणी-हिंती अहमा हुडोसपिणी । तत्थतणातित्थयसिस्मपरिवार जुगमाहप्पेण ओहद्विय डहर-मायमापण्ण घेत्तण ण गाहासुत्त दूसिदु सक्किज्जदि, सेसोसपिणीतित्थयरेसु बहुसीस-परिवारुवलभादो । ण च भरहेरावयवासेसु मणुमाण बहुत्तमत्थि, जेणेत्थतणेक्कतित्थय-

है । इसे दूना करने पर प्रमत्तसयत जीवराशिका प्रमाण होता है । कहा भी है—

जिस सख्याके आदिमें सात हैं, अतमें आठ ह और मध्यमें छहवार नौ हैं, उतने अर्थात् आठ करोड निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौ सौ सत्तानवे सर्व संयत हैं । (इनमेंसे उपशमक ओर क्षपकोंका प्रमाण ९०२६८८ निकालकर जो राशि शेष रहे उसमें) तीनका भाग देने पर २९६९०१०३ अप्रमत्तसयत होते हैं । ओर अप्रमत्तसयतोंके प्रमाणको दोसे गुणा कर देने पर ५९३९८००६ प्रमत्तसयत होते हैं ॥ १ ॥

यह दक्षिण मायता है । यह पूर्वोक्त गाथा ठीक नहीं है ऐसा कितने ही आचार्य युक्तिके बलमें कहते हैं ।

शुक्रा—यह कौनसी युक्ति है ? आगे शकाकार उसी युक्तिका समर्थन करता है कि संपूर्ण तीर्थंकरोंकी अपेक्षा परमप्रभ भट्टारकका शिष्य परिवार अधिक था, क्योंकि, ये तीन लाख तीस हजार मुनिगणोंसे घेष्ठित थे । इस सख्याको एकसौ सत्तरसे गुणा करने पर पाच करोड इक्कसठ लाख संयत होते हैं । परंतु यह सख्या पूर्व गाथामें कहे गये सयतोंके प्रमाणको नहीं प्राप्त होती है, इसलिये पूर्व गाथा ठीक नहीं है ?

समाधान—आगे पूर्व शकाका परिहार करते हैं कि संपूर्ण अवसपिणियोंकी अपेक्षा यह बुद्धसपिणी है, इसलिये युगके माहात्म्यसे घटकर न्दस्वभान्तो प्राप्त हुए बुद्धसपिणी बालसव्वधी तीर्थंकरोंके शिष्य परिवारको ग्रहण करके गा शस्त्रको दूषित करना शक्य नहीं है, क्योंकि, दोष अवसपिणियोंके तीर्थंकरोंके यदा शिष्य परिवार पाया जाता है । दूसरे भारत और पेरारयत क्षेत्रमें मनुष्योंकी अधिक सख्या नहीं पाई जाती है जिससे उन दोनों क्षेत्रसव्वधी एक तीर्थंकरके सद्यके प्रमाणसे विद्देहसव्वधी एक तीर्थंकरका सद्य समान

गणपमाणेण विदेहेककतिथयरणो सरिसो होज्ज । किं तु एत्थतणमणुपेहिंतो विदह-
मणुस्सा सखेज्जगुणा । तं जहा- सवत्थोवा अतरदीवमणुस्सा । उत्तरकुरुदेवकुरुमणुवा
सखेज्जगुणा । हरिरम्मयवासुसु मणुआ सखेज्जगुणा । हेमवदहेरणवदमणुआ सखेज्जगुणा ।
भरहेरावदमणुआ संखेज्जगुणा । विदेहे मणुआ संखेज्जगुणा' ति । बहुवमणुस्सेसु जेण
सज्जा बहुआ चेव तेणेत्थतणसज्जाण पमाण पहाण कादूण जं दूसणं भणिदं तण्ण दूसण,
युद्धिविहणाअरियमुहनिणिग्गयत्तादो ।

एत्तो उत्तरपडिवत्तिं वत्तइस्सामो । एत्थ पमत्तसंजदपमाणं चत्तारि कोडीओ
छासट्टिलक्खा छासट्टिसहस्सा उसद चउसट्टिमेत्त भवदि । तुत्तं च—

चउस.ो छच्च सया छासट्टिसहस्सं चेव परिमाण ।

छासट्टिसयसहस्सा कोडिचउक्क पमत्ताण ॥ ५२ ॥

४६६६६६६६४ । वे कोडीओ सत्तावीसलक्खा णरणउदिसहस्सा चत्तारिसद
अट्टाणउदिमेत्ता अप्पमत्तसज्जा हवति । उच्च च—

माना जाय । किन्तु भरत और पेरारत क्षेत्रके मनुष्योंसे विदेह क्षेत्रके मनुष्य सख्यातगुणे
है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

अन्तरद्वीपोंके मनुष्य सबसे थोड़े हैं । उत्तरकुरु और देवकुरुके मनुष्य उनसे सख्यात
गुणे ह । हरि ओर रम्यक क्षेत्रोंके मनुष्य उत्तरकुरु और देवकुरुके मनुष्योंसे सख्यातगुणे
हैं । हेमवत और हेरण्यवत क्षेत्रोंके मनुष्य हरि और रम्यकके मनुष्योंसे सख्यातगुणे हैं ।
भरत और पेरारत क्षेत्रोंके मनुष्य हरि और रम्यकके मनुष्योंसे सख्यातगुणे हैं । विदेह क्षेत्रके
मनुष्य भरत और पेरारतके मनुष्योंसे सख्यातगुणे हैं । बहुत मनुष्योंमें क्योंकि सयत
बहुत ही होंगे इसलिये इस क्षेत्रसधन्वी सयतोंके प्रमाणको प्रधान करके जो हूण फहा
गया है वह हूण नहीं हो सकता, क्योंकि, वह बुद्धिरहित आचार्योंके मुखसे निकला हुआ
है । अब आगे उत्तर मान्यताको बतलाते हैं—

उत्तर मान्यताके अनुसार सयतोंमें प्रमत्तसयतोंका प्रमाण केवल चार करोड छयासठ
लाख छयासठ हजार छहसौ चौसठ है । कहा भी है—

प्रमत्तसयतोंका प्रमाण चार करोड छयासठ लाख छयासठ हजार छहसौ चौसठ
४६६६६६६६४ है ॥ ५२ ॥

दो करोड सत्तारिस लाख निन्यानवे हजार चारसौ अट्ठानवे अप्रमत्तसयत जीव हैं ।
कहा भी है—

१ अतरदावमणुस्सा भोवा ते कुक्क दससु सखेजा । ततो सखेज्जगुणा हवति हरिरम्मगेसु वसेसु । वरिसि
सखेज्जगुणा हेरण्यवदग्गि हेमवदवरिसि । भरहेरावदवत्ते सखेज्जगुणा विदेहे य ॥ ति प पत्र १६०.

२ प्रतिपु ' आवत्तिसहस्स ' इति पाठ ।

वे कोडि सत्तरीसा होंति सहस्सा तहेव णवणउदा ।

चउसद अट्टणउदी परिसखा होदि विदियगुणा ॥ ५३ ॥

अकदो वि २२७९९४९८ । उवमामग रावगपमाणपरूत्रणा पुच्य व भाणिदव्या ।
णवरि 'सजोगिकेउली अद्व पडुच सखेज्जा' एदस्स परूत्रणा अण्णहा हवदि । त जहा—

अट्टसमयाहियउमासाण जदि अट्टसमयमेत्तो मिद्धकालो लब्भदि तो चत्तारि-
सहस्स सत्तसद एगूणतीसमेत्त अट्टसमयाहिय उम्मामाण केत्तियो मिद्धकालो लब्भदि त्ति
तेरासिए कदे सत्ततीससहस्स अट्टसद वचीसमेत्तसिद्धसमया लब्भति । एदम्हि कालम्हि
सच्चिदसजोगिजिणपमाणमाणिज्जदे । त जहा— अट्टसु समएसु चोदम चोदस सजोगिजिणा
होंति त्ति कट्टु जदि अट्टण्ह समयाण बारहाचरसयमेत्ता सजोगिजिणा लब्भति तो
सत्ततीससहस्स अट्टसद वचीसमेत्तसिद्धसमयाण केत्तिया लब्भति त्ति तेरासिए कए
पचलकर एगूणतीससहस्स छस्सय-अट्टेदालीसमेत्ता सजोगिजिणा हउति । वुत्त च—

पचेउ सयसहस्सा होंति सहस्सा तहेव उणतीसा ।

छच्च सया अडयाला जोगिजिणाण हवदि सखा ॥ ५४ ॥

द्वितीय गुणस्थान अथात् अप्रमत्तसयत जीवोंकी सरया दो करोड सत्ताइस लाख
निन्यानवे हजार चारसौ अट्टानवे हे ॥ ३ ॥

अकोंसे भी २२७९९४९८ अप्रमत्तसयत जीव ह । उपशामक और क्षपक जीवोंके
प्रमाणका प्ररूपण पहलेके समान कहना चाहिये । इतनी विशेषता हे कि सयोगिकेवली
जीव कालकी अपेक्षा सचित हुए सरयात होते ह । यहा पर केवलियोंके प्रमाणकी प्ररूपणा
दूसरे प्रकारसे होती है । यह इसप्रकार है— आठ समय अधिक छह महीनेजा यदि आठ समयमात्र
सिद्धकाल प्राप्त होता है तो चार हजार सातसा उनतीसमात्र आठ समय अधिक छह
महीनोंके कितने सिद्धकाल प्राप्त होंगे, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर सैंतीस हजार आठसौ
पचासमात्र सिद्ध समय प्राप्त होते ह । अब इस कालमें सचित हुए सयोगी जिनोंका प्रमाण
होते है । यह इसप्रकार है— आठ समयोंमेंसे प्रत्येक समयमें चौदह चौदह सयोगी जिन
होते ह, ऐसा समझकर यदि आठ समयोंके एकसौ बारह सयोगी जिन प्राप्त होते ह तो
सैंतीस हजार आठसौ पचास सिद्ध समयोंके कितने सयोगी जीव प्राप्त होंगे, इसप्रकार
त्रैराशिक करने पर पाच लाख उनतीस हजार छहसौ अठतालीस सयोगी जीव प्राप्त होते
हैं । यहा भी है—

सयोगी जिन जीवोंकी सरया पाच लाख उनतीस हजार छहसौ अठतालीस है ॥ ५४ ॥

प्रमाणराशि	फरराशि	इच्छाराशि	लघ
६ माह ८ समय	८ समय	४७२९	३७८३२ समय
८ समय	११२ केवली	३७८३२ समय	५२९६४८ केवलि

५२९६४८ । ण्देण अत्थपदेण अणेगेहि पयारेहि सजोगिरासी आणेयञ्चो ।

उत्तमामग-सुत्रगपमाणपरूषणगाहा—

पचेन सयसहस्सा ह्येनि सट्स्सा तहेव तेत्तांसा ।

अइसया चोत्तांसा उवसम सुत्रगाण केरल्लिणो ॥ ५१ ॥

एदे सव्वसज्जे ण्येद्वे कदे सत्तर-सदरुम्मभूमिगदसव्वरिसओ भवति । तेसिं पमाणं छक्कोडीओ णवणउदलक्खा णवणउदिसहस्सा णसय-उण्णउदिमेत्त हरदि । एदस्म वेतिभागा पमत्तमंजदा हवति । तिभागो अप्पमत्तादिसेसजदा हवति । वुत्त च-

छक्कादी छक्कता छण्णमज्ञा य सजदा सचे ।

तिगभजिदा विगुण्णिदापमत्तरासी पमत्ता दु ॥ ५६ ॥

६९९९९९६ । द्वयपमाणेण अगदचोद्दमगुण्णगाण अप्पणो इच्छिद इच्छिद-रासिस्स णत्तियो णत्तियो भागो होदि त्ति तेसिं भागभागपरूषणा कीरदे । त जहा- भागादो भागो भागभागो । त भागभाग वत्तस्सामो । सव्वजीवरासिं सिद्धतेरसगुण्णगाणभजिदसव्व-

इस पद्धतिके अनुसार दूसरे प्रकारसे भी सयोगी जीवोंकी राशि ले आना चाहिये । अथ उपशमक ओर क्षपक जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करनेजाली गाया रहते हैं—

चारों उपशमक, पाचों क्षपक ओर केवली ये तीनों राशिया मिलकर कुल पाच लाख तैतीस हजार आठसौ चोतीस हैं ॥ ५५ ॥

निशेपार्थ—ऊपर सयोगिकेखलियोंकी सख्या ५२०६४८ बतला आये हे । उसमें चारों उपशमकोंकी सख्या ११९६ और पाचों क्षपकोंकी सख्या २९९० और मिला देने पर तीनोंकी सख्या ५३३८३४ हो जाती है ।

इन सय सयतोंको एकत्रित करने पर एकसौ सत्तर कर्मभूमिगत सपूर्ण ऋषि होते हैं । उन सयना प्रमाण छह करोड निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौसा छयानवे है । इसका दो घेट तीन भाग अर्थात् ४६६६६६६६ जीव प्रमत्तसयत ह, और तीसरा भाग अर्थात् २३३३३३३२ जीव अप्रमत्तसयत आदि शेष सयत ह । कहा भी है—

जिस सख्याके आदिमें छह, अन्तमें छह और मध्यमें छहवार नौ ह, उतने अर्थात् छह करोड निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौ सौ छयानवे ६९९९९९९६ जीव सपूर्ण संयत है । इसमें तीनका भाग देने पर लब्ध आये उतने अर्थात् २३३३३३३२ जीव अप्रमत्त आदि सपूर्ण सयत हैं और इन्हे देखे गुणा करने पर जितनी राशि उत्पन्न हो उतने अर्थात् ४६६६६६६६ जीव प्रमत्तसयत हैं ॥ ५६ ॥

द्वयप्रमाणकी अपेक्षा जाने हुए चौदहों गुणस्थानोंका प्रमाण अपनी इच्छित राशिके प्रमाणका इतनावा इतनावा भाग होता है, इसका ज्ञान करानेके लिये उनकी भागाभाग प्ररूपणा करते हैं । यह इसप्रकार है—भागसे होनेवाला भाग भागाभाग है । आगे उसी भागाभागको बतलाते हैं—

जीवराशिमेते भागे कदे तत्थ बहुभागो मिच्छाद्विद्विरासिपमाण होदि । सेस तेरसगुण द्वाणोत्रद्विदमिद्विरासिणा रूवाहिण्ण सुद्धिदे बहुगुण्डा सिद्धा हरति । सेसाण भागभाग-परूवणठ सेमरासीओ एगभागहारेणाणिज्जते । त जहा-सजदामजददव्व तप्पमाणेण कीरमाणे एग भवदि । मामणम्ममाइद्धिदव्व पि सजदासजददव्वपमाणेण कीरमाणे सासणम्ममाइद्धि अवहारकालेणोवद्धिदसजदासजद अवहारकालमेत्त हवदि । सम्मामिच्छा इद्धिदव्व सजदासजददव्वपमाणेण कीरमाणे सम्मामिच्छाइद्धि अवहारकालेणोवद्धिदसजदा सजद अवहारकालमेत्त भवदि । असजदसम्मामिच्छादव्वं पि सजदासजददव्वपमाणेण कीरमाणे असजदसम्मामिच्छा-अवहारकालेणोवद्धिदसजदासजद-अवहारकालमेत्त भवदि ।

सिद्धराशि ओर सासादनसम्यग्दष्टि आदि तेरह गुणस्थानधर्ती जीवराशिके प्रमाणका सपूर्ण जीवराशिमें भाग देने पर जो प्रमाण आवे उतने सपूर्ण जीवराशिके भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग मिथ्यादष्टि जीवराशिका प्रमाण है । जो एर भाग शेष रहता है उसे, सासादन आदि सेग्ह गुणस्थानधर्ती जीवराशिके प्रमाणसे भाजित सिद्धराशिमें रूपाधिक करके जो जोह हो उससे खण्डित करने पर जो बहुभाग आवे उतने सिद्ध होते हैं ।

उदाहरण—सर्वे जीवराशि १६, सिद्ध २, सासादन आदि १,

$$१६ - २ = १४, \quad \begin{array}{cccccc} ३ & ३ & ३ & ३ & ३ & १ \\ १ & १ & १ & १ & १ & १ \end{array} \quad \begin{array}{l} \text{बहुभाग १३ मिथ्यादष्टि} \\ \text{ओर ३ सिद्धेतरस} \\ ३ \end{array}$$

$$७ - १ = २ + १ = ३, \quad ३ - ३ = १, \quad ३ - १ = २ \text{ सिद्ध, } १ \text{ सासादन आदि}$$

अथ शेष राशियोंके भागाभागके प्ररूपण करनेके लिये शेष राशिया एक भागहारसे एरि जाती हैं । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

सयतासयत जीवराशिके द्रव्यको उसी प्रमाणसे (शलाकारूप) करने पर एक होता है (' १२ = १ पिंडरूप) । सासादनसम्यग्दष्टिका द्रव्य भी सयतासयतके द्रव्यप्रमाणसे करने पर सासादनसम्यग्दष्टि अवहारकालका सयतासयत अवहारकालमें भाग देने पर जो लघ्य आवे तत्प्रमाण होता है ।

$$\text{उदाहरण—} १२८ - ३२ = ४ \times ५१० = २०४८ \text{ सासा}$$

सम्यग्मिथ्यादष्टिका द्रव्य सयतासयतके द्रव्यप्रमाणरूपसे करने पर सम्यग्मिथ्यादष्टि अवहारकालका सयतासयत अवहारकालमें भाग देने पर जो लघ्य आवे तत्प्रमाण होता है ।

$$\text{उदाहरण—} १०१ - ११ = ८ \times १२ = ४०९६ \text{ सम्यग्मिथ्यादष्टि द्रव्य}$$

असयतसम्यग्दष्टिका द्रव्य भी सयतासयतके द्रव्यके प्रमाणरूपसे करने पर असयत सम्यग्दष्टि अवहारकालका सयतासयत अवहारकालमें भाग देने पर जो लघ्य आवे तत्प्रमाण

णयमजदद्वय सजदासजदद्वयपमाणेण कीरमाणे एगरूपस्त अससेजदिभाग भवदि ।
 एणमुप्पाइयसव्यसलागाओ एयडं काऊण सजदासंजद-अवहारकालमोवट्टिय लद्वेण
 पलिदोयमे भागे हिदे तेरसगुणट्ठाणद्वयमागच्छदि । एवं जेसिं जेसिं गुणट्ठाणाणं दव्याण
 मेगभागहारेणागमणमिच्छदि तेसिं तेसिं सलागाहि सजदासजद-अवहारकालमोवट्टिय
 पलिदोयमे भागे हिदे ते ते रासीओ आगच्छति ।

अथवा सासणसम्माइट्टि-अवहारकालेण संजटासंजद अवहारकालमोवट्टिय लद्वेण
 सासणसम्माइट्टि अवहारकाल गुणेऊण पुणो तेणेव गुणगारेण रूपाहिणण त चेवोवट्टिदे
 होता है ।

उदाहरण— $१२८ - ४ = ३२ \times ५१२ = १६३८४$ असयतसम्यग्दष्टि द्रव्य

छडेसे लेकर चोदहवें गुणस्थानतक नौ सयतोंका द्रव्य सयतासयतके द्रव्यके प्रमाण
 रूपसे करने पर एकरूप जो सयतासयतका द्रव्य कह आये हैं उसका असण्यातवा भाग
 होता है ।

उदाहरण— $२ - ५१२ = २ \frac{१}{१६} \times ५१२ = २$ नवसयत द्रव्य

इसप्रकार पहले उत्पन्न की हुई सपूर्ण शलाकाओंको एकत्रित करके और उनसे
 सयतासयतसयन्धी अवहारकालको अपवर्तित करके जो लब्ध आये उससे पल्योपमके भाजित
 करने पर सासादनसम्यग्दष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका प्रमाण आ जाता है ।

उदाहरण— $१ + ४ + ८ + ३२ + \frac{१}{२५६} = ४५ \frac{१}{२५६}$

$$१२८ - ४५ \frac{१}{२५६} = \frac{३२७६८}{११५२१} \quad ६५५३६ - ३२७६८ = ३२७६८$$

इसीप्रकार जिन जिन गुणस्थानोंके द्रव्यका प्रमाण एक भागहारसे लानेकी इच्छा हो
 उन उन गुणस्थानोंकी शलाकाओंसे सयतासयतसयन्धी अवहारकालको अपवर्तित करके जो
 लब्ध आये उसका पल्योपममें भाग देने पर उन उन गुणस्थानोंकी राशिया आ जाती हैं ।

उदाहरण—असयतसम्यग्दष्टि शलाकाराशि ३२;

$$१२८ - ३२ = ४; \quad ६५५३६ - ४ = १६३८४$$

अथवा, सासादनसम्यग्दष्टिके अवहारकालसे सयतासयतके अवहारकालको अपवर्तित
 करके जो लब्ध आये उससे सासादनसम्यग्दष्टिके अवहारकालको गुणित करके जो लब्ध आये
 उसे एक अधिक उसी गुणाकारसे अपवर्तित करने पर सासादनसम्यग्दष्टि ओर सयतासयत
 इन दोनोंका अवहारकाल आ जाता है ।

उदाहरण— $१२८ - ३२ = ४; \quad ३२ \times ४ = १२८; \quad ४ + १ = ५; \quad १२८ - ५ = २५$ सासा-
 वन और सयतासयतका अवहारकाल । इसका भाग पल्योपम ६५५३६ में देने पर सासादन
 और सयतासयत इन दोनों गुणस्थानोंका द्रव्य २०४८ + ५१२ = २५६० आ जाता है । इसी-
 प्रकार भागे भी जानना चाहिये ।

सामण सजदामजदाण अणहारकालो होदि । पुणो त दो-गुणद्वान्ण अवहारकाल सम्मा-
मिच्छाडडि-अणहारकालेणोपड्विय लद्वेण मम्मामिच्छाडडि-अणहारकाल गुणेऊण पुणो
तेणव गुणगारेण रूमाहिण्ण पुच्च गुणिद-अणहारकालोपड्विदे तिण्ह गुणद्वान्णामणवहार
कालो हवदि । पुणो तमणवहारकाल असजदसम्माडडि-अणहारकालेणोपड्विय लद्वेण
असजदसम्माडडि अणहारकाल गुणेऊण पुणो तेणव गुणगाररासिणा रूमाहिण्ण पुच्चिह
गुणिद अणहारकालोपड्विदे चउण्ह गुणद्वान्णामणवहारकालो हवदि । पुणो णव सजद
दव्वेण चउण्ह गुणद्वान्णान्ण दव्वमोपड्विय लद्वेण चउण्ह गुणद्वान्णामणवहारकाल गुणेऊण
पुणो तेणव गुणगारेण रूमाहिण्ण त चेव गुणिद अणहारकालोपड्विदे तेरसण्ह गुणद्वान्णा
णमणवहारकालो होदि ।

अनंतर उन दोनों गुणस्थानोंके अवहारकालको सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके अवहार
कालसे भाजित करके जो लघ्व् आये उसे सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अवहारकालसे गुणित करके
अनन्तर एक अधिक उसी पूर्वोक्त गुणकारसे पहले गुणित किये हुए अवहारकालके अपवर्तित
करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और सयतासयत इन तीनों गुणस्थानोंका
अवहारकाल होता है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१२८}{८} - १६ = \frac{१२८}{८}, \quad \frac{१२८}{८} \times १६ = \frac{१२८}{५}, \quad \frac{१२८}{८} + १ = \frac{२०८}{८},$$

$$\frac{१२८}{८} - \frac{२०८}{८} = \frac{११}{२३} \text{ सा सम्यग्मि और सयतासयतका अवहारकाल ।}$$

अनंतर इन तीनों गुणस्थानोंसयधी अवहारकालको असयतसम्यग्दृष्टिके अवहार
कालसे भाजित करके जो लघ्व् आये उससे असयतसम्यग्दृष्टिके अवहारकालको गुणित करके
पुन एक अधिक उसी पूर्वोक्त गुणकारसे पहले गुणित किये हुए अवहारकालके अपवर्तित करने
पर द्वितायादि चार गुणस्थानोंका भागहार आ जाता है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{११}{२३} - ४ = \frac{१२८}{५२}, \quad \frac{१२८}{५२} \times ४ = \frac{१२८}{१३}, \quad \frac{१२८}{५२} + १ = \frac{१८०}{५२},$$

$$\frac{१२८}{२३} - \frac{१८०}{५२} = \frac{३८}{२७०} \text{ सासादनादि ४ गुणस्थानोंका अवहारकाल ।}$$

अनन्तर प्रमत्तसयत आदि नो सयतोंके द्रव्यसे सासादन आदि चार गुणस्थानोंके
द्रव्यको भाजित करके जो लघ्व् आये उससे उक्त चार गुणस्थानोंके अवहारकालको गुणित
करके अनंतर एक अधिक उसी पूर्वोक्त गुणकारसे उसी गुणित अवहारकालको अपवर्तित
करने पर सासादनादि तेरह गुणस्थानोंका अवहारकाल होता है ।

उदाहरण—नसयतरादि २, सासादनादि चार गुणस्थानराशि २३०८०, साम्नादनादि

$$\text{चार गुणस्थानोंका अवहारकाल } \frac{१२८}{४५}, \quad \frac{२३०८०}{२} = \frac{११५२०}{१},$$

$$\frac{१२८}{४५} \times \frac{११५२०}{१} = \frac{२९४९१२}{९}, \quad \frac{११५२०}{१} + \frac{१}{१} = \frac{११५२१}{१},$$

अधया सजदासंजद-अपहारकालं विरलेऊण पुणो पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे रूव पडि सजदासंजददव्यपमाण पापदि । तमेगरूपस्सुपरि द्विद-सजदासंजददव्य णसंजदरासिणोवट्टिय लद्ध विरलेऊण उपरिमविरलणाए पढमरूवधरिदसंजदासंजददव्यं समखंड करिय दिण्णे रूव पडि णसजदरासिपमाण पापदि । पुणो तं धेत्तूण उपरिम-विरलणाए निदियादि-रूमाणमुपरि द्विदसजदासंजददव्यणाणुपरि पक्खिपनिदव्वं जाव हेट्ठिम विरलणोपरि द्विद णसजदरामी सरिसच्छेद काऊण पपिट्ठो त्ति । जदि हेट्ठिम-विरलणादो उपरिमविरलणा रूमाहिया हनदि तो एगरूपपरिहाणी हवदि । अध वेरूमाहियदुगुणमेत्ता हनदि तो दोण्हं रूमाण परिहाणी हवदि । अध तिरूमाहियतिउणमेत्ता हनदि तो तिण्हं रूमाण परिहाणी हनदि । एत्थ पुण उपरिमविरलणादो हेट्ठिमविरलणा असखेज्जगुणा त्ति एगरूप-असखेज्जदिभागस्म परिहाणी हनदि । त जहा, हेट्ठिमविरलण-रूमाहियमेत्तद्वाण गतूण जदि एगरूपपरिहाणी लब्भदि तो उपरिमविरलणाहि केवडिय-

$$\frac{२९४९१२}{९} - \frac{११५२१}{१} = \frac{२९४९१२}{१०३६८९} = \frac{२७१७८}{३४०६३} \text{ सासादन आवि १३ गुण}$$

स्थान राशिका अघहारकाल

अधया, सयतासयतके अघहारकालको विरलित करके अनन्तर उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर पल्योपमको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सयतासयत द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर विरलित राशिके एकके ऊपर स्थित उस सयतासयतके द्रव्यको प्रमत्तादि नो सयतराशिसे अपयर्तित करके जो लघ्य आवे उसे विरलित करके और उसके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनमें पहले एकके ऊपर रक्खे हुए सयतासयतके द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति प्रमत्तादि नौ संयत राशिका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त उस नो सयत द्रव्यको ग्रहण करके उपरिम विरलनके द्वितीयादि रूपोंके ऊपर स्थित सयतासयतके द्रव्योंमें तयतरु मिलाते जाना चाहिये जयतक अधस्तन विरलनके ऊपर स्थित नौ सयतराशि समान छेद करके प्रविष्ट हो सके । यदि अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन एक अधिक होये तो एककी हानि होती है । यदि अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन दो अधिक दुगुने होवें तो दोकी हानि होती है । यदि अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन तीन अधिक तिगुना होये तो तीनकी हानि होती है । यहा प्रकृतमें तो उपरिम विरलनसे अधस्तन विरलन असख्यातगुणा है, इसलिये एकके असख्यातवें भागकी हानि होती है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो

रूपपरिहाणि लभामो चि तेरासिए रुदे एगरूपरूम असरोज्जादिभागो आगच्छति ।
तमुपरिमविरलणाए अपणिदे णसजदमहिंसजदासजदाणमनहारकालो होदि ।

पुणो सासणसम्माइट्ठि-अवहारकाल विरलेऊण पलिदोणम समखड करिय दिण्णे
रूप पडि सासणसम्माइट्ठिद्वयपमाण पावदि । पुणो उपरिमविरलणपढमरूपवरिद-
सासणसम्माइट्ठिद्वय णमजदसहिदसजदासजदद्वयेणोपट्टिय तत्थ लद्धमानलियाए
असरोज्जादिभाग विरलेऊण उपरिमविरलणाए पढमरूपस्तुवरि द्विसामणसम्माइट्ठिद्वय
समखड करिय दिण्णे रूप पडि दमगुणट्ठाणरासीओ पावति । एत्थ एगरूपधरिददस-
गुणट्ठाणरासिपमाण धेत्तूण उपरिमविरलणग्ग्हि सुण्ण मोत्तूण तदणतररूपस्तुवरि द्विद-
सामणद्वयग्ग्हि पत्तिउत्ते एकारसगुणट्ठाणरासीओ सब्बे मिलिदा हवति । एव हेट्ठिम

उपरिम विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रेराशिक करने पर एकका
असख्यातवा भाग आता है। उसे उपरिम विरलनमेंसे घटा देने पर नौ सयतसहित
सयतासयत राशि २, अवहारकाल होता है।

उदाहरण—नौ सयतराशि २, सयतासयत अवहारकाल १२८, सयतासयत द्रव्य ७१२।

५१०	७१२	७१०	७१२	१२८	घार।	अधस्तन विरलन २५६ में १
१	१	१	१			अधिक अर्थात् २५७ स्थान जाकर
५१२ - २ = २५६।						यदि १ की हानि प्राप्त होती है
२	२	२	२	२		तो उपरिम विरलन मात्र १२८
१	१	१	१	१	२५६ घार,	स्थान जाकर कितनी हानि होगी,

इसप्रकार त्रेराशिकसे ३३३ की हानि प्राप्त हो जाती है। इसे उपरिम विरलन राशि १२८
मेंसे घटा देने पर १२७३३ आते हैं। यही सयत सहित सयतासयतके द्रव्यका अवहारकाल है।

अनंतर सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालको विरलित करके और उस विरलित
राशिके प्रत्येक एक पर पल्योपमको समान खण्ट करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके
प्रति सासादनसम्यग्दृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। अनंतर उपरिम विरलनके पहले
अरूपपर रखे हुए सासादनसम्यग्दृष्टिके द्रव्यको प्रमत्तादि नौ सयतोंके द्रव्यसहित सयता
सयतके द्रव्यसे भाजित करने वहा जो आवगीका असख्यातवा भाग लब्ध आवे उसे विरलित
करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनके पहले अरूपपर स्थित
सासादनसम्यग्दृष्टिके द्रव्यको समान खण्ट करने देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति
सयतासयत आदि दश गुणस्थानयता जीवोंकी सरथा प्राप्त होती है। यहा अधस्तन विरलनके
एक अरूपपर रखे हुए दश गुणस्थानकी राशिके प्रमाणको ग्रहण करके उपरिम विरलनमें दश
स्थानको (जिस पहले अरुके ऊपर रखी हुई सरथामें दश गुणस्थानोंके द्रव्यका भाग दिया
है उसे) छोड़कर उसके अनंतर अरूपपर स्थित सासादनसम्यग्दृष्टिके द्रव्यमें मिला देने पर
सब मिल कर सासादन और सयतासयत आदि अयोगिकेवलपर्यंत ग्यारह गुणस्थानयतीं

विरलणमेत्तदसगुणद्व्याणद्वय उपरिमविरलणाए द्विदसासणद्वयमिह गिरतर दिण्णे हेट्टिम-
विरलणमेत्तदसगुणद्व्याणरामी समप्पदि । एत्थ एगरूपस्म परिहाणी लब्भदि । पुणो
उपरिमविरलणाए तदणतररूपोपरि द्विदसासणद्वय हेट्टिमविरलणाए समसुद्धं करिय दिण्णे
रूपं पडि दसगुणद्व्याणरामिपमाण पापेदि । एद पि वेत्तूण पुच्च न समकरणे कदे पुणो वि
उपरि एगरूपपरिहाणी लब्भदि । एव पुणो पुणो काद्वय जा उपरिमविरलणा सव्वा
एकारसगुणद्व्याणअवहारकालमेत्त पत्ता ति । एत्तं समकरणे करिय परिहीणरूपाण पमाण-
माणिज्जे । त जहा, हेट्टिमविरलणरूपाहियमेत्तद्व्याणधुवरिमविरलणाए गत्तूण जदि
एगरूपपरिहाणी लब्भदि तो उपरिमविरलणमेत्तसव्वरूपेसु केरुडियरूपपरिहाणि लभामो
ति तेरासिय करिय म्पाहियहेट्टिमविरलणाए उपरिमविरलणमोवट्टिदे आवलियाए
असत्तेज्जदिभागमेत्ताणि अणिज्जमाणरूपाणि लभंति । ताणि उपरिमविरलणाए सरिस-
च्छेदं काउण अणिदे एकारसगुणद्व्याणमवहारकालो होदि । तेण अवहारकालेण
पलिदोत्रमे भागे हिदे एकारसगुणद्व्याणद्वयमाणच्छदि ।

जीवराशि होती है। इसप्रकार अधस्तन विरलनमात्र दश गुणस्थानोंके द्रव्यको उपरिम
विरलनमें स्थित सासादनसम्यग्दृष्टिके द्रव्यमें मिला देने पर अधस्तन विरलनमात्र दश
गुणस्थानोंकी जीवराशि समाप्त हो जाती है और यहा एककी हानि प्राप्त होती है। अनन्तर
उपरिम विरलनमें, जहा तरु दश गुणस्थानराशि मिलाई हो उसके, आन्तरके विरलित
अरूपरिद्यत सासादनसम्यग्दृष्टिके द्रव्यको अधस्तन विरलनके ऊपर समान खण्ड करके
देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति सयतासयत आदि दश गुणस्थानोंकी राशिका प्रमाण
प्राप्त होता है। इस राशिको भी लेकर पहलेके समान समीकरण करने पर, अर्थात् उपरिम
विरलनके शून्यस्थानको छोडकर आगेके स्थानोंमें अधस्तन विरलनमात्र दश गुणस्थानराशिके
मिला देने पर, फिर भी ऊपर एककी हानि प्राप्त होती है। इसप्रकार जतक सपूर्ण उपरिम
विरलन सासादन और सयतासयतादि दश इसप्रकार ग्यारह गुणस्थानवर्ती राशिके
अवहारकालके प्रमाणका प्राप्त होवे तबतक यही विधि पुनः पुनः करते जाना चाहिये।
इसप्रकार समीकरण करके हानिनी प्राप्त हुए अर्कोका प्रमाण लाते हैं। वह इसप्रकार है—

एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान उपरिम विरलनमें जाकर यदि एक अककी
हानि प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमात्र सपूर्ण स्थानोंमें कितने अर्कोकी हानि प्राप्त होगी,
इसप्रकार त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलनके भाजित करने
पर आवलीके असत्पातमें भागमात्र अपनेयमान अक प्राप्त होते हैं। उनको उपरिम
विरलनमेंसे नमच्छेद विधान करके घटा देने पर सासादन और सयतासयत आदि दश
इसप्रकार ग्यारह गुणस्थानवर्ती राशिका अवहारकाल प्राप्त होता है। इस अवहारकालसे
पह्योपमके भाजित करने पर उपर्युक्त ग्यारह गुणस्थानवर्ती जीवराशि आती है।

उदाहरण—सासादन अ. ३२; द्रव्य २०४८; सयतासयतादि १० गुणस्थान द्रव्य ५१४;

पुणो सम्मामिच्छाद्वि अग्रहारकालं निरलेऊण पलिदोयम समसह करिय दिण्णे
 रूव पडि सम्मामिच्छाद्विरासिपमाण पावेदि । पुणो एकारसगुणद्वानरासिणा सम्मा
 मिच्छाद्विरासिद्वयमोउद्विय तत्थ लद्धसंखेज्जरूपाणि निरलेऊण उपरिमनिरलणपढम-
 रूवधरिदमम्मामिच्छाद्विद्वय समसह करिय दिण्णे रूव पडि एकारसगुणद्वानद्वयपमाण
 पावेदि । त धेत्तूण उपरिमनिरलणाए उपरि द्विदमम्मामिच्छाद्विद्वयस्सुवरि परिवाडीए
 दिण्णे रूवाहियहेट्टिमनिरलणमेत्तद्वान गतूग हेट्टिमनिरलणमेत्तरामी समप्पदि, उपरिम
 निरलणाए एगरूपरिहाणी च ह्यदि । तत्थेगरूप पडि वारमगुणद्वानमेत्तरासी
 च ह्यदि । पुणो उपरिमतदणतरएगरूपधरिदमम्मामिच्छाद्विद्वय हेट्टिमनिरलणाए

$$\begin{array}{r} २०४८ \quad २०४८ \quad २०४८ \\ १ \quad १ \quad १ \end{array} \quad ३० \text{ वारः}$$

$$२०४८ - ५१८ = ३ \frac{२५३}{२५७}$$

$$\begin{array}{r} ५१४ \quad ५१४ \quad ५१४ \quad ५०६ \\ १ \quad १ \quad १ \quad २५३ \\ \hline २५७ \end{array}$$

$$१ \frac{५३६}{१२८१} - २ \frac{७४३}{१२८१} = २ \frac{५१२}{१२८१}$$

२५ $\frac{५३६}{१२८१}$ रहते ह । यही उक्त ११ गुणस्थानव्रता राशिके लगेके लिये अवहारकाल हे ।

अनंतर समयमिथ्यादृष्टिके अवहारकालको विरलित करके श्रीर उस विरलित
 राशिके प्रत्येक एकके ऊपर पल्योपमको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित
 राशिके प्रत्येक एकके प्रति समयमिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण प्राप्त होता है । अनंतर पूर्वाक्त
 ग्यारह (सासादन ओर सयतासयतादि १०) गुणस्थानवर्ती राशिसे समयमिथ्यादृष्टि द्रव्यको
 भाजित करके वहा जो सरपात अरु लघ आँ उहें विरलित करके और उस विरलित
 राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनके पहले अकके ऊपर रन्धे हुए समयमिथ्यादृष्टिके
 द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह
 (सासादन और सयतासयतादि दश) गुणस्थानवर्ती द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । उसको
 लेकर उपरिम विरलनके ऊपर स्थित समयमिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर परिपाटीसे देने पर
 उपरिम विरलनके एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर अधस्तन विरलनमात्र
 राशि समाप्त हो जाती है आर उपरिम विरलनमें एक अककी हानि होती है । तथा उपरिम
 विरलनमें जहा तक अधस्तन विरलनके प्रति प्राप्त राशि दी गर है वहा तक प्रत्येक एकके
 प्रति वारह (सासादन, समयमिथ्यादृष्टि ओर सयतासयतादि दश) गुणस्थानवर्ती
 जीवराशि होती है । अनंतर उपरिम विरलनमें, जिस स्थान तक ग्यारह गुणस्थानोंकी
 जीवराशि मिलाई हो उसके, अनंतरके विरलित एक अकपर स्थित समयमिथ्यादृष्टिके

समसङ्क करिय दिण्णे रूअं पडि एकारसगुणट्टाणमेत्तरासी पाअदि । तमेकार-सगुणट्टाणरासिं सुण्णट्टाणं भोत्तूण उअरि णिरतरं दिण्णे रूअ पडि वारसगुण-ट्टाणरासी हवदि । हेट्ठिमरिरलणाए रूअहिय गतूण एगरूअस्स परिहाणी च हवदि । एअ पुणो पुणो ताअ कायव्व जाअ सयपरिसुद्धा उअरिमविरलणा वारसगुणट्टाणदव्वस्स अअहारकाल पत्ता त्ति । एत्थ परिहीणरूवाण पमाणमाणिअदे । तं जहा, रूअहियहेट्ठिमरिरलणमेत्तद्व्वाणं गतूण जदि एगरूअपरिहाणी लब्भदि तो सञ्चिस्से उअरिमविरलणाए केअडियरूअपरिहाणिं लभामो त्ति तेरासिय काऊग रूअहियहेट्ठिम-विरलणाए सम्मामिच्छाअड्ढि-अवहारकालमोवाड्ढिय लद्ध तम्मि चेअ अण्णिदे वारसगुण-ट्टाणाणं दव्वस्स अवहारकालो हअदि । पुणो तेण अअहारकालेण पलिदोअमे भागे हिदे वारसगुणट्टाणदव्वमागच्छदि ।

द्रव्यको अधस्तन विरलनमें समान खण्ट करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह (सासादन और सयतासयतादि १०) गुणस्थानसयन्धी राशि प्राप्त होती है । उस ग्यारह गुणस्थानसयन्धी राशिको जूयस्थानको (जिस अक्के ऊपरकी राशिको अधस्तन विरलनमें समान खण्ट करके दी है उस स्थानको) छोडकर उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके ऊपर निरन्तर देयरूपसे देने पर प्रत्येक एकके प्रति बारह (सासादन, मिश्र आर सयतासयतादि दश) गुणस्थानसयन्धी राशि प्राप्त होती है । तथा उपरिम विरलनमें एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर एककी हानि होती है । इसप्रकार जबतक उपरिम विरलनका प्रमाण हानिरूप स्थानोंसे रहित होकर उपर्युक्त बारह गुणस्थानसयन्धी द्रव्यके अवहारकालको प्राप्त होवे तथतक पुन पुन यही विधि करते जाना चाहिये । अथ यहा पर हानिको प्राप्त हुए स्थानोंका प्रमाण लाते हैं । वह इसप्रकार है—

एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाऊर यदि उपरिम विरलनमें एककी हानि होती है तो सपूर्ण उपरिम विरलनमें कितने अकोंकी हानि होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनसे सम्यामिथ्यादाएके अवहारकालको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे उसी सम्यामिथ्यादाएके अवहारकालमेंसे घटा देने पर उपर्युक्त बारह गुणस्थानसयन्धी द्रव्यका अवहारकाल होता है । पुन इस अवहारकालसे पन्धोपमके भाजित करने पर उपर्युक्त बारह गुणस्थानसयन्धी द्रव्यका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—सम्यामिथ्यादाए अवहारकाल १६, द्रव्य ४०९६,

$$\begin{array}{cccc} ४०९६ & ४०९६ & ४०९६ & १६ \text{ वार,} \\ १ & १ & १ & \end{array}$$

$$४०९६ - २०६२ = १५३४$$

$$\begin{array}{cc} २०६२ & १५३४ \\ १ & १५३४ \\ & २५६० \end{array}$$

$$६५५३६ - २८०७ = ६२७२९$$

$$६५५३६ - २३३२९ = ६२२०७$$

अधस्तन विरलन १६५३४ में एक और मिलाकर जो हो उतने स्थान जाकर यदि उपरिम विरलनमें १की हानि होती है तो उपरिम विरलनमात्र १६ स्थान जाकर कितनी हानि होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर ३३३२९ लब्ध आते

पुणो असजदसम्माडिट्टि अणहारकाल विरलेऊण पलिदोपम समखड करिय दिण्णे
 म्म पडि असजदसम्माडिट्टिरासिपमाण पात्रदि । पुणो वारसगुणद्वानरासिणा असजद-
 सम्माडिट्टिद्वयमोवट्टिय लट्टमात्रलियाए असखेजदिभाग हेट्टा विरलेऊण असजदसम्मा-
 इट्टिद्वय समखड करिय दिण्णे रूज पडि वारसगुणद्वानरासिपमाण पावेदि । पुणो उ-
 रिसुण्णद्वान मोत्तण सेसुपरिमरूपवरिदि अणचदसम्माडिट्टिद्वयस्सुपरि हेट्टिमनिरलणाए
 रूज पडि ट्टिद्वानरमगुणद्वानरासि पक्खित्ते रूज पडि तेरसगुणद्वानरासिपमाण पावेदि,
 हेट्टिमनिरलणरूजाहियमेत्तद्वान गतूण एगरूपपरिहाणी च लब्धदि । पुणो वि तदणतर
 एगरूपधग्दि असजदसम्माडिट्टिद्वय हेट्टिमनिरलणाए समखड करिय दिण्णे वारसगुणद्वान-
 रासिपमाण पावेदि । पुणो त धेत्तण उपरिमनिरलणाए उपरि ट्टिद्व असजदसम्माडिट्टि
 दव्वस्सुपरि सुण्णद्वान मोलिय पक्खित्ते रूज पडि तेरसगुणद्वानरासिपमाण पावेदि

है । इसे उपरिम विरलन १६ मेंसे घटा देने पर ९३३३६ आते हैं । यही उक्त १२ गुणस्था
 नोंका अवहारकाल है । इस अवहारकालका भाग पर्योपम ६५३६ में देने पर उक्त बारह
 गुणस्थानोंके द्रव्यका प्रमाण ६५८ आता है ।

अनंतर असयतसम्यग्दष्टिके अवहारकालको विरलित करके और उस विरलित
 राशिके प्रत्येक एकके प्रति पत्योपमको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित
 राशिके प्रत्येक एकके प्रति असयतसम्यग्दष्टि राशिका प्रमाण प्राप्त होता है । अनंतर पूर्वोक्त
 बारह (सासादन, मिथ्र और सयतासयतादि १०) गुणस्थानवर्ती राशिसे असयतसम्यग्दष्टि
 जीवराशिके प्रमाणको भाजित करके जो आवलीना असखातवा भाग लब्ध आवे उसे पूर्व
 विरलनके नीचे विरलित करके ओर उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति असयत
 सम्यग्दष्टि जीवराशिको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक
 एकके प्रति उपर्युक्त बारह गुणस्थानसब धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । अनंतर
 उपरिम विरलनके प्रथम शून्यस्थानको छोड़कर शेष उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति
 प्राप्त असयतसम्यग्दष्टि द्रव्यप्रमाणम अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त बारह
 गुणस्थानसब धी द्रव्यको मिला देने पर उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति तेरह
 गुणस्थानसब धी (सासादनादि १३) जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । ओर एक अधिक
 अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर एककी हानि प्राप्त होती है । पुन जिस स्थानतक
 अधस्तन विरलनके प्रति प्राप्त राशि मिलाई हो उसके आगेके एक विरलनके प्रति प्राप्त
 असयतसम्यग्दष्टि जीवराशिके प्रमाणको अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके ऊपर समान खण्ड
 करके देयरूपसे देने पर प्रत्येक एकके प्रति उपर्युक्त बारह गुणस्थानसब धी जीवराशिका
 प्रमाण प्राप्त होता है । पुन अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त बारह गुणस्थानसब धी
 राशिको ग्रहण करके उपरिम विरलनमें शून्यस्थानको, अर्थात् जिस स्थानकी असयत
 सम्यग्दष्टि जीवराशि अधस्तन विरलनमें है उसे, छोड़कर शेष विरलनोंपर स्थित

एगस्वरपरिहाणी च लब्धेदि । एव पुणो पुणो कायचं जा उपरिमविरलणा खयपरिसुद्धा
 तेरसगुणद्वयण अवहारकालमेत्तं पत्ता त्ति । पुणो एत्थ अवणयणस्वरपमाणमाणिज्जेदे । तं
 जहा, स्मार्हायहेट्टिमविरलणमेत्तद्व्याणं गत्तुं जदि एगस्वरपरिहाणी लब्धेदि तो सच्चिस्से
 उपरिमविरलणाए केरडियाणि परिहाणिरूपाणि लभामो चि तेरासिय करिय स्मार्हाय-
 हेट्टिमविरलणाए असजदसम्माइट्टि-अवहारकाले ओरडिडे आगलियाए असखेज्जदिभाग-
 मेत्ताणि परिहाणिरूपाणि लब्धंति । कुदो णव्वदे ? सव्वगुणद्वयणेषु पविट्ठसव्वगुणगार-
 सगगादो असजदसम्माइट्टि-अवहारकालो असखेज्जगुणो त्ति एदम्हादो परमगुरूदेसादो ।

असयतसम्यग्दष्टि जीवराशिमें मिला देने पर उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति उपर्युक्त
 तेरह गुणस्थानसबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है और एककी हानि होती है ।
 इसप्रकार जतक उपरिम विरलनका प्रमाण, क्षयको प्राप्त हुए स्थानोंसे रहित होकर,
 उपर्युक्त तेरह गुणस्थानसबन्धी अवहारकालके प्रमाणको प्राप्त होवे तबतक पुन पुन यही
 विधि करते जाना चाहिये । अब यहा हानिको प्राप्त हुए स्थानोंका प्रमाण लाते हैं । वह
 इसप्रकार है—

एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि उपरिम विरलनमें एक स्थानकी
 हानि प्राप्त होती है तो सपूर्ण उपरिम विरलनमें कितने हानिरूप अरु प्राप्त होंगे, इसप्रकार
 त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनके प्रमाणसे असयतसम्यग्दष्टिके अवहारकालको
 भाजित करने पर आवलीके असख्यातवें भागमात्र हानिरूप स्थान प्राप्त होते हैं ।

उदाहरण—असयतसम्यग्दष्टि अवहारकाल ४, द्रव्य १६३८४,

१६३८४	१६३८४	१६३८४	१६३८४	अधस्तन विरलन २१५३६ में
१	१	१	१	१ और मिलाकर जो दो उतने
		१५३४		स्थान जाकर यदि उपरिम
१६३८४	- ६६५८	=	२३३२२	विरलनमें १ स्थानकी हानि
६६५८	६६५८	३०६८		होती है तो उपरिम विरलन
१	१	१५३४		मात्र ४ स्थान जाकर कितनी
		३३२९		

हानि होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर $1 - \frac{1}{1534}$ हानिरूप स्थानाक आते हैं । इसे उपरिम
 विरलन ४ मेंसे घटा देने पर $2 - \frac{1}{1534}$ आते हैं । यही उक्त तेरह गुणस्थानोंका अवहारकाल
 है । इस अवहारकालका भाग पचोपम ६५५३६ में देने पर सासादनादि १३ गुणस्थानराशिका
 प्रमाण २३०४२ होता है ।

शुद्धा—आवलीके असख्यातवें भाग हानिरूप स्थान प्राप्त होते हैं, यह कैसे जाना
 जाता है ।

समाधान—'सपूर्ण गुणस्थानोंमें प्राप्त सपूर्ण गुणकारोंके सगमेंसे असयत
 सम्यग्दष्टिका अवहारकाल असख्यातगुणा है' इस परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है कि

पुणो सम्मामिच्छाद्दिष्टिपमुहरासिणा असजदसम्माद्द्विरासिमोवद्विय रूनाहियकद रासिस्त असनटसम्माद्द्विष्टिपमुहरासिं समखड करिय दिण्णे रूण पडि वारसगुण द्वाणरासिपमाण पावदि। तत्थ बहुभागा असजदसम्माद्द्विरासिपमाण होदि। पुणो प्कारस गुणद्वाणरासिणा सम्मामिच्छाद्द्विरासिमोवद्विय लद्ध रूनाहिय विरलेऊण वारसगुणद्वाण रासिं समखड करिय दिण्णे रूण पडि प्कारसगुणद्वाणरासिपमाण पावदि। तत्थ बहुभागा सम्मामिच्छाद्द्विरासिपमाण होदि। पुणो दसगुणद्वाणरासिणा सासणसम्माद्द्वि

यहा आगलीके असयतासयतवें भाग हानिरूप स्थान प्राप्त होते ह।

पुन सम्यग्मिथ्याद्द्विष्टि आदि वारह (सम्यग्मिथ्याद्द्विष्टि, सासादन और सयतासयतादि १०) गुणस्थानवर्ती राशिसे असयतसम्यग्द्विष्टि जीवराशिको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसमें एक मित्र देने पर जो राशि हो उसके प्रत्येक एकके प्रति असयतसम्यग्द्विष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती राशिसे समान छण्ट करके देयरूपसे देने पर विरलनके प्रत्येक एकके प्रति सम्यग्मिथ्याद्द्विष्टि आदि वारह (सम्यग्मिथ्याद्द्विष्टि, सासादन और सयतासय तादि १०) गुणस्थानसबधी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है। उसमें बहुभाग असयतसम्यग्द्विष्टि जीवराशिका प्रमाण है।

$$\text{उदाहरण—} १६३८४ - ६६५८ = २ \frac{१५३४}{३३२९} + १ = ३ \frac{१५३४}{३३२९}$$

$$\begin{array}{cccc} ६६५८ & ६६५८ & ६६५८ & ३०६८ \\ १ & १ & १ & \frac{१५३४}{३३२९} \end{array} \quad \text{इसमें बहुभाग १६३८४ प्रमाण असयतसम्यग्द्विष्टि राशि है।}$$

अनन्तर ग्यारह (सासादन और सयतासयतादि १०) गुणस्थानसबधी राशिसे सम्यग्मिथ्याद्द्विष्टि राशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसमें एक और मिलाकर उसका विरलन करके विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति वारह (सम्यग्मिथ्याद्द्विष्टि, सासादन और सयतासयतादि १०) गुणस्थानसबधी राशिको समान खड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह (सासादन और सयतासयतादि १०) गुणस्थान सबधी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है। वहा बहुभाग सम्यग्मिथ्याद्द्विष्टि जीवराशिका प्रमाण है।

$$\text{उदाहरण—} २०९६ - २५६२ = १ \frac{१५३४}{२५६२} + १ = २ \frac{१५३४}{२५६२}$$

$$\begin{array}{ccc} २५६२ & २५६२ & १५३४ \\ १ & १ & \frac{१५३४}{२५६२} \end{array} \quad \text{इसमें बहुभाग ४०९६ प्रमाण सम्यग्मिथ्याद्द्विष्टि राशि है।}$$

अनन्तर दश (सयतासयतादि १०) गुणस्थानसबधी राशिसे सासादनसम्यग्द्विष्टि राशिको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसमें एक और मिलाकर कुल राशिका विरलन

द्वयमोवद्विय रूवाहियं करिय विरलेऊण एकारसगुणद्वानरासिं समखडं करिय दिण्णे रूप पडि दसगुणद्वानरामिपमाणं पावेदि । तत्थ बहुभागा सासणसम्माइद्विरासिपमाणं होदि । पुणो णवगुणद्वानरासिणा संजदासजदरासिमोवद्विय रूवाहियं करिय विरलेऊण दसगुणद्वानरासिं समखडं करिय दिण्णे पलिद्वोमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तविरलणरूवं पडि णवगुणद्वानरामिपमाणं पावेदि । तत्थ बहुभागा संजदासजदरासिपमाणं होदि । सेसं सखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा पमत्तसजदरासिपमाणं होदि । सेसं सखेज्जखंडे कए तत्थ बहुभागा अप्पमत्तसजदरामिपमाणं होदि । सेसं सखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा सजोगिरासिपमाणं होदि । सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा पंच खवगणपमाणं होदि । सेसेगभागो चउण्हमुवसामगाण होदि । एव भागभागो समत्तो ।

करके ओर उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह (सासादन और सयतासयतादि १०) गुणस्थानसबन्धी राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति दश (सयतासयतादि १०) गुणस्थानसबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । यहा पर बहुभाग सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण है ।

$$\text{उदाहरण—} २०४८ - ५१४ = ३ \frac{२५३}{२५७} + १ = ४ \frac{२५३}{२५७}$$

५१४	५१४	५१४	५१४	५०६	यहा पर बहुभाग २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दष्टि राशि है ।
१	१	१	१	२५३	
				२५७	

अनन्तर नौ (प्रमत्तसयतादि ९) गुणस्थानसबन्धी राशिके सयतासयत राशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे रूपाधिक करके और उसका विरलन करके विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति दश (सयतासयतादि १०) गुणस्थानसबन्धी राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर पल्योपमके असग्यातर्वे भागमात्र विरलनके प्रति नौ (सयतादि ९) गुणस्थानसंबन्धी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है । यहा पर बहुभाग सयतासयत जीवराशिका प्रमाण है ।

$$\text{उदाहरण—} ५१२ - २ = २५६ + १ = २५७$$

२	२	२	२	२	यहा पर बहुभाग ५१२ सयता सयत राशि है ।
१	१	१	१	१	

शेष राशिके सख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग प्रमत्तसयत जीवराशिका प्रमाण है । शेष राशिके सख्यात खण्ड करने पर उनमेंसे बहुभाग अप्रमत्तसयत जीवराशिका प्रमाण है । शेषके सख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग सयोगिकेवली जीवराशिका प्रमाण है । शेषके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग पाचौं क्षपकोंका प्रमाण है । शेष एक भाग चारों उपशमकोंका प्रमाण है । इसप्रकार भागभाग समाप्त हुआ ।

सपदि अवगदसञ्चरमाणस्त मिस्तस्म एत्वेन रामीणमप्परुत्तं भणिस्सामो—

अद्वमे अणियोगहारे एद सुत्तगारो भणिस्सदि ति पुणरुत्तदोमो भयदि ति
णासकणिज्ज, तस्स पडिपुद्धसिस्सन्निमयत्तादो । अप्पडिपुद्धमिस्से जस्सिउण सदवार-
परुण पि ण दोसकारण भवदि । तत्थ जप्पापहुग दुग्धि, सत्थाणप्पावहुग सञ्चर-
त्याणप्पावहुग चेदि । एत्थ मिच्छाडिट्ठिस्स सत्थाणप्पावहुग णत्थि । किं कारण ? जेण
मिच्छाडिट्ठिरासीदो धुरासी अब्भहिओ जादो । तत्थ ताव सासणसम्माडिट्ठिस्स सत्थाण
प्पावहुअ वत्तइस्सामो । त जहा, मप्परयोरो अन्नहारकालो तस्सेव दब्बममयेज्जगुण ।
को गुणगारो ? मगद्वयस्स अससेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सग-अन्नहारकालो ।
अथवा गुणगारो पलिदोपमस्स अससेज्जदिभागो जससेज्जाणि पलिदोवमपढमग्ग-
मूलाणि । को पडिभागो ? सगअन्नहारकालग्गो । एत्थ पडिभागणिमित्त दुग्गादिकरण

अथ जिसने सपूर्ण जीवराशिके प्रमाणको जान लिया हे ऐसे शिष्यके लिये यहाँ पर
जीवराशिका अल्पबहुत्व बतलाते हैं—

शुक्रा—सूत्रकार आठवें अनुयोगधारमें इसका क्या करेंगे ही, इसलिये यद्वा पर
उसका क्या करनेसे पुनरुक्त दोष होता है ?

समाधान—ऐसी आशका नहीं करनी चाहिये, क्योंकि, यह पुनरुक्तिदोषविचार
प्रतिबुद्ध शिष्यका ही विषय हे । किन्तु जो शिष्य अप्रतिबुद्ध हे उसकी अपेक्षा सोचार प्ररूपण
करना भी दोषका कारण नहीं है ।

अल्पबहुत्व दो प्रकारका हे, स्वस्व ज्ञान अल्पबहुत्व और सर्वपरस्थान अल्पबहुत्व ।
ओघप्ररूपणमें मिथ्यादृष्टि जीवराशिका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है ।

शुक्रा—इसका क्या कारण हे ?

समाधान—क्योंकि, मिथ्यादृष्टि जीवराशिके जीवराशि बड़ी हे । अब पहले सासादन
सम्यग्दृष्टि राशिका स्वस्थान अल्पबहुत्व बतलाते हैं । यह इसप्रकार हे— सासादनसम्यग्दृष्टिका
अवहारकाल सबसे स्तोक है । उसीका द्रव्य अवहारकालसे असखातवा गुणा हे । गुणकार
क्या है ? अपने (सासादनसवर्ग) द्रव्यका असखातवा भाग गुणकार हे । प्रतिभाग क्या
हे ? अपना (सासादनसवर्ग) अवहारकाल प्रतिभाग हे । अथात् अवहारकालका सासादन
सम्यग्दृष्टिसवर्ग द्रव्यमें भाग देने पर जो लब्ध जाये उसको अवहारकालसे गुणित करने
पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है । अथवा, गुणकार पत्योपमका असखातवा भाग हे
जो पत्योपमके असखातवा प्रथम वर्गमूत्रप्रमाण हे । प्रतिभाग क्या है ? अपने अवहारकालका
वर्ग प्रतिभाग हे ।

उदाहरण—सासादन द्रव्य २०४८, अवहारकाल ३२, २०४८ - ३२ = ६४ गुणकार
प्रतिभाग ३२, पत्योपम ६५६३६ अवहारकालका वर्ग ३२ × ३२ = १०२४
प्रतिभाग, ६५६३६ - १०२४ = ६४ गुणकार

काद्वय । तं जहा, वचइस्सामो—सगअणहारकालेण पलिदोउमे भागे हिदे सासणसम्मा-
इट्टिरासी आगच्छदि । तिगुणिदअणहारकालेण पलिदोउमे भागे हिदे सासणसम्माइट्टि-
रासिस्स दुभागो आगच्छदि । तिगुणिदअणहारकालेण पलिदोउमे भागे हिदे सासणसम्मा-
इट्टिरासिस्स तिभागो आगच्छदि । एउ ताउ दुगुणादिकरणं काद्वय जाउ सासणसम्माइट्टि
अणहारकालस्स अद्वच्छेदणयमेत्तारा गदा चि । तत्थ अंतिमवियपं वचइस्सामो ।
सासणसम्माइट्टि-अवहारकालस्स अद्वच्छेदणए पिरलेऊण निगं करिय अण्णोण्णभासे
कदे सासणसम्माइट्टिरासिस्स अणहारकालो होदि । तेण अणहारकालेण सासणसम्माइट्टि-
रासिस्स अवहारकाले गुणिदे गुणगारपडिभागो होदि । सासणसम्माइट्टिद्वयादो पलि-
दोउममसंसेज्जगुण । को गुणगारो ? सग अवहारकालो । एव सम्मामिच्छाइट्टि असंजद-
सम्माइट्टि सजदासजदाण च अप्पाउहुग उत्तव । पमत्तसजदादीण सत्याणप्पाउहुगं
णत्थि, तेमिमवहारकालाभावादो ।

यहा पर प्रतिभागका प्रमाण निकालनेके लिये द्विगुणादिकरण विधि करना चाहिये ।
वह जिसप्रकार है आगे उसीको बतलाते हैं— अपने अवहारकालसे पर्योपमको भाजित
करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ($६५५३६ - ३२ = २०४८$ सा)
द्विगुणित अवहारकालसे पर्योपमको भाजित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका
दूसरा भाग आता है ($६५५३६ - ६४ = १०२४$) । त्रिगुणित अवहारकालसे पर्योपमके भाजित
करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका तीसरा भाग आता है ($६५५३६ - ९६ = ६८२३$) ।
इसप्रकार जवतक सासादनसम्यग्दृष्टिसंघन्धी अवहारकालके अर्धच्छेदोंका जितना प्रमाण हो
उतनेचार द्विगुणादिकरण विधि हो जाये तबतक यह विधि करते जाया चाहिये । वहा अब
अन्तिम विकल्पको बतलाते हैं— सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिसंघन्धी अवहारकालके अर्ध
च्छेदोंको विरलित करके ओर उसको दो रूप करके परस्पर गुणा करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि
जीवराशिके अवहारकालका प्रमाण होता है । इस अवहारकालसे सासादनसम्यग्दृष्टि जीव
राशिके अवहारकालको गुणित करने पर गुणकारप्रतिभागका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल ३०, अर्धच्छेद ५,

$$\begin{array}{cccccc} २ & ० & २ & २ & ० & = ३०, ३२ \times ३० = १०८४ \text{ गुणकार प्रतिभाग.} \\ १ & १ & १ & १ & १ & \end{array}$$

सासादनसम्यग्दृष्टिके उच्यसे पर्योपम असत्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना
अर्थात् सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल गुणकार है ($२०४८ \times ३२ = ६५५३६$ पर्योपम) ।

इसीप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असत्यतसम्यग्दृष्टि और सत्यतासत्यतोंके अल्पबहुत्वका
कथन करना चाहिये । प्रमत्तसत्यत आदिका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, क्योंकि,
उनका अवहारकाल नहीं है ।

सव्यपरस्थानप्यापहुम वत्तइस्सामो । त जहा- सव्ययोवा चत्तारि उवसामगा ।
 पंच सगगा सखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अट्टाद्वज्जरूपाणि । सजोगिकेवल्लिद्व
 सखेज्जगुण । को गुणगारो ? सखेज्जसमया वा । अप्पमत्तसज्जटा सखेज्जगुणा । को
 गुणगारो ? सखेज्जममया वा । पमत्तसज्जटा सखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सखेज्ज
 समया वा । सव्यत्य हेडिमरासिणोपरिमरासिभिह भागे हिदे जो भागलद्धो सो गुणगारो ।
 पमत्तसज्जददच्चाटो असज्जदसम्माइट्ठि-अरहारकालो असखेज्जगुणो । को गुणगारो ?
 सग अवहारकालस्स सखेज्जदिमागो । को पडिभागो ? पमत्तसज्जदद्व्य । सम्मामिच्छाडिट्ठि
 अवहारकालो असखेज्जगुणो । को गुणगारो ? मग-अरहारकालस्स असखेज्जदिमागो ।
 को पडिभागो ? असज्जदसम्माइट्ठि-अरहारकालो । माग्णसम्माइट्ठि अरहारकालो सखेज्ज
 ...

अथ सव्यपरस्थान अल्पयहुत्वको वतलाते है । यह इसप्रकार है— चारों उपशामक
 (उपशाम श्रेणिके चारों गुणस्थानका जीव) सबसे स्तोक है । पान्चों क्षपक (क्षपक श्रेणिके
 चारों गुणस्थानयता और भयोगिकेचली जीव) उपशामकोंसे सख्यातगुणे है । यहा गुणकार
 क्या है ? दार अक गुणकार है ।

उदाहरण—चारों गुणस्थानवतीं उपशामक १०१६ $1216 \times 3 = 3048$ पाचोंक्षपक।
 सयोगिकेचलियोंका द्रव्यप्रमाण पाचा क्षपकोंस सख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
 सख्यात समय गुणकार है । अप्रमत्तसयत सयोगिकेचलियोंके प्रमाणसे सख्यातगुणे है । गुण
 कार क्या है ? सख्यात समय गुणकार है । प्रमत्तसयत अप्रमत्तसयतोंके प्रमाणसे सख्यातगुणे
 है । गुणकार क्या है ? सख्यात समय गुणकार है । यहा सर्वत्र नीचेकी राशिसे उपरिम राशिसे
 भाजित करने पर जो भाग लब्ध आवे वह यहा गुणकार होता है ।

उदाहरण—सयोगिकेचली ८९८५०२, अप्रमत्त २९६९९१०३, प्रमत्त ५९३९८५०६।
 $29699103 - 89802 = 29690123$ इससे सयोगी राशिको गुणित
 $59398506 - 29690123 = 29708383$ करने पर अप्रमत्त राशि आती है ।
 करने पर प्रमत्तसयत राशि आती है ।

प्रमत्तसयतके द्रव्यसे असयतसम्यग्दृष्टिसवधी अवहारकाल असख्यातगुणा है । गुण
 कार क्या है ? अपने अवहारकालका सख्यातका भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? प्रमत्त
 सयतका द्रव्यप्रमाण प्रतिभाग है ।

उदाहरण—प्रमत्तसयत ५९३९८००६ = २, असयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल ४।
 $4 - 2 = 2$ गुणकार, $2 \times 2 = 4$ अवहारकाल ।
 असयतसम्यग्दृष्टिके अवहारकालसे सम्यग्मिध्यादृष्टिका अवहारकाल असख्यातगुणा
 है । गुणकार क्या है ? अपने अवहारकालका असख्यातका भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ?
 प्रमत्तसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल प्रतिभाग है ।

गुणो । को गुणगारो ? सखेज्जसमया वा । को पडिभागो ? सम्मामिच्छाइट्ठि अवहार-
कालो । सजदासंजद अवहारकालो असखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सग अणहारस्स
असखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालो । तदो सजदासजद-
दव्व असखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगटव्वस्स असखेज्जदिभागो । को पडिभागो ?
सग अवहारकालो । अहया पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागो असखेज्जाणि पलिदोवमपठ-
मग्गमूलाणि । को पडिभागो ? सग अणहारकालग्गो । सजदासंजददव्वस्सुपरि सासण-
सम्माइट्ठिदव्व असखेज्जगुण । को गुणगारो ? सगटव्वस्स असखेज्जदिभागो । को
पडिभागो ? संजदासजददव्वमणहारकालो । अहया सामणसम्माइट्ठि-अवहारकालेण

उदाहरण—सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल १६, १६ - ४ = ४ गुणकार; ४ × ४ = १६
सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अवहारकालसे सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल असत्यातगुणा
है । गुणकार क्या है ? सत्यात समय । प्रतिभाग क्या है ? सम्यग्मिथ्यादृष्टिका अवहारकाल
प्रतिभाग है ।

उदाहरण—सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल ३२, ३२ - १६ = २ गुणकार, १६ × २ = ३२
सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल ।

सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालसे सयतासयतका अवहारकाल असत्यातगुणा
है । गुणकार क्या है ? अपने अवहारकालका असत्यातवा भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या
है ? सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल प्रतिभाग है ।

उदाहरण—सयतासयत अवहारकाल १२८, १२८ - ३२ = ४ गुणकार, ३२ × ४ = १२८
सयतासयत अवहारकाल ।

सयतासयतके अवहारकालसे सयतासयत द्रव्यप्रमाण असत्यातगुणा है । गुणकार
क्या है ? अपने द्रव्यका असत्यातवा भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना (सयता-
सयतका) अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा, पत्योपमका असत्यातवा भाग गुणकार है जो
पत्योपमके असत्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपने (सयतासयतके)
अवहारकाल का वर्ग प्रतिभाग है ।

उदाहरण—सयतासयत द्रव्य ५१२ ५१२ - १२८ = ४ गुणकार; १२८ × ४ = ५१२
सयतासयत द्रव्य । अथवा, १२८ × १२८ = १६३८४; ६५६३६ - १६३८४
= ४ गुणकार ।

सयतासयतके प्रमाणके ऊपर सासादनसम्यग्दृष्टिका द्रव्यप्रमाण सयतासयतके द्रव्यसे
असत्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने (सासादनके) द्रव्यका असत्यातवा भाग
गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? सयतासयतके द्रव्यप्रमाणका अवहारकाल प्रतिभाग है ।
अथवा, सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालसे सयतासयतके अवहारकालको भाजित करने पर

सजदासजद अवहारकाले भागे हिंदे गुणगारो रासी आगन्छिदि । अहवा उपरिमरासि-
 अवहारकालेण हेट्टिमरासिं गुणेऊण पलिदोवमे भागे हिंदे गुणगाररासी आगन्छिदि । एत्थ
 त्रिगुणादिकरण वादव्य । त जहा—सजदासजदरासिपमाणेण पलिदोवमे भागे हिंदे
 सजदासजद-अवहारकालो आगन्छिदि । त्रिगुणिसजदासजददव्यपमाणेण पलिदावमे भागे
 हिंदे सजदासजद-अवहारकालस्स दुभागो आगन्छिदि । त्रिगुणिसजदासजदरासिणा
 पलिदोवमे भागे हिंदे तस्सेव अवहारकालस्स तिभागो आगन्छिदि । एदेण कमेण णेदव्य
 जाव सजदासजदरासिस्स गुणगारो सासणसम्माइट्टि अवहारकालमेत्त पत्तो चि । तदा
 सासणसम्माइट्टि अवहारकालो सजदासजद अवहारकालस्स अससेज्जदिभागो आगन्छिदि ।
 एदेण पुव्वुत्तगुणगारो साहेयवो । सजदासजदगुणस्स उक्कस्सकालो ससेज्जाणि
 वस्साणि । सासणसम्माइट्टिगुणस्स उक्कस्सकालो छ आत्रलियाओ । एदेसिमुक्कमण-
 कालादी अप्पणो गुणकालपडिस्वा हवति चि सासणसम्माइट्टिदव्यादो सजदासजद-
 दव्येण सखेज्जगुणेण होदव्यमिदि ? ण एस दोसो, जदि वि सासणसम्माइट्टि उक्क-

गुणकार राशिका प्रमाण आता हे । अथवा, उपरिम राशिके अवहारकालसे अधस्तन राशिको
 गुणित करके जो लब्ध आये उससे पल्योपमके भाजित करने पर गुणकार राशि आती है ।

उदाहरण—सासादन द्रव्य २०८८, २०८८ - १०८ = १६ गुणकार; १०८ × १६ = २०४८
 सासादन द्रव्यप्रमाण । अथवा, १२८ - ३२ = ४ गुणकार, ५१० × ४ = २०४८
 सा । अथवा, ५१० × ३२ = १६३८४, ६' ३६ - १६३/४ = ४ गुणकार;
 ५१२ × ४ = २०४८ सा ।

यहा पर द्विगुणादिकरण विधि करना चाहिये । वह इसप्रकार है—सयतासयत
 राशिके प्रमाणसे पल्योपमके भाजित करने पर सयतासयतका अवहारकाल आता है
 (६५ ३६ - ५१२ = १०८) । द्विगुणित सयतासयत द्रव्यके प्रमाणसे पल्योपमके भाजित करने
 पर सयतासयतके अवहारकालका दूसरा भाग आता है (६' ३६ - १००) = ६४) । त्रिगुणित
 सयतासयत राशिके पल्योपमके भाजित करने पर सयतासयतके अवहारकालका तीसरा भाग
 आता है (६५५३६ - १५३६ = ४२०१३) । इसी क्रमसे तयतक ले जाना चाहिये जबतक
 सयतासयत राशिका गुणकार सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालके प्रमाणको प्राप्त हो जावे ।
 उस समय सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल सयतासयतके अवहारकालका असरयतवा
 भाग आता है । इससे पूर्वार्त्त गुणकार साथ लेना चाहिये (१२८ - ३२ = ४ गुणकार) ।

शुक्रा—सयतासयत गुणस्थानका उत्कृष्टकाल सख्यात वर्ष है और सासादनसम्यग्दृष्टि
 गुणस्थानिका उत्कृष्टकाल छह आत्रली है । अत इनके उपक्रमणकाल नादिक अपने अपने
 गुणस्थानके कालके अनुसार होते हैं, इसलिये सासादनसम्यग्दृष्टिके द्रव्यप्रमाणसे सयता
 सयत द्रव्यप्रमाण सख्यातगुणा होना चाहिये ?

मणकालादो संजदासंजद-उपक्रमणकालो संखेज्जगुणो ह्यदि तो वि सजदासंजद-
द्वयादो सासणसम्माइद्विद्वयमसंखेज्जगुणमेव । कुदो ? सम्मत्त चारिचपिरोहिसासण-
गुणपरिणामेहितो ममयं पडि असंखेज्जगुणाए सेढीए कम्मणिज्जरणहेउभूदसंजमासजम-
परिणामो अइदुल्लहो त्ति काऊण समय पडि संजमामजम पडिवज्जमाणरासीदो समय पडि
नामणगुणं पडिवज्जमाणरासी असंखेज्जगुणो ह्यदि त्ति । सासणसम्माइद्विरासीदो सम्मा-
मिन्डाइद्विद्वय संखेज्जगुण, सासणसम्मादिद्वि छ आरलि-अवभंतर उपकमणकालादो
अवोमुहत्तमेत्त-सम्मामिन्डाइद्वि-उपक्रमणकालस्स संखेज्जगुणत्तादो । को गुणगारो ?
संखेज्जसमया वा । एत्थ पि रासिणा रासिं भागे हिंदे गुणगाररासी आगन्डदि । अ-
हारकालेण अवहारकाले भागे हिंदे गुणगाररासी आगन्डदि । उपरिमरामि-अवहारकालेण
हेट्ठिमरामिं गुणेऊण पलिदोत्रमे भागे हिंदे गुणगाररासी आगन्डदि । सम्मामिन्डाइद्वि-
द्वयस्सुपरि असजदसम्माइद्विद्वयमसंखेज्जगुणं । कुदो ? सम्मामिन्डाइद्वि-उपक्रमण-

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, यद्यपि सासादनसम्यग्दष्टिके उपक्रमण
कालसे सयतासयतका उपक्रमणकाल सख्यातगुणा है, तो भी सयतासयत द्रव्यप्रमाणसे
सासादनसम्यग्दष्टि द्रव्यप्रमाण अनख्यातगुणा ही है, क्योंकि, सम्यक्त्व ओर चारित्र्यके
पिरोधी सासादनगुणस्थानसधन्वी परिणामोंसे प्रत्येक समयमें असख्यातगुणी श्रेणीरूपसे
कमतिर्जराके कारणभूत सयमासयमरूप परिणाम अत्यन्त दुर्लभ है, इसलिये प्रत्येक समयमें
संयमासयमको प्राप्त होनेवाली जीवराशिकी अपेक्षा प्रत्येक समयमें सासादनसम्यग्दष्टि
गुणस्थानको प्राप्त होनेवाली जीवराशि असख्यातगुणी है ।

सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिसे सम्यग्मिध्यादष्टि द्रव्यका प्रमाण सख्यातगुणा है,
क्योंकि, सासादनसम्यग्दष्टिके छह आवलीके भीतर होनेवाले उपक्रमण कालसे सम्यग्मिध्या
दष्टि गुणस्थानका अन्तर्मुहूर्तप्रमाण उपक्रमण काल सख्यातगुणा है । गुणकार क्या है? सख्यात
समय गुणकार है । यदा भी एक राशिका दूसरी राशिमें भाग देने पर गुणकार राशि आ
जाती है । अथवा, अवहारकालसे अवहारकालके भाजित करने पर गुणकार राशि आ जाती है ।
अथवा, उपरिम राशिके अवहारकालसे अधस्तन राशिके गुणित करके जो लब्ध आवे उसका
पस्योपममें भाग देने पर गुणकार राशि आ जाती है ।

उदाहरण—सम्यग्मिध्यादष्टि द्रव्य ४०९६; ४०९६ - ३२ = १२८ गुणकार; ३२ × १२८
= ४०९६ सम्यग्मिध्यादष्टि द्रव्य । अथवा, ४०९६ - २०४८ = २ गुणकार;
२०४८ × २ = ४०९६ सम्यग् द्रव्य । अथवा ३२ - १६ = २ गुणकार ।
२०४८ × २ = ४०९६ । अथवा, २०४८ × १६ = ३२७६८; ६५५३६ -
३२७६८ = २ गुणकार; २०४८ × २ = ४०९६ ।

सम्यग्मिध्यादष्टिके द्रव्यके ऊपर अमयतसम्यग्दष्टिका द्रव्य उससे अतख्यातगुणा है,
क्योंकि, सम्यग्मिध्यादष्टिके उपक्रमण कालसे अनख्यात आयुक्तियोंके भीतर होनेवाला असयत-

कालादो असखेज्जावलयिबभतर-असजदसम्माइट्टि-उवक्कमणकालस्म असखेज्जगुणत्तादो । अहवा दोण्ह पि गुणट्टाणाणमुवक्कमणकालमणवेक्खिय असखेज्जगुणत्तस्स कारणमण्णहा चुचदे । त जहा, समय पडि सम्मामिन्छत्त पडिवज्जमाणरासीदो वेदगसम्मत्त पडि-वज्जमाणरासी अमखेज्जगुणो । जेण वेदगसम्माइट्टीणमसखेज्जदिभागो मिन्छत्त गन्छदि । तस्स वि असखेज्जदिभागो सम्मामिन्छत्त गन्छदि । 'सच्चकालमवट्टिदरासीण वयाणु-सारिणा आएण होदव्व' इदि णायादो असजदसम्माइट्टिरासीदो णिण्णिडिदमेत्ता चेव अट्टीससत्तकम्मिया मिन्छाट्टिणो वेदगसम्मत्त पडिवज्जति । तम्हा सम्मामिच्छा-इट्टिदव्वादो असजदसम्माइट्टिदव्वमसखेज्जगुणमिदि सिद्ध । एद वक्कणमेत्थ पधाण-मिदि गेण्हदव्व । को गुणगारो ? आणलियाए असखेज्जदिभागो । एत्थ वि तीहि पयारेहि गुणगारो साहेयव्वो । पल्लिदोमसखेज्जगुण । को गुणगारो ? सग अवहार-

सम्यग्दृष्टिका उपप्रमण काल असख्यातगुणा हे । अथवा, पूर्वाक्त दोनों ही गुणस्थानोंके उपप्रमण कालकी अपेक्षा न करके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंसे असयतसम्यग्दृष्टि असख्यातगुणे हैं, इसका कारण दूसरे प्रकारसे कहते हैं । यह इसप्रकार है— प्रत्येक समयमें सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाली राशिसे वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त होनेवाली राशि असख्यातगुणी है । तथा जिस कारणसे वेदकसम्यग्दृष्टियोंका असख्यातवा भाग मिथ्यात्वको प्राप्त होता है ओर उसका भी असख्यातवा भाग सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त होता है । तथा 'सर्वदा अवस्थित राशियोंके व्ययके अनुसार ही आय होना चाहिये' इस न्यायके अनुसार मोहनीयके अट्टावीस कर्मोंकी सत्ता रखनेवाले जितने जीव असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशियोंसे निकलकर मिथ्यात्वको प्राप्त होते हैं उतने ही मिथ्यादृष्टि वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त होते हैं, इसलिये सम्यग्मिथ्यादृष्टिके द्रव्यसे असयतसम्यग्दृष्टिका द्रव्य असख्यातगुणा है, यह सिद्ध हो जाता है । यह व्याख्यान यहा पर प्रधान है ऐसा समझना चाहिये । गुणकार क्या है ? आयलीका असख्यातवा भाग गुणकार है । यहा पर भी पूर्वाक्त तीनों प्रकारोंसे गुणकार साध लेना चाहिये ।

उदाहरण—असयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य १६३८४, १६३८४ - १६ = १००४ गुणकार;
 $१००४ \times १०२४ = १६३८४$ असयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य । अथवा, १६३८४ - ४०९६
 = ४ गुणकार; $४०९६ \times ४ = १६३८४$ असयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य । अथवा,
 $१६ - ४ = ४$ गुणकार; $४०९६ \times ४ = १६३८४$ असयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य ।
 अथवा, $४०९६ \times ४ = १६३८४$, $६५५३६ - १६३८४ = ४$ गुणकार;
 $४०९६ \times ४ = १६३८४$ असयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य ।

असयतसम्यग्दृष्टिके द्रव्यसे पर्योपम असख्यातगुणा हे । गुणकार क्या है ? अपना (असयतसम्यग्दृष्टिका) अवहारकाल गुणकार है ।

उदाहरण— $१६३८४ \times ४ = ६५५३६$ पर्योपम ।

कालो । नस्सुपरि मिद्धान्तगुणा । को गुणगारो ? अभयसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धान्तम-
संखेज्जदिभागो । मिच्छाइद्धी अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभयसिद्धिएहि वि अणंतगुणो
सिद्धेहि वि अणंतगुणो भवसिद्धियाणमणताभागस्स अणत्तिमभागो ।

एवमोषे चोदसगुणद्वाणपरूवणा समता ।

द्व्यद्वियमवलत्रिय द्विदसिस्साणमणुग्गहणद्ध सामण्णेण चोदसगुणद्वाणपमाण-
परूवण करिय पज्जवद्वियणयमवलत्रिय द्वियसिस्साणमणुग्गहणद्धमाह—

आदेसेण गदियाणुवादेण गिरयगईए णेरइएसु मिच्छाइद्धी
द्व्यपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा' ॥ १५ ॥

आदेसेण पज्जवणयात्रलवणेण गुणद्वाणाणं पमाणपरूवण कीरदे । एत्थ इत्थंभाव-
लक्षणे तदियाणिहेसो त्ति द्दृष्टो' । गदियाणुवादेण । सा च भेदपरूवणा चोदसमग्गण-
द्वाणाणि अस्सिऊण ट्ठिदा । तेहि अक्कमेण परूवणा ण समददीदि अपगदमग्गणद्वाणाणि
अवणिय पयदमग्गणद्वाणजाणावणद्धं गदिग्गहण । आदेसमस्सिऊण जा गुणद्वाणाणं पमाण-

पल्योपमके ऊपर सिद्ध उससे अनन्तगुणे हे । गुणकार क्या है ? अभव्यसिद्धोंसे
अनन्तगुणा या सिद्धोंके असंख्यतया भाग गुणकार है । सिद्धोंसे मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे
ह । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे भी अनन्तगुणा, सिद्धोंसे भी अनन्तगुणा और भव्यसिद्धोंके
अनन्त बहुभागोंका अनन्तवा भाग गुणकार है ।

इसप्रकार ओघमें चौदह गुणस्थान प्ररूपणा समाप्त हुई ।

द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करके स्थित हुए शिष्योंका अनुग्रह करनेके लिये
सामान्यसे चौदहों गुणस्थानोंके द्रव्यप्रमाणका प्ररूपण करके अब पर्यायाधिक नयका
अवलम्बन करके स्थित शिष्योंका अनुग्रह करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

आदेशकी अपेक्षा गतिमार्गणाके अनुनाइसे नरकगतिगत नारकियोंमें मिथ्यादृष्टि
जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात है ॥ १५ ॥

आदेशसे अर्थात् पर्यायाधिक नयकी अपेक्षा गुणस्थानोंके प्रमाणका प्ररूपण करते हैं ।
यहां 'आदेसेण' इस पदमें तृतीया विभक्तिका निर्देश इत्थंभावलक्षण है, ऐसा समझना
चाहिये । अब 'गदियाणुवादेण' इस पदका स्पष्टीकरण करते हैं । ऊपर जो भेदप्ररूपणाकी
प्रतिज्ञा की है वह भेदप्ररूपणा चौदहों मार्गणाओंका आश्रय लेकर स्थित है । परंतु उनके द्वारा
अक्रमसे अर्थात् युगपत् प्ररूपणा नहीं हो सकती है, इसलिये अविचक्षित मार्गणास्थानोंको
छोडकर प्रकृत मार्गणास्थानके ज्ञान करानेके लिये सूत्रमें गति पदका ग्रहण किया है । आदेशका
आश्रय करके जो गुणस्थानोंके प्रमाणकी प्ररूपणा की जाती है वह आचार्य परंपराके द्वारा

१ असंखेज्जा णेरइया । अनु सूत्र १४१, पृ १७९

२ इत्थंभावलक्षणे (तृतीया) । पाणिनि, २, ३, २०

परूपा मा आदिरियपरपराए अणाइणिहणत्तणेण जागदा चि जाणात्तणह अणुत्तादग्गहण ।
 सेसगदिणिारणह णिरयगदिग्गहणं क्क । सेसगदीओ मोत्तण पुव्व णिरयगदी चेव
 किमह्ठ वुच्चदे ? ण, णेरइयदसणेण समुप्पणमज्झमस्स भन्निस्स दसलम्पणे धम्मे णिच्चल
 सत्तवेण तुद्धी चिट्ठत्ति चि काउण पुव्व तप्परूपादो । णेरइयसु चि किमह्ठ ? ण, तत्त्व
 तणयेत्तकालपडिसेहफलत्तादो । मिच्छात्तट्ठिग्गहण किमह्ठ ? सेसगुणट्ठाणणियत्तणह्ठ ।
 दव्वपमाणेणेत्ति किमह्ठ ? सेत्तकालणिारणह्ठ । केरडिया इदि पुच्छा किंफला ? जिणाण-
 मत्थक्कत्तारत्तपटुप्पायणमुहेण अप्पणो कत्तारत्तपडिमेहफला । एव गोदमसामिणा पुत्तिउदे
 महावीरमयत्तेण केरलणाणेणात्तगदत्तिकालगोयरासेसपयत्थेण असयेजा इदि तेसिं पमाण
 परूविद । एवमुत्ते सरेज्जाणताण पडिणियत्ती । त पुण अमसेज्जमणेयनियप्प । त जहा-

अनादिनिघनरूपसे आई हुई है, इसका ज्ञान करानेके लिये सूत्रमें अनुवाद पदका ग्रहण किया
 है । शेष गतिर्योका निराकरण करनेके लिये सूत्रम नरगति पदका ग्रहण किया है ।

शुक्रा— शेष गतियाके कथनको छोडकर पहले नरगतिका ही वर्णन क्यों किया
 जा रहा है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, नारकियोंके स्वरूपका ज्ञान हो जानेसे जिसे भय उत्पन्न
 हो गया है ऐसे भय जीवका दशलक्षण धर्ममें निदचलरूपसे बुद्धि स्थिर हो जाती है, ऐसा
 समझकर पहले नरगतिका वर्णन किया ।

शुक्रा— सूत्रमें ' णेरइयसु ' यह पद किसलिये दिया गया है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, नरगतिसंबन्धी क्षेत्र और कालका प्रतिषेध करना उक्त
 पदका फल है ।

शुक्रा— सूत्रमें ' मिच्छात्तट्ठी ' इस पदका ग्रहण किसलिये किया है ?

समाधान— शेष गुणस्थानोंके निवारणके लिये मिथ्यात्तट्ठी पदका ग्रहण किया है ।

शुक्रा— सूत्रमें ' द्रव्यप्रमाणसे ' ऐसा पद क्यों दिया है ?

समाधान— क्षेत्र और कात्तका प्रतिषेध करनेके लिये ' द्रव्यप्रमाणसे ' पदका
 ग्रहण किया है ।

शुक्रा— कितने ह ' इस पृच्छाका क्या फल है ?

समाधान— जिने द्रव्य ही अर्थकर्ता है, इस वातके प्रतिपादन द्वारा अपने
 (भूतबलिके) कर्तापनका निषेध करना उक्त पृच्छाका फल है । नरगतिमें मिथ्यात्तट्ठी नारकी
 कितने है, इसप्रकार गौतमस्वामीके द्वारा पूछने पर जिहोंने केरगज्ञानके द्वारा त्रिकालके
 विषयभूत समस्त पदार्थोंको जान लिया है, ऐसे भगवान् महावीरने ' असत्थात्त है ' इसप्रकार
 नारकियोंके प्रमाणका प्ररूपण किया ।

' नरकमें मिथ्यात्तट्ठी नारकी असत्थात्त है ' इसप्रकार कथन करने पर सत्थात्त और अन-
 चिधे । वह असत्थात्त अनेक प्रकारका है । आगे उसीका स्पष्टीकरण करते हैं-

णाम टण्णा दविय सस्सद गणणापदेसियमसख ।

एय उभयादेसो वित्थारो सज्ज भाजा य ॥ ५७ ॥

तत्त्व णामासखेज्जय णाम जीवाजीवमिस्ससरूणेण द्विदअट्ठभंगासखेज्जाणं कारण-
गिरिवेक्खा सण्णा । ज त द्दण्णासखेज्जय त कट्ठकम्मादिसु सम्मात्रासम्भाज्जणए ठविद
असखेज्जमिदि । ज तं द्दवासखेज्जय त दुविह आगमदो णोआगमदो य । जागमो गथो
सिद्धतो सुदण्णाणं परयणमिदि एयट्ठो ।

पूर्वापरनिरस्त्रादेर्व्यपेतो दोषसहते ।

द्योतक सर्गभावानामाप्तव्याट्ठित्तिरागम ॥ ५८ ॥

आगमादण्णो णोआगमो । तत्त्व असखेज्जपाहुडजाणजो जणुवज्जुत्तो जागमदो
द्दवासखेज्जयं । किं कारण ? खणोपममनिसिद्धजीवद्वयस्म कथंचि खणोपसमादो अक्व-
दिरित्तस्स आगमप्रदेमापिरोहादो । ज तं णोआगमदो द्दवासखेज्जय त तिपिह, जाणु-
गमरीरद्दवासखेज्जय भणियद्व्यासखेज्जय जाणुगसरीरभणियप्रदिरित्तद्दवासखेज्जय चेदि ।
तत्त्व ज तं जाणुगमरीरद्दवासखेज्जय त असखेज्जपाहुडजाणुगस्स सरीर भवियवट्ठमाण-
समुज्जादत्तणेण तिभेदभाजण । कथमणागमस्स सरीरस्स असखेज्जवणणो ? ण एम दोसो,

नाम, स्थापना, द्रव्य, शाश्वत, गणना, अप्रदेशिक, एक, उभय, विस्तार, सर्व
ओर भाव इसप्रकार असत्प्रात ग्यारह प्रकारका है ॥ ५७ ॥

उनमेंसे जीव, अजीव ओर मिश्ररूपसे स्थित असत्प्रात पदार्थोंके भेदोंकी कारणके
बिना असत्प्रात ऐसी सज्ञा रखना नाम असत्प्रात है । काष्ठकर्मादिकमें साकार ओर निराकार-
रूपसे यह असत्प्रात है, इसप्रकारकी स्थापना करना स्थापना असत्प्रात है । द्रव्य असत्प्रात
आगम और नोआगमके भेदमें दो प्रकारका है । आगम, ग्रन्थ, सिद्धा त, श्रुतज्ञान ओर प्रवचन,
ये पकार्यवाची नाम हैं ।

पूर्वापर विरुद्धादि दोषोंके समूहमें रहित और सपूर्ण पदार्थोंके द्योतक आप्तवचनको
आगम कहते हैं ॥ ५८ ॥

आगमसे अन्यको नोआगम कहते हैं । जो असत्प्रातविषयक प्राभूतता ज्ञाता है परतु
पर्वतमानमें उसके उपयोगसे रहित है, उसे आगमद्रव्यासत्प्रात कहते हैं, क्योंकि, क्षयोपशम
युक्त जीवद्रव्य क्षयोपशमसे कथञ्चित् अभिन्न है, इसलिये उसे आगम यह सज्ञा देनेमें कोई
विरोध नहीं आता है ।

नोआगमद्रव्यासत्प्रात तीन प्रकारका है, क्षायकशरीरद्रव्यासत्प्रात, भव्यद्रव्या
सत्प्रात, आर क्षायकशरीर तथा भय इन दोनोंसे भिन्न तद्व्यतिरिक्तद्रव्यासत्प्रात । असत्प्रात
विषयक शास्त्रको जाननेवालेके भावी, चर्तमान ओर अतीतरूपसे तीन भेदको प्राप्त हुए शरीरको
क्षायकशरीरद्रव्यासत्प्रात कहते हैं ।

शुद्धा—आगमसे भिन्न शरीरको असत्प्रात, यह सज्ञा कैसे दी जा सकती है ?

आधारे आधेयोनयारदसणादो । जहा असिसद धारादि इदि । एत्थ ण घदकुभदिद्वतो जुज्जदे, कुमस्म घदवणएसदसणादो । घदमिद चिद्वदि ति वट्टमाणकाले घदवणएसो कुमस्म उल्लब्भदे ? चे ण, अदीदानागदकालेसु कुभस्स घदवणएसदसणादो । ज त भवियामसेज्जय त भविससकाले अससेज्जपाहुडजाणुगजीयो । ण च एस आगमदो दव्यामसेज्जयमिह णियददि, सपहि एत्थ सरोपसमलक्षणदव्यो-ओगाभावादो । ज त तव्यदिरित्तदव्याससेज्जय त दुग्धि, कम्मासरोज्जय णोकम्मा-सरोज्जय चेदि । तत्थ अह कम्माणि द्विदि पडुच कम्मामसेज्जय । दीनसमुदादि णोकम्मासरोज्जय । धम्मत्थिय अयम्मत्थिय दव्यपदेसगणण पडुच एगमरूपेण अवट्टिदमिदि फट्टु सस्सदासरोज्जय । ज त गणणासरोज्जय त परियम्मे युच । ज त अपदेसामसेज्जय त जोगानिभागे पल्लिच्छेदे पडुच एगो जीवपदेसो । अधया सुण्णोय भगो, जसरोज्ज

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, आधारम आधेयका उपचार देया जाता है। जैसे, सो तरवारें (सोतरवारवाले) दोहती ह। तात्पर्य यह है कि सा तरवारोंके आधारभूत पुरुषोंमें आधेयभूत तरवारोंका उपचार करके जैसे सो तरवारें दोहती ह यह कहा गया है उसीप्रकार प्रवृत्तम भी समझ लेना चाहिये।

प्रवृत्तमें घृतकुम्भना दृष्टांत लाग नहीं होता है, क्योंकि, कुम्भनी घृत सदा व्यवहारमें नहीं देखी जाती है।

शङ्का—यह घृत रचना है, इसप्रकार वतमानकालमें कुम्भनी घृत सदा पायी जाती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अतीत जोर अनागत कालमें कुम्भनी घृत यह सदा देखी जाती है।

जो जीव भविष्यकालमें असख्यातविषयक प्राभतका जाननेवाला होगा उसे भावि द्रव्यासख्यात कहते है। इसका आगमद्रव्यासख्यातमें अतभाव नहीं हो सकता है, क्योंकि, वर्तमानमें इसमें (भाविद्रव्यासख्यातमें) क्षयोपशमलक्षण द्रव्य उपयोगका अभाव है।

तद्व्यतिरिक्त द्रव्यासख्यात दो प्रकारका है कर्मतद्व्यतिरिक्तद्रव्यासख्यात और नोकर्मतद्व्यतिरिक्तद्रव्यासख्यात । उनमें आठों कम स्थितिनी अपेक्षा कर्मतद्व्यतिरिक्तद्रव्या संख्यात है। अथात् आठों कर्मोंनी जघय और उत्पृष्ट स्थिति असख्यात समय पडती है, इसलिये ये स्थितिनी अपेक्षा असख्यातरूप ह। हीप ओर समुद्रादि नोकर्मतद्व्यतिरिक्त द्रव्यासख्यात है।

धमास्तिकाय और अधमहस्तिकाय द्रव्यरूप प्रवेशाकी गणनाके प्रति सधदा एकरूपसे अवस्थित है, इसलिये ये दोनों द्रव्य शास्त्रतासख्यात है। गणनासख्यातना स्वरूप परिकर्ममें कहा गया है। योगविभागमें जो अविभागप्रतिच्छेद पतलाये है, उनकी अपेक्षा अथवा एक प्रवेश अप्रदेशासख्यात है। अथवा, असख्यातमें उसना यह भेद शून्यरूप है, क्योंकि, असख्यात पर्यायोंके आधारभूत अप्रदेशी एक द्रव्यका अभाव है। कुछ आत्माका एक प्रवेश

पञ्जायाणमाहारभूद-अप्पएसएगदव्वाभावादो । ण च एगो जीवपदेसो दव्वं, तस्स जीवदव्वावयवत्तादो । पञ्जणए पुण अलपिज्जमाणे जीवस्स एगपदेसो वि दव्व तत्तो वदिरिच्चसमुदायाभावादो । जं त एयासखेज्जय त लोयायासस्स एगदिसा । कुदो ? सेट्ठि-आगारेण लोयस्स एगदिसं पेन्समाणे पदेसगणण पडुच्च संखातीदादो । ज तं उभयासखेज्जय त लोयायासस्स उभयदिसाओ, ताओ पेक्खमाणे पदेसगणणं पडुच्च सखाभावादो । ज तं सव्वासखेज्जयं तं घणलोगो । कुदो ? घणागारेण लोग पेक्खमाणे पदेसगणण पडुच्च सखाभावादो । जं त वित्थारासखेज्जय त लोगागासपदर, लोगपदरागारपदेसगणण पडुच्च संखाभावादो । ज त भावासखेज्जयं तं दुप्पिह आगमदो णोआगमदो य । आगमदो भावासखेज्जयं असखेज्जपाहुडजाणगो उपजुत्तो । णोआगमदो भावासखेज्जय ओहिणाणपरिणदो जीवो । एदस्सु असंखेजेसु गणणासंखेजेण पयद । जदि गणणासखेजेण पयदं तो सेसदसविह-असखेज्जपरूवणं किमडुं कीरदे ? अपगदमवणिय पयदपरूवणह । जुत्त च—

द्रव्य तो ही नहीं सकता है, क्योंकि, एक प्रदेश जीवद्रव्यका अवयव है । पर्यायार्थिक नयका अलम्बन करने पर जीवका एक प्रदेश भी द्रव्य है, क्योंकि, अवयवोंसे भिन्न समुदाय नहीं पाया जाता है ।

लोकाकाशकी एक दिशा अर्थात् एक दिशास्थित प्रदेशपक्ति एकासख्यात है, क्योंकि, आकाश प्रदेशोंकी श्रेणीरूपसे लोकाकाशकी एक दिशा देखने पर प्रदेशोंकी गणनाकी अपेक्षा उसकी गणना नहीं हो सकती है । लोकाकाशकी उभय दिशाए अर्थात् दो दिशाओंमें स्थित प्रदेशपक्ति उभयासख्यात है, क्योंकि, लोकाकाशके दो ओर देखने पर प्रदेशोंकी गणनाकी अपेक्षा वे सख्यातीत हैं । घनलोक सर्वासख्यात है, क्योंकि, घनरूपसे लोकके देखने पर प्रदेशोंकी गणनाकी अपेक्षा वे सख्यातीत हैं । प्रतररूप लोकाकाश विस्तारासख्यात है, क्योंकि, प्रतररूप लोकाकाशके प्रदेशोंकी गणनाकी अपेक्षा वे सख्यातीत हैं ।

भावासख्यात आगम ओर नोआगमके भेदसे दो प्रकारका है । असख्यातविषयक प्रभृतको जाननेवाले और वर्तमानमें उसके उपयोगसे युक्त जीवको आगमभावासख्यात कहते हैं । अत्रधिज्ञानसे परिणत जीवको नोआगमभावासख्यात कहते हैं । इन ग्यारह प्रकारके असख्यातोंमेंसे प्रकृतमें गणनासख्यातसे प्रयोजन है ।

शंका — यदि प्रकृतमें गणनासख्यातसे ही प्रयोजन है तो शेष दश प्रकारके असख्यातोंका वर्णन क्यों किया गया ?

समाधान—अप्रकृत विषयका निवारण करके प्रकृत विषयका प्ररूपण करनेके लिये, यहाँ सभी असख्यातोंका वर्णन किया है । कहा भी है—

अपगयगिगारण्ड पयदस्स परूणाणिमिच्च च ।

ससयगिणासण्ड तच्चट्टहारण्ड च ॥ ५९ ॥

युक्तं ज पुच्याइरिएहि—

जत्थ जहा जाणेज्जे अवगिनिद तथ गिनिखेने गियमा ।

जथ बहुध ण जाणदि चउट्टो तथ गिनिखेने ॥ ६० ॥ इदि ।

अधना गिक्खेविसिद्धमेद भणिज्जमाण वत्तारस्सुप्पत्थोत्त्याण कुज्जा इदि गिक्खेने
कीरदे । तथा चोक्तम्—

प्रमाणनयनिक्षेपयोऽथो नाभिसमीक्ष्यते ।

युक्तं चायुक्तान्द्वानि तरयायुक्तं च युक्तान्त ॥ ६१ ॥

ज त गणनासमेज्जय त तिविह, परिचामसेज्जय जुत्तासमेज्जय असरेज्जा
समेज्जय चेदि वियप्पदो एक्खेव तिविह' । तत्त्व इम होदि त्ति गिच्छओ उप्पाइज्जदे ।

अप्रवृत्त विषयका निवारण करनेके लिये, प्रवृत्त विषयका प्ररूपण करनेके लिये,
सशयका विनाश करनेके लिये और तत्कार्यका निश्चय करनेके लिये यहा सभी असख्याताका
बधन किया है ॥ ५९ ॥

पूर्वाचार्योंने भी कहा है—

जहा पदार्थोंके विषयमें यथावस्थित जाने वहा पर नियमसे अपरिमित निक्षेप करना
चाहिये । पर जहा पर बहृत न जाने वहा पर चार निक्षेप अशुद्ध करना चाहिये ॥ ६० ॥

अथवा, निक्षेपके विना वर्ण्यमान विषय कदाचित् वनाको उत्पद्यमें ले जावे,
इसलिये सभीका निक्षेप किया है । उसीप्रकार कहा भी है—

प्रमाण, नय और निक्षेपके द्वारा जिसका सूक्ष्म विचार नहीं किया जाता हे वह युक्त
होते हुए भी कभी अयुक्तसा प्रतीत होता हे और अयुक्त होते हुए भी कभी युक्तसा प्रतीत
होना है ॥ ६१ ॥

गणनासख्यात तीन प्रकारका है, परितासख्यात, युक्तासख्यात और असख्याता
सख्यात । ये तीनों भी प्रत्येक उत्पद्य, मध्यम और अद्यके भेदसे तीन तीन प्रकारके ह ।
उन तीनों असख्याताओंसे प्रवृत्तमें यह असख्यात लिया है, आगे इसीका निश्चय कराते हैं—

१ ज त असखेज्जयं त तिविह, परितासखेज्जयं जुत्तासखेज्जयमसखेज्जयं चेदि । जं त परिता
सखेज्जयं त तिविह, जहणपरितासखे जय अजहणमणुक्कम्मपरितासखेज्जयं उक्कम्मपरितासखेज्जयं चेदि । जं त
जुत्तासखेज्जयं त तिविह, जहणजुत्तासखेज्जयं अजहणमणुक्कम्मजुत्तासखेज्जयं उक्कम्मजुत्तासखेज्जयं चेदि । जं त
असखेज्जयं त तिविह, जहणअसखेज्जयं अजहणमणुक्कम्मअसखेज्जयं उक्कम्मअसखेज्जयं चेदि । तं प प ०
सखेज्जयमसखेज्जयं त तिविह । सखेज्जयं त तिविह परिचयत्तं तं दुग्गवत्तं ॥
नि हा १३ सखेज्जयमसखेज्जयं परिचयत्तं त तिविह । क प्र ४, ७१

परिचासरोज्यं ण भवदि, जुचासरोज्यं पि ण भवदि, असरोज्जासंरोज्जस्तेन गहण, असरोज्जा इदि बहुवयणणिहेसादो । पाइए दोसु नि गहुमयणोरलभादो वचिमुहेण सव्पेसु अमखेज्जगहुत्तपिरोहाभागादो मा अणेयतिओ हेदुरिदि चेत्तिरिहि ' असरोज्जासरोज्जाहि ओसप्पिणिउस्सप्पिणीहि अगहिरति कालेण ' इत्ति पुरदो भण्णमाणसुत्तादो असरोज्जासंरोज्जस्स उपलद्धी हवदि । त पि तिविहं जहण्णमुक्कस्मं अजहण्णमुक्कस्सासरोज्जासंरोज्जयं चेदि । तत्थं पि जहण्णमसरोज्जासरोज्जयं ण भवदि उक्कस्समसरोज्जासरोज्जयं पि ण भवदि अजहण्णमणुक्कस्सासंरोज्जामखेज्जस्मेण गहणं । कुदो ? ' जग्घि जग्घि असरोज्जासंरोज्जयं मग्गिज्जदि तग्घि तग्घि अजहण्णमणुक्कस्म-असरोज्जासंरोज्जस्तेण गहणं भवदि ' इदि परि्यम्मयणादो ।

त पि अजहण्णमणुक्कस्सासंरोज्जासरोज्जयमसरोज्जप्रियप्पमिदि इमं होदि त्ति ण जाणिज्जेद ? जहण्ण-असरोज्जासरोज्जादो पलिदोपमस्स असरोज्जदिभागमेत्ताणि

प्रकृतमें परीतासख्यात विवक्षित नहीं है और युक्तासख्यात भी नहीं लिया गया है, अतः यदा असख्यातासख्यातका ही ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, सूत्रमें ' असरोज्जा ' इस प्रकार बहुवचनरूप निर्देश किया है ।

शुका— प्रकृतमें द्विवचनके स्थानमें भी बहुवचन पाया जाता है, अथवा, वृत्तिसुखसे सभी असख्यातोंमें असख्यातके बहुत्वके स्वीकार कर लेनेमें कोई विरोध नहीं आता है, इसलिये प्रकृतमें असख्यातासख्यातके ग्रहण करनेके लिये जो ' असरोज्जा ' यह बहुवचनरूप देनु दिया है यह अनेकान्तरु है ।

समाधान— यदि ऐसा है तो ' असरोज्जासरोज्जाहि ओसप्पिणिउस्सप्पिणीहि अगहिरति कालेण ' इसप्रकार आगे कहे जानेवाले सूत्रसे असख्यातासख्यातका ग्रहण हो जाता है ।

यह असख्यातासख्यात भी तीन प्रकारका है, जघन्य, उत्कृष्ट और अजघन्योत्कृष्ट असख्यातासख्यात । इन तीनोंमें भी प्रकृतमें जघन्य असख्यातासख्यात नहीं है और उत्कृष्ट असख्यातासख्यात भी नहीं है, किन्तु प्रकृतमें अजघन्यानुत्कृष्ट असख्यातासख्यातका ही ग्रहण है, क्योंकि, ' जहा जहा असख्यातासख्यात देखा जाता है वहा वहा अजघन्यानुत्कृष्ट अर्थात् मध्यम असख्यातासख्यातका ही ग्रहण होता है, ' ऐसा परिक्र्मका वचन है ।

शुका— यह मध्यम असख्यातासख्यात भी असख्यात विकल्परूप है, इसलिये यहा यह भेद लिया है, यह नहीं जाना जाता है ?

समाधान— जघन्य असख्यातासख्यातसे पर्योपमके अमख्यातयें भागमात्र वर्गस्थान रूपर जाकर और जघन्य परीतानन्तसे असख्यात लोकमात्र वर्गस्थान नीचे आकर दोनोंके

नि पत्रावगावृत्ताते । क्रिमद्भेत्तपमाणमट्रुम्म कालपमाण बुद्धे ? ण एम दोसो,
 'त्रट्पत्रणाग्याय त पुत्रमेव माणियच्च' इदि वयणादो । कथं कालादो सेत्त बहुवण
 गिञ्ज ? ण, तस्मिं मेदि जगपदर विक्रमभसचिपरूपाणमालियतादो । के नि आश्रिया
 ज नट्टं त सुट्टममिदि मणति—

सुट्टमो य ह्वदि काठो तत्तो सुट्टम सु जापदे सेत्त ।

अगुठ असवभागे ह्वति कप्पा असवेज्जा ॥ ६३ ॥

एत्त ण वट्ट । बुद्धो ? दव्वादो धूल सेत्त छडिय दव्वस्स परूपाण्णहाणुर
 वर्णात्तां । कथं दव्वादो सेत्त धूल ? बुद्धे—

सुट्टम तु ह्वदि गेत्त तत्तो सुट्टम सु जापदे दव्व ।

दव्वगुठग्धि एक्के ह्वनि सेत्तगुलाणता ॥ ६४ ॥

दव्व गेत्तगुठे परमाणुपदेसा आगामपदेसा च सरिसा चिणेद घडदे ? चे ण,

वागवा शान कराना कालकी अपेक्षा प्ररूपण करनेका प्रयोजन है ।

शुक्रा—क्षेत्रप्रमाणका उल्लेखन करके पहले कालप्रमाणका प्ररूपण किसलिये किया
 जा रहा है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, 'जो अल्पवर्णनीय होता है उसका पहले
 वर्णन करना जानिये' इस वचनके अनुसार पहले कालप्रमाणका प्ररूपण किया है ।

शुक्रा—कालके क्षेत्र बहुवर्णनीय कैसे है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, क्षेत्रमें जगत्रेणी, जगप्रतर और विष्कम्भसूर्वाकी
 प्ररूपणा पाई जाती है, इसलिये कालसे क्षेत्र बहुवर्णनीय है ।

किसने ही भाषार्थ देता कहते हैं कि जो बहुत अर्थात् बहुत प्रदेशोंसे उपचित
 है वह सुक्ष्म होता है । यथा—

सलागाओ पदरात्रलियादो उररि गतूणुप्पण्णाओ, तम्हा तिण्णिवारवग्गिदसंबग्गिदरासीदो
गेरइयमिन्डाइट्टिरासी असंखेज्जगुणो । को छद्व्यपक्खित्तरासी ?

धम्माधम्मा लोयायासा पत्तेयसरीर एगजीवपदेसा ।

बादरपदिट्ठिदा नि य उप्पेदेऽसखपक्खेवा ॥ ६२ ॥

एदाणि छ दव्वाणि पुव्वुत्तरासिम्हि पक्खित्ते छद्व्यपक्खित्तरासी होदि । एव
विहाणेण भणिदअजहण्णमणुकस्मासंखेज्जासंखेज्जयस्स जत्तियाणि रूपाणि तत्तियमेत्तो
गेरइयमिन्डाइट्टिरामी होदि । एं दव्वपमाणं समत्त ।

**असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति
कालेण ॥ १६ ॥**

किमद्द मिन्डाइट्टिरासी कालेण परुत्तिज्जे ? ण, असंखेज्जरासी सब्बा णिद्धदि

अर्थात् जघन्य परीतासत्प्रातके ऊपर और उसके उपरिम वर्गके नीचे उत्पन्न हुई हैं और
पथ्योपमकी वर्गशलाकाओंकी वर्गशलाकाए प्रतरावलीके ऊपर जाकर उत्पन्न हुई हैं । इससे
प्रतीत होता है कि तीनवार वर्गितसवर्गित असख्यातासत्प्रात राशिसे नारक मिथ्यादृष्टि
जीवराशि असख्यातगुणी है ।

शुक्रा—छह द्रव्य प्रक्षिप्त राशि कौनसी है ?

समाधान—धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, लोभाकाश, अप्रतिष्ठित प्रत्येक घनस्पति, एक
जीवके प्रदेश और वादर प्रतिष्ठित प्रत्येक घनस्पति ये छह असख्यात राशिया तीनवार
वर्गितसवर्गित राशिमें मिला देना चाहिये ॥ ६२ ॥

इन छह राशियोंको पूर्वोक्त राशिमें प्रक्षिप्त करने पर छह द्रव्य प्रक्षिप्त राशि
होती है ।

इस विधिसे कहे गये मध्यम असख्यातासत्प्रातका जितना प्रमाण हो उतनी नारक
मिथ्यादृष्टि जीवराशि है ।

इसप्रकार द्रव्यप्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

कालकी अपेक्षा नारक मिथ्यादृष्टि जीव असख्यातासंख्यात अपसर्पिणियों
आर उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत हो जाते हैं ॥ १६ ॥

शुक्रा—नारक मिथ्यादृष्टि जीवोंका कालकी अपेक्षा किसलिये प्ररूपण किया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, सपूर्ण असत्प्रात जीवराशि समाप्त हो जाती है, इस

१ धम्माधम्मा लोगागासा एगजीवपदेसा चत्तारि ति लोगागासमेवा पत्तेगसरारबादरपदिट्ठिय एदे । ति प
५२ धम्माधम्मिगिजीवगलोगामामपपदेसपत्तेया । तत्तो असखगुणिदा पदिट्ठिदा षप्पि रावोओ ॥ ति सा ५२
२ अत्तखिज्जाहि उत्सप्पिणीओमपिणीहि अवहीरति कालओ । अत्त प् १५२, पृ १८५

वग्गट्टाणाणि उवरि अब्भुस्सरिदूण जहण्णपरित्ताणतादो असखेज्जलोगमेत्तप्रग्गट्टाणाणि हेद्दा ओसरिऊण दोण्हमत्तरे जिणदिट्ठभाभरासी वेत्तञ्चो । अधया तिण्णिवारवग्गिदसवग्गिदरासीदो असखेज्जगुणो छद्व्वपक्खित्तरासीदो असखेज्जगुणहीणो । को तिण्णिवारवग्गिदसवग्गिदरासी को वा छद्व्वपक्खित्तरासि चि बुत्ते बुत्तदे- जहण्णमसखेजा सखेज्ज निरलेऊण एक्केक्कस्स रूप्पम जहण्णमसखेज्जासखेज्जय दाऊण वग्गिदमवग्गिद करिय पुणो उप्पण्णरारिं दुप्पडिरारिं करिय एगरारिं निरलेऊण एक्केक्कस्स रूप्पम उप्पण्णमहारारिं दाऊण अण्णोण्णम्भत्थ करिय पुणो उप्पण्णरारिं दुप्पडिरारिं करिय एगरारिं निरलेऊण एक्केक्कस्स रूप्पम उप्पण्णमहारारिं दाऊण अण्णोण्णम्भत्थे क्कदे तिण्णिवारवग्गिदसवग्गिदरासी हउदि' । एसा तिण्णिवारवग्गिदसवग्गिदरासी पलि दोवमस्स असखेज्जदिभागो । उदो ? जेणेदस्स वग्गसलागाण प्रग्गसलागाओ जहण्ण परित्तासखेज्जस्स उवरिमप्रग्गमपावेऊणुप्पण्णाओ पलिदोवमवग्गसलागाण पुण वग्ग

मध्यम जिनेद्रदेउने जो राशि देखी हे उसका यहा ग्रहण करना चाहिये । अथवा, तीनवार वर्गितसवर्गित राशिसे असख्यातगुणी ओर छह द्रव्यप्राक्षिप्त राशिसे असख्यातगुणी हीन राशि प्रवृत्तमें लेना चाहिये ।

शुद्धा—तीनवार वर्गितसवर्गित राशि कौनसी है ओर छह द्रव्यप्राक्षिप्त राशि कौनसी है ? इसप्रकार पूछने पर आचार्य उत्तर देते हैं—

समाधान—जघय असख्यातासख्यातका विरलन करे ओर उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर जघय असख्यातासख्यातको देयरूपसे दे कर उनका परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसकी फिरसे दो पत्तिया करनी चाहिये । उनमेंसे एक राशिका विरलन करके ओर उस विरलित राशिने प्रत्येक एकके ऊपर दूसरी पत्तिमें स्थित महाराशिको देयरूपसे देकर परस्पर गुणा करनेसे जो महाराशि उत्पन्न हो, उसकी फिरसे दो पत्तिया करनी चाहिये । उनमेंसे एकका विरलन करके ओर उस विरलित राशिके ऊपर दूसरी पत्तिमें स्थित उत्पन्न हुई महाराशिको देयरूपसे देकर परस्पर गुणा करने पर तीनवार वर्गितसवर्गित राशि उत्पन्न होती है । (पृष्ठ २३ पर तीनवार वर्गितसवर्गितराशिका बीजगणितसे उदाहरण दिया है उसीप्रकार यहा समझना चाहिये ।)

यह तीनवार वर्गितसवर्गित राशि पद्योपमके असख्यातयें भाग है, क्योंकि, इसकी वर्गशलाकाओंकी वर्गशलाकाए जघय परीतासख्यातके उपरिम वर्गको नहीं प्राप्त होकर,

१ ति प पत्र ५२ वि सा ३० २१ विविचउपचमगुणने कमा सगासख पटमचउसत्ता । गता ते स्ववुआ म'सा रूप्पम शुक्क पच्छा ॥ इअ सुवुच अने वग्गिप्रामेकासि चउत्थपममख । हाइ असखामख लहु स्ववुअ वु व म'स ॥ रूप्पमासम शुक्क विविचउ उपरिमे दमवखेने ॥ क प्र ४, ७२ ८१

सलगाओ पदरात्रलियादो उरि गत्शुप्पणाओ, तम्हा तिण्णिवारवग्गिदसवग्गिदरासीदो
पेरइयमिच्छाडट्टिरामी असखेज्जगुणो । को छद्वपक्खित्तरासी ?

धम्माधम्मा लोयायासा पत्तेयसरीर एगजीवपदेसा ।

वादरपदिट्टिदा वि य छप्पेदेऽसखपक्खेवा' ॥ ६२ ॥

एदाणि छ दव्वाणि पुव्वुत्तरासिम्हि पक्खित्ते छद्वपक्खित्तरासी होदि । एवं
विहाणेण भणिदअजहण्णमणुक्कस्मान्मेखेज्जामरेज्जयस्म जत्तियाणि रूवाणि तत्तियमेत्तो
पेरइयमिच्छाडट्टिरामी होदि । एवं दव्वपमाणं समत्त ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति
कालेण' ॥ १६ ॥

किमद्दु मिच्छाडट्टिरासी कालेण परुविज्जेदे ? ण, असखेज्जरासी सव्वा णिड्ढदि

अर्थात् जघन्य परीतासख्यातके ऊपर और उसके उपरिम वर्गके नीचे उत्पन्न हुई हैं और
पथ्योपमकी वर्गशलाकाओंकी वर्गशलाकाए प्रतरावलीके ऊपर जाकर उत्पन्न हुई हैं । इससे
प्रतीत होता है कि तीनवार वर्गितसर्गित असख्यातासख्यात राशिसे नारक मिथ्यादृष्टि
जीवराशि असख्यातगुणी है ।

शंका—छद् द्रव्य प्रक्षिप्त राशि कौनसी है ?

समाधान—धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, लोकाकाश, अप्रतिष्ठित प्रत्येक घनस्पति, एक
जीवके प्रदेश और वादर प्रतिष्ठित प्रत्येक घनस्पति ये छद् असख्यात राशिया तीनवार
वर्गितसर्गित राशिमें मिला देना चाहिये ॥ ६२ ॥

इन छद् राशियोंको पूर्वोक्त राशिमें प्रक्षिप्त करने पर छद् द्रव्य प्रक्षिप्त राशि
होती है ।

इस विधिसे कहे गये मध्यम असख्यातासख्यातका जितना प्रमाण हो उतनी नारक
मिथ्यादृष्टि जीवराशि है ।

इसप्रकार द्रव्यप्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

कालकी अपेक्षा नारक मिथ्यादृष्टि जीव असख्यातासख्यात अपसर्पिणियों
और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत हो जाते हैं ॥ १६ ॥

शंका—नारक मिथ्यादृष्टि जीवोंका कालकी अपेक्षा किसलिये प्ररूपण किया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, सपूर्ण असख्यात जीवराशि समाप्त हो जाती है, इस

१ धम्माधम्मा लोगागासा एगजीवपदेसा चत्तारि वि लोगागासमेवा पत्तेयसरीरवादपदिट्टिय एदे । ति प
५२ धम्माधम्मिगिजीवलोगागासप्पदेसपत्तेया । तत्तो असखगुणिदा पदिट्टिदा षप्पि रासीओ ॥ ति सा ५२

२ असखिज्जाहि उरसप्पिणीओसप्पिणीहि अवहीरति वाळओ । अट्ट प् १५२, पृ १८५

त्ति पण्यवण्यद्वत्तादो । किमिदं त्वेत्तपमाणमट्कम् कालपमाण युच्यते ? ण एस दोमो,
'जदप्पणणीयं त पुवमेत्त भाणिषत्त' इदि वयणादो । कत्त कालादो खेत्त बहुवण्य
णिज्ज ? ण, तस्मिं सेंटि जगपदर पिस्सत्तमत्तचिप्पत्तणाणमत्तियत्तादो । के पि आइरिया
ज बहुव त सुट्टममिदि भणंति—

सुट्टमो य हत्तदि कालो तत्तो सुट्टम सु जायदे वेत्त ।

अगुल असत्तभागं हवति कप्पा जमत्तेज्जा ॥ ६३ ॥

एद ण घडदे । कुदो ? दव्वादो धूल खेत्त छाडिय दव्वस्स परुरणाण्णहाणुत्त-
वत्तीदो । कध दव्वादो खेत्त धूल ? युच्यते—

सुट्टम तु हत्तदि खेत्त तत्तो सुट्टम सु जायदे दव्व ।

दत्तगुलमिदं एक्के हवति खेत्तगुलाणत्ता ॥ ६४ ॥

दव्व खेत्तंगुले परमाणुपदेसा जागामपदेसा च सरिस्ता त्ति णेद घडदे ? चे ण,

घातका ज्ञान कराना कालकी अपेक्षा प्ररूपण करनेका प्रयोजन है ।

शुद्धा—क्षेत्रप्रमाणका उल्लेखन करके पहले कालप्रमाणका प्ररूपण किसलिये किया जा रहा है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, 'जो अल्पवर्णनीय होता है उसका पहले वर्णन करना चाहिये' इस वचनके अनुसार पहले कालप्रमाणका प्ररूपण किया है ।

शुद्धा—कालमे क्षेत्र बहुवर्णनीय कैसे है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, क्षेत्रमें जगधेणी, जगप्रतर और त्रिपक्कमसूचीकी प्ररूपणा पारि जाती है, इसलिये कालमे क्षेत्र बहुवर्णनीय है ।

कितने ही आचार्य ऐसा कहते हैं कि जो बहुत अर्थात् बहुत प्रदेशोंसे उपचित होता है वह सूक्ष्म होता है । यथा—

एतत् सूक्ष्म होता है और क्षेत्र उससे भी सूक्ष्म होता है, क्योंकि, एक अगुलके अस्तित्वमें भागमें अस्तित्वगत कल्पकाल आ जाते हैं । अतएव एक अगुलके अस्तित्वगत भागके जितने प्रदेश होते हैं अस्तित्वगत कल्पकालके उतने समय होते हैं ॥ ६३ ॥

परन्तु उन आचार्योंका यह व्याख्यान घटित नहीं होता है, क्योंकि, द्रव्यसे क्षेत्र स्थूल है, इस बातको छोड़कर ही पहले द्रव्यप्रमाणकी प्ररूपणा बन सकती है, अन्यथा क्षेत्रप्रमाणके प्ररूपणके पहले द्रव्यप्रमाणकी प्ररूपणा नहीं बन सकती है ।

शुद्धा—द्रव्यसे क्षेत्र स्थूल कैसे है ?

समाधान—क्षेत्र सूक्ष्म होता है और उससे भी सूक्ष्म द्रव्य होता है, क्योंकि, एक द्रव्यागुलमें (गणनाकी अपेक्षा) अनन्त क्षेत्रागुल पाये जाते हैं ॥ ६४ ॥

शुद्धा—एक द्रव्यागुल और एक क्षेत्रागुलमें परमाणुपदेश और आकाश प्रदेश समान होते हैं, इसलिये पूर्वाक्त व्याख्यान घटित नहीं होता है ?

एकम्हि खेत्तगुले ओगाहे अणंतदच्चगुलदंसणादो । असखेज्जासखेज्जाण ओसप्पिणि-
उस्सप्पिणीणं समए सलागभूदे ठपेऊण णेरइयमिच्छाइट्टिरासी च ठपेऊण सलागादो एगो
समओ अग्रहिरिज्जदि, णेरइयमिच्छाइट्टिरासीदो एगो जीवो अवहिरिज्जदि । एव पुणो
पुणो अग्रहिरिज्जमाणे सलागरासी णेरइयमिच्छाइट्टी च जुगग णिट्ठति । अधवा ओस-
प्पिणिउस्सप्पिणीओ दो णि मिलिदाओ कप्पो हउदि, तेण कप्पेण णेरइयमिच्छाइट्टि
रासिम्हि भागे हिदे ज भागलद्ध तत्तियमेत्ता कप्पा हउति । एव कालपमाणं समत्त ।

खेत्तेण असंखेज्जाओ सेठीओ जगपदरस्स असंखेज्जदिभाग-
मेत्ताओ । तासि सेठीणं विक्खंभसूचीं अंगुलवग्गमूलं विदियवग्ग-
मूलगुणिदेणं ॥ १७ ॥

समाधान— नहीं, क्योंकि, एक क्षेत्रागुलमें अद्यगाहनाकी अपेक्षा अनन्त द्रव्यागुल
हूखे जाते ह ।

असंख्यातासंख्यात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके समय शलाकारूपसे एक
और स्थापित करके और दूसरी और नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिको स्थापित करके शलाका
राशिमैसे एक समय कम करना चाहिये और नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिमैसे एक जीव कम
करना चाहिये । इसप्रकार शलाकाराशि और नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिमैसे पुन पुन एक
एक कम करने पर शलाकाराशि और नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि युगपत् समाप्त
हो जाती है ।

अथवा, अपसर्पिणी और उत्सर्पिणी ये दोनों मिलकर एक कल्पकाल होता है । उस
कल्पका नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिमै भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उतने कल्पकाल
नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी गणनामें पाये जाते हैं ।

इसप्रकार कालप्रमाणका घर्णन समाप्त हुआ ।

क्षेत्रकी अपेक्षा जगप्रतरके असंख्यातयें भागमात्र असंख्यात जगत्रेणीप्रमाण
सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । उन जगत्रेणियोंकी विष्कभसूची, सूत्र्यगुलके
प्रथम वर्गमूलको उसीके द्वितीय वर्गमूलसे गुणित करने पर जितना लब्ध आवे,
उतनी है ॥ १७ ॥

विशेषार्थ— खुद्दायन्धमें सामान्य नारकियोंके प्रमाण छानेके लिये विष्कभसूचीका

१ एभि एरुवेदिका पंति । पत्तस १, १४ खो टी

२ सामण्या णेरइया षणअट्टविदियमूलगुणवेदी । गो, जी १४ खेत्तओ असखेज्जाओ सेठीओ पदरस्स
अग्रहिरिज्जमाणो तासि ण सेठीणं विक्खंभसूचीं अंगुलवग्गमूलं विदियवग्गमूलं मूलगुणिदेणं । अहव ण अगुलविहअवग्ग
मूलपणपमाणमेत्ताओ सेठीओ । अउ घ. १४२ पृ. १८४ षण (खुदावने) सामण्णणेरइयाण उतविक्खंभसूची

सरोज्जाणताण निवारणदृग्मर्मसरोज्जाणयण । असरोज्जाओ सेठीओ इति सामण्य
वयणेण सव्यागाससेठीए गहण क्किण पापदे ? ण, तस्स—

पड्डो सायर सई पदरो य घणगुलो य जगसेठी ।

लोगपदरो य लोगो अट्ट दु माणो मुणेययां ॥ ६५ ॥

इदि पमाणदृग्मन्तरे अप्पिदत्तादो । ण च पमाणे परुत्तिज्जमाणे अप्पमाणस्म
पवेमो अत्थि, अइप्पसंगादो । अधवा 'मिच्छाइट्ठी दच्चपमाणेण असरोजा' इदि
पुत्थिल्लयणादो जाणिज्जेदे जहा जणताए सव्यागाससेठीए गहण णत्थि चि । जगपदरस्म
असरोज्जदिभागो इदि किमट्ट ? ण, जगपदरस्म सरोज्जदिभागप्पट्टि उपरिमसव्यससा

प्रमाण पूर्वात्त ही बतलाया है । अथ यदि सामान्य नारकियोंकी और मिध्यादाएि नारकियाकी
विष्कभसूची एक मात्र ली जाती है तो नरकमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका अभाव प्राप्त
हो जाता है जो सगत नहीं है । अनपत्र यद्वा पर मिध्यादाएि नारकियोंकी जो विष्कभसूची
बतलाई है, यह सामान्य ध्वन है । यिदोपरूपसे विचार करने पर सूच्यगुलके प्रथम
धर्ममूलका द्वितीय धर्ममूलसे गुणा कर देने पर जो नारक सामान्य विष्कभसूची आवे उसे
किंचित् नून कर देने पर मिध्यादाएि नारकियाकी विष्कभसूची होती है ।

सख्यात और अनन्तके निवारण करनेके लिये सूत्रमें 'असख्यात' यह ध्वन दिया है ।

ज्ञाना—सूत्रमें 'असख्यात जगत्रेणिया' ऐसा सामान्य ध्वन दिया है इसलिये
उससे सपूर्ण आकाश त्रेणियोंका ग्रहण क्यों नहीं प्राप्त होता जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि यह त्रेणीप्रमाण—

पल्ल, सागर, सूच्यगुल, प्रतरागुल, घनागुल, जगत्रेणी, लोकप्रतर ओर लोक,
इसप्रकार ये आठ उपमाप्रमाण जानना चाहिये ॥ ६५ ॥

इसप्रकार इन आठ प्रमाणोंके भीतर आ जाता है । ओर जिसका प्रमाणके भीतर
प्ररूपण किया गया है उसमें अप्रमाणका प्रवेश नहीं हो सकता है, अन्यथा अतिप्रसंग
दोष आ जायगा ।

अथवा, 'नारक मिध्यादाएि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा असख्यात है' इस पूर्वात्त
ध्वनसे जाना जाता है कि प्रवृत्तमें सपूर्ण आकाशकी अनन्त जगत्रेणियोंका ग्रहण नहीं है ।

ज्ञाना—सूत्रमें 'जगप्रतरका असख्यातधे भागप्रमाण' यह ध्वन किसलिये दिया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, जगप्रतरके सख्यातधे भागको आदि लेकर उपरिम

शेव नारक्यमिच्छाइट्ठीण जावड्डाले परुत्तिदा, कथ तणद ण विदइत्तदं ? आलावमेदामावादो । अथदो पुण भदो
अथि शेव, सामण्यविषसविविखमयूचीण समापत्तविराहादो । ×× तम्हा पयत्तणविषसमयूची पुण विण्णवणत्तद
विदियवगमूलमेत्ता चि वेत्ताव । धवला (सुदावव) पप ५१८, अ

१ प्रतिपु 'इवणा' इति पाठ ।

२ पड्डो सायर सई पदरो य घणगुलो य जगसेठी । लोगपदरो य लोगो उवमपमा एवमट्टविहा ॥ त्रि सा ९२

पडिसेहफलत्तादो । किमद्दु विक्रममस्रुई परूत्रिज्जदे ? ण, पदरस्स असखेज्जदिभागो इदि सामण्णेण वुत्ते तस्स पमाण किं सखेज्जजा सेढीओ भवदि, किममज्जेज्जजा सेढीओ भवदि इदि जादसदेहस्स सिस्मस्स णिन्डयजणणद्दु सेढीणं विक्रममस्रुईए पमाणं वुत्त ।

द्व्य-खेत्त-कालपमाणाण सव्वेसिं विक्रममस्रुईदो चेर णिन्डओ होदि त्ति काळण तान विक्रममस्रुईपमाणपरूत्रण कस्सामो । अंगुलवग्गमूले विक्रममस्रुई हवदि । त किं भूदमिदि वुत्ते विदियवग्गमूलगुणणेण उवलक्खिय । त रुध जाणिज्जदे ? इत्थभाव-लक्षणतइयाणेइत्तादो । जहा जो जडाहि सो भुजदि^१ त्ति । अंगुलवग्गमूलमिदि वुत्ते

सपूर्ण सत्थाका प्रतिषेध करना सूत्रमें दिये गये उक्त वचनका फल है।

शंका — यहा पर विष्कभसूचीका प्ररूपण किसलिये किया गया है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, 'प्रतत्का असत्थातवा भाग' ऐसा सामान्यरूपसे कहने पर उसका प्रमाण क्या सत्थात जगश्रेणिया है, अथवा असत्थात जगश्रेणिया है, इसप्रकार जिस शिष्यको सदेह हो गया है उसको निश्चय करानेके लिये जगश्रेणियोंकी विष्कभसूचीका प्रमाण कहा है।

विष्कभसूचीके कथनसे ही द्रव्यप्रमाण, क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाण, इन सबका निश्चय हो जाता है, ऐसा समझकर पहले विष्कभसूचीके प्रमाणका प्ररूपण करते हैं—

सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलमें, अर्थात् सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलका आश्रय लेकर, विष्कभसूची होती है। वह सूच्यगुलका प्रथम वर्गमूल किसरूप है, ऐसा पूछने पर आचार्य कहते हैं कि सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलके गुणासे उपलक्षित है। अर्थात् सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलको उसीके द्वितीय वर्गमूलसे गुणित कर देने पर सामान्य नारक मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कभसूची होती है।

उदाहरण—सूच्यगुल 2×2 ; विष्कभसूची २, सूच्यगुलका प्रथम वर्गमूल २, सूच्य
गुलका द्वितीय वर्गमूल २, $2 \times 2 = 2$ विष्कभसूची।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—'विदियवग्गमूलगुणिदेण' सूत्रके इस पदमें आये हुए इत्थभावलक्षण तृतीया विभक्तिके निर्देशसे यह जाना जाता है कि यहा पर सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे

१ शनिदग्गेचि णेद तदियाए एगवयण कि तु सत्तमीए एगवयणेण पदमाए वयणेण वा होद्व्वमग्गहा सुत्तुअवामावादो । धवला (खुदावध) पत्र ५१८ अ

२ इत्थमूलक्षणे । २ । ३ । २१ पाणिनि । कचित्प्रकार प्राप्तस्य लक्षणे तृतीया स्यात् । जयामित्तापस । अग्राप्यतावसत्वविशिष्ट इत्यर्थे । वृत्ति ।

पदरगुलस्स घणगुलस्स वा वग्गमूलस्स गहण रुध णो पापेदे ? ण, 'अट्टरुव रग्गिज्जमाणे रग्गिज्जमाणे अमपेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि गतूण सोहम्मीसाणत्रिकरमग्गईउप्पज्जदि। सा सइ रग्गिदा णेरइयत्रिकरमग्गई हइदि। सा सइ वग्गिदा भरणवासियत्रिकरमग्गई हइदि। सा सट्ट वग्गिदा घणगुलो हइदि' त्ति परियम्भयणादो णचपदे घण पदरगुलाण वग्गमूलस्स गहण ण हइदि किंतु सूचिअगुलवग्गमूलस्सेव गहणं होदि त्ति, अण्णहा घणगुलविदियवग्गमूलस्स अणुप्पत्तीदो। सपहि सूचिअगुलविदियवग्गमूल भागहार

गुणित प्रथम वर्गमूल लिया है। जैसे, ' जो जटाओंसे युक्त है वह तपस्वी भोजन करता है। यहा पर इत्यभावलक्षण तृतीया निर्वंश होनसे जटाओंवाला यह अर्थ निकल आता है, उसीप्रकार प्रवृत्तमें भी समझ लेना चाहिये।

शुक्रा—' अगुलका वर्गमूल ' ऐसा सामान्य वचन करने पर उससे प्रतरागुलके वर्गमूल अथवा घनागुलके वर्गमूलका ग्रहण नयों नहीं प्राप्त होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, 'आठका उत्तरोत्तर वर्ग करते हुए असख्यात वर्गस्थान जाकर सांघम और पेशानसब घां विष्कभसूची प्राप्त होती है। उसका (सौधर्मद्विक सत्रधी विष्कभसूचीका) उसीसे वर्ग करने पर नारक सामा यसवन्धी विष्कभसूची प्राप्त होती है। उसका (नारकसवन्धी विष्कभसूचीका) उसीसे वर्ग करने पर भवनवासी देवोंसबघां विष्कभसूची प्राप्त होती है। उसका (भवनवासिविष्कभसूचीका) उसीसे वर्ग करने पर घनागुल प्राप्त होता है'। इस परिकर्मके वचनसे जाना जाता है कि प्रवृत्तमें घनागुल और प्रतरागुलके वर्गमूलका ग्रहण नहीं किया है किन्तु सूच्यगुलके वर्गमूलका ही ग्रहण किया है। यदि ऐसा न माना जाय तो सामान्य नारक विष्कभसूचीको जो घनागुलके द्वितीय वर्गमूलप्रमाण कहा है वह नडा वन सकता है।

निशेपर्यं—ऊपर जो परिकर्मका उद्धरण दिया है उससे स्पष्ट पता लग जाता है कि सामान्य नारकविष्कभसूची घनागुलके द्वितीय वर्गमूल प्रमाण है। अब यदि सूत्रमें अगुल सामान्यका उल्लेख होनेसे उससे हम सूच्यगुलका ग्रहण न करके प्रतरागुल या घनागुलका ग्रहण करें तो पूर्वोक्त सूत्रके अभिप्रायना परिकर्मके वचनके साथ विरोध आ जाता है, क्योंकि, उक्त सूत्रका अर्थ करते हुए, यदि हम घनागुलके प्रथम वर्गमूलका द्वितीय वर्गमूलसे गुणा करने पर सामान्य नारक विष्कभसूचीका प्रमाण होता है, ऐसा अर्थ करते हैं तो परिकर्मके उक्त वचनके साथ विरोध है ही। अगुलका अर्थ प्रतरागुल करने पर भी यही भाषित आती है। हा, अगुलका अर्थ सूच्यगुल ले लिया जाता है तो कोई विरोध नहीं आता है, क्योंकि, सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलका द्वितीय वर्गमूलसे गुणा करने पर जो प्रमाण आता है वह घनागुलके द्वितीय वर्गमूल प्रमाण ही होता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि सूत्रमें अगुलसे सूच्यगुलका ही ग्रहण करना चाहिये।

अब सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलको भागहार करके और सूच्यगुलको भाजक करके

कारण सूचिअगुल निहज्जमाणमिदि कट्टु निक्खमसूचिपरूपण उग्गट्टाणे सडिद-भाजिद-विरलिद-अग्रहिद पमाण कारण गिरुत्ति वियप्पेहि वचइस्सामो । तत्थ संडिदादिचउक्क सुगम । तस्स पमाणं केत्तिय ? सूचिअगुलस्स अससेज्जदिभागो अससेज्जाणि सूचिअगुल-पढमउग्गमूलाणि । केण कारणेण ? सूचिअगुलपढमउग्गमूलेण सूचिअगुले भागे हिदे सूचिअगुलपढमवग्गमूलमागच्छति । सूचिअगुलपढमउग्गमूलस्स दुभागेण सूचिअगुले भागे हिदे दोणिण पढमउग्गमूलाणि आगच्छति । पुणो पढमउग्गमूलस्स तिभागेण सूचिअगुले भागे हिदे तिणिण पढमउग्गमूलाणि आगच्छति । एवं पढमवग्गमूलस्स अससेज्जदिभाग-भूदसूचिअगुलविदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूले भागे हिदे लद्धेण सूचिअगुले भागे हिदे

वर्गस्थानमें खण्डित, भाजित, विरलित, अपहृत, प्रमाण, कारण, निरक्ति, और विरूपके द्वारा विष्कभसूचीका प्रतिपादन करते हैं । उनमें प्रारम्भके खण्डित आदि चारका कथन सुगम है । (इन चारोंका सामान्य मिथ्यादृष्टि राशिके सम्यग्धर्म उदाहरण सहित कथन पृष्ठ ४१ और ४२ में किया है, उसीप्रकार यहा भी समझना चाहिये ।)

शका — विष्कभसूचीका प्रमाण कितना है ?

समाधान—सूच्यगुलके असख्यातवा भाग विष्कभसूचीका प्रमाण है जो सूच्यगुलके असख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण है ।

शका — किस कारणसे सूच्यगुलके असख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण विष्कभसूची होती है ?

समाधान — सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलका सूच्यगुलमें भाग देने पर सूच्यगुलका प्रथम वर्गमूल आता है $\left(\frac{2 \times 2}{2} = 2 \right)$ । सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलके द्वितीय भागका

सूच्यगुलमें भाग देने पर सूच्यगुलके दो प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं $\left(\frac{2 \times 2}{2} = 2 \times 2 \right)$ । पुन

सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलके तीसरे भागका सूच्यगुलमें भाग देने पर सूच्यगुलके तीन प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं $\left(\frac{2 \times 2}{2} = 3 \times 2 \right)$ । इसीप्रकार सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलके अस

ख्यातमें भागरूप सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर जो लब्ध

असंगेजनाणि सचिअगुलपढमउग्गमूलाणि आगच्छति ति ण सदेहो । कारणं गदा ।
 णिरुत्तिं वचइस्सामो । अगुलविदियउग्गमूलेण पढमउग्गमूले मागे हिंटे भागलद्धमि
 जत्तियाणि रूपाणि तत्तियाणि पढमउग्गमूलाणि घेत्तूण विक्रममसूई हवदि । अथवा
 विदियउग्गमूलम्म जत्तियाणि रूपाणि तत्तिएहि पढमउग्गमूलेहि विक्रममसूची होदि ति
 वचच्य । णिरुत्ती गदा ।

नियमो दुग्गिहो हेट्टिमनियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ वेरूणे हेट्टिमनियपं
 वचइस्सामो । सूचिअगुलविदियउग्गमूलेण सूचिअगुलपढमउग्गमूलमोउट्टिय लद्धेण पढम
 उग्गमूले गुणिते विक्रममसूई हवदि । अथवा विदियउग्गमूलेण पढमउग्गमूले गुणिते

अथे उससे सूच्यगुलके भाजित करने पर सूच्यगुलके असख्यात प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं,
 इसमें सदैव नहीं है । इसप्रकार कारणका घणन समाप्त हुआ ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{2^{\frac{3}{2}}}{2^{\frac{1}{2}}} = 2, \quad \frac{2 \times 2^{\frac{3}{2}}}{2^{\frac{1}{2}}} = 2 \text{ सूच्यगुलके असख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण विक्रमसूची ।}$$

अथ निरुक्तिका घणन करते हैं— सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके
 भाजित करने पर भागमें जितनी सख्या लब्ध आये उतने प्रथम वर्गमूल ग्रहण करके विक्रम
 सूची उत्पन्न होती है । अथवा, द्वितीय वर्गमूलका जितना प्रमाण है उतने प्रथम वर्गमूलसे
 (द्वितीय वर्गमूल प्रमाण प्रथम वर्गमूलको जोड़ देने पर) विक्रमसूची होती है । इसप्रकार
 निरुक्तिका घणन समाप्त हुआ ।

$$\text{उदाहरण—} 2^{\frac{3}{2}} \times 2^{\frac{1}{2}} = 2 \text{ द्वितीय वर्गमूल प्रमाण प्रथम वर्गमूलको जोड़, द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलको गुणाकर देने पर जितना होता है, उतना ही आता है ।}$$

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमें पहले
 द्विरूपधारामें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यगुलके
 प्रथम वर्गमूलको अपघातित करके जो लब्ध आये उससे सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित
 करने पर विक्रमसूचीका प्रमाण होता है । अथवा, सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके
 गुणित करने पर विक्रमसूचीका प्रमाण होता है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{2^{\frac{3}{2}}}{2^{\frac{1}{2}}} = 2, \quad 2^{\frac{3}{2}} \times 2^{\frac{1}{2}} = 2 \text{ वि अथवा, } 2^{\frac{3}{2}} \times 2^{\frac{1}{2}} = 2 \text{ वि}$$

विक्रमसूत्रं हवदि । अङ्कूने वत्तइस्सामो । अंगुलिनिदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूल गुणेज्जण घणगुलपढमग्गमूले भागे हिदे विक्रंभसूची आगच्छदि । केण कारणेण ? अंगुलपढमवग्गमूलेण घणगुलपढमग्गमूले भागे हिदे सूचिअगुलो आगच्छदि । पुणो तमंगुलविदियवग्गमूलेण भागे हिदे विक्रंभसूची आगच्छदि । एत्थ निउणादिकरण वत्तइस्सामो । अंगुलपढमग्गमूलेण घणंगुलपढमग्गमूले भागे हिदे सूचिअगुलो आगच्छदि । त्रिगुणिदपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलस्स दुभागो आगच्छदि । त्रिगुणिदपढमवग्गमूलेण घणगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलस्स तिभागो आगच्छदि ।

अथ अष्टरूपमें अधस्तन विकल्प बतलाते हे— सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनागुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर विष्कभसूचीका प्रमाण आता है, क्योंकि, सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनागुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यगुलका प्रमाण आता है । पुन उसे सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे भाजित करने पर विष्कभसूचीका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—सूच्यगुलका घन $\left(\frac{8}{2}\right)^3 = 2^8$, घनागुलका प्रथम वर्गमूल 2^4 ।

$$\frac{2^8}{2^4 \times 2^4} = 2 \text{ विष्कभसूची}$$

अथ यद्वा द्विगुणादिकरण विधिको बतलाते हे— सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनागुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यगुल आता है $\left(\frac{2^4}{2^4} = 2 \times 2^0\right)$ । द्विगुणित

सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनागुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यगुलका दूसरा भाग आता है $\left(\frac{2^4}{2^4} = \frac{2 \times 2^3}{2}\right)$ । त्रिगुणित सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनागुलके प्रथम

वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यगुलका तीसरा भाग आता है । $\left(\frac{2^4}{2^4} = \frac{2 \times 2^2}{3}\right)$ ।

एदेणं क्रमेण णेद्वं जा । सूचिअगुलपढमग्गमूलस्म गुणगारो विदियग्गमूलमेत्त पत्तो त्ति । पुणो तेण सूचिअगुलविदियग्गमूलेण गुणिदपढमग्गमूलेण णग्गुलपढमग्गमूले भागे हिदे विदियवग्गमूलेपट्टियम्भिसिअगुलो आगच्छदि । गो चेऽ विकल्पमसूची । घणाघणे वत्त इस्सामो । अगुलविदियवग्गमूलेण पढमग्गमूल गुणेऊण तेण घणगुलविदियवग्गमूल गुणेऊण तेण घणाघणविदियवग्गमूले भागे हिदे विकल्पमसूडे आगच्छदि । केण कारणेण ? घणगुल विदियवग्गमूलेण घणाघणगुलविदियवग्गमूले भागे हिदे घणगुलपढमग्गमूलमागच्छत्ति । पुणो वि सूचिअगुलपढमग्गमूलेण घणगुलपढमग्गमूले भागे हिदे सूचिअगुलो आगच्छदि । पुणो वि विदियवग्गमूलेण सूचिअगुले भागे हिदे विकल्पमसूची आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति ऋद्धु गुणेऊण भागग्गहण कद । एव हेट्टिमपियप्पो समत्तो ।

उपरिमपियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ

इसप्रकार जबतक सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलका गुणकार द्वितीय वर्गमूलके प्रमाणको प्राप्त होवे तबतक इसी क्रमसे ले जाना चाहिये । पुन उस सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनागुलके प्रथम वर्गमूलसे भाजित करने पर सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे भाजित सूच्यगुल आता है, और वही विकल्पमसूची है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{2}{\frac{2}{2} \times 2} = \frac{2 \times 2}{2} = 2 \text{ विकल्पमसूची}$$

अथ घनाघनमें अद्यस्तन विकल्प घतलाते हैं— सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनागुलके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनाघनागुलके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर विकल्पमसूचीका प्रमाण आता है, क्योंकि, घनागुलके द्वितीय वर्गमूलका घनाघनागुलके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर घनागुलका प्रथम वर्गमूल आता है । पुन सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलका घनागुलके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर सूच्यगुल आता है । पुन सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलका सूच्यगुलमें भाग देने पर विकल्पमसूचीका प्रमाण आता है । इसप्रकार विकल्पमसूची आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया । इसप्रकार अद्यस्तन विकल्प समाप्त हुआ ।

उदाहरण—सूच्यगुलका घनाघन $(2^3)^3 = 2^9$ सूच्यगुलके घनाघनका द्वितीय वर्गमूल $2 = 2^1$, $\frac{2^9}{2^1 \times 2^1 \times 2^1} = 2$ विकल्पमसूची

उपरिम विकल्प तीव्र प्रकारका है, शुद्धीत, शुद्धीतशुद्धीत और शुद्धीतगुणकार । उनमें

गहिदं पचइस्सामो । त्रिदियपग्गमूलेण सूचिअगुले भागे हिदे विस्संभसूची आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि विस्संभसूची आगच्छदि । अधवा त्रिदियपग्गमूलेण सूचिअंगुल गुणेऊग पदरंगुले भागे हिदे विस्संभसूची आगच्छदि । केण कारणेण ? सूचिअगुलेण पदरंगुले भागे हिदे सूचिअगुलो आगच्छदि । पुणो वि त्रिदियपग्गमूलेण सूचिअगुले भागे हिदे विस्संभसूची आगच्छदि । एवमागच्छदि ति कट्टु गुणेऊग भागग्गहण कद । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे विस्संभसूची आगच्छदि । एव सखेज्जासंखेज्जाणतेसु णेदव्व । एत्थ

पहले गृहीत उपरिम विरूपको चतलाते ई— सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलका सूच्यगुलमें भाग देने पर विष्कभसूची आती है।

$$\text{उदाहरण—} \frac{2 \times 2}{\frac{2}{2}} = 2 \text{ विष्कभसूची}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भण्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी विष्कभसूची आती है।

उदाहरण— 2 के 2 अर्धच्छेद होते है। 2 के 2 अर्धच्छेद किये जाय तो अंतिम राशि 2 होगी। सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलमें $2 = \frac{2}{1}$ है, सोर सूच्यगुलमें $2 = \frac{2}{1}$ है, इसलिये $2 \times 2 = 2$ के अर्धच्छेद 2 के अर्धच्छेदोंके उरावर करने पर $2 = 2$ अर्थात् 2 आ जाता है जो विष्कभसूचीका प्रमाण है।

अथवा, सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरागुलमें भाग देने पर विष्कभसूचीका प्रमाण आता है, क्योंकि, सूच्यगुलसे प्रतरागुलके भाजित करने पर सूच्यगुल आता है। पुन सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यगुलके भाजित करने पर विष्कभसूची आती है। इसप्रकार विष्कभसूची आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया।

$$\text{उदाहरण—} \frac{(2 \times 2)^{\frac{2}{2}}}{2 \times 2 \times 2} = \frac{2}{2} = 2 \text{ विष्कभसूची}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भण्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी विष्कभसूचीका प्रमाण आता है। इसीप्रकार सप्यात, असख्यात और अनन्त स्वानोंमेंले

जगमेठीए जगपदरे भागे हिदे एगमेठी आगन्उदि । जगमेठीदुभागेण जगपदरे भागे हिदे दोष्णि सेठीओ आगच्छति । जगमेठितिभागेण जगपदरे भागे हिदे तिष्णि सेठीओ आगच्छति । एवमेगादि-एगुत्तरकमेण सेठीए भागहारो वहुनेय्यो जाण णेरइयन्निअ भस्सूचिमेत्त पत्तो चि । पुणो ताए विक्खभस्सूचीए सेठिमोवट्टिय लद्धेण जगपदरे भागे हिदे निक्खभस्सूचीमेत्तसेठीओ जागच्छति । एवमण्णत्थ पि विक्खभस्सूईदो अवहारकालो साधेय्यो । एदेण भागहारेण सेठीए उतरि यडिदादियिप्पा उच्चवा । तत्थ ताए वग्गहाणे पमाण कारण निरुत्ति त्रियप्पेहि अवहारकाल उच्चइमामो । तस्म पमाण केत्थिय ? सेठीए असखेज्जदिभागो असखेज्जाणि सेठिपठमग्गमूलाणि । पमाण गद । केण कारणेण ? सेठिपठमग्गमूलेण सेठिमिह भागे हिदे सेठिपठमग्गमूलो आग

जगध्रेणीसे जगप्रतरके भाजित करने पर एक जगध्रेणीका प्रमाण आता है (४२९४०६७२९६ - ६' ५.२६ = ६' १३६) । जगध्रेणीसे द्वितीय भागका जगप्रतरमें भाग देने पर दो जगध्रेणिया लब्ध आती हैं (४२९४९६७२९६ - ३२७६८ = १३१०७२) । जगध्रेणीके तृतीय भागसे जगप्रतरके भाजित करने पर तीन जगध्रेणिया आती हैं (४२९४९६७२९६ - २१८४५१ = १९६६०८) । इसप्रकार भागद्वार बढते हुए जयतक यह नारक विष्कभस्सूचीके प्रमाणको प्राप्त होवे तयतक उसे बढाते जाना चाहिये । अनन्तर उस विष्कभस्सूचीसे जगध्रेणीको अपवर्तित करके जो लब्ध आये उससे जगप्रतरके भाजित करने पर जितना विष्कभस्सूचीका प्रमाण है उतनी जगध्रेणिया लब्ध आती है । इसीप्रकार अन्यत्र भी विष्कभस्सूचासे अवहारकाल साध लेना चाहिये ।

उदाहरण—जगध्रेणी ६५५३६ जगप्रतर ४२९४९६७२९६, ६' ५३६ - २ = ३२७६८;
४२९४९६७२९६ - ३२७६८ = १३१०७२ नारक मिथ्यादष्टि जीवराशि

अथ इस भागद्वारका आश्रय करके जगध्रेणीके ऊपर खण्डित आदि विकल्पका कथन करना चाहिये । उनमेंसे पहले धर्मस्थानमें प्रमाण, कारण, निरुक्ति और चिररूपके द्वारा अवहारकालका प्रमाण बतलाते हैं—

शंका—सामान्य नारक मिथ्यादष्टि जीवराशिके लानेके लिये जो भागद्वार कहा है उसका प्रमाण कितना है ?

समाधान—उक्त भागद्वारका प्रमाण जगध्रेणीके असख्यातवें भाग है, जो जगध्रेणीके असख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—अवहारकाल ३२७६८, जगध्रेणीका प्रथम वर्गमूल २५६, ३२७६८ - २५६ = १२८ (यहां १२८ को असख्यात मान कर उतनेवार प्रथम वर्गमूल २५६ का जोड़ ३२७६८ होता है)

शंका—जगध्रेणीके असख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण अवहारकाल किस कारणसे है ?

समाधान—क्योंकि, जगध्रेणीके प्रथम वर्गमूलसे जगध्रेणीके भाजित करने पर

च्छदि । सेडिप्रिदियग्गमूलेण सेडिम्हि भागे हिदे प्रिदियग्गमूलस्त जत्तियाणि
रूपाणि तत्तियाणि सेडिपटमग्गमूलाणि आगन्ठंति । सेडितदियग्गमूलेण सेडिम्हि
भागे हिदे सेडिप्रिदिय-तदियग्गमूलाणं अण्णोण्णभागे रुदे तत्थ जत्तियाणि रूपाणि
तत्तियाणि सेडिपटमग्गमूलाणि जागच्छति । अणेण विहाणेण पलिदोमग्गमलागाण
असखेज्जदिभागमेत्तग्गट्टाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण घणगुलप्रिदियग्गमूलेण सेडिम्हि
भागे हिदे असरेज्जाणि सेडिपटमग्गमूलाणि आगन्ठंति चि ण संदेह कायच्च ।
कारण गद । णिरुत्तिं वचइस्सामो । घणगुलप्रिदियग्गमूलेण सेडिपटमग्गमूले भागे
हिदे तत्थ जत्तियाणि रूपाणि तत्तियाणि पटमग्गमूलाणि । अधना तेणेन भागहारेण
सेडिप्रिदियग्गमूले भागे हिदे तत्यागदेण तम्हि चेव गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूपाणि
तत्तियाणि सेडिपटमग्गमूलाणि । अधना तेणेन भागहारेण सेडितदियग्गमूले भागे
हिदे तत्यागदेण त चेव गुणेऊण तदो तेण प्रिदियग्गमूले गुणिदे तत्थ जत्तियाणि

जगश्रेणीका प्रथम वर्गमूल आता है (६५५३६ - २५६ = २५६) । जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलसे
जगश्रेणीके भाजित करने पर द्वितीय वर्गमूलका जितना प्रमाण होता है उतने जगश्रेणीके
प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं (६५५३६ - १६ = ४०९६ = १६ × २५६) । जगश्रेणीके तृतीय
वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर, श्रेणीके द्वितीय और तृतीय वर्गमूलके परस्पर
गुणा करने पर वहा जितनी सख्या उत्पन्न हो उतने प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं (६५५३६
- ४ = १६३८४ = १६ × ४ × २५६) । इसी विधिसे पर्यापमकी वर्गशलाकाओंके अस-
ख्यातर्ग भागमात्र वर्गस्थान नीचे जाकर घनागुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित
करने पर जगश्रेणीके असख्यात प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं, इसमें सदेह नहीं करना चाहिये ।
इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—घनागुलका द्वितीय वर्गमूल २; ६५५३६ - २ = ३२७६८ अथ

अथ निरुक्तिका कथन करते हैं— घनागुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके प्रथम
वर्गमूलके भाजित करने पर उहा जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने प्रथम वर्गमूल सामान्य
नारक मिथ्यादृष्टि अवधारकालमें होते हैं ।

उदाहरण—२५६ - २ = १२८ (इतने प्रथम वर्गमूल अवधारकालमें होते हैं) ।

अथवा, उसी घनागुलके द्वितीय वर्गमूलरूप भागद्वारसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलके
भाजित करने पर वहा जो प्रमाण लब्ध आवे उससे उसी द्वितीय वर्गमूलके, गुणित कर देने
पर वहा जो प्रमाण लब्ध आवे उतने जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूल सामान्य अवधारकालमें
लब्ध आते हैं ।

उदाहरण—१६ - २ = ८, १६ × ८ = १२८

अथवा, उसी घनागुलके द्वितीय वर्गमूलरूप भागद्वारसे जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलके
भाजित करने पर वहा जितना प्रमाण आवे उससे उसी तृतीय वर्गमूलको गुणित करके

माधेय्यो । तत्थ अतिमरियप्प वच्चइस्सामो । घणगुलविदियवग्गमूलेण घणगुल पढमवग्गमूले भागे हिदे तत्थागदेण त चेव घणगुलपढमग्गमूल गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा घणगुल गुणेऊण एवमुत्तरि उत्तरि अवट्टिदाणि वग्गट्ठाणाणि सेट्ठिपढमग्गमूलपच्छिमाणि गिरतर गुणेयव्वाणि । एव गुणिदे णेरइयमिच्छाइट्ठि अवहारकालो होदि । एस अत्थो जदि वि पुच्च परुरिदो तो वि हेट्ठिमवियप्पसंबंधेण मदुत्तिसिस्साणुग्गहट्ठ पुणरवि परुरिदो ।

घणाघणे पत्तइम्मामो । घणगुलविदियवग्गमूलेण सेट्ठिपढमग्गमूल गुणेऊण घणलोगपढमग्गमूले भागे हिदे अग्रहारकालो आगच्छदि । त रुध ? सेट्ठिपढमवग्ग मूलेण घणलोगपढमग्गमूले भागे हिदे सेट्ठी आगच्छदि । पुणो घणगुलविदियवग्गमूलेण सेट्ठी भागे हिदे अग्रहारकालो होदि । एवमागच्छदि चि कट्टु गुणेऊण भागग्गहण कद । अहवा एत्थ दुगुणादिकमेण अग्रहारकालो साहेय्यो । अहवा घणगुलविदियवग्गमूलेण सेट्ठिपढमग्गमूल गुणेऊण तेण घणलोगविदियवग्गमूलमग्रहारिय त चेव गुणिदे अवहार-

भाजित करके जो लघ्व आवे उससे जगध्रेणीके प्रथम वर्गमूलपर्यंत गुणनक्रिया करके अवहारकाल साध लेना चाहिये । उनमेंसे अंतिम विकल्पको बतलाते हैं—

घनागुलके द्वितीय वर्गमूलसे घनागुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर वहा आवे हुए लघ्वसे उसी घनागुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो गुणित राशि आवे उससे घनागुलको गुणित करके पुन जगध्रेणीके प्रथम वर्गमूलपर्यंत ऊपर उपर स्थित वर्गस्थानोंको निरन्तर गुणित करना चाहिये । इसप्रकार पूर्व पूर्व गुणित राशिसे उत्तरोत्तर वर्गस्थानके गुणित करते जाने पर नारक मिथ्यादृष्टिसवधी अग्रहारकालका प्रमाण जाता है । इस अर्थका प्ररूपण यद्यपि पहले कर आवे है तो भी मन्वुद्धि शिष्योंके अनुग्रहके लिये अधस्तन विकल्पके सवधसे इसका फिरसे प्ररूपण किया है ।

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— घनागुलके द्वितीय वर्गमूलसे जग ध्रेणीके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लघ्व आवे उससे घनलोकके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है, क्योंकि, जगध्रेणीके प्रथम वर्गमूलसे घन लोकके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर जगध्रेणीका प्रमाण आता है, पुन घनागुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगध्रेणीके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है । इसप्रकार अवहार कालका प्रमाण आता है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

उदाहरण—घनलोकका प्रथम वर्गमूल २५६^१; २५६ × २ = ५१२। $\frac{५१२}{५१२} = ३२७६८$ अब

अथवा, यहा पर द्विगुणादि भ्रमसे अग्रहारकाल साध लेना चाहिये । अथवा, द्वितीय वर्गमूलसे जगध्रेणीके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लघ्व आवे उससे घनलोकके द्वितीय वर्गमूलको अपहत करके जो लघ्व आवे उससे उसी घनलोकके द्वितीय

कालो होदि । एव हेद्दा वि जाणिऊण वत्तवं । हेड्डिमवियप्पो गदो ।

उपरिमनियप्पो तिरिहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ गहिद वत्तइस्सामो । घणगुलविदियवग्गमूलेण सेट्टिममाणेस्सउग्ग गुणेऊण तेण तव्वग्गवग्गे भागे हिदे अणहारकालो आगच्छदि । त ऋथ ? सेट्टिसमाणेस्सवग्गेण तव्वग्गवग्गे भागे हिदे सेट्टी आगच्छदि । पुणो वि घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेट्टिम्हि भागे हिदे अवहारकालो होदि । एउमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कद । अहवा अवहार-कालो त्रिगुणादिकमेण वट्टुवेयव्वो । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे अवहारकालो आगच्छदि । तस्सद्वच्छेदणयसलागा केत्तिया ? घण-गुलविदियवग्गमूलस्स अद्वच्छेदणयसहियसेट्टिसमाणेस्सवग्गस्स अद्वच्छेदणयमेत्ता ।

वर्गमूलको गुणित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है । इसीप्रकार नीचेके स्थानोंमें भी जानकर कथन करना चाहिये । इसप्रकार अधस्तन विकल्प समाप्त हुआ ।

उदाहरण—घनलोकका द्वितीय वर्गमूल $१६^१$, $२५६ \times २ = ५१२$; $१६^१ - ५१२ = ८$

$१६^१ \times ८ = ३२७६८$ अत्र

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार । उनमेंसे पहले गृहीत उपरिम विकल्पको धतलाते हैं—घनागुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगध्रेणीके समान द्विरूपवर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका उसी जगध्रेणीके समान द्विरूपवर्गके वर्गमें भाग देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है, क्योंकि, जगध्रेणीके समान द्विरूपवर्गका उसीके उपरिम वर्गमें भाग देने पर जगध्रेणीका प्रमाण आता है, पुन घनागुलके द्वितीय वर्गमूलका जगध्रेणीमें भाग देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है । अवहारकालका प्रमाण इसप्रकार आता है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनंतर भागका ग्रहण किया । अथवा, द्विगुणादि करण विधिले अवहारकाल बढ़ा लेना चाहिये ।

उदाहरण— $६५५३६ \times २ = १३१०७२$, $६५५३६^१ - १३१०७२ = ३२७६८$ अत्र

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी अवहारकालका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके $१६ + १ = १७$ अर्धच्छेद होते हैं, अत इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी अवहारकालका प्रमाण आता है ।

शुद्धा—उक्त भागहारकी अर्धच्छेद शलाकाप कितनी होती है ?

समाधान—जगध्रेणीके समान द्विरूपवर्गकी अर्धच्छेद शलाकाओंमें घनागुलके द्वितीय वर्गमूलकी अर्धच्छेद शलाकाए मिला देने पर उक्त भागहारकी अर्धच्छेद शलाकाओंका प्रमाण होता है ।

उदाहरण—जगध्रेणी समान द्विरूपवर्ग ६५५३६ के अर्धच्छेद १६ , घनागुलके द्वितीय वर्गमूल २ के अर्धच्छेद १ ; $१६ + १ = १७$ अ ।

उवरि सब्वत्थ चडिदद्धानणग्गसलागाओ निरलिय निग करिय अण्णोण्णमत्थरासिणा तिरूवूणेण सेटिसमाणवेरूग्गसस अद्द-उेदणए गुणिय घणगुलविदियवग्गमूलस्स अद्द-उेदणयपक्खिउत्तेत्ता भवति । एव सरोज्जासरोज्जाणतेसु वग्गट्ठाणेसु णेयव्व । वेरूवपरूग्गणा गदा । अद्दरूवे वत्तइस्सामो । घणगुलविदियवग्गमूलेण सेटिम्हि भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । तस्म भागहारस्म अद्द-उेदणयमेत्ते रासिस्स अद्द-उेदणए क्खे वि अवहारकालो आगच्छदि । अहवा घणगुलविदियवग्गमूलेण सेटिं गुणेऊण जगपदरे भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । केण कारणेण ? जगसेट्ठीए जगपदरे भागे हिदे सेट्ठी आगच्छदि । पुणो नि घणगुलविदियवग्गमूलेण सेटिम्हि भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । एवमागच्छदि चि क्खु गुणेऊण भागग्गहण क्ख । अहवा अवहारकालो निउणादिकरणेण वट्टवेयच्चो । तस्स भागहारस्स अद्द-उेदणयमेत्ते रासिस्स

ऊपर सर्वत्र जितने वर्गस्थान ऊपर जायें उनकी वर्गशलाकाओंका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमेंसे तीन कम करके शेष रही हुई राशिसे जगध्रेणीके समान द्विरूप वर्गकी अर्धच्छेद शलाकाओंको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें घनागुलके द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेद मिला देने पर जो जोड़ हो उतने विपक्षित भागहारके अर्धच्छेद होते हैं । इसीप्रकार सत्यात, असत्यात और अनन्त वर्गस्थानोंमें ले जाना चाहिये । इसप्रकार द्विरूप प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब अष्टरूपमें यतलाते हैं— घनागुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगध्रेणीके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है ।

उदाहरण— $64 \times 2 = 128$ अब

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी अवहारकालका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त भागहारका १ अर्धच्छेद है, अत इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी ३२७२८ प्रमाण अवहारकाल आता है ।

अथवा, घनागुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगध्रेणीको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका जगप्रतरमें भाग देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है, क्योंकि, जगध्रेणीसे जगप्रतरके भाजित करने पर जगध्रेणीका प्रमाण आता है, पुन घनागुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगध्रेणीके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है । इसप्रकार अवहारकालका प्रमाण आता है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया । अथवा द्विगुणादिकरण विधिसे अवहारकाल बढ़ा लेना चाहिये ।

उदाहरण— $64 \times 2 = 128$; $128 \times 2 = 256$; $256 \times 2 = 512$; $512 \times 2 = 1024$ अब

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी अवहारकालका प्रमाण आता है ।

अद्वच्छेदण ए रुदे वि अवहारकालो आगच्छदि । एत्य चडिदद्धानसलागाओ निरलिय विग करिय अणोण्णभत्थरासिणा रूवूणेण जगसेट्ठिअद्वच्छेदणए गुणिय घणगुल- विदियवग्गमूलस्स अद्वच्छेदणए पक्खित्ते भागहारस्स अद्वच्छेदणया हयति । एअं सत्तेज्जासत्तेज्जाणतेसु वग्गट्ठणोसु णेयच्चं । अद्वरूपरूपणा गदा । घणाघणे वत्तइस्सामो । घणगुलविदियवग्गमूलेण जगपदर गुणेऊण घणलोगे भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । केण कारणेण ? जगपदरेण घणलोगे भागे हिदे सेट्ठी आगच्छदि । पुणो घणगुलविदिय- वग्गमूलेण सेट्ठिभिह भागे हिदे अनहारकालो आगच्छदि । एअमागच्छदि त्ति कट्ठु गुणेऊण भागग्गहण कद । जहवा घणगुलविदियवग्गमूलेण जगपदर गुणेऊण तेण घणलोगं गुणेऊण घणलोगउपरिमवग्गे भागे हिदे अनहारकालो आगच्छदि । केण कारणेण ? घणलोगेण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे घणलोगो आगच्छदि । पुणो वि जगपदरेण घणलोगे भागे हिदे सेट्ठी आगच्छदि । पुणो घणगुलविदियवग्गमूलेण सेट्ठिभिह

उदाहरण—उक्त भागहारके $१६ + १ = १७$ अर्धच्छेद होते हैं, अत इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर ३२७६८ प्रमाण अवहारकालराशि आती है ।

यहां पर जितने स्थान ऊपर गये हैं उतनी शलाकाओंका विरलन करके ओर उच्च राशिके प्रत्येक पत्रों दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमेंसे एक पत्र करके शेष राशिके जगध्रेणीके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें घनागुलके द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेदोंको मिला देने पर विवक्षित भागहारके अर्धच्छेदोंका प्रमाण होता है । इसीप्रकार सरयात, असरयात वार अनन्त वर्गस्थानोंमें ले जाना चाहिये । इसप्रकार अष्टरूप प्रकृपणा समाप्त हुई ।

अथ घनाघनमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— घनागुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगप्रतरको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनलोकके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है, क्योंकि, जगप्रतरसे घनलोकके भाजित करने पर जगध्रेणीका प्रमाण आता है, पुन घनागुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगध्रेणीके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है । इसप्रकार अवहारकाल आता है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका प्रहण किया ।

उदाहरण— $६५३६१ \times ० = ८०८९९३४५९२$; $६५५३६१ - ८१८९९३४५९२ = ३२७६८$ अथ

अथवा, घनागुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगप्रतरको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनलोकको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनलोकके उपरिम वर्गमें भाग देने पर अथ दाटकालका प्रमाण आता है, क्योंकि, घनलोकका उसके उपरिम वर्गमें भाग देने पर घनलोक आता है, पुन जगप्रतरका घनलोकमें भाग देने पर जगध्रेणी आती है, पुन घनागुलके द्वितीय वर्गमूलका जगध्रेणीमें भाग देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है । इसप्रकार

भागे हिंदे अवहारकालो आगन्तुदि । एवमागच्छदि त्ति कहु गुणेऊण भागगहण कद । तस्म भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्म अद्वच्छेदणए कदे पि अवहारकालो आगच्छदि । एत्थ भागहारस्स अद्वच्छेदणयमलागाणमाणयणविही बुच्चदे- चडिदद्धानपग्ग मलागाओ विरलिय पिग्ग करिय अण्णोण्णवत्तरामिणा तिग्गुणरूग्गणेण सेट्ठिअद्वच्छेदणए गुणिय घणगुलविदियवग्गमूलस्स जद्वच्छेदणए पक्खित्ते भागहारस्स अद्वच्छेदणया ह्यति । एव सरेजेज्जामरेज्जाणतेसु पेयच्च । गहिदपरूग्गणा गदा । सेट्ठिसमाणवेरूववग्गवग्गस्स अमग्गेज्जदिभागेण सेट्ठीए असरेजेज्जदिभागेण घणलोगपट्टमपग्गमूलस्स असरेजेज्जदिभागेण अवहारकालेण गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च उत्तव्यो । एवमवहारकालपरूग्गणा समत्ता ।

एदेण अवहारकालेण जगपदरे भागे हिंदे णेरइयमिन्त्ताइट्टिरासी आगन्तुदि ।

अवहारकालका प्रमाण आता है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया।

$$\text{उदाहरण—} \frac{६' २६'}{६५ \times ३६' \times ६' ५३६' \times २} = ३२७६८ \text{ अव}$$

उक्त भागहारके नितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी अवहारकाका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ८१ अर्धच्छेद होते ह अत इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी ३२७६८ प्रमाण अवहारकालका प्रमाण आता है ।

अथ यद्वा भागहारकी अर्धच्छेद शलाकाओंके लानेकी विधि कहते ह— जितने स्थान ऊपर गये हों उतनी वर्गशलाकाओंका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको बोरुप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसे तीनसे गुणा करके लघु राशिमसे एक कम करके जो शेष रहे उसे जगधेनीके अर्धच्छेदसे गुणित करके जो लघु आवे उसमें घनागुलके द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेद मिला देने पर विवक्षित अवहारकालके अर्धच्छेद होते ह । इसीप्रकार सरयात, अन्तरयात और अनन्त स्थानोंमें गणा लेना चाहिये । इसप्रकार गृहीतपरूग्गणा समाप्त हुई ।

उदाहरण—एक स्थान ऊपर गये इसलिये $२ = २ \times ३ = ६ - १ = ५ \times १६ = ८० + १$
 $= ८१$ अर्ध ।

जगधेनीके समाप्त द्विरूपवर्गका जो उपरि वर्ग हो उसके असख्यातवें भागरूप, जगधेनीके असख्यातवें भागरूप और घनत्रिकके प्रथम वर्गमूलके अन्तरयातवें भागरूप अवहारकालके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन करना चाहिये । इसप्रकार अवहारकाका प्ररूपणा समाप्त हुई ।

इस अवहारकासे जगप्रतरके भाजित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिका आता है (४२७२६७२०६ - ३२७६८ = १३१०७२) । यदा पर खण्डित, भाजित,

एत्थ संडिद-भाजिद-पिरलिद-अवहिदपरूखणाओ पुञ्चं व परूपेदञ्जाओ । तत्थ पमाण वत्तइस्सामो । त जघा- जगपदरस्स असखेज्जादिभागो असखेज्जाओ सेठीओ । पमाणं गद । केण कारणेण ? सेठीए जगपदरे भागे हिदे सेठी आगच्छदि । सेठिट्टुभागेण जगपदरे भागे हिदे दोण्णि सेठीओ आगच्छति । सेठितिभागेण जगपदरे भागे हिदे तिण्णि सेठीओ आगच्छति । एव गतूण विक्खमसूचीभजिदसेठीए जगपदरे भागे हिदे असखेज्जाओ सेठीओ आगच्छति चि वुत्त । कारण गद । गिरुत्तिं उत्तइस्सामो । सेठीए असखेज्जादिभागेण सेठिमिह भागे हिदे तत्थागदाणि जत्तियाणि रूपाणि तत्तियाओ सेठीओ । अहवा विक्खमसूईरूवमेत्ताओ । गिरुत्ती गदा ।

वियप्पो दुविहो, हेट्टिमियप्पो उवरिमियप्पो चेदि । तत्थ हेट्टिमियप्प उत्तइस्सामो । वेरूपे हेट्टिमियप्पो णत्थि । कारण पुञ्च उत्तव्व । अट्टरूपे हेट्टिमियप्प

विरालित ओर अपहतकी प्ररूपणा पहलेके समान करना चाहिये (देखो पृष्ठ ४१, ४२) । अब नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण उतलाते हैं । यह इसप्रकार है—

नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण जगप्रतरके असख्यातवें भाग है जो असख्यात जगश्रेणीप्रमाण है । इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण— $४२९४९६७२९६ - ३२७६८ = १३१०७२ =$ असख्यातरूप २ जगश्रेणियोंके ।
शंका—नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण जो जगप्रतरके असख्यातवें भाग कहा है वह असख्यात जगश्रेणीप्रमाण किस कारणसे है ?

समाधान—जगश्रेणीसे जगप्रतरके भाजित करने पर जगश्रेणी आती है ($४२९४९६७२९६ - ६५३६ = ६५५३६$) जगश्रेणीके द्वितीय भागसे जगप्रतरके भाजित करने पर दो जगश्रेणिया आती हैं ($४२९४९६७२९६ - ३२७६८ = १३१०७२$) । जगश्रेणीके तीसरे भागसे जगप्रतरके भाजित करने पर तीन जगश्रेणिया आती हैं ($४२९४९६७२९६ - २१८४०१ = १९६६०८$) । इसप्रकार उत्तरोत्तर जाकर विष्कभसूचीसे भाजित जगश्रेणीका जगप्रतरमें भाग देने पर असख्यात जगश्रेणिया लब्ध आती हैं, ऐसा कहा है । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण— $६५५३६ - २ = ३२७६८$, $४२९४९६७२९६ - ३२७६८ = १३१०७२$ उदाहरण असख्यात जगश्रेणियोंके ।

अब निरुक्तिका कथन करते हैं—जगश्रेणीके असख्यातवें भागसे जगश्रेणीके भाजित करने पर वहा जो प्रमाण लब्ध आये उतनी जगश्रेणिया जगप्रतरके असख्यातवें भागमें ली हैं । अथवा, विष्कभसूचीका जितना प्रमाण है उतनी जगश्रेणिया जगप्रतरके असख्यातवें भागमें ली हैं । इसप्रकार निरुक्तिका कथन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—जगश्रेणीका असख्यातवा भाग ३२७६८ , $६५५३६ - ३२७६८ = २$ जगश्रेणिया । अथवा, विष्कभसूची २, अतएव विष्कभसूची २ प्रमाण जगश्रेणिया ।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमेंसे पहले

वत्तइस्तामो । मेढीए अमखेज्जदिभागभूदअणहारकालेण सेटिम्हि भागे हिदे तत्थागदेण सेटिम्हि गुणिदे मिच्छाइट्टिरासी होदि । अधमा विक्खमसुचीरूपेहि सेटिम्हि गुणिदे मिच्छाइट्टिरामी होदि । अहमा अणहारकालेण सेटिनिदियणग्गमलमणहरिय लद्धेण त चेव गुणिदे तेण सेटिपटमवग्गमल गुणेऊण तेण सेटिम्हि गुणिदे नि मिच्छाइट्टिरामी आगच्छदि । अहवा अणहारकालेण सेटिनिदियवग्गमूलमणहरिय लद्धेण त चेव गुणिय तेण सेटिनिदियणग्गमूल गुणिय तेण पढमणग्गमूल गुणिय तेण गुणिदरासिणा सेटिम्हि गुणिदे मिच्छाइट्टिरासी होदि । एण हेट्ठा नि जाणिऊण वत्तञ्च । घणाघणे वत्तइस्तामो ।

अधस्तन विकल्पको घतलाते हैं— प्रकृतमें द्विरूपधारामें अधस्तन विकल्प सभव नहीं है । यहा कारणका कथन पहलेके समान कहना चाहिये ।

निशेपर्य—यदि जगध्रेणीके किसी भी वर्गमूलमें अवहारकालका भाग दिया जाता है तो नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि उत्पन्न नहीं हो सकती है, इसलिये यहा द्विरूपधारामें अधस्तन विकल्प सभव नहीं है यह कहा ।

अथ अष्टरूपमें अधस्तन विकल्प घतलाते हैं— जगध्रेणीके असख्यातवर्षे भागभूत अवहारकालसे जगध्रेणीके भाजित करने पर यहा जितना प्रमाण आवे उससे जगध्रेणीके गुणित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण— $६५५३६ - ३२७६८ = २$, $६५५३६ \times २ = १३१०७२$ ।

अथवा, विष्कभसूत्राके प्रमाणसे जगध्रेणीके गुणित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण— $६५५३६ \times २ = १३१०७२$ ।

अथवा, अवहारकालके प्रमाणसे जगध्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको भाजित करके जो लब्ध आवे उससे उसी द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे जगध्रेणीके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे जगध्रेणीके गुणित करने पर भी नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण— $१६ - ३२७६८ = \frac{१}{२०४८}$, $१६ \times \frac{१}{२०४८} = \frac{१}{१२८}$, $२५६ \times \frac{१}{१२८} = २$,

$६५५३६ \times २ = १३१०७२$ ।

अथवा, अवहारकालके प्रमाणसे जगध्रेणीके तीसरे वर्गमूलको भाजित करके जो लब्ध आवे उससे उसी तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे जगध्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे जगध्रेणीके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे जगध्रेणीके गुणित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है । इसप्रकार नीचे भी जानकर कथन करना चाहिये ।

उदाहरण— $४ - ३२७६८ = \frac{१}{८१९२}$, $४ \times \frac{१}{८१९२} = \frac{१}{२०४८}$, $१६ \times \frac{१}{२०४८} = \frac{१}{१२८}$ ।

सेढीण असंसेज्जदिभागेण अवहारकालेण सेढिं गुणेऊण तेण घणलोगे भागे हिदे मिच्छा-
इट्टिरासी आगच्छदि । त क्खं ? सेढिणा घणलोगे भागे हिदे जगपदरमागच्छदि । पुणो
वि भागहारेण जगपदरे भागे हिदे मिच्छाइट्टिरासी आगच्छदि । अहवा अवहारकालेण
सेढिं गुणेऊण घणलोगपढमग्गमूलमग्गरिय तेण त चेय गुणिदे मिच्छाइट्टिरासी होदि ।
एव हेट्ठा जाणिऊण वत्तव्व । हेट्ठिमवियप्पो गदे ।

उपरिमवियप्पो तिनिहो, गहिदेो गहिदग्गहिदेो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ गहिदं
वत्तइस्तामो । गेरइयमिच्छाइट्टिरासिअवहारकालेण जगपदरममाणवेरूवग्ग गुणेऊण तेण
तव्वग्गग्गगे भागे हिदे मिच्छाइट्टिरासी आगच्छदि । तं क्खं ? जगपदरसमाणवेरूव-
वग्गेण तव्वग्गग्गगे भागे हिदे जगपदरमागच्छदि । पुणो वि अवहारकालेण जगपदरे

$$२५६ \times \frac{१}{१२८} = २ \ ६५५३६ \times २ = १३१०७२ \text{ सा ना मि}$$

अथ घनाघनमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— जगध्रेणीके असख्यातवें भागरूप
अवहारकालसे जगध्रेणीको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनलोकके भाजित करने पर
नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है, क्योंकि, जगध्रेणीसे घनलोकके भाजित करने पर
जगप्रतर आता है । पुन भागहारसे जगप्रतरके भाजित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीव
राशि आती है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{६५५३६^३}{६५५३६ \times ३२७६८} = १३१०७२ \text{ सा ना मि}$$

अथवा, अवहारकालसे जगध्रेणीको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनलोकके
प्रथम वर्गमूलको अपहत करके जो प्रमाण आवे उससे उसी घनलोकके प्रथम वर्गमूलको
गुणित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है । इसीप्रकार नीचेके स्थानोंमें जानकर
कथन करना चाहिये । इसप्रकार अधस्तन विकल्प समाप्त हुआ ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{२५६^३}{६५५३६ \times ३२७६८} = १२८, २५६^३ \times १२८ = १३१०७२ \text{ सा ना मि}$$

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार । उनमेंसे
पहले गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिसबन्धी अवहार-
कालसे जगप्रतरके समान द्विरूपवर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे उस द्विरूपवर्गके
वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है, क्योंकि, जगप्रतरके समान द्विरूपवर्गका
उसके वर्गमें भाग देने पर जगप्रतरका प्रमाण आता है, पुन अवहारकालका जगप्रतरमें
भाग देने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{४२९४९६७२९६^३}{४२९४९६७२९६ \times ३२७६८} = १३१०७२ \text{ सा ना मि}$$

भागे हिदे मिन्डाइद्विरासी आगन्तुदि । तस्म भागहारस्म अद्वन्द्वेदणयमेत्ते रासिस्म
 अद्वन्द्वेदणए कदे नि मिन्डाइद्विरासी आगन्तुदि । एदस्म अद्वन्द्वेदणया केत्तिया ?
 अवहारद्वन्द्वेदणयमहिदजगपदरममाणनेरूपरगन्तुदणयमेत्ता । उररि अद्वन्द्वेदणयमेला-
 वणनिहाण जाणिऊण वत्तव्व । वेरूपररूणा गदा । अट्टरूपे वत्तइस्सामो । अवहारकालेण
 जगपदरे भागे हिदे मिन्डाइद्विरासी आगन्तुदि । पणगुलनिदियग्गमलद्वन्द्वेदणएहि
 ऊणसेदिअद्वन्द्वेदणयमेत्ते जगपदरस्म अद्वन्द्वेदणए कदे नि मिन्डाइद्विरामी आगन्तुदि ।
 अहवा अवहारकालेण जगपदर गुणेऊण तेण तस्सुररिमग्गे भागे हिदे मिन्डाइद्विरासी
 आगन्तुदि । न जहा- जगपदरेण तस्सुररिमग्गे भागे हिदे जगपदरमागच्छदि । पुणो
 नि अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे मिन्डाइद्विरासी आगन्तुदि । एदस्म भागहारस्म

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ४७ अर्धच्छेद ह, अत इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर १३१०७२ प्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

शंका—उक्त भागहारके अर्धच्छेद कितने ह ?

समाधान—जगप्रतरके समान द्विरूपवर्गके जितने अर्धच्छेद हों उनमें अवहारकालके अर्धच्छेद मिला देने पर उक्त भागहारके अर्धच्छेदोंका प्रमाण होता है ।

उदाहरण—जगप्रतरसमान द्विरूपवर्ग ४२९४९६७२९६ के अर्धच्छेद ३२, ३२७६८ के १५ अतएव $३२ + १ = ४७$ अ ।

ऊपरके स्थानोंमें भी अर्धच्छेदोंके मिलानेका विधि जानकर कहना चाहिये । इसप्रकार द्विरूपप्रमाण समाप्त हुई ।

अथ अष्टरूपमें गृहीत उपरिम त्रिकरूपको घतलाते ह—अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण— $४०९४९६७२९६ - ३२७६८ = १३१०७२$ सा न्य मि

अथवा, घनागुलके द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेदोंको जगध्रेणाके अर्धच्छेदोंमेंसे कम करके जो प्रमाण शेष रहे उतनीवार जगप्रतरके अर्धच्छेद करने पर भी नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण— ६५०३६ प्रमाण जगध्रेणीके अर्धच्छेद १६ मेंसे घनागुलके द्वितीय वर्गमूल २ के अर्धच्छेद १ कम करने पर १५ शेष रहते हैं, अत १५ वार ४२९४९६७२९६ प्रमाण जगप्रतरके अर्धच्छेद करने पर १३१०७२ प्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

अथवा, अवहारकालसे जगप्रतरको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका जगप्रतरके उपरिम वर्गमें भाग देने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है । उसका स्पर्शकरण प्रकार है—जगप्रतरका उसके उपरिम वर्गमें भाग देने पर जगप्रतर आता है । पुन

अद्वन्द्वेदणयमेते रासिस्म अद्वन्द्वेदणए कदे वि मिन्डाइडिरासी आगच्छदि । एत्थ अद्वन्द्वेदणयमेलाणनिहाणं पुव्व ण वत्तव्व । एणं सखेज्जामखेज्जाणतेसु णेयव्वं । अद्वन्द्वेदणयमेलाणगदा । घणाघणे वत्तइस्सामो । अत्रहामकालगुणितजगपदरउपरिमग्गेण घणलोगउपरिमग्गे भागे हिदे मिन्डाइडिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? जगपदरउपरिमग्गेण घणलोगुपरिमग्गे भागे हिदे जगपदरमागच्छदि । पुणो वि अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे मिन्डाइडिरासी आगच्छदि । तस्म भागहारस्स अद्वन्द्वेदणयमेते रासिस्म अद्वन्द्वेदणए कदे वि मिन्डाइडिरासी आगच्छदि । एत्थ अद्वन्द्वेदणयमेलाणनिहाणं पुव्व ण वत्तव्वं । एण सखेज्जामखेज्जाणतेसु णेयव्व । गहिदपरूपणा गदा ।

अवहारकालका जगप्रतरमें भाग देने पर नारक मिथ्यादाष्टि जीवराशि आती है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{४२९४२६७२९६}{४२९४२६७२९६ \times ३२७६८} = १३१०७० \text{ सा ना मि}$$

इस भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी नारक मिथ्यादाष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ३२ + १५ = ४७ अर्धच्छेद हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर १३१०७२ प्रमाण नारक मिथ्यादाष्टि जीवराशि आती है ।

यहां पर अर्धच्छेदोंके मिलानेकी विधिका पहलेके समान कथन करना चाहिये । इसीप्रकार सख्यात, असख्यात और अनन्त स्थानोंमें ले जाना चाहिये । इसप्रकार अपरूप प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अथ घनाघनमें गृहीत उपरिम विफल्य बतलाते हैं—जगप्रतरके उपरिम वर्गको अवहारकालसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनलोकके उपरिम वर्गमें भाग देने पर नारक मिथ्यादाष्टि जीवराशि आती है, क्योंकि, जगप्रतरके उपरिम वर्गका घनलोकके उपरिम वर्गमें भाग देने पर जगप्रतरका प्रमाण आता है । पुन अवहारकालका जगप्रतरमें भाग देने पर नारक मिथ्यादाष्टि जीवराशि आती है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{६५३६}{४२९४२६७२९६ \times ३२७६८} = १३१०७२ \text{ सा ना मि}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी नारक मिथ्यादाष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ७९ अर्धच्छेद होते हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर १३१०७२ प्रमाण नारक मिथ्यादाष्टि जीवराशि आती है ।

यहां पर अर्धच्छेदोंके मिलानेकी विधिका पहलेके समान कथन करना चाहिये । इसीप्रकार सख्यात, असख्यात और अनन्तस्थानोंमें भी ले जाना चाहिये । इसप्रकार गृहीत उपरिम विफल्य प्ररूपणा समाप्त हुई ।

जगपदरसमाणवेरूपवगारगस्त असखेज्जदिभागेण जगपदरस्त असखेज्जदिभागेण
घणलोगस्त असखेज्जदिभागेण च णेरइयमिन्ध्राइडिरासिणा गहिदगहिदो गहिदगुणगारो
च वत्तव्यो । मिञ्चाइडिरामिपरूणा समत्ता ।

सासणसम्माइट्टिप्पहुडि जाव अमंजदसम्माइट्टि त्ति दव्वपमाणेण
केवडिया, ओघ ॥ १८ ॥

ओघम्मि वुत्ततिण्णिगुणद्वाराणामी मच्चा नि णेरइयाण तिण्णिगुणद्वारासि
मेत्ता चेव होदि त्ति वुत्ते मेसगदीसु तिण्ह गुणद्वाराणममाणो पसज्जदे ? ण एस दोसो,
णेरइयाणं तिण्ह गुणद्वाराण पमाणस्म ओघतिगुणद्वाराणपमाणेण पलिदोवमस्त असखेज्जदि
भागत्त पडि विसेमाभावादो एयचापिरोहा । पज्जपट्टियणए पुण अरलपिज्जमाणे भेदो
दोण्हमत्थि चेव, सेसतिगत्तिण्ह गुणद्वाराण पमाणपरूणाणमुपरि उच्चमाणसुत्ताण

जगप्रतरके समान द्विरूपवर्गका जितना उपरिम वर्ग हो उसके अन्त्यातवें भागरूप,
जगप्रतरके असख्यातवें भागरूप ओर घनलोकके असख्यातवें भागरूप नारक मिथ्यादृष्टि
जीवराशिके द्वारा गृहीतगृहीत ओर गृहीतगुणकारका बंधन करना चाहिये ।

इसप्रकार मिथ्यादृष्टिराशिनी प्ररूपणा समाप्त हुई ।

सासादनसम्पग्दष्टि गुणस्थानसे लेकर असयतसम्पग्दष्टि गुणस्थान तरु प्रत्येक
गुणस्थानमें नारकी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? गुणस्थान प्ररूपणाके
समान हैं ॥ १८ ॥

शुका— गुणस्थानोंमें कही गई तीन गुणस्थानसबधी जीवराशि सपूर्ण नारकियोंके
तीन गुणस्थानसबधी जीवराशिके घराघर ही होती है, ऐसा कहन पर शेष तीन गतियोंमें
तीनों गुणस्थानोंका अभाव प्राप्त होता है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, न्याकि, नारकियोंके तीन गुणस्थानसबधी
जीवराशिके प्रमाणकी सामान्यसे कही गई तीन गुणस्थानसबधी जीवराशिके प्रमाणके साथ
पत्योपमके असख्यातवें भागत्यके प्रति कोई विशेषता नहीं है, इसलिये इन दोनोंको समान
मान लेनेमें कोई विरोध नहीं आता है । परन्तु पर्यायाधिक नयका अवलम्बन करने पर दोनोंमें
भेद है ही । यदि ऐसा न माना जाय तो शेषकी तीन गतिसबधी सामान्यतादि तीन गुणस्थानोंकी
जीवराशिके प्रमाणके प्ररूपण करनेके लिये कहे गये सूत्रोंकी सफलता नहीं बन सकती है । अब

१ सर्वादि पृथिवीसु सासादनसम्पग्दष्टयः सम्पद्दिपथ्यादष्टयोऽसयतसम्पग्दष्टयश्च पस्यापमासन्नेयमाण
स ति १, ८

सफलत्तण्णहाणुअचीदो । तस्स भेदस्स परूणण्ह सासणसम्माइड्डिआदिगुणपडिवण्णाणं अवहारकाले उत्तइस्सामो । त जहा-

ओषअसजदसम्माइड्डिअवहारकाल विरलेऊण पलिदोअमं समखडं करिय दिण्णे णकेअस्स रूपस्स असंजदसम्माइड्डिदन्वपमाणं पापेदि । देअगइ मोत्तूण सेसत्तिगदिअसजदसम्माइड्डिरासी सामण्णअसंजदसम्माइड्डिरासिस्स अससेज्जदिभागो । तस्स को पडिभागो ? आवलियाए अससेज्जदिभागो । ओषअसजदसम्माइड्डिरासिस्स असखेज्जा भागा देवाणमसजदसम्माइड्डिरासी होदि । कुदो ? देवेषु बहूणं सम्मत्तुप्पत्तिकारणाणमुवलभादो । देवाणं सम्मत्तुप्पत्तिकारणाणि काणि चे ? जिणत्तिविद्धिमहिमादसणजाइस्सरण महिड्डिंदादिदसण जिणपायमूलधम्मसअणादीणि । तिरिकउणेरइया पुण गरुअपाअ-

उक्त भेदके प्ररूपण करनेके लिये सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंका प्रमाण लानेके लिये अवहारकालोंको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—

सामान्यसे कहे गये असयतसम्यग्दृष्टिसबन्धी अवहारकालको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर पत्योपमको समान खड करके देयरूपमे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है ।

उदाहरण— १६३८४ १८३८४ १६३८४ १६३८४ एक विरलनके प्रति प्राप्त असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि ।

इसमें देवगतिसबन्धी असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको छोडकर शेष तीन गतिसबन्धी असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि सामान्य असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिके असख्यातवें भाग प्रमाण है ।

शुद्धा— शेष तीन गतिसबन्धी असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण पत्योपमके असख्यातवें भागरूप लानेके लिये प्रतिभागका प्रमाण क्या है ?

समाधान—आवलीका असख्यातवा भाग प्रतिभागका प्रमाण है ।

सामान्यसे कही गई असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका असख्यात बहुभागप्रमाण देवोंसब धी असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है, क्योंकि, देवोंमें सम्यक्त्वकी उत्पत्तिके यहूतसे कारण पाये जाते हैं ।

शुद्धा— देवोंमें सम्यक्त्वकी उत्पत्तिके कारण कौनसे हैं ?

समाधान— जिनत्रिमसबन्धी अतिशयके माहात्म्यका दर्शन, जातिस्मरणका होना, महात्तिक इन्द्रादिकका दर्शन और जिनदेवके पादमूलमें धर्मका अचण आदि देवोंमें सम्भवतोत्पत्तिके कारण हैं । परंतु तिर्यक और नारकी गुरुतर पापोंके भारसे मये और धये होनेसे, अतिशय

१ देशानां वैषाचिञ्जातिस्मरणं, वैषाचिद्धर्मअचण, वैषाचिजिनमहिमदर्शन, वैषाचिदेवधिदर्शनम् । स वि १, ७.

भोरण णत्थणद्धत्तादो सक्किलिद्धरत्तादो' मद्दुद्धिच्चादो चहण राम्मनुप्पत्ति कारणाणमभारात्ता च सम्माइत्तिणो योरा हवति । तदो तिगदिअमनदमम्माइत्तिरासिणा उपरिमेगरूपघरिद ओघासजदसम्माइत्तिद्वयमरहरिय तत्थागदमावलियाण असग्गेज्जदिभाग विरलेऊण ओघा मजदसम्माइत्तिद्वय ममसड करिय दिण्णे हेत्तिमविरलणम्प पडि सेमतिगदिअसजद सम्माइत्तिरासिपमाण पावदि । तप्पमाण उपरिमविरलणाण उपरिमरूप पडि इत्तिदओघा सनदसम्माइत्तिद्वयम्हि अण्णेयव्व । एवमण्णिदे उपरिमविरलणमेत्ता चेय देवअसजद सम्माइत्तिरासीओ तिगदिअमजदमम्माइत्तिरासीओ च भवति । पुणो उपरिमविरलणमेत्त तिगदिअसजदमम्माइत्तिरासिपमाणेण कम्मामो । त जहा —

रूपेणहेत्तिमविरलणमेत्तसु तिगदिअसजदमम्माइत्तिद्वयेसु उपरिमविरलणम्हि इत्तिदेसु समुत्तिदेसु एग देवअसजदमम्माइत्तिरामिपमाण लब्धमि, अवहारजालम्हि ण्णा सन्निल्ल परिणामी हानेसे, मद्दुद्धि दोनेस आर उनमें सम्यक्त्वकी उत्पत्तिके यद्दुत्तसे कारणात्ता अभाय होनेसे सम्यग्दृष्टि येथे होते हैं ।

तदनन्तर उपरिम विरलनके एकके प्रति रफकी हुई सामान्य असयतसम्यग्दृष्टि जीव राशिको तीन गतिसवधा असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिके भाजित करके घटा जो आगलीका असरपातवा भाग लत्र आवे उसका विरलन करके आर उस विगलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सामान्य असयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यको समान राड करके देयरूपसे दे देने पर अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति तीन गतिसवधी असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । इस प्रमाणको उपरिम विरलनके उपरिम एकके प्रति प्राप्त सामान्य असयत सम्यग्दृष्टि द्रव्यमस निकाल देना चाहिये । इसप्रकार निकाल देने पर उपरिम विरलनमात्र देवगतिसवधी असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिया और तीन गतिसव धी असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिया होनी ह ।

उदाहरण—तीन गतिसवधा असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि ४०९६।

१२३८४ - ४०९६ = ४;	४ ९६	४०९६	४०९६	४०९६
	१	१	१	१ ।

इस ४०९६ को उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त १६३८४ में घटा देने पर १२२८८ आते हैं । यही देवगतिसव धी असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है, और ४०९६ तीन गतिसवधी असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है ।

अथ आगे उपरिम विरलनमात्र अर्थात् उपरिम विरलनगुणित तीन गतिसवधी असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको देव असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्रमाणसे करके बतलाते हैं । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

एक कम अधस्तन विरलनमात्र अर्थात् एक कम अधस्तन विरलनगुणित उपरिम विरलनमें स्थित तीन गतिसवधी असयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यको समुद्धित कर देने पर एक देव

१ प्रविष्ट 'णत्थणद्धत्तादो सक्किलिद्धरत्तादो' इति पाठ ।

चेर पन्नेप्रमलागा । पुणो वि एत्तियमेत्तेसु चेर उररिमपरिलगाम्हि तिगदिअसजद-
सम्माइड्डिद्वेषेसु समुदिदेसु देवअसजदसम्माइड्डिद्वेष लब्धदि, अणहारकालमिह निदिया
च पन्ने-सलागा । एव पुणो पुणो कीरमाणे आगलियाए असंखेज्जिभागमेत्ताओ
अणहारकालपन्नेसलागाओ लब्धति, हेट्टिमपरिलगादो उररिमपरिलगाए असंखेज्ज-
गुणत्ता । एदात्तिमवहारकालपन्नेसलागाणमेगारेण आगमणविहिं वचइस्सामो ।
हेट्टिमपरिलणरूपणमेत्ततिगदिअसजदसम्माइड्डिद्वेषेसु जदि एगा अणहारकालपक्खेव-
सलागा लब्धदि तो उररिमपरिलणमेत्तेसु तिगदिअसजदसम्माइड्डिद्वेषेसु केत्तियाओ
पक्खेवसलागाओ लभामो त्ति रूपणहेट्टिमपरिलगाए उररि परिलिदओअसजदसम्मा-
इड्डिस्स अणहारकाले भागे हिद्वे आगलियाए अणखेज्जिभागमेत्ताओ अणहारकालपक्खेव-
सलागाओ लब्धति । ताओ ओअणमजदसम्माइड्डिअणहारकालमिह पक्खित्ते देवअसजद-
सम्माइड्डिअणहारकालो होदि । तमागलियाए असंखेज्जिभागेण गुणिदे देवसम्मामिच्छा-
इड्डिअणहारकालो होदि, असजदसम्माइड्डिउपक्रमणकालादो सम्मामिच्छाइड्डिउपक्रमण-
कालस्स असंखेज्जगुणहीणत्ता । त मण्णेरूपेहिं गुणिदे देवसासणसम्माइड्डिअणहारकालो

असयतसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है और अवहारकालमें एक प्रक्षेपशलाका
प्राप्त होती है । फिर भी एक कम अधस्तन विरलनमात्र उपरिम विरलनमें स्थित तीन
गतिसवन्धी असयतसम्यग्दष्टि द्रव्यके समुदित कर देने पर देव असयतसम्यग्दष्टि द्रव्यका
प्रमाण प्राप्त होता है और अवहारकालमें दूसरी प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है । इसीप्रकार पुन
पुन करने पर आगलीके असत्प्रातर्वे भागमात्र अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाए प्राप्त होती है,
क्योंकि, अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन असत्प्रातर्गुणा है । अब इन अवहारकाल
प्रक्षेपशलाकाओंके प्रकारमें लानेकी विधिको बतलाते हैं— एक कम अधस्तन विरलनमात्र
तीन गतिसवन्धी असयतसम्यग्दष्टि द्रव्यमें यदि एक अवहारकाल प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है
तो उपरिम विरलनमात्र अर्थात् उपरिम विरलनगुणित तीनगतिसवन्धी असयतसम्यग्दष्टि
द्रव्योंमें कितनी प्रक्षेपशलाकाए प्राप्त होंगी, इसप्रकार (वैराशिक करके) एक कम अधस्तन
विरलनका ऊपर विरलित ओअ असयतसम्यग्दष्टिके अवहारकालमें भाग देने पर आगलीके
असत्प्रातर्वे भागमात्र अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाए प्राप्त होती है । उन प्रक्षेपशलाकाओंको
ओअ असयतसम्यग्दष्टिके अवहारकालमें मिला देने पर देव असयतसम्यग्दष्टि अवहारकालका
प्रमाण आता है ।

उदाहरण—एक कम अधस्तन विरलन ३, उपरिम विरलन ४, ४-३ = १

$४ + १ = ५$, $६ \times ५ = ३० - १ = २९$ देव असयतसम्यग्दष्टि द्रव्य ।

$२९ \times ३ = ८७$ तीन गतिसवन्धी असयतसम्यग्दष्टि द्रव्य ।

देव असयतसम्यग्दष्टिमव धी अवहारकालको आगलीके असत्प्रातर्वे भागसे गुणित
करने पर देव सम्यग्मिथ्यादष्टि जीवराशिसवन्धी अवहारकाल होता है, क्योंकि, असयत
सम्यग्दष्टिके उपक्रमण कालसे सम्यग्मिथ्यादष्टिका उपक्रमणकाल असत्प्रातर्गुणा हीन है । देव

भोरण णत्थणद्धत्ताणे मन्किलिट्ठधरत्तादो' मदनुद्धित्तादो' वहण सम्मत्तुप्पत्ति कारणाणमभायो च सम्माडिणो थोम हउति । तदो तिग्गदिअमजदसम्माडिट्ठिरातिणा उपरिमेगरूपधरिद ओघासजदसम्माडिट्ठिच्चमउहरिय नत्थागदमारलियाए असखेज्जदिभाग पिरलेऊण ओघा मजदसम्माडिट्ठिदव्व समएड करिय दिण्णे हेट्ठिमपिरलगरूप पडि सेमतिग्गदिअमजद सम्माडिट्ठिरासिपमाण पाउदि । तप्पमाण उपरिमविरलणाए उपरिमरूप पडि ट्ठिदओघा मजदसम्माडिट्ठिदव्वरम्हि अरणेयव्व । एउमणिदे उपरिमपिरलगमेत्ता चेउ देवअसजद सम्माडिट्ठिरासीओ तिग्गदिअमजदसम्माडिट्ठिरामीओ च भउति । पुणो उपरिमविरलगमेत्त तिग्गदिअसजदसम्माडिट्ठिराभिं देउअमजदसम्माडिट्ठिरासिपमाणेण कस्सामो । त जहा —

रूपगहेट्ठिमपिरलगमेत्तेसु तिग्गदिअमजदसम्माडिट्ठिदव्वेसु उपरिमपिरलगम्हि ट्ठिदेसु समुट्ठिदेसु एग देउअमजदसम्माडिट्ठिरासिपमाण लब्भदि, उउहारकालम्हि एगा सखिलए परिणामी होनेसे मन्दबुद्धि होनेस और उनमें सम्यक्त्वकी उत्पत्तिसे उद्भूतसे कारणोंका अभाव होनेसे सम्यग्दृष्टि योडे होते ह ।

तदनन्तर उपरिम विरलनके एकके प्रति एकली हुई सामान्य असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको तीन गतिसवधी असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे भाजित करके वहा जो आवलीका असरपातवा भाग ल'ए आवे उसका विरलन करके ओर उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सामान्य असयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यको प्रमाण एउ करके देयरूपसे वे देने पर अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति तीन गतिसवधी असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिना प्रमा प्राप्त होना हे । इस प्रमाणको उपरिम विरलनके उपरिम एकके प्रति प्राप्त सामान्य असयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यमेंस निकाल देना चाहिये । इसप्रकार निकाल देने पर उपरिम विरलनमें देवगतिसवधी असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिया ओर तीन गतिसवधी असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिया होती ह ।

उदाहरण—तीन गतिसवधी असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि ४०९६,

१८३८ - ४०९६ = ४	४०९६	४०९६	४०९६	४०९६
	१	१	१	१

इस ४०९६ को उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त १६ घटा देने पर १२२८८ आते ह । यहाँ देउगतिसवधी असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि हे, और ४०९६ तीन गतिसवधी असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि

अथ आगे उपरिम विरलनमात्र अथात् उपरिम विरलनगुणित तीन गति असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको देव असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्रमाणसे करके बत उसका स्पर्धीकरण इसप्रकार हे—

एक कम अधस्तन विरलनमात्र अथात् एक कम अधस्तन विरलनगुणित विरलनमें स्थित तीन गतिसवधी असयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यको समुद्धित कर देने पर

१ प्रतिशु ' णत्थणद्धत्तादो मन्किलिट्ठधरत्तादो ' इति पठ ।

एवं पढमाए पुढवीए णेरइया' ॥ १९ ॥

ण पुव्व सामण्णणेरइयमिच्छाहट्टिआदिरासिस्स पमाणपरूवणा परूविदा, पढम-
 पिदियपुढमिआडिविसेमाभावादो । पुणो जट्ठि पुव्वपरूविदसव्वरासी पढमाए पुढवीए
 भवदि तो विदियादिपुढगीसु जीनाभायो पसज्जे । ण च एव, 'पिदियादि जाव सत्तमाए
 पुढगीए णेरइएसु मिच्छाहट्टी दव्वपमाणेण केवडिया' इच्चादिसुत्तेहि सह विरोहादो, तम्हा
 सामण्णणेरइयमिच्छाहट्टिनिक्खंभसूई पढमपुढमिच्छाहट्टीणं विक्खंभसूई ण हवदि । तदो
 सामण्णपरूविदअनहारकालो वि पढमपुढविणेरइयाण ण भवदि । एवं सेसगुणपडिवण्णाण
 पि अवहारकालवट्टी वत्तव्वा । तम्हा एव पढमाए पुढवीए णेयव्वमिदि णेदं घड्ढे ?
 ण एस दोसो, असंखेज्जेसेट्ठित्तणेण पदरस्स असंखेज्जदिभागत्तणेण पिदियवग्गमूलगुणिद-
 अगुलग्गमूलमेत्तविक्खंभसूचित्तणेण पलिदोयमस्म असंखेज्जदिभागत्तणेण च पढमपुढवि-

सामान्य नारकियोंके द्रव्यप्रमाणके समान पहली पृथिवीमें नारक जीव-
 राशि है ॥ १९ ॥

शंका—पहले सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि आदि जीवराशिके प्रमाणका प्ररूपण किया,
 क्योंकि, सामान्य प्ररूपणमें पहली पृथिवी, दूसरी पृथिवी आदिके विशेषप्ररूपणका अभाव है ।
 फिर यदि पहले प्ररूपण की हुई सपूर्ण जीवराशि पहली पृथिवीमें ही होती है तो द्वितीयादि
 पृथिवियोंमें जीवोंका अभाव प्राप्त होता है । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, ऐसा मान लेने पर
 'दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवर्षी पृथिवीतक मिथ्यादृष्टि नारकी द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने
 हैं' इत्यादि सूत्रोंके साथ पूर्वोक्त कथनका विरोध प्राप्त होता है । इसलिये सामान्य नारक
 मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कभसूची प्रथम पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कभसूची नहीं हो
 सकती है । ओर इसीलिये सामान्यसे कहा गया अवहारकाल भी प्रथम पृथिवीके नारकियोंका
 अवहारकाल नहीं हो सकता है । इसीप्रकार प्रथम पृथिवीके शेष गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंके
 भी अवहारकालकी वृद्धिका कथन करना चाहिये । इसलिये इसीप्रकार पहली पृथिवीमें ले
 जाना चाहिये यह सूत्रार्थ घटित नहीं होता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, असख्यात जगत्रेणियोंकी अपेक्षा,
 जगप्रतरके असख्यातवै भागकी अपेक्षा सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे गुणित प्रथम वर्गमूल
 प्रमाण विष्कभसूचीकी अपेक्षा ओर पत्त्योपमके असख्यातवै भागकी अपेक्षा प्रथम पृथिवीसबन्धी

१ नरकगता प्रथमायां पृथिव्यां नारका मिथ्यादृष्टयोऽन्तरयेया श्रेणय प्रतरासम्भेयमागप्रमिता । अ सि
 १, ८ हेडिमणपुव्वण राशिविहाणो इ सव्वरात्ता इ । पत्तमावणिभिद्द रासी णेरइयाण तु णिदिट्ठो । गो जी १५४
 सेगीएवकेवकपत्तमाइयसूईणमगुलपमिय । पम्माए XX । पञ्चम २, १७ अद्वयगुलप्यएसा समूलगुणिया उ नेरइय
 सूई । पञ्चम २, १९ मवणवासाणाओ देवीओ सभेव्वज्जगुणाओ । इमामे रयणपत्तमाए पुव्वीए नेरइया असखेज्जगुणा ।
 पञ्चम २, १६ स्वी टी (मशदण्डक)

होदि' तदो सरोज्जगुणहीण उपक्रमणकालत्वादो । मम्मामिच्छत्त पडिउज्जमाणरासिस्स सरोज्जदिभागमेत्ता उवसमसम्माइड्डिणो सासणगुण पडिउज्जंति च्चि वा । तमावलियाए असरोज्जदिभागेण गुणिदे तिरिक्खअसज्जदसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असरोज्जदिभागेण गुणिदे तिरिक्खसम्मामिच्छाड्डिअवहारकालो होदि । त सरोज्जरूपेहि गुणिदे तिरिक्खसासणसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असरोज्जदिभागेण गुणिदे तिरिक्खसज्जदासज्जअवहारकालो होदि, अपच्चक्खानावरणामुदयाभाउस्स अइदुल्लहत्तादो । तमावलियाए असरोज्जदिभागेण गुणिदे णेरइयअसज्जदसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असरोज्जदिभागेण गुणिदे णेरइयसम्मामिच्छाड्डिअवहारकालो होदि । त सरोज्जरूपेहि गुणिदे णेरइयसासणसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि पलिदोपमे भागे हिदे अप्पणो दव्वभागउदि ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबंधी अवहारकालको सख्यातसे गुणित करने पर देव सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिसंबंधी अवहारकाल प्राप्त होता है, क्योंकि, सम्यग्मिथ्यादृष्टिके उपक्रमणकालसे सासादनसम्यग्दृष्टिका उपक्रमणकाल सख्यातगुणा हीन है । अथवा, सम्यग्मिथ्यादृष्टिगुणस्थानको प्राप्त होनेवाली जीवराशिके सख्यातसे भागमात्र उपशमसम्यग्दृष्टि जीव सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानको प्राप्त होते हैं, इसलिये भी देव सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अवहारकालसे देव सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल सख्यातगुणा है । देव सासादनसम्यग्दृष्टिसंबंधी अवहारकालको आपलीके असख्यातसे भागसे गुणित करने पर तिर्यंच असयत सम्यग्दृष्टिसंबंधी अवहारकाल होता है । तिर्यंच असयतसम्यग्दृष्टिसंबंधी अवहारकालको आपलीके असख्यातसे भागसे गुणित करने पर तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबंधी अवहारकाल होता है । तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबंधी अवहारकालको सख्यातसे गुणित करने पर तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टिसंबंधी अवहारकाल होता है । तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टिसंबंधी अवहारकालको आपलीके असख्यातसे भागसे गुणित करने पर तिर्यंच सयतासयतसम्यग्दृष्टिसंबंधी अवहारकाल होता है, क्योंकि, अप्रत्याख्यानावरण कपायका उद्याभाव अस्यत दुर्लभ है । तिर्यंच सयतासयतसंबंधी अवहारकालको आपलीके असख्यातसे भागसे गुणित करने पर नारक असयतसम्यग्दृष्टिसंबंधी अवहारकाल होता है । नारक असयतसम्यग्दृष्टिसंबंधी अवहारकालको आपलीके असख्यातसे भागसे गुणित करने पर नारक सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबंधी अवहारकाल होता है । नारक सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबंधी अवहारकालको सख्यातसे गुणित करने पर नारक सासादनसम्यग्दृष्टिसंबंधी अवहारकाल होता है । इन उपर्युक्त अवहारकालों पन्वोपमेके भाजित करने पर अपना अपना द्रव्यका प्रमाण आता है ।

सामण्णेरइयमिच्छाड्डिणिवसंभसूचिम्हि अवणिदे पढमपुढविणेइयमिच्छाड्डिणिसिस्स विमलभसूई होदि' । एदीए विमलभसूईए जगमेडिम्हि भागे हिदे पढमपुढविणेइयमिच्छाड्डिअवहारकालो होदि ।

उदाहरण—चारहवा वर्गमूल ४, किंचित् ऊन चारहवा वर्गमूल $\frac{१२८}{६३}$,

$$६५५३६ - \frac{१२८}{६३} = ३००५६, ३००५६ \times १ = ३००५६$$

$$३००५६ - ६५५३६ = \frac{६३}{१०८} = १ - \frac{१२८}{६३}$$

इस किंचित् ऊन चारहवें वर्गमूलभाजित एकरूपको सामान्य नारक मिथ्यादृष्टिसबन्धी विष्कभसूचीमेंसे घटा देने पर प्रथम पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि राशिकी विष्कभसूची होती है । इस विष्कभसूचीसे जगश्रेणीके भाजित करने पर प्रथम पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकात्र होता है ।

उदाहरण— $\frac{६३}{१०८} = \frac{१९३}{१०८} \quad \frac{६५५३६}{१} - \frac{१९३}{१०८} = \frac{८३८८६०८}{१०३}$, प्र पृ मि अय ।

त्रिशोपार्थ—जगश्रेणीके चारहवें, दशवें, आठवें, छठे, तीसरे और दूसरे वर्गमूलका जगश्रेणीमें भाग देने पर क्रमसे द्वितीयादि पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि नारकियोंका द्रव्य आता है । और इन छहों नरकोंके मिथ्यादृष्टि जीवोंका जितना प्रमाण हो उसे सामान्य मिथ्यादृष्टि राशिमेंसे घटा देने पर प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण होता है । पहले सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंका प्रमाण उतलते समय उनकी विष्कभसूची घनागुलके द्वितीय वर्गमूलप्रमाण घतलाई है, अर्थात् घनागुलके द्वितीय वर्गमूलका जितना प्रमाण हो उतनी जगश्रेणियोंको एकत्रित करने पर उनके प्रदेशप्रमाण सामान्य मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है । अब यदि प्रथम नरकके नारकियोंके प्रमाण लानेके लिये विष्कभसूची लाना हो तो द्वितीयादि नरकके मिथ्यादृष्टि नारकियोंके प्रमाणमें जगश्रेणीका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे सामान्य विष्कभसूचीमेंसे घटा देने पर प्रथम नरककी विष्कभसूची आ जाती है । उदाहरणार्थ—दूसरे नरकका १६३८४, तीसरेका ८१९२, चाथेका ४०९६, पाचवेंका २०४८, छठेका १०२४ और सातवेंका ५१२ द्रव्य मान लेने पर इनमें जगश्रेणी ६५५३६ का भाग देने पर क्रमसे $\frac{१}{१०८}$, $\frac{१}{५४}$, $\frac{१}{२७}$, $\frac{१}{१८}$, $\frac{१}{१२}$ और $\frac{१}{९}$ आता है, जिनका जोड़ $\frac{१३३}{१०८}$ होता है । इसे सामान्य विष्कभसूची २ मेंसे घटा देने पर $\frac{१३३}{१०८}$ प्रमाण प्रथम पृथिवीकी विष्कभसूची होती है । इसी व्यवस्थाको ध्यानमें रखकर ऊपर यह कहा गया है कि किंचित् ऊन चारहवें वर्गमूल भाजित एकरूपको सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि विष्कभसूचीमेंसे घटा देने पर प्रथम नरकके मिथ्यादृष्टि नारकियोंका प्रमाण

१ उदाहरण पुत्रिणिवसंभसूची (सामण्णेरइयमिच्छाड्डिणिसिस्स विमलभसूची) एगल्लसस अनधे-जदिमोगेण्णा पढम पुढविणेइयमिच्छाड्डिअवहारकालो होदि । घणत्ता, पन् ५१८ अ

परूवणाए सामण्णणेइयपरूवणादो विसेसाभावादो । पुणो पज्जवद्वियणए अउलंबिज्जमाणे विसेसो अन्थि चैव, अण्णहा विदियादिपुढरीसु जीवामाउप्पसगादो । त विसेस उच इस्सामो । त जहा— पढमपुढणियेइयाण दव्व कालपमाणेसु भण्णमाणेसु ओघदव्व काल पमाणानि चैव असखेज्जदिभागहीणाणि हउति । तहा खेचपमाण पि ओघखेचपमाणदो असखेज्जदिभागूण भवदि । त रुध जाणिज्जन्दे ? 'विदियादि जाउ सत्तमाए पुढवीए णेइया खेचेण भेदीए असखेज्जदिभागो' इदि पुरदो चुच्चमाणसुचादो णउन्दे जहा ओघणेइयमिच्छाइद्विदव्वदो पढमपुढणियेइयमिच्छाइद्विदव्व सेदीए असखेज्जदिभागेण हीणमिदि । एद सुत्तमउलणिय पढमपुढणियेइयमिच्छाइद्वीण विक्खमभुई उप्पाइस्सामो । त जहा— ओघणेइयमिच्छाइद्विरासीदो एगसेडिअणयण पडि जदि विक्खमभुचिम्हि एगसलागाए अणयण लउभदि तो त्रिचूणवारसउग्गमूलभनिदसेडिम्हि किं लभामो ति सेदीए फलगुणिदिच्छामोरद्विदे त्रिचूणवारसउग्गमूलभजिदंगरूपमागउदि । एद

प्ररूपणामें सामान्य नारकियोंकी प्ररूपणास कोई विशेषता नहीं है । परंतु पर्यायाधिक नयका अवलम्बन करने पर सामान्य प्ररूपणासे प्रथम पृथिवीसधधी प्ररूपणामें विशेषता है ही । यदि ऐसा न माना जाय तो द्वितीयादि पृथिवियोंमें जीवोंके अभावका प्रमग आ जायगा । आगे उसी विशेषतासे बनलाते हैं । यह इसप्रकार है—

पहला पृथिवीके नारकियोंके द्रव्य और कालकी अपेक्षा प्रमाणका कथन करने पर सामान्यसे कहे गये द्रव्यप्रमाण और कालप्रमाणकी असरयातयें भाग न्यून कर देने पर पहली पृथिवीके नारकियोंका द्रव्य और कालकी अपेक्षा प्रमाण होता है । उसीप्रकार पहली पृथिवीके नारकियोंका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण भी सामान्यसे कहे गये क्षेत्रप्रमाणसे अल्पयातवा भाग न्यून है ।

श्रीका— यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— 'दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवा पृथिवीतक नारकी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने है ? जगधेणीके असख्यातयें भाग है' इसप्रकार आगे कहे जानेवाले सूत्रसे जाना जाता है कि नारक सामान्य मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यप्रमाणसे पहली पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि जीवोंका द्रव्यप्रमाण जगधेणीका असरयातवा भाग हीन है ।

अब आगे इस द्वितीयादि पृथिवीके प्रमाणके प्ररूपण करनेवाले सूत्रका अवलम्बन लेकर पहली पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कमसूची उरवन्न करते हैं । यह इसप्रकार है— जब कि सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिमेंसे एक जगधेणी कम करने पर विष्कम सूचीमें एक शलाका कम जाती है, तो कुछ कम अपने धारद्वय वगमूलसे भाजित जगधेणीमें कितना प्रमाण प्राप्त होगा, इसप्रकार त्रैराशिक करके इच्छाराशि अपने कुछ कम धारद्वयें धर्म मूलसे भाजित जगधेणीको फलराशि एकसे गुणित करके जगधेणीसे अपवर्तित करने पर, एकमें जगधेणीके कुछ कम धारद्वयें धर्ममूलका भाग देनेसे जो लब्ध आवे इतना आता है ।

पुणो उवरिमनिरलणमेत्तल्लप्पुढविमिञ्छाड्डिद्वय पढमपुढविमिञ्छाड्डिद्वयपमाणेण कस्तामो । त जहा— रूवणहेट्टिमनिरलणमेत्तल्लप्पुढविद्वेषु उवरिमनिरलणमिह समुदिदेसु पढमपुढविमिञ्छाड्डिपमाणं होदि । तत्थ एवा अणहारकालमलागा लब्भइ । पुणो मि उवरिमनिरलणमिह तत्तिएसु चेव ल्लप्पुढविद्वेषु समुदिदेसु अण्ण पढमपुढविमिञ्छाड्डिपमाणं होदि, विदिया च अणहारकालपक्खेवमलागा लब्भइ । एव पुणो पुणो कीरमाणे रूवणहेट्टिमनिरलणादो उवरिमनिरलणा असंसेज्जगुणा चि कड्डु सेठीण असंसेज्जदिभागमेत्ताओ अणहारकालपक्खेवमलागाओ लब्भति । तासिमेगणारेणायणविही बुच्चदे । तं जहा— रूवणहेट्टिमनिरलणमेत्तल्लप्पुढविद्वयस्स जदि एवा अणहारकालपक्खेवमलागा लब्भदि, तो सामण्णणेरइयमिञ्छाड्डिअणहारकालमेत्तल्लप्पुढविमिञ्छाड्डिद्वयस्स केत्तियाओ लभामो चि मरिसमणिय रूवणहेट्टिमनिरलणाण सामण्णअणहारकालमिह भागे हिदे अणहारकालपक्खेवमलागाओ आगच्छति । ताओ मरिमच्छेदकालण सामण्णणेरइयमिञ्छाड्डिअणहारकालमिह 'पक्खेत्ते पढमपुढविमिञ्छाड्डिअणहार-

अथ उपरिम विरलनमात्र छद्म पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यको प्रथम पृथिवीगत मिथ्या दृष्टि द्रव्यप्रमाणरूप करते हैं । उसका स्पर्शीकरण इसप्रकार है— उपरिम विरलनमें एक कम अधस्तन विरलनमात्र छद्म पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यके समुदित करने पर प्रथम पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और वहा एक अवहारकाल प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है । पुन उपरिम विरलनमें उतने ही अर्थात् एक कम अधस्तन विरलनमात्र छद्म पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यके समुदित करने पर दूसरीवार प्रथम पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और दूसरी अवहारकाल प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है । इसीप्रकार पुन पुन करने पर एक कम अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन असंख्यातगुणा है, इसलिये जगत्प्रेणीके असंख्यातवै भागमात्र अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाए प्राप्त होती हैं । अगे उन अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाओंकी एकत्र लानेकी विधिको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—

एक कम अधस्तन विरलनमात्र अर्थात् एक कम अधस्तन विरलनगुणित छद्म पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रति यदि एक अवहारकाल प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है तो सामान्य नारक मिथ्यादृष्टिसम्बन्धी अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य नारक अवहारकालगुणित छद्म पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रति कितनी अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाए प्राप्त होंगी इसप्रकार त्रैराशिकमें सदृशका अपनयन करके एक कम अधस्तन विरलनसे सामान्य अवहारकालको भाजित करने पर अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाए आ जाती हैं । इनको समान छेद करके सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालमें मिला देने पर प्रथम पृथिवीसम्बन्धी नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

अहना अउरेण पयारेण अवहारकालो उप्पाडज्जेद । त जहा- सामणअवहारकाल विरलेऊण रूप पडि जगपदर समसंड करिय दिण्णे एकेकस्त रूपस्त सामण्णेरइय मिच्छाडडिआसिपमाण पाणेदि । पुणो तत्थ एगरूपधरिदसामण्णेरइयमिच्छाडडिआसिभिह छपुढविमिच्छाडडिआसिणा भागे हिदे किंचूणउरसउग्गमूलगुणिदसामण्णेरइयमिच्छा- इट्टिविक्खमसूची आगच्छदि । एद पुत्राविरलणाए हेट्ठा विरलिय उररि एगरूपधरिद सामण्णेरइयमिच्छाडडिद्वय समसंड करिय दिण्णे रूप पडि छपुढविमिच्छाडडिआसि पमाण पाणेदि । त उवरिमविरलणाए इट्टिमामण्णेरइयमिच्छाडडिआसिभिह पुध पुध अवणिदे उररिमविरलणमेत्ता पढमपुढविमिच्छाडडिआसिओ भवति । छपुढविमिच्छाडडि रासीओ वि तावदिया चेव ।

छानेके लिये विष्कभसूची होती है । यहा किंचित् ऊन बारहवें वर्गमूलसे द्वितीयादि नरकोंके मिथ्यादष्टि राशिका सम्मिलित अवहारकाल अभिप्रेत है ।

अथवा, दूसरे प्रकारसे प्रथम पृथिवीके नारक मिथ्यादष्टियोंका अवहारकाल उत्पन्न करते हैं । यह इसप्रकार है— सामान्य अवहारकालका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति जगप्रतरको समान गण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति सामान्य नारक मिथ्यादष्टि जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । पुन उस विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त सामान्य नारक मिथ्यादष्टि जीवराशिमें द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादष्टि द्रव्यका भाग देने पर कुछ कम बारहवें वर्गमूलसे गुणित सामान्य नारक मिथ्यादष्टि जीवराशिका विष्कभसूची आती है । इसे पूर्ण विरलनके नीचे विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उपरिम विरलनके एकके प्रति प्राप्त सामान्य नारक मिथ्यादष्टि द्रव्यके समान गण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति द्वितीयादि छह पृथिवीसषष्ठी नारक मिथ्यादष्टि द्रव्यका प्रमाण आ जाता है । उसे उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त सामान्य नारक मिथ्यादष्टि द्रव्यमैले पृथक् पृथक् निकाल देने पर उपरिम विरलनका जितना प्रमाण है उतनी प्रथम पृथिवीगत नारक मिथ्यादष्टि जीवराशिया होती है । द्वितीयादि छह पृथिवीगत नारक मिथ्यादष्टि जीवराशिया भी उतनी ही होती है ।

उदाहरण—छह पृथिवीगत मिथ्यादष्टि राशि ३२२५६

$$\begin{array}{ccccccc}
 १३१०७२ & & १३१०७२ & & & & \\
 १ & & १ & & & & \\
 & & & & ३०७२८ & & \text{घार,} \\
 १३१०७२ - ३०७२८ = \frac{२१६}{५३} = ० \times \frac{१०८}{६३} \\
 ३२२५६ & ३२२५६ & ३२२५६ & ३२२५६ & ००८८ & & \text{इस ३२२५६ को उप} \\
 १ & १ & १ & १ & ४ & & \text{रिम विरलनके प्रत्येक} \\
 & & & & ६३ & & \text{एकके प्रति प्राप्त}
 \end{array}$$

१३१०७२ मेंसे घटा देने पर १०८१६ प्रमाण प्रथम पृथिवीगत मिथ्यादष्टि द्रव्य राशिया होती है । और दोष ३२२५६ प्रमाण द्वितीयादि छह पृथिवियोंकी मिथ्यादष्टि द्रव्य राशिया होती है ।

पमाण सेडिदसम-अड्ड छड्ड तदिय-विदियवग्गमूलेदि पुध पुध एगरूपं सडिदे तत्थ-
एगभाग होदि । निदिथादिपुढणीण एदे अणहारकाला होंति त्ति ऋध णव्वदे ?

वारस दस अट्टेन य मूला छत्तिय दुग चं गिरएसु ।

एकारस णय सत्त य णय य चउक्क च देवेसु ॥ ६६ ॥

णदग्हादो आरिसादो णव्वदे । तेसिमरुद्धणणा एसा १६ १० १ १ ३ ३ । सेडिचारस-

प्रमाण क्रमसे जगश्रेणीके दशवें, आठवें, उठवें, तीसरे और दूसरे वर्गमूलाने पृथक् पृथक् एक सख्याको खडित करने पर वहा जो एक भाग लब्ध आवे उतना होता है ।

उदाहरण—दशवा वर्गमूल ८, आठवा वर्गमूल १६, छडा वर्गमूल ३०, तीसरा वर्ग

मूल ६४, दूसरा वर्गमूल १०८, १ - ८ = $\frac{१}{८}$ तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा ।

१ - १६ = $\frac{१}{१६}$ चौथी पृथिवीकी अपेक्षा । १ - ३० = $\frac{१}{३०}$ पाचवी पृथिवीकी

अपेक्षा । १ - ६४ = $\frac{१}{६४}$ छठी पृथिवीकी अपेक्षा । १ - १०८ = $\frac{१}{१०८}$

सातवा पृथिवीकी अपेक्षा अपनीयमान संख्याका प्रमाण ।

शका—जगश्रेणीका बारहवा वर्गमूल, दशवा वर्गमूल आदि य सय द्वितीयादि पृथिवियोंके अवहारकाल होते हैं, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—नरकमें द्वितीयादि पृथिवीसबधी द्रव्य लानेके लिये जगश्रेणीका बारहवा, दशवा, आठवा, छडा, तीसरा और दूसरा वर्गमूल क्रमसे अवहारकाल होता है । तथा देवोंमें (सानत्कुमार आदि पाच कल्पयुगलोका प्रमाण लानेके लिये) जगश्रेणीका ग्यारहवा, नौवा, सातवा, पाचवा और चौथा वर्गमूल क्रमसे अवहारकाल होता है ॥ ६६ ॥

इस आर्ष वचनसे जाना जाता है कि उपर्युक्त वर्गमूल द्वितीयादि पृथिवियोंके द्रव्य लानेके लिये अवहारकाल होते हैं ।

उन अपनीयमान अर्कोंकी स्थापना क्रमसे १६, १०, १, १, ३, ३, ३ इसप्रकार है ।

विशेषार्थ—यहा पर जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूल आदिका ज्ञान करानेके लिये हरके

१ प्रतिपु ' दुपच ' इति पाठ ।

सणकुमार जाव सदरसहरमारक उवावियदवा सत्तमपुत्रामगो । कुदा ? सेणए जसखे जभागउणेण एदेसिं तयो मेदामाजादे । विसेसदे पुण मदे अत्थि, सणए एकारस-णव्वम मत्तम पचम चउत्थवग्गमूलाण जहाकमेण सेणमागहाराणमे युत्तलमादे । धवण पय ५०० अ । सोधमद्वये किंविदूता घनाशुलत्वीयमूलजगश्रेणि । सनत्कुमार द्रयादिपचयुग्गेषु किंविदूत क्रमयो निजेकादशम नवम सत्तम पचम चतुष्पम्लमकजगश्रेणि । कनता चाय हाराधिका ज्ञेया । गो जी, जी प्र, टी ६५१

कालो होदि । एदाओ अवहारकालपक्खेउसलागाओ सामण्णणेउइयमिच्छाडडिअवहार कालमेच्छपुढमिच्छाडडिअवमस्सिऊण उप्पण्णाओ ।

पुणो एदाओ चेउ अवहारकालपक्खेउसलागाओ विकसमसूचिम्हि अवणयणरूप पमाण च पुढमिं पुढमिं पडि एत्तिय एत्तिय होदि त्ति परूविज्जदे । तत्थ ताव विकसम सूचिम्हि अवणिज्जमाणरूपाण पमाण बुच्चदे । त जहा- एगमोडिअणयण पडि जदि सामण्णणेउइयमिच्छाडडिअवमस्सिऊण एगरूवस्स अणयण लज्जदि तो विदियपुढविदव्यस्स अवणयण पडि किं लभामो त्ति सरिसमणिय मोटिवारसवग्गमूलेण एगरूप सडिदे विदियपुढमिच्छिऊण विकसमसूचिम्हि अणयणपमाणमागच्छदि । त च एद १६ । एव सेसपुढवीण पि तेरासियकमेण विकसमसूचिम्हि अणिज्जमाणरूपमाणमाणेयव्व । तेसिं

हाता है । ये अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाय सामा य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालगुणित छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यका आश्रय लेकर उत्पन्न हुई है ।

उदाहरण—उपरिम विरग्न ३०७९८, अधस्तन विरग्न $\frac{२५६}{६३}$,

$$\frac{१६}{६३} - १ = \frac{१०३}{६३}, \quad ३२७९८ - \frac{१९३}{६३} = \frac{२०६४३८८}{१९३} \text{ अण प्रक्षेपशलाकाए ।}$$

$$३२७९८ + \frac{२०६४३८८}{१९३} = \frac{८३८८६०८}{१९३} \text{ पृ पृ अण ।}$$

अथ प्रत्येक पृथिवीके प्रति अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाका प्रमाण और विष्कभसूचीमें अपनयनरूप सत्त्याका प्रमाण इतना इतना होता है, इसका प्ररूपण करने ह । उनमें भी पहले विष्कभसूचीमें अपनीयमान सत्त्याका प्रमाण कहते हैं । वह इसप्रकार है— एक जगथेणाके अपनयनके प्रति यदि सामान्य नारक विष्कभसूचीमें एक सत्त्या कम होती है तो द्वितीय पृथिवीके द्रव्यके घटानेके प्रति कितनी सत्त्या प्राप्त होगी, इसप्रकार सदृशका अपनयन करके (अर्थात् दूसरी पृथिवीके द्रव्यको जगथेणीसे अपनयन करके अर्थात् भाजित करके) जग थेणीके धारदधे घर्गमूलसे एकको खडित करने पर दूसरी पृथिवीका आश्रय करके विष्कभसूचीमें अपनयनरूप सत्त्याका प्रमाण आ जाता है । वह यह १६ है ।

उदाहरण— $१ \times १६३८४ = १६३८४$, $१६३८४ - ६५५३६ = \frac{१}{४}$ अपनयनरूप ।

$$\text{अथवा, } १ + ४ = \frac{१}{४}, \quad \left(२ - \frac{१}{४} = \frac{७}{४} \right)$$

इसीप्रकार शेष पृथिवियोंका भी त्रैराशिक क्रमसे विष्कभसूचीमें अपनीयमान सत्त्याका प्रमाण दे आना चाहिये । प्रत्येक पृथिवीके प्रति उन अपनीयमान सत्त्याओंका

स्थानमें अकरूपसे १२, १० आदि नरवाओंका ग्रहण किया है। तथा अशके स्थानमें १ अक ग्रहण करके यह घतलाया है कि १ मं बारहवें आदि वर्गमूलोंका भाग देनेसे सामान्य विष्कम्भ सूत्रांमें अपनीयमान सख्या आ जाती है। पर इससे यहा बारहवें वर्गमूलका प्रमाण १२ और दशवें वर्गमूलका प्रमाण १० आदि नहा लेना चाहिये। ये १२, १० आदि अक तो केवल अनुरूप सख्याओंके द्वारा उक्त वर्गमूलोंका ज्ञान करनेके लिये सकेतमात्र है। इसीप्रकार इसी प्रकरणमें प्रकृत विषयके स्पष्ट करनेके लिये अकसहस्रिका अपेक्षा जगध्रेणीका प्रमाण ६५५३६ लिया है, उसके भी ये १२, १० आदि अक बारहवें और दशवें आदि वर्गमूल नहीं हैं, जो द्वितीयादि पृथिवियोंके अकसहस्रिका अपेक्षा दिये गये अत्रद्वारकालोंसे स्पष्ट समयमें आ जाता है। यद्यपि ६ ३६के पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे वर्गमूलको छोड़कर शेष सभी वर्गमूल करणीगत होते हैं, फिर भी गीरसेनभ्यामीने वर्गमूलोंके परस्परके तारतम्यको ग्रहण न करके द्वितीयादि नरकोंमें नारन जायोंकी उत्तरोत्तर हीन सख्याका परिज्ञान करनेके लिये बारहवें वर्गमूलके स्थानमें ८, दशवेंके स्थानमें ८, आठवके स्थानमें १६, छठवेंके स्थानमें ३२, तीसरेके स्थानमें ६४ और दूसरेके स्थानमें १०८ लिया है। इस प्रकरणमें उदाहरण देकर जीवराशि आदिनी जो सख्या निकाली है वह पूर्वोक्त आधार पर ही निकाली गई है। इसने बारहवें वर्गमूल आदिमें परस्पर जितना तारतम्य है वह उक्त सकेतरूप सख्याओंमें नहीं रहता है, और इसलिये यहा नहीं दृष्टात और दार्ष्टान्तमें अन्तर प्रनीत होता है। जैसे, आगे चलकर छठी बार सातवां पृथिवीका मिला हुआ जो भागद्वार निकाला है उस प्रकरणमें उपरिम विरलन भी जगध्रेणीका तृतीय वर्गमूलप्रमाण है और अधस्तन विरलन भी उतना ही है। पर वर्गमूलका उक्त सख्याओंके अनुसार यहा उपरिम विरलन ६४ प्रमाण और अधस्तन विरलन २ सख्याप्रमाण ही आता है, क्योंकि, अकोंके द्वारा मानी हुई सातवां पृथिवीकी जीवराशि ५२० रूप प्रमाणका छठी पृथिवीके द्रव्य १०२४ म भाग देने पर २ ही लब्ध आते हैं। वर्गमूलाम परस्पर जो तारतम्य है वह इन सत्रेतांमें नहीं रहनेसे ही यहा दृष्टात और दार्ष्टान्तमें इसप्रकारका घैयम्य दिखाई देता है। पर यदि हम वर्गमूलोंके तारतम्यको लेकर अकसहस्रिका जमावें तो मुख्यार्थसे दृष्टातमें कोई अन्तर नहीं पड सकता है। फिर भी दृष्टात पक्षदश होता है इसी वायके अनुसार ही यहा अकसहस्रिकसे दार्ष्टान्तको समझना चाहिये। इसने जहा यहा दृष्टातसे दार्ष्टान्तका साम्य नहीं मिलता होगा यहा दृष्टान्तमें ग्रहण किये गये अकोंमें अपेक्षित तारतम्यका अभाव ही कारण है, दार्ष्टान्तमें कोई दोष नहीं। यह बात निम्नकोष्ठसे अनिशीघ्र समझमें आ जायगी—

६ ३६ के वर्गमूल	बारहवा	दशवा आठवा	छठा	तीसरा	दूसरा	विष्कम्भसूत्री	
घनलाकार द्वारा माने गये सकेताक	१२८	६४	३२	१६	८	४	२
२५' ३६ = २११ के निदिचत वर्गमूल	२५५	१५	६५	३	२	२	बारहवें वर्गमूलसे नीचे जाकर

वर्गमूलभजिदएगरूप विस्त्रभसूचिम्हि अत्रणिय सेहिं गुणिदे त्रिदियपुढविद्वेण विणा सेसछपुढत्रिदव्यमाणच्छदि । पुणो ताए चेन ऊणविकसंभसूचीए जगसेहिम्हि भागे हिदे विदियपुढविदिरिचछपुढविमिच्छाइद्विदव्यस्स अवहारकालो होदि । पुणो तम्हि चेव उप्पुढत्रिदिकसभसूचिम्हि एगरूप सेहिदसमवर्गमूलेण सडिय तत्थ एगसंडमत्रणीए विदिय-तदियपुढत्रिदिरिचसेसपचपुढत्रिमिच्छाइद्विदव्यस्म विकसभसूची होदि । पुणो ताए चेन त्रिकसभसूचीए जगसेहिम्हि भागे हिदे पचपुढविमिच्छाइद्विदव्यस्म अवहारकालो होदि । पुणो तम्हि चेन पंचपुढत्रिकसभसूचिम्हि एगरूप सेहिद्वमत्रणमूलेण संडिय एगसंडमत्रणिदे त्रिदिय तदिय-चउत्थपुढत्रिदिरिचचारिपुढविमिच्छाइद्विदव्यस्स त्रिकसभसूची होदि । पुणो ताए विकसंभसूचीए जगसेहिम्हि भागे हिदे चउण्हं पुढवीणं मिच्छा-

जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलसे एक सख्याको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे विष्कभसूचीमेंसे घटाकर शेष प्रमाणसे जगश्रेणीके गुणित करने पर द्वितीय पृथिवीगत द्रव्यके विना शेष छह पृथिवीसयन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है । तथा उसी ऊन विष्कभसूचीसे जगश्रेणीको भाजित करने पर दूसरी पृथिवीके अवहारकालके विना शेष छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल आता है ।

उदाहरण— $1 - 8 = \frac{1}{8}$; $2 - \frac{1}{8} = \frac{15}{8}$, $64536 \times \frac{15}{8} = 118620$ दूसरी पृथिवीके द्रव्यके

विना शेष छह पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य । $64536 - \frac{15}{8} = \frac{262188}{8}$

दूसरी पृथिवीके अवहारकालके विना शेष छह पृथिवियोंका अवहारकाल ।

अनन्तर जगश्रेणीके दशवें वर्गमूलसे एक रूपको खण्डित करके जो एक खण्ड लब्ध आवे उसे पूर्वाक उसी छह पृथिवीसयन्धी विष्कभसूचीमेंसे घटा देने पर दूसरी और तीसरी पृथिवीके विना शेष पाच पृथिवीसयन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी विष्कभसूची होती है । पुनः उसी विष्कभसूचीसे जगश्रेणीके भाजित करने पर (दूसरी ओर तीसरीके विना) पाच पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल होता है ।

उदाहरण— $1 - 10 = \frac{1}{10}$; $\frac{15}{8} - \frac{1}{10} = \frac{13}{8}$ दूसरी ओर तीसरीके विना शेष पाच

पृथिवियोंकी विष्कभसूची । $64536 - \frac{13}{8} = \frac{47220}{8}$ दूसरी और तीसरीके

विना शेष पाच पृथिवियोंका अवहारकाल ।

अनन्तर जगश्रेणीके आठवें वर्गमूलसे एक रूपको खण्डित करके जो एक खण्ड लब्ध आवे उसे पूर्वाक उसी पाच पृथिवीसयन्धी विष्कभसूचीमेंसे घटा देने पर दूसरी, तीसरी और चौथी पृथिवीको छोड़कर शेष चार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी विष्कभसूची होती

द्विद्वयस्स अहारकालो होति । पुणो तस्मिं चैव चउपुडविमिञ्जाड्ढिद्विद्वयमसूचिम्हि
एगस्सुव सेट्ठिद्वयममूलेण सट्ठिण तत्थ एगसडमणिदे विदिय तदिय चउत्थ पचम
पुडविदिरित्तमेमतिपुडविमिञ्जाड्ढिद्वयस्स विस्समसूई होदि । पुणो ताए विस्समसूईए
जगमेदिम्हि भागे हिदे तिपुडविमिञ्जाड्ढिद्वयस्स अहारकालो होदि । पुणो सेट्ठि
तदियवग्गमूलेण एगस्सुव सडिय तत्थ एग सट्ठि तिण्ह पुडवीण विस्समसूचिम्हि अविण्णदे
पदम सत्तमपुडवीण मिञ्जाड्ढिद्वयस्स विस्समसूई आगच्छदि । पुणो ताए विस्समसूईए
जगमेदिम्हि भागे हिदे पदम सत्तमपुडवीण मिञ्जाड्ढिद्वयस्स अहारकालो आगच्छदि ।

हे । अनन्तर उस विष्कभस्वीका जगत्रेणीम भाग देने पर पूर्वाक्त चार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि
द्रव्यका अवहारकाल होता है ।

उदाहरण— $१ - १६ = \frac{१}{१६}$, $\frac{२३}{८} - \frac{१}{१६} = \frac{२४}{१६}$ दूसरी, तीसरी और चौथी पृथिवीके

विना शेष चार पृथिवियोंकी विष्कभस्वी । $६५ - ३६ - \frac{२०}{१६} = \frac{२०८ - ७६}{१६}$

पूर्वाक्त चार पृथिवियाका अवहारकाल ।

अनन्तर जगत्रेणीके छठे वर्गमूलसे एक रूपको खण्डित करके घटा जो एक खंड लब्ध
भागे उसे उहा पूर्वाक्त चार पृथिवीसबकी मिथ्यादृष्टि विष्कभस्वीमेंसे घटा देने पर
दूसरी, तीसरी चौथी और पाचवा पृथिवीके छोडकर शेष तीन पृथिवीसबकी मिथ्यादृष्टि
द्रव्यकी विष्कभस्वी होती है । अनन्तर उन विष्कभस्वीका जगत्रेणीमें भाग देने पर पूर्वाक्त
तीन पृथिवीसबकी मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल होता है ।

उदाहरण— $१ - ३२ = \frac{१}{३२}$, $\frac{२१}{१६} - \frac{१}{३२} = \frac{४१}{३२}$ पहली, छठी और सातवीं पृथिवी

सबकी मिथ्यादृष्टि विष्कभस्वी । $६५ - ३६ - \frac{४१}{३२} = \frac{२०९ - ७१५२}{३२}$ पूर्वाक्त

तीन पृथिवियाका अवहारकाल ।

अनन्तर जगत्रेणीके नृतीय वर्गमूलसे एक रूपको खण्डित करके घटा जो एक खंड लब्ध
भागे उसे पूर्वाक्त तीन पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कभस्वीमेंसे घटा देने पर पहली
और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी विष्कभस्वी जाती है । अनन्तर उस विष्कभस्वीका
जगत्रेणीमें भाग देने पर पहली और सातवा पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल
भाता है ।

उदाहरण— $१ - ६४ = \frac{१}{६४}$, $\frac{४३}{३२} - \frac{१}{६४} = \frac{९७}{६४}$ पहली और सातवीं पृथिवीकी मिथ्या

दृष्टि विष्कभस्वी । $६५ - ३६ - \frac{९७}{६४} = \frac{३९९ - ३०४}{६४}$ पहली और सातवीं

पुणो दोषुद्विचिन्तंभसूचिम्हि मेद्विचिदियप्रगमूलेण एगरूपं सडिय तत्थ एगरुंड-
मण्दि पटमपुटविमिच्छाडद्विद्वयस्स विकसमसूची होदि । पुणो ताए विकसमसूईए
जगमेद्विम्हि भागे हिदे वि पढमपुटविमिच्छाडद्विद्वयस्स अणहारकालो आगच्छदि ।

पुणो संपहि सामणअणहारकालमेत्तच्छपुटविद्वयमस्सिरुण पुटविं पडि अणहार-
कालपक्खेयसलागाओ आणिज्जति । तत्थ ताव विदियपुटविमिस्सिरुण उप्पणअणहार-
कालपक्खेयसलागाओ भणिसामो । त जहा- विदियपुटविमिच्छाडद्विद्वयेण पढमपुटवि-
मिच्छाडद्विद्वयमवहरिय लद्धमेत्तेसु विदियपुटविमिच्छाडद्विद्वयेसु सामणअणहारकालमेत्त-
विदियपुटविद्वयमि समुदिदेसु एग पढमपुटविमिच्छाडद्विद्वयपमाण लद्धमड, एगा
अणहारकालपक्खेयसलागा । पुणो वि णत्तियमेत्तेसु विदियपुटविमिच्छाडद्विद्वयेसु समु-
दिदेसु पढमपुटविमिच्छाडद्विद्वयपमाण लद्धमड, विटिया अणहारकालपक्खेयसलागा च ।
एव पुणो पुणो कीरमाणे मेढीए अमखेज्जभागमेत्ताओ अणहारकालपक्खेयसलागाओ

पृथिवीका अवहारकाल ।

अनन्तर जगथेणीके द्वितीय वर्गमलसे एकरूपको सङ्गित करके वहा जो एक खंड
लब्ध आये उसे पूर्वांक से पृथिवीसवन्धी मिथ्यादृष्टि विष्कभसूचीमसे घटा देने पर पहली
पृथिवीसवन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यको विष्कभसूची होती है । अनन्तर उम विष्कभसूचीका जग
थेणीमें भाग देने पर पहली पृथिवीसवन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल आता है ।

उदाहरण—? - १०८ = $\frac{१}{१०८}$ ९७ - $\frac{१}{१०८} = \frac{१९३}{१०८}$ पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि

विष्कभसूची । $६०५३६ - \frac{१९३}{१२८} = \frac{८३८८६०८}{१९३}$ पहली पृथिवीका मिथ्यादृष्टि

अवहारकाल ।

अब सामान्य अवहारकालका जितना प्रमाण है उतनीवार छह पृथिवियोंके द्रव्यका
आश्रय लेकर प्रत्येक पृथिवीके प्रति प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाए लाते हैं । उनमें पहले दूसरी
पृथिवीका आश्रय लेकर उत्पन्न हुई अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाओंका कथन करते हैं । वह
इसप्रकार है—दूसरी पृथिवीसवन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पहली पृथिवीसवन्धी मिथ्यादृष्टि
द्रव्यको अपहृत करके जो लब्ध आये तन्मात्र स्थानों पर स्थापित दूसरी पृथिवीसवन्धी
मिथ्यादृष्टि द्रव्यको सामान्य अवहारकालमात्र (सामान्य अवहारकालका जितना प्रमाण है
उतनी वार स्थापित) दूसरी पृथिवीसवन्धी द्रव्यमेंसे समुदित करने पर पहलीवार प्रथम
पृथिवीसवन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है, और अवहारकालमें एक प्रक्षेपशलाका
उत्पन्न होती है । फिर भी इतनेमात्र दूसरी पृथिवीसवन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यके समुदित कर देने
पर दूसरीवार प्रथम पृथिवीसवन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है, और अवहार
कालमें दूसरी प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है । इसीप्रकार पुन पुन करने पर जगथेणीके

लभति । त जहा— सेदिवारसवग्गमूलगुणितपढमपुढनिपिकलभसूचिमेचद्वान गतूण जदि एमा अवहारकालपक्वेसलागा लभदि तो सामण्णअवहारकालम्हि केत्तियाओ लभामो त्ति पढमपुढविपिकलभसूचिगुणितसेदिवारसवग्गमूलेण सामण्णअवहारकालम्हि भागे हिदे विदियपुढनिदच्चमस्सिऊणप्पण्णपक्वेसलागाओ सव्याओ आगच्छति । एदाओ पुग्ग सामण्णअवहारकालस्म पक्वे पिगलिय सामण्णअवहारकालमेत्तविदियपुढनिदच्चे समखड करिय दिण्णे रूग्ग पडि पढमपुढनिमिन्नाइट्टिदच्चपमाण होऊण पावदि । एवं चेत्त सामण्णअवहारकालमेत्तदियादिपचपुढविदच्चाणे अस्मिऊण तामिं तासिं पुढरीणं

असख्यातत्रै भागमात्र अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाए प्राप्त होती है । जैसे— जगश्रेणीके वारहवें वर्गमूलसे प्रथम पृथिवीसवर्धी मिथ्यादृष्टि विष्कभसूचीको गुणित करके जो लब्ध भाग्ये सम्भाप्र स्थान जाकर यदि एक अवहारकाल प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है तो सामान्य अवहारकालमें कितना प्रक्षेपशलाकाए प्राप्त होगी, इस प्रकार त्रैराशिक चरके प्रथम पृथिवीसवर्धी मिथ्यादृष्टि विष्कभसूचीसे गुणित जगश्रेणीके वारहवें वर्गमूलका सामान्य अवहारकालमें भाग देने पर दूसरी पृथिवीका आश्रय करके उत्पन्न हुई संपूर्ण प्रक्षेप शलाकाए आ जाती है ।

$$\text{उदाहरण—} ४ \times \frac{१९३}{१२८} = \frac{१९३}{३२}, \frac{३०७६८}{१} - \frac{१९३}{३२} = \frac{१०८८५७६}{१९३} \quad \text{दूसरी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाए ।}$$

इन अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाओंको पृथक् रूपसे सामान्य अवहारकालके पासमें विरलित करके और उस विरलित राशिमें प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् जितना सामान्य अवहारकालका प्रमाण हो उतनीवार स्थापित दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है ।

उदाहरण—ऊपर जो ५४३३-१३ प्रक्षेप अवहारकाल आया है उसका विरलन करके विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकालगुणित द्वितीय पृथिवीसवर्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यको देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीसवर्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्य प्राप्त होता है, जो सामान्य अवहारकालगुणित द्वितीय पृथिवीके द्रव्यमें उक्त प्रक्षेप अवहारकालका भाग देने पर भी आ जाता है । यथा—

$$३०७६८ \times १६३८४ = ५३६८७०९१२; \quad ५३६८७०९१२ - \frac{१०८८५७६}{१९३} = ९८८१६३ \text{ प्र पृ मि द्रव्य}$$

इसी प्रकार सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् जितना सामान्य अवहारकालका प्रमाण हो उतनीवार तीसरी आदि पांच पृथिवीयोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका आश्रय लेकर उन उन

पस्त्वणअवहारकालसलागाओ आणेयच्चाओ । णरि रिसेसो सेदिदसमग्गमूलगुणिद-
पढमपुढविमिस्समसुद्धए सामणअवहारकालमिह भागे हिदे तदियपुढविअवहारकाल-
पस्त्वणसलागाओ आगच्छति । एदाओ पुब्बिह्लदोण्हं निरलणाण पस्से निरलिय सामण-
अवहारकालमेत्ततदियपुढविद्वय समसुद्धं करिय दिण्णे रूं पडि पढमपुढविद्वयपमाणं
पावदि । पढमपुढविमिस्समसुच्चिगुणिदसेदिअड्डमग्गमूलेण सामणअवहारकालमिह भागे
हिदे चउत्थपुढविअवहारकालपस्त्वणसलागाओ आगच्छति । ताओ वि पुब्बिह्लतिण्हं
निरलणाण पस्से निरलिय सामणअवहारकालमेत्तचउत्थपुढविमिस्सअड्डिद्वय समसुद्ध

पृथिवीकी अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाए ले आना चाहिये । केवल इतनी विशेषता है कि
जगश्रेणीके दशवें वर्गमूलसे प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कभस्वीकी गुणित करके जो
लब्ध आवे उसका सामान्य अवहारकालमें भाग देने पर तीसरी पृथिवीका आश्रय करके
अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाए आ जाती है ।

$$\text{उदाहरण—} ८ \times \frac{१९३}{१२८} = \frac{१९३}{१६}, ३२७६८ - \frac{१९३}{१६} = \frac{५२४२८८}{१९३} \text{ तीसरी पृथिवीके}$$

आश्रयसे उत्पन्न हुई प्र अ श ।

इन प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाओंको पूर्वोक्त दोनों विरलनोंके पासमें विरलित करके
और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अव-
हारकाल गुणित तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको समान रत करके देयरूपसे दे देने पर
विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीसन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण
प्राप्त होता है ।

$$\text{उदाहरण—} ३०७६८ \times ८१९२ = २६८४३५४५६,$$

$$२६८४३५४५६ - \frac{५२४२८८}{१९३} = २६८१६ \text{ प्र पृ मि द्रव्य}$$

प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कभस्वीसे जगश्रेणीके अष्टम वर्गमूलको गुणित करके
जो लब्ध आवे उसका सामान्य अवहारकालमें भाग देने पर चौथी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न
हुई अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाए आ जाती है ।

$$\text{उदाहरण—} १६ \times \frac{१९३}{१२८} = \frac{१९३}{८}, ३२७६८ - \frac{१९३}{८} = \frac{२६२१४४}{१९३} \text{ चौथी पृथिवीके}$$

आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाए ।

चौथी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई उन प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाओंको पूर्वोक्त
तीन विरलनोंके पासमें विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य
अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकालगुणित चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको
समान रत करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीके

कालो सत्तमपुढविपक्खेवअवहारकालपमाणेण सेडितदियवग्गमूलमादिं काऊण जाव छट्टमवग्गमूलो ति चउण्ह वग्गाण अण्णोण्णभासेणुप्पणरासिमेत्तो हइदि । चउरथ पुढविपक्खेवअवहारकालो सत्तमपुढविपक्खेवअवहारपमाणेण सेडितदियवग्गमूलमादिं काऊण जाव अट्टमवग्गमूलो ति ताव छण्ण वग्गाण अण्णोण्णभासेणुप्पणरासिमेत्तो हइदि । तदियपुढविपक्खेवअवहारकालो सत्तमपुढविपक्खेवअवहारपमाणेण सेडितदिय वग्गमूलमादिं काऊण जाव दसमवग्गमूलो ति ताव अट्टण्ह वग्गाण अण्णोण्णभासेणुप्पणरासिमेत्तो हइदि । त्रिदियपुढविपक्खेवअवहारकालो सत्तमपुढविपक्खेवअवहार पमाणेण सेडितदियवग्गमूलपहुडि दसण्ह वग्गाणमण्णोण्णभासेणुप्पणरासिमेत्तो हइदि । सामण्णअवहारकालो सत्तमपुढविपक्खेवअवहारकालपमाणेण पढमपुढविपक्खेवअवहार गुणिदसेडितदियवग्गमूलमेत्तो हइदि । पुणो एदाओ सव्वसलागाओ एगट्ट करिय सत्तमपुढविपक्खेवअवहारकाल गुणिदे पढमपुढविमिच्छाइडिअवहारकालो होदि ।

अवहारकाल जगध्रेणीके तृतीय वर्गमूलमात्र होता है ($^{\circ} 44^{\circ} 36' = 2$) पाचवीं पृथिवीका प्रक्षेप अवहारकाल स्वातर्था पृथिवीके प्रक्षेपरूप अवहारकालकी अपेक्षा जगध्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर छठे वर्गमूलपर्यंत चार वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो तन्मात्र है ($13^{\circ} 44' = 8$) चौथी पृथिवीका प्रक्षेप अवहारकाल सातवीं पृथिवीके प्रक्षेपरूप अवहार कालकी अपेक्षा जगध्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर आठवें वर्गमूलपर्यंत छह वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो तन्मात्र है ($^{\circ} 11^{\circ} 36' = 6$) तीसरी पृथिवीका प्रक्षेप अवहारकाल सातवीं पृथिवीके प्रक्षेपरूप अवहारकालकी अपेक्षा जगध्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर दशवें वर्गमूलपर्यंत आठ वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो तन्मात्र है ($^{\circ} 11^{\circ} 36' = 16$) दूसरी पृथिवीका प्रक्षेप अवहारकाल सातवीं पृथिवीके प्रक्षेपरूप अवहारकालकी अपेक्षा जगध्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर दश वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो तन्मात्र है ($^{\circ} 11^{\circ} 36' = 32$) सामान्य अवहारकाल सातवीं पृथिवीके प्रक्षेपरूप अवहारकालके प्रमाणकी अपेक्षा प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कभस्त्र्चीसे जगध्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उतना है ($126 \times 126 = 15876$) ।

अन्तर इन सर्व शालाकाओंको एकत्रित करके उससे सातवीं पृथिवीके प्रक्षेप अवहार कालके गुणित करने पर पहली पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल जाता है ।

उदाहरण— $1 + 2 + 8 + 6 + 16 + 32 + 15876 = 20000$

$$\frac{20000}{100} \times 26 = \frac{520000}{100} = 5200$$

अहया ताहि चेप सलागाहि समुदिदाहि पढमपुढनिसामण्णपिस्सभसूचीहि
अण्णोण्णवमत्थाहि गुणिदमेदिपिदियवग्गमूलमोत्रद्विय सेटिम्हि भागे हिदे पढमपुढवि-
मिच्छाड्डिअणहारकालो आगच्छदि । अहया उण्ह पुढाण सत्तमपुढविपक्खेअणहार-
कालपमाणेण कयमव्वसलागाहि सेटिपिदियवग्गमूलमोत्रद्विय अण्णोण्णवमत्थपढमपुढवि-
सामण्णणेरइयत्रिकस्सभसूडिहि गुणिय जगमेदिम्हि भागे हिदे सव्वत्तुप्पण्णपक्खेअणवहार-
कालो आगच्छदि । तेण सव्वत्तुप्पण्णअणहारकालेण सामण्णणेरइयअवहारकालम्हि भागे
हिदे ज भागलद्ध तेण सामण्णणेरइयत्रिकस्सभसूड गुणिदे पुणो तं रासिं तेणेव गुणगारेण,
रूवाहिणोर्वद्विय जगसेटिम्हि भागे हिदे पढमपुढनिसाणहारकालो आगच्छदि ।

अथवा, प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कभसूची और सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि
विष्कभसूची इन दोनोंके परस्पर गुणा करनेसे जो लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके द्वितीय वर्ग-
मूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसे एकत्रित की हुई पूर्वोक्त शलाकाओंसे अपवर्तित
करके जो लब्ध आवे उसका जगश्रेणीमें भाग देने पर पहली पृथिवीका मिथ्यादृष्टि जीव
राशिसन्धी अवहारकाल आता है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१९३}{१२८} \times २ = \frac{१९३}{६४}, \quad १०८ \times \frac{१९३}{६४} = ३८६, ३८६ - २५६ = \frac{१९३}{१०८}$$

$$६५५३६ - \frac{१९३}{१२८} = \frac{८३८८६०८}{१९३} \text{ प्र पृ मि अ}$$

अथवा, सातवां पृथिवीके प्रक्षेप अवहारकालके प्रमाणकी अपेक्षा छह पृथिवियोंके
आश्रयसे उत्पन्न हुए प्रक्षेप अवहारकालकी जो सर्व शलाकाए की गईं उनसे जगश्रेणीके
द्वितीय वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसको प्रथम पृथिवी और सामान्य
नारकियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कभसूचियोंके परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुई राशिसे गुणित
करके जो लब्ध आवे उसका जगश्रेणीमें भाग देने पर सर्वत्र उत्पन्न हुए प्रक्षेप अवहारकालका
प्रमाण आता है । सर्वत्र उत्पन्न हुए उस प्रक्षेप अवहारसे सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंके
अवहारकालके भाजित करने पर जो भाग लब्ध आवे उससे सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी
विष्कभसूचीके गुणित करने पर अनन्तर उस गुणित राशिको एक अधिक उसी पूर्वोक्त गुण-
कारसे अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसका जगश्रेणीमें भाग देने पर प्रथम पृथिवीका
मिथ्यादृष्टिसन्धी अवहारकाल आता है ।

$$\text{उदाहरण—} १२८ - ६३ = \frac{१२८}{६३}, \quad २ \times \frac{१९३}{१०८} = \frac{३८६}{१०८}, \quad \frac{१२८}{६३} \times \frac{३८६}{१०८} = \frac{३८६}{६३}$$

$$\frac{६५५३६}{१} - \frac{३८६}{६३} = \frac{२०६४३८४}{१९३} \text{ प्रक्षेप अवहारकाल ।}$$

$$३२७६८ - \frac{२०६४३८४}{१९३} = \frac{१९३}{६३}, \quad २ \times \frac{१९३}{६३} = \frac{३८६}{६३}, \quad १ + \frac{१९३}{६३} = \frac{२५६}{६३}$$

कालो सत्तमपुढविपक्खेअवहारकालपमाणेण सेदितदियवग्गमूलमादिं काऊण जाण
 छट्ठमवग्गमूलो ति चउण्ह वग्गाण अण्णोण्णव्भामेषुप्पण्णरासिमैत्तो हवदि । चउत्थ
 पुढविपक्खेअवहारकालो सत्तमपुढविपक्खेअवहारपमाणेण मेदितदियवग्गमूलमादिं
 काऊण जाण अट्ठमवग्गमूलो ति ताव छण्ण वग्गाण अण्णोण्णव्भामेषुप्पण्णरासिमैत्तो
 हवदि । तदियपुढविपक्खेअवहारकालो सत्तमपुढविपक्खेअवहारपमाणेण सेदितदिय
 वग्गमूलमादिं काऊण जाण दसमवग्गमूलो ति ताव अट्ठण्ह वग्गाण अण्णोण्णव्भामेषु
 प्पण्णरासिमैत्तो हवदि । त्रिदियपुढविपक्खेअवहारकालो सत्तमपुढविपक्खेअवहार
 पमाणेण सेदितदियवग्गमूलपहुडिं दसण्ह वग्गाणमण्णोण्णव्भामेषुप्पण्णरासिमैत्तो हवदि ।
 सामण्णअवहारकालो सत्तमपुढविपक्खेअवहारकालपमाणेण पढमपुढविपक्खेअवहार
 गुणिदसेदितदियवग्गमूलमैत्तो हवदि । पुणो एदाओ सच्चसलागाओ एगट्ठ करिय
 सत्तमपुढविपक्खेअवहारकाल गुणिदे पढमपुढविमिच्छाहिट्ठिअवहारकालो होदि ।

अवहारकाल जगध्रेणीके तृतीय वर्गमूलमात्र होता है ($1^3 + 2^3 + 3^3 = 36 = 6^2$) पाचवीं पृथिवीका प्रक्षेप
 अवहारकाल सातवा पृथिवीके प्रक्षेपरूप अवहारकालकी अपेक्षा जगध्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे
 लेकर छठे वर्गमूलपर्यन्त चार वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो तन्मात्र है
 ($1^3 + 2^3 + 3^3 + 4^3 = 100 = 10^2$) चौथी पृथिवीका प्रक्षेप अवहारकाल सातवीं पृथिवीके प्रक्षेपरूप अवहार
 कालकी अपेक्षा जगध्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर आठवें वर्गमूलपर्यन्त छह वर्गोंके परस्पर
 गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो तन्मात्र है ($1^3 + 2^3 + 3^3 + 4^3 + 5^3 + 6^3 = 441 = 21^2$) तीसरी पृथिवीका प्रक्षेप
 अवहारकाल सातवीं पृथिवीके प्रक्षेपरूप अवहारकालकी अपेक्षा जगध्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे
 लेकर दशवें वर्गमूलपर्यन्त आठ वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो तन्मात्र है
 ($1^3 + 2^3 + 3^3 + 4^3 + 5^3 + 6^3 + 7^3 + 8^3 = 2025 = 45^2$) । दूसरी पृथिवीका प्रक्षेप अवहारकाल सातवीं पृथिवीके प्रक्षेपरूप
 अवहारकालकी अपेक्षा जगध्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर दश वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे
 जो राशि उत्पन्न हो तन्मात्र है ($1^3 + 2^3 + 3^3 + 4^3 + 5^3 + 6^3 + 7^3 + 8^3 + 9^3 = 2025 = 45^2$) । सामान्य अवहारकाल सातवीं पृथिवीके
 प्रक्षेपरूप अवहारकालके प्रमाणकी अपेक्षा प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विप्लवसूचीसे
 जगध्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उतना है ($12 \times 12 = 144$) ।

अनन्तर इन सर्वे शलाकाओंको एकत्रित करके उससे सातवीं पृथिवीके प्रक्षेप अवहार
 कालके गुणित करने पर पहली पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल जाता है ।

उदाहरण— $1 + 2 + 3 + 4 + 5 + 6 + 7 + 8 + 9 = 45$,

$$\frac{45 \times 12}{12} \times 2 = \frac{1080}{12} = 90 \text{ प्र पृ मि अर}$$

अह्ना पदमपुढविमिच्छाइडिअहारकालो अण्णेण पयारेण आणिज्जेदे । त जहा-
छट्टमपुढविअहारकालं विरलेऊण एकेकस्स रूपस्स जगमेठिं समखड करिय दिण्णे रूपं,
पडि छट्टमपुढविमिच्छाइडिद्वय पापदि । पुणो तत्थ एगरूपधरिदछट्टपुढविद्वय सत्तम-
पुढविद्वयेण भागे हिदे सेडितदियग्गमूलमागच्छदि । त विरलेऊण छट्टपुढविद्वय
समखड करिय दिण्णे रूपं पडि सत्तमपुढविद्वय पापदि । त कमेण उपरिमविरलण-
छट्टमपुढविद्वयस्सुपरि सुण्णट्ठाणं मोत्तूणं दिण्णे रूपं पडि छट्ट-सत्तमपुढविद्वयपमाणं
पापदि हेट्टिमविरलणरूपाहियमेत्तट्ठाणं गंतूणं एगरूपस्स परिहाणी च लब्धदि । पुणो
उपरिमअणतरछट्टपुढविद्वय हेट्टिमविरलणाए समखड करिय दिण्णे रूपं पडि सत्तम
पुढविद्वयपमाणं पापदि । तं धेत्तूणं उवरि सुण्णट्ठाणं मोत्तूणं छट्टमपुढविद्वयस्सुपरि दिण्णे
हेट्टिमविरलणमेत्तरूपं पडि छट्ट सत्तमपुढविद्वयपमाणं होदि हेट्टिमविरलणरूपाहिय-

हर और अशरूप सदृशका अपनयन करने पर उक्त उदारणका निम्नरूप होता है—

$$\frac{२५६}{१९३} \times ३२७६८ = \frac{८३८८६०८}{१९३} \text{ प्र पृ मि अ}$$

अथवा, प्रथम पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवधारणाल दूसरे प्रकारसे लाते हैं। वही इसप्रकार है—छठवाँ पृथिवीके अवधारणालको विरलित करके ओर उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति जगधेणीको समान खट करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति छठवाँ पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। अनन्तर वहा एक विरलनके प्रति प्राप्त छठवाँ पृथिवीके द्रव्यको सातवाँ पृथिवीके द्रव्यसे भाजित करने पर जगधेणीका तीसरा वर्गमूल लब्ध आता है। आगे उस लब्ध राशिमा विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति छठवाँ पृथिवीके द्रव्यको समान खट करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति सातवाँ पृथिवीका द्रव्य प्राप्त होता है। उस अधस्तन विरलनके प्रति प्राप्त सातवा पृथिवीके द्रव्यको उपरिम विरलनमें छठवाँ पृथिवीके द्रव्यके ऊपर शून्य स्थानको (उपरिम विरलनके जिम स्थानका द्रव्य अधस्तन विरलनमें दिया है उसे) छोडकर क्रमसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति छठवाँ और सातवा पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर एककी हानि प्राप्त होती है। पुन उपरिम विरलनके अनन्तर स्थान (जहा तक सातवाँ पृथिवीका द्रव्य दिया है उसके आगेके स्थान) के प्रति प्राप्त छठवाँ पृथिवीके द्रव्यको अधस्तन विरलनमें समान खट करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति सातवाँ पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। उसे लेकर उपरिम विरलनमें शून्यस्थानको (जिस स्थानका द्रव्य अधस्तन विरलनमें दिया है उसे) छोडकर छठवाँ पृथिवीके द्रव्यके ऊपर देने पर उपरिम विरलनके अधस्तन विरलनमात्र स्थानोंके प्रति छठवाँ और सातवाँ पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और उपरिम विरलनमें एक अधिक

अहना पढमपुढविमिच्छाभसुईए सामण्णणेरइयविमिच्छाभसुइमोवट्टिदे एगरूवमेग-
रूवस्त अमरेज्जदिभागो आगच्छदि । तस्त एगरूवामरेज्जदिभागस्म को पडिभागो ?
किंचूणसेडिहारसरग्गमूलगुणिदपढमपुढविमिच्छाभसुची पडिभागो । पुणो एदाओ दो
रासीओ पुध मज्जे इयिण तेरासिय कायव्व । त जहा— सामण्णणेरइयरासिम्हि जदि
एगरूव एगरूवस्त अमरेज्जदिभागो च पढमपुढविमिच्छाइडिअपहारकालो लब्भदि तो
सामण्णणेरइयअपहारकालमेचमामण्णणेरइयमिच्छाइडिरासिम्हि किं लभामो चि सरित-
मणिय सामण्णणेरइयमिच्छाइडिअपहारकालेण एगरूवमेगरूवस्त असरेज्जदिभाग गुणिदे
पढमपुढविमिच्छाइडिअपहारकालो आगच्छदि ।

$$\frac{३८६}{६३} - \frac{२५६}{६३} = \frac{३८६}{२१६} \quad ६५५३६ - \frac{३८६}{२१६} = \frac{८३८८६०८}{१९३} \text{ प्र पृ मि अय}$$

अथवा, प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कभसुचीसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि
विष्कभसुचीके अपवर्तित करने पर एक ओर एकका असख्यातवा भाग लब्ध आता है ।

$$\text{उदाहरण—} २ - \frac{१९३}{१२८} = \frac{२}{१२८} = \frac{१}{६३}$$

शुक्रा— उस एकके असख्यातवें भागके लानेके लिये प्रतिभाग क्या है ?

समाधान— जगश्रेणाके कुछ कम बारहवें चर्गमूलसे गुणित प्रथम पृथिवीकी मिथ्या
दृष्टि विष्कभसुची एकके असख्यातवें भागके लानेके प्रतिभाग है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१९३}{१२८} \times \frac{१२८}{६३} = \frac{१९३}{६३} \text{ प्रतिभाग ।}$$

अन्तर इन दो राशियोंकी पृथकरूपसे मध्यमें स्थापित करके त्रैराशिक करना
चाहिये । यह इसप्रकार है— सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि राशिमें प्रथम पृथिवीसबधी मिथ्या
दृष्टि जीवोंका अपहारकाल यदि एक ओर एकका असख्यातवा भाग प्राप्त होता है तो सामान्य
नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालगुणित
सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि राशिमें कितना प्राप्त होगा, इसप्रकार सहदा राशि अश और
हररूप सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिका अपनयन करके सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि
अपहारकालसे एक ओर एकके असख्यातवें भागको गुणित करने पर प्रथम पृथिवीके
मिथ्यादृष्टि जीवराशिका अवहारकाल आता है ।

उदाहरण—यहा १३१०७२ प्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि राशि प्रमाणराशि है, ३३६
फलराशि है और सामान्य अवहारकाल ३२७६८ गुणित सामान्य नारक राशि १३१०७२
रच्छाराशि है । इसलिये इच्छाराशि और फलराशिका गुणा करके जो लब्ध आवे उसमें प्रमाण
राशिका भाग देने पर प्रथम पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अपहारकाल आ जाता है । यथा—

$$\frac{३२७६८ \times १३१०७२ \times ३१६}{१३१०७२ \times १९३} = \frac{८३८८६०८}{१९३} \text{ प्र पृ मि अ}$$

अह्मा पढमपुढविमिच्छाइडिअरहारकालो अण्णेण पयारेण आणिज्जेद । तं जहा-
 छट्टमपुढविअवहारकाल विरलेऊण एकेकस्स रूअस्म जगमेडिं समखड करिय दिण्णे रूअं
 पडि छट्टमपुढविमिच्छाइडिअव पाअदि । पुणो तत्थ एगरूअधरिदछट्टपुढविदव्व सत्तम-
 पुढविदव्वेण भागे हिदे सेडितदियग्गमूलमागच्छदि । त विरलेऊण छट्टपुढविदव्वं
 समखड करिय दिण्णे रूअ पडि सत्तमपुढविदव्व पाअदि । त कमेण उवरिमविरलण-
 छट्टमपुढविदव्वस्सुअरि सुण्णट्ठाण मोत्तूण दिण्णे रूअ पडि छट्ट-सत्तमपुढविदव्वपमाण
 पाअदि हेडिमविरलणरूआहियमेत्तट्ठाण गतूण एगरूअस्म परिहाणी च लभदि । पुणो
 उवरिमअणतरछट्टपुढविदव्व हेडिमविरलणाए समखड करिय दिण्णे रूअं पडि सत्तम-
 पुढविदव्वपमाण पाअदि । तं धेत्तूण उवरि सुण्णट्ठाण मोत्तूण छट्टमपुढविदव्वस्सुअरि दिण्णे
 हेडिमविरलणमेत्तरूअं पडि छट्ट-सत्तमपुढविदव्वपमाण होदि हेडिमविरलणरूआहिय-

हर और अशरूप सदृशका अपनयन करने पर उक्त उद्धारणका निम्नरूप होता है—

$$\frac{21}{193} \times 32764 = \frac{694684}{193} \text{ प्र पृ मि अ}$$

अथवा, प्रथम पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल दूसरे प्रकारसे लाते हैं। वही इसप्रकार है— छठवाँ पृथिवीके अवहारकालको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति जगश्रेणीको समान खड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति छठवाँ पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। अनन्तर वहा एक विरलनके प्रति प्राप्त छठवाँ पृथिवीके द्रव्यको सातवाँ पृथिवीके द्रव्यसे भाजित करने पर जगश्रेणीका तीसरा वर्गमूल लब्ध आता है। आगे उस लब्ध राशिमा विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति छठवाँ पृथिवीके द्रव्यको समान खड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति सातवाँ पृथिवीका द्रव्य प्राप्त होता है। उस अधस्तन विरलनके प्रति प्राप्त सातवाँ पृथिवीके द्रव्यको उपरिम विरलनमें छठवाँ पृथिवीके द्रव्यके ऊपर शून्य स्थानको (उपरिम विरलनके जिस स्थानका द्रव्य अधस्तन विरलनमें दिया है उसे) छोडकर क्रमसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति छठवाँ और सातवाँ पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर एककी हानि प्राप्त होती है। पुन उपरिम विरलनके अनन्तर स्थान (जहा तक सातवाँ पृथिवीका द्रव्य दिया है उसके आगेके स्थान) के प्रति प्राप्त छठवाँ पृथिवीके द्रव्यको अधस्तन विरलनमें समान खड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति सातवाँ पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। उसे लेकर उपरिम विरलनमें शून्यस्थानको (जिस स्थानका द्रव्य अधस्तन विरलनमें दिया है उसे) छोडकर छठवाँ पृथिवीके द्रव्यके ऊपर देने पर उपरिम विरलनके अधस्तन विरलनमात्र स्थानोंके प्रति छठवाँ और सातवाँ पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और उपरिम विरलनमें एक अधिक

मेचद्वान गतूण एगसूवस्म परिहाणी च लभदि । एव पुणो पुणो कायचर जाव उपरिम विरलणा परिममचेत्ति । एत्थ पुण हेट्टिम उपरिमविरलणाओ सरिसाओ त्ति एगमपि रूण परिहायदि । पुणो एत्थ एत्तिय परिहायदि त्ति जुचदे । त जहा- हेट्टिमविरलण रूवाहियमेचद्वान गतूण जदि एगसूवपरिहाणी लभदि तो उपरिमविरलणम्हि किं परिहाणि लभामो त्ति रूवाहियसेट्ठितदियग्गमूलेण सेट्ठितदियवग्गमूले भागे हिदे एग-रूवस्स अससेज्जभागा आगच्छति त्ति किंचूगेगरूव सरिसच्छेड काऊण तदियवग्ग मूलम्हि अपणिदे मेट्ठिपिदियवग्गमूल रूवाहियसेट्ठितदियवग्गमूलेण मज्जिदएगभागे छट्ट सच्चमपुट्ठमीमिच्छाड्डिद्वान भागहारी होदि । तेण जगसेट्ठिम्हि भागे हिदे छट्ट सच्चमपुट्ठमिमिच्छाड्डिद्वान होदि ।

पुणो मेट्ठिछट्टमवग्गमूल विरलिय जगसेट्ठि समसूड करिय टिण्णे रूव पडि

अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर एक्की हानि होती है । इसप्रकार जब तक उपरिम विरलन समाप्त होवे तब तक पुन पुन यही विधि करते जाया चाहिये । परन्तु यहा अधस्तन ओर उपरिम विरलन समान है इसलिये एक ही विरलनाएकी हानि गती होती है । फिर भी यहा इतना हानि होती है आगे उसीको बतलान है । वह इसप्रकार है- उपरिम विरलनमें एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र जान जाकर यदि एक्की हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार प्रराशिक करने के जगश्रेणीके एक अधिक तृतीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलके भाजित करने पर एकके असत्यात बहुभाग प्राप्त होते है, इसलिये कुछ कम एकको समान छेद करके तृतीय वर्गमूलमें घटा देने पर जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको जगश्रेणीके एक अधिक तृतीय वर्गमूलसे भाजित करके जो एक भाग लक्ष आवे वह छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका भागहार होता है । उक्त भागहारसे जगश्रेणीके भाजित करने पर छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है ।

उदाहरण- $10 \times 10 = 100$
 $100 \div 10 = 10$
 $100 \div 10 = 10$
 $100 \div 10 = 10$
 $100 \div 10 = 10$
 $100 \div 10 = 10$

यदि १ अधिक अधस्तन विरलनमात्र अर्थात् ३ स्थान जाकर उपरिम विरलनमें एककी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनोंमें कितने विरलनोंकी हानि प्राप्त होगी

इसप्रकार प्रराशिक करने पर २१ $\frac{1}{2}$ की हानि प्राप्त होती है । इसे उपरिम विरलन ६३ मेंसे घटा देने पर ४२ $\frac{1}{2}$ आते है । इसका जग श्रेणीमें भाग देने पर १०२ $\frac{1}{2} + १२ = ११४\frac{1}{2}$ प्रमाण छठी और सातवा पृथिवीका द्रव्य आता है ।

अनंतर जगश्रेणीके छठे वर्गमूलको विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक १ प्रतिपु ' गुण ' इति पाठ । २ प्रतिपु ' जगभागा ' इति पाठ ।

पचमपुढविमिन्डाडड्विद्व्यपमाण पापेदि । पुणो उट्ट सत्तमपुढविमिच्छाइद्विद्व्येहि पंचम-
पुढविमिच्छाइद्विद्व्यभिह भागे हिदे सेद्वितदियवग्गलादीण हेट्टा चउण्ह वग्गणं
अण्णोण्णवामेणुप्पणरामिं रूपाहियसेद्वितदियवग्गमलेण सड्ढिदेयसड्ढमागन्ठदि । पुणो
वि त गिरलेऊण उपरिमगिरलेणेरूपधरिदपचमपुढविद्व्यं समखडं करिय दिण्णे रू
पडि छट्ट-सत्तमपुढविमिच्छाइद्विद्व्यपमाण पापेदि । पुणो तमुपरिमगिरलेणभिह सुण्णट्टाण
मोत्तण पचमपुढविमिच्छाइद्विद्व्यसुपरि परिगडीए पक्खित्ते हेट्टिमगिरलेणमेत्तउपरिम-
गिरलेणरूपेसु पचम छट्ट-सत्तमपुढविमिच्छाइद्विद्व्यपमाण पापेदि एगरूपपरिहाणी च
लब्भदि । पुणो तदण्णतरउपरिमरूपोपरिद्विद्व्यपचमपुढविमिच्छाइद्विद्व्य हेट्टिमगिरलेणए
ममसड्ढ करिय दिण्णे रू पाटि छट्ट मत्तमपुढविमिच्छाइद्विद्व्य पापेदि । पुणो तमु-
परिमगिरलेणए सुण्णट्टाण मोत्तण हेट्टिमगिरलेणमेत्तपचमपुढविमिच्छाइद्विद्व्यभिह पक्खित्ते
एव पडि पचम छट्ट सत्तमपुढविमिच्छाइद्विद्व्य पापेदि विदियरूपपरिहाणी च लब्भदि ।
एव पुणो पुणो कायव्व जाय उपरिमगिरलेण परिममत्तोत्ति । एत्थ परिहीणरूपपमाण

एकके ऊपर जगध्रेणीको समान खट करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति पाचवीं
पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर छठी और सातवीं पृथिवीके
मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणसे पाचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यमें भाग देने पर, जगध्रेणीके तीसरे
वर्गमूलसे लेकर नाँबेके चार वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसे जगध्रेणीके
एक अधिक तृतीय वर्गमूलसे रचित करने पर एक खड आता है । पुन उसे विरलित करके और
उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम गिरलेणके एकके प्रति प्राप्त पाचवीं पृथिवीके
द्रव्यको समान गट करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति छठी और सातवीं पृथिवीके
द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर उपरिम गिरलेणमें उस शून्यस्थानको (जिसके द्रव्यको
अधस्तन गिरलेणमें चाटा है उसे) छोडकर पाचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर क्रमसे
प्रक्षिप्त करने पर अधस्तन गिरलेणप्रमाण उपरिम गिरलेणके अर्को पर पाचवीं, छठी और
सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और एककी हानि प्राप्त होती है ।
पुन तदनन्तर उपरिम गिरलेणके एक अरु पर स्थित पाचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको
अधस्तन गिरलेणके प्रत्येक एकके ऊपर समान खट करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके
प्रति छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर उपरिम
गिरलेणमें उम शून्यस्थानको (जिसके द्रव्यको अधस्तन गिरलेणमें चाटा है उसे)
छोडकर अधस्तन गिरलेणप्रमाण छठी और सातवीं पृथिवीके द्रव्यको पाचवीं पृथिवीके द्रव्यमें
मिला देने पर प्रत्येक एकके प्रति पाचवीं, छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका
प्रमाण प्राप्त होता है और दूसरे अर्को हानि भी प्राप्त होती है । इसप्रकार जयतक
उपरिम गिरलेण समाप्त होवे तयतक पुन पुन करना चाहिये । अथ यद्वा पर हानिरूप
गिरलेणोंका प्रमाण लाते हैं । यह इसप्रकार है— उपरिम गिरलेणमें एक अधिक अधस्तन

मेत्तद्वाण गंतूण एगरूवस्म परिहाणी च लभदि । एव पुणो पुणो कायच्च जाय उपरिम
 प्रिलणा परिममेत्ति । एव्य पुणं हेट्ठिम उपरिमप्रिलणाओ मरिसाओ चि एगमात्रि रू
 ण परिहायदि । पुणो एव एत्तिय परिहायदि चि चुच्चे । त जहा- हेट्ठिमप्रिलण
 रूवाहियमेत्तद्वाण गतूण जदि एगरूपपरिहाणी लभदि तो उपरिमप्रिलणमिह किं
 परिहाणि लमामो चि रूवाहियसेट्ठितदियग्गमूलेण सेट्ठितदियग्गमूले भागे हिदे एग
 रूपस्स अससेज्जभागा आगच्छति चि किंचूणेगरूप सरिसच्छेद काऊण तदियग्ग
 मूलमिह अवणिदे सेट्ठिपिदियग्गमूल रूवाहियमेट्ठितदियग्गमूलेण भजिदएगभागे
 छट्ट सत्तमपुट्टवीमिच्छाइट्ठिदव्याण भागहारो होदि । तेण जगमेट्ठिमिह भागे हिदे छट्ट
 सत्तमपुट्टविमिच्छाइट्ठिदव्य होदि ।

पुणो सेट्ठिउट्टमग्गमूल विरलिय जगमेट्ठि ममखड करिय दिण्णे रूय पडि

अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर एफकी हानि होती है । इसप्रकार जब तक उपरिम
 विरलन समाप्त होवे तब तब पुन पुन यही प्रिधि करते जाना चाहिये । परन्तु यहा अधस्तन
 और उपरिम विरलन समान है इसलिये एक भी विरलनाकरी हानि नहीं होती है । फिर भी
 यहा इतनी हानि होती है आगे उसीको बतलते हैं । यह इसप्रकार है- उपरिम विरलनमें एक
 अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एफकी हानि प्राप्त होती है तो सपूर्ण उपरिम
 विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार वैराशिक करके जगधेणीके एक अधिक तृतीय
 वर्गमूलसे जगधेणीके तृतीय वर्गमूलके भाजित करने पर एफके असख्यात बहुभाग प्राप्त
 होते हैं, इसलिये कुछ कम एफको समान छेद करके तृतीय वर्गमूलमेंसे घटा देने पर
 जगधेणीके द्वितीय वर्गमूलको जगधेणीके एक अधिक तृतीय वर्गमूलसे भाजित करके जो एक
 भाग लब्ध आवे वह छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका भागहार होता है । उक्त
 भागहारसे जगधेणीके भाजित करने पर छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका
 प्रमाण होता है ।

उदाहरण— $10 \times 10 = 100$
 $100 \div 10 = 10$
 $100 \div 10 = 10$
 $100 \div 10 = 10$
 $100 \div 10 = 10$

यदि १ अधिक अधस्तन विरलनमात्र अर्थात्
 ३ स्थान जाकर उपरिम विरलनमें एककी
 हानि प्राप्त होती है तो सपूर्ण उपरिम विर
 लनोंमें कितने विरलनोंकी हानि प्राप्त होगी,

इसप्रकार वैराशिक करने पर $2 \frac{1}{2}$ की हानि
 प्राप्त होती है । इसे उपरिम विरलन ६३ मेंसे घटा देने पर ६२ आते हैं । इसका जग
 धेणीमें भाग देने पर $10 \times 10 = 100$ प्रमाण छठी और सातवीं पृथिवीका द्रव्य आता है ।

अनंतर जगधेणीके छठे वर्गमूलको विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक
 १ प्रतिपु पुण ' इति पाठ ।
 २ प्रतिपु जगभागा ' इति पाठ ।

द्वयं पायेदि । एत्थ पुत्र्य व समकरण काद्वय । एत्थ परिहीणरूपाण पमाणमाणिज्जदे । तं जहा- हेट्टिमिपरिलणरूपाहियमेत्तद्व्राण गतूण जदि उपरिमिपरिलणमिह एणरूपपरिहाणी लब्भदि तो उपरिमिपरिलणमिह केणटियरूपपरिहाणिं लभामो चि रूपाहियहेट्टिमिपरिलणाए जगसेट्टिअट्टमवग्गमूलमोणट्टिय लद्ध तमिह चेप अणणेदे चउत्थ पचम छद्ध सत्तमपुढणीण सत्तमपुढविमिच्छाडिट्टिसलागाहि जगमेट्टिपिदियग्गमूलमोणट्टिय चउत्थपुढपिआदिहेट्टिमिच्छाडिट्टिद्वयस्म अपहारकालो होदि । तेण जगमेट्टिमिह भागे हिदे चउण्ह पुढवीणं मिच्छाडिट्टिद्वयमागच्छदि ।

पुणो जगसेट्टिसमवग्गमूल विरलेऊण जगसेट्टिं समखंडं करिय दिण्णे रूपं पडि

प्रत्येक एक पर पाचवी आदि नीचेकी तीन पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। यहा पर समीकरण पहलेके समान कर लेना चाहिये। अत्र यहा पर हानिरूप अकोंका प्रमाण लाते हैं। यह इसप्रकार है— उपरिम विरलनमें एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि उपरिम विरलनमें एककी हानि प्राप्त होती है तो सपूर्ण उपरिम विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनसे जग श्रेणीके आठवें चर्गमूलको अपवर्तित करके जो लघ्व आवे उसे उसी जगश्रेणीके आठवें चर्गमूल मसे घटा देने पर जो आता है वह चौथी, पाचवी, छठी और सातवीं पृथिवीकी सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा की गई मिथ्यादृष्टि शलाकाओंसे जगश्रेणीके द्वितीय चर्गमूलको अपवर्तित करके जो लघ्व आता है उतना होता है। ओर यही चौथी आदि नीचेकी चार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल है। उक्त अवहारकालसे जगश्रेणीके भाजित करने पर चार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है।

उदाहरण—४०९६ ४०९६

१ १ १६ बार

$४०९६ - ३५८४ = \frac{८}{७}$

३५८४ ५१२

१ $\frac{१}{७}$

$६५१३६ - १२८ = ७६८०$,
१५

अधस्तन विरलन १८ में १ जोड़ने पर २८ होते हैं। यदि इतने स्थान जाकर उपरिम विरलनमें १ की हानि होती है तो सपूर्ण उपरिम विरलन १६ में कितनी हानि होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर $\frac{११३}{७}$ हानिरूप अक आते हैं। इसे उपरिम विरलन १६ मेंसे घटा देने पर $\frac{१३८}{७}$ होता है जो सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा की गई चौथी आदि चार

पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि शलाकाओं १ + २ + ४ + ८ = १५ से जगश्रेणीके द्वितीय चर्गमूल १२८ को अपवर्तित करने पर जितना आता है उतनेके बराबर होता है। इससे ६५१३६ प्रमाण जगश्रेणीके भाजित करने पर ७६८० प्रमाण चौथी आदि चार पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है।

अनन्तर जगश्रेणीके दशवें चर्गमूलको विरलित करके ओर उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर जगश्रेणीको समाप्त खंड करके देयरूपसे वे देने पर प्रत्येक एकके प्रति

माणिक्यदे । त जहा- हेट्टिमनिरलणरूनाहियमेचद्वान गतूण जदि एगरूपपरिहाणी लभदि तो उपरिमनिरलणमिह केरडियरूपपरिहाणि लभामो ति रूनाहियहेट्टिमनिरलणाए जग सेट्टिहट्टुगममूलमोवद्विय लड तमिह चेअ अणिदे सेट्टिपिदियगममूल तदियादिचउण्ह वग्गाणमण्णोण्णभासेणुपण्णरामिह रूनाहियमेडितदियगममूल पक्खियय अगहिद एगभागो तिण्ह पुठरीण अगहारकालो होदि । तेण जगमेडिमिह भागे हिदे पचमादि तिण्ह हेट्टिमपुठरीण मिअट्टिद्वयमागच्छदि ।

पुणो जगमेडिमिह अट्टमगममूल निरलेऊग जगसेट्टि समरउड करिय दिण्णे रूा पडि चउत्थपुठपिमिअट्टिद्वय पावेदि । पुणो चउत्थपुठपिमिअट्टिद्वय पचमादि हेट्टिमतिपुठपिमिअट्टिद्वयेहि ओपद्विय लड देट्टा विरलिय चउत्थपुठपिद्वय उपरिम निरलणाए पढमउपरि ट्टिद समरउड करिय दिण्णे पचमाट्टिहेट्टिमतिपुठपिमिअट्टि-

विरलनमात्र स्थान जाअर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो सपूर्ण उपरिम विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनसे जग श्रेणीके छठे वर्गमूलको अपवतित करके जो लब्ध आवे उसे उसी जगश्रेणीके छठे वर्गमूलमेंसे घटा देने पर जो आता है वह जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूल आदि चार वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमें एक अधिक तृतीय वर्गमूलको मिलाकर जो जोड़ आवे उससे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको भाजित करने पर जो एक भाग लब्ध आवे उतना होता है और यही पूर्वाक्त तीन पृथिवियोंका अवधारकाल है। उक्त अवधारकालने जगश्रेणीके भाजित करने पर पाचवीं आदि तीन पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है ।

उत्तरहरण—२०८८ २०४८

१	१ ३२ वार,
२०८८ - १५३६ =	$\frac{५}{३}$
१५३६	५१०
१	१
	३
६' २६ - $\frac{१२८}{६}$ =	३' ८४

अधस्तन विरलन ११ में १ जोड़कर २१ होते हैं । यदि इतने स्थान जाकर उपरिम विरलनमें १ की हानि होती है तो सपूर्ण उपरिम विरलनमें कितनी हानि होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर $\frac{५}{३}$ हानिरूप अक आते हैं । इसे उपरिम विरलन ३२ मेंसे घटा देने पर $\frac{५}{३}$ आते हैं । इसका जगश्रेणीमें भाग पर ३५८४ प्रमाण पाचवीं आदि तीन पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है ।

अनन्तर जगश्रेणीके आठवें वर्गमूलको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति जगश्रेणीको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको पाचवीं आदि नीचेके तीन पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे अपवतित करके जो लब्ध आवे उसे नीच विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनके प्रथम एक पर स्थित चौथी पृथिवीके द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर

द्वयं पावेदि । एत्थ पुव्व व समकरण काद्वय । एत्थ परिहीणरूपाणं पमाणमाणिज्जदे । तं जहा- हेट्टिमविरलणरूपाहियमेत्तद्वण गतूण जदि उपरिमविरलणमिह एगरूपपरिहाणी लब्भदि तो उपरिमविरलणमिह केवडियरूपपरिहाणिं लभामो ति रूपाहियहेट्टिमविरलणाए जगमेदिअट्टमउग्गमूलमोउट्टिय लद्ध तमिह चेव अणिदे चउत्थ पचम छट्ट सत्तमपुट्टीण सत्तमपुट्टिमिच्छाइट्टिसलागाहि जगमेदिविदियउग्गमूलमोउट्टिय चउत्थपुट्टिआदिहेट्टिम- मिच्छाइट्टिद्वयस्म अवहारकालो होदि । तेण जगसेट्टिमिह भागे हिदे चउण्ह पुट्टवीणं मिच्छाइट्टिद्वयमागच्छदि ।

पुणो जगसेट्टिदसमउग्गमूल विरलेऊण जगसेट्टिं समसड करिय दिण्णे रूप पट्टि

प्रत्येक एक पर पाचवीं आदि नीचेकी तीन पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । यहा पर समीकरण पहलेके समान कर लेना चाहिये । अत्र यहा पर हानिरूप अकोंका प्रमाण लाते हैं । वह इसप्रकार है— उपरिम विरलनमें एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि उपरिम विरलनमें एकही हानि प्राप्त होती है तो सपूर्ण उपरिम विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनसे जग श्रेणीके आठवें वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसे उसी जगश्रेणीके आठवें वर्गमूल मेंसे घटा देने पर जो आता है वह चौथी, पाचवीं, छठी और सातवीं पृथिवीकी सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा की गई मिथ्यादृष्टि शलाकाओंसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आता है उतना होता है । और यही चाथी आदि नीचेकी चार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल है । उक्त अवहारकालसे जगश्रेणीके भाजित करने पर चार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है ।

उदाहरण— ४०९६ ४०९६

१	१	१६ बार
४०९६ - ३५८४ =	८	
	७	
३५८४	५१२	
१	१	
	७	
६५५३६ - १०८	१५	= ७६८०

अधस्तन विरलन $१\frac{१}{७}$ में १ जोडने पर $२\frac{१}{७}$ होते हैं । यदि इतने स्थान जाकर उपरिम विरलनमें १ की हानि होती है तो सपूर्ण उपरिम विरलन १६ में कितनी हानि होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर $१\frac{१}{७}$ हानिरूप एक आते हैं । इसे उपरिम विरलन १६ मेंसे घटा देने पर $१\frac{१}{७}$ होता है जो सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा की गई चौथी आदि चार

पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि शलाकाओं $१ + २ + ४ + ८ = १५$ से जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूल १२८ को अपवर्तित करने पर जितना आता है उतनेके बराबर होता है । इससे ६५५३६ प्रमाण जगश्रेणीके भाजित करने पर ७६८० प्रमाण चौथी आदि चार पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है ।

अनन्तर जगश्रेणीके दशवें वर्गमूलको विरलित करके ओर उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर जगश्रेणीको समान रंग करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति

विदियादिछप्पुढनिअनहारकालो होदि । तस्स पमाण केचिय ? विदियादिछप्पुढवीण सत्तम-
पुढविमिच्छाडडिसलागाहि जगसेटिनिदियग्गमूलमअहिदएगभागो हउदि । तेण जगसेटिभि
भागो हिदे छप्पुढविमिच्छाडडिद्वयमागच्छदि । त जगसेटिणा सड्डेऊणेगखंड सामण्णेरइय
विक्कमस्यचिम्हि अवणिय सेमेण जगसेटिभि भागे हिदे पढमपुढविअनहारकालो आग
च्छदि । अहवा पुष्पमाणिदछप्पुढविदन्वेण सामण्णेरइयअनहारकाल गुणेऊण तम्हि

उदाहरण—१६३८४ १६३८४

१	१	४ वार
१६३८४ - १५८७२ =	३२	
१५८७२	५१२	
१	१	
	३१	

अधस्तन विरलन ११^१/_१ में १ मिला देने
पर २३^१/_१ होता है । यदि इतने स्थान
जाकर उपरिम विरलनमें १ की हानि होती
है तो उपरिम विरलनमात्र ४ स्थान जाकर
कितनी हानि प्राप्त होगी ? इसप्रकार त्रैराशिक
करने पर १३^१/_१ हानिरूप बक आ जाते हैं ।

इसे उपरिम विरलन ४ मेंसे घटा देने पर १३^१/_१ प्रमाण द्वितीयादि छह पृथिवियोंका अचहार
काल होता है ।

सूत्रा—द्वितीयादि छह पृथिवियोंके उक्त भागहारका प्रमाण कितना है ?

समाधान—सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा की गई द्वितीयादि छह
पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि शलाकाओंसे जगश्रेणीके द्वितीय घर्गमूलके भाजित करने पर जो एक
भाग लब्ध आता है उतना द्वितीयादि छह पृथिवियोंका अचहारकाल है । उक्त भागहारसे
जगश्रेणीके भाजित करने पर द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—३२ + १६ + ८ + ४ + २ + १ = ६३ १२८ ~ ६३ = $\frac{१२८}{६३}$ द्वितीयादि छह
पृथिवियोंका अचहारकाल ।

$६५५३६ - \frac{१२८}{६३} = ३२२५६$ द्वितीयादि छह पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य ।

उक्त छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको जगश्रेणीसे खण्डित करके जो एक खण्ड
लब्ध आये उसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि विष्कभसखीमेंसे घटा कर जो शेष रहे उससे
जगश्रेणीकी भाजित करने पर पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अचहारकाल आता है ।

उदाहरण—३२२५६ - ६५५३६ = $\frac{६३}{१२८}$ २ - $\frac{६३}{१२८} = \frac{१९३}{१२८}$

$६५५३६ - \frac{१९३}{१२८} = \frac{८३८८६०८}{१९३}$ प्र पृ मि अय

अथवा, पहले लाये हुए छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणसे सामान्य
मिथ्यादृष्टि नारकियोंके अचहारकालको गुणित करके जो लब्ध आये उसमें पहली पृथिवीके

विदियादिछप्पुढविअवहारकालो हांदि । तस्स पमाण केत्तिय ? विदियादिछप्पुढवीण सत्तम पुढविमिच्छाड्डिसलागाहि जगमेदिमिदियजग्मूलमरुहिदएगभागो हउदि । तेण जगसेदिमिह भागे हिदे छप्पुढविमिच्छाड्डिद्ववमागच्छदि । त जगसेदिणा रुडेऊणेगसड सामण्णणेरइय- विक्खमय्यचिमिह अचणिय सेसेण जगसेदिमिह भागे हिदे पढमपुढविअवहारकालो आग च्छदि । अहवा पुच्चमाणिदछप्पुढविद्ववैण सामण्णणेरइयअवहारकाल गुणेऊण तमिह

उदाहरण— १६३८४ १६३८४

१	१	४ घार
$१६३८४ - १५८७२ =$	३२	
१५८७२	५१२	
१	१	३१

अधस्तन विरलन $१३\frac{१}{२}$ में १ मिला देने पर $२३\frac{१}{२}$ होता है । यदि इतने स्थान जाकर उपरिम विरलनमें १ की हानि होती है तो उपरिम विरलनमात्र ४ स्थान जाकर कितनी हानि प्राप्त होगी ? इसप्रकार त्रैराशिक करने पर $१३\frac{१}{२}$ हानिरूप बंक आ जाते हैं ।

इसे उपरिम विरलन ४ में से घटा देने पर $१३\frac{१}{२}$ प्रमाण द्वितीयादि छह पृथिवियोंका अवहार काल होता है ।

शका—द्वितीयादि छह पृथिवियोंके उक्त भागहारका प्रमाण कितना है ?

समाधान—सातवा पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा की गई द्वितीयादि छह पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि शलाकाओंसे जगधेणीके द्वितीय धर्ममूलके भाजित करने पर जो एक भाग लब्ध आता है उतना द्वितीयादि छह पृथिवियोंका अवहारकाल है । उक्त भागहारसे जगधेणीके भाजित करने पर द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है ।

उदाहरण— $३२ + १६ + ८ + ४ + २ + १ = ६३$, $१२८ - ६३ = \frac{१२८}{६३}$ द्वितीयादि छह पृथिवियोंका अवहारकाल ।

$६५५३६ - \frac{१२८}{६३} = ३२२५६$ द्वितीयादि छह पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य ।

उक्त छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको जगधेणीसे खण्डित करके जो एक खण्ड लब्ध आवे उसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि विष्कभसूर्वांमिसे घटा कर जो शेष रहे उससे जगधेणीको भाजित करने पर पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल आता है ।

उदाहरण— $३२२५६ - ६५५३६ = \frac{६३}{१२८}$, $२ - \frac{६३}{१२८} = \frac{१९३}{१२८}$

$६५५३६ - \frac{१९३}{१२८} = \frac{८३८६०८}{१९३}$ प्र पृ मि अय

अथवा, पहले लाये हुए छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणसे सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंके अवहारकालको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें पहली पृथिवीके

रुच लब्धमिदि चि । पुणो ताणि तिण्णि रूपाणि धेत्तण उपरिमविरलणपचरूपोपरि द्विद-
पचसु सोलसेसु परिवाडीए पन्निस्सत्ते रूच पडि एग्गुणवीसरूपाणि हवति । पुणो सत्तम
रूच तिण्णि भागे करिय तेसिं तिभागाण सोलसरूपाणि समसड करिय दिण्णे एक्केवस्स
विभागस्स सतिभागपचरूपाणि पावति । पुणो एगरूपातिभागधरिदमतिभाग पचरूच
तत्थेयं इत्थिय सेस तं तिभागे जप्पणो धरिदरामिसहिद पुध इत्थिय पुणो सट्ठाणहिद
एगरूचविभागेण धरिदसतिभागपचरूपेसु हेट्ठिमविरलणाए तिभागरूपोवरि द्विद एगरूच
पन्निस्सत्ते तत्थ सतिभाग छ रूपाणि' हवति, एत्थ एगरूचपरिहाणी लद्धा । पुणो
तदणतररूचधरिद सोलसरूपाणि हेट्ठिमविरलणाए समसड करिय दिण्णे पुच्च व रूच
पडि तिण्णि तिण्णि रूपाणि पावति । पुणो तत्थ सकलपचरूचोपरि द्विद तिण्णि रूपाणि
धेत्तण सुण्णट्ठाण वचिय उपरिमविरलण पचरूचोवरि द्विद पचसु सोलसेसु परिवाडीए
पन्निस्सत्तेसु रूच पडि एग्गुणवीसरूपाणि हवति । पुणो पुच्चमाणेज्जण पुध इत्थिद वे

$$१६ - ३ = \frac{१}{२}; \quad \begin{array}{cccccc} ३ & ३ & ३ & ३ & ३ & १ \\ १ & १ & १ & १ & १ & १ \\ & & & & & ३ \end{array}$$

पुनः नीचेके विरलनके प्रति प्राप्त उन तीन तीन अंकोंको लेकर उपरिम विरलनके
(द्वितीयादि) पाच विरलन अंकों पर स्थित पाच सोलह अंकोंके ऊपर परिपाटी क्रमसे
दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति उन्नीस अंक प्राप्त होते हैं। पुन सत्तम विरलनरूप एक
अंकके तीन भाग करके उन तीन भागोंके ऊपर सोलहको समान खड करके देयरूपमे दे देने
पर प्रत्येक एक त्रिभागके प्रति एक त्रिभागसहित पाच अंक प्राप्त होते हैं। अनंतर एक
त्रिभागके प्रति प्राप्त एक त्रिभागसहित पाच अंकोंको वहाँ पर रखकर ओर श्रेय
को त्रिभागोंको अपने ऊपर रन्धी हुई राशिके साथ अलग स्थापित करके अनंतर अपने
स्थान पर स्थित एक त्रिभागके प्रति प्राप्त एक त्रिभागसहित पाच अंकोंमें अधस्तन विरलनके
एक त्रिभागके ऊपर स्थित एकको मिला देने पर वहा एक त्रिभागसहित छह अंक आ
जाते हैं। इसप्रकार वहा एक विरलन अंककी हानि प्राप्त हुई। पुन उसके अर्थात् सातवें
विरलनके अनंतर एक विरलन अंक पर स्थित सोलहको अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति
समान खड करके देयरूपमे दे देने पर पहलेके समान अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति
तीन तीन अंक प्राप्त होते हैं। अनंतर वहा पूर्णांक पाच विरलनरूप अंकोंके ऊपर स्थित
तीन सरयाको ग्रहण करके शून्यस्थानको (जिस आठवें स्थानके १६ को अधस्तन विरलनमें
घाटा है उसे) छोटकर उपरिम विरलनके पांच विरलन अंकोंके ऊपर स्थित पाच सोलह
अंकोंके ऊपर भ्रमसे प्रक्षिप्त कर देने पर उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति उन्नीस अंक प्राप्त
होते हैं। अनन्तर पहले लाकर अलग स्थापित दो त्रिभागोंसे एक त्रिभागके ऊपर रखे हुए

विरलणांमिह किं लभामो चि रूवाहियहेडिमविरलणाए फलगुणिदिच्छाए भागे हिदाए सन्वपरिहीणरूवाणि आगच्छंति । ताणि उरिमनिरलणरूवेसु अणिदे अवहारकालो होदि । एव सन्वत्थ समकरणनिहाणं जाणिऊण वत्तव ।

सपहि रासिपरिहाणिनिहाणं वत्तइस्सामो । तं जहा- तत्थ ताए तिण्हं रूवाणं परिहाणि उच्चदे- उरिमविरलणरूवधरिदसोलसरूवेसु हेडिमविरलणाए सगलेगरूवधरिद- तिणिण रूवाणि रूव पडि अवाणिय पुध द्वेयव्वाणि । संपहि उवरिमविरलणमेचतिणिण रूवाणि अणिदसेसपमाणेण कस्सामो । त जहा- उरिमनिरलणचउरूवधरिदतिणिण तिणिण रूवाणि एगट्टं करिय पुणो पंचमरूवधरिदतिण्ह रूवाण तिभागं घेचूण तत्थ पक्खित्ते अवाणिदसेसपमाणं' होदि । हेडिमविरलणाए अते एगरूवं विरलिय अणंतरूपपण

कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके फलराशि एकसे इच्छाराशि सोलहको गुणित करके जो लब्ध आये उसमें एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र इच्छाराशिका भाग देने पर सपूर्ण हानिरूप विरलनस्थान आ जाते हैं । इन्हें उपरिम विरलनकी सख्यामेंसे घटा देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है । इसीप्रकार सर्वत्र समीकरण विधानको जानकर कथन करना चाहिये ।

उदाहरण—प्रमाणराशि ६३, फलराशि १, इच्छाराशि १६

$$१६ \times १ = १६ \quad १६ - \frac{१९}{३} = २ \frac{१०}{१९} \text{ हानिरूप अक ।}$$

$$१६ - २ \frac{१०}{१९} = १३ \frac{९}{१९} \text{ अवहारकाल ।}$$

अय राशिके हानिरूप विधानको धतलाते हैं । यह इसप्रकार है—उस विषयमें तीन अकोंकी हानिका कथन किया जाता है—उपरिम विरलनके प्रत्येक विरलनके प्रति प्राप्त सोलहमेंसे अधस्तन विरलनके सकल एक विरलनके प्रति प्राप्त तीन सख्याको घटा कर पृथक् स्थापित कर देना चाहिये । अय उपरिम विरलनमात्र अर्थात् सोलहवार स्थापित तीन तीन अकोंको, उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त सोलहमेंसे तीन घटा देने पर जो शेष रहता है, उसके प्रमाणसे करते हैं । जैसे—उपरिम विरलनके चार विरलनोंके प्रति प्राप्त तीन तीन अकोंको एकत्रित करके पुन पावयें विरलनके ऊपर रखे हुए तीनके शिभागको ग्रहण करके मिटा देने पर सोलहमेंसे तीनको घटा कर जो शेष रहता है उसका प्रमाण होता है । इस अभी उत्पन्न हुए तीनको घटा कर शेष रहे हुए प्रमाणको अधस्तन विरलनके अन्तमें एकका विरलन करके उसके ऊपर दे देना चाहिये । पुन उपरिम विरलनके चार विरलनोंके प्रति प्राप्त तीन तीन सख्याको

इज्जदे । त जहा- एगूणवीसरूपाणं जदि एग विरलणरूपं लब्भदे तो णवणहं रूवा
 किं लभामो चि एगूणवीसहेहि फलगुणिदिच्छाए भागे हिदे एगरूपं एगूणवीस सडाणि
 काऊण तत्थ णव सडाणि आगच्छति । अवणिटसेसाणि रूपाणि एगडे कदे तेरहरूपाणि
 एगरूप एगूणवीसरूपाणि कदे णव सडाणि च हवति । सपहि परिहाणिरूपाणि
 आणिज्जते । त जहा- हेट्टिमविरलणरूपाहियमेत्तद्वाण गतूण जदि एगरूपपरिहाण
 लब्भदि तो सतिभागतिह रूवाण किं लभामो चि फलगुणिदइच्छमिह पमाणेण भा
 हिदे एगरूप एगूणवीसरूपाणि कदे तत्थ दस सडाणि लब्भति । पुच्चलद्ध दो रूवाणि
 तत्थ पभिरुत्ते परिहाणिरूपाणि हवति । अहवा सच्चहीणरूपाणि एगवारेणाणिज्जते ।
 जहा- हेट्टिमविरलणरूपाहियमेत्तद्वाण गतूण जदि एगरूपपरिहाणी लब्भदि तो उपरिम

अथ उन अवशिष्ट नौ अकोंका विरलन कितना होगा यह उत्पन्न करके यतला
 हैं । यह इसप्रकार है— उन्नीस अकोंके प्रति यदि एक विरलन प्राप्त होता है तो नौ अकों
 प्रति कितना प्राप्त होगा, इसप्रकार त्रैराशिक करके फलराशि एकसे इच्छाराशि नीच
 गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें प्रमाणराशि उन्नीसका भाग देने पर एकके उन्नीस खंड
 करके उनमेंसे ९ खंड लब्ध आते हैं । इसप्रकार उपरिम विरलनमेंसे कितनी सरया घट जाते
 हैं उसमें शेष रहे हुए सभी अकोंको एकत्रित करने पर पूर्णांक तेरह और एक अरुके उन्नीस
 घट करके उनमेंसे नौ खंड होते हैं ।

उदाहरण—प्रमाणराशि १०, फलराशि १; इच्छाराशि ९।

$$९ \times १ = ९; ९ - १९ = १० \text{ नौके प्रति विरलनरूपका प्रमाण ।}$$

$$१९ - २ \frac{१०}{३} = १३ \frac{२}{३} \text{ कुल विरलनरूप अकोंका प्रमाण ।}$$

अथ द्वानिरूप अक लाते हैं । जैसे— एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर
 यदि एककी द्वानि प्राप्त होती है तो एक त्रिभागसहित तीन विरलनस्थानोंके प्रति क्या प्राप्त
 होगा, इसप्रकार त्रैराशिक करके फलराशि एकसे इच्छाराशि एक त्रिभागसहित तीन विरलनका
 गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें प्रमाणराशि एक अधिक अधस्तन विरलनका भाग देने
 पर एकके उन्नीस खंड करने पर उनमें दश खंड लब्ध आते हैं । पुन पहले लब्ध आवे हुए
 दोको उसमें मिला देने पर सपूर्ण द्वानिरूप अक हो जाते हैं ।

उदाहरण—प्रमाणराशि १०; फलराशि १; इच्छाराशि १३;

$$\frac{१०}{३} \times १ = \frac{१०}{३}; \frac{१०}{३} - \frac{१९}{३} = \frac{१०}{३}, \frac{१०}{३} + २ = २ \frac{१०}{३} \text{ द्वानि अक ।}$$

अथवा, सपूर्ण द्वानिरूप विरलनस्थान एकनारमें लाते हैं । जैसे— एक अधिक
 अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एककी द्वानि प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमें

हेट्टिमिपरिलणाए तिणिण रूपाणि ओवट्टिदे एगरूण तेरहखडाणि कदे तत्थ णम खडाणि
हजति । एद पुच्चिल्लतिण्ह रूपाण पासे निरलिय एदस्सुपरि णम रूपाणि दादव्वाणि ।
अहया सच्चपक्खेवसलागाणि एगारेण आणिज्जते । तं जहा— रूवूणहेट्टिमिपरिलणमेच्छाणं
गंतूण जदि एगा अणहारपक्खेवसलागा लब्धमि तो उवरिमिपरिलणमिह केत्थियाओ
अणहारपक्खेवसलागाओ लभामो ति पमाणेण इच्छाए ओवट्टिदाए सच्चाओ पक्खेव-
सलागाओ लब्धमि । एदाओ उपरिमिपरिलणमिह पक्खिसत्ते इच्छिदअणहारकालो होदि ।
एण सच्चत्थ रामिपरिहाणिमिह जाणिऊण समकरण कायव्वं ।

अहया सामण्णअणहारकाल निरलेऊण एकेकस्स रूणस्स जगपदर समखड करिय
दिण्णे रूण पडि सामण्णणेरइयमिच्छाडडिदव्व पापोदि । तत्थ एगरूणवरिदसामण्णणेरइय-

प्रति क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार त्रैराशिक करके एक कम अधस्तन विरलनसे तीनको अपवर्तित
करने पर एकके तेरह खड करने पर उनमेंसे ना खण्ड लब्ध आते हैं । इसे पूर्वोक्त तीन
विरलन अकोंके पासमें विरलित करके इसके ऊपर नौ अरु दे देना चाहिये ।

उदाहरण— $4 \frac{1}{3} - 1 = 3 \frac{1}{3}$ प्रमाणराशि, १ फलराशि; ३ इच्छाराशि ।

$3 \times 1 = 3 - \frac{13}{3} = \frac{2}{3}$ तीन विरलनोंके प्रति तीन तीन रूपसे दिये हुए
 $\frac{2}{3}$ अकोंना अवहारकाल ।

अथवा, सपूर्ण प्रक्षेपरूप अवहारकालको एकवारमें लाते हैं । जैसे— एक कम अध-
स्तन विरलनमान रूगान जाकर यदि एक अवहारकाल प्रक्षेपशालाना प्राप्त होती है तो उपरिम
विरलनमें कितनी प्रक्षेपशालाकाए प्राप्त होंगी, इस प्रकार त्रैराशिक करके फलराशि एकसे
इच्छाराशि उपरिम विरलनको गुणित करके जो लब्ध आये उसमें एक कम अधस्तन विरलन-
मान प्रमाणराशिका भाग देने पर सपूर्ण अवहारकाल प्रक्षेपशालाकाए आ जाती है । इनको
उपरिम विरलनमें मिला देने पर इच्छित अवहारकाल होता है । इसीप्रकार सर्वत्र राशिकी
द्वानिमें जानकर समीकरण करना चाहिये ।

उदाहरण—प्रमाणराशि $4 \frac{1}{3}$, फलराशि १, इच्छाराशि १६,

$16 \times 1 = 16$, $16 - \frac{13}{3} = \frac{46}{3}$ प्रक्षेप अवहारकाल ।

$16 + \frac{46}{3} = 19 \frac{2}{3}$ इच्छित अवहारकाल ।

अथवा, सामान्य अवहारकालका विरलन करके ओर उस विरलित राशिके प्रत्येक
एकके प्रति जगप्रतरको समान खड करके देने पर प्रत्येक एकके प्रति सामान्य नारक
मिध्यादाष्टि जीवरशि प्राप्त होती है ।

चउत्थपुढविमिच्छाइद्विद्वं सेदितदियवग्गमूलादिछव्वग्गमूलाणि गुणिदे तत्थ जत्ति-
याणि रूपाणि तत्तियमेत्तसंडाणि घेत्तूण हवदि । तदियपुढविमिच्छाइद्विद्वं सेदितदिय-
वग्गमूलादिअट्टग्गमूलाणि अण्णोण्ण गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूपाणि तत्तियमेत्तसंडाणि
घेत्तूण पावदि । तदियपुढविमिच्छाइद्विद्वं तदियवग्गमूलादिदसवग्गमूलाणि अण्णोण्ण-
व्वन्त्थाणि कदे तत्थ जत्तियाणि रूपाणि तत्तियमेत्तसंडाणि घेत्तूण हवदि । पुणो एदाओ
छपुढविमिच्छाइद्विसडसलागाओ विवसभसूचीगुणिदसेदिविदियवग्गमूलादो सोधिदे
पढमपुढविमिच्छाइद्विसंडपमाणसलागा हवति । एव सामण्णअवहारकालमेत्तसामण्ण-
पोरइयमिच्छाइद्विद्वं सडसलागाओ पुव पुथ करिय दरिसेद्वंओ । पुणो एवं
ठविय पढमपुढविअवहारकालो उप्पाइज्जे । तं जहा— पढमपुढविमिच्छाइद्विसडसलागा-

चोथी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर छह वर्गमूलोंके परस्पर
गुणा करने पर वहा जितना प्रमाण उत्पन्न होये तन्मात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य खंडोंको लेकर
होता है । तीसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर आठ वर्ग-
मूलोंके परस्पर गुणा करने पर वहा जितना प्रमाण आवे तन्मात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य-
खंडोंको लेकर प्राप्त होता है । दूसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे
लेकर दश वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर वहा जितना प्रमाण आवे तन्मात्र सातवीं
पृथिवीके द्रव्य खंडोंको लेकर होता है ।

उदाहरण—सामान्य अवहारकालके एक विरलनके प्रति प्राप्त सामान्य राशि १३१०७२
के सातवीं पृथिवीके द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा खंड करने पर २५६ खंड हुए । उनमेंसे एक खंड प्रमाण
सातवीं पृथिवीका द्रव्य है । दो खण्ड प्रमाण छठीका, चार खण्ड प्रमाण पाचवीका, आठ
खण्ड प्रमाण चोथीका, १६ खण्ड प्रमाण तीसरीका और बत्तीस खण्ड प्रमाण दूसरीका द्रव्य
है । इसप्रकार ये खण्डशलाकाए ६३ होती हैं । यदि वर्गमूलोंके अपेक्षित तारतम्यसे
खण्डशलाकाए की जाय तो जो मूलमें कहा है तदनुसार खण्डशलाकाए आवेंगी ।

पुनः इन छह पृथिवीसंबंधी मिथ्यादृष्टि खण्डशलाकाओंको विष्कभसूची गुणित
जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलमेंसे घटा देने पर प्रथम पृथिवीसंबंधी मिथ्यादृष्टि द्रव्यके
खंडोंका जितना प्रमाण हो उतनी खंड शलाकाए लब्ध आती हैं ।

उदाहरण— $128 \times 2 = 256, 256 - 63 = 193,$

इसीप्रकार सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकालगुणित सामान्य
नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यमें खण्डशलाकाए पृथक् पृथक् निकाल करके दिखलाना चाहिये । पुनः
इसप्रकार खण्डशलाकाए स्थापित करके प्रथम पृथिवीका अवहारकाल उत्पन्न करते हैं । वह
इसप्रकार है—प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि खंडशलाकाओंसे यदि एक अवहारकालशलाका

मिच्छाद्द्विद्वय सत्तमपुढिमिच्छाद्द्विद्वयपमाणेण कम्मामो । त जहा-सेडिपिदियग्ग
मूलमनिदजगसेठीए जदि एक सत्तमपुढिमिच्छाद्द्विद्वयपमाण लब्धदि तो सामण-
णेरइयमिच्छाद्द्विद्वयम्हि केत्तिय लमामो त्ति फलेग इच्छ गुणिय पमाणेण भागे हिदे
विकरंभसच्चिगुणितसेडिपिदियवग्गमूलमेत्ताणि सत्तमपुढिमिच्छाद्द्विद्वयसडाणि आम
च्छति । एव सामणणेरइयअरहारकालरूपाणमुपरि द्विदमामणणेरइयरासी पत्तेप पत्तेय
सत्तमपुढिमिच्छाद्द्विद्वयपमाणेण कायवो । पुणो तत्थ एगरूपपरिदग्गडेसु सत्तम
पुढिमिच्छाद्द्विद्वयपमाण एगसडपमाण होदि । छद्मपुढिमिच्छाद्द्विद्वय सेडितदिय
वग्गमूलमेत्तसडाणि धेत्तूण भवदि । पुणो पचमपुढिमिच्छाद्द्विद्वय सेडितदियग्ग
मूलादिचउवग्गभलाणि गुणिते तत्थ जत्तियाणि रूपाणि तत्तियमेत्तसडाणि धेत्तूण हवदि ।

उदाहरण—१३१०७२ १३१०७२ सा ना मि रा
१ १ ३२७६८ चार

अथ एक विरलनके प्रति प्राप्त सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यको सातवीं पृथिवीके
मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणरूपसे करके धतलाते हैं । जैसे— जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलका जग
श्रेणीमें भाग देने पर यदि एकवार सातवा पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है तो
सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यमें कितना प्राप्त होगा, इसप्रकार त्रैराशिक करके फलराशिसे
इच्छाराशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें प्रमाणराशिका भाग देने पर जगश्रेणीके
द्वितीय वर्गमूलको विष्कम्भमूलसे गुणित करके जो लब्ध आवे उतने सातवीं पृथिवीके मिथ्या
दृष्टि द्रव्यके छड होते हैं ।

उदाहरण—प्रमाणराशि $\frac{६५३६}{१२८}$, फलराशि १; इच्छाराशि १३१०७२,

$$१३१०७२ \times १ = १३१०७२; १३१०७२ - \frac{६५३६}{१२८} = २५६ = १२८ \times २ छड$$

इसीप्रकार सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अथवाकालकी सूर्याके ऊपर स्थित प्रत्येक
सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिको सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणरूपसे
कर लेना चाहिये । परन्तु वहा पर एक विरलनके प्रति प्राप्त खंडोंमें सातवीं पृथिवीके
मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण एक छट प्रमाण होता है । छठी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य
जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलमात्र सातवा पृथिवीके द्रव्य खंडोंको लेकर होता है । पुन पाचवीं
पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर चार वर्गमूलोंके परस्पर गुणा
करने पर वहा जितना प्रमाण आवे तन्मान सातवा पृथिवीके द्रव्य खंडोंको लेकर होता है ।

हारकालो होदि । एणं निहाणेणुप्पण्णपक्खेवअवहारकाल सामण्णअवहारकालोमिह पक्खित्ते
 पढमपुढविमिच्छाडडिअवहारकालो होदि । एदमत्त्वपदमवहारिय अण्णत्त्व वि डहरामिपमा-
 णेण महहरामीओ काळण पक्खेवअवहारकालो सावेयत्तो । एत्थ गिरयगईए सट्ठिह्वी-
 ६५५३६ एद जगसेट्ठिपमाण । एद पि जगपदरपमाण ४२९४९६७२९६ । सामण्णे-
 र-
 द्यमिच्छाडडिनिस्समसई 'एमा २ । सामण्णअवहारकालो ३०७६८ । द्वय १३१०७२ ।
 पक्खेवअवहारकालो $\frac{२०६४३८४}{१९३}$ । पढमपुढविमिच्छाडडिअवहारकालो $\frac{८३८६०८}{१९३}$ ।
 लद्वपमाण ९८८१६ । विदियपुटविमिच्छाडडिअवहारकालो ४, द्वयं १६३८४ । तदिय-
 पुढविमिच्छाडडिअवहारकालो (८, द्वय ८१९२ । चउत्तपुढविमिच्छाडडिअवहारकालो)
 १६, द्वय ४०९६ । पचमपुढविमिच्छाडडिअवहारकालो ३२, द्वय २०४८ । छट्ठम-
 पुढविमिच्छाडडिअवहारकालो ६४, द्वयं १०२४ । सत्तमपुढविमिच्छाडडिअवहारकालो

इस विधिसे जो प्रक्षेप अवहारकाल उत्पन्न हो उसे सामान्य अवहारकालमें मिला देने
 पर प्रथम पृथिवीके मिथ्यादाष्टियोंका अवहारकाल होता है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{३०७६८}{१९३} + \frac{६५५३६}{१९३} + \frac{१३१०७२}{१९३} + \frac{२६३८४}{१९३} + \frac{८३८६०८}{१९३} + \frac{१०२८१७६}{१९३}$$

$$= \frac{२०६४३८४}{१९३} \text{ प्र अ का}$$

$$\frac{३०७६८}{१९३} + \frac{२०६४३८४}{१९३} = \frac{८३८६०८}{१९३} \text{ प्र पृ ऋ अर}$$

इसप्रकार इस अर्थपदका अवधारण नरके अन्यत्र भी वही राशिको छोटी राशिके प्रमा-
 णसे करके प्रक्षेप अवहारकाल साव लेना चाहिये। अत्र यहा नरकगतिकी सट्टि दी जाती है—

६' ५३६ जगत्रेणीका प्रमाण है । ४२९४९६७२९६ यह जगप्रतरका प्रमाण है । सामान्य
 नारक मिथ्यादाष्टि त्रिंशत्संख्यीका प्रमाण २ है । सामान्य नारक मिथ्यादाष्टि अवहारकालका
 प्रमाण ३२७६८ है । सामान्य नारक मिथ्यादाष्टि द्वय १३१०७२ है । प्रक्षेप अवहारकाल
 $\frac{२०६४३८४}{१९३}$ है । प्रथम पृथिवीका मिथ्यादाष्टि द्वयसंख्यी अवहारकाल $\frac{८३८६०८}{१९३}$ है । प्रथम
 पृथिवीमें लघ्वराशि मिथ्यादाष्टि राशिका प्रमाण ९८८१६ है । दूसरी पृथिवीका मिथ्यादाष्टि
 अवहारकाल ४ और द्वय १६३८४ है । तीसरी पृथिवीका मिथ्यादाष्टि अवहारकाल ८ और
 द्वय ८१९२ है । चौथी पृथिवीका मिथ्यादाष्टि अवहारकाल १६ और द्वय ४०९६ है । पाचवी
 पृथिवीका मिथ्यादाष्टि अवहारकाल ३२ और द्वय २०४८ है । छठी पृथिवीका मिथ्यादाष्टि
 अवहारकाल ६४ और द्वय १०२४ है । सातवीं पृथिवीका मिथ्यादाष्टि अवहारकाल १२८ और

हिंती जदि एग अन्हारकालसलागा लब्धदि तो सामण्णअन्हारकालमेचमामण्णणैरइय सडसलागाण किं लभामो ति पमाणेण उन्डाए ओउट्टिटाए पढमपुढपिमिन्डाइडि-अन्हारकालो होदि । अहया पढमपुढपिमिन्डाइडिसडसलागाहि सामण्णअन्हारकाल-मोउट्टिय लद्धेण छपुढपिसडसलागा गुणिदे पकरोवअन्हारकालो होदि । अहया लद्ध छप्पाडिरासिं कारुण छण्ह पुढयाण सग सगसडसलागाहि गुणिदे सग सगपकरोवअन्-

प्रात होती है तो सामान्य अन्हारकालमात्र नारक मिथ्यादृष्टि खटशलाकाओंकी कितनी खटशलाकाए प्राप्त होंगी, इसप्रश्नपर बराशिरु करके प्रमाणराशि प्रथम पृथिवीकी सघी राण्ड शलाकाओंसे उन्डाराशि सामान्य मिथ्यादृष्टि अन्हारकालगुणित सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि राण्डशलाकाओंको अपवर्तित करने पर प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अन्हारकाल होता है।

$$\text{उदाहरण—प्रमाणराशि १९३, फलराशि १, उन्डाराशि ३२७६८} \times २५६ = \frac{३२७६८ \times २५६}{१९३} = \frac{८३८८६०८}{१९३} \text{ प्र पृ मि अ}$$

अथवा, प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि खटशलाकाओंसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अन्हारकालको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे छह पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि खट शलाकाओंके गुणित करने पर प्रक्षेप अन्हारकाल होता है।

$$\text{उदाहरण—३२७६८ - १९३} = \frac{३२७६८}{१९३}, \frac{३२७६८}{१९३} \times ६३ = \frac{२०६४३८४}{१९३} \text{ प्र अ वा}$$

अथवा, प्रथम पृथिवी मिथ्यादृष्टि खटशलाकाओंसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अन्हारकालको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसकी छह प्रतिराशिया करके छह पृथिवियोंकी अपनी अपनी शलाकाओंसे गुणित करने पर अपना अपना प्रक्षेप अन्हारकाल होता है।

$$\begin{aligned} \text{उदाहरण—} & \frac{३२७६८}{१९३} \times १ = \frac{३२७६८}{१९३} && \text{सातवों पृथिवीकी अपेक्षा,} \\ & \frac{३२७६८}{१९३} \times २ = \frac{६५५३६}{१९३} && \text{छठी पृथिवीकी अपेक्षा,} \\ & \frac{३२७६८}{१९३} \times ३ = \frac{९८३०४२}{१९३} && \text{पाचवा पृथिवीकी अपेक्षा,} \\ & \frac{३२७६८}{१९३} \times ४ = \frac{१३१०७४}{१९३} && \text{चौथी पृथिवीकी अपेक्षा,} \\ & \frac{३२७६८}{१९३} \times ५ = \frac{१६४१०६८}{१९३} && \text{तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा,} \\ & \frac{३२७६८}{१९३} \times ६ = \frac{१९७१३९६}{१९३} && \text{दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा प्र अन्हारकाल}$$

‘खेत्तेण सेठीए असंखेज्जदिभागो । तिस्से सेठीए आयामो
असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ पढमादियाणं सेठिवग्गमूलाण
संखेज्जाणं अण्णोण्णवभासेण’ ॥ २२ ॥

एदस्म सुत्तस्म अत्थो वुच्ये । तं जहा—द्वयकालप्रमाणसुत्तेहि विदियादि-
छप्पुढादिमिच्छाड्डिजीवाण पमाण परूविदमसखेज्जमिदि । त च असखेज्ज पल्ल सायरगुल-
जगमेठि पदर लोगादिभेदेण अणेयत्रियप्पमिदि इम होदि चि ण जाणिज्जे, तदो सेठि
जगपदरादिउपरिमसत्ताणियत्ताणइमिदमाह ‘सेठीए अमखेज्जदिभागो’ चि । सेठीए
असंखेज्जदिभागो वि पल्ल सायर-रूपगुलादिभेएण अणेयत्रियप्पो चि सडअगुलादि-
हेड्डिमत्रियप्पपडिसेहड्ड ‘तिस्से सेठीए आयामो अमखेज्जाओ जोयणकोडीओ’ चि वुत्त ।
सेठीए असंखेज्जदिभागो चि पुरिसल्लिगणिदेसो तिस्से चि त्थील्लिगणिदेसो, तदो दोण्ह

क्षेत्रकी अपेक्षा द्वितीयादि छह पृथिवियोंमें प्रत्येक पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि
जीव जगश्रेणीके असख्यातमें भागप्रमाण है । उस जगश्रेणीके अमख्यातमें भागकी जो
श्रेणी है उसका आयाम अमख्यात कोटि योजन है, जिस असख्यात कोटि योजनका
प्रमाण, जगश्रेणीके सख्यात प्रथमादि वर्गमलोंके परस्पर गुणा करनेसे जितना प्रमाण
उत्पन्न हो, उतना है ॥ २२ ॥

अथ इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । यह इसप्रकार है—द्रव्यप्रमाण और कालप्रमाणके
प्ररूपण करनेवाले सूत्रोंद्वारा द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण ‘अस-
ख्यात है’ ऐसा यह आये है । परन्तु यह असख्यात पत्य, सागर, अगुल, जगश्रेणी, जगप्रतर
और गेरु आदिके भेदसे अनेक प्रकारका है, इसलिये इनमेंसे यहा यह असख्यात लिया गया
है, यह कुछ नहीं जाना जाता है । अतः जगश्रेणी और जगप्रतर आदि उपरिम सख्याका
नियन्त्रण अर्थात् निवारण करनेके लिये ‘द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि नारकी
जगश्रेणीके असख्यातमें भाग है’ यह कहा । जगश्रेणीका असख्यातवा भाग भी पत्य, सागर,
कल्प और अगुल आदिके भेदसे अनेक प्रकारका है, इसलिये सूत्रशुल आदि अधस्तन
विकल्पोंका निषेध करनेके लिये ‘उस श्रेणीका आयाम अमख्यात कोटि योजन है’ यह कहा ।

शुभा—‘सेठीए असंखेज्जदिभागो’ इसमें पुछिग निर्देश है और ‘तिस्से’ यह

१ द्वितीयादिवा सत्तम्भा मिथ्यात्थय श्रेण्यसम्ययमागभमिता । म चासरय्यमाग असख्यात योजन
कोष्य । स मि १, ८ विदियादिनादमअडडविदुभिनपददिदा सेण । गो जा १५३ मत्रिअणखेज्जा
ससाडु जहोचर तह प । पत्त २, १३

२ प्रविणु ‘अमागो’ इति पाठ । किं पुरत र्थायां ‘अमासवेवि’ लभ्यते ।

२८, द्रव्य ५१२' । विदियादिष्ठपुढविमिच्छाइष्टिद्वयसमूहो ३२२५६ ।

विदियादि जाव सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु मिच्छाइष्टी द्रव्य
प्रमाणेण केवडिया, अससेजा ॥ २० ॥

पदस्त सुचस्म आत्मोपद्रव्यपरुयसुत्तस्मेन उक्त्वाण कायव्य ।

अमखेजाससेजाहि ओसप्पिणिउस्सप्पिणीहि अवहिरति
कालेण ॥ २१ ॥

पदस्त वि सुत्तस्त आदेशोघकालप्रमाणपरुयसुत्तस्मेन उक्त्वाण कायव्य ।
प्राथो द्रव्यकालपरुयणाओ मूलाओ । कुदो ? सोदाराण णिणयाणुप्पायणादो । द्रव्य
परुयणादो कालपरुयणा सुहुमा, अससेजामसेअसरयात्रिसेसिदद्वयणिरुयणादो । इदाणि
द्रव्यकालपरुयणाहितो सुहुमसेत्तपरुयणद्व सुत्तमाह —

द्रव्य ५१२ है । दूसरी पृथिवीसे लेकर सातर्था पृथिवीतक छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका
समूह ३२२५६ है ।

दूसरी पृथिवीसे लेकर सातर्था पृथिवीतक प्रत्येक पृथिवीमें नारकियोंमें मिथ्यादृष्टि
जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असरयात है ॥ २० ॥

आदेशसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्ररूपण करनेवाले सूत्रके व्याख्यानके
समान इस सूत्रका व्याख्यान करना चाहिये ।

कालप्रमाणकी अपेक्षा दूसरी पृथिवीमें लेकर सातर्था पृथिवीतक प्रत्येक पृथिवीके
नारक मिथ्यादृष्टि जीव अमरयातामरयात जपमर्षिणियों और उत्तमर्षिणियोंके द्वारा
अपहत होते हैं ॥ २१ ॥

आदेशसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्ररूपण करनेवाले सूत्रके व्याख्यानके
समान इस सूत्रका भी व्याख्यान करना चाहिये । यहाँ यह जो द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा और
कालप्रमाणकी अपेक्षा द्वितीयादि छह पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि जीवराशिनी प्ररूपणा की है
यह सूत्र है, क्योंकि, श्रोताओंमें इस प्ररूपणाने निर्णय नहीं हो सकता है । फिर भी द्रव्य
प्ररूपणासे कालप्ररूपणा सूक्ष्म है, क्योंकि, कालप्ररूपणाके द्वारा असरयातामरयात सत्या
विशिष्ट द्रव्यका प्ररूपण किया गया है । अब द्रव्य और काल इन दोनों ही प्ररूपणाओंसे सूक्ष्म
क्षेत्रप्रमाणके प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

संनगं कदे विदियादिपुढविमिच्छाइट्टीण दव्यपमाणं होदि त्ति कध जाणिज्जदे ? आइ-
रियपरंपरागय अरिहद्धोवदेसादो जाणिज्जदि ।

वारस दस अट्टेव य मूला छत्तिय दुग च' गिरएसु ।

एकारस णव सत्त य पण य चउक्क च देवेसु ॥ ६७ ॥

एदासिं अग्रहारकालपरुणयगाहासुचादो वा परियम्मपमाणादो वा जाणिज्जदे ।

एदासिं पुढवीणं दव्यमाहप्पजाणाणगट्टु किंचि अत्थपरुणं कस्सामो । त जहा-
विदियपुढविमिच्छाइट्टिदव्यं तदियपुढविमिच्छाइट्टिदव्यादो ताव उप्पाइज्जदे । वारस-

दृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— आचार्य परंपरासे आये हुए अविरुद्ध उपदेशसे जाना जाता है कि इतने इतने वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर द्वितीयादि पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है। अथवा—

नारकियोंमें द्वितीयादि पृथिवियोंका द्रव्य लानेके लिये जगश्रेणीका चारहवा, दशवा, आठवा, छठा, तीसरा और दूसरा वर्गमूल अवहारकाल है और देवोंमें सानत्कुमार आदि पाच कल्पयुगलोंका द्रव्य लानेके लिये जगश्रेणीका ग्यारहवा, नौवा, सातवा, पाचवा और चौथा वर्गमूल अवहारकाल है ॥ ६७ ॥

इन अवहारकालोंके प्ररूपण करनेवाले इस गाथा सूत्रसे जाना जाता है। अथवा, परिकर्मके घचनसे जाना जाता है कि जगश्रेणीके प्रथमादि इतने इतने वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे द्वितीयादि पृथिवियोंका द्रव्य आता है।

विशेषार्थ— एक वर्गात्मक राशिके प्रथम आदि जितने वर्गमूल होंगे उनमेंसे जिस वर्गमूलका उक्त वर्गात्मक राशिमें भाग देनेसे जो लब्ध आयगा वह, जिस वर्गमूलका भाग दिया उस वर्गमूलतक प्रथमादि वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न होगी, उतना ही होगा। उदाहरणार्थ ६५५३६ में उसके चौथे वर्गमूल २ का भाग देनेसे ३२७६८ लब्ध आते हैं। अब यदि प्रथमादि चार वर्गमूलोंका परस्पर गुणा किया तो भी ३२७६८ प्रमाण ही राशि उत्पन्न होगी। ६५५३६ का पहला वर्गमूल २५६, दूसरा १६, तीसरा ४ और चौथा २ है। अब इनके परस्पर गुणा करनेसे $256 \times 16 \times 4 \times 2 = 32768$ ही आते हैं। पर नरकोंमें जो अंकसदृष्टिकी अपेक्षा राशिया यतलाई हैं उनके निकालनेमें कल्पित वर्गमूल लिये गये हैं, इसलिये ही यद्य यद्य नियम नहीं घटाया जा सकता है।

अब इन पृथिवियोंके द्रव्यके महत्त्वका ध्यान करानेके लिये किंचित् अर्थप्ररूपणा करते हैं। यह इसप्रकार है— उसमें भी पहले दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको तीसरी पृथिवीके

१ प्रतिपु 'दु पच' इति पाठ । इय गाथा पूर्वमपि ६६ कमाङ्गेनागता ।

२ तयो (देवे) एगार पञ्चसग-पण चउणियमूलमाजिदा सेगी । गो जी १६३

समानमहियरण णरिय चि सुत्तमिदममत्रद्वमिदि ? ण एस दोसो, तिस्से सेटीए असंखे-
ज्जदिभागस्म सेटीए वा आयामो चि पेन वत्तव्व, भिण्णाहियरणता विसेसणस्म फला
भावादो च । किंतु मेहीए अमरउज्जदिभागस्स जा सेती पती तिस्से सेटीए आयामो चि
वत्तव्वमिदि । असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ पि पदरंगुल घणगुलादिभेदेण असंखेज्ज
नियप्पाओ चि सेट्टिपढमग्गमूलादिहेट्टिमग्गपाडिमेहट्ट 'पढमादियाण सेट्टिपग्गमूलाण
संखेज्जाण अण्णोण्णव्वामेण' चि उच्च । तस्य मेट्टिपढमग्गमूलमादिं काऊण हेट्टा वारसण्ह
वग्गमूलाण अण्णोण्णव्वामो विदियपुट्टिणिगेइयमिन्नाइडिद्वयपमाण होदि । त चेन
आदिं करिय हेट्टा दसण्ह वग्गमूलाण अण्णोण्णव्वामे ऋदे तदियपुट्टिनिमिच्छाइडिद्वय-
पमाण हवदि । त चेन आदिं करिय अट्टण्ह वग्गमूलाण सग्गो चउत्थपुट्टिनिमिच्छाइडि
द्वयपमाण हवदि । छण्ह सेट्टिपग्गमूलाण सवग्गो पचमपुट्टिद्वय होदि । तिण्ह सग्गो
छट्टमपुट्टिद्वय होदि । दोण्ह सग्गो सत्तमपुट्टिद्वय होदि । एत्तियाण वग्गमूलाण

स्त्रीलिंग निर्देश है । अतः इन दोनों पदोंका समान अधिहरण नहीं है, इसलिये यह पूर्वा-
मूत्र असंबद्ध है ?

समाधान—यह कोई शेष नही है, क्योंकि, यहाँ पर 'तिस्से सेटीए' इस पदका
श्रेणीके असंख्यात भागका आयाम अथवा जगणैणिका आयाम ऐसा अर्थ उदाहरण चाहिये,
क्योंकि, इससे भिन्नाधिहरणत्व प्राप्त हो जाता है और विशेषणकी कोई सार्थकता नहीं रहती
है । किंतु प्रथम 'जगश्रेणीके असंख्यात भागकी जो श्रेणी अर्थात् पति हो उस श्रेणीका
आयाम' ऐसा अर्थ करना चाहिये । असंख्यात कोई योजन भी पतरागुल और घनागुल
आदिके भेदसे असंख्यात प्रकृतका है, इसलिये जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूल, द्वितीय वर्गमूल
आदि नीचेकी संख्याका प्रतिपेक्ष करनेके लिये सूत्रमें 'जगश्रेणीके प्रथमादि संख्यात वर्गमूलोंके
परस्पर गुणा करनेसे' इतना पद कहा है । उन्मेंसे यहाँ जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलसे लेकर
नीचेके बारह वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जितनी संख्या उत्पन्न हो उतना दूसरी पृथिवीके
नारक मिथ्यादृष्टि राशिमा प्रमाण है । तथा जगश्रेणीके उसी पहले वर्गमूलसे लेकर दश
वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर तीसरी पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है ।
तथा जगश्रेणीके उन्नीस प्रथम वर्गमूलसे लेकर आठ वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर जो
राशि आने उतना चौथी पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण है । तथा जगश्रेणीके
प्रथमादि छह वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना पाचवी पृथिवीके
मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण है । तथा जगश्रेणीके प्रथमादि तीनों वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे
जो राशि उत्पन्न हो उतना छठी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण है । तथा पहले और
दूसरे वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना सातवी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि
द्रव्यका प्रमाण है ।

शुद्धा—इतने इतने वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर द्वितीयादि पृथिवीयोंके मिथ्या

वर्गमूलेण एकारसवर्गमूल गुणिय तदियपुढविमिच्छाइद्विद्वन्मिह गुणिदे विदियपुढवि
मिच्छाइद्विद्वन् होदि । तसस गुणगारसस अद्वच्छेदणयमेचवार तदियपुढविमिच्छाइद्विद्व
दुगुणिदे' त्रिदियपुढविमिच्छाइद्विद्वन् होदि । अहना गुणगारद्वच्छेदणयसलागाओ
विरलिय त्रिग करिय अण्णोण्णवत्थरासिणा तदियपुढविमिच्छाइद्विद्वन्मिह गुणिदे
त्रिदियपुढविमिच्छाइद्विद्वन् होदि । जहा तीहि पयारेहि तदियपुढविद्वन्माओ विदिय
पुढविद्वन्मुप्पाइद तहा सेसचउपुढविद्वन्मेहिंतो तीहि तीहि पयारेहि त्रिदियपुढविद्वन्
मुप्पादेद्वन् । एवमुप्पादिदे पण्णारस भगा लद्धा भवति ।

मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणसे उत्पन्न करते हैं— जगध्रेणीके चारहवें वर्गमूलसे जगध्रेणीके ग्यारहवें
वर्गमूलको गुणित करके जो लघ आये उससे तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके गुणित
करने पर दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है । अथवा, उक्त गुणकारके
(चारहवें वर्गमूलसे ग्यारहवें वर्गमूलको गुणा करनेसे जो लघ आया उसके) जितने
अर्धच्छेद हैं उतनीघार तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके द्विगुणित करने पर भी दूसरी
पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है । अथवा, उक्त गुणकारकी अर्धच्छेद शलाका
आंका विरलन करके ओर उनको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो
उससे तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके गुणित कर देने पर भी दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि
द्रव्यका प्रमाण होता है । यहा जिसप्रकार उक्त तीन प्रकारसे तीसरी पृथिवीके द्रव्यसे दूसरी
पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न किया है, उसीप्रकार चौथी आदि शेष चार पृथिवियोंके द्रव्यसे उक्त
तीन तीन प्रकारसे दूसरी पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न कर लेना चाहिये । इसप्रकार उत्पन्न करने
पर पद्रह भग प्राप्त होते हैं ।

विशेषार्थ— चौथी पृथिवीकी अपेक्षा दूसरी पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न करते समय
जगध्रेणीके नौवें वर्गमूलसे चारहवें वर्गमूलतक चार वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो
राशि उत्पन्न हो उससे चौथी पृथिवीके द्रव्यको गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका द्रव्य आता
है । पाचवी पृथिवीकी अपेक्षा जगध्रेणीके सातवें वर्गमूलसे लेकर चारहवें वर्गमूलतक छह
वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे पाचवी पृथिवीके द्रव्यको गुणित
करने पर दूसरी पृथिवीका द्रव्य आता है । छठी पृथिवीकी अपेक्षा जगध्रेणीके चौथे वर्गमूलसे
लेकर चारहवें वर्गमूलतक नौ वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे छठी
पृथिवीके द्रव्यको गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका द्रव्य आता है । सातवी पृथिवीकी
अपेक्षा जगध्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर चारहवें वर्गमूलतक दश वर्गमूलोंके परस्पर
गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे सातवी पृथिवीके द्रव्यके गुणित करने पर
दूसरी पृथिवीका द्रव्य आता है । गुणकार राशिके अर्धच्छेदोंका विरलनादि करते समय

पृथिवीका द्रव्य लाते समय तीसरेसे लेकर छठे तक चार वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे पाचवी पृथिवीके द्रव्यके भाजित करने पर क्रमश छठी और सातवी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है। छठी पृथिवीकी अपेक्षा सातवी पृथिवीका द्रव्य लाते समय तीसरे वर्गमूलसे छठी पृथिवीके द्रव्यके भाजित करने पर सातवी पृथिवीका द्रव्य आता है। चौथी, पाचवी, उठी और सातवी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी पृथिवीका द्रव्य लाते समय चौथीकी अपेक्षा नौव और दशवें वर्गमूलका, पाचवीकी अपेक्षा सातवसे लेकर दशवें तक चार वर्गमूलोंका छठीकी अपेक्षा चौथेसे लेकर दशवेंतक सात वर्गमूलोंका और सातवीकी अपेक्षा तीसरेसे लेकर दशवेंतक आठ वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे चौथी, पाचवी, छठी और सातवीके द्रव्यके गुणित कर देने पर क्रमश चौथी, पाचवी, उठी और सातवी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी पृथिवीका द्रव्य आता है। पाचवी, छठी और सातवी पृथिवीकी अपेक्षा चौथी पृथिवीका द्रव्य लाते समय पाचवीकी अपेक्षा सातवें और आठवें वर्गमूलोंका, छठीकी अपेक्षा चौथेसे लेकर आठवें तक पांच वर्गमूलोंका, सातवीकी अपेक्षा तीसरेसे लेकर आठवेंतक छह वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करके जो जो राशि आवे उस उससे पाचवी, छठी और सातवी पृथिवीके द्रव्यके गुणित करने पर क्रमश पाचवी, छठी और सातवी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा चौथी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है। छठी और सातवी पृथिवीकी अपेक्षा पाचवी पृथिवीका द्रव्य लाते समय छठीकी अपेक्षा चौथेसे लेकर छठेतक तीन वर्गमूलोंका और सातवीकी अपेक्षा तीसरेसे लेकर छठेतक चार वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करके जो जो राशि आवे उस उससे छठी और सातवी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके गुणित करने पर क्रमश उठी और सातवी पृथिवीकी अपेक्षा पाचवी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है। तथा सातवी पृथिवीके द्रव्यको तीसरे वर्गमूलसे गुणित करने पर सातवी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा छठी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है। पहले जहा ऊपरकी पृथिवियोंसे नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य उत्पन्न करते समय जो जो भागहार वह आवे है उस उसके अर्धच्छेद करके तत्प्रमाण भाज्य राशिके आधे आधे करने पर भी नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य आ जाता है। अथवा, अर्धच्छेदप्रमाण दो रक्षकर उनके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि आवे उसका भाज्य राशिमें भाग देने पर भी नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य आ जाता है। उसीप्रकार नीचेकी पृथिवियोंसे ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य लाते समय जहां जो गुणहार हो उसके अर्धच्छेदोंका जितना प्रमाण हो उतनीवार गुण्य राशिके दूने दूने करने पर ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य आता है। अथवा उक्त अर्धच्छेदप्रमाण दो रक्षकर उनके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि हो उससे गुण्य राशिके गुणित कर देने पर भी ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य आ जाता है। इसप्रकार ये कुल भग १०८ दृष्ट इनमें दूसरी पृथिवीके १८ भग मिला देने पर सातों पृथिवियोंके द्रव्य निकालनेके १२६ भग होते हैं।

आता है, इसका योडासा विवेचना मृतम ही किया है। और यहा यद भी कहा है कि इसीप्रकार तृतीयादि पृथिवियोंके द्रव्यके उत्पन्न करनेसे कुत्र १०६ भग होते हैं। उनमेंसे जिन १८ भगोंसे दूसरी पृथिवीका द्रव्य आता है उन १८ भगोंको १२६ मेंसे कम कर देने पर दोष १०८ भग रहते हैं। इसलिये आगे उर्दा १०८ भगोंका स्पष्टीकरण किया जाता है।

द्वितीयादि छह पृथिवियोंकी अपेक्षा पहली पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न करते समय दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा बारहवें वर्गमूलसे, तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा दशवें वर्गमूलसे, चौथी पृथिवीकी अपेक्षा आठवें वर्गमूलसे, पाचवी पृथिवीकी अपेक्षा छठे वर्गमूलसे, छठी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरे वर्गमूलसे और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा दूसरे वर्गमूलसे पहले नरक्की मिथ्यादृष्टि विश्वभ्रमरूपीके गुणित करने पर जो लघ्न आवे उससे द्वितीयादि पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके पृथक् पृथक् गुणित करने पर प्रथम द्वितीयादि पृथिवियोंकी अपेक्षा पहली पृथिवीका द्रव्य आता है। पहली पृथिवीके द्रव्यकी अपेक्षा तीसरी, चौथी, पाचवी, छठी और सातवीं पृथिवीका द्रव्य लाते समय पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विश्वभ्रमरूपीसे पृथक् पृथक् दशवें, आठवें, छठे, तीसरे और दूसरे वर्गमूलको गुणित करके जो जो लघ्न आवे उस उससे पहली पृथिवीके द्रव्यके भाजित करने पर पहली पृथिवीकी अपेक्षा प्रथम तीसरी, चौथी, पाचवी, छठी और सातवीं पृथिवीका द्रव्य होता है। दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी पृथिवीका द्रव्य लाते समय ग्यारहवें और बारहवें वर्गमूलका, चौथी पृथिवीका द्रव्य लाते समय नौवें लेकर बारहवें तक चार वर्गमूलोंका, पाचवी पृथिवीका द्रव्य लाते समय सातवेंसे लेकर बारहवें तक छह वर्गमूलोंका, छठी पृथिवीका द्रव्य लाते समय चौथेसे लेकर बारहवें तक नौ वर्गमूलोंका, सातवीं पृथिवीका द्रव्य लाते समय तीसरेसे लेकर बारहवें तक दश वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि आवे उस उसका भाग दूसरी पृथिवीके द्रव्यमें देने पर प्रथम दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी, चौथी, पाचवी, छठी और सातवीं पृथिवीका द्रव्य आता है। तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा चौथी पृथिवीका द्रव्य लाते समय नौवें और दशवें वर्गमूलका, पाचवी पृथिवीका द्रव्य लाते समय सातवेंसे लेकर दशवें तक चार वर्गमूलोंका, छठीका द्रव्य लाते समय चाबेसे लेकर दशवें तक सात वर्गमूलोंका और सातवीं पृथिवीका द्रव्य लाते समय तीसरेसे लेकर दशवें तक आठ वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे तीसरी पृथिवीके द्रव्यके भाजित करने पर प्रथम चौथी, पाचवी, छठी और सातवीं पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है। चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा पाचवी पृथिवीका द्रव्य लाते समय सातवें और आठवें वर्गमूलका, छठी पृथिवीका द्रव्य लाते समय चौथेसे लेकर आठवें तक पांच वर्गमूलोंका, सातवीं पृथिवीका द्रव्य लाते समय तीसरेसे लेकर आठवें तक छह वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके भाजित करने पर प्रथम पाचवी, छठी और सातवीं पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य उत्पन्न होता है। पाचवी पृथिवीकी अपेक्षा छठी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य लाते समय चौथे, पाचवे और छठे वर्गमूलका तथा सातवीं

पृथ्वीअसंजदसम्माइडिअवहारकालो होदि । तम्हि आनलियाए असखेज्जदिभागेण गुणिदे पदमपुठविसम्माभिच्छाइडिअवहारकालो होदि । तम्हि सपेज्जरूपेहिं गुणिदे सासणसम्माइडिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असखेज्जदिभागेण गुणिदे विदियाए असंजदसम्माइडिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे सम्माभिच्छाइडिअवहारकालो होदि । तम्हि सपेज्जरूपेहिं गुणिदे सासणसम्माइडिअवहारकालो होदि । एवं तदियादि जाअ सत्तमपुठवि त्तिअवहारकाला परिवार्डीए उप्पाएदत्ता । एदेहि अवहारकालेहिं पलिदोअमस्सुअरि खडिदादीण ओघमगो ।

भागाभाग द्वयपमाणविसयणिणयजणह वत्तइस्सामो । सन्वजीवरासिस्स अणतेसु भागेषु कदेषु तत्थ बहुभागा तिरिक्खा हँति । सेसस्स अणतेसु भागेषु कदेषु तत्थ बहुभागा सिद्धा हँति । सेसस्स असपेज्जेसु भागेषु कदेषु तत्थ बहुभागा देवा हाति । सेसस्स असंखेज्जेसु भागेषु कदेषु तत्थ बहुभागा गेरइया हँति । सेसगमगो मणुसा हवति । पुणो गेरइयरासिस्स असंखेज्जेसु खडेसु कदेषु तत्थ बहुभागा पदमपुठवि-

सम्यग्दृष्टि जीवोंका अवहारकाल होता है । उस पहली पृथिवीके असयतसम्यग्दृष्टिसंघन्धी अवहारकालको आवलीके असत्प्रातर्वे भागसे गुणित करने पर प्रथम पृथिवीके सम्यग्मिथ्या दृष्टि जीवोंका अवहारकाल होता है । उस पहली पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंघन्धी अवहारकालको सत्प्रातसे गुणित करने पर प्रथम नरकका सासादनसम्यग्दृष्टिसंघन्धी अवहारकाल होता है । पहले नरकके सासादनसम्यग्दृष्टिसंघन्धी अवहारकालको आवलीके असत्प्रातर्वे भागसे गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका असयतसम्यग्दृष्टिसंघन्धी अवहारकाल होता है । दूसरी पृथिवीके असयतसम्यग्दृष्टिसंघन्धी अवहारकालको आवलीके असत्प्रातर्वे भागसे गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंघन्धी अवहारकाल होता है । उस दूसरी पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंघन्धी अवहारकालको सत्प्रातसे गुणित करने पर दूसरी पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसीप्रकार तीसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक अवहारकाल परिपाटी क्रमसे उत्पन्न कर लेना चाहिये । इन अवहारकालोंके द्वारा पद्योपमके ऊपर खडित आदिकका कथन सामान्य प्ररूपणके समान है ।

अथ द्वयपमाणविषयक निर्णयका ज्ञान करानेके लिये भागाभागको घतलाते हैं— सपूर्ण जीवराशिके अनन्त भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग तिर्यच होते हैं । शेष एक भागके अनन्त भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सिद्ध होते हैं । शेष एक भागके असत्प्रात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण देव होते हैं । शेष एक भागके असत्प्रात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण नारकी होते हैं । शेष एक भागप्रमाण मनुष्य होते हैं । पुन नारक जीवराशिके असत्प्रात खड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि जीव

सासणसम्माइडिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइडि ति ओघं ॥२३॥

पलिदोमसस असखेज्जदिभागत पडि विसेसामावादो विदियादिपुढविगुणपडि-
वण्णाण परूवणा ओघमिदि युत्ता दव्वट्टियसिस्साणुग्गहट्ट । पज्जपट्टियणण पुण अ-
लविज्जमाणे विसेसो अत्थि चेव, अण्णाहा एग्गपुढविगुणपडिवण्णाण सत्तपमाणणवत्था
च दुप्पडिसेज्जा पसज्जदे । त गुणपडिवण्णजीवविसेस पुच्चाइरियाणमनिरुद्धोवएसेण
आइरियपरपरागदेण वत्तइस्सामो । त जहा— पुच्चमुप्पाइयसामण्णेइयअसजदसम्माइडि
अपहारकालमात्रियाण असमेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्ध तम्मिह चेव पक्खित्ते पढम

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानतक प्रत्येक
गुणस्थानमें द्वितीयादि छह पृथिवियोंमेंसे प्रत्येक पृथिवीके नारकी जीव सामान्य
प्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ २३ ॥

विशेषार्थ— इस सूत्रमें 'द्वयपमाणेण वेरडिया' अर्थात् द्रव्यप्रमाणसे कितने हैं? ऐसा
पृच्छावाक्य नहीं पाया जाता जिससे सूत्रसरया २ की टीकामें जो उक्त पृच्छावाक्यका फल
स्वकर्तृत्वनिरादरणपूर्वक आत्मकर्तृत्वप्रतिपादन बतलाया है उसकी यहा आभाशा रह जाती
है। तथापि सूत्र सर्वेध सक्षेपार्थ हुआ करते हैं और उनमें यह सावत्रिक नियम है कि 'सूत्रेपरट्ट
पद सूत्रान्तरादनुयतनीय सर्वत्र' अर्थात् जो अपेक्षित पद प्रस्तुत सूत्रमें न पाया जाय उसकी
अन्य सूत्रोंसे अनुवृत्ति सर्वत्र कर लेना चाहिये। इसप्रकार प्रस्तुत सूत्रमें भी उक्त पृच्छा
पदकी अनुवृत्ति हो जाती है। आगे भी जहा कहा उक्त पद न पाया जाय वहा इसी नियमका
अधिकार समझ लेना चाहिये।

द्वितीयादि गुणस्थानोंकी सामान्य सख्या और द्वितीयादि पृथिवियोंमें गुणस्थान
प्रतिपन्न जीवोंकी सख्या, ये राशिया पल्योपमके असंख्यातवें भागत्वके प्रति समान हैं, इसलिये
द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा रखनेवाले शिष्योंके अनुग्रहके लिये द्वितीयादि पृथिवियोंके गुणस्थान
प्रतिपन्न जीवोंकी सख्या सामान्य प्ररूपणाके समान है, ऐसा कहा। पर्यायार्थिक नयका
अवलम्बन करने पर तो गुणस्थानप्रतिपन्न सामान्य नारकी जीवोंकी सख्या और द्वितीयादि
पृथिवियोंके गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंकी सख्या, इन दोनोंमें विशेष है ही। यदि ऐसा नहीं माना
जाय तो एक पृथिवीके गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंकी सख्या और सातों पृथिवियोंके गुणस्थान
प्रतिपन्न जीवोंकी सख्या एकसी हो जायगी जिसके निषेधके दुष्पर होनेका प्रसंग आ जाता है।
अथ गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंके उस विशेषको आचार्य परंपरासे आये हुए पूर्वोक्तार्थोंके अवि-
रुद्ध उपदेशके अनुसार बतलाते हैं। यह इसप्रकार है—

सामान्य नारक असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवधारकाल जो पदले उत्पन्न करके बतला
भाये है, उसे आचल्यके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध भाये उसे उसी नारक
सामान्य असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवधारकालमें ही मिला देने पर प्रथम पृथिवीके असयत

सूची । अहवा सेढीए असखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि सेढिपढमउगमूलाणि । को पडिभागो ? सगविक्खभसूचीउगो घणगुलपढमउगमूल ना । सेढी असखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविक्खभसूई । दव्वमसखेज्जगुण । को गुणगारो ? विक्खभसूई । पदरमसखेज्जगुण । को गुणगारो ? अउहारकालो । लोगो असखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । सासणसम्माइड्ढि सम्मामिच्छाड्ढि-असंजदसम्माइड्ढीणमोघसत्थाणमंगो । एउं चैव पढमाए पुढवीए । भिदियाए पुढवीए सव्वत्थोरो मिच्छाड्ढिअउहारकालो । तस्सेव दव्वमसखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगदव्वस्म असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअउहारकालो । अहवा सेढीए असखेज्जदिभागो असखेज्जजाणि सेढिपढमउगमूलाणि । को पडिभागो ? सगअउहारकालउगो सेढिएकारसउगमूलं वा । सेढी असखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सेढिवारसवगमूलं । पदरो असखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । लोगो

क्या है ? अपने अउहारकालका असख्यातवा भाग है । प्रतिभाग क्या है ? अपनी विक्खभसूची प्रतिभाग है । अथवा, जगश्रेणीका असख्यातवा भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपनी विक्खभसूचीका वर्ग प्रतिभाग है । अथवा, उनागुलका प्रथम वर्गमूल प्रतिभाग है । सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे जगश्रेणी असख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विक्खभसूची गुणकार है । जगश्रेणीसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्य असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विक्खभसूची गुणकार है । सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगप्रतर असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे घनलोक असख्यातगुणा है ? गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । सामान्य नारक सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व सामान्य स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये । इसीप्रकार पहली पृथिवीमें स्वस्था अल्पबहुत्व है । दूसरी पृथिवीमें मिथ्यादृष्टि अवहारकाल सबसे स्तोरु है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण अवहारकालसे असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने द्रव्यका असख्यातवा भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अउहारकाल प्रतिभाग है । अथवा, जगश्रेणीका असख्यातवा भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपने अवहारकाल (चारद्वैत वर्गमूलका) वर्ग अथवा जगश्रेणीका ग्यारहवा वर्गमूल प्रतिभाग है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगश्रेणी असख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका चारहवा वर्गमूल गुणकार है । जगश्रेणीसे जगप्रतर असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । जगप्रतरसे घनलोक असख्यातगुणा है । गुणकार

मेच्छाइद्वी होंति । सेसस्त असरेज्जेसु खड्डेसु कदेसु तत्थ बहुभागा विदियपुढवि मेच्छाइद्वी होंति । एव तदिय चउत्थ पंचम उट्ट-सत्तमपुढीण अचामोहेण भागभागो हायवो । पुणो सेसस्त असरेज्जेसु भागेषु कदेसु तत्थ बहुभागा पढमाए पुढवीए असजदसम्माइट्ठिणो हवति । सेसस्त असरेज्जेसु भागेषु कदेसु तत्थ बहुभागा पढम पुढानिसम्माभिच्छाइद्विणो हवति । सेसस्त सरेज्जेसु भागेषु कदेसु तत्थ बहुभागा पढमपुढानिसासणसम्माइट्ठिणो हवति । सेसस्त असरेज्जेसु भागेषु कदेसु तत्थ बहुभागा विदियपुढविअसजदसम्माइट्ठिणो हवति । सेसस्त असरेज्जेसु भागेषु कदेसु तत्थ बहुसुडा तत्थतणसम्माभिच्छाइद्विणो हवति । सेसस्त सरेज्जेसु भागेषु कदेसु तत्थ बहुभागा तत्थतणसासणसम्माइट्ठिणो हवति । एव तदियादि जाव सत्तमपुढवि त्ति गुणपडिवण्णाण भागाभागो कायवो । एव भागाभागो समचो ।

अप्पावहुग त्तिविह, सत्थाण परत्थाणं सच्चपरत्थाणं चेदि । तत्थ सत्थाणप्पा वहुग बुच्चदे । सच्चत्थोवा सामण्णणेरइयमिच्छाइद्विविकल्पमसूची । अवहारकालो असरेज्ज गुणो । को गुणगारो ? अवहारकालस्त असरेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगविकल्प

होते है । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । इसीप्रकार तीसरी, चौथी, पाचवी छठी और सातवीं पृथिवीकी जीवराशिका सावधानीसे भागाभाग कर लेना चाहिये । पुन सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके असख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पहली पृथिवीके असत्यसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पहली पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । शेष एक भागके सख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पहली पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं । शेष एक भागके असख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके असत्यसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं । शेष एक भागके असख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । शेष एक भागके सख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं । इसीप्रकार तीसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका भागाभाग करना चाहिये ।

इसप्रकार भागाभाग समाप्त हुआ ।

अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है, स्वस्थान अल्पबहुत्व, परस्थान अल्पबहुत्व और सर्व परस्थान अल्पबहुत्व । उनमेंसे पहले स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन करते हैं— सामान्य नारक मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कभसूची सबसे स्तोक है । सामान्य नारक मिथ्या दृष्टियोंका अवहारकाल सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि विष्कभसूचीसे असख्यातगुणा है । गुणकार

अप्यपणो अवहारकाले जाणिऊण वचंवं ।

सव्यपरत्थाणप्पावहुग पत्तइस्सामो । सव्यत्थोपो पढमपुढविअसजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । सम्मामिन्डाइट्ठिअवहारकालो असखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आरलियाए असखेज्जदिभागो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो सखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सखेज्जा समयया । तदो विदियपुढविअसजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आरलियाए असखेज्जदिभागो । सम्मामिन्डाइट्ठिअवहारकालो असखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो सखेज्जगुणो । एव जाण सत्तमाए पुढवीए सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो त्ति णेयव्वो । तस्मेव दव्वमसखेज्जगुण । सम्मामिन्डाइट्ठिअवहारकालो सखेज्जगुण । असजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असखेज्जगुण । को गुणगारो ? आरलियाए असखेज्जदिभागो । एव पडिलोमण णेदव्व जाण पढमपुढविअसजदसम्माइट्ठिअवहारकालो पत्तमिदि । तदो पल्लोमणोपमसखेज्जगुणं । तदो पढमपुढविअसजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असखेज्जगुणो । सामण्णणेरइयमिन्डाइट्ठिअवहारकालो असखेज्जगुणो । तदो विदियपुढविअसजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असखेज्जगुणो ।

विशेष हे कि अपना अपना अवहारकाल जानकर ही कथन करना चाहिये ।

अब सर्व परस्थान अरूपदृष्ट्यको घतलाते हैं - पहली पृथिवीके असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सखे स्तोत्र है । उससे पहली पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आचलीका असख्यातवा भाग गुणकार है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे पहली पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सख्यात समय गुणकार है । पहली पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे दूसरी पृथिवीके असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आचलीका असख्यातवा भाग गुणकार है । दूसरी पृथिवीके असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे चर्हके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे चर्हके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सख्यातगुणा है । इसीप्रकार सातवीं पृथिवीतक सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालतक ले जाना चाहिये । सातवीं पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे उर्द्धाका द्रव्य असख्यातगुणा है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे चर्हके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य सख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे चर्हके असयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आचलीका असख्यातवा भाग गुणकार है । इसीप्रकार उत्तरीचर प्रतिलोम पद्धतिसे जब पहली पृथिवीके असयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य प्राप्त होवे तब तक ले जाना चाहिये । पहली पृथिवीके असयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे पद्योपम असख्यातगुणा है । पद्योपमसे पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी विष्कभसूची असख्यातगुणी है । उक्त विष्कभसूचीसे सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी विष्कभसूची विशेष अधिक है । सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी विष्कभसूचीसे दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा

असखेज्जगुणो । को गुणगारो ? भेदी । सासणसम्माइड्डि सम्मामिच्छाइड्डि-असजदसम्मा
इट्ठीणमोधमत्थाणभगो । तदियादि जाव सत्तमपुट्ठवि त्ति एव चैव सत्थाणप्पाबहुग
वत्तव्व । णवरि अप्पप्पणो अणहारकाले जाणित्ठण भाणिट्ठव्व ।

परत्थाणप्पाबहुग वत्तइस्सामो । सव्वत्थोपो असजदसम्माइड्डिअणहारकालो । एव
जाव पलिदोमो त्ति णेट्ठव्व । पलिदोममादो उवरि सामण्णणेरइयमिच्छाइड्डिनिस्समसई
असखेज्जगुणा । को गुणगारो ? निस्समसईए असखेज्जदिभागो । को पडिभागो ?
पलिदोम । अट्ठमं सूचिअगुलस्स असखेज्जदिभागो असखेज्जाणि सूचिअगुलपट्ठमवग्ग
मूलाणि । को पडिभागो ? पलिदोमगुणिदड्डअगुलविदियवग्गमूल । उवरि सत्थाणभगो ।
एव चैव पट्ठमाए पुट्ठवीए । विदियाए पुट्ठवीए सव्वत्थोपो असजदसम्माइड्डिअणहार-
कालो । एव जाव पलिदोमो त्ति णेट्ठव्वो । तदो मिच्छाइड्डिअणहारकालो असखेज्जगुणो ।
को गुणगारो ? वारसवग्गमूलस्स असखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोम । उवरि
सत्थाणभगो । एव तदियादि जाव सत्तमपुट्ठवि त्ति परत्थाणप्पाबहुग वत्तव्व । णवरि

फ्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । दूसरी पृथिवीके सासादासम्यग्दष्टि, सम्यग्मिथ्यादष्टि और
असयतसम्यग्दष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व सामान्य स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है ।
तीसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तक स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन इसीप्रकार करना
चाहिये । विशेष यह है कि प्रत्येक पृथिवीका स्वस्थान अल्पबहुत्व कहते समय अपने अपने
अवधारकालको जानकर उसका कथन करना चाहिये ।

अब परस्थान अल्पबहुत्वको धतलाते हैं— असयतसम्यग्दष्टि अवधारकाल सखे
स्तोक है । उससे सम्यग्मिथ्यादष्टिना, उससे सासादनसम्यग्दष्टिका अवधारकाल, इसप्रकार
अल्पबहुत्व कहते हुए पल्योपम तक ले जाना चाहिये । पल्योपमके ऊपर सामान्य नारक
मिथ्यादष्टि विष्कभसूची असत्प्रातगुणी है । गुणकार फ्या है ? विष्कभसूचीका असत्प्रातवा
भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपम प्रतिभाग है । अथवा, सूच्यगुलका असत्प्रातवा
भाग गुणकार है जो सूच्यगुलके असत्प्रात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ?
पल्योपमसे सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलके गुणित करने पर जो लब्ध आवे उतना प्रतिभाग
है । इस विष्कभसूचीके ऊपर परस्थान अल्पबहुत्व स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना
चाहिये । इसीप्रकार पहली पृथिवीमें परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये ।

दूसरी पृथिवीमें असयतसम्यग्दष्टिका अवधारकाल सखे स्तोक है । इसीप्रकार
उत्तरोत्तर अल्पबहुत्व कहते हुए पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे दूसरी पृथिवीके
मिथ्यादष्टियोंका अवधारकाल असत्प्रातगुणा है । गुणकार फ्या है ? जगश्रेणीके वारहवें
परममूलका असत्प्रातवा भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपम प्रतिभाग है । इसके
ऊपर अल्पबहुत्व स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये । इसीप्रकार तीसरी
पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । इतना

अससेज्जगुण । को गुणगारो ? तदियवग्गमूल । पचमपुढमिचिआइड्डिद्व्व अससेज्जगुण । को गुणगारो ? चउत्थ पचम छट्टमग्गाणि अण्णोण्णगुणिदाणि । अह्मा सेट्ठितदियवग्गमूलस्म अससेज्जदिभागो अससेज्जाणि सेट्ठिचउत्थवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? छट्टमवग्गमूल । चउत्थपुढमिचिआइड्डिद्व्वमससेज्जगुण । को गुणगारो ? अण्णोण्णगुणिदसेट्ठिमत्तम-अट्टम-वग्गमूलाणि । अह्वा छट्टमवग्गमूलस्म अससेज्जदिभागो अमसेज्जाणि सत्तमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? अट्टमवग्गमूल । तदियपुढमिचिआइड्डिद्व्वमससेज्जगुण । को गुण-गारो ? अण्णोण्णगुणिदसेट्ठिणम दसमवग्गमूलाणि । अह्मा अट्टमवग्गमूलस्म अमसेज्जदि भागो अमसेज्जाणि णमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? दसमवग्गमूल । निट्ठियपुढमि चिआइड्डिद्व्वमससेज्जगुण । को गुणगारो ? अण्णोण्णचमत्वेकारस-वारसवग्गमूलाणि । अह्वा दसमवग्गमूलस्म अससेज्जदिभागो अससेज्जाणि एक्कारमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? वारसवग्गमूल । सामण्णणेरडयमिचिआइड्डिअनहारकालो अससेज्जगुणो । को

मिथ्यादृष्टि द्रव्य असत्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका तीसरा वर्गमूल गुणकार है । छठवाके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पाचवी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असत्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके चौथे, पाचवे ओर छठवे वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा, जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलका असत्यातवा भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असत्यात चौथे वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगश्रेणीका छठा वर्गमूल प्रतिभाग है । पाचवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे चावी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असत्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके सातवें ओर आठवें वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा, जगश्रेणीके छठवें वर्गमूलका असत्यातवा भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असत्यात सप्तम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगश्रेणीका आठवा वर्गमूल प्रतिभाग है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे तीसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असत्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके नौवें और दशवें वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा, जगश्रेणीके आठवें वर्गमूलका असत्यातवा भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असत्यात नौवें वर्गमूल प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगश्रेणीका दशवा वर्गमूल प्रतिभाग है । तीसरीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे दूसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असत्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके ग्यारहवें और बारहवें वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो सप्तप्रमाण गुणकार है । अथवा, जगश्रेणीके दशवें वर्गमूलका असत्यातवा भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असत्यात ग्यारहवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगश्रेणीका बारहवा वर्गमूल प्रतिभाग है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे सामान्य नारकियोंका मिथ्यादृष्टि

कालो असखेज्जगुणो । को गुणगारो ? वारसवग्गमूलस्स असखेज्जदिभागो असखेज्जाणि
 तेरसग्गमूलाणि । तस्स को पडिभागो ? घणगुलनिदियग्गमूल । तदियपुढविमिच्छा
 इड्डिअपहारकालो असखेज्जगुणो । को गुणगारो ? दममग्गमूलस्स असखेज्जदिभागो
 असखेज्जाणि एक्कारसवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? सेडिनारसग्गमूल । चउत्थपुढवि-
 मिच्छाइड्डिअवहारकालो असखेज्जगुणो । को गुणगारो ? अट्टमग्गमूलस्स असखेज्जदि-
 भागो असखेज्जाणि णममग्गमूलाणि । को पडिभागो ? दसमग्गमूल । पचमपुढवि-
 मिच्छाइड्डिअवहारकालो असखेज्जगुणो । को गुणगारो ? छट्ठग्गमूलस्स असखेज्जदि-
 भागो असखेज्जाणि सत्तमग्गमूलाणि । तस्स को पडिभागो ? अट्टमवग्गमूल । छट्ठ
 पुढविमिच्छाइड्डिअवहारकालो असखेज्जगुणो । को गुणगारो ? तदियवग्गमूलस्स अस-
 खेज्जदिभागो असखेज्जाणि चउत्थग्गमूलाणि । को पडिभागो ? इट्ठग्गमूल ।
 सत्तमपुढविमिच्छाइड्डिअवहारकालो असखेज्जगुणो । को गुणगारो ? तदियग्गमूल ।
 तस्सेव दन्नमसंखेज्जगुण । को गुणगारो ? सेडिपढमग्गमूल । छट्ठपुढविमिच्छाइड्डिअव्यं

है । गुणकार क्या है ? जगध्रेणाके वारहव चर्गमूलका असख्यातवा भाग गुणकार है जो
 जगध्रेणीके असख्यात तेरहवें चर्गमूलप्रमाण है । उसका प्रतिभाग क्या है ? घनागुलका तृतीय
 चर्गमूल प्रतिभाग है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि
 योंका अवहारकाल असख्यातगुणा है ? गुणकार क्या है ? जगध्रेणीके दशव चर्गमूलका
 असख्यातवा भाग गुणकार है जो जगध्रेणीके असख्यात ग्यारहवें चर्गमूलप्रमाण है । प्रति-
 भाग क्या है ? जगध्रेणीका चारहवा चर्गमूल प्रतिभाग है । तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अव-
 हारकालसे चोथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । गुणकार क्या
 है ? आठवें चर्गमूलका असख्यातवा भाग गुणकार है जो जगध्रेणीके असख्यात नौवें चर्गमूल
 प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? दशवा चर्गमूल प्रतिभाग है । चोथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि
 अवहारकालसे पाचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । गुणकार
 क्या है ? जगध्रेणीके छठवें चर्गमूलका असख्यातवा भाग है जो असख्यात सातवें चर्गमूल
 प्रमाण है । उसका प्रतिभाग क्या है ? जगध्रेणीका आठवा चर्गमूल प्रतिभाग है । पाचवीं
 पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे छठी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असख्यात
 गुणा है । गुणकार क्या है ? जगध्रेणीका तीसरे चर्गमूलका असख्यातवा भाग गुणकार है ।
 जो जगध्रेणीके असख्यात चोथे चर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगध्रेणीका छठा चर्गमूल
 प्रतिभाग है । छठवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका
 अवहारकाल असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगध्रेणीका तीसरा चर्गमूल गुणकार है ।
 सातवीं पृथिवीके अवहारकालसे उसीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
 जगध्रेणीका प्रथम चर्गमूल गुणकार है । सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे छठवीं पृथिवीका

तिरिक्खगर्दण तिरिक्खेसु मिञ्जाइट्टिप्पहुडि जाव संजदा-
संजदा ति ओघं ॥ २४ ॥

एदस्स सुचस्म अत्थो उच्चदे । त जहा—अणतत्तणेण तिरिक्खगदिमिञ्जाइट्टीण
ओघमिञ्जाइट्टिजीपेहिंतो विसेमाभावादो तिरिक्खगइमिञ्जाइट्टीण द्वय सेत्त काले अस्सि-
ऊण जा ओघमिञ्जाइट्टिपरूतणा सा सव्वा संभरदि । गुणपडिउण्णाणं पि असत्तेज्जत्तणेण
ओघपडिउण्णेहि समाणाणं जा ओघपडिउण्णपरूतणा सा सव्वा समरदि । तम्हा द्वय-
ट्टियणए अवलचिज्जमाणे तिरिक्खओघस्स परूतणा ओघरउदेसं लब्भेदे । पज्जरट्टियणए
अउलचिज्जमाणे पुण ओघपरूतणा ण भवदि, तिरिक्खगइरिचित्तिगदीणमत्थित्तस्स-

अल्पबहुत्वको मिलाकर कथन किया जाता तो प्रारभमें जो प्रथम नरकके असयतसम्यग्दृष्टि
योंका अवहारकाल सबसे स्तोक कहा है उसके स्थानमें 'नारक सामान्य असयतसम्य
ग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है और इससे विशेष अधिक प्रथम पृथिवीके असयत
सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल है, इत्यादि कहा जाता । परं यद्वा पर इस सब कथनको टीका
कारने फ्यों छोड़ दिया है, यह घतलाना कठिन है ।

इसप्रकार नरकगतिका वर्णन समाप्त हुआ ।

तिर्यंच गतिका आश्रय करके तिर्यंचोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयतामंयत तरु
प्रत्येक गुणस्थानजती तिर्यंच सामान्य प्ररूपणाके समान हैं ॥ २४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । यह इसप्रकार है—तिर्यंचगतिके मिथ्यादृष्टियोंमें ओघ
मिथ्यादृष्टि जीवोंसे अनन्तत्वकी अपेक्षा कोई विशेषता नहीं है, इसलिये द्रव्य, क्षेत्र और
कालप्रमाणका आश्रय करके जो ओघ मिथ्यादृष्टियोंकी प्ररूपणा है वह सपूर्ण तिर्यंच मिथ्या
दृष्टि जीवोंके सम्य है । उसीप्रकार गुणस्थानप्रतिपन्न तिर्यंच भी असत्प्रातत्वकी अपेक्षा
सामान्य गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके समान है, इसलिये गुणस्थानप्रतिपन्न सामान्य जीवोंकी
जो प्ररूपणा है वह सपूर्ण गुणस्थानप्रतिपन्न तिर्यंचोंके सम्य है । अतएव द्रव्याधिक नयका
अवलम्बन करने पर सामान्य तिर्यंचोंकी प्ररूपणा ओघ व्यपदेशको प्राप्त होती है । परन्तु
पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर सामान्य प्ररूपणा तिर्यंचोंके नहीं पाई जाती है, न्योंकि,
यदि ऐसा नहीं माना जाय तो तिर्यंच गतिके अतिरिक्त शेष तीन गतियोंका अस्तित्व ही नहीं

वाजुप्यमापुटवनेरइण्हितो दीच्चाए सक्करप्यमाए पुटवाए नेरइया पुरच्छिमपच्चधिमतउत्तरेण असखेज्जगुणा, दाहिणेण
असखेज्जगुणा । दाहिणिट्टेहिंतो सक्करप्यमापुटवनेरइण्हितो इमीसे सक्करप्यमाए पुटवाए नेरइया पुरच्छिमपच्चधिमतउत्तरेण
असखेज्जगुणा, दाहिणेण असखेज्जगुणा । म, सू, ३, १ पृ ३४८ ३५०

१ तिर्यंगतो तिरिक्खं मिप्यादट्टयोन्त्तान ता । सासादनसम्यग्दृष्टय सयतासयतान्ता पर्योपमासंख्येय-
सयत्पसिता । स पि १, ८ ससादी ×× तिगदिहीणया ×× सामण्णा ×× तेरिक्खा । गो जी १५५.

गुणगारो ? वारसवग्गमूलस्स असखेज्जदिभागो असखेज्जाणि तेरसवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? धणगुलविदियवग्गमूल । पढमपुढविमिच्छाइड्ढिविअवहारकालो विसेसाहियो । केत्तियमेत्तेण ? सामण्णअवहारकालस्स असखेज्जदिभागभूदपक्खेवअवहारकालमेत्तेण । सेदी असखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पढमपुढविमिच्छाइड्ढिविअवहारकालो । पढमपुढविमिच्छाइड्ढिवमसखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पढमपुढविमिच्छाइड्ढिविअवहारकालो । सामण्णगेरइयमिच्छाइड्ढिव विसेसाहिय । केत्तियमेत्तेण ? सामण्णगेरइयमिच्छाइड्ढिवमसखेज्जभागभूदविदियादिछपुढविमिच्छाइड्ढिवमेत्तेण । पढरमसखेज्जगुण । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असखेज्जगुणो । का गुणगारो ? सेदी । एव णिरयगई समत्ता ।

अवहारकाल असख्यातगुणा हे । गुणकार क्या है ? जगध्रेणीके वारहवें वर्गमूलका असख्यातया भाग गुणकार है जो जगध्रेणीके असख्यात तेरहवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? घनागुलका द्वितीय वर्गमूल प्रतिभाग है । सामान्य नारकियोंके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे पहली पृथिवीके नारकियोंका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? सामान्य अवहारकालके असख्यातवें भागरूप प्रक्षेप अवहारकालरूप विशेषसे अधिक है । पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे जगध्रेणी असख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कभसूची गुणकार है । जगध्रेणीसे पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कभसूची गुणकार है । पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्य विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यके असख्यातवें भागरूप दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तक छह पृथिवियोंके मिथ्या दृष्टियोंका जितना प्रमाण है तन्मात्रसे विशेष अधिक है । सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगप्रतर असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असख्यात गुणा है । गुणकार क्या है ? जगध्रेणी गुणकार है ।

विशेषार्थ—सर्व परस्थान अल्पप्रदुत्तया क्या करते समय ऊपर गुणस्थानप्रतिपन्न अस्यतसम्यग्दृष्टि आदि सामान्य नारकियोंका अल्पबहुत्व नहीं कहा गया है । यदि इनके

१ प्रतिपु सदी असखे जगुणगारो ' इति पाठ ।

२ दिक्काएण सध चोका अहे ससमापुदवानेरइया पुरिअमपच्चिधिमउत्तरेण, दाहिणेण असखेज्जगुणा । दाहिणेहिती अहे ससमापुदवीनरइइहिती चोका ए तमाए पुदवाए नेरइया पुरिअमपच्चिधिमउत्तरेण दाहिणेण असखेज्जगुणा । दाहिणिडेहिती तमाए पुदवानरइइहिती पचमाए धूमप्पमाए पुदवाए नेरइया पुरिअमपच्चिधिम उत्तरेण असखेज्जगुणा दाहिणेण असखेज्जगुणा । दाहिणिडेहिती धूमप्पमापुदवीनरइइहिती चउत्तरीए पक्कप्पमाए पुदवीए नेरइया पुरिअमपच्चिधिमउत्तरेण असखेज्जगुणा, दाहिणेण असखेज्जगुणा । दाहिणिडेहिती पक्कप्पमापुदवानेरइइहिती उदवार वाउत्तप्पमाए पुदवीए नेरइया पुरिअमपच्चिधिमउत्तरेण असखेज्जगुणा, दाहिणेण असखेज्जगुणा । दाहिणिडेहिती

संपहि अणतरामीसु द्रव्यपरूवणादो कालपरूवणा सुहुमा मवदु णाम, तत्थ अणतारंतस्स पुच्चमणुवलद्धस्स उवलद्धीदो अदीदकालादो अणतगुणत्तुनलभादो च । ण कालपरूवणादो सेत्तपरूवणा सुहुमा, अधिगोनलद्धीए अणिमित्तत्तादो । तदो परूवण-परिवाडी ण घडदे इदि ? ण, अणंतलोगमेत्ताण एगलोगम्मि अवगासो अत्थि चि-विसेसुनलभादो कालादो सेत्तस्स सुहुमत्तं पडि पिरोहाभावादो ।

पंचिदियतिरिक्खमिच्छइट्ठी द्रव्यप्रमाणेण केवडिया, असं-
खेज्जा' ॥ २५ ॥

एदस्स सुत्तस्स णिरओघद्रव्यपरूवणासुत्तस्सेव वस्खाण कायव्व । एव कए द्रव्यपरूवणा गदा भवदि ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति
कालेण ॥ २६ ॥

शुका—अनन्तप्रमाण राशियोंमें द्रव्यप्रमाणसे कालप्रमाण सूक्ष्म रही आओ, क्योंकि, कालप्रमाणमें पहले नहीं उपलब्ध हुए अनन्तानन्तकी उपलब्धि पाई जाती है, और अतीतकालसे अनन्तगुणत्व पाया जाता है । परंतु कालप्रमाणसे क्षेत्रप्रमाण सूक्ष्म नहीं हो सकती है, क्योंकि, क्षेत्रप्रमाणमें अधिक उपलब्धि कोई निमित्त नहीं पाया जाता है । इसलिये द्रव्यप्रमाणके अनन्तर कालप्रमाण और कालप्रमाणके अनन्तर क्षेत्रप्रमाण, इसप्रकार प्रमाणकी परिपाटी नहीं बन सकती है ?

समाधान—नहीं, अनन्त लोकमात्र द्रव्योंका एक लोकमें अवकाश पाया जाता है, इसप्रकारकी विशेषताकी उपलब्धि होनेसे कालकी अपेक्षा क्षेत्र सूक्ष्म है, इसमें कोई विरोध नहीं आता है ।

पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?
असरयात्त हैं ॥ २५ ॥

सामान्य नारदियोंके द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा प्रमाण करनेवाले सूत्रके व्याख्यानके समान ही इस सूत्रका व्याख्यान करना चाहिये (देखो सूत्र १५) । इसप्रकार व्याख्यान करने पर द्रव्यप्रमाणकी प्रमाण समाप्त होती है ।

कालकी अपेक्षा पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात असर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ २६ ॥

णहाणुपत्तीदो । तदो पञ्जवद्वियणए अउलपिञ्जमाणे औघपरूणणादो तिरिक्खमदिपर
वणाए णाणत्त पत्तइस्सामो । सउज्जीवरासिस्सुअरि मगुणपडिवण्णसिद्धतिगदिरासि पक्कि
रिय पुणो तेमिं चेव वग्ग तिरिक्खमिच्छाड्डिरासिभजिद च पक्खिचे तिरिक्खमिच्छा
इहीण धुरासी होदि । एसो मिच्छाड्डिपरूणणमिहि विसेसो ? गुणपडिवण्णपरूवणाए विसेस
पत्तइस्सामो । त जहा— देवसासणमम्माइड्डिअरहारकाले आउलियाए असरेज्जदिभागेण
गुणिदे तिरिक्खअसजदमम्माइड्डिअरहारकालो होदि । सो आउलियाए असरेज्जदिभागेण
गुणिदे तिरिक्खसम्मामिच्छाड्डिअरहारकालो होदि । सो गरेज्जरूपेहि गुणिदे सासणसम्मा
इड्डिअरहारकालो होदि । सो आउलियाए असरेज्जदिभागेण गुणिदे तिरिक्खअसजदमजद-
अवहारकालो होदि । एदेहि अरहारकालेहि पलिदोअमे भागे हिदे तिरिक्खगदिगुणपडिवण्णाण
रासीओ इअति । एसो गुणपडिवण्णपरूणणाए विसेसो, णत्थि अण्णमिहि कम्मि वि ।

या सफता हे । अत पर्यायाथिक नयना अथलभ्यन करने पर ओघ प्ररूपणासे तिर्यच गतिकी
प्ररूपणामें भेद हे । आगे इसी बातको बतलाते हे—

सपूण जीवराशिम गुणस्थानप्रतिपन्न तीन गतिसवन्धी जीवराशि और सिद्धराशिकी
मिलानर पुन गुणस्थानप्रतिपन्न तीन गतिसवन्धी जीवराशि और सिद्धराशिके वर्गको तिर्यच
मिथ्यादृष्टि जीवराशिमे भाजित करके जो लब्ध आवे उसे भी पूर्वोक्त राशिमें मिला देने
पर तिर्यच मिथ्यादृष्टियाकी धुराशि होती है । तिर्यच मिथ्यादृष्टियोंकी प्ररूपणामें इतना
विशेष हे ।

विशेषार्थ—यहा पर धुराशिरूपसे जो तिर्यच मिथ्यादृष्टि जीवराशिके उत्पन्न
करनेके लिये भागहार उत्पन्न करने बतलाया हे, इसका भाग सपूर्ण जीवराशिके उपरिम
अगमें देनेसे तिर्यच मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

अब आगे गुणस्थानप्रतिपन्न जीवराशिकी प्ररूपणामें विशेषताको बतलाते हैं । यह
इसप्रकार हे— देव सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आचलाके असंख्यातवें भागसे
गुणित करने पर तिर्यच असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिकी अवहारकाल होता है । तिर्यच असयत
सम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आचलाके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर तिर्यच
सम्यग्मिथ्यादृष्टियाका अवहारकाल होता है । तिर्यच सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको
संख्यातसे गुणित करने पर तिर्यच सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । तिर्यच
सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आचलाके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर तिर्यच
संयतसयतोंका अवहारकाल होता है । इन अवहारकालोंसे पल्योपमके भाजित करने पर
गुणस्थानप्रतिपन्न तिर्यचोंकी राशिया होती हैं । यही गुणस्थानप्रतिपन्न प्ररूपणाकी विशेषता
हे । अथ कथनमें कहीं भी कोई विशेषता नहीं हे ।

गुह्युत्तुवएसादो । भग्निदिकालस्स' सादिरेयतिण्णपलिदोवमोवदेसादो । 'णाणाजीवं पडुच्च सच्चद्धा' ति सुत्तादो वा निरहाभासो णव्वदे । एणं कालपरुणणा गदा ।

खेत्तेण पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टीहि पदरमवहिरदि देव-
अवहारकालादो असंखेज्जगुणहीणकालेण ॥ २७ ॥

असिद्धेण देवअवहारकालेण ऋष पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टीणमवहारकालो साहि-
ज्जदे ? ण एस दोमो, अणाइण्हणस्स आगमस्स असिद्धत्ताणुवचीदो । अणवगमो
असिद्धत्तणमिदि चे ण, वक्खणाणादो तदग्गमसिद्धीदो । संपहि वेसय उप्पण्णगुलवग्ग-
मानलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि ।
अहवा आपलियाए अमंखेज्जदिभागेण वेमय-उप्पण्णमेत्तसुच्चिअगुलेसु भागे हिदेसु
तत्थ ज लद्ध त वग्गिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । अहवा पुब्बिच्छ-
मानलियाए असंखेज्जदिभाग उग्गेऊण पण्णट्टिमहस्स-पचसय-छत्तीसमेत्तपदरगुलेसु भागे

कालका अन्तर्मुहूर्तमात्र उपदेश पाया जाता है, और भवस्थिति कालका कुछ अधिक तान
पर्योपमका उपदेश दिया है । इसलिये पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि राशिका विच्छेद नहीं
होता है । अथवा, 'नाना जीवोंकी अपेक्षा पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि जीव सर्व काल रहते हैं'
इस सूत्रसे भी पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टियोंका निरहाभाव जाना जाता है । इसप्रकार काल-
प्ररूपणा समाप्त हुई ।

क्षेत्रज्ञी अपेक्षा पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टियोंके द्वारा देवोंके अवहारकालसे
असंख्यातगुणे हीन कालसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ २७ ॥

शुका—देवोंका प्रमाण लानेके लिये जो अवहारकाल कहा है वह असिद्ध है,
इसलिये असिद्ध देव अवहारकालसे पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल कैसे
साधा जाता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, अनादिनिघन आगम असिद्ध नहीं
हो सकता है ।

शुका—आगमका ज्ञान नहीं होना ही आगमका असिद्ध च है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, व्याख्यानसे आगमके ज्ञानकी सिद्धि हो जाती है ।

अथ बतलाते हैं कि दोसो छप्पन सूत्र्यगुलके वर्गको आवलीके असख्यातवें भागसे
भाजित करने पर पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । अथवा, आवलीके
असख्यातवें भागसे दोसो छप्पन सूत्र्यगुलोंके भाजित करने पर वहा जो लघ आवे उसका वर्ग
पर देने पर पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टिसंख्या अवहारकाल होता है । अथवा, पहले स्थापित
आवलीके असख्यातवें भागको घनित करके जो प्रमाण आवे उससे पैंसठ हजार पाचसो

१ प्रतिशु 'अद्विदिकालस्स' इति पाठ ।

एदस्स सुत्तस्स वि दोहि पयारेहि अनदार' परूणिय गिरओघकालपरुवणा सुत्तस्सेव वक्खणं कायच्च । एत्थ मिच्छाड्ढिणिहेतो किमड्ढ ण कदो ? ण, अणतरादीद सुत्तादो मिच्छाड्ढि चि अणुवट्टमाणत्तादो ।

अथ सिया असखेज्जामखेज्जासु ओसप्पिणि उस्सप्पिणीसु अदिक्कतासु तिरिक्कण गड्ढण पच्चिदियतिरिक्कणण वोच्छेदो हवदि, पच्चिदियतिरिक्कणड्ढिदीए उतरि तत्थ अनट्ठाणामात्तादो चि ? ण एस दोसो, एड्ढिय विगल्लिदिएहिंतो देव गेरड्ढय मणुस्सेहिंतो च पच्चिदियतिरिक्कसेसुप्पज्जमाणजीवसभनादो । आयपिरहिय सव्वयरासीए' वोच्छेदो हवदि । एसा पुण सव्वया आयसहिया चेदि ण वोच्छिज्जदे । सम्मामिच्छाड्ढिरासीण किं ण भवदीदि चेण्ण, तत्थ गुणट्ठिदिकालादो अतरकालस्स बहुत्तुणलमादो । ण च एत्थ पच्चिदियतिरिक्कसेसु भनट्ठिदिकालादो पिरहकालस्स बहुत्तणमत्थि, अतरकालस्स अतो

इस सूत्रका भी दोनों प्रकारसे अवतारका प्ररूपण करके सामान्य नारकियोंके काल प्रमाणकी अपेक्षा प्ररूपण करनेवाले सूत्रके व्याख्यानके समान व्याख्यान करना चाहिये (देखो सूत्र ६६) ।

शुका—इस सूत्रमें मिथ्यादृष्टि पदका निर्देश क्यों नहीं किया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अन-तर पूर्ववर्ती सूत्रसे 'मिथ्यादृष्टि' इस पदकी अनुवृत्ति घली आ रही है ।

शुका—कदाचित् असत्यातासत्यात अवसर्पिणियों और उरसर्पिणियोंके निकल जाने पर तिर्यचगतिके पचेन्द्रिय तिर्यचोंका विच्छेद हो जायगा, क्योंकि, पचेन्द्रिय तिर्यचकी स्थितिसे ऊपर तिर्यचगतिके उनका अवस्थान नहीं रह सकता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, एकेन्द्रियों और विकलेन्द्रियोंमेंसे तथा देव, नारकी ओर मनुष्योंमेंसे पचेन्द्रिय तिर्यचोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव संभव हैं । जो राशि व्ययसहित और आयरहित होती है उसका ही सर्वथा विच्छेद होता है । परन्तु यह पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि राशि तो व्यय और आय इन दोनों सहित है, इसलिये इसका विच्छेद नहीं होता है ।

शुका—जिसप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशि कदाचित् विच्छिन्न हो जाती है, उसीप्रकार यह राशि भी क्यों नहीं होती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, यहा पर गुणस्थानके कालसे अन्तरकाल बडा है, इसलिये सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशिका कदाचित् विच्छेद हो जाता है । परन्तु यहा पचेन्द्रिय तिर्यचोंमें भयस्थितिके कालसे विरहकाल बडा नहीं है, क्योंकि, आगममें पचेन्द्रिय तिर्यचोंके अन्तर-

१ अ प्रती 'अवहार' इति पाठ ।

२ प्रती 'सव्वरासीण' इति पाठ ।

मिच्छाद्दृष्टिअणहारकालो होदि । अवहिद गद । तस्स पमाणं पदरगुलस्म असखेज्जदिभागो असखेज्जाणि सूचिअगुलाणि । पमाण गद । केण कारणेण ? सूचिअंगुलेण पदरंगुले भागे हिदे सूचिअगुलमागच्छदि । सूचिअंगुलपटमग्गमूलेण पदरगुले भागे हिदे सूचिअगुल-पटमग्गमूलमिह जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सूचिअगुलाणि लभति । एउममरेज्जाणि वग्गट्टाणाणि हेट्टा ओमरिऊण आवलियाए असखेज्जदिभागेण पदरगुले भागे हिदे असखेज्जाणि सूचिअगुलाणि आगच्छति । कारण गद । आपलियाए असखेज्जदिभागेण सूचिअगुले भागे हिदे लद्धमि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सूचिअगुलाणि । अहम आपलियाए असखेज्जदिभागेण सूचिअगुलपटमग्गमूलमणहरिय लद्धेण सूचिअगुल-पटमग्गमूल चैव गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सूचिअगुलाणि पच्चिदिय तिरिक्खमिच्छाद्दृष्टिअणहारकालो होदि । एव गतूण आपलियाए असखेज्जदिभागेण आपलियाए भागे हिदाए लद्धेण आपलिय गुणिय तद्दो पदरावलिय गुणिय एव जाव सूचिअगुलपटमग्गमूल ति गिरतर सयलग्गण अण्णोण्णमत्थे कदे तत्थ जत्तियाणि

अपहतका कथन समाप्त हुआ । उम पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण प्रतरागुलके असत्प्रातर्वे भाग हे जो असत्प्रात सूच्यगुलप्रमाण होता है । इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

श्रुता — पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि अणहारकालका प्रमाण असत्प्रात सूच्यगुल किस कारणसे है ?

समाधान — सूच्यगुलसे प्रतरागुलके भाजित करने पर एक सूच्यगुलका प्रमाण आता है । सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलसे प्रतरागुलके भाजित करने पर सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलका जितना प्रमाण हो उतने सूच्यगुल लब्ध आते हैं । इसीप्रकार असत्प्रात वर्गीस्थान नीचे जाकर आवलीके असत्प्रातर्वे भागसे प्रतरागुलके भाजित करने पर असत्प्रात सूच्यगुल लब्ध आते हैं । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

आवलीके असत्प्रातर्वे भागसे सूच्यगुलके भाजित करने पर वहा जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने सूच्यगुलप्रमाण पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल है । अथवा, आवलीके असत्प्रातर्वे भागसे सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलको अपहन करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने सूच्यगुलप्रमाण पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल है । इसीप्रकार असत्प्रात वर्गीस्थान नीचे जाकर आवलीके असत्प्रातर्वे भागसे आवलीके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उससे आवलीको गुणित करके पुन उस गुणित राशिसे प्रतरावलीको गुणित करके इसीप्रकार सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलपर्यंत सपूर्ण वर्गोंके निरन्तर परस्पर गुणित करने पर वहा जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने सूच्यगुल आते हैं और यही पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

हिंदेसु पंचिदियतिरिक्त्वा मिच्छाद्द्विअवहारकालो आगच्छदि' । अहमा पण्णट्टिमहस्म पच सय-छत्तीसरुवोवद्विदआपलियाए अससेज्जदिभागस्य वगणेण पदरगुले भागे हिंदे पंचिदियतिरिक्त्वा मिच्छाद्द्विअवहारकालो आगच्छदि ।

एतस्य संदिदादिर्निहि वत्तइस्सामो । त जहा- पदरगुले अससेज्जे खंडे कए एयं खड पंचिदियतिरिक्त्वा मिच्छाद्द्विअवहारकालो होदि । संदिद गद । आपलियाए अससेज्जदिभागेण पदरगुले भागे हिंदे पंचिदियतिरिक्त्वा मिच्छाद्द्विअवहारकालो होदि । भाजिद गद । आपलियाए अससेज्जदिभाग निरलेऊण एकेरस्स रूवस्स पदरगुल समापड करिय दिण्णे तत्त्वेणखड पंचिदियतिरिक्त्वा मिच्छाद्द्विअवहारकालो होदि । निरलिद गद । तमपहारकाल मलागभूद ठवेऊण पंचिदियतिरिक्त्वा मिच्छाद्द्विअवहारकालपमाणेण पदरगुलाटो जवहिरिज्जदि सलागाहिंती एगरूवमवणीज्जदि । एण पुणो पुणो अपणिज्जमाणे सलागाओ पदरगुल च जुगव णिद्धि' । तस्य आदीण ता अते वा मज्जे वा एगारमवाहिदपमाण पंचिदियतिरिक्त्वा

छत्तीसमात्र प्रतरागुलके भाजित करने पर पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टिसर्घ्या अवहारकाल होता है । अथवा, पैंसठ हजार पावसो छत्तीससे आबलीके असरघातमें भागके वर्गको अपवर्तित करके जो लघ्य आवे उससे प्रतरागुलके भाजित करने पर पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टिसर्घ्या अवहारकाल आता है । अथ यहा खटित आदिकमी विधिको बतलाने है । यह इसप्रकार है—

प्रतरागुलके असरघात खड करने पर उनमेंसे एक खडप्रमाण पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । इसप्रकार खडितका वर्णन समाप्त हुआ । आबलीके असरघातमें भागसे प्रतरागुलके भाजित करने पर पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । इसप्रकार भाजितका वर्णन समाप्त हुआ । आबलीके असरघातमें भागके विरलित करके ओर उस निरलित राशिके प्रथम एक एक प्रति प्रतरागुलको समान खड करके देयरूपसे दे देने पर उनमेंसे एक विरलनके प्रति प्राप्न एक खडप्रमाण पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । इसप्रकार विरलितका वर्णन समाप्त हुआ । उस आबलीके असरघातमें भागरूप अवहारकाशको शलाकारूपसे स्थापित करके अनन्तर पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालके प्रमाणसे प्रतरागुलमेंसे घटा देना चाहिये । एकवार घटाया इसलिये शलाका राशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये । इसप्रकार पुन पुन प्रतरागुलमेंसे आबलीके असरघातमें भागको ओर शलाकाराशिमेंसे एकको उत्तरोत्तर कम करते जानेपर शलाकाराशि ओर प्रतरागुल एक साथ समाप्त होते है । यहा पर आदिम अथवा मध्यमें अथवा अन्तमें एकवार जितना प्रमाण घटाया उतना पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । इसप्रकार

१ अ प्रतो ' होदि ', आ प्रता ' हादि आगच्छदि ' इति पाठ ।

२ प्रतिपु ' णिद्धि ' इति पाठ ।

मिच्छाद्दृष्टिअवहारकालो होदि । अवहिदं गद । तस्म पमाण पदरगुलस्म असखेज्जदिभागो असखेज्जाणि सूचिअगुलाणि । पमाण गद । केण कारणेण ? सूचिअंगुलेण पदरंगुले भागे हिदे सूचिअंगुलभागच्छदि । सूचिअंगुलपढमअंगमूलेण पदरगुले भागे हिदे सूचिअगुल-पढमअंगमूलम्हि जत्तियाणि रूपाणि तत्तियाणि सूचिअगुलाणि लब्धमति । एअमअंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण आपलियाए असखेज्जदिभागेण पदरगुले भागे हिदे असखेज्जाणि सूचिअगुलाणि आगच्छति । कारण गद । आपलियाए असखेज्जदिभागेण सूचिअंगुले भागे हिदे लद्धम्मि जत्तियाणि रूपाणि तत्तियाणि सूचिअंगुलाणि । अहवा आपलियाए असखेज्जदिभागेण सूचिअगुलपढमअंगमूलमअहरिय लद्धेण सूचिअंगुल-पढमअंगमूल चैव गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूपाणि तत्तियाणि सूचिअगुलाणि पंचिदिय-तिरिखगमिच्छाद्दृष्टिअवहारकालो होदि । एव गतूण आपलियाए असखेज्जदिभागेण आपलियाए भागे हिदाए लद्धेण आपलिय गुणिय तदो पदराअलिय गुणिय एव जाव सूचिअगुलपढमअंगमूल ति गिरतर सयलअग्गार्ण अण्णोण्णम्मत्थे कदे तत्थ जत्तियाणि

अपहृतका कथन समाप्त हुआ । उस पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण प्रतरागुलके असत्थातयें भाग है जो असत्थात सूच्यगुलप्रमाण होता है । इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

शुद्धा — पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण असत्थात सूच्यगुल किस कारणसे है ?

समाधान — सूच्यगुलसे प्रतरागुलके भाजित करने पर एक सूच्यगुलका प्रमाण आता है । सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलसे प्रतरागुलके भाजित करने पर सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलका जितना प्रमाण हो उतने सूच्यगुल लब्ध आते हैं । इसीप्रकार असत्थात वर्गस्थान नीचे जाकर आवलीके असत्थातयें भागसे प्रतरागुलके भाजित करने पर असत्थात सूच्यगुल लब्ध आते हैं । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

आवलीके असत्थातयें भागसे सूच्यगुलके भाजित करने पर यदा जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने सूच्यगुलप्रमाण पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल है । अथवा, आवलीके असत्थातयें भागसे सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलको अपहृत करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने सूच्यगुलप्रमाण पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल है । इसीप्रकार असत्थात वर्गस्थान नीचे जाकर आवलीके असत्थातयें भागसे आवलीके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उससे आवलीको गुणित करके पुन उस गुणित राशिसे प्रतरावलीको गुणित करके इसीप्रकार सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलपर्यंत सपूर्ण वर्गोंके निरन्तर परस्पर गुणित करने पर यदा जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने सूच्यगुल भाते हैं और यही पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

हिंदेसु पंचिदियतिरिक्कमिच्छाइडिअवहारकालो आगच्छदि^१ । अहवा पण्णट्टिमहस्स पच सय-छत्तीसरूपोवट्टिदआगलियाए असयेज्जदिभागस्स वग्गेण पदरगुले भागे हिंदे पंचि दियतिरिक्कमिच्छाइडिअवहारकालो आगच्छदि ।

एत्थ सडिदादिपिहिं वच्चहम्मामो । त जहा- पदरगुले असयेज्जे खडे कए एय सड पंचिदियतिरिक्कमिच्छाइडिअवहारकालो होदि । सडिद गट । आगलियाए अमयेज्जदिभागेण पदरगुले भागे हिंदे पंचि-दियतिरिक्कमिच्छाइडिअवहारकालो होदि । भाजिद गदं । आगलियाए अमयेज्जदिभाग विरलेउण एकेकस्स रूअस्स पदरगुल समअड करिय दिणे तत्थेगसड पंचिदियतिरिक्क मिच्छाइडिअवहारकालो होदि । पिरलिद गद । तमवहारकाल मलागभूद ठेउण पंचिदियतिरिक्कमिच्छाइडिअवहारकालपमाणेण पदरगुलाओ अवहिरिज्जदि सलागाहिंतो एगरूअमणिज्जदि । एअ पुणो पुणो अवणिज्जमाणे मलागाओ पदरगुल च जुगव णिट्टिदं । तत्थ आदीण वा अते वा मज्जे वा एगारमअहिदपमाण पंचिदियतिरिक्क

छत्तीसमात्र प्रतरागुलेंके भाजित करन पर पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टिसंबंधी अवहारकाल होता है। अथवा पैंसठ हजार पाचसा छत्तीससे आवलीके असख्यातवें भागके घर्गको अपयतिंत करके जो लघु आवे उससे प्रतरागुलके भाजित करने पर पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टिसंबंधी अवहारकाल आता है। अर यहा खाटित आदिककी विधिकी थतलते है । यह इसप्रकार है—

प्रतरागुलके असख्यात अड करने पर उनमेंसे एक खडप्रमाण पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है। इसप्रकार खडितका वर्णन समाप्त हुआ। आगलीके असख्यातवें भागसे प्रतरागुलके भाजित करने पर पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है। इसप्रकार भाजितका वर्णन समाप्त हुआ। आगलीके असख्यातवें भागसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रतरागुलको समान खड करके देयरूपसे दे देने पर उनमेंसे एक विरलनके प्रति भाग एक खडप्रमाण पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है। इसप्रकार विरलितका वर्णन समाप्त हुआ। उस आगलीके असख्यातवें भागरूप अवहारकालको शलाकारूपसे स्थापित करके अनन्तर पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालके प्रमाणको प्रतरागुलमेंसे घटा देना चाहिये। एकवार घटाया इसलिये शलाका राशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये। इसप्रकार पुन पुन प्रतरागुलमेंसे आगलीके असख्यातवें भागको ओर शलाकाराशिमेंसे एकको उत्तरोत्तर कम करते जानेपर शलाकाराशि ओर प्रतरागुल एक साथ समाप्त होते हैं। यहा पर आदिमें अथवा मध्यमें अथवा अन्तमें एकवार जितना प्रमाण घटाया उतना पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है। इसप्रकार

१ अ प्रता ' होदि ', आ प्रता ' हादि आगच्छदि ' इति पाठ ।

२ प्रतिपु ' णिट्टिदं ' इति पाठ ।

मिन्डाइडिअनहारकालो होदि । अवहिदं गद । तस्स पमाणं पदरगुलस्म असखेज्जदिभागो अमखेज्जाणि सूचिअगुलाणि । पमाणं गदं । केण कारणेण ? सूचिअंगुलेण पदरंगुले भागे हिदे सूचिअंगुलमागन्ठदि । सूचिअगुलपढमग्गमूलेण पदरगुले भागे हिदे सूचिअगुल-पढमग्गमूलमिह जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सूचिअगुलाणि लभति । एवमसखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण आवलियाए असखेज्जदिभागेण पदरगुले भागे हिदे असखेज्जाणि सूचिअगुलाणि आगच्छति । कारणं गद । आपलियाए असखेज्जदिभागेण सूचिअगुले भागे हिदे लद्धमि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सूचिअगुलाणि । अहवा आपलियाए असखेज्जदिभागेण सूचिअगुलपढमग्गमूलमनहरिय लद्धेण सूचिअगुल-पढमग्गमूलं चैव गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सूचिअगुलाणि पंचिंदिय तिरिक्खमिन्डाइडिअनहारकालो होदि । एव गतूण आपलियाए असखेज्जदिभागेण आपलियाए भागे हिदाए लद्धेण आपलिय गुणिय तदो पदरावलिय गुणिय एव जाव सूचिअगुलपढमग्गमूलं ति गिरतर सयलग्गाण अण्णोण्णभत्थे कदे तत्थ जत्तियाणि

अपहृतका कथन समाप्त हुआ । उस पचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण प्रतरागुलके असत्प्रातर्वे भाग है जो असत्प्रात सूच्यगुलप्रमाण होता है । इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

श्रुति — पचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण असत्प्रात सूच्यगुल किस कारणसे है ?

समाधान — सूच्यगुलसे प्रतरागुलके भाजित करने पर एक सूच्यगुलका प्रमाण आता है । सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलसे प्रतरागुलके भाजित करने पर सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलका जितना प्रमाण हो उतने सूच्यगुल लब्ध आते हैं । इसीप्रकार असत्प्रात वर्गस्थान नीचे जाकर आवलीके असत्प्रातर्वे भागसे प्रतरागुलके भाजित करने पर असत्प्रात सूच्यगुल लब्ध आते हैं । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

आवलीके असत्प्रातर्वे भागसे सूच्यगुलके भाजित करने पर वही जितना प्रमाण लब्ध आये उतने सूच्यगुलप्रमाण पचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि अवहारकाल है । अथवा, आवलीके असत्प्रातर्वे भागसे सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलको अपहृत करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने सूच्यगुलप्रमाण पचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि अवहारकाल है । इसीप्रकार असत्प्रात वर्गस्थान नीचे जाकर आवलीके असत्प्रातर्वे भागसे आवलीके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उससे आवलीको गुणित करके पुन उस गुणित राशिसे प्रतरावलीको गुणित करके इसीप्रकार सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलपर्यंत सपूर्ण वर्गोंके निरन्तर परस्पर गुणित करने पर वही जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने सूच्यगुल आते हैं और वही पचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

रूवाणि तत्तियाणि सूचिअगुलाणि ह्यति । गिरुची गदा ।

वियप्पो दुविहो, हेट्टिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेट्टिमवियप्प वत्तइस्सामो । आपलियाए अससेज्जदिभागेण सूचिअगुले भागे हिदे लद्धेण त चेव गुणिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । अहवा तेणेन भागहारेण सूचि अगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे लद्धेण त चेव गुणेऊण तेण सूचिअगुले गुणिदे पंचिदिय तिरिक्खमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । एवमससेज्जणि वग्गद्वानाणि हेट्टा ओसरिऊण आवलियाए अससेज्जदिभागेण आपलियाए भागे हिदाए ज लद्ध तेण त चेव गुणिय तस्सुवरिमग्ग गुणिय एव जाव सूचिअगुलेचि गिरतर सच्चवग्गाण अणोण्णभासे कए पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । वेस्से हेट्टिमवियप्पो गदो । अट्टस्से वत्तइस्सामो । आपलियाए अससेज्जदिभागेण गुणिसूचिअगुलेण घणगुले भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । त जहा-सूचिअगुलेण^१ घणगुले भागे हिदे पदरगुलमागच्छदि । पुणो आपलियाए अससेज्जदिभागेण पदरगुले भागे हिदे पंचिदिय-तिरिक्खमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । घणाघणे हेट्टिमवियप्प वत्तइस्सामो । आवलियाए

है । इसप्रकार निरुक्तिका वर्णन समाप्त हुआ ।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमेंसे अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं— आवलीके असख्यातवें भागसे सूच्यगुलके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उससे उसी सूच्यगुलके गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण होता है । अथवा, उसी आवलीके असख्यातवें भागरूप भागहारसे सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उससे सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यगुलके गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । इसीप्रकार असख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर आवलीके असख्यातवें भागसे आवलीके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उससे उसी आवलीको गुणित करके पुन उस गुणित राशिसे उस आवलीके उपरिम वर्गको गुणित करके इसीप्रकार गुणित करते हुए सूच्यगुलपर्यंत सपूर्ण वर्गोंके निरन्तर परस्पर गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । इसप्रकार द्विरूपमें अधस्तन विकल्प समाप्त हुआ ।

अब अष्टरूपमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— आवलीके असख्यातवें भागसे सूच्यगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनागुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । उसका स्पर्शकरण इसप्रकार है— सूच्यगुलका घनागुलमें भाग देने पर प्रतरागुल आता है । पुन आवलीके असख्यातवें भागसे प्रतरागुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है ।

१ अ-आ प्रयो 'अगुलस' क प्रती 'अगुल' इति पाठः ।

असंखेज्जदिभागेण गुणितसूचिअंगुलेण घणंगुलपढमवग्गामूले गुणेऊण तेण घणाघणंगुल-
पढमवग्गामूले भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । त जहा-
घणंगुलपढमवग्गामूलेण घणाघणंगुलपढमवग्गामूले भागे हिदे घणंगुलमागच्छदि । पुणो
सूचिअंगुलेण घणंगुले भागे हिदे पदरगुलमागच्छदि । पुणो आवलियाए असंखेज्जदि-
भाएण पदरगुले भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । एवं
हेट्टिमवियप्पो गदो ।

उपरिमवियप्पो तिरिहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ वेरूवे
गहिद वत्तइस्सामो । आपलियाए अमसेज्जदिभागेण पदरगुलं भागे हिदे पंचिदिय-
तिरिक्खमिच्छाइट्टिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते
रासिस्स छेदणए कदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । एसो मज्झिम
वियप्पो, एदमवेक्खिसय हेट्टिम उपरिमववण्णसमभवादो । एसो उवयारेण उपरिमवियप्पो

अथ घनाघनमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— आवलीके असंख्यातयें भागसे सूच्य
गुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनागुलके प्रथम घर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध
आवे उससे घनाघनागुलके प्रथम घर्गमूलके भाजित करने पर पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि
अवहारकाल होता है । इसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— घनागुलके प्रथम घर्गमूलसे
घनाघनागुलके प्रथम घर्गमूलके भाजित करने पर घनागुलका प्रमाण आता है । पुन सूच्यगुलसे
घनागुलके भाजित करने पर प्रतरागुलका प्रमाण आता है । पुन आवलीके असंख्यातयें भागसे
प्रतरागुलके भाजित करने पर पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । इसप्रकार
अधस्तन विकल्प समाप्त हुआ ।

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार । उनमेंसे
द्विरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— आवलीके असंख्यातयें भागसे प्रतरागुलके
भाजित करने पर पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । उक्त भागहारके जितने
अर्धच्छेद हैं उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पचेन्द्रिय तिर्यच
मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । वास्तवमें यह मध्यम विकल्प है और इसीकी अपेक्षा करके
ही अधस्तन और उपरिम सभा समज है, इसलिये उपचारसे यह उपरिम विकल्प कहा
जाता है ।

विशेषार्थ— विवक्षित भाजकका किसी विवक्षित भाज्यमें भाग देनेसे जो लब्ध आता है
वही लब्ध जब उस विवक्षित भाज्य और भाजकसे नाचेकी सरयाओंका आश्रय लेकर निकाला
जाता है, तब यह अधस्तन विकल्प कहलाता है, और जब वही लब्ध उस विवक्षित भाज्य और
भाजकसे ऊपरकी सरयाओंका आश्रय लेकर निकाला जाता है, तब उसे उपरिम विकल्प कहते
हैं । इस नियमके अनुसार प्रकृतमें भाजक आवलीका असंख्यातयें भाग और भाज्य प्रतरागुल,
इन दोनोंसे नीचेकी सरयाओंका आश्रय लेकर जब पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

चि बुचदे । सपहि अणुप्रपारेण उवरिमवियप्प वत्तइस्सामो । त जहा—आनलियाए असखेज्जदिभाएण गुणिदपदरगुलेण तस्सुअरिमवग्गे भागे हिदे पचिंदियतिरिक्खमिच्छा इड्ढिअवहारकालो होदि । तस्म भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि पचिंदियतिरिक्खमिच्छाइड्ढिअवहारकालो होदि । एत्थ अद्धच्छेदणयमेलानणविहाण चित्थिय वत्तव्व । एअं सखेज्जासखेज्जाणतेसु गेयव्व । अहरूपे वत्तइस्सामो । आनलियाए असखेज्जदिभाएण पदरगुलउवरिमवग्ग गुणेऊण तेण घणगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पचिंदियतिरिक्खमिच्छाइड्ढिअवहारकालो होदि । त जहा—पदरगुलउवरिमवग्गेण घण गुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पदरगुलभागच्छदि । पुणो आनलियाए असखेज्जदिभाएण पदरगुले भागे हिदे पचिंदियतिरिक्खमिच्छाइड्ढिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स भाग हारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि पचिंदियतिरिक्खमिच्छाइड्ढि

लाया जायगा, तब इस प्रक्रियाको अधस्तन विकल्प कहेंगे, और जब उक्त दोनों संख्याओंसे ऊपरकी संख्याओंका आश्रय लेकर उक्त अवहारकाल लाया जायगा, तब उसे उपरिम विकल्प कहेंगे । आषलीके असख्यातवें भागसे प्रतरागुलको भाजित करके पचेन्द्रिय तिर्यच अवहार कालके लानेकी जो प्रक्रिया है वही वास्तवमें अधस्तन या उपरिम विकल्प नहीं कहीं जा सकती है, क्योंकि, अधस्तन और उपरिम विकल्पके निश्चित करनेके लिये यहा वही आधार है । अत वास्तवमें वह मध्यम विकल्प ही है, उपरिम नहीं ।

अब अनुपचारसे उपरिम विकल्पको बतलाते हैं । यह इसप्रकार है— आषलीके असख्यातवें भागसे प्रतरागुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरागुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण होता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त मध्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण होता है । यहा पर अर्धच्छेदोंके मिलानेकी विधिका विचार कर कथन करना चाहिये । इसीप्रकार संख्यात, असख्यात और अनन्त स्थानोंमें भी ले जाना चाहिये ।

अब अष्टरूपमें उपरिम विकल्प बतलाते हैं— आषलीके असख्यातवें भागसे प्रतरागुलके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनागुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण आता है । यह इसप्रकार है— प्रतरागुलके उपरिम वर्गसे घनागुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर प्रतरागुल आता है । पुन आषलीके असख्यातवें भागसे प्रतरागुलके भाजित करने पर पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण आता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त मध्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

अवहारकालो आगच्छदि । एवं सखेज्जामसेज्जाणतेसु णेयचं । घणाघणे वचइस्सामो । आपलियाए असंसेज्जदिभाएण पदरगुलउपरिमवग्ग गुणेऊण तेण घणंगुलउपरिमवग्गस्सुपरिमवग्ग गुणेऊण घणाघणगुलउपरिमवग्गे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टिअवहारकालो आगच्छदि । तं जहा— घणगुलउपरिमवग्गस्सुपरिमवग्गेण घणाघणगुलउपरिमवग्गे भागे हिदे घणंगुलउपरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरंगुलउपरिमवग्गेण घणंगुलउपरिमवग्गे भागे हिदे पदरगुलमागच्छदि । पुणो आपलियाए असखेज्जदिभाएण पदरंगुले भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्म अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टिअवहारकालो आगच्छदि । पदरगुलस्म घणंगुलस्स घणाघणगुलपढमवग्गमूलस्स चासखेज्जदिभागेण पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टिअवहारकालेण गहिदगहिदो गहिदगुणमारो वचचो । एदेण अवहारकालेण जगपेडिभिहि भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टिविक्खमसूई आगच्छदि । जहा णेरइयमिच्छाइट्टिअवहारकालस्स खडिदादिपरूषणा कदा तथा एदिस्से विक्खमसूईए खंडिदादिपरूषणा कायच्चा । एदेण अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टिद्वयमागच्छदि । एत्थ खडिद-

आता है । इसीप्रकार संख्यात, असख्यात ओर अनन्तस्थानोंमें ले जाना चाहिये ।

अथ घनाघनमें गृहीत उपरिम विकरप बनलाते हैं— आधलीके असख्यातवें भागसे प्रतरागुलके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनागुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनाघनागुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण आता है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— घनागुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गसे घनाघनागुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर घनागुलका उपरिम वर्ग आता है । पुन प्रतरागुलके उपरिम वर्गसे घनागुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर प्रतरागुल आता है । पुन आधलीके असख्यातवें भागसे प्रतरागुलके भाजित करने पर पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण आता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भन्वमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण आता है । प्रतरागुलके असख्यातवें भागरूप, घनागुलके असख्यातवें भागरूप और घनाघनागुलके प्रथम वर्गमूलके असख्यातवें भागरूप पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन (पहलेके समान) करना चाहिये । इस अवहारकालसे जगश्रेणीके भाजित करने पर पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि विष्कमसूचीका प्रमाण आता है । पहले जिसप्रकार नारक मिथ्यादृष्टि विष्कमसूचीके संज्ञित आदिककी प्ररूपणा कर आवे है, उसीप्रकार इस विष्कमसूचीके संज्ञित आदिकका प्ररूपण करना चाहिये ।

पूरुषोक्त अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि

भाजिद निरलिद अवहिद-पमाण-कारण-गिरुचि त्रियप्पा जहा णेरइयमिच्छाइडिदवपरु-
वणाए परुविदा तहा परुवेयव्या ।

सासणसम्माइडिप्पहुडि जाव संजदासंजदा ति तिरि
क्खोर्धं ॥ २८ ॥

एदस्स सुत्तस्स जहा तिरिक्खोर्धगुणपडिउण्णपमाणपरुउणमुत्तस्स वक्खण कद
तहा कायव्य । तिरिक्खेसु पंचिदिए मोत्तूण अण्णत्थ गुणपडिउण्णजीवाण संभवाभावादे ।
एव पंचिदियतिरिक्खपरुवणा समत्ता ।

सपहि पज्जत्तणामकम्मोदयपंचिदियतिरिक्खपमाणपरुउण हवदि—

पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइटी दव्वपमाणेण केवडिया,
असखेज्जा ॥ २९ ॥

एत्थ पंचिदियग्रहण एइदिय-विगालिदियबुदासट्ट । तिरिक्खणिहेसो देव-णेरइय
मणुसबुदासट्टो । पज्जत्तणिहेसो अपज्जत्तबुदासट्टो । मिच्छाइडिणिहेसेण सेसमुण्डाण

द्रव्यका प्रमाण आता हे । खडित, भाजित, विरलित, अपहृत, प्रमाण, कारण, निरकि
और विकल्पका प्ररूपण जिसप्रकार नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी प्ररूपणाके समय कर
भाये हैं उसीप्रकार यदा पर उन सबका प्ररूपण करना चाहिये ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयतासयत गुणस्थानतक पचेन्द्रिय
तिर्यच प्रत्येक गुणस्थानमें सामान्य तिर्यचोंके समान पल्योपमके अमर्यातमें भाग हैं ॥२८॥

जिसप्रकार सामान्य तिर्यचोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके प्रमाणके प्ररूपण करनेवाले
सूत्रका व्याख्यान कर भाये ह उसीप्रकार इस सूत्रका व्याख्यान करना चाहिये, क्योंकि,
तिर्यचोंमें पचेन्द्रिय जीवोंको छोड़कर दूसरे तिर्यचोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीव समस्त नहीं है ।
इसप्रकार पचेन्द्रिय तिर्यच प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब जिनके पर्याप्त नामकमका उदय पाया जाता है ऐसे पर्याप्त पचेन्द्रिय तिर्यचोंके
प्रमाणका प्ररूपण करते हैं—

पचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने है ?
असरयात हैं ॥ २९ ॥

सूत्रमें पचेन्द्रिय और विकलेन्द्रियोंके निराकरण करनेके लिये पचेन्द्रिय पदका ग्रहण
किया है । देव, नारकी और मनुष्योंके निराकरण करनेके लिये तिर्यच पदका निर्देश किया है ।
अपर्याप्त जीवोंके निराकरण करनेके लिये पर्याप्त पदका निर्देश किया है । सूत्रमें मिथ्यादृष्टि

बुदासो कदो हवदि । द्व्यप्रमाणेणेत्ति णिहेसेण खेत्त कालबुदासो कदो हवदि । केणडिया इदि पुञ्जासुत्तणिहेसेण छदुमत्थाणं कत्तारत्तमवाणिदं हवदि । असखेज्जा इदि णिहेसेण सखेज्जाणताण बुदामो कदो । किमइ द्व्यप्रमाणमेव पढम परूविज्जदि ? ण एस दोसो, अदीरंधूलत्तादो द्व्यपरूषणा पढमं परूविज्जदे । कथमेदिस्से वृलत्तणं ? असंखेज्जमेत्त-
विमेसिदजीवोत्तलमणिमित्तादो । खेत्त कालेहिंतो द्व्य थोपेत्ति वा पुवं परूविज्जदे ।
द्व्यथोवत्तण कथ जाणिज्जदे ? 'वड्डीदु जीव पोगगल-कालागासा अणंतगुणा' एदम्हादो
माहासुत्तादो णवदे । सेमपरूषणा जहा णेरइयमिच्छाइद्विद्व्यप्रमाणपरूषणसुत्तस्स उत्ता
तहा वत्तव्या ।

असंखेजासंखेजाहि ओसप्पिणि-उत्सप्पिणीहि अवहिरंति
कालेण ॥ ३० ॥

पदके निर्देशसे क्षेत्र गुणस्वानोंका निराकरण हो जाता है । 'द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा' इसप्रकारके निर्देशसे क्षेत्र और कालप्रमाणका निराकरण हो जाता है । 'कितने है' इसप्रकार पृच्छारूप सूत्रके निर्देशसे छत्रस्यकर्तृकत्वका निराकरण हो जाता है । 'असत्यात है' इसप्रकारके निर्देशसे सत्यात और अनन्तका निराकरण हो जाता है ।

शंका—पहले द्रव्यप्रमाणका ही प्ररूपण क्यों किया जा रहा है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, द्रव्यप्ररूपणा अतीव स्थूल है, इसलिये उसका पहले प्ररूपण किया जाता है ।

शंका—यह द्रव्यप्ररूपणा स्थूल कैसे है ?

समाधान—क्योंकि, यह द्रव्यप्ररूपणा केवल असत्यात विशेषणसे युक्त जीवोंके ग्रहण करनेमें निमित्त है, इसलिये स्थूल है ।

अथवा, क्षेत्र और कालसे द्रव्य स्तोत्र है, इसलिये उक्त दोनों प्ररूपणाओंके पहले द्रव्यप्ररूपणाका कथन किया जाता है ।

शंका—क्षेत्र और कालसे द्रव्य स्तोत्र है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—'वृद्धिनी अपेक्षा जीव, पुद्गल, काल और आकाश उत्तरोत्तर अनन्तगुणे हैं' इस गाथासूत्रसे जाना जाता है कि काल और क्षेत्रसे द्रव्य स्तोत्र है ।

क्षेत्र प्ररूपणा जिसप्रकार नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणके प्ररूपण करनेवाले सूत्रकी वह भाष्ये हैं उसप्रकार कहना चाहिये ।

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यक पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव अमर्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ३० ॥

१ प्रतिपु 'अदीद' इति पाठ ।

एतथ अमखेज्जासखेज्जाणिहेसो सेस असखेज्जाण युदासट्ठो । ओसपिणि-उस्त
पिणीणिहेसो कप्पमाणपरूणणट्ठो । कालेणेत्ति णिहेसो खेत्तादिणियत्तणट्ठो । कध दब्ब
परूवणादो कालपरूणणा सुहुमा ? असखेज्जासखेज्जोरलभणिमित्तादो पल्ल सायर-रूपाण
सुवरिमसग्गानिसिदजीवेवलभणिमित्तादो च । सपहि सुहुमदरपरूणणट्ठ सुत्तमाह—

खेत्तेण पचिदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि
देवअवहारकालादो संखेज्जगुणहीणेण कालेण ॥ ३१ ॥

एतथ पदरगहणेण जगपदरस्स गहण, ण पदरगुलस्स, 'देवअवहारकालादो
संखेज्जगुणहीणेण कालेण' इदि त्रयणणहाणुत्तत्तीदो । देवाणमवहारकाले संखेज्जरूपेहि
भागे हिटे जो भागलट्ठो सो पदरगुलस्स सखेज्जदिभागो होदि । त कध जाणिज्जे ?
सविग्गगीट्ठथ आइरियाणमभिरुद्धवयणाट्ठो णत्तटे । एमा पचिदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छा-
इट्ठीणमवहारकालो होदि । अहमा संखेज्जरूपेहि स चिअंगुले भाग हिटे लद्धे वग्गिणे

शेष असख्यातोंके निराकरण करनेके लिये यहा सूत्रमें असख्यातासख्यात पदका
ग्रहण किया है । कल्पके प्रमाणके प्ररूपण करनेके लिये असर्पिणी ओर उत्सर्पिणी पदका
ग्रहण किया है । क्षेनादि प्रमाणोंके निराकरण करनेके लिये 'कालकी अपेक्षा' इस पदका
ग्रहण किया है ।

शुका—द्रव्यप्ररूपणासे कालप्ररूपणा सूक्ष्म कैसे हे ?

समाधान—असख्यातासख्यातके ग्रहण करनेका निमित्त कालप्ररूपणा हे । अथवा,
कालप्ररूपणा पश्य, सागर और कल्पसे ऊपरकी सख्यासे विशिष्ट जीवोंके ग्रहण करानेमें
निमित्त हे, इसलिये द्रव्यप्ररूपणासे कालप्ररूपणा सूक्ष्म है ।

अथ अत्यन्त सूक्ष्मप्ररूपणाके प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

धेयस्सो अपेक्षा पचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिध्यादृष्टियों द्वारा देव अवहारकालमे
सख्यातगुणे हीन कालसे जगप्रतर अपहत होता है ॥ ३१ ॥

यहा सूत्रमें प्रतर पदके ग्रहण करनेसे जगप्रतरका ग्रहण किया हे, प्रतरागुलका नहीं,
पर्यॉकि, यदि ऐसा न माना जाय तो 'देव अवहारकालकी अपेक्षा सख्यातगुणे हीन कालसे'
यह बचन नहीं बन सकता हे । देवोंके अवहारकालमें सख्यातका भाग देने पर जो लब्ध आये
यह प्रतरागुलका सख्यातका भाग होता है ।

शुका—यह कैसे जाना जाता हे ?

समाधान—संविन्न होकर जिहोंने पदायोंका निरूपण किया है ऐसे आचार्योंके
अधियद् उपदेशमे जाना जाना है कि देवोंके अवहारकालमें सख्यातका भाग देने पर
प्रतरागुलका सख्यातका भाग लब्ध आता है । और यही पचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिध्यादृष्टि
योंका अवहारकाल है । अथवा, सख्यातसे सख्यागुलके भाजित करने पर जो लब्ध आवे
उसका धर्म कर देने पर पचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिध्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता

पंचिदियतिरिक्त्तपञ्जत्तमिच्छाइट्टीणमपहारकालो होदि । अहवा तप्पाओग्गसंखेज्जरूवे वग्गिऊण पदरंगुले भागे हिदे पंचिदियतिरिक्त्तपञ्जत्तमिच्छाइट्टीणमपहारकालो होदि । एदस्स सद्धिदादओ जाणिय भाणियन्ना । एदेण अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्त्तपञ्जत्तमिच्छाइट्टिद्वं होदि । एर पंचिदियतिरिक्त्तपञ्जत्तमिच्छाइट्टिद्वपरूवणा गदा ।

सासणसम्माइट्टिप्पहुडि जाव संजदासंजदा ति ओधं ॥ ३२ ॥

एदस्स सुत्तस्स जहा तिरिक्त्तगुणपडिवण्णाणं सुत्तस्स वक्कन्वाणं कदं तथा कायव्व, पितेसाभावादो । एव पंचिदियतिरिक्त्तपरूवणा समत्ता ।

पंचिदियतिरिक्त्तजोणिणीसु मिच्छाइट्टी द्वयपमाणेण केव-
डिया, असंखेज्जा' ॥ ३३ ॥

एत्थ पंचिदियणिदेसो सेमिदियबुदासट्टो । तिरिक्त्तणिदेसो सेसगदिबुदासट्टो । जोणिणीणिदेसो पुरिस णट्टुमयलिगबुदासट्टो । मिच्छाइट्टिणिदेसो सेसगुणपडिवण्णबुदासट्टो ।

है । अथवा, तद्योग्य सत्प्रातःकाल वर्ग करके और उस चर्गित राशिका प्रतरागुलम भाग देने पर पचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस अवहारकालके सट्टित आदिकको समझकर कथन करना चाहिये ।

इस अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर पचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य होता है । इसप्रकार पचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंकी द्रव्यप्ररूपणा समाप्त हुई ।

मासादनसम्पग्दष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानप्रती पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त जीव ओषधप्ररूपणाके समान पत्योपभके असंख्यातवें भाग है ॥ ३२ ॥

जिसप्रकार तियचोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रका व्याख्यान कर आये हैं, उसीप्रकार इस सूत्रका भी व्याख्यान करना चाहिये, क्योंकि, उस सूत्रके व्याख्यानसे इस सूत्रके व्याख्यानमें कोई विशेषता नहीं है । इसप्रकार पचेन्द्रिय तिर्यच प्ररूपणा समाप्त हुई ।

पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात है ॥ ३३ ॥

सूत्रमें पचेन्द्रिय पदका निर्देश शेष इन्द्रियोंके निवारण करनेके लिये किया है । तिर्यच पदका निर्देश शेष गतियोंके निवारण करनेके लिये किया है । योनिमती पदका निर्देश पुरुषार्थिग और नपुंसकलिंगके निवारण करनेके लिये किया है । मिथ्यादृष्टि पदका निर्देश

केरडिया इति पुञ्जाणिहेतो मुत्तरम पमाणपडियायणट्टो । जससेज्जा इदि गिहेसो
सखेज्जाणताण पडिसेहफलो । सेस पुत्र च परूरेदव्व ।

असखेज्जासखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति
कालेण ॥ ३४ ॥

एत्थ पुच्चमुत्तादो मिञ्छाडडि ति जणुपट्टवेयव्व, अण्णहा मुत्तथाणुपत्तीदो ।
सेस पचिदियतिरिक्खपञ्चमिञ्छाडडि कालपरणसुत्तमिह पुत्तविहाणेण वत्तव्व ।

खेत्तेण पचिदियतिरिक्खजोणिणिमिञ्छाडडिहि पदरमवहिरदि
देवअवहारकालादो संखेज्जगुणेण कालेण ॥ ३५ ॥

एदस्म सुत्तस्म वत्ताण कीरदे । त जहा— तिणिमयसहस्म-चउगीमसहस्म-
कोडिरूवेहि देवअवहारकाल गुणिणे तदो सग्गेज्जगुणो पचिदियतिरिक्खजोणिणीमिञ्छा-
डडिअवहारकालो हेदि । अहवा उज्जोयणसदमगुल काऊग वग्गिदे इग्गीसकोडाकोडि-
सयाणि तेगीसकोडाकोटीओ छत्तीमकोडिसयसहस्साणि चउमट्टिकोडिसहस्साणि पदर-
गुलाणि पचिदियतिरिक्खजोणिणीमिञ्छाडडिअवहारकालो होदि । अहवा इग्गीसकोडा-

शेष गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंके निवारण करनेके लिये किया है। 'कितने हैं' इसप्रकार
पृच्छारूप पदका निर्देश मूलकी प्रमाणताके प्रतिपादन करनेके लिये किया है। 'असख्यात'
इस पदके निर्देश करनेका फल सत्पात और अनसत्का प्रतिपक्ष करना है। शेष व्याख्यान
पहलेके समान करना चाहिये।

कालकी अपेक्षा पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टि जीव असख्याता
संख्यात अमर्षिणियों और उत्तमर्षिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ३४ ॥

यहां पहलेके सूत्रसे मिथ्यादृष्टि इस पदकी अनुवृत्ति कर लेना चाहिये, अथवा
सूत्राथ नहा वन सत्ता है। शेष नवन पचेन्द्रिय तिर्यच पयात्त मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणका
कालकी अपेक्षा प्ररूपण करनेवाले सूत्रके अनुसार करना चाहिये।

क्षेत्रकी अपेक्षा पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंके द्वारा देवोंके
अवहारकालसे संख्यातगुणे अवहारकालसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ३५ ॥

आगे इस सूत्रका व्याख्यान करते हैं। वह इसप्रकार है— तीन लाख चौबीस हजार
करोड़ सख्यासे दसके अवहारकाठके गुणित करने पर जो लब्ध आये उससे भी सख्यातगुणा
पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टिसव्धी अवहारकाल है। अथवा, छहसौ योजनके अगुल
करके धर्ग करने पर इक्याससौ कोडाकोधी, तेवीस कोडाकोधी, छत्तीस कोधी लाख और चौसठ
कोधी हजार प्रतरागुल प्रमाण पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता

कोडिसद तेवीसकोडाकोडि छत्तीसकोडिलकर-चउमट्टिकोडिमहस्परूपेहि पदरंगुलमोवट्टे-
ऊण तस्सुपरिमग्गे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्त्वाजोणिणीमिच्छाडिट्टिअवहारकालो होदि ।
एद केसिंचि आडरियत्तसाण पंचिदियतिरिक्त्वामिच्छाडिट्टिजोणिणीअवहारकालपडिउद्ध ण
घड्ढे । कुदो ? पुरदो वाणनेतरदेवाण तिणिजोयणमदअगुलग्गमेत्तअवहारकालो होदि
त्ति उक्त्वाणटमणादो । इद वक्त्वाग असच्च वाणनेतरअवहारकालपमाणउक्त्वाण सचमिट्टि
कध जाणिज्जेदे ? णत्थि एत्थ अम्हाणमेयतो, किंतु दोण्ह उक्त्वाणाण मज्जे एकेण
वक्त्वाणेण असच्चेण होदव्व । अहत्ता दोणिणि नि उक्त्वाणाणि अमच्चाणि, एसा अम्हाणं
पहज्जा । कधमेद जाणिज्जेदे ? ' पंचिदियतिरिक्त्वाजोणिणीहितो वाणनेतरदेवा सखेअगुणा,

है । अथवा इक्वीससो कोडाकोडी, तेवीस कोडाकोडी, छत्तीस कोड़ी लाख, आर चौसठ
कोडी हजार प्रमाण सख्यासे प्रतरागुलमे अपवर्तित करके जो लब्ध आधे उसका प्रतरागुलके
उपरिम वर्गमें भाग देने पर पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है ।

निशेषार्थ—एक योजनके चार कोस, एक कोसके दो हजार धनुष, एक धनुषके
चार हाथ और एक हाथके चौबीस अगुल होते हैं, इसलिये एक योजनके अगुल करने पर
 $१ \times ४ \times २००० \times ४ \times २४ = ७६८०००$ प्रमाण अगुल आते हैं । ७६८००० को ६०० से गुणा
कर देने पर ६०० योजनके ४६,०८,००००० प्रमाण अगुल हो जाते हैं । ४६०८००००० सत्यातका
वर्ग कर लेते पर २१,२३,३६,६४,००००००००० प्रमाण प्रतरागुल होते हैं । इनका भाग
अप्रतरमें देने पर पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण आता है ।

पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतियोंके अवहारकालसे सवन्ध रखनेवाला यह कितने ही
आचार्योंका व्याख्यान घटित नहा होता है, क्योंकि, तीनसो योजनोंके अगुलोंका वर्गमात्र व्यतर
देवोंका अवहारकाल होता है, ऐसा आगे व्याख्यान देना जाता है ।

शुका—यह पूर्वोक्त पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतियोंके अवहारकालका व्याख्यान असत्य
है और वाणव्यतर देवोंके अवहारकालके प्रमाणका व्याख्यान सत्य है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—इम विषयम पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतीसबन्धी अवहारकालका व्याख्यान
असत्य ही है और व्यतर देवोंके अवहारकालका व्याख्यान सत्य ही है, ऐसा कुछ हमारा
एकान्त मत नहीं है, किंतु हमारा इतना ही कहना है कि उक्त दोनों व्याख्यानोंमेंसे कोई एक
व्याख्यान असत्य होना चाहिये । अतः, उक्त दोनों ही व्याख्यान असत्य ह, यह हमारी
प्रतिज्ञा है ।

शुका—उक्त दोनों व्याख्यान असत्य है, अथवा, उक्त दोनों व्याख्यानोंमेंसे एक

* उहि अगुलेहि वादा वेवादेहि विहथिणामा य । दोणि विहथी इत्थो वत्थहि ह्वे रिक्व्त्वा ॥ वेरिक्त्वाहि
ददा दइत्तमा उगधत्तुणि सुसल वा । तस्स तहा णाली दोदइत्तस्सप कास ॥ अउकोवेहि जोयण $\times \times$ ।
ति प पत्र ५ ।

तस्यैव देवीओ मरेजगुणाओ' एदम्हादो सुदावधसुत्तादो जाणिअदे । ण च सुत्तम
 पमाण काऊण वकराण पमाणमिदि वोत्तं सविअदे, अइप्पसगादो । ण च एणंक्कस
 देवस्स एका चेव देवी होदि त्ति जुत्ती अत्थि, भवणादियाणं' भूओदेवीणभागमेणो
 वलमादो देवेहिंतो देवीओ वत्तीसगुणाओ' त्ति वक्खणदसणादो च । तम्हा जदि
 वाणवैतरदेवअपहारकालो तिण्णिजोयणमदअगुलवग्गमेत्तो त्ति णिअओ अत्थि तो
 जोणिणीअवहारकालमुप्पायणहं तिण्णिजोयणमदअगुलवग्गमिह वत्तीमोत्तरसदपहुडि चिण
 दिट्ठमाओ गुणमारो पपसेयओ । अध जोणिणीअवहारकालो छज्जोयणमदअगुलवग्गमेत्तो
 त्ति णिणओ अत्थि तो वाणवैतरअवहारकालमुप्पायणहं छज्जोयणमदअगुलवग्गो तेत्तीम
 पहुडि जिणदिट्ठमाओमरेज्जस्सेहि ओपट्ठेयओ । अहरा उभयत्थ वि पदरगुलस्स तप्पा
 ओग्गो गुणमारो दावओ ।

एत्थ सडिदादिधिहिं वत्तइस्सामो । त जहा— पदरगुलउपरिमग्गो पदरगुलस्स

व्याख्यान तो असत्य है ही, यह कैसे जाना जाना है ?

समाधान— 'पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतियोंसे घाणव्य'तर देव संख्यातगुणे' है और
 उनकी देविया घाणव्य'तर देवोंसे सरयातगुणी' है' इस शुद्धव्यथके सूत्रसे उक्त अभिप्राय जाना
 जाता है । सूत्रको अप्रमाण करके उक्त व्याख्यान प्रमाण है, ऐसा तो कहा नहीं जा सकता है,
 अन्यथा, अतिप्रसंग दोष आ जायगा । यदि एक एक देवके एक एक ही देवी होती है, यह युक्ति
 ही जाय सो भी ठीक नहीं है, क्योंकि, भजनवासी आदि देवोंके बहुतसी देवियोंका आगममें उप
 देश पाया जाता है । और 'देवोंसे देविया वत्तीसगुणी' होती है' ऐसा व्याख्यान भी देखा जाता
 है । इसलिये घाणव्य'तरदेवोंका अपहारकाल तीनोंसे योजनाके अंगुलोंका घणमात्र दे, यदि ऐसा
 निश्चय है तो पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतियोंके अपहारकालके उत्पन्न करनेके लिये तीनोंसे
 योजनके अंगुलोंके घर्गमें जो राशि जिनदेवने देली हो तदनुसार घत्तीस अधिक् सौ आदि
 रूप गुणकारका प्रवेश कराना चाहिये । अथवा, 'पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतियोंका अपहारकाल
 छहसौ योजनोंके अंगुलोंका घर्गमात्र है' यदि ऐसा निश्चय है तो घाणव्यतर देवोंका अपहार
 काल उत्पन्न करनेके लिये तेतीस आदि जो संख्या जिनें-द्रदेवने देली हो उससे छहसौ योजनोंके
 अंगुलोंके घर्गको अपघतित करना चाहिये । अथवा, घाणव्य'तर ओर पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती,
 इन दोनोंके अपहारकालोंके लिये दोनों स्थानोंमें भी प्रतरागुलके उसके योग्य गुणकार दे
 देना चाहिये ।

अथ यहा सडित आदिक्की विधिको घतलाते है । यह इसप्रकार है— प्रतरागुलके
 उपरिम घर्गके प्रतरागुलके संख्यातार्थ भागमात्र खड करने पर उनमेंसे एक खड प्रमाण

१ प्रतिपु 'अणादियार्द्धण' इति पाठ ।

२ इण्डुतिसे वत्तीम देवी । गो जी २०८

३ प्रतिपु 'तिण्णिजोयण' इति पाठ ।

सखेज्जदिभागमेत्तसडे ऋए तत्थेयसड पंचिदियतिरिक्त्वाजोणिणीमिच्छाइडिअवहारकालो होदि । सडिदं गद । पदरगुलस्स सखेज्जदिभाएण पदरगुलउपरिमवग्गे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्त्वाजोणिणीमिच्छाइडिअवहारकालो होदि । भाजिद गद । पदरगुलस्स-सखेज्जदिभाग विरलेऊण एक्केस्स रूपस्स पदरगुलस्सुवरिमवग्ग समसंड ऋरिय दिण्णे तत्थ एगसड पंचिदियतिरिक्त्वाजोणिणीमिच्छाइडिअवहारकालो होदि । विरलिद गदं । पदरंगुलस्स सखेज्जदिभाग सलागभूद ठेएऊण पदरगुलउपरिमवग्गादो पंचिदियतिरिक्त्वाजोणिणीमिच्छाइडिअवहारकालपमाणमणिय मलागादो एगरूपमणयव्व । एव पुणो पुणो अवहिरिज्जमाणे पदरंगुलउपरिमवग्गो सलागाओ च जुगए णिड्ढिदाओ । तत्थ आदीए अते मज्जे वा एयवारमवहिदपमाण पंचिदियतिरिक्त्वाजोणिणीमिच्छाइडिअवहारकालो होदि । अवहिदं गद । तस्स पमाणं पदरगुलउपरिमवग्गस्स अमखेज्जदिभागो सखेज्जदिभाग पदरगुलाणि । तं जहा— पदरंगुलेण पदरगुलउपरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुलमामच्छदि । पदरगुलस्स दुभाएण पदरंगुलउपरिमवग्गे भागे हिदे दोणिण पदरगुलाणि आगच्छति । पदरगुलस्स तिभाएण पदरगुलउपरिमवग्गे भागे हिदे तिणिण पदरंगुलाणि

पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसप्रकार खडितका वर्णन समाप्त हुआ । प्रतरागुलके सख्यातवें भागसे प्रतरागुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसप्रकार भाजितका वर्णन समाप्त हुआ । प्रतरागुलके सख्यातवें भागको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रतरागुलके उपरिम वर्गको समान खट करके देयरूपसे दे देने पर वहा एक खडमात्र पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसप्रकार विरलितका वर्णन समाप्त हुआ । प्रतरागुलके सख्यातवें भागको शलाकारूप स्थापित करके प्रतरागुलके उपरिम वर्गमेंसे पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल घटा देना चाहिये । एकरा घटाया, इसलिये शलाकाराशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये । इसप्रकार प्रतरागुलके उपरिम वर्गमेंसे पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल और शलाकागशिमेंसे एक पुन पुन घटाते जाने पर प्रतरागुलका उपरिम वर्ग और शलाकाए एकसाथ समाप्त हो जाती है । वहा आदिमें, अन्तमें अथवा मध्यमें एकबार जितना प्रमाण घटाया जाय उतना पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसप्रकार अपहृतका वर्णन समाप्त हुआ । उस पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण प्रतरागुलके उपरिम वर्गका असख्यातवा भाग है जो सख्यात प्रतरागुलप्रमाण है । उसका स्वर्णीकरण इसप्रकार है— प्रतरागुलका प्रतरागुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर एक प्रतरागुल आता है । प्रतरागुलके दूसरे भागका प्रतरागुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर दो प्रतरागुल लब्ध आते हैं । प्रतरागुलके तीसरे भागका प्रतरागुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर तीन प्रतरागुल लब्ध आते हैं । इसीप्रकार क्रमसे आगे आकर

आगच्छति । एव कमेण गतूण पदरंगुलस्त सखेज्जादिभागेण पदरंगुलउपरिमवग्गे भाग हिदे सखेज्जाणि पदरंगुलाणि आगच्छति । पमाण कारणाणि गदाणि । तस्स का णिरुत्ती ? पदरंगुलस्म सखेज्जादिभागेण पदरंगुले भागे हिदे लद्धम्हि जच्चियाणि रूपाणि तच्चियाणि पदरंगुलाणि ह्वति । णिरुत्ती गदा ।

नियप्पो दुविहो, हेट्ठिमनियप्पो उवरिमनियप्पो चेदि । तस्य हेट्ठिमनियप्प वच्चइस्सामो । पदरंगुलस्म सखेज्जादिभागेण पदरंगुले भागे हिदे लद्धेण त चेव गुणिदे पच्चिदियतिरिक्खज्जोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । अहवा वेस्से हेट्ठिमनियप्पो यत्थि, विहज्जमाणरासीदो हेट्ठिमपदरंगुल पेत्थिय पच्चिदियतिरिक्खज्जोणिणीमिच्छाइट्ठि अवहारकालस्स बहुत्तुणमादो । ण च थोअरासिमवहरिय तत्तो बहुअरासी उप्पादेदु सक्कि ज्जे, विरोहा' । अट्ठरूपे उच्चइस्सामो । पदरंगुलस्त सखेज्जादिभागेण पदरंगुल गुणेऊण पदरंगुलघणे भागे हिदे पच्चिदियतिरिक्खज्जोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । त जहा-पदरंगुलेण पदरंगुलघणे भागे हिदे पदरंगुलउपरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरंगुलस्त सखेज्जादिभागेण पदरंगुलउपरिमवग्गे भागे हिदे पच्चिदियतिरिक्खज्जोणिणीमिच्छाइट्ठि प्रतरागुलके सख्यातवें भागका प्रतरागुलके उपरिम वगमें भाग देने पर सख्यात प्रतरागुल लब्ध आते ह । इसप्रकार प्रमाण और कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

शङ्का— इसनी क्या निश्चित है ?

समाधान— प्रतरागुलके सख्यातवें भागसे प्रतरागुलके भाजित करने पर लब्धमें जो प्रमाण आये उतने प्रतरागुल योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकालमें होते ह । इसप्रकार निश्चिन्ना कथा समाप्त हुआ ।

विश्लेष दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमेंसे अधस्तन विकल्पको घनत्वाने ह— प्रतरागुलके सख्यातवें भागसे प्रतरागुलके भाजित करने पर जो लब्ध आये उससे उसीके अर्थात् प्रतरागुलके गुणित कर देने पर पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । अथवा, यहा विरूपधरामें अधस्तन विकल्प नहीं बनता हे, क्योंकि, भङ्गमान राशिकी अपेक्षा अस्तन प्रतरागुलको देतते हुए पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल बहुत बडा है । कुछ स्तेक राशिकी अपहत करके उससे बड़ा राशि नहीं उत्पन्न की जा सकती है, क्योंकि, ऐसा माननेमें विरोध आता है ।

अथ अट्ठरूपमें अधस्तन विकल्प घनत्वाने ह— प्रतरागुलके सख्यातवें भागसे प्रतरागुलको गुणित करके जो लब्ध आये उससे प्रतरागुलके घनके भाजित करने पर पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार हे— प्रतरागुलसे प्रतरागुलके घनके भाजित करने पर प्रतरागुलका उपरिम वर्ग आता हे । पुन प्रतरागुलके सख्यातवें भागसे प्रतरागुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पचेन्द्रिय तिर्यच

१ प्रविउ ' विरोहलात्वादो ' इति पाठ ।

अवहारकालो आगच्छदि । अद्वपरूवणा गदा । घणाघणे वत्तइस्सामो । पदरगुलस्स सखेज्जदिभाएण पदरगुल गुणेऊण तेण पदरगुलघणस्म पढमउग्गमूल गुणिय घणाघणगुले भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइडिअवहारकालो आगच्छदि । त जहा-
घणगुलेण घणाघणगुले भागे हिदे घणगुलउपरिमउग्गो आगच्छदि । पुणो पदरगुलेण घणगुलउपरिमवग्गे भागे हिदे पदरगुलउपरिमउग्गो आगच्छदि । पुणो पदरगुलस्स सखेज्जदिभागेण पदरगुलउपरिमवग्गे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइडिअव-
हारकालो आगच्छदि । हेड्डिमनियप्पो गदो ।

गहिदादिभेएण उपरिमनियप्पो तिनिहो । तत्थ वेरूरे गहिद वत्तइस्सामो । पदरगुलस्म सखेज्जदिभाएण पदरगुलउपरिमउग्गो भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणी-
मिच्छाइडिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्म अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए ऋदे वि पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइडिअवहारकालो होदि । एसो मड्डिमनियप्पो उपरिमनियप्पणिणयजणणट्ट सभाविदो । पदरगुलस्स सखेज्जदिभाएण पदरगुलउपरिमवग्ग गुणेऊण तस्सुपरिमवग्गे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणी-

योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आता है । इसप्रकार अष्टरूप प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अत्र घनाघनमें अधस्तन विकल्पमें पतलाने है—प्रतरागुलके सख्यातयें भागसे प्रतरागुलको गुणित करके जो लघ्य आवे उससे प्रतरागुलके घनके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लघ्य आवे उसका घनाघनागुलमें भाग देने पर पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आता है । उसका स्वपीकण इसप्रकार है—घनागुलसे घना घनागुलके भाजित करने पर घनागुलका उपरिम वर्ग आता है । पुन प्रतरागुलसे घनागुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर प्रतरागुलका उपरिम वर्ग आता है । पुन प्रतरागुलके सख्यातयें भागसे प्रतरागुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आता है । इसप्रकार अधस्तन विकल्प समाप्त हुआ ।

गृहीत आदिके भेदसे उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है । उनमेंसे द्विरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पमें पतलाने हैं—प्रतरागुलके सख्यातयें भागसे प्रतरागुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आता है । उक्त भागहारके जितने अर्थच्छेद हों उतनीवार उक्त भन्त्यमान राशिके अर्थच्छेद करने पर भी पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । यह मध्यम विकल्प है जो उपरिम विकल्पका निर्णय करानेके लिये पतलाया गया है । प्रतरागुलके सख्यातयें भागसे प्रतरागुलके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लघ्य आवे उसका प्रतरागुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । इसीप्रकार

मिन्डाडिट्टिअवहारकालो आगच्छदि । एवमुपरि जाणित्तण पत्तच्च ।

अद्वरूपे वत्तइम्मामो । पदरगुलस्स सत्तेज्जदिभाएण पदरगुलउपरिमग्गस्सु
वरिमग्गं गुणेऊण घणगुलउपरिमग्गस्सुवरिमग्गे भागे हिदे पचिदियतिरिस्स
जोणिणीमिन्डाडिट्टिअवहारकालो आगच्छदि । त जहा- पदरगुलउपरिमग्गस्सुवरिमग्गेण
घणगुलउपरिमग्गस्सुपरिमग्गे भागे हिदे पदरगुलउपरिमग्गो आगच्छदि । पुणो
पदरगुलस्स सत्तेज्जदिभागेण पदरगुलउपरिमग्गे भागे हिदे पचिदियतिरिक्कजोणिणी
मिच्छाइडिट्टिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्वरूपेणयमेत्ते रागिस्स
अद्वरूपेण कदे रि पचिदियतिरिक्कजोणिणीमिच्छाइडिट्टिअवहारकालो आगच्छदि ।
घणाघणे वत्तइम्मामो । पदरगुलस्स सत्तेज्जदिभाएण पदरगुलउपरिमग्गस्सु
वरिमग्गं गुणेऊण तेण घणगुलउपरिमग्गस्स तन्मग्गं गुणेऊण घणाघणगुलउ
परिमग्गस्सुपरिमग्गे भागे हिदे पचिदियतिरिक्कजोणिणीमिच्छाइडिट्टिअवहारकालो आग
च्छदि । त जहा- पणगुलउपरिमग्गस्स तन्मग्गं गुणेण पणगुलउपरिमग्गस्सु
वरिमग्गे भागे हिदे घणगुलउपरिमग्गस्सुवरिमग्गो आगच्छदि । पुणो पदरगुलउपरिम

ऊपर जानकर भी कथन करना चाहिये ।

अथ अष्टरूपमं गृहीत उपरिम विस्तरको वतलाते द्वे— प्रतरागुलके सख्यातौ
भागसे प्रतरागुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आये उसका घना
गुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टि
अवहारकाल आता है । उसका स्पर्शकरण इसप्रकार है— प्रतरागुलके उपरिम वर्गके उपरिम
वर्गका घनागुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर प्रतरागुलका उपरिम वर्ग आता
है । पुन प्रतरागुलके सख्यातौ भागसे प्रतरागुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पचेन्द्रिय
तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हो
उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती
मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है ।

अथ घनाग्रमं गृहीत उपरिम विस्तरको वतलाते द्वे— प्रतरागुलके सख्यातौ भागसे
प्रतरागुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आये उससे घनागुलके उपरिम
वर्गके वर्गके वर्गको गुणित करके जो लब्ध आये उसका घनाघनागुलके उपरिम वर्गके उपरिम
वर्गमें भाग देने पर पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । उसका
स्पर्शकरण इसप्रकार है— घनागुलके उपरिम वर्गके वर्गके वर्गका घनाघनागुलके उपरिम
वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर घनागुलके उपरिम वर्गका उपरिम वर्ग आता है । पुन

वग्गस्सुपरिमग्गेण घणगुलउपरिमग्गस्सुपरिमग्गे भागे हिदे पदरगुलउपरिमग्गो आगच्छदि । पुणो पदरगुलस्स सखेज्जदिभाएण पदरंगुलउपरिमग्गे भागे हिदे पचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाडडिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदण ऋटे त्ति पचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाडडिअवहारकालो आगच्छदि । एउमुपरि जाणिऊण णेयच्च । पदरगुलउपरिमग्गस्स घणंगुलउपरिमग्गस्स घणाघणगुलस्स च असखेज्जदिभाएण पचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाडडिअवहारकालेण गहिदग्गहिदो गहिदग्गुणगारो च साहेयव्वो । एदेण अवहारकालेण जग्गेट्ठिहि भागे हिदे पचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाडडिपिक्खमसूई आगच्छदि । तेणेव जग्गपठरे भागे हिदे पचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाडडिद्वयमागच्छदि ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओधं ॥ ३६ ॥

द्वयट्ठियणयमस्सिऊण ओधपरुवणा हवदि । पज्जपट्ठियणए पुण अवलविज्जमाणे तिरिक्खोधपरुवणाए पचिदियतिरिक्खपज्जत्तोवपरुवणाए वा पचिदियतिरिक्खजोणिणीगुणपडिवणपरुवणा समाणा ण हवदि, तिपेदरामीदो इत्थिपेदेगरासिस्स समाणचाणुवप्रतरगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गका घनागुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर प्रतरगुलका उपरिम वर्ग जाता है । पुन प्रतरगुलके सख्यातमें भागसे प्रतरगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भयमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल जाता है । इसप्रकार ऊपर जानकर ले जाना चाहिये । प्रतरगुलके उपरिम वर्गके असख्यातमें भागरूप, घनागुलके उपरिम वर्गके असख्यातमें भागरूप और घनाघनागुलके असख्यातमें भागरूप पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकालके द्वारा गृहीतगृहीत ओर गृहीतगुणहारको माय लेना चाहिये । इस अवहारकालसे जगत्त्रेणिके भाजित करने पर पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टि विष्कभसूची जाती है । ओर उसी अवहारकालसे जगत्प्रतरके भाजित करने पर पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टि द्वय आता है ।

मामाट्ठनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमे पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती जीव तिर्यच सामान्य प्ररूपणाके समान पल्योपमके असख्यातमें भाग है ॥ ३६ ॥

द्रव्यार्थिक नयना गार्थय लेकर सासाट्ठनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानयतीं पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती जीवोंकी प्ररूपणा तिर्यच सामान्य प्ररूपणाके समान है । परंतु पर्यायार्थिक नयना अलम्बन करने पर तिर्यच सामान्य प्ररूपणा अथवा पचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त सामान्य प्ररूपणाके समान पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंकी प्ररूपणा नहीं होती है, क्योंकि, तिन वेदनाली राशिसे एक रीतिसे जीवराशिकी समानता नहीं बन

वत्तीए, तम्हा विसेसेण होदच्च । त विमेम पुच्चाइरियापिरुद्धोपएसेण वत्तइम्मामा । व
जटा— पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तअसजदसम्माइट्टिअवहारकाले आणलियाए असखेज्जदि
भाएण गुणिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीअसजदसम्माइट्टिअवहारकालो होदि । तमावलि
याए असखेज्जदिभाएण गुणिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसम्माभिच्छाइट्टिअवहारकालो
होदि । त सखेज्जरूपेहिं गुणिदे तत्थेन सामणसम्माइट्टिअवहारकालो होदि । तमावलिपाए
असखेज्जदिभाएण गुणिदे सनदामजदअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहिं
रुडिदादओ ओघभगो । पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तेसु पुरिसवेदासजदसम्माइट्टिरासीदो
तत्थेव इत्थिवेदासजदसम्माइट्टिरासी किमट्टमसखेज्जगुणहीणा ? पुरिसवेदादो सुहु अप्प
मत्थित्थिवेदोदएण पउर टमणमाहणीयत्तओपममाभावादो । जटि एव तो तत्थत्तणइत्थि
वेदअसजदसम्माइट्टिरासीदो तत्तो अप्पमत्थत्तणत्तुमगेवेदअमजदसम्माइट्टिरासिस्म अण
खेज्जगुणहीणत्त पसज्जदे ? भवदु णाम अपिरुद्धत्तादो । पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तत्तिवेद
सम्माभिच्छाइट्टिरासीदो पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीअसजदसम्माइट्टिरासी किं समो किं

सकती है । इनलिये सामा य प्ररूपणासे यह प्ररूपणा विशेष होना चाहिये । आगे उस
निशेषको पूर्ण आचार्योंके अपिरुद्ध उपदेशसे अनुसार उतलते हैं । यह इसप्रकार है—
पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त असयतसम्यग्दृष्टिसवर्धा अवहारकालको आवलीने असत्यातमें
भागसे गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती असयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल होता है ।
उसे आचर्योंके असत्यातमें भागसे गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमता सम्यग्मिध्या
दृष्टि अवहारकाल होता है । उसे सत्यातसे गुणित करो पर वहाँ पंचेन्द्रिय तिर्यंच
योनिमतिमें सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । उसे आवलीके असत्यातमें भागसे
गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती सयतामयत अवहारकाल होता है । इन अवहार
कालोंके द्वारा खडित आदिनाक वन सामा य तिर्यंचोंके खडित आदिकके कथनके समान है ।

शुभा— पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्तमें पुरुषवेदी असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे
वहाँ पर खीवेदी असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि असत्यातगुणी हीन किस कारणसे है ?

समाधान— पुरुषवेदीकी अपेक्षा अप्रशस्त स्त्रीवेदीके उदयके साथ प्रचुररूपसे दर्शन
मोहनीयके क्षयोपशमका अभाव है ।

शुका— यदि ऐसा है तो उन्हा पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंमें खीवेदी असयतसम्यग्दृष्टि जब
राशिसे खीवेदियोंसे भी अप्रशस्त नपुंसस्त्री असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिके असत्यातगुणी
हीनता प्राप्त हो जाती है ?

समाधान— खीवेदियोंसे नपुंसस्त्रीवेदियोंके असत्यातगुणी हीनता प्राप्त होती है
तो हो जाओ क्योंकि, ऐसा स्त्रीकार कर लेनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त तीनों वेदवाली सम्यग्मिध्यादृष्टि जीवराशिसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच
योनिमती असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि क्या समान है, या खंग्यातगुणी है, या असत्यातगुणी

सखेज्जगुणो किमसंखेज्जगुणो किं सखेज्जगुणहीणो किमसंखेज्जगुणहीणो किं विसेसा
हिओ विसेसहीणो वा चि णत्थि सपहियकाले उएत्तो ।

पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असं-
खेज्जा ॥ ३७ ॥

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहिं अवहिरंति
कालेण ॥ ३८ ॥

एदाणि दोणिण वि सुत्ताणि सुगमाणि । कित्तु एत्थ अपज्जत्ता इदि वुत्ते
अपज्जत्तणामकम्मोदयपंचिदियतिरिक्खा घेत्तव्वा । पज्जत्तणामकम्मस्म उटए अपज्जत्तो
वि पज्जत्तो चेत्त, णोक्कम्मणिक्खत्तिअनेक्खाभात्तो ।

खेत्तेण पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तोहि पदरभवहिरदि देवअवहार-
कालादो असंखेज्जगुणहीणेण कालेण ॥ ३९ ॥

पण्हिसहस्स पचसय-उत्तीसपदरगुलमेत्तदेवअवहारकालमात्रलियाए असखेज्जदि-
भाएण भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तअवहारकालो होदि । अवसेसा संडिटादि-
त्रियप्पा पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइड्डीण व भाणेदव्वा ।

है, या सख्यातगुणी हीन है, या असख्यातगुणी हीन है, या विशेषाधिक है, या विशेष हीन
है, इत्यादिरूपसे इस कालमें कोई उपदेश नहा पाया जाता है ।

पचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अमख्यात
हैं ॥ ३७ ॥

कालकी अपेक्षा पचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्त जीव असख्यातासख्यात असर्पिणियों
और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ३८ ॥

ये दोनों भी घट्ट सुगम हैं । किंतु यहा पर अपर्याप्त पेसा कथन करने पर अपर्याप्त
नामकर्मके उदयसे युक्त पचेन्द्रिय तिर्यचोंका ग्रहण करना चाहिये । तथा जिसके पर्याप्त
नामकर्मका उदय है वह (शरीर पर्याप्तिके पूर्ण होने तक) अपर्याप्त होता हुआ भी पर्याप्त ही
है, क्योंकि, यहा पर नो कर्मकी निर्धृतिकी अपेक्षा नहीं है ।

क्षेत्रकी अपेक्षा पचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्तोंके द्वारा देवोंके अवहारकालसे अस्-
ख्यातगुणे हीन कालसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ३९ ॥

पैंसठ हजार पाचसौ छत्तीस प्रतराशुल्मान देवोंके अवहारकालमें आवलीके असख्या
तवें भागका भाग देने पर पचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्त अवहारकाल होता है । अचशिष्ट खडित
आदि विकल्पोंका कथन पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टियोंके खडित आदिके कथनके समान
करना चाहिये ।

भागामाग वचइस्सामो । तिरिकसरासिमणतखडे कडे तत्थ बहुसडा एइदिय
त्रियलिनिया हांति । सेस सखेज्जखडे कडे तत्थ बहुसडा पंचिदियतिरिक्खलद्विअपज्जवा
हाति । मेसं सखेज्जखडे कए तत्थ बहुसडा पंचिदियतिरिक्खपज्जचमिन्डाडिद्वी हांति ।
सेसमसखेज्जखडे कए तत्थ बहुसडा पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाडिद्वी हांति ।
सेमसखेज्जखडे कए तत्थ बहुसडा पंचिदियतिरिक्खतिपेदअसज्जदसम्माइडिद्विद्वं होदि ।
सेम मखेज्जखडे कए तत्थ बहुसडा पंचिदियतिरिक्खतिपेदसम्मामिच्छाडिद्विद्वं हांति ।
सेसमसखेज्जखडे कए तत्थ बहुसडा पंचिदियतिरिक्खतिपेदसासणमम्माइडिद्विद्वं होदि ।
सेसैगण्डा सनटासज्जदा हांति ।

अप्पागहुअ तिविह सखाण पग्खाण सव्वपरखाण चेदि । तत्थ सत्थाणे भण्ण
माणे तिरिक्खमिच्छाडिद्वीण सत्थाण णत्थि, रासीदो धुरासिस्स गहुत्तुलभादो ।
सामणादीण सत्थाणमोघ । पंचिदियतिरिक्खमिच्छाडिद्वीण सत्थाणप्पागहुग बुचदे ।
सव्वत्थोमो पंचिदियतिरिक्खमिच्छाडिद्विअवहारकालो । तस्सेन विक्खममई असखेज्जमुणा ।
को गुणगारो ? सगविक्खममईए असखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालो ।

अत्र भागामागको बतलाते ह— नियच राशिके अनत्त खट करने पर उनमेंसे
बहुगउप्रमाण एकेंद्रिय और विरत्रेन्द्रिय जीव ह । शेषके सख्यात खड करने पर
उनमेंसे बहुभाग पचेन्द्रिय तिर्यच लक्ष्यपर्याप्तक जीव ह । शेषके सख्यात खड करने
पर उनमेंसे, बहुभाग पचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव ह । शेषके असख्यात
खड करने पर उनमेंसे बहुभाग पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टि जीव ह । शेषके
असख्यात खट करने पर उनमेंसे बहुभाग पचेन्द्रिय तिर्यच तीन वेदवाले असयतसम्यग्दृष्टि
योंका द्रव्य है । शेषके सख्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभाग पचेन्द्रिय तिर्यच तीन
वेदवाले सम्यगिमिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य है । शेषके असख्यात खट करने पर उनमेंसे बहुभाग
पचेन्द्रिय तिर्यच तीन वेदवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य है । शेष एक खटप्रमाण
पचेन्द्रिय तिर्यच तीन वेदवाले सयतासयत है ।

अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है स्वस्थान अल्पबहुत्व, परस्थान अल्पबहुत्व और
सन्नपरस्थान अल्पबहुत्व । उनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन करने पर तिर्यच मिथ्या
दृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, क्योंकि, तिर्यच मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे
धुराराशिका प्रमाण बडा है । सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व सामान्य
प्ररूपणाके समान ह । अत्र पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व बतलाते
हैं— पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल सत्रसे ढोडा है । उन्हीं पचेन्द्रिय तिर्यच
मिथ्यादृष्टियोंका विक्खमसुची असख्यातगुणी है । गुणनर क्या है ? अपनी विक्खमसुचीका
असख्यातवा भाग गुणनर है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा,

अहमा सेठीए असखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेठिपढमवग्गमूलाणि । को पडि-
भागो ? सगअवहारकालग्गो । अहवा असखेज्जाणि घणगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ?
सूचिअगुलस्स असखेज्जदिभागमेत्ताणि । सेठी असखेज्जगुणा । को गुणमारो ? सग-
अवहारकालो । द्वन्द्वमसखेज्जगुणं । को गुणमारो ? सगविक्रमसुद्धं । पदरमसंखेज्जगुणं ।
को गुणमारो ? सगअवहारकालो । लोगो असखेज्जगुणो । को गुणमारो ? सेठी । एवं
चेन पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठीणं पि । णरि जम्हि सूचिअगुलस्स असंखेज्जदि-
भागमेत्ताणि घणागुलाणि चि वुत्त तम्हि सूचिअगुलस्स सखेज्जदिभागमेत्ताणि चि
वत्तव्व । एवं चेन पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठीण हि । णरि जम्हि सूचि-
अगुलस्स सखेज्जदिभागमेत्ताणि चि वुत्त तम्हि सखेज्जसूचिअगुलमेत्ताणि चि वत्तव्वं ।
पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तसत्थाणप्पात्रहुग पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिसत्थाणभगो ।
पंचिदियतिरिक्खपज्जत्त पंचिदियतिरिक्खजोणिणीगुणपडिवण्णाण सत्थाण तिरिक्खगुण-
पडिवण्णासत्थाणभगो ।

परत्थाणे पयद । अमजदसम्माइट्ठिअवहारकालादो जाव पलिदोवमेत्ति

जगश्रेणीका असख्यातवा भाग गुणकार द्वे जो जगश्रेणीके असख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण
है । प्रतिभाग क्या है ? अपने अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है । अथवा, असख्यात घनागुल
गुणकार है । वे कितने द्वे ? सूच्यगुलके असख्यातवें भागमात्र द्वे । विष्कभसूचीसे जगश्रेणी
असख्यातगुणी द्वे । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । जगश्रेणीसे पचेन्द्रिय
तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कभसूची गुणकार
द्वे । पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे जगप्रतर असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
अपना अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
जगश्रेणी गुणकार है । इसीप्रकार पचेन्द्रिय तिर्यंच पचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टियोंका भी स्वस्थान
अल्पप्रहुत्व कहना चाहिये । पर इतना विशेष है कि जहा पर सूच्यगुलके असख्यातवें भागमात्र
घनागुल होते हैं ऐसा कहा है वहा पर सूच्यगुलके सख्यातवें भागमात्र घनागुल होते हैं ऐसा
कहना चाहिये । इसीप्रकार पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका भी स्वस्थान
अल्पप्रहुत्व होता है । इतना विशेष है कि जहा पर सूच्यगुलके सख्यातवें भागमात्र घनागुल होते
है ऐसा कहा है वहा पर संख्यात सूच्यगुलमात्र घनागुल होते हैं ऐसा कहना चाहिये । पचेन्द्रिय
तिर्यंच अपर्याप्तोंका स्वस्थान अल्पप्रहुत्व पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके स्वस्थान
अल्पप्रहुत्वके समान है । पचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त आर पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती गुणस्थान-
प्रतिपन्न जीवोंका स्वस्थान अल्पप्रहुत्व तिर्यंच गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके स्वस्थान अल्पप्रहुत्वके
समान है ।

अथ परस्थानमें अल्पवहुत्वका ऋयन प्रकृत है— असयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे

ओघपरस्थाणभंगो । तदो मिच्छाइष्टी अणंतगुणा । को गुणगारो ? तिरिक्ख
मिच्छाइष्टिणधुसगसखेज्जदिभागो । पच्चिदियतिरिक्खेसु असजदस्स अवहारकालो जा
पलिदोवमेत्ति ओघपरस्थाणभंगो । तदो मिच्छाइष्टिअवहारकालो असखेज्जगुणो । का
गुणगारो ? पदरगुलस्म असखेज्जदिभागो असखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि सूचिअगुलस्स
असखेज्जदिभागमेत्ताणि । को पडिभागो ? असखेज्जाणि पलिदोवमाणि । उररि सत्थाण
भंगो । एव पच्चिदियतिरिक्खअपज्जत्तत्ताण पि वत्तव्व । णवरि जम्हि असखेज्जाणि
पलिदोवमाणि चि वुत्त तम्हि सखेज्जाणि पलिदोवमाणि चि वत्तव्व । एव जौणिणीण
पि । णवरि जम्हि सखेज्जाणि पलिदोवमाणि चि वुत्त तम्हि पलिदोवमस्स मखेज्जि
भागो । पच्चिदियतिरिक्खअपज्जत्तपरस्थाण सगसत्थाणतुल्ल ।

सव्वपरस्थाणे पयद । सव्वत्थोवो असजदसम्माइष्टिअवहारकालो । एव जा
पलिदोवमेत्ति णेयव्व । तदो पच्चिदियतिरिक्खमिच्छाइष्टिअवहारकालो असखेज्जगुणो ।
को गुणगारो । पुच्चभणिदो । पच्चिदियतिरिक्खअपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ
केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असखेज्जदिभाएण एडिदएयखंडमेत्तेण । पच्चिदियतिरिक्ख

लेकर पल्योपमतक ओघ परस्थान अल्पबहुत्वके कथनके समान कथन जानना चाहिये ।
पल्योपमसे मिथ्यादृष्टि द्रव्य अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? तियच मिथ्यादृष्टि नपुसक
चेद्वियोंका सख्यातवा भाग गुणकार है । पचेन्द्रिय तिर्यचोंमें असयतोंके अवहारकालसे लेकर
पल्योपमतक ओघ परस्थानके कथनके समान कथन जानना चाहिये । पल्योपमसे मिथ्यादृष्टि
अवहारकाल असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? प्रतरागुलका असख्यातवा भाग गुणकार
है जो सूच्यगुलके असख्यातवें भागमात्र असख्यात सूच्यगुलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या
है ? असख्यात पल्योपमोंका प्रमाण प्रतिभाग है । इसके ऊपर स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान
कथन जानना चाहिये । इसीप्रकार पचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्तोंके अल्पबहुत्वका भी कथन करना
चाहिये । इतना विशेष है कि जहा पर असख्यात पल्योपम है ऐसा कहा है वहा पर सख्यात
पल्योपम है ऐसा कथन करना चाहिये । इसीप्रकार योनिमतियोंके अल्पबहुत्वका भी कथन
करना चाहिये । इतना विशेष है कि जहा पर सख्यात पल्योपम है ऐसा कहा है वहा पर
पल्योपमका संख्यातवा भाग है ऐसा कथन करना चाहिये । पचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्तोंका
परस्थान अल्पबहुत्व अपने स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है ।

अब सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्वका कथन प्रकृत है— असयतसम्यग्दृष्टियोंका
अवहारकाल सबसे स्तोक है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे
पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पूर कथित
प्रतरागुलका असख्यातवा भाग गुणकार है । पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे
पचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्तोंका अवहारकाल विशेष अधिक है । किन्तने मात्र विशेषसे अधिक है ।
पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको आधलीके असख्यातवें भागसे कथित करके

पज्जत्तअपहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असखेज्जदिभागस्स सखेज्जदिभागो । पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअपहारकालो सखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । तस्सेव विक्खमसूई असखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पुच्चमणिटो । पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठिविक्खमसूई सखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सखेज्जा समया । पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तविक्खमसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आपलियाए असखेज्जदिभागो । पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिविक्खमसूई त्रिसेमाहिया । केत्तियमेत्तेण विसेसो ? आपलियाए असखेज्जदिभाएण सड्ढिमत्तो । सेढी असखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अपहारकाले । पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिद्वयमसखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगविक्खमसूई । पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिपज्जत्तद्वय सखेज्जगुणं । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तद्वयमसखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आपलियाए असखेज्जदिभागस्स संखेज्जभागो । पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठि-

जो एक खड लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । पचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके अवहारकालसे पचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीवोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है ? गुणकार क्या है ? आवलीके असख्यातवें भागका सख्यातवा भाग गुणकार है । पचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल सख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सख्यात समय गुणकार है । उन्हां पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कभसूची उन्हांके अवहारकालसे असख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? पहले कह आवे ह । पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कभसूचीसे पचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कभसूची सख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? सख्यात समय गुणकार है । पचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कभसूचीसे पचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंकी विष्कभसूची असख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? आवलीका असख्यातवा भाग गुणकार है । पचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंकी विष्कभसूचीसे पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कभसूची विशेष अधिक है । कितनेमात्रसे अधिक है ? पचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंकी विष्कभसूचीको आवलीके असख्यातवें भागसे खडित करने पर जितना लब्ध आवे तन्मात्र अधिक है । पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कभसूचीसे जगश्रेणी असख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । जगश्रेणीसे पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना विष्कभसूची गुणकार है । पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि पर्याप्तोंका द्रव्य सख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सख्यात समय गुणकार है । पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि पर्याप्तोंके द्रव्यसे पचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंका द्रव्य असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीके असख्यातवें भागका सख्यातवा भाग गुणकार है । पचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके द्रव्यसे पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य

द्वय विसैसाहिय । केचित्तमेत्तेण ? आगलियाए असखेज्जटिभागंपडिदमेत्तेण । पदम
सखेज्जगुण । को गुणमारो ? अग्रहारकालो । लोगो अमखेज्जगुणो । को गुणमारो ?
सेढी । तिरिक्यमिच्छाडडिद्वयमणतगुण । को गुणमारो ? अमत्रसिद्धिएहि अणतगुणो
मिद्धेहि पि अणतगुणो मत्रसिद्धियजीवाणमणताभागस्स अमखेज्जटिभागो ।

मणुसगईए मणुस्सेसु मिच्छाईट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया,
असंखेज्जा ॥ ४० ॥

एत्य मणुसगइगहणेण सेमगइपटिसेहो कदे । मणुस्सेसु त्ति त्रयणेण तत्थ ट्ठि
सेसजीवादिदव्वपटिसेहो कओ । मिच्छाडडि त्ति त्रयणेण सेसगुणट्ठाणपटिमेहो कणे ।
खेत्त कालपमाणयुदासट्ठ दव्वगहण । सुत्तस्स पमाणपरूणट्ठ केवडियगहण । सखेज्जाणताण
युदामट्ठ असखेज्जगहण । अडयूलपरूणण परूणिय सुट्टमट्टपरूणणट्ठ उत्तरसुत्तं भणदि—

विशेष अधिक है । कितनेमात्रसे अधिक है ? पचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके द्रव्यको जानलीके
असरयातयें भागसे स्पटिन करके जो एक खटलव्य आवे त-मात्रसे अधिक है ।
पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे जगप्रतर असरयानगुणा है । गुणकार क्या है ?
पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका अग्रहारकाल गुणकार है । जगप्रतरमे लोफ असख्यातगुणा ह ।
गुणकार क्या है ? जगध्रेणी गुणकार है । लोकसे तिर्यंच मिथ्यादृष्टि द्रव्य अत-तगुणा है । गुणकार
क्या है ? अमव्यसिद्धोंसे अनन्तगुणा, सिद्धोंसे भी अत-तगुणा या भव्यसिद्ध जीवोंके अत-त
घटभागोंका असख्यातना भाग गुणकार है ।

मनुष्यगतिप्रतिपन्न मनुष्योंम मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्य प्रमाणकी अपेक्षा कितने है ?
असख्यात हैं ॥ ४० ॥

इस सूत्रमें 'मनुष्यगति' इस पदके ग्रहण करनेसे शेष गतियोंका प्रतिषेध कर दिया
गया है । 'मनुष्योंमें' इसप्रकारके पचनसे उदा पर स्थित शेष जीवादि द्रव्योंका प्रतिषेध
कर दिया है । 'मिथ्यादृष्टि' इस वचनसे शेष गुणस्थानोंका प्रतिषेध कर दिया है । क्षेत्रप्रमाण
और कालप्रमाणका निराकरण करनेके लिये द्रव्य पदका ग्रहण किया है । सूत्रकी प्रमाणताका
प्ररूपण करनेके लिये 'कितने ह' इस पदका ग्रहण किया है । सरयात और अनन्तका
निराकरण करनेके लिये असरयात पदका ग्रहण किया है । अब अतिस्थूल प्ररूपणाका प्ररूपण
करके सूक्ष्म प्ररूपणाका प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

१ प्रतिपु '—नाए' इति पाठ ।

२ अविज्ञा मशसा । अनु सू १४१ पृ १७९

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति-
कालेण ॥ ४१ ॥

द्वयप्रमाणमवेन्नित्तय कालप्रमाणस्स महत्तोत्तलमादो असत्तेज्जाम्पेज्जदिशोस-
प्पिणि उस्सप्पिणिप्रित्तेसत्तापरुत्तणादो वा कालप्रमाणस्स सुहुमत्तण उत्तव्वं । सेसपरुत्तणा
पुत्तव्वं न परुत्तेयव्वं ।

खेत्तेण सेठीए असंखेज्जदिभागो । तिस्से सेठीए आयामो
असंखेज्जदिजोयणकोडीओ । मणुसमिच्छाद्दट्ठीहि रूवा पक्खित्तएहि
सेठी अवहिरदि अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेणं ॥ ४२ ॥

सेठीए असत्तेज्जदिभागो इदि सामण्ययणेण संखेज्जजोयणप्पट्ठि हेट्ठिमसत्ता-
नियप्पण मत्तेसिं गहणे सपत्ते तप्पडिसेहट्ठ असत्तेज्जजोयणकोडीओ चि वुत्त । तिस्से
सेठीए असत्तेज्जदिभागस्स सेठीए पंतीए आयामो दीहत्तणमिदि संभेयव्वं । असत्तेज्जदि-

कालकी अपेक्षा मनुष्य मित्यादृष्टि जीव असरयातासख्यात अत्रसर्पिणियों
और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ४१ ॥

द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कालप्रमाणकी महत्ता पार्स जानेके कारण अथवा, कालप्रमाण
असरयातासख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीरूप विशेष सख्याका प्ररूपण करनेवाला होनेसे
उसकी (कालप्रमाणकी) सूक्ष्मताका कथन करना चाहिये । शेष प्ररूपणाका कथन पहलेके
समान करना चाहिये ।

क्षेत्रकी अपेक्षा जगश्रेणीके असरयातर्ने भागप्रमाण मनुष्य मित्यादृष्टि जीव-
राशि है । उस श्रेणीका आयाम (अर्थात् जगश्रेणीके असरयातर्ने भागरूप श्रेणीका
जायाम) असरयात करोड योजन है । सूच्यगुलके प्रथम र्गमूलको सूच्यगुलके
तृतीय र्गमूलसे गुणित करके जो लब्ध आवे उमे शलाकारूपसे स्थापित करके रूपाधिक
(अर्थात् एकाधिक तरह गुणस्थानवर्ती राशिसे अधिक) मनुष्य मित्यादृष्टि राशिके द्वारा
जगश्रेणी अपहृत होती है ॥ ४२ ॥

सूत्रमें 'जगश्रेणीके असरयातर्ने भागप्रमाण' इसप्रकार सामान्य वचन देनेसे सरयात
योजन आदि अधस्तन सपूर्ण सख्याका ग्रहण प्राप्त होता है, अत उसका प्रतिषेध करनेके
लिये 'असख्यात करोड योजन' पदका ग्रहण किया । सूत्रमें आये हुए 'उत्स श्रेणीका आयाम'
इस पदसे उस श्रेणीके असख्यातर्ने भागकी पक्तिका आयाम अर्थात् दीर्घता पेसा सख्य

१ मनुष्यगतो मनुष्या मित्यादृष्टय श्रेण्यसख्ययमागप्रमिता । स त्वामम्बेयमाग अवस्वेया याजन
कौत्त । स सि १, c सेटा सुअंगुलआदिमतदियपदमाजिदेण्णा । सामण्यमणुसरासी । गो जी १५७
अश्रीतवप मणुया सदी रूवादिवा अवहरति । तदयमूलाद्दहि अंगुलमूलाद्दहि । पञ्च २, २१ ।

जोयणकोटीओ ति वयणे पदरगुल घणगुलादीर्ण गहणे पत्ते तप्पडिसेहट्ट अगुलवग्गमूल तदियवग्गमूलगुणिदेणेत्ति' वयण । अगुलवग्गमूलमिदि वुत्ते सच्चिअगुलपढमवग्गमूल गहयेव्वं । तदियवग्गमूलमिदि वुत्ते सच्चिअगुलतदियवग्गमूलस्स गहण । कुटो ? सच्चि अगुलसहचारादो अणुवट्टणादो वा । सच्चिअगुलतदियवग्गमूलेण तस्सेन पढमवग्गमूल गुणिदे मणुसमिच्छाडड्ढीण अणहारकालो हेदि । अहना सच्चिअगुलविदियवग्गमूलेण तदिय वग्गमूल गुणिय सच्चिअगुले भागे हिदे मणुसमिच्छाडड्ढीअणहारकालो आगच्छदि । तस्स स्वडिड माज्जित-निरिलिट-अणहिदाणि जाणिलण वत्तच्चाणि । तस्स पमाण सच्चिअगुलस्स असरेज्जदिभागो असरेज्जजाणि सच्चिअगुलपढमवग्गमूलाणि । त जहा—सच्चिअगुलपढम वग्गमूलेण सच्चिअगुले भागे हिदे पढमवग्गमूलमेण लमामहे । विदियवग्गमूलेण सच्चि अगुले भागे हिदे विदियवग्गमूलग्गिह जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि लब्धमति । विदिय तदियवग्गमूलमणोण्णवत्तथ करिय सच्चिअगुले भागे हिदे अमरेज्जजाणि सच्चिअगुलपढमवग्गमूलाणि लब्धमति ति ण सदेहो । तस्स निरुत्ती तदियवग्गमूलेण

करना चाहिये । 'असख्यात करोट योजन' इसप्रकारका वचन रहने पर प्रतरागुल आर घनागुल आदिका प्रद्वण प्राप्त होता है, अत उसका प्रतिषेध करनेके लिये सूत्र्यगुलका प्रथम वर्गमूल तृतीय वर्गमूलसे गुणित' इसप्रकारका वचन दिया है । यद्वा पर 'अगुलका वर्गमूल' ऐसा कथन करने पर उससे सूत्र्यगुलके प्रथम वर्गमूलका प्रद्वण करना चाहिये । 'तृतीय वर्गमूल' ऐसा कथन करने पर उससे सूत्र्यगुलके तृतीय वर्गमूलका प्रद्वण करना चाहिये । क्याकि, यद्वा पर सूत्र्यगुलका साहचय सबंध है । अथवा, ऊपरसे उसीकी अनुवृत्ति है । इसका तात्पर्य यह हुआ कि सूत्र्यगुलके तृतीय वर्गमूलसे उसी सूत्र्यगुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । अथवा, सूत्र्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका सूत्र्यगुलमें भाग देने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आता है । इस अवहारकालके खडित, भाजित, चिरन्तित और अपहृतको जानकर उनका उधन करना चाहिये । उस मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण सूत्र्यगुलके असख्यातन भागप्रमाण है जो सूत्र्यगुलके असख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । उसका स्पर्शीकरण इसप्रकार है—सूत्र्यगुलके प्रथम वर्गमूलसे सूत्र्यगुलके भाजित करने पर सूत्र्यगुलका प्रथम वर्गमूल ही प्राप्न होता है । सूत्र्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूत्र्यगुलके भाजित करने पर सूत्र्यगुलके द्वितीय वर्गमूलमें जितनी सख्या हो उतने सूत्र्य गुलके प्रथम वर्गमूल लब्ध गाते हैं । इसीप्रकार सूत्र्यगुलके दूसरे और तीसरे वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करके जो लब्ध आवे उससे सूत्र्यगुलके भाजित करने पर सूत्र्यगुलके असख्यात प्रथम वर्गमूल लब्ध आवे हैं, इसमें सदेह नहीं । उसी मनुष्य मिथ्यादृष्टि

विदियवग्ममूले भागे हिदे लद्धस्त जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्ममूलाणि ।

त्रियप्पो दुग्गिहो, हेट्टिमवियप्पो उपरिमत्रियप्पो चेदि । तत्थ हेट्टिमत्रियप्पं वत्तइस्सामो । विदिय तदियवग्ममूले अण्णोण्णगुणे करिय पढमवग्ममूले भागे हिदे लद्धेण त चेव गुणिते अन्नहारकालो होदि । अहन्ना वेरुणे हेट्टिमत्रियप्पो णत्थि, सच्चिअंगुल-पढमवग्ममूलादो अवहारकालस्स बहुत्तादो । जद्धरुणे उत्तइस्सामो । सच्चिअंगुलविदिय-वग्ममूलगुणितदियवग्ममूलेण पढमवग्ममूल गुणेऊण घणगुलपढमवग्ममूले भागे हिदे अवहारकालो होदि । त जहा-सच्चिअंगुलपढमवग्ममूलेण घणगुलपढमवग्ममूले भागे हिदे सच्चिअंगुलमागच्छदि । विदियवग्ममूलगुणितदियवग्ममूलेण सच्चिअंगुले भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । घणाघणे उत्तइस्सामो । विदियवग्ममूलगुणितदियवग्ममूलेण अंगुलवग्ममूल गुणेऊण तेण घणगुलविदियवग्ममूल गुणिय घणाघणगुलविदियवग्ममूले भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । तं जहा-घणगुलविदियवग्ममूलेण घणाघणगुल-

अवहारकालको निरुक्ति इसप्रकार है—सूच्यगुलके तृतीय वर्गमूलसे सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलके भाजित करने पर लब्ध राशिका जितना प्रमाण हो उतने सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूल मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकालमें होते ह ।

विस्वप्न दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमेंसे अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं—सूच्यगुलके दूसरे और तीसरे वर्गमूलका परस्पर गुणा करके जो लब्ध आवे उसका सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर जो लब्ध आया उससे उसी सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । अथवा, यहा द्विरूपधारामें अधस्तन विकल्प नहीं बनता है, क्योंकि, सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलसे मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल बहुत बड़ा है ।

अब अपरूपमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं—सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके लब्ध राशिका घनागुलके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । जैसे, सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनागुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यगुल आता है । पुन सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यगुलके भाजित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है ।

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं—सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यगुलके तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनागुलके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके आई हुई लब्ध राशिसे घनाघनागुलके द्वितीय वर्गमूलके भाजित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । जैसे, घनागुलके द्वितीय वर्गमूलसे घनाघनागुलके द्वितीय वर्गमूलके भाजित करने पर

त्रिदियवग्गमूले भागे हिंदे घणगुलपढमग्गमूलमागच्छति । पुणो वग्गमूलेण (घणगुलपढमग्गमूले) भागे हिंदे सूचिअगुलमागच्छति । पुणो गुणिद्विदिय-तदियवग्गमूलेण (सूचिअंगुले) भागे हिंदे अवहारकालो आगच्छति ।

गहिदादिभेएण उपरिमत्रियप्पो तिविहो । तत्थ गहिदं वचइस्सामो । भागहारेण सूचिअगुल गुणिय पदरगुले भागे हिंदे कालो आगच्छति । त जहा- सूचिअगुलेण पदरंगुले भागे हिंदे मागच्छति । पुणो पुब्बभागहारेण सूचिअगुले भागे हिंदे अवहारकालो अइरूणे वचइस्सामो । सूचिअगुलविदिय तदियवग्गमूल अण्णोण्ण गुणिय तेण गुणिय घणगुलं भागे हिंदे मणुस्मअवहारकालो आगच्छति । एसो मज्झिमत्रियपे पददि ति जुत्ते ण, सूचिअगुलादो अहियरासिमवलत्रिय उप्पाइज्जमाणे पडि तिरोहाभावादो । घणाघणे वचइस्सामो । त्रिदिय तदियवग्गमूलेहि पदरगुलं तेण घणगुलउपरिमग्ग गुणिय तेण घणाघणगुले भागे हिंदे

घनागुलका प्रथम वर्गमूल आता है । पुन सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनागुलके वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यगुल आता है । पुन सूच्यगुलके दूसरे और तीसरे मूलका परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे सूच्यगुलके भाजित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है ।

गृहीत आविके भेदमे उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है । उनमेंसे गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— उसी भागद्वारासे अर्थात् सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूल गुणित करके वर्गमूलसे सूच्यगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरागुलके भाजित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । जैसे, सूच्यगुलसे प्रतरागुलके भाजित करने पर सूच्यगुल आता है । पुन पूर्वांक भागद्वारामे अर्थात् सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूल गुणित करके वर्गमूलसे सूच्यगुलके भाजित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है ।

अब अष्टरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— सूच्यगुलके दूसरे और तीसरे वर्गमूलको परस्पर गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरागुलको गुणित करके जो लब्ध राशिमै घनागुलके भाजित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है ।

शुक्रा— प्रस्तुत विकल्प मध्यम विकल्पमें समाविष्ट क्यों नहीं होता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, सूच्यगुलसे बंधी राशिका अवलम्बन करके मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकालके उत्पन्न करने पर इसे उपरिम विकल्पके होनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

अथ घनाघनम गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— परस्पर गुणित सूच्यगुलके दूसरे और तीसरे वर्गमूलसे प्रतरागुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनागुलके उपरिम भागको गुणित करके लब्ध राशिका घनाघनागुलम भाग देने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अव

गच्छति । तस्य भागहारस्य अर्धच्छेदणयमेते घनाघर्गुलस्य अर्धच्छेदण कदे वि
 गुप्तमिच्छाद्विअनहारकालो आगच्छति । सूचिअगुल-वणगुरुपढमनग्गमूळ-घगायणगुल-
 दियनग्गमूलाण असखेज्जदिभाएण भागहारेण गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च साहेयन्वो ।
 देण भागहारेण जगमेटिम्हि भारे हिदे रूपाहिओ मणुसरासी आगच्छति । तं कथ
 णिज्जदि चि चुत्ते 'मणुमर्गए मणुमेदि रूप पक्खित्तएहि भेटी अनहिरदि अगुलनग्गमूळं
 दियवग्गमूलगुणिदेण' इदि खुद्धानधसुत्तादो । एत्थ रासी दुविहा भवदि, ओजं जुम्मं
 इदि । ओज दुविहं, तेजोजं कलिओज चेदि । तं जहा-जम्हि रामिम्हि चदुहि अव-
 हेरिज्जमाणे तिणिण द्वाति सो तेजोज । चदुहि अनहिरिज्जमाणे जम्हि एगं ठादि तं
 कलिओज । जुम्म दुविहं, कदजुम्म वादरजुम्म चेदि । त जहा-चदुहि अवहिरिज्जमाणे
 जम्हि रासिम्हि चचारि द्वाति त कदजुम्म । जम्हि रासिम्हि दोणिण द्वाति तं वादरजुम्मा ।
 जम्हा मणुससरासी तेजो ज तम्हा लद्धम्हि कदजुम्मम्हि एगरुधमवणेयन्वं । अवसेसिद-

हारकाल आता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशि घना-
 पनागुलके अर्धच्छेद करने पर भी मनुष्य मिथ्यादृष्टि अनहारकाल आता है । सूच्यगुलके
 असंख्यातर्षे भागरूप, घनागुलके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातर्षे भागरूप और घनाघनागुलके
 द्वितीय वर्गमूलके असंख्यातर्षे भागरूप भागहारसे गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारको साथ
 लेना चाहिये ।

उक्त भागहारसे जगश्रेणीके भाजित करने पर एक अधिक मनुष्यराशि धाती है । यह
 कैसे जाना जाता है, ऐसा पढ़ने पर आचार्य उत्तर देते हैं कि 'मनुष्यगतिर्म सूच्यगुलके प्रथम
 वर्गमूलसे सूच्यगुलके तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसे शलाकाराशि करके
 एक अधिक मनुष्य जाँवके द्वारा जगश्रेणी अपहत होती है, अर्थात् एक अधिक मनुष्यराशिको
 जगश्रेणीमेंसे घटाते जाना चाहिये और शलाकाराशिमेंसे उत्तरोत्तर एक कम करते जाना
 चाहिये । इसप्रकार करनेसे शलाकाराशिके साथ जगश्रेणी समाप्त हो जाती है' । इस खुद्धानधके
 सूत्रसे जाना जाता है कि उक्त भागहारसे जगश्रेणीके अपहन करने पर एक अधिक मनुष्य
 राशि लब्ध धाती है ।

राशि दो प्रकारकी है, ओजराशि और युग्मराशि । उनमेंसे ओजराशि दो प्रकारकी
 है, तेजोज और कलिओज । आगे इन्हींका स्पष्टीकरण करते हैं—जिस राशिको चारसे
 भाजित करने पर तीन शेष रहते हैं वह तेजोजराशि है । जिस राशिको चारसे भाजित करने
 पर एक शेष रहता है वह कलिओजराशि है । युग्मराशि दो प्रकारकी है, कृतयुग्म और
 वादरयुग्म । आगे उसी युग्मराशिके भेदोंका स्पष्टीकरण करते हैं—जिस राशिको चारसे
 भाजित करने पर चार शेष रहते हैं अर्थात् जिसमें चारका पूरा भाग जाता है वह कृतयुग्म
 राशि है । तथा चारसे भाजित करने पर जिस राशिमें दो शेष रहते हैं वह वादरयुग्मराशि
 है । प्रकृतमें क्योंकि मनुष्यराशि तेजोजरूप है, इसलिये जगश्रेणीमें सूच्यगुलके प्रथम

मणुसराभिपरूपादो जुच खुदाधधम्हि भागलद्वादो एयरूवस्स अवणयण, एत्थ पुण जीवद्वानम्हि मिच्छत्तविसेसिदजीवपमाणपरूपाणे कीरमाणे रूपाहियतेरसगुणद्वानमेत्तेण अवणयणरासिणा होद्वमिदि । त कथं जाणिजेदे ? ' मणुसमिच्छाइहीहि रूपा पक्खि-
त्तएहि सेठी अब्हिरिज्जदि ' ति सुत्तम्हि रूपा इदि बहुययणणिदेमादो । अहया रूपपक्खि-
त्तएहि ति बहुवीहिसमासेण लक्खणनिमैसेण कयपुच्चणित्राएण अवणिदबहुययणादो
बहुचोवलद्धी होज्ज । रूपां पक्खित्तएहि ति एगययणमपि कहिं दिस्सदे तो वि ण दोसो,
बह्वण जीवाण जादिदुवारेण एयत्तदसणादो' । का एत्थ जाई गाम ? चेदणादिसमाण
परिणामो । तदो भागलद्वादो रूपाहियतेरसगुणद्वानपमाणे अण्णिदे मणुसमिच्छाइहि

और तृतीय घगमूलके गुणनफलरूप भागद्वारका भाग देनेसे जो राशि लब्ध आयगी वह
छत्रयुग्मरूप होनेसे उसमेंसे एक कम कर देना चाहिये ।

खुदाधधम मिथ्यादृष्टि इत्यादि विशेषणसे रहित सामान्य मनुष्यराशिका प्रत्यण
होनेसे यहा पर सूच्यगुलके प्रथम और तृतीय वर्गमूलोंके परस्पर गुणफलरूप भागद्वारका
जगध्रेणीमें भाग देनेसे जो लब्ध आवे उसमेंसे एक सत्याका कम करना युक्त है । परंतु
यहा जीवस्थानमें तो मिथ्यात्व विशेषणसे युक्त जीवोंके प्रमाणका प्ररूपण किया गया
है, अतएव मिथ्यादृष्टि मनुष्यराशि छानेके लिये उक्त भागद्वारसे जगध्रेणीके भाजित करने पर
जो लब्ध आवे उसमेंसे एक अधिक तेरह गुणस्थानवर्ती मनुष्यराशि अपनयनराशि होना चाहिये ।

शुक्रा—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—'रूपाधिक मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीवराशिके द्वारा जगध्रेणी अपहत
होती है' इस सूत्रमें 'रूपा' यह बहुपचन निर्देश पाया जाता है, जिससे जाना जाता है कि
यहा पर उक्त भागद्वारसे जगध्रेणीके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसमेंसे एक अधिक
तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशि अपनयनराशि है । अथवा, 'रूपपक्खित्तएहि' इस पदमें नियम
विशेषसे जिसमें पूर्वनिपात हो गया है ऐसा बहुवीहि समास होनेके कारण रूप पदके बहु
पचनसे रहित होनेके कारण भी उससे व्युत्पत्तिका उपलब्धि हो जाती है । कहीं पर 'रूप
पक्खित्तएहि' इसप्रकार एकपचन भी कहा देला जाता है, तो भी कोई दोष नहीं आता है, क्योंकि,
बहुत जीवोंका जातिद्वारा पक्त्व देखनेमें आता है ।

शुक्रा—यहा पर जातिसे क्या अर्थ अभिप्रेत है ?

समाधान—यहा पर खेतना आदि समान परिणाम जातिसे अभिप्रेत है ।

इसलिये उक्त भागद्वारका जगध्रेणीमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसमेंसे एक
अधिक तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिके प्रमाणके कम कर देने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि

१ 'पालास्यायामेवस्मिन्बहुवचनमयत्तस्याम्' १ २, ५८ पाणिनि । एकाङ्ग्यथां वा बहुत्ववद
व्यति । इति'

तमी होदि ति सिद्धं । एदस्स खडिदादओ विदियपुठनिमिच्छाह्वीणि जहा बुत्ता तथा
वत्तन्वा । णवरि एत्थ अगुलउग्गमूलेण तदियउग्गमूलं गुणिदे अवहारकालो होदि ।
सव्वत्थ रूत्राहियेत्तरसगुणट्ठाणपमाणमउणेयव्वं ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा ति द्व्वपमाणेण
केवडिया, संखेज्जा' ॥ ४३ ॥

एत्थ पहुडिसदो आदिसदत्थे वट्ठे । तेण सासणसम्माइट्ठिमादिं करिय जाव
उग्गमूलं एदस्स गुणट्ठाणेसु मथुसरासी सखेज्जा चेव होदि ति ज बुत्तं होदि ।
उग्गमूलं इदि सामणेण बुत्ते वाउण्णकोडिमेत्ता सासणसम्माइट्ठिणो हव्वंति । तत्तो दुगुणा
उग्गमूलं उग्गमूलं हव्वंति । सत्तसयकोडिमेत्ता असंजदसम्माइट्ठिणो हव्वंति । संजदा-

उग्गमूलं प्रमाण होता है, यह सिद्ध हो गया ।

मिथोपार्थ—सूत्र्यगुलके प्रथम आर तृतीय वर्गसूत्रका परस्पर गुणा करके जो लघ्य
भागे उत्तरा जगत्त्रेणमें भाग देने पर एक अधिक सामान्य मनुष्यराशिका प्रमाण आता है ।
उत्तर लघ्यमें एक कम कर देने पर सामान्य मनुष्यराशिका प्रमाण हाता है । परंतु प्रकृतमें
मिथ्यादि मनुष्यराशि लाना है, अतएव उक्त सामान्य मनुष्यराशिमंसे सासादन आदि तेरह
गुणस्थानवर्ती मनुष्यराशिके प्रमाणको ओर कम कर देना चाहिये, तब मिथ्यादि
मनुष्यराशिका प्रमाण होगा ।

निम्नप्रकार दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंके खडित आदिका कथन कर आये हैं उसी
प्रकार इन मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीवराशिके खडित आदिकका कथन करना चाहिये । इतना विशेष
है कि यहा पर सूत्र्यगुलके प्रथम वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलके गुणित करने पर अवहारकालका
प्रमाण होता है । तत्रा मनुष्य मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण लानेके लिये सर्वत्र एक अधिक तेरह
उत्तरमानवर्ती जीवराशिका प्रमाण घटा देना चाहिये ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयतासयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुण-
स्थानमें मनुष्य द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सख्यात है ॥ ४३ ॥

यहा पर प्रभृति शब्द आदि शब्दके अर्थमें आया है, इनलिये सासादनसम्यग्दृष्टिसे प्रारंभ
करके सयतासयत गुणस्थानतक इन चार गुणस्थानोंमें प्रत्येक गुणस्थानवर्ती मनुष्यराशि सख्यात
होती है यह इन सूत्रका अभिप्राय है । सासादनसम्यग्दृष्टि आदि चार गुणस्थानोंमेंसे प्रत्येक
गुणस्थानवर्ती मनुष्यराशि सख्यात है, ऐसा सामान्यरूपसे कथन करने पर सासादनसम्य-
ग्दृष्टि मनुष्य कायत करोड है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्योंके प्रमाणसे
होते हैं । असयतसम्यग्दृष्टि मनुष्य सातसौ करोड प्रमाण है । सयतासयतोंका प्रमाण तेरह

१ सासादनसम्यग्दृष्ट्यादय सयतासयतान्ता सखेया । स ति १, ८

२ इति अतः पर ' तत्तो दुगुणा सम्माइट्ठिणो हव्वंति ' इत्यधिक पाठ ।

सजदोर्णं यमाण तेरहकोडीओ । के वि आइरिया सासणसम्माइइणी पमाण पण्णारम
कोडीओ हवति सम्मामिच्छाडिपमाण तत्तो दुगुणमिदि भणति । पुक्खिल्लपमाणमेत्थ
धेसव्व । किं कारणं ? आइरियपरंपरागदाओ । उच च—

तेरह कोडी देसे बाण्ण सासणे तु णेय म ।

मिस्से त्रि य तद्दुगुणा असजदे सत्तकोडिसया^१ ॥ ६८ ॥

अहवा—

तेरह कोडी देसे पण्णास सासणे सुणेयव्वा ।

मिस्से त्रि य तद्दुगुणा^१ असजदे सत्तकोडिसया ॥ ६९ ॥

पमत्तसजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवालि त्ति ओघं ॥ ४४ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो पुक्ख परुरिटो त्ति इह ण बुच्चदे । कुदो ? मणुसगदि
वदिरित्तसेसगईसु पमत्तादिगुणहाणाणमसभवादा । मणुमेसु पमत्तादीण ओघपरत्तणा चेव ।

करोड़ है । कितने ही आचार्य सासादनसम्यग्दष्टि मनुष्याका प्रमाण पचास करोड़ कहते हैं ।
सम्यग्मिध्यादष्टि मनुष्योंका प्रमाण सासादनसम्यग्दष्टि मनुष्योंके प्रमाणसे दूना कहते हैं । परंतु
यहां पर पूर्वोक्त प्रमाणका ही ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, पूर्वोक्त प्रमाण आचार्य परंपरासे
आया हुआ है । कहा भी है—

सयत्तासयत्तमं तेरह करोड, सासादनम वाचन करोड, मिश्रमें सासादनके प्रमाणसे
दूने और असयत्तसम्यग्दष्टि गुणस्थानमें सातसौ करोड मनुष्य जानना चाहिये ॥ ६८ ॥

अथवा—

सयत्तासयत्तमं तेरह करोड, सासादनमें पचास करोड, मिश्रमें सासादनके प्रमाणसे
दूने और असयत्तसम्यग्दष्टि गुणस्थानमें सातसौ करोड मनुष्य जानना चाहिये ॥ ६९ ॥

प्रमत्तसयत्त गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेत्रली गुणस्थान तक यत्येक गुणस्थानमें
मनुष्य सामान्य प्ररूपणके समान सरयात ह ॥ ४४ ॥

इस सूत्रका अर्थ पहले कह जाये है, इसलिये यहाँ कहा जाता है, क्योंकि, मनुष्य
गतिको छोड़कर शेष तीन गतियोंमें प्रमत्तसयत्त आदि गुणस्थानोंका होना असंभव है । अतः
मनुष्योंमें प्रमत्तसयत्त आदिका प्रमाणप्ररूपण सामान्य प्ररूपणके समान ही है ।

१ गो जी ६४२ स वि २, ८, ति ।

२ प्रतिपु ' तद्दुगुणा ' इति पाठ ।

३ प्रमत्तादीनां सामान्योना सत्या । स वि, १, ८

मणुसपञ्जत्तेसु मिच्छाइष्टी दब्बपमाणेण केवडिया, कोडा-
कोडाकोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हेट्टदो छण्हं वग्माण-
मुवरि सत्तण्हं वग्माणं हेट्टदो ॥ ४५ ॥

छट्टमग्गस्स उवरि सत्तमग्गस्स हेट्टदो ति तुचे अत्थमत्ती ण जादेत्ति अत्यवत्ती
करण्हु कोडाकोडाकोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोटीए हेट्टदो ति वुत्तं । एदस्म मणुस-
पञ्जत्तमिच्छाडट्टिरासिस्स पमाणपरूपणमाडग्गियोरएसेण वुच्चदे । नेरुवस्म पचमवग्गेण
छट्टमग्ग गुणिदे मणुमपञ्जत्तरासी होट्ठि । सत्तमग्गे सत्तेज्जएडे कए एगखड
मणुमपञ्जत्तरासी होट्ठि । खड्ढि गद । पंचमग्गेण सत्तमग्गे भागे हिदे मणुमपञ्जत्त-
रासी होट्ठि । भाजिदं गद । त्रिलिट अग्रहिदं च चितिय उत्तव्व । पमाण सत्तमग्गस्स

मनुष्य पर्याप्तोम मिथ्यादृष्टि मनुष्य द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने है ?
कोडाकोडाकोडिके ऊपर और कोडाकोडाकोडाकोडिके नीचे छह वर्गोंके ऊपर और सात
वर्गोंके नीचे अर्थात् छठवें और सातवें वर्गके बीचकी सत्याप्रमाण मनुष्यपर्याप्त
होते हैं ॥ ४५ ॥

‘छठवें वर्गके ऊपर और सातवें वर्गके नीचे’ ऐसा कहने पर अर्थकी प्रतिपत्ति नहीं
होती है, इस लिये अर्थकी प्रतिपत्ति करनेके लिये ‘कोडाकोडाकोडिके ऊपर और कोडाकोडाकोडा-
कोडिके नीचे’ ऐसा कहा । अब इस मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि राशिके प्रमाणका रूपाण
अथ आचार्योंके उपदेशानुसार कहते हैं—

द्विरूपके पाचवें वर्गसे उसीके छठवें वर्गके गुणित करने पर मनुष्य पर्याप्त राशि
होती है । द्विरूपके सातवें वर्गके सत्यात खट करने पर उनमेंसे एक खटप्रमाण मनुष्य पर्याप्त
राशि होती है । इसप्रकार खडितका कथन समाप्त हुआ । द्विरूपके पाचवें वर्गसे उसीके
सातवें वर्गके भाजित करने पर मनुष्य पर्याप्त राशि होती है । इसप्रकार भाजितका कथन
समाप्त हुआ । इसीप्रकार विचार कर त्रिलित और अपहनका कथन कर लेना चाहिये । मनुष्य

१ एव सय सइस दसमइस लवउ दसलख कोडि दइकाडि कोडिसय काडिमइस दसकोटिसइस
कोडिलसं दइकाडिलसं कोडाकोडी दकोडाकोडी कोडाकोडिसय कोडाकोडिसइस दइकोडाकोडिसइस कोडा
कोडिलसं दइकोडाकोडिलसं कोडाकोडिकोडी दसकोडाकोडिकोडी कोडाकोडिकोडिसय कोडाकोडिकोडासइस
दइकोडाकोडिकोडिसइस कोडाकोडिकोडिलसं दइकोडाकोडिकोडिलसं कोडाकोडिकोडिकोडा इयाधकवाचनपरार ।
लो प्र सर्ग ७ पत्र १०८

१ सामग्यमणुसरासी पंचमकदिघणउमा पुण्णा ॥ गो जी १ ७ गर्मजानां मणुयाणामध मान निरूप्यते ।
एकीविशतांभेरेते मित्त जघ पतीउपि हि ॥ लो प्र सर्ग ७ पत्र १०७ सत्या च तेवां जघ पतीउपि पचमवर्ग-
गुणितपउवगप्रमाणा षट्ठया ॥ अथ च राशिकोणभिसदकस्थानो न कोणाकीव्यादिप्रकारेणासिधातु कथमपि शक्यते ।
X X एव च राशि पूर्वमरितिनियमउपदादुर्ब चतुर्थमल्पदस्याधस्तादियुपवर्णते । पक्ष २, २१ टीका

संखेज्जादिभागो सखेज्जाणि छट्टमग्गाणि । त जहा— छट्टमग्गेण सत्तमग्गे भागे हिंटे
छट्टवग्गो आगच्छदि । पचमग्गेण सत्तमग्गे भागे हिंटे सखेज्जा छट्टमग्गा आगच्छति ।
कारण गद । गिरुत्ती वियप्पो य चितिय वत्तव्वो । एदम्हादो मणुसपज्जत्तरासीदो—

तेरस कोडी देसे वाण्ण सासणे मुणेयग्गा ।

मिस्से वि य तद्दग्गुणा असन्ने सत्तकोडिसया ॥ ७० ॥

एदीए गाहाए बुत्तगुणपडिवण्णरामीओ एयत्त करिय पमत्ताट्टि णत्त सज्जदरामीं
च तत्थेव पक्खिययि अग्गिदे मणुमपज्जत्तमिच्छाइड्डिरामी होदि ।

पचमग्ग चदुहि रूरेहि गुणिदे दुवेदमणुसपज्जत्तअवहारकालो होदि । तेण सत्तम
वग्गे भागे हिंटे मणुमपज्जत्तदुवेदरामी आगच्छदि । मणुमपज्जत्ता वायालग्गस्स घण-

पर्याप्त मिथ्यादष्टि राशिका प्रमाण द्विरूपके सातवें वर्गका सख्यातया भाग है जो सख्यात छठवें
वर्गप्रमाण है। जागे उसीका स्पर्शीकरण करते हैं— द्विरूपके छठवें वर्गका उसीके सातवें वर्गमें
भाग देने पर छठवा वर्ग आता है। पाचवें वर्गसे सातवें वर्गके भाजित करने पर सख्यात छठवें
वर्ग आते हैं। इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ। निरन्ति और त्रिकल्पका विचार कर
बधन करना चाहिये। इस मनुष्य पर्याप्त राशिमेंसे—

सयतासयतम तेरह करोड, सासादनमें घायन करोड, मिश्रम सासादनके प्रमाणसे
दूने और असयतसम्ग्रहाष्टि गुणस्थानम सातसौ करोड मनुष्य होते हैं ॥ ७० ॥

इस गाथाके द्वारा कही गई गुणस्थानप्रतिपत्त राशिको एकत्रित करके ओर प्रमत्त
संयत आदि नौ रुयतराशिको उसी पूर्वाक्त एकत्र की हुई राशिमें मिलाकर जो जोड़ हो उसके
घटा देने पर मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादष्टि जीवराशि होती है।

द्विरूपके पाचवें वर्गको चारसे गुणित करने पर दो वेदवाले मनुष्य पर्याप्तोंका
अवहारमाल होता है। उस अवहारकालसे सातवें वर्गके भाजित करने पर मनुष्य पर्याप्त दो
वेदवाले जीवोंकी राशि आती है।

विशेषार्थ—किसी भी त्रिजिह्वित वर्गात्मक राशिको चारसे गुणित करके लब्धका उस
वर्गात्मक राशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर उस विवक्षित वर्ग राशिके घनका
चौथा भाग लब्ध आता है। तदनुसार प्रकृतमें द्विरूपके पाचवें वर्गको चारसे गुणित करके
उसका सातवीं वर्गराशिमें भाग देने पर पाचवें वर्गके घनप्रमाण पर्याप्त मनुष्य राशिका
चौथा भाग लब्ध आता है। स्त्रीवेदियोंको छोड़कर द्विवेदी मनुष्योंका यही प्रमाण है।

१ प्रतिपु ' अट्टवग्गा ' इति पाठ ।

२ एठ अट्ट पच सट्ट गव य पचट्ट त्तिद य अट्ट गवा ति चउकट्टणहाह उ उक पचट्ट दुग उवध ।
पउका । मम सट्ट गपच अट्ट गव एक पउचरासिपरिमाण ॥ ११८०७०४०६२८५६६०८४३९८३८१९८७५८४
ति य ११०५२

मेता चि जं वक्खाणे मणिदं जुत्तीए जोइज्जमाणे तं ण घट्ठे, 'कोडाकोडाकोडीए उवारे कोडाकोडाकोडाकोडीए हेड्डो' चि सुत्तेण सह विरोधत्तादो । त कथं जाणित्ठे ? एगुणतीसट्ठाणेसु ड्ढिदवाधालवग्गघणस्स एगुणतीसट्ठाणेहिंत्तो ऊणत्तविरोहादो । किं च जदि वापालवग्गघणमेत्तो मणुसप्तज्जरासी होज्ज तो माणुसत्ते ६१९७०८४६६६८१६-४१६२०००००००० १*

मणद्व-मप-कसाया चउसद्वि-मियक-यसु-खरा दव्या ।

छायाल-वसु-णमाचल-पयय-चदो रिदू कममो ॥ ७१ ॥

'मनुष्य पर्याप्त जीवराशि बादालके घनमात्र है' यह जो ऊपर व्याख्यान करने समय कह आये है, युक्तिसे विचार करने पर यह कथन चरित नहीं होता है, क्योंकि, 'कोडाकोडाकोडीके ऊपर और कोडाकोडाकोडाकोडीके नीचे मनुष्य पर्याप्त राशि है' इस सूत्रके साथ उक्त कथनका विरोध आता है ।

शुक्रा—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—क्योंकि, उनतीस स्रानोंमें स्थित बादालरूप घणके उनको उनतीस स्थानोंसे कम अक्षरूप माननेमें विरोध आता है ।

विशेषार्थ—ऊपर सूत्रद्वारा पर्याप्त मनुष्य राशिका प्रमाण कोडाकोडाकोडीके ऊपर और कोडाकोडाकोडाकोडीके नीचे बीचकी कोई मध्या यत्नगटे जा चुकी है । अब कि एक बंकेके ऊपर २१ मूय रखनेसे यादमें अक्षरप्रमाण कोडाकोडाकोडी होती है और एक बंकेके ऊपर २८ मूय रखनेमें उनतीस अक्षरप्रमाण कोडाकोडाकोडाकोडी होती है, तब यह निश्चित हो जाता है कि सूत्रानुसार पर्याप्त मनुष्य राशिका प्रमाण उनतीस बंकेके नीचे और तीसमें बंकेके ऊपर बीचकी कोई मध्या होना चाहिये । अब यदि द्विरूपके पाचों बंकेके घनप्रमाण पर्याप्त मनुष्य राशि माना जाय तो पृथक् सूत्रके कथनके साथ इस कथनका विरोध था जाता है, क्योंकि द्विरूपके तीसमें बंकेके घनका प्रमाण उनतीस अक्षरप्रमाण होते हुए भी कोडाकोडाकोडाकोडीके प्रमाणके ऊपर है, इसलिये द्विरूपके पाचों बंकेके घनका प्रमाण उनतीस अक्षरमें नीचेकी मध्या नहीं हो सकती है । पर सूत्रानुसार पर्याप्त मनुष्यराशिका प्रमाण उनतीस अक्षरमें नीचेकी मध्या नियतित है, इसलिये 'पचमकत्तिपसमा पुण्ण' इत्यादि रूपसे जो पर्याप्त मनुष्यराशिका प्रमाण पाया जाता है, वह सूत्रानुसार नहीं है, ऐसा प्रतीत होता है ।

इससे, यदि बादालरूप बंकेके अक्षरप्रमाण मनुष्य पर्याप्त राशि होवे तो यह राशि मनुष्य क्षेत्रमें ६१९७०८४६६६८१६२०००००००० अर्थात्—

अमरा। आठ मूय, नव अर्थात् को, अराय अर्थात् सं-२२, चौपड, सूर्यादि प्रमाण मण,

* मणिपु ब्रह्मा दव्या २५ ६१ इति मण्डे ६१ १/१ ५४ १ ।

७९२२८१६२५१४२६४३३७५९३१४३९५०३३६ एत्थियमेत्तमणुत्तपज्जत्त-
 सिम्हि सखेज्जपदरगुलेहि गुणिदे माणुसखेत्तादो सखेज्जगुणत्तप्पसगा । माणुसलोग-
 त्तफलपमाणपदरगुलेसु सखेज्जुस्तेहगुलमेत्तोगाहणो मणुत्तपज्जत्तरासी सम्मादि ति
 तासकाणज्ज, सच्चुक्कस्सोगाहणमणुत्तपज्जत्तरासिम्हि सखेज्जपमाणपदरगुलमेत्तोगाहण-
 णगारमुहवित्थारुवलमादो । सच्चुक्कसिद्धिदेवाण पि मणुत्तपज्जत्तरासीदो सखेज्जगुणाण
 ण सच्चुक्कसिद्धिपिमाणे जव्वुदीवपमाणे ओगाहो अत्थि, तत्तो सखेज्जगुणोगाहणाण
 णत्थावट्ठाणविरोहादो । तम्हा मणुत्तपज्जत्तरासी एयकोडाकोडाकोडीओ सादिरेया
 ति वेत्तन्ना ।

इसे दो समुद्रोंके बिना दार्दिनीपकी जम्बूद्वीपप्रमाण की गई स्थलाकाओं अर्थात्
 १३२९ से गुणित कर देने पर दो समुद्रोंके बिना दार्दिनीपका क्षेत्रफल आया—

$$\frac{११४३८७८५४४७४९८६३४९००५}{१०८८७१६८} \text{ प्रमाण प्रतर योजन}$$

इसके प्रमाणप्रतरागुल बनानेके लिये पूर्वाक्त मापके प्रमाणानुसार ४'x२०००'x३'x२४'
 से गुणित करने पर इष्ट क्षेत्रफल आया—

$$६१९७०८४६६६८१६४१६२००००००००० \text{ प्रमाण प्रतर अगुल}$$

अथ यदि ७९२२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९' ०३३६ इत्यादि मनुष्य पर्याप्त
 राशियोंके सख्यात प्रतरागुलासे गुणा किया जाय तो उस प्रमाणको मनुष्य क्षेत्रसे सख्यातगुणेका
 प्रसंग आ जायगा । यदि कोई ऐसी आशका करे कि मनुष्यलोकका क्षेत्रफल जो प्रमाण
 प्रतरागुलोंसे लाया गया है उसमें सख्यात उत्सेधागुलमात्र अवगाहनासे युक्त मनुष्य पर्याप्त
 राशि समा जायगी, सो ठीक नहीं है, क्योंकि, सबसे उत्कृष्ट अवगाहनासे युक्त मनुष्य पर्याप्त
 राशियोंमें सख्यात प्रमाण-प्रतरागुलमात्र अवगाहनाके गुणकारका मुफ विस्तार पाया जाता है ।
 उसीप्रकार मनुष्य पर्याप्त राशिसे सख्यातगुणे सर्वार्थसिद्धिके देवोंकी भी जम्बूद्वीपप्रमाण
 सर्वार्थसिद्धिके विमानमें अवगाहना नहीं बन सकती है, क्योंकि, सर्वार्थसिद्धि विमानके क्षेत्र
 फलसे सख्यातगुणी अवगाहनासे युक्त देवोंका घटा पर अस्थान माननेमें विरोध आता है ।
 इसलिये मनुष्य पर्याप्त राशि एक कोडानोडाकोडीसे अधिक है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

विशेषार्थ—मनुष्योंका निवास क्षेत्र दार्दिनीप है, जिसका व्यास पेंतालीस लाख
 योजन है । इसका क्षेत्रफल १६००९०३०६५५५०१२६६६ योजनप्रमाण होता है । इसके प्रतरागुल
 ९४४२५१०४९६८१९४३४०००००००००० होते हैं, परन्तु दार्दिनीपके क्षेत्रफलसे दो समुद्रोंका

१ तटलीनमयूगत्रिलक्ष धूममिललागाविचारभयमेरु । तटहरिपक्षसा हाति ह माणुत्तपज्जत्तस्यरका ॥ गो जी
 १५८ उ ति वि छ ष ण न व तिग अउ ष ण द्विग न व ष ष सग तिग अउरो । छ डु अउ इग ष ण डु छ इग अउ
 ड डु न व सग अइय नरा ॥ लो प्र सर्ग ७ पव १०८

सासणसम्माइट्टिप्पहुडि जाव संजदासंजदा ति द्व्यपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ ४६ ॥

क्षेत्रफल घटा देने पर शेष क्षेत्रफल ६९९७०८३६६६८९६४१६०००००००० प्रतरागुलप्रमाण रहता है, क्योंकि दोनों समुद्रोंमें अन्तर्हीपज मनुष्य होते हुए भी उनका प्रमाण अत्यल्प होनेसे उनके क्षेत्रफलकी यद्वा विवक्षा नहीं की गई है। एक मनुष्यका निवास क्षेत्र सरयात प्रतरागुल-प्रमाण है, इसलिये ऊपर जो प्रतरागुलोंकी सरया बतलाई है मनुष्यराशि उससे कम ही होना चाहिये। पर मनुष्यराशिको २० अकप्रमाण मान लेने पर २५ अकप्रमाण क्षेत्रफलवाले क्षेत्रमें उनका रहना किमी प्रमाण भी सम्भव नहीं है। कारण कि ढाई डीपका क्षेत्रफल २० अकप्रमाण ही है। न्नाचिन् यह कहा जाय कि ऊपर जो २० अक प्रतरागुल-प्रमाण क्षेत्रफल कहा है वह प्रमाणागुलकी अपेक्षा कहा गया है। यदि इसके उत्सेधा गुल कर लिये जाय तो इसमें २५ अकप्रमाण मनुष्यराशि समा जायगी, सो भी बात नहीं है, क्योंकि, उत्त्थ अधगाहनानी अपेक्षा २५ अकप्रमाण मनुष्यराशिका उक्त क्षेत्रमें समा जाना अशक्य है। आकाशकी अगगाहनानी विचित्रतासे यह कोई दोष नहीं रहता है, ऐसा कहना भी युक्तियुक्त नहीं है, न्यायिक, अगगाहमान पदार्थोंका सयोगरूप अन्योन्य प्रवेशरूप सम्बन्ध ही अत्र क्षेत्रमें बहुत पदार्थोंके अधिष्ठानके लिये कारण है। परन्तु मनुष्योंमें परस्पर इसप्रकारका सम्बन्ध गर्भादि अस्पृश्याकी छोडकर प्राय नहीं पाया जाता है, इसलिये सूत्रमें जो कोडाकोडाकोडाकोडीसे नीचेकी ओर कोडाकोडाकोडीसे ऊपरकी सरया मनुष्योंका प्रमाण कहा है वही युक्तियुक्त है। दूसरे यदि उन्तीस अकप्रमाण मनुष्यराशि मान ली जाय, तो मनुष्यनियोंसे तिगुणे अथवा, सातगुणे जो सर्वार्थसिद्धिके देवोंका प्रमाण कहा है वह नहीं बन सकता है, क्योंकि, एक लाख योजनप्रमाण सर्वार्थसिद्धिके विमानमें इतने देवोंका रहना अशक्य है। इसका कारण यह है कि एक लाख योजनके क्षेत्रफलके उत्सेधरूप प्रतरागुल करने पर भी उनका प्रमाण अट्टाईस अकप्रमाण आता है और सर्वार्थसिद्धिके देवोंका प्रमाण मनुष्यराशिको २५ अकप्रमाण मान लेने पर ३० अकप्रमाण होता है। यह तो निश्चित है कि एक देव सरयात प्रतरागुलोंमें रहता है, परन्तु यद्वा क्षेत्रफलके प्रतरागुल देवोंके प्रमाणसे कम है, इसलिये ३० अकप्रमाण देवोंका २८ अकप्रमाण क्षेत्रफलवाले क्षेत्रमें रहना किसी प्रकार भी सम्भव नहीं है। इससे भी यही सिद्ध होता है कि सूत्रमें पर्याप्त मनुष्यराशिको प्रमाण जो कोडाकोडाकोडाकोडीके नीचे और कोडाकोडाकोडीके ऊपर कहा है वही ठीक है।

सासादनसम्पगट्टि गुणस्थानमे लेकर सयतासयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुण-स्थानमें पर्याप्त मनुष्य द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सरयात है ॥ ४६ ॥

एदम्हि सुत्तम्हि मणुसोघे ज चउण्ह गुणट्टाणाण पमाण वुत्त त चेव पमाण वत्तव्व, सगहिदतिरेदत्तणेण पज्जत्तभावेण च दोण्ह त्रिसेसामादाओ ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगकेवलि त्ति ओध ॥ ४७ ॥

एदस्म सुत्तस्म अत्थो पुव्व परुत्तिदो त्ति ण उच्चदे ।

मणुसिणीसु मिच्छाइट्ठी दब्बपमाणेण केवडिया ? कोडाकोडा-कोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हेट्टदो छण्हं वग्गाणमुवरि सत्तण्ह वग्गाणं हेट्टदो ॥ ४८ ॥

एदस्म सुत्तस्म उत्तसाण मणुसपज्जत्तसुत्तप्रक्राणेण तुह्म । णपरि पंचमवग्गस्स तिभागे पंचमउग्गम्हि चेव पविरात्ते मणुसिणीणमउह्वारकालो होदि । तेण सत्तमउग्गे भागे हिदे मणुसणीण दब्बमागच्छदि' । लद्धादां मगतेरमगुणट्टाणपमाणे अण्णिदे मणुसिणीमिच्छाइट्ठिदब्ब होदि ।

सामान्य मनुष्य राशिना प्रमाण कहते समय सासादनादि चार गुणस्थानवर्ती राशिना जो प्रमाण कह आये हैं, इस सूत्रका व्याख्यान करते समय उसी प्रमाणका व्याख्यान करना चाहिये, क्योंकि, सगृहीत त्रिवेदत्रयी अपेक्षा और पचासपनेत्री अपेक्षा उक्त दोनों राशियोंमें कोई विशेषता नहीं है ।

प्रमत्तसयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेजली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें पर्याप्त मनुष्य सामान्य प्ररूपणाके समान सख्यात है ॥ ४७ ॥

इस सूत्रका अर्थ पहले कह आये है इसलिये यहाँ नहीं कहा जाता है ।

मनुष्यनिर्योम मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? कोडाकोडा कोडीके ऊपर और कोडाकोडाकोडाकोडीके नीचे उठन वर्गके ऊपर और सातवर्ग वर्गके नीचे मध्यकी सख्याप्रमाण हैं ॥ ४८ ॥

इस सूत्रका व्याख्यान मनुष्य पर्याप्तकी सरयाके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रके व्याख्यानके मुख्य है । इतनी विशेषता है कि पाचवें वर्गके त्रिभागकी पाचवें वर्गमें प्रक्षिप्त कर देने पर मनुष्यनिर्योम प्रमाण लानेके लिये अवहारकाल होता है । उस अवहारकालसे सातवें वर्गके भाजित करने पर मनुष्यनिर्योमके द्रव्यका प्रमाण आता है । उदाहरण जो मनुष्यनिर्योमकी सरया लब्ध आये उसमेंसे अपने तेरह गुणस्थानके प्रमाणके घटा मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण होता है ।

मणुसिणीसु सासणसम्माइट्टिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि ति
द्वयपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा ॥ ४९ ॥

मणुसमोत्रे बुचतासणादीण मखेज्जदिभागो सासणादीण गुणपडिवण्णाण पमाण
मणुसिणीसु हन्दि । वुदो ? अप्पमत्थयेदोदण सह पउर सम्मट्टमणलभाभावादो । त
रुघ जाणिज्जे ? 'सव्वत्थोत्रा णुसययेदअमंजदमम्मादिट्टिणो । इत्थियेदअसज्जदसम्मा
इट्टिणो असखेज्जगुणा । पुरिसयेदअसज्जदमम्माइट्टिणो असखेज्जगुणा' इदि अप्पावहुअ-
सुचादो कारणसम बोत्तण जाणिज्जे । तदो मामणसम्माइट्टिआदीण पि थोत्तण मिद

त्रिपैषार्य — किमी भी त्रियक्षित वर्गमें उन्हींके त्रिभाग को जोड़कर उसका उसके
उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर उस त्रियक्षित वर्गके घनका तीन चतुर्थीश लब्ध
आता है । तदनुसार पाचवें वर्गमें उसीका त्रिभाग जोड़कर सातवें वर्गमें भाग देने पर पाचवें
वर्गके घनरूप मनुष्य राशिका तीन चतुर्थीश लब्ध जाता है । यही मनुष्य योनिमतियोंका प्रमाण
है । इसमेंसे सामादन आदि तेरह गुणस्थानयता राशिका प्रमाण घटा देने पर मिथ्यादृष्टि
त्रियोंका प्रमाण होता है, यह जो मूलमें कटा है इससे प्रतीत होता है कि उपर्युक्त प्रमाण त्रियोंका
भावयेदकी प्रवानतामे कहा गया है । यदि यह प्रमाण त्रयत्रियोंका होता तो मूलमें 'इसमेंसे
सामादनादि तेरह गुणस्थानराशिका प्रमाण घटाने पर मिथ्यादृष्टि मनुष्य योनिमतियोंका
प्रमाण होता है' ऐसा न कह कर केवल इतना ही कहा जाता कि इस प्रमाणमेंसे
सामादनादि चार गुणस्थानयता राशिका प्रमाण घटाने पर मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंका प्रमाण
होता है । परतु गोमटसारकी टीकामें यह प्रमाण त्रयवेदकी अपेक्षा बतलाया है ।

मनुष्यनियमोंमें सामादनसम्पगृष्टि गुणस्थानमे लेऊ अयोगिकेपली गुणस्थान
तक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव त्रयप्रमाणकी अपेक्षा कितने है ? सख्यात है ॥ ४९ ॥

सामान्य मनुष्योंमें सामादनसम्पगृष्टि आदि गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंकी जो संख्या
कही गई है उसके सख्यातवें भाग मनुष्यनियमोंमें सामादनसम्पगृष्टि आदि गुणस्थानप्रतिपन्न
जीवोंका प्रमाण है, क्योंकि, अश्वत्थ वेदके उदयके साव प्रचुर जीवोंको सम्पदर्शनका लाभ
नहीं होता है ।

प्रका — यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — 'मनुष्यवेदी असयतसम्पगृष्टि जीव सवमे स्तोत्र है । स्त्रीवेदी असं
यतसम्पगृष्टि जीव उनसे असख्यातगुणे है । और पुरुषवेदी असयतसम्पगृष्टि उनसे असख्यात
गुणे है ।' इस अल्पबहुत्वके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रमें स्त्रीवेदियोंके अल्प होनेके कारणका
स्तोत्रपता जाना जाता है । और इसमें सामादनसम्पगृष्टि जाधिके भी स्तोत्रपता सिद्ध हो

हृदि । गवरि एत्तिय तेमि पमाणमिदि ण णच्छेदे, सपहि उअसाभापाठो ।

मणुसअपज्जत्ता दब्बपमाणेण केवडिया ? असखेज्जा ॥ ५० ॥

एत्थ णिच्चात्ति अपज्जत्ते मोह्ण लद्धि अपज्जत्ताण गहण कायच्च । कुदो ? एत्थ गुणपडिक्खणपमाणपरूपाभाक्खणहाणुअत्तीदो । सामणेण अवगद-असखेज्जसपिसेसपरू वणट्टमुत्तरसुत्तमाह—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसण्णिणि उस्सण्णिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ५१ ॥

एदस्स सुत्तस्म जत्थो पुब्ब वट्ठसो परूविदो त्ति पुणो ण चुच्चदे पुणरुत्तभएण ।

सेत्तेण सेठीए असंखेज्जदिभागो । तिस्से सेठीए आयामो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ । मणुस अपज्जत्तेहि रूवा पक्खित्तोहि सेठिमवहिरदि अगुलवग्गमूल तदियवग्गमूलगुणिदेण ॥ ५२ ॥ इदि

एद उयण ण घड्ढे, फलाभाया । सते सभने त्रियहिचारे च त्रिसेमणमत्थयत

जाता ह । परन्तु इतनी विशेषता है कि उन सासादनसम्यग्दृष्टि आदि योनिमतियोंका प्रमाण इतना है, यह नहीं जाना जाता है, क्योंकि, इस कालमें इमप्रकारका उपदेश नहीं पाया जाता है ।

लब्धपर्याप्त मनुष्य द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने है ? असरयात है ॥ ५० ॥

यहां पर निर्वृत्त्यपवाप्तको ग्रहण न करके लब्धपर्याप्तका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, गुणज्ञानप्रतिपन्न जीवोंके प्रमाणके प्ररूपणका अभाव अथवा घन नहीं सकता है ।

अपर्याप्त मनुष्य राशि असरयातरूप है यह बात सामान्यरूपसे तो जान ली, पर विशेषरूपसे उसका ज्ञान नही हुआ अतः उस असख्यातके विशेषरूपसे प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा लब्धपर्याप्त मनुष्य असरयातासरयात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ५१ ॥

इस सूत्रका अर्थ पहले अनेकार्थ कह आये है, अतः पुनरुक्त दोषके भयसे पुन नहीं कहते ह ।

क्षेत्रकी अपेक्षा जगश्रेणीके असख्यातव भागप्रमाण लब्धपर्याप्त मनुष्य हैं । उस जगश्रेणीके असरयातव भागरूप श्रेणीका आयाम असख्यात करौड योजन है । सूच्यगुलके तृतीय वर्गमूल गुणित प्रथम वर्गमूलको शलाकारूपसे स्थापित करके रूपाधिक लब्धपर्याप्तक मनुष्योंके द्वारा जगश्रेणी अपहृत होती है ॥ ५२ ॥

शुक्रा—यह सूत्र घचन घटित नहीं होता है, क्योंकि इस घचनका कोई फल नहीं

भग्दि । एत्थ पुण संभवो णेय इदि । परिहारो बुच्चदे । सुत्तेण पिणा सेठी असंखेज्ज-
जोयणकोडिपमाणो होदि त्ति ण जाणिज्जेदे, तदो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ सेडिपमाण-
मिदि जाणाणहुमिद वयण । परियम्मादो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ सेठीए पमाण-
मग्गदमिदि चे ण, एदस्स सुत्तस्स वलेण परियम्मपपुत्तीदो । अह्मा सेठीए असंखेज्जदि-
भागो वि सेठी बुच्चदे, अयपिणामस्स अयये पपुत्तिदसणादो । जहा गामेग्गदेसे द्दे
गामो दद्द इदि । अहवा एय सयधो कायव्वो । तिस्से सेठीए असंखेज्जदिभागस्स आयामो
दीहत्तण असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ होदि त्ति । अपज्जत्तएहि रूयपक्खित्तएहि रूवा
पक्खित्तएहि रूय पक्खित्तएहि त्ति तिसु वि पाठेसु रूयाहियपज्जत्तरासी पक्खिविदव्वो ।
पुणो लद्धमिह रूयाहियमणुसपज्जत्तरासिमण्णित्ते मणुस्सापज्जत्ता हांति । अगुलग्गमूल
च त्त तदियग्गमूलगुणित्तं च अंगुलग्गमूलत्तदियग्गमूलगुणित्तं तेण सलागभूदेण सेठी
अरहिरिज्जदि त्ति ज बुत्त होदि ।

है । व्यवहारकी सभावना होने पर ही विशेषण फलजाला होता है । परन्तु यहा पर तो उसकी
सभावना ही नहीं है ?

समाधान—जागे पूर्वोक्त शकाका परिहार करते हैं । सूत्रके विना 'जगध्रेणीके
असख्यातवें भागरूप ध्रेणी असख्यात करोड योजनप्रमाण है' यह नहीं जाना जाता है, अत
जगध्रेणीके असख्यातवें भागरूप ध्रेणीका प्रमाण असख्यात करोड योजन है, इसका हान
करानेके लिये उक्त वचन दिया है ।

प्रश्ना—जगध्रेणीके असख्यातवें भागरूप ध्रेणीका आयाम असख्यात करोड योजन है,
यह परिकर्मसे जाना जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, इस सूत्रके चलते परिकर्मकी प्रवृत्ति हुई है ।

अथवा, जगध्रेणीके असख्यातवें भागको भी ध्रेणी कहते हैं, क्योंकि, अययोंके नामकी
अययधर्म प्रवृत्ति देखी जाती है । जैसे, ग्रामके एक भागके लब्ध होने पर ग्राम जल गया ऐसा
कहा जाता है । अथवा, इसप्रकारका संबन्ध कर लेना चाहिये कि उस ध्रेणीके असख्यातवें
भागका आयाम अर्थात् लब्ध असख्यात करोड योजन है । 'अपज्जत्तएहि रूयपक्खित्तएहि
रूया पक्खित्तएहि रूय पक्खित्तएहि' इन तीनों भी स्थानोंमें किसी भी वचनसे
रूपाधिक पर्याप्त मनुष्य राशिका प्रक्षेप करना चाहिये । पुन लब्धमेंसे रूपाधिक पर्याप्त
मनुष्य राशिके घटा देने पर लब्धपर्याप्त मनुष्योंका प्रमाण होता है । सूच्यगुलके प्रथम
वर्गमूलको तृतीय वर्गमूलसे गुणित करके जो लब्ध आवे शलाकारूप उस राशिसे जगध्रेणी
अपद्धत होती है, यह इस सूत्रका अभिप्राय है ।

निशेपार्थ—सामान्य मनुष्यराशिके प्रमाणमसे पर्याप्त मनुष्यराशिका प्रमाण घटा देने
पर लब्धपर्याप्त मनुष्यराशिका प्रमाण शेष रहता है । सूच्यगुलके प्रथम और तृतीय
वर्गमूलके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि जाये उससे जगध्रेणीको भाजित करके लब्ध

भागामाग वचइस्सामो । मणुसरागिमसखेज्जखडे कए बहुखडा मणुस अपज्जत्ता हाति । सेस सखेज्जखडे कए बहुखडा मणुसिणीमिच्छाइद्वी होंति । सेस सखेज्जखडे कए तत्थ बहुखडा मणुसपज्जत्तमिच्छाइद्वी होंति । (सेस सखेज्जखडे कए तत्थ बहुखडा अमजदसम्माइद्विणो होंति ।) सेस सखेज्जखडे कए बहुखडा सम्मामिच्छाइद्विणो हाति । सेस सखेज्जखडे कए बहुखडा मामणम्ममाइद्विणो होंति । सेस सखेज्जखडे कए तत्थ बहुखडा सजदासजदा होंति । सेस सखेज्जखडे कए बहुखडा पमत्तसजदा होंति । सेस सखेज्जखडे कए बहुखडा अपमत्तसजदा होंति । उवरि ओघ ।

अप्पाउहुग तिनिह, सत्थाण परत्थाण सब्बपरत्थाण चेदि । तत्थ सत्थाण वचइस्सामो । सब्बत्थोपो मणुसमिच्छाइद्विअवहारकालो । तस्सेव दव्वमसखेज्जगुण । के गुणगारो ? सगदव्वस्स असखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालो । अहउा सेदीए असखेज्जदिभागो असखेज्जजाणि सेदिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? सगअवहार-

राशिमसे एक म कर देने पर सामान्य मनुष्यराशिका प्रमाण आता है और इसमेंसे पर्याप्त मनुष्यराशिका प्रमाण घटा देने पर लब्धपर्याप्त मनुष्यराशिका प्रमाण आता है ।

अब भागाभागको बतलाते हैं— मनुष्यराशिके असत्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण अपर्याप्त मनुष्य हैं । शेष एक भागके सख्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण मनुष्यनी मिथ्यादृष्टि जीव है । शेष एक भागके सत्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव है । शेष एक भागके सख्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण असत्यसम्भगदृष्टि मनुष्य है । शेष एक भागके सत्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य है । शेष एक भागके सत्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सासादनसम्भगदृष्टि मनुष्य है । शेष एक भागके सत्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सयतासयत मनुष्य है । शेष एक भागके सख्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण प्रमत्तसयत मनुष्य है । शेष एक भागके सख्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण अप्रमत्तसयत मनुष्य है । इसके ऊपर सामान्य प्ररूपणाके समान भागाभाग जानना चाहिये ।

अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है, स्वस्थान अल्पबहुत्व, परस्थान अल्पबहुत्व और सर्व परस्थान अल्पबहुत्व । उनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्वको बतलाते हैं— मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल सयसे स्तोफ है । उदा मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका अव्यप्रमाण अवहारकालसे असत्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने द्रव्यका असत्यातवा भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा, जगत्रेणीका असत्यातवा भाग गुणकार है जो जगत्रेणीका असत्यातवा भाग जगत्रेणीके असत्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपने अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है । अथवा, प्रतरागुलका असत्यातवा भाग

कालवग्गो । अहवा पदरंगुलस्स अससेज्जदिभागो अससेज्जजाणि सूचिअगुलाणि । केचिय-
मेत्ताणि ? विदियग्गमूलमेत्ताणि । सेढी अससेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगअवहारकालो ।
एवं मणुसअपज्जत्ताण पि सत्थाणप्पावहुगं वत्तच्चं । सासणादीण सत्थाणं णत्थि ।
मणुसपज्जत्त-मणुसिणीण पि णत्थि सत्थाणप्पावहुग ।

परस्थाने पयद- सच्चत्थोवा चत्तारि उवसामगा । पच खवगा संसेज्जगुणा ।
सजोगिकेवली सखेज्जगुणा । अप्पमत्तसजदा ससेज्जगुणा । पमत्तसजदा ससेज्जगुणा ।
सजदासजदा संसेज्जगुणा । सासणसम्माइट्ठी ससेज्जगुणा । सम्मामिच्छाइट्ठी ससेज्जगुणा ।
असंजदसम्माइट्ठी संसेज्जगुणा । तदो मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंसेज्जगुणो । को
गुणगारो ? सगअवहारकालस्स ससेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंजदसम्माइट्ठिणो ।
तस्सेन द्वयमससेज्जगुणं । को गुणगारो ? पुब्बमणिदो । सेढी असंसेज्जगुणा । को
गुणगारो ? पुब्बं मणिदो । मणुसपज्जत्तेसु सच्चत्थोवा चत्तारि उवसामगा । पंच खवगा
संसेज्जगुणा । एव जान असजदसम्माइट्ठि ति । तदो मिच्छाइट्ठिद्वय ससेज्जगुणं । को

गुणकार हे जो प्रतरागुलका असख्यातवा भाग असंख्यात सूच्यगुलप्रमाण है । असख्यात
सूच्यगुलको प्रमाण कितना है ? सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलप्रमाण है । मनुष्यमिथ्यादृष्टि द्रव्यसे
जगत्त्रेणी असख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । इसीप्रकार
मनुष्य लक्षपर्याप्तोंके स्वस्थान अल्पवहुत्वका भी कथन करना चाहिये । सासादनसम्यग्दृष्टि
आदि गुणस्थानवर्ती मनुष्योंका स्वस्थान अल्पवहुत्व नहीं है । उसीप्रकार पर्याप्त मनुष्य
और मनुष्यनिर्योक्त भी स्वस्थान अल्पवहुत्व नहीं है ।

अथ परस्थान अल्पवहुत्वका आश्रय लेकर प्रकृत विषयका वर्णन करते हैं— चारों
गुणस्थानवर्ती उपशामक सबसे स्तोत्र है । पाचों गुणस्थानवर्ती क्षपक सख्यातगुणे हैं । सयो-
गिकेवली क्षपकोंसे सख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसयत जीव सयोगिकेवलियोंसे सख्यातगुणे हैं ।
प्रमत्तसयत जीव अप्रमत्तसयतोंसे सख्यातगुणे हैं । सयतासयत मनुष्य प्रमत्तसयतोंसे
सख्यातगुणे हैं । सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्य सयतासयत मनुष्योंसे सख्यातगुणे हैं । सम्य-
निष्पत्त्यादृष्टि मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्योंसे सख्यातगुणे हैं । असयतसम्यग्दृष्टि मनुष्य
सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्योंसे सख्यातगुणे हैं । असयतसम्यग्दृष्टि मनुष्योंके प्रमाणसे मनुष्य
मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने अवहारकालका
संख्यातवा भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? असयतसम्यग्दृष्टि मनुष्योंका प्रमाण प्रतिभाग
है । उन्हीं मिथ्यादृष्टि मनुष्योंका द्रव्यप्रमाण अवहारकालसे असख्यातगुणा है । गुणकार क्या
है ? पहले कह आये है । मनुष्य मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणसे जगत्त्रेणी असख्यातगुणी है । गुणकार
क्या है ? पहले कह आये है । मनुष्य पर्याप्तकोंमें चारों गुणस्थानवर्ती उपशामक सबसे थोड़े
हैं । पाचों गुणस्थानवर्ती क्षपक उपशामकोंसे सख्यातगुणे हैं । इसीप्रकार उच्चरोत्तर
असयतसम्यग्दृष्टि तक अल्पवहुत्व समझना चाहिये । असयतसम्यग्दृष्टि मनुष्योंके प्रमाणसे

गुणगारो ? सखेज्जा समय । एव चेन मणुसिणीसु पि परत्याण उत्तव्य ।

मन्वपरत्याणे पयद- सन्वत्थोवा अजोगिकेवल्लो । चत्तारि उत्रमामगा सखेज्ज गुणा । चत्तारि सवगा सखेज्जगुणा । सजोगिकेवली सखेज्जगुणा । अप्पमत्तमजदा सखेज्जगुणा । पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । सजदासजदा सखेज्जगुणा । सामणमम्मा- इट्ठिणो सखेज्जगुणा । मम्माभिच्चाइट्ठिणो संखेज्जगुणा । असजदसम्माइट्ठिणो सखेज्जगुणा । मणुसपज्जत्तमिच्चाइट्ठिणो सखेज्जगुणा । मणुसिणीमिच्चाइट्ठिणो सखेज्जगुणा । मणुम अपज्जत्तअनहारकालो असखेज्जगुणो । मणुसअपज्जत्तदव्वमसखेज्जगुण । उत्ररि जार लोगो त्ति ताव जाणिउण उत्तव्व । मणुसिणीगुणपडिवण्णाण पमाणमेत्तियमिदि पाअहारिद, तम्हा सन्वपरत्याणप्पावहुए तेसि परूवणा ण कदा ।

एव मणुसगई समत्ता ।

देवगईए देवेषु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, अस-
खेज्जा ॥ ५३ ॥

मिथ्यादृष्टि पर्याप्त मनुष्योंका द्रव्यप्रमाण सख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार मनुष्यनियोंमें भी परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये ।

अथ सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्वका कथन प्रवृत्त है- अयोगिकेवली मनुष्य सबसे स्तोक है । चारों गुणस्थानवर्तों उपशामक अयोगियोंसे संख्यातगुणे है । चारों गुणस्थानवर्तों क्षपक उपशामकोंसे सख्यातगुणे है । सयोगिकेवली क्षपकोंसे सख्यातगुणे है । अप्रमत्तसयत मनुष्य सयोगियोंसे संख्यातगुणे है । प्रमत्तसयत मनुष्य अप्रमत्तसयतोंसे सख्यातगुणे है । सयतासयत मनुष्य प्रमत्तसयतोंसे सख्यातगुणे है । सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्य सयतासयतोंसे सख्यातगुणे है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टियोंसे सख्यातगुणे है । असयतसम्यग्दृष्टि मनुष्य सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंसे सख्यातगुणे है । मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव असयतसम्यग्दृष्टियोंसे संख्यातगुणे है । मनुष्यनी मिथ्यादृष्टि जीव पर्याप्त मनुष्योंसे सख्यातगुणे है । मनुष्य अपर्याप्त अपहारकाल मनुष्यनी मिथ्यादृष्टियोंसे असख्यातगुणा है । मनुष्य अपर्याप्तोंका द्रव्य उन्हींके अपहारकालसे असख्यात गुणा है । इसके ऊपर लोभ तक जानकर अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । गुणस्थानप्रतिपन्न मनुष्यनियोंका प्रमाण इतना है, यह निश्चित नहीं है, इसलिये सर्व परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करते समय गुणस्थानप्रतिपन्न उनके प्रमाणकी प्ररूपणा नहीं की ।

इसप्रकार मनुष्यगतिका कथन समाप्त हुआ ।

देवगतिप्रतिपन्न देवोंम मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने है ?
असख्यात है ॥ ५३ ॥

एत्थ देवगइगहणेण सेसगइपडिसेहो कदो हवदि । देवेसु त्ति वयणेण तत्थ
द्विदद्वयपडिसेहो कदो हवदि । मिच्छाइड्ढि त्ति वयणेण सेसगुणद्वानपडिसेहो कदो हवदि ।
द्वयप्रमाणेणेत्ति वयणेण खेत्तादिपडिसेहो कदो हवदि । केणडिया इदि वयणेण सुत्तस्स
प्रमाणत्तं सूचिदं हवदि । अससेज्जा इदि वयणेण ससेज्जाणताणं पडिणियत्ती कदां हवदि ।

किमससेज्ज णाम ? जो रासी एगेगरूप्पे अवणिज्जमाणे णिद्व्यादि सो अससेज्जो ।
जो पुण ण समप्पइ सो रासी अणतो । जदि एव तो वयसहिदसक्खयअद्वपोग्गलपरियट्ठ-
कालो नि अससेज्जो जायदे ? होदु णाम । कथ पुणो तस्स अद्वपोग्गलपरियट्ठस्स
अणंतउपरत्तो ? इदि चे ण, तस्स उवयारणिउवणत्तादो । तं जहा— अणतस्स केवलणाणस्स
निसयत्तादो अद्वपोग्गलपरियट्ठकालो नि अणंतो होदि । केवलणाणनिसयत्त पडि
निसेसाभावा सव्वसरत्ताणामणतत्तण जायदे ? चे ण, ओहिणाणनिसयवदिरित्तसरत्ताणे
अणणनिसयत्तणेण तदुवयारवपुत्तीदो । अहरा ज संखाण पंचिदियनिसओ त संखेज्जं

सूत्रमें देवगति पदके ग्रहण करनेसे शेष गतियोंका प्रतिषेध हो जाता है । 'देवोंमें'
ऐसा वचन देनेसे देवलोकमें स्थित अन्य द्रव्योंका प्रतिषेध हो जाता है ।
'मिथ्यादृष्टि' इस वचनसे अन्य गुणस्थानोंका प्रतिषेध हो जाता है । 'द्रव्यप्रमाणकी
अपेक्षा' इस वचनसे क्षेत्र आदि प्रमाणोंका प्रतिषेध हो जाता है । 'किनने ह' इस वचनसे
सूत्रकी प्रमाणता सूचित हो जाती है । 'असत्यात है' इस वचनसे सख्यात और अनन्त
सत्याकी निवृत्ति हो जाती है ।

शंका— असत्यात किसे कहते हैं, अर्थात् अनन्तसे असत्यातमें क्या भेद है ?

समाधान— एक एक सत्याके घटाते जाने पर जो राशि समाप्त हो जाती है वह
असत्यात है और जो राशि समाप्त नहीं होती है वह अनन्त है ।

शंका— यदि ऐसा है तो व्ययसहित होनेसे नाशको प्राप्त होनेवाला अर्धपुद्गल
परिवर्तन काल भी असत्यातरूप हो जायगा ?

समाधान— हो जाओ ।

शंका— तो फिर उस अर्धपुद्गल परिवर्तनरूप कालको अनन्त सत्ता कैसे दी गई है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, अर्धपुद्गल परिवर्तनरूप कालको जो अनन्त सत्ता दी गई
है वह उपचारनिमित्तक है । आगे उसीका स्पष्टीकरण करते हैं— अनन्तरूप केवलज्ञानका
विषय होनेसे अर्धपुद्गल परिवर्तनकाल भी अनन्त है, ऐसा कहा जाता है ।

शंका— केवलज्ञानके विषयत्वके प्रति कोई विशेषता न होनेसे सभी संख्याओंको
अनन्तत्व प्राप्त हो जायगा ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, जो सख्याएँ अविज्ञानका विषय हो सकती हैं उनसे
भक्तिरिक्त ऊपरकी सख्याएँ केवलज्ञानको छोड़कर दूसरे ओर किसी भी ज्ञानका विषय नहीं हो
सकती हैं, अतएव ऐसी सख्याओंमें अनन्तत्वके उपचारकी प्रवृत्ति हो जाती है । अथवा, जो
सख्या पाचों शिद्र्योंका विषय है वह सख्यात है । उसके ऊपर जो सख्या अविज्ञानका विषय

नाम । तदो उवरि जमोहिणाणनिसओ तमससेज्ज णाम । तदो उवरि ज केउलणाणस्सेव
निसओ तमणत णाम । सपदि सुद्धमदरपरूणणड्डमुत्तरसुत्तमाह—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि उस्सप्पिणीहि अवहिरंति

कालेण ॥ ५४ ॥

णादत्थमिदं सुत्त ।

खेत्तेण पदरस्स वेछप्पण्णंगुलसयवग्गपडिभागेण ॥ ५५ ॥

देवमिच्छाद्वि ति अणुउद्धे । अगुलमिदि बुत्ते एत्थ सच्चिअगुल धेत्तव्व । सद-

है यह असख्यात है । उसके ऊपर जो केउलज्ञानके विषयभावको ही प्राप्त होती है वह अन न है ।

अब अतिसूक्ष्म प्ररूपणाके प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि देव असख्यातासख्यात अवमर्षिणियाँ और उत्स-
र्षिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ५४ ॥

इस सूत्रका अर्थ पहले घतलाया जा चुका है ।

क्षेत्रकी अपेक्षा जगप्रतरके दोसौ छप्पन अगुलोंके वर्गरूप प्रतिभागसे देव मिथ्या-
दृष्टि राशि आती है, अर्थात् दोसौ छप्पन सूच्यगुलके वर्गरूप भागहारका जगप्रतरमें
भाग देने पर देव मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ॥ ५५ ॥

निशेपार्थ—यद्यपि दोसौ छप्पन सूच्यगुलोंके वर्गका भाग जगप्रतरमें देनेसे ज्योतिषी
देवोंकी संख्या आती है, फिर भी व्यन्तर आदि शेष देवोंका प्रमाण ज्योतिषी देवोंके सख्यातमें
भागमात्र है इसलिये यदा पर द्रव्याधिक नयकी अपेक्षा सपूण देवराशिका प्रमाण पूर्वोक्त
कहा है । निशेपरूपसे विचार करने पर तो दोसौ छप्पन सूच्यगुलोंके वर्गका जगप्रतरमें भाग
द देने पर जो लब्ध आवे उससे कुछ अधिक सपूण देवोंका प्रमाण है, ऐसा समझना चाहिये ।
साध ही यह भी ध्यानमें रखना चाहिये कि यदा जीवद्वान्में चोद्ध मार्गणाओंमें मिथ्यादृष्टि
आदि गुणस्थानोंकी अपेक्षा पृथक् पृथक् सख्या बतलाई है । इसलिये उस उस मार्गणामें
सामान्य सख्याके प्रमाणसे मिथ्यादृष्टिने प्रमाणको कुछ कम कहना चाहिये वा । परन्तु वैसा
न कह कर सामान्य सख्याका प्रमाण है । यदा प्राय कर मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण कहा है
सो यह कथन भी द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षासे ही सत्र समझना चाहिये । निशेपरूपसे
विचार करने पर तो सामान्य सख्याके प्रमाणमेंसे गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके प्रमाणको घटा
द देने पर ही मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण होगा ।

यदा पर देव मिथ्यादृष्टि पदकी अनुवृत्ति हुई है । सूत्रमें 'अगुल' ऐसा सामान्य पद

सदो वेण्ह त्रिसेमणं हवदि, ण छप्पणस्म। वेहि त्रिसेसिदछप्पणसदस्स गहणं पसज्जदि त्ति ण च एव, अणिट्ठत्तादो। पडिभागो भागहारो। तदो वेसयछप्पणगुलवग्गेण जगपदेरे खडिदे तत्थ एगसंडेण तुल्ला देवमिन्डाइट्ठी होंति त्ति जं वुच होदि। पण्णाट्टिसहस्स-पचसय छत्तीसपदरगुलाणि भागहार कट्ठु जगपदरस्सुवरि खडिदादओ पंचिदियतिरिक्ख-जोणिणीमिन्डाइट्ठीण वत्तव्वा।

सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठीणं ओघं

॥ ५६ ॥

एदेसिं देवगुणपडिपण्णाण परूणणा सामण्णेण ओघगुणपडिवण्णटंठ्वपमाण-परूणणमणुहरदि त्ति ओघेणेत्ति भणिद। पज्जजट्टियणए अउलंनिज्जमाणे अत्थि त्रिसेसो, अण्णहा सेसगइगुणपडिवण्णाणमभावप्पसगा। त त्रिसेस वत्तइस्सामो। त जहा—आवलियाए असखेज्जदिभाएण ओघअसजदसम्माइट्ठिअवहारकालं संडेज्जण - लद्धं तम्हि चेउ पन्निस्सत्ते देवअमंजदमम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तमावलियाए असं-

कहने पर यहा उससे सूच्यगुलका ग्रहण करना चाहिये। शत शब्द दोका विशेषण है, छप्पनना नहीं। यदि कोई कहे कि दो विशिष्ट छप्पनसौका ग्रहण हो जाना चाहिये सो बात नहीं है, क्योंकि, ऐसा मानना इष्ट नहीं है। प्रतिभागका अर्थ भागहार है, अत यह अभिप्राय हुआ कि दोसौ छप्पन सूच्यगुलोंके वर्गमे जगप्रतरके खडित करने पर उनमेंसे एक खटके बराबर देव मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं। पैंसठ हजार पाचसो छत्तीस प्रतरगुलोंको भागहार करके जगप्रतरके ऊपर खडित आदिको पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंके खडित आदिकके समान कहना चाहिये।

सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यमिव्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि सामान्य देवोंका द्रव्यप्रमाण ओघ प्ररूपणाके समान पर्योपमके असख्यातमें भाग है ॥ ५६ ॥

इन गुणस्थानप्रतिपन्न देवोंकी सरया प्ररूपणा सामान्यरूपसे गुणस्थानप्रतिपन्न सामान्य जीवोंकी सख्या प्ररूपणाया अनुकरण करती है, अतएव 'ओघसे' ऐसा कहा है। पर्यायाधिक नयका अघलम्यन करने पर तो विशेषता है ही, अन्यथा शेष गतिसबन्धी गुणस्थान-प्रतिपन्न जीवोंके अभावका प्रसंग आ जाता है। आगे उसी विशेषताको बतलाते हैं। यह इसप्रकार है—

आवलीके असख्यातमें भागसे सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालको खडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालमें मिला देने पर देव असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। उस देव असंयतसम्यग्दृष्टिसबन्धी अवहारकालको

खेज्जदिमाण गुणिदे देवसम्मामिच्छादृष्टिअवहारकालो होदि । त सरोज्जरूपेहि गुणिदे देवसासणसम्मामिच्छादृष्टिअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि पल्लिदोअमस्सुपरि खडि दादओ पुच्चं व वच्चया ।

भवणवासियदेवेषु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असं-
खेज्जा' ॥ ५७ ॥

एदस्स सुत्तस्म अत्थो सुगमो ।

असखेज्जासखेज्जाहि' ओसप्पिणि उस्सप्पिणीहि अवहिरंति
कालेण ॥ ५८ ॥

एदस्स पि अत्थो सुगमो चेव ।

खेत्तेण असखेज्जाओ सेढीओ पदरस्स असंखेज्जदिभागो । तेसि
सेढीणं विक्खंभसूई अगुल अगुलवग्गमूलगुणिदेण' ॥ ५९ ॥

एदस्स अइसुहुमइसुत्तस्स विवरण वुच्चदे । असरोज्जासरोज्जमणेयवियप्प । तत्थ

आवलीके असरयातवें भागसे गुणित करने पर देव सम्यग्मिध्यादृष्टियोंका अवहारकाल होना है । उस देव सम्यग्मिध्यादृष्टि अवहारकालको सरयातसे गुणित करने पर देव सासा दनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इन अवहारकालोंके द्वारा पल्लोपमके ऊपर खडित आदिकका कथन पहलेके समान कहना चाहिये ।

भवनवासी देवोंमें मिग्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने है ? अस-
ख्यात है ॥ ५७ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है ।

कालकी अपेक्षा मिग्यादृष्टि भवनवासी देव असख्यातामख्यात अससर्पिणियों
और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ५८ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ सुगम ही है ।

क्षेत्रकी अपेक्षा भवनवासी मिध्यादृष्टि देव असख्यात जगश्रेणीप्रमाण है जो
असख्यात जगश्रेणिया जगप्रतरके अमख्यातवें भागप्रमाण हैं । उन अमख्यात जग-
श्रेणियोंकी निष्कभसूची, सूच्यगुलको सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलमे गुणित करके जो लब्ध
आने, उतनी है ॥ ५९ ॥

अत्यन्त सूक्ष्म अर्थका प्रतिपादन करनेवाले इस सूत्रका विवरण लिखा जाता है—

१ असखेज्जा असरउभारा जाव अमस जा यणियइभारा । अउ दा सू १४१, पृ १५९

२ प्रतिपु 'सखेजासखेज्जाहि' इति पाठ ।

३ षणअगुलवग्गमपद ×× सत्तिवग्गण ×× । भवण ×× दवाण हीदि परिमाण । गो जी १६१

अमसेज्जाओ सेदीओ इदि बुत्त जगपदरमाइ काऊण उअरिम-असग्वेज्जासखेज्जत्रियप्प-
पडिसेहट्ट । पदरस्म अससेज्जदिभागो णि अणेपत्रियप्पो इदि ऋडु तं णिण्णयट्ट
मेदीण विकसभसूई उत्ता । तिस्से पमाणं बुचडे । अगुल अगुलउग्गमूलगुणिद भवणवासिय
मिच्छाइडिक्खिअसूई हवदि त्ति सअंधेयव्व । घणगुलपढमउग्गमूलमिदि जं बुत्त होदि ।
अगुलउग्गमूलगुणिदेणेत्ति तइयाणिहेमो कथ घडदे ? पढमापिहत्तीए अट्टे एसो तइया-
णिहसो ढट्टो । अण्णत्थ ण एअ दिस्सदीदि वे ण, 'वेळ्ळप्पण्णगुलमदवग्गपडिभागेण'
इच्चादिस्सु सुत्तेसुवलंभा । अहमा णिमित्ते एसो तइयापिहत्ती दट्टव्वा । अगुलउग्गमूल-
गुणकारणेण जम्भुप्पण्णगुल सा तिमसभसूई होदि त्ति ज बुत्त होदि । एदाए विकसभ-
सूईए जगमेदि गुणिदे भवणत्रायिमिच्छाइडिपमाण होदि ।

सासणसम्माइडि-सम्माभिच्छाइडि--असंजदसम्माइडिपरूवणा

ओधं ॥ ६० ॥

असख्यातासरयात अनेक प्रकारका है, इसलिये जगप्रतरको आदि करके उपरिम असख्याता
सरयातके विकल्पोंका प्रतिषेध करनेके लिये भवनवासी मिथ्यादृष्टि देवोंका प्रमाण असख्यात
जगश्रेणिप्रमाण कहा है । यह जगप्रतरका असख्यातका भाग भी अनेक प्रकारका है ऐसा
समझकर उसका निर्णय करनेके लिये उन असख्यात जगश्रेणियोंकी विष्कभसूची कही । आगे
उस विष्कभसूचीका प्रमाण कहते हैं— सूच्यगुलने सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलसे गुणित करके
जो लब्ध आवे इतनी भवनवासी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कभसूची है, ऐसा इस कथनका सन्ध
करना चाहिये । जो विष्कभसूची घनागुलके प्रथम वर्गमूलप्रमाण है, यह इस कथनका
अभिप्राय है ।

शंका— 'अगुलउग्गमूलगुणिदेण' इसप्रकार यहा तृतीया विभक्तिका निर्देश कैसे
घन सकता है ?

समाधान— प्रथमा विभक्तिके अर्थमें यह तृतीया विभक्तिका निर्देश जानना चाहिये ।

शंका— दूसरी जगह ऐसा नहीं देखा जाता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, 'वेळ्ळप्पण्णगुलसद्वग्गपडिभागेण' इत्यादिक सूत्रोंमें
प्रथमा विभक्तिके अर्थमें तृतीया विभक्ति देखी जाती है । अथवा निमित्तरूप अर्थमें यह तृतीया
विभक्ति जानना चाहिये । जिससे यह अभिप्राय हुआ कि अगुलके वर्गमूलके गुणनकारणसे
जो अगुल उत्पन्न हो तत्प्रमाण भवनवासी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कभसूची है । इस विष्कभसूचीसे
जगश्रेणिके गुणित करने पर भवनवासी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण होता है ।

सासादनमम्यग्दृष्टि, मम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत्तसम्यग्दृष्टि भवनवासी
जीवोंकी प्ररूपणा सामान्य प्ररूपणाके समान है ॥ ६० ॥

एवमद्विगणए अवलंबिज्जमाणे ओषेण सह एगत्तदमणादो । पञ्चवद्विगणए अ
 मंविज्जमाणे अत्थि पिसेतो सं पुरदो मणिस्सामो ।
 पाणवेंतरदेवेसु मिच्छाइद्धी दब्बपमाणेण केवडिया, असखेज्जां

॥ ६१ ॥

एदस्स भूलरथस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसण्णिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति

फालेण ॥ ६२ ॥

एदस्स वि सुदुग्गदुत्तस्स इत्थो पण्वदे ।

खेत्तेण पदरस्स मखेज्जजोयणसदवग्गपडिभाएणं ॥ ६३ ॥

एदस्स अहमुत्तमपदरस्स इत्थो बुद्धदे । पदरस्सेदि विहज्जमान
 हासिणिदेवो । मखेज्जजोयणसदवग्गपडिभाएणेत्ति लद्धणिदेवो । पदरस्स मखेज्जजोयण

इत्यादि शब्दों के अर्थ को देख कर श्लोक प्ररूपकोके साथ गुणस्थानप्रतिपक्ष मन्त्र
 श्लोकों, प्ररूपकोके अर्थ को देख कर देखा जाती है । परंतु पर्यायाधिक नपवा सबलम्ब
 श्लोक पर तो उक्त श्लोकों के अर्थ को देख कर है ही । उस विशेषताको भागि बतलावेंगे ।

इत्यादि श्लोकों के अर्थ को देख कर श्लोक प्ररूपकोके साथ गुणस्थानप्रतिपक्ष मन्त्र
 श्लोकों, प्ररूपकोके अर्थ को देख कर देखा जाती है । परंतु पर्यायाधिक नपवा सबलम्ब
 श्लोक पर तो उक्त श्लोकों के अर्थ को देख कर है ही । उस विशेषताको भागि बतलावेंगे ।

॥ ६४ ॥

मयवग्गपडिभागो वाणंंतरमिच्छाड्डिद्वयपमाण होदि । पडिभागो इदि किं बुच्चं हवदि ? ससेज्जजोयणसयवग्गमेत्तजगपदरस्म भागेसु एगभागो पडिभागो णाम । पडिभागमहो भागहारम्मि वट्टमाणो कज्जे कारणोपयारेण लद्धम्मि वट्टदि त्ति घेत्तव्वं । एत्थ पढमाए विहत्तीए अट्टे तदिया दट्टव्वा । अहवा एस णिहेसो पढमानिहत्ती चेव जहा इरदि तहा साहेयव्वो । ससेज्जजोयणेत्ति बुत्ते तिण्णिजोयणसयमगुल काऊण वग्गिदे जो उप्पज्जदि रासी सो घेत्तव्वो । तस्स पमाण पच कोडाकोडिसयाणि तीसकोडा-कोडीओ चउरासीदि.कोडिसयसहस्साणि सोलसकोडिसहस्साणि च भवदि । जदि जोणिणीणमवहारकालो तप्पाओग्गमसेज्जज्जगुणिदछज्जोयणसयमगुलवग्गमेत्तो हवदि तो वाणचेतरमिच्छाड्डिणीण पि अवहारकालो एत्तियपदरगुलमेत्तो हवदि । अघ जदि पंचिदियतिरिक्कजोणिणीमिच्छाड्डिणीणमवहारकालो छज्जोपणसयमगुलवग्गमेत्तो चेव तो वाणंंतरमिच्छाड्डिअवहारकालेण' तिण्णिजोयणमयगुलवग्गस्म ससेज्जदिभाएण होदव्वं, अण्णहा अप्पाअहुगसुत्तेण सह विरोहादो । एदेण अनहारकालेण जगपदरे भागे हिदे

इसका यह तात्पर्य हुआ कि जगप्रतरम सरयातसौ योजनोंके वर्गका भाग देने पर जो प्रतिभाग आये उतना वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि देवोंका प्रमाण है ।

शंका — प्रतिभाग इस पदसे यहा क्या कहा गया है ?

समाधान — सख्यातसौ योजनोंके वर्गका जितना प्रमाण हो उतने जगप्रतरके भाग करने पर उनमेंसे एक भागरूप प्रतिभाग है । अर्थात् प्रतिभाग शब्दसे यहा लघ्वरूप अर्थ लिया गया है । यद्यपि प्रतिभाग शब्द भागहाररूप अर्थमें रहता है तो भी कार्यमें कारणके उपचारसे यहा लघ्वमें उसका ग्रहण करना चाहिये ।

यहा प्रथमा विभक्तिके अर्थमें तृतीया विभक्ति जानना चाहिये । अथवा, 'पडिभाएण' यह निर्देश प्रथमा विभक्तिरूप जिसप्रकार होवे उसप्रकार सिद्ध कर लेना चाहिये । सूत्रमें 'सख्यात योजन' ऐसा कहने पर तीनमौ योजनोंके अगुल करके वर्गित करने पर जो राशि उत्पन्न हो वह राशि लेना चाहिये । उन अगुलोंका प्रमाण पाचसौ कोड़ाकोडी, तीस कोड़ाकोडी, चौरासी लाख कोडी और सोलह हजार कोडी ५३०८४१६०००००००००० है । यदि तिर्यंच योनिमतियोंका अवहारकाल तद्योग्य सरयात गुणित छहसौ योजनोंके अगुलोंका वर्गमात्र हो तो वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका भी अवहारकाल इतने अर्थात् तीनसौ योजनोंके अगुलोंके वर्गरूप प्रतरागुलप्रमाण हो सकता है । और यदि पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल छहसौ योजनोंके अगुलोंके वर्गमात्र ही है तो वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल तीनमौ योजनोंके किये गये अगुलोंके वर्गके सरयातवें भाग होना चाहिये, अन्यथा अल्पबहुत्वके मूलके साथ इन कथनका विरोध आता है ।

वाणवतरमिच्छाद्विपमाणमागच्छदि ।

सासणसम्माइट्टि-सम्मामिच्छाद्वि-असंजदसम्माइट्टी ओघ

॥ ६४ ॥

दन्वद्वियणए अवलविज्जमाणे केण वि अमेण विसेमाभावादो ओघत्तमिदि
बुचंदि । पज्जराद्वियणए अलविज्जमाणे अरिय विसेमो । त विसेस पुरटो भणिस्सामो ।

उक्त अघद्वारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर घाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण आता है ।

निशेषार्थ—घाणव्यन्तर देवोंका अवद्वारकाल तीनसौ योजनोंके अंगुल्लोंका घर्ग ह और पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतियोंका अघद्वारकाल छहसौ योजनोंके अंगुल्लोंका घर्ग है । तीनसौ योजनोंके प्रतरागुल्ल ५३०८४१६०००००००००० होते हैं और छहसौ योजनोंके प्रतरागुल्ल २१२३३६६४००००००००००० होते हैं । किसी विधक्षित राशिसे घर्गसे उस राशिसे धूर्ना राशिका घर्ग चौगुना होता है । जैसे ४ के घर्ग १६ से, ४ के दूने ८ का घर्ग ६४ चौगुना है । तथा किसी एन भूज्यमें ८ के घर्ग ६४ का भाग देनेसे जो लब्ध आयगा, ४ के घर्ग १६ का भाग देनेसे पूर्वात् लब्धसे चौगुना ही लब्ध आयगा । इसीप्रकार यदा तीनसौ योजनोंके प्रतरागुल्लोंसे छहसौ योजनोंके प्रतरागुल्ल चागुने होते हैं, अतएव छहसौ योजनोंके प्रतरागुल्लोंका जगप्रतरमें भाग देनेसे तिर्यच योनिमतियोंका जितना प्रमाण लब्ध आयगा, उससे, तीनसौ योजनोंके प्रतरागुल्लोंका उसी जगप्रतरमें भाग देने पर घाणव्यन्तर देवोंका प्रमाण, चौगुना ही लब्ध आता है । पर अल्पगुण्य अनुयोगद्वारमें तिर्यच योनिमतियोंसे घाणव्यन्तर देव सख्यातगुणे षडे ह और उर्हाँकी देवाया देवोंसे सख्यातगुणा कही ह । देवगतिमें निष्टष्ट देवके भी षर्त्तस क्षेत्रिया होती ह । इसप्रकार आगमानुसार तिर्यच योनिमतियोंके प्रमाणसे घाणव्यन्तर देवोंका प्रमाण $१ + ३२ = ३३$ गुणसे अधिक ही होना चाहिये पर पूर्वोक्त भागहारके अनुसार चौगुना ही आता है । इससे प्रतीत होता है कि उक्त दोनों भागहारोंमेंसे कोई एक भागहार असत्य है । यदि घाणव्यन्तरोंका भागहार सत्य है ऐसा मान लिया जाता है तो योनिमतियोंका भागहार छहसौ योजनोंके प्रतरागुल्लोंसे सख्यातगुणा होना चाहिये ओर यदि तिर्यच योनिमतियोंका भागहार सत्य मान लिया जाय तो घाणव्यन्तरोंका भागहार तीनसौ योजनोंके प्रतरागुल्लोंका सख्यातवा भाग होना चाहिये ।

सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि घाणव्यन्तर देव सामान्य प्ररूपणाके समान पल्लोपमके असख्यातयें भाग हैं ॥ ६४ ॥

द्रव्याधिक नयका अलम्बन करने पर किसी भी प्रकारसे गुणस्थानप्रतिपन्न सामान्य प्ररूपणा ओर गुणप्रतिपन्न घाणव्यन्तरोंकी प्ररूपणामें विशेषता न होनेसे गुणस्थानप्रतिपन्न घाणव्यन्तरोंकी प्ररूपणा गुणस्थानप्रतिपन्न सामान्य प्ररूपणाके समान कही । पर्यायार्थिक का अलम्बन करने पर तो विशेषता है ही । उस विशेषताका क्या धाने करेंगे ।

किमिह सव्वत्थ दव्वट्ठिय पज्जउट्ठियणयद्दयमउलंबिय परूषणा कीरदे ? ण एस दोसो, सगह वित्थररुचिस चाणुग्गहाउदत्तादो । अण्णहा असमाणदापसंगादो ।

जोइसियदेवा देवगईणं भंगो ॥ ६५ ॥

देवगईणमिदि उहुवयणणिहेसो ण घड्ढे, एकाए देवगईए बहुत्ताभावादो इदि ? ण एस दोसो, सगहिदाणेयत्ते एयत्ते बहुत्ताभरोहादो । जोइसियदेवा इदि गुणा-
त्रिसिद्धदेवग्गहणादो जोइसियदेवसे चदुण्ह गुणट्टाणाण पमाणपरूषणा ओघपरूषणाए तुट्ठा । एसो दव्वट्ठियणयमवलनिय णिहेसो कओ । पज्जउट्ठियणए अउलंबिज्जमाणे अत्थि त्रिसेसो । त जहा— तत्थ ताउ मिउडाइट्टीसु त्रिसेसो बुच्चडे । चाणउतरादिसेससव्वे देवा जोइसियदेवाण सरोज्जदिभागमेत्ता हवति । तेहि सामण्णदेवरासिमोउट्टिदे सरोज्ज-

शुक्रा—सर्वत्र द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक इन दो नयोंका अवलम्बन करके प्रमाण प्ररूपणा क्यों की जा रही है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, सग्रहवृत्ति ओर विस्तरवृत्ति शिष्योंके अनुग्रहके लिये इन दोनों नयोंका व्यापार हुआ है । यदि ऐसा नहीं माना जाय तो असमानताका प्रसंग आ जाता है ।

देवगतिप्रतिपन्न सामान्य देवोंकी संख्या जितनी ऋही है ज्योतिषी देव उतने हैं ॥ ६५ ॥

शुक्रा—छूममें आये हुए 'देवगईण' यह उहुवचन निर्देश घटित नहीं होता है, क्योंकि, देवगति एक है, अत उसे वहुत्व प्राप्त नहीं हो सकता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, जिसमें बहुत्व सगृहीत है ऐसे एकत्वमें बहुत्वके रहनेमें विरोध नहा आता है ।

'जोइसियदेवा' इसप्रकार मिथ्यादृष्टि आदि गुणोंकी विशेषतासे रहित सामान्य ज्योतिषी देवोंका ग्रहण करनेसे ज्योतिषी देवोंमें चारों गुणस्थानोंकी सख्या प्ररूपणा सामान्य देवगतिसंबन्धी सख्या प्ररूपणाके समान है, ऐसा सिद्ध होता है । यह कवन द्रव्यार्थिक नयका आश्रय लेकर किया है । परन्तु पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर विशेषता है ही । वह इसप्रकार है । उसमें भी पहले मिथ्यादृष्टियोंमें विशेषताको बतलाते हैं—चाणयन्तर आदि दोष सपूर्ण देव ज्योतिषी देवोंके सख्यातयें भाग है । उनसे सामान्य देवराशिके शपचर्तित करने पर

१ असखिजा जाइसिआ । अनु द्वा १४१ सु १७९ पत्र XX बसदछपण्णअश्लोण च । इदिहिद पदं XX जाइसियण च परिमाण ॥ गो जी १६० छ'नउरीसपश्लपूइपएत्ति माइओ पयरो । जोइसिएई हीएर सट्टाणे त्थ य सखट्टणा । पञ्चस २, १५

२ प्रतिपु 'सगहिदा णेयत्ते' इति पाठ ।

३ प्रतिपु 'परूषणदिवोव' इति पाठ ।

रूपाणि आगच्छन्ति । ताणि निरालिय दव्वमिच्छाइड्डिरासिं समखडं करिय दिण्णे रूपां
पडि वाणवैतरप्पमुहमिच्छाइड्डिरासी पाणेदि । तमुपरिमरूपधरिदसामण्णदेवमिच्छाइड्डि
रासिंमिह अण्णिदे जोइसियदेवमिच्छाइड्डिरासी होदि । एव समकरण करिय रूवूणहोड्डिम
निरलणाए देवअवहारकाले भागे हिदे पदरगुलस्स सखेज्जनिभागे आगच्छदि । त देव
अवहारकालमिह पक्खिस्सत्ते जोइसियदेवमिच्छाइड्डिअवहारकालो होदि । सेस देवमिच्छा
इड्डिमगो । सासणादिगुणद्वान्णगदन्निसेस पुरदो वत्तइस्सामो ।

सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेषु मिच्छाइड्डी दव्वपमाणेण केव-
डिया, असंखेजा ॥ ६६ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो जग्गदो त्ति पुणो ण वुच्चदे ।

असखेज्जासखेज्जाहि ओसप्पिणि उस्सप्पिणीहि अवहिरन्ति
कालेण ॥ ६७ ॥

एदस्स सुत्तस्सत्थो सुग्गो चेय । सच्चत्थ सुट्ठम सुट्ठमदर सुट्ठमतमभेएण तिग्गिहा
परूणा किमद्ध परून्निज्जदे ? ण एस दोसो, तिच्च मद मज्झिमत्तत्ताणुग्गहट्ठत्तादो । अण्णहा

सख्यात लब्ध आते हैं । उनका (सख्यातका) विरलन करके सामान्य देव मिथ्यादृष्टि राशिको
समान व्युत्पन्न करके दे देने पर निरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति वाणवैतर आदि मिथ्यादृष्टि
देवराशि प्राप्त होती है । उसे उपरिम एकके प्रति प्राप्त सामान्य देव मिथ्यादृष्टि राशिमैले
घटा देने पर ज्योतिषी मिथ्यादृष्टिराशि आती है । इसप्रकार समीकरण करके एक कम
अधस्तन विरलनसे देव अवहारकालके भाजित करने पर प्रतरागुलना सख्यातवा भाग लब्ध
आता है । उसे देव अवहारकालमें मिला देने पर ज्योतिषी देव मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता
है । दोष कथन देव मिथ्यादृष्टि प्ररूपणाने समान है । सासादन जादि गुणस्थानगत विशेषताको
आगे बतलावेंगे ।

सौधर्म और ऐशान कल्पवामी देवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा
कितने हैं ? असख्यात है ॥ ६६ ॥

इस सूत्रका अर्थ अवगत है, इसलिये फिरसे गद्दा कहते हैं ।

कालकी अपेक्षा सौधर्म और ऐशान कल्पवासी मिथ्यादृष्टि देव असख्याता-
सख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ६७ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुग्ग ही है ।

शुका—सब जगह सूक्ष्म, सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतमके भेदसे तीन प्रकारकी प्ररूपणा
किसलिये कही जा रही है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, तीव्र बुद्धिवाले, मद् बुद्धिवाले और मध्यम
दियाले जीवोंने अनुग्रहके लिये तीन प्रकारकी प्ररूपणा कही है । यदि ऐसा न माना जाय तो

जिणाण सव्वसत्तसमाणचविरोहो । ण पुणरुत्तदोसो पि जिणवयणे संभवइ, मदवुद्धि-
सत्ताणुग्गहद्धदा एदस्म साफछादो ।

खेत्तेण असंखेज्जाओ सेठीओ पदरस्स असंखेज्जदिभागो ।
तासिं सेठीणं विक्खभसूई अंगुलविदियवग्गमूलं तदियवग्गमूल-
गुणिदेण ॥ ६८ ॥

पदरस्स असखेज्जदिभागो इति णिहेमो जगपदरादिउपरिमत्रियप्पणियत्तावणट्ठो ।
असखेज्जाओ सेठीओ इदि णिहेसो जगसेठीदो हेट्ठिमअसखेज्जासखेज्जत्रियप्पणियत्ता-
वणट्ठो । तासिं सेठीणं पमाणपरिच्छेद काउ अंगुलविदियवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण
इदि विक्खभसूई वुत्ता । गुणिदेणेति पढमाणिहेसो दट्ठव्यो । सूचिअंगुलविदियवग्गमूलं
तदियवग्गमूलेण गुणिदं सोहम्मीसाणमिन्डाइट्ठिभिस्सभसूई होइ । अहवा सूचिअंगुल-
तदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूले भागे हिदे सोहम्मीसाणदेवमिच्छाइट्ठिभिक्खभसूई होदि ।
णदिस्से भिक्खभसूईए सडिदादओ जहा णेरडयभिस्सभसूईए तथा वत्तव्वा ।

जिनदेव सर्व जीवोंमें समान परिणामी होते हैं इस कथनमें विरोध आ जायगा । जिनवचनमें
पुनरुक्त दोष भी सभ्य नहीं है, क्योंकि, जिनवचन मदवुद्धि शिष्योंका भी अनुग्रह करनेवाला
होनेसे पुन पुन कथन करनेकी सफलता है ।

क्षेत्रकी अपेक्षा सौधर्म और ऐशान कल्पवासी मिथ्यादृष्टि देव असंख्यात
जगश्रेणीप्रमाण है जो असंख्यात जगश्रेणियोंका प्रमाण जगप्रतरके असंख्यातव भाग
है । उन असंख्यात जगश्रेणियोंकी विष्कभसूची, सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलको तृतीय
वर्गमूलमे गुणा करने पर जितना लब्ध आवे, उतनी है ॥ ६८ ॥

सूत्रमें 'जगप्रतरका असंख्यातवा भाग' यह निर्देश जगप्रतर आदि उपरिम विकल्पोंके
निराकरण करनेके लिये दिया है । 'असंख्यात जगश्रेणिया' इसप्रकारका निर्देश जगश्रेणीसे
सौधके असंख्यातासंख्यात विकल्पोंकी निवृत्तिके लिये दिया है । उन श्रेणियोंके प्रमाणका
ज्ञान करानेके लिये सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलको उसीके तृतीय वर्गमूलसे गुणा करने पर जो
लब्ध आवे उतनी उन श्रेणियोंकी विष्कभसूची कही । 'गुणिदेण' यह पद प्रथमा विभक्तिरूप
जानना चाहिये, जिससे यह तात्पर्य हुआ कि सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलको तृतीय वर्गमूलसे
गुणित करने पर जो लब्ध आवे उतनी सौधर्म और ऐशान कल्पवासी मिथ्यादृष्टि देवोंकी
विष्कभसूची होती है । अथवा, सूच्यगुलके तृतीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके भाजित करने
पर सौधर्म और ऐशान कल्पवासी देवोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कभसूची होती है । ऊपर जिसप्रकार
नारक मिथ्यादृष्टि विष्कभसूचीके खटित आदिकका कथन कर आवे है उसीप्रकार इस विष्कभ
सूचीके खटित आदिकका कथन करना चाहिये ।

सपदि सुहायधेण सामण्णेण जीवपमाणपरूपण जाओ विक्खमसुद्धेओ
 णेरइय सोहम्मसाण भवणवासियदेवाण बुत्ताओ ताओ चेत्त विक्खमसुद्धेओ एत्थ
 वि जीवद्वयेण मिच्छाडडिपरूपणाए अण्णणाहियाओ बुत्ताओ । त जहा-
 अगुलस्स वग्गमूल विदियवग्गमूलगुणिदेण इदि एसा सुहायधे णेरइयविक्खम
 सुद्धे उत्ता । तामिं सेट्ठीण विक्खमसुद्धे अगुल अगुलवग्गमूलगुणिदेण इदि एसा
 भवणवासियविक्खमसुद्धे सुहायधे उत्ता । तामिं सेट्ठीण विक्खमसुद्धे अगुलविदियवग्गमूल
 विदियवग्गमूलगुणिदेण इदि एसा सोहम्मसाणदेवविक्खमसुद्धे सुहायधे बुत्ता । एत्थ वि
 णेरइय भवणवासिय सोहम्मसाणमिच्छाडडिण विक्खमसुद्धेओ एटाओ चेत्त बुत्ताओ ।
 एद च ण घट्ठे, सामण्णविसेसपरूपणाणमेगत्तविरोहादो । तम्हा एत्थ बुत्तविक्खमसुद्धेहि
 उणियाहि सुहायधुत्तविक्खमसुद्धेहि वा अपियाहि होदव्वमिदि चोदगां भणदि । एत्थ
 परिहारो बुच्चद । जीवद्वयणुत्तविक्खमसुद्धेओ सपुण्णाओ सुहायधमिह बुत्तविक्खमसुद्धेओ

शुका—सामान्यसे जीवराशिके प्रमाणना प्ररूपण करनेवाले सुहायधके द्वारा
 नारकी, सौधर्म पेशान और भवनवासी देवाओं जो विष्कभसूत्रिया कही हैं, न्यूनता और
 अधिकतासे रहित ये ही विष्कभसूत्रिया यहा जीवद्वयणमें भी नारकी, सौधर्म पेशान और
 भवनवासी देवोंसय धी मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी प्ररूपणामें कहीं हैं । आगे इसी विषयका
 स्पष्टीकरण करते हैं—सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलको द्वितीय वर्गमूलसे गुणित करने पर
 जितना लब्ध भावे उतनी गुहायधम सामान्य नारकियोंकी विष्कभसूत्रिया कही है । भवन
 वासियोंके प्रमाणरूपसे जो असख्यात जगश्रेणिया वतलाई हैं उन जगश्रेणियोंकी विष्कभसूत्रिया
 सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलको द्वितीय वर्गमूलसे गुणित करने पर जितना लब्ध भावे उतनी है,
 यह भवनवासियोंकी विष्कभसूत्रिया सुहायधमें कही है । सौधर्म और पेशान कल्पवासी
 देवोंके प्रमाणरूपसे जो असख्यात जगश्रेणिया वतलाई हैं उन जगश्रेणियोंकी विष्कभसूत्रिया,
 सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलको तृतीय वर्गमूलसे गुणित करने जो लब्ध भावे, उतनी है,
 यह सौधर्म और पेशान कल्पवासी देवोंकी विष्कभसूत्रिया सुहायधमें कही है । यहा जीवद्वयणमें
 भी नारकी, भवनवासी और सौधर्म पेशान मिथ्यादृष्टि जीवोंकी विष्कभसूत्रिया ये ही
 (सुहायधमें कही हुई) कही हैं । परंतु यह क उन घटित नहीं होता है, क्योंकि, सामान्य
 प्ररूपणा और विशेष प्ररूपणा इन दोनोंकी एक माननेमें विरोध आता है । अतएव जीवद्वयणमें
 जो विष्कभसूत्रिया कही गई हैं वे सुहायधमें कही गई विष्कभसूत्रियोंसे न्यून होनी चाहिये
 या सुहायधमें कही गई विष्कभसूत्रिया यहा जीवद्वयणमें कही गई विष्कभसूत्रियोंसे अधिक
 होनी चाहिये, ऐसा शकनारका कहना है ?

समाधान—आगे इस शकाका परिहार करते हैं—जीवद्वयणमें जो विष्कभसूत्रिया
 कही गई हैं वे सपूर्ण हैं और सुहायधमें कही गई विष्कभसूत्रिया जीवद्वयणमें कही गई
 साधिक हैं ।

साधियाओ । तं कथ जाणिजेदे ? अण्णहा वग्गट्ठाणे हेट्ठिम-उत्तरिमनियप्पाणुवत्तीदो । खुदावधमिह वुत्तनिकसंभसुईओ सपुण्णाओ ऋण्ण होंति त्ति चे ण, तदाविधगुरूवदेमा-भाया । अहया एत्थ वुत्तनिकसंभसुईओ देसणाओ खुदावधमिह वुत्तनिकसंभसुईओ सपुण्णाओ । कुदो ? अट्ठरूपे उग्गिज्जमाणे मोहम्मीसाणनिकसंभसुचिं पावदि, सा सइ वग्गिदा णेरहयनिकसंभसुइ पावदि, भा सइ वग्गिदा भण्णत्तासिपनिकसंभसुचिं पावदि त्ति परियम्मे वग्गसमुट्ठिसामणनिकसंभसुचिपादादो खुदावधे नि घणधारुप्पण-निकसंभसुइण पादोअलभादो वा । जीवट्ठाणमिच्छाइट्ठिनिकसंभसुचिपादो नि खुदावध-सामणनिकसंभसुचिपादेण समाणो उअलंभदे चे ण, दव्वट्ठियणयदो समाणत्तुवलभा । पच्चजट्ठियणए पुण अअलविज्जमाणे णियमेण तत्थ अट्ठिय तिसेसो । खुदावधुअवहार जीवट्ठाणस्म मिच्छाइट्ठिनिकसंभसुइए सामणनिकसंभसुचिसमाणत्तविरोहा । एव खुदा वधमिह वुत्तसव्वअवहारकाला जीवट्ठाणे सादिरेया वत्तव्या । एद वक्खाणमेत्थ पधाणमिदि गेण्हिदव्व ण पुत्तिह्ठ ।

शुक्रा—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यदि ऐसा न माना जाय तो घगस्थानमें अधस्तन और उपरिम विकल्प नहीं था सकता है ।

शुक्रा—खुदावधमें कही गई विष्कभसूचिया सपूर्ण क्यों नहा होती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, इसप्रकारका सुटका उपदेश नहीं पाया जाता है ।

अथवा, यहा जीवट्ठाणमें कही गई विष्कभसूचिया कुछ कम है और खुदावधमें कही गई विष्कभसूचिया सपूर्ण है, क्योंकि, अएरूपके उत्तरोत्तर वर्ग करने पर सौधर्म और पेशान देवोंकी विष्कभसूचीका प्रमाण प्राप्त होता है । उसका (सौधर्मद्विकसअन्धी विष्कभ सूचीका) उसीसे वर्ग करने पर नारक विष्कभसूची प्राप्त होती है । उसका (नारक विष्कभसूचीका) उसीसे वर्ग करने पर भजनवासी देवोंकी विष्कभसूची प्राप्त होती है, इसप्रकार परिवर्तन वर्गस्थान प्रकरणमें कही गई सामान्य विष्कभसूचियोंके अभिप्रायसे अथवा खुदावधमें भी घनधारामें उपन हुई विष्कभसूचियोंके अभिप्रायके पाये जानेसे यह जाना जाता है कि खुदावधमें कही गई विष्कभसूचिया सपूर्ण है ।

शुक्रा—जीवट्ठाणमें कहे गये मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कभसूचियोंके अभिप्रायसे खुदा वधमें कहा गया सामान्य विष्कभसूचियोंका अभिप्राय समान पाया जाना है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, इन दोनों रूपनोंमें द्रव्याधिक नयकी अपेक्षा समानता पाई जाती है । पर्यायाधिक नयका अघट्प्रन करने पर तो नियमसे उन दोनों कथनोंमें विशेषता है ही, क्योंकि, खुदावधके उपसहाररूपसे जीवट्ठाणम कही गई मिथ्यादृष्टि विष्कभ सूचियोंसे सामान्य विष्कभसूचियोंके समान माननेमें विरोध आता है । इसीप्रकार खुदावधमें कहे गये सपूर्ण अवहारकाल जीवट्ठाणमें कुछ अधिक जान लेना चाहिये । यह व्याख्यान यहा पर प्रधान है, इसलिये इसका ग्रहण करना चाहिये, पहलेके व्याख्यानका नहीं ।

सासणसम्माइट्टि-सम्मामिच्छाडट्टि-असंजदसम्माइट्टी ओघ
॥ ६९ ॥

सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु देवगईए इदि च दुवयणमणुवट्टे । एसा दच्च-
ट्टियणयमस्सिऊण परूणणा उत्ता । पज्जवट्टियणयमस्सिऊण ण्देसि परूवण
पुरदो मणिस्तामो ।

सणक्कुमारप्पहुडि जाव सदार सहस्सारकप्पवासियदेवेसु जहा
सत्तमाए पुठवीए णेरइयाणं भंगो ॥ ७० ॥

एतथ जहा इदि युत्ते त जहा इदि एदस्स अत्थो ण वत्तच्चो किं तु उयमत्थे जहा
सदो घेत्तच्चो । जहा सत्तमाए पुठवीए णेरइयाणं पमाण पम्पिद तहा मणक्कुमारादि
देवाण पमाण परूदेव्व । णरि आइरियपरपरागदोउदेसेण तिससपरूणण कस्सामो ।
त जहा—

सणक्कुमार माहिदे जगसेट्ठीए भागहारो सेट्ठीए हेहा एकारसन्नगमूल । वम्ह वम्हो
त्तरकप्पे णवमवग्गमूल । लातव कापिट्ठरूपे सत्तमवग्गमूल । सुक् महासुक्करूपे पचमवग्ग

सासादनसम्यग्दट्टि, सम्यग्मिव्यादट्टि और असयत्तमम्यग्दट्टि मौधर्म ऐशान
कल्पवासी देव सामान्य प्ररूपणाके समान पल्योपमके असरयातवें भाग हैं ॥ ६९ ॥

‘सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु देवगईए’ इन दो शब्दोंकी यहा अनुवृत्ति होती है ।
यहा द्रव्याधिक नयका आश्रय करके यह प्ररूपणा कही है । पर्याधिक नयका आश्रय करके
इनकी प्ररूपणा आगे कहेंगे ।

जिसप्रकार सातवीं पृथिवीमें नारकियाकी प्ररूपणा कही गई है उसीप्रकार
सानत्कुमारसे लेकर अठार और सहस्रार तक कल्पवासी देवोंमें मिव्यादट्टि देवोंकी
प्ररूपणा है ॥ ७० ॥

सूत्रमें ‘जहा’ इसप्रकार कहने पर ‘त जहा’ इसका अर्थ नही कहना चाहिये, किन्तु
यहा उपमारूप अर्थमें ‘जहा’ शब्दका ग्रहण करना चाहिये । इससे यह अभिप्राय हुआ कि
जिसप्रकार सातवा पृथिवीमें नारकियोंका प्रमाण कहा गया है उसीप्रकार सानत्कुमार आदि
देवोंके प्रमाणका कथन करना चाहिये । अर्थ आगे आचार्य परपरासे आये हुए उपदेशके
अनुसार विशेष प्ररूपणा करते हैं । वह इसप्रकार है—

सानत्कुमार और माहेद्र स्वर्गमें जगध्रेणीका भागहार जगध्रेणीके नीचे ग्यारहवा वर्ग
मूल है । प्रथ और प्रहोत्तर कल्पमें जगध्रेणीका भागहार जगध्रेणीका नावा वर्गमूल है । लातव और
कापिट्ठ कल्पमें जगध्रेणीका भागहार जगध्रेणीका सातवा वर्गमूल है । शुक् और महाशुक् कल्पमें

मूल । सदाह सहस्रसारकण्ये चउत्थयग्गमूलं भागहारो हवदि । सासणदीणं पमाणपरूवणा वि सत्तमपुढविपरूवणाए समाणा । विमेषपरूवण पुरदो वत्तइस्सामो ।

आणद-पाणद जाव णवगेवेज्जविमाणवासियदेवेषु मिच्छाइट्ठि-
प्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि ति दव्वपमाणेण केवडिया, पलिदो-
वमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहु-
त्तेण ॥ ७१ ॥

मुहुत्तसदो कालराची चैव, तेण पुध कालग्गहणं ण कदं । दव्वपमाणपरूवणाए चैव अत्यणिच्छओ जादो ति एत्थ सेत्त कालेहि परूवणा ण कदा । 'पलिदोवमस्स असं-
खेज्जदिभागो' इदि सामणेण वुत्ते दव्वपमाणेण सुट्ठु णिच्छओ ण जादो ति तत्थ
णिच्छयउत्पायणट्ठ 'एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण' ति भागहारपरूवणा विहज्ज-
माणपरूवणा च कदा । एत्थ आहरिओवएसमास्तिरुण विसेसणकप्पण पुरदो भणिस्सामो ।

अणुहिस जाव अवराइदविमाणवासियदेवेषु असंजदसम्माइट्ठी
दव्वपमाणेण केवडिया, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि
पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण ॥ ७२ ॥

जगश्रेणीका भागहार जगश्रेणीका पाचवा वर्गमूल है । शतार और सहस्रार फलपमें जगश्रेणीका भागहार जगश्रेणीका चोथा वर्गमूल है । सानत्कुमारसे लेकर सहस्रारतक सासादनसम्यग्दष्टि आदि गुणस्थानवर्ती देवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा भी सातवीं पृथिवीके सासादनसम्यग्दष्टि भादि जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणाके समान है । विशेष प्ररूपणाओं आगे बतलावेंगे ।

आनत और प्राणतसे लेकर नौ त्रैयेक तरु विमानवासी देवोंमें मिव्यादष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दष्टि गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव द्रव्य-
प्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं । इन उपर्युक्त जीव-
राशियोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्तसे पल्योपम अपहृत होता है ॥ ७१ ॥

मुहूर्त शब्द फाल्वाची ही है, इसलिये सूत्रमें पृथक् रूपसे काल पदका ग्रहण नहीं किया । प्रहृतमें द्रव्यप्रमाणके प्ररूपण करनेसे ही अर्थका निश्चय हो जाता है, इसलिये यहाँ पर क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाणके द्वारा प्ररूपणा नहीं की । 'पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं' इसप्रकार सामान्यसे कहने पर द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा अच्छी तरह निश्चय नहीं हो पाता है, इसलिये इस विषयमें निश्चयके उत्पन्न करानेके लिये 'इन जीवराशियोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्तसे पल्योपम अपहृत होता है' इसप्रकार भागहारप्ररूपणा और विभज्यमाणराशिकी प्ररूपणा की । इस विषयमें आचार्योंके उपदेशका आश्रय करके विशेष व्याख्यान आगे कहेंगे ।

अनुदिश विमानसे लेकर अपराजित विमानतक उनमें रहनेवाले असंयतसम्य-

एत्थ असजदसम्माइट्टिअवहरण सेमगुणद्वानाण तत्थामान सूचेदि । ण च सत्त ण परूति जिणा, तेसिमज्जिणत्तप्पसगादो । एत्थ आइरिओवएमेण सच्चदेवगुण-पडिअण्णाण तिसेसपरूण भणिस्सामो । त जहा— देवअसजदसम्माइट्टिअवहारकाल मावलियाए असखेज्जदिभाएण राडिय तत्थेगएउ तम्हि चेन पक्खिउत्ते सोहम्मीसाण-असजदसम्माइट्टिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । कुदो ? उवक्कमणकालभेदादो । तम्हि सखेज्जखेहि गुणिदे मासणसम्माइट्टिअवहारकालो होदि । कुदो ? उवक्कमणकालभेदादो उभयगुण पडिअज्जमाणरामितिससरो वा । तम्हि आवलियाए असखेज्जदिभाएण गुणिदे सण कट्टुमार माहिअसजदसम्माइट्टिअवहारकालो होदि । कुदो ? सुहकम्माहियजीवअहुत्ता भावादो । एव णेयव्व जाण मदार सहस्सरो त्ति । तस्म मासणसम्माइट्टिअवहारकाल-मावलियाए असखेज्जदिभाएण गुणिदे जोडसियदेवअसजदसम्माइट्टिअवहारकालो होदि ।

गृष्टि देव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? पल्योपमके असख्यातवें भाग हैं । इन उपर्युक्त जीवराशियोंके द्वारा अन्तर्गृहर्तसे पल्योपम अपहृत होता है ॥ ७२ ॥

इन अनुदेश आदि विमानोंमें असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिकी प्ररूपणा घटा पर शेष गुणस्थानोंके अभावको सूचित करती है । यदि कोई कहे कि यहा पर शेष गुणस्थानोंके प्रमाणकी प्ररूपणा नहीं की होगी सो घात नहीं है, क्योंकि, जिनदेव विद्यमान अर्धेना प्ररूपण नहीं करते है ऐसा नहीं हो सक्ता, क्योंकि, ऐसा मान लेने पर उन्हें अजिनपनेका प्रसंग आ जाता है । अथ यहा आचार्योंके उपदेशानुसार संपूर्ण गुणस्थानप्रतिपन्न देवोंकी विशेष प्ररूपणाको कहते है । यह इसप्रकार है— देव असयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालको आवलीके असख्यातवें भागसे खडित करके उनमेंसे एक खडको उसी देव असयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालमें मिला देने पर सोधर्म और ऐशानसबधी असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर सौधर्म और ऐशानसबधी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, सम्यग्दृष्टियोंके उपक्रमण कालसे सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके उपक्रमण कालमें भेद है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको सख्यातसे गुणित करने पर साधर्म और ऐशानसबधी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके उपक्रमण कालसे सासादानसम्यग्दृष्टियोंके उपक्रमण कालमें भेद है । अथवा, उक्त दोनों गुणस्थानोंको प्राप्त होनेवाली राशियोंमें विशेषता है । सोधर्म और ऐशान सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर सानत्कुमार और माहेन्द्र असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है क्योंकि, ऊपर शुभ कर्मोंकी बहुलता होनेसे बहुत जीव नहीं पाये जाते है । इसीप्रकार शतार सहस्रार कल्पक ले जाना चाहिये । उन शतार सहस्रार कल्पके सासादनसम्यग्दृष्टिसबधी अवहारकालको आवलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर ज्योतिषी असयतसम्यग्दृष्टि देवोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि,

कुदो ? तत्थ वोग्गाहिदादिमिच्छत्तेग सह उप्पण्णदेवेसु जिणसासणपडिकलेसु बहणं समत्त पडिवज्जमाणजीणणमसभवादो । तम्हि आवलियाए असखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाड्डिअणहारकालो होदि । तम्हि सखेज्जरूपेहि गुणिदे मासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । एत्थ कारणं पुत्र व चत्तव । एवं णणत्तैर भवणवासिचदेवेसु णेयव्वं । कुदो ? मिच्छत्तोच्छाड्डिद्वीसु भूओसम्मदंसणुप्पत्तिसंभवाभावादो । भणवासिपसासणसम्माइट्ठिअवहारकाले आवलियाए असखेज्जदिभाएण गुणिदे आणद पाणदअसजद सम्माइट्ठिअणहारकालो होदि । कुदो ? सुहरुम्माण दीहाऊणं बहणमसभवा । तम्हि सखेज्जरूपेहि गुणिदे आरणच्चुदअसंजदसम्माइट्ठिअणहारकालो होदि । कारणं उपरिम-उपरिमरूपेसु उप्पज्जमाणसुहकम्माहियदीहाउवजीणेहिंतो हेट्ठिमहेट्ठिमरूपेसु थोयपुण्णेण डहरभण्डिदीसु उप्पज्जमाणजीणण बहत्तोत्तलंभादो । होता नि असखेज्जगुणा चैय । कारणं सनीजीभूदमणुसपज्जचरासिम्हि सखेज्जत्तुत्तलंभादो । एव णेयव्व जान उपरिम-उपरिमणेज्जअसजदसम्माइट्ठिअणहारकालो त्ति । तम्हि सखेज्जरूपेहि गुणिदे आणद-

यहा पर ध्युद्ग्राहित आदि मिथ्यात्वके साथ उत्पन्न हुए और जिन शासनके प्रतिकूल देवोंमें सम्यक्त्वको प्राप्त होनेवाले बहुत जीवोंका जभाव है । उन असयतसम्यग्दृष्टि ज्योतिषियों देवोंके अवहारकालको आत्मीके असख्यातवें भागमें गुणित करने पर सम्यग्मिथ्यादृष्टि ज्योतिषियोंका अवहारकाल होता है । इसे सख्यातसे गुणित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि ज्योतिषियोंका अवहारकाल होता है । यहा पर उत्तरोत्तर सख्यातानि या अवहारकालकी वृद्धिके कारणका कथन पहलेके समान कर लेना चाहिये । इसीप्रकार वाणव्यन्तर और भणवासी देवोंमें धर्मसे अवहारकाल ले जाना चाहिये, क्योंकि, जिनकी दृष्टि मिथ्यात्वसे आच्छादित है उनमें बहुत सम्यग्दृष्टियोंकी उत्पत्ति सम्भव नहीं है । भणवासी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आत्मीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर आनत आर प्राणतकत्पके असयत सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, शुभ कर्मगले दीर्घायु जीव बहुत नहीं होते हैं । इस असयतसम्यग्दृष्टिमें ही अवहारकालको सख्यातसे गुणित करने पर आरण और अच्युत कल्पवासी असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, उपरिम उपरिम कल्पोंमें उत्पन्न होनेवाले शुभ कर्मोंकी अधिकतासे दीर्घायुवाले जीवोंसे नीचे नीचेके कल्पोंमें स्तोक पुण्यसे स्तोक भयस्थितिमें उत्पन्न होनेवाले जीव अधिक पाये जाते हैं । नीचे नीचे अधिक जीव होते हुए भी ये असख्यातगुणे ही होते हैं, क्योंकि, धारहत्त कल्पसे लेकर ऊपरके कल्पोंमें जीव मनुष्य राशिसे आकर ही उत्पन्न होते हैं । इसलिये ऊपरके कल्पोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंके लिये मनुष्यराशि धीजीभूत है और मनुष्य राशि सख्यात ही होती है, अन ऊपर ऊपरके कल्पोंसे नीचेके कल्पोंमें जीव असख्यातगुणे हैं । यही धर्म उपरिम उपरिम प्रेयेयकके असयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल तक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम प्रेयेयकके असयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालको सख्यातसे गुणित करने पर आनत और प्राणतके मिथ्यादृष्टियोंका

पाणदमिच्छाइडिअवहारकालो होदि । कुदो ? चिणलिंगं घेत्तूण दव्वसजमेण द्विदसजदाण
 चइण मणुसेसु अणुत्तलभादो । तम्मिह सखेज्जरूपेहि गुणिदे आरणच्चुदमिच्छाइडिअवहार
 कालो होदि । एत्थ कारण पुच्च व वत्तव्व । एव णेयव्व जाव उवरिमउवरिमगेवज्ज
 मिच्छाइडिअवहारकालो ति । तम्मिह सखेज्जरूपेहि गुणिदे णवाणुदिमअसजदमम्माइडि
 अवहारकालो होदि । तम्मिह सखेज्जरूपेहि गुणिदे अणुत्तरविजय णज्जयत-जयत अपराइद
 विमाणमामियअसजदसम्माइडिअवहारकालो होदि । तमात्तलि माए अमखेज्जदिभाणण गुणिदे
 आणद पाणदसम्मामिच्छाइडिअवहारकालो होदि । कुदो ? उवक्कमण नीवाण थोत्तादो ।
 तम्मिह सखेज्जरूपेहि गुणिदे आरणच्चुदसम्मामिच्छाइडिअवहारकालो होदि । एव णेयव्व
 जाव उवरिमउवरिमगेवज्जसम्मामिच्छाइडिअवहारकालो ति । तम्मिह सखेज्जरूपेहि गुणिदे
 आणद पाणदसासणसम्माइडिअवहारकालो होदि । कुदो ? थोत्तुत्तरुण कालत्तादो । तम्मिह
 सखेज्जरूपेहि गुणिदे आरणच्चुदसासणसम्माइडिअवहारकालो होदि । एव णेयव्वं जाव
 उवरिमउवरिमगेवज्जसासणसम्माइडिअवहारकालो ति । एदेहि अवहारकालेहि खडि

अवहारकाल होता है, क्योंकि, जिनलिंगको स्वीकार करके द्रव्यसयमके साथ स्थित हुए
 बहुतसे सयतोंका मनुष्योंमें सद्भाव नहीं पाया जाता है। आनत और प्राणतसबन्धी मिथ्यादृष्टि
 अवहारकालको सत्यातसे गुणित करने पर आरण जोर अच्युतके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल
 होता है। यद्वा कारण पहलेके समान कहना चाहिये, अर्थात् जिनलिंगको स्वीकार करके
 द्रव्यसयमके साथ बहुतसे मनुष्य नडा होते हैं, इसलिये आरण और अच्युतमें धम मिथ्यादृष्टि
 पाये जाते हैं। इसीप्रकार उपरिम उपरिम प्रवेयकके मिथ्यादृष्टि अवहारकाल तक ले जाना
 चाहिये। उपरिम उपरिम प्रवेयकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालको सत्यातसे गुणित करने पर
 नौ अनुदिशोंके असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे सत्यातसे गुणित करने
 पर विजय, वैजयत, जयन्त और अपराजित इन चार अनुत्तर विमानवासी अस
 यतसम्यग्दृष्टिपारा अवहारकाल होता है। इसे अवलोकके असत्यातसे भागसे
 गुणित करने पर आनत और प्राणतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है,
 क्योंकि, यद्वा पर सम्यग्मिथ्यात्वके साथ उत्पन्न होनेवाले जीव थोड़े हैं। आनत और प्राणतके
 सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको सत्यातसे गुणित करने पर आरण और अच्युतके
 सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसीप्रकार उपरिम उपरिम प्रवेयकके
 सम्यग्मिथ्यादृष्टिसयर्थी अवहारकालतक ले जाना चाहिये। उपरिम उपरिम प्रवेयकके
 सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालको सत्यातसे गुणित करने पर आनत और प्राणतके सासादन
 सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टियोंका उपक्रमणकाल स्नोक
 है। आनत और प्राणतके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालको सत्यातसे गुणित करने पर आरण
 और अच्युतके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसीप्रकार उपरिम उपरिम

१ देवाण अवहाण इति अमक्षेण ताणि अवहरिय । तत्पत्र य पवित्रत सोहमीसाण अवहाण ॥ सोहम

दादो जाणिय वत्तवा । सव्वदेवगुणपडिपण्णाण ओघमगो इदि भणिय आणदादि-
उपरिमगुणपटिपण्णाणं पलिदोमस्स असखेज्जदिभागो ' एदेहि पलिदोवममवहिरदि
अतोमुहुत्तेण ' इदि सिसेसिय किमइ वुच्चदे ? एवं भणतस्स अहिप्पाओ परूविज्जदे ।
त जहा — ओघमगो इच्छेदेण आणदुत्तादो सुत्तमिदमणत्थयं । अणत्थय च जाणावयं
होदि । किमिदेण जाणाविज्जदि ? मोहम्मअसजदसम्माइड्ढिअणहारकालो आवलियाए
असखेज्जदिभागो । तत्थतणसइयसम्माइड्ढीणमणहारकालो सखेज्जावलियमेत्तो । एदे दो
वि अणहारकाले मोत्तूण अससेसगुणपडिपण्णाणं सव्वे अणहारकाला असखेज्जापलिमेत्ता
विउल्लववाइणो अतोमुहुत्तसहेण वुच्चति चि जाणाविदि, तदो णणत्थयमिद सुत्त ।

प्रेयेयकरके सासादनसम्पग्दष्टि अणहारकालतक ले जाना चाहिये । इन अणहारकालोंके द्वारा
खंडित आदिकका कथन जान कर करना चाहिये ।

सर्व गुणस्थानप्रतिपन्न देवोंका प्रमाण सामान्य प्ररूपणके समान है ऐसा कथन
करके 'गुणस्थानप्रतिपन्न इन आनत आदि देवोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्त कालसे पर्योपम अपहृत
होता है' इतनेमे विशेषित करके गुणस्थानप्रतिपन्न आनतादि देवोंका प्रमाण पर्योपमके
असत्यातर्क भागप्रमाण किसलिये कहा । आगे ऐसा कथन करनेवालेके अभिप्रायका प्ररूपण
करते हैं । यह इसप्रकार है—

सर्व गुणस्थानप्रतिपन्न देवोंका प्रमाण ' सामान्य प्ररूपणके समान है ' इतनेमात्रसे
संघटित होनेके कारण यह सूत्र अनर्थक है, फिर भी जो सूत्र अनर्थक होता है वह किसी
स्वतंत्र नियमका श्रापक होता है ।

शुद्धा—इससे क्या ज्ञापन होता है ?

समाधान—सौधर्म असघतसम्पग्दष्टियोंका अणहारकाल आवलीके असत्यातर्क भाग
है । पर्याके क्षायिक सम्पग्दष्टियोंका अणहारकाल सत्यात आवलीमात्र है । इन दो अणहार
कालोंको छोड़कर शेष गुणस्थानप्रतिपन्नोंके सपूर्ण अणहारकाल असत्यात आवलीमात्र हैं,
अणहारकालोंकी विपुलताकी माननेवाले आचार्य अन्तर्मुहूर्त शत्रुसे ऐसा कहते हैं, यह इस
सूत्रसे ज्ञापित होता है, इसलिये यह सूत्र अनर्थक नहीं है ।

साण्हारमणसेण य सखरूवसगुणिदि । उवो अस नद निरपय-साठणसम्माण अब्बारा ॥ सोहम्मादासार जोइति वण
मरण निरिय पुण्हसु । अविरेद सिस्से सख सखावत्तगुण सासने दनं ॥ चरमधरानाहो आणदमम्मा आरणप्यहुदि ।
अंतिमविरेदं सम्माणमणसखसगुणहारा ॥ तच्चो ताणुत्तणं सामाणजुदिसाण विजयादि । सम्माण सखसुणो
आणदविरे अर्धसुणो ॥ तच्चो सखेज्जसुणो सासणसम्माण होदि ससुणो । उणट्टाणे कमवो पणधम्मसट्टवद्दा-
सेदिदी ॥ गो मी ११५-१७०.

सर्वद्विसिद्धिविमाणवासियदेवा दव्वपमाणेण केवडिया,
संखेज्जा ॥ ७३ ॥

मणुसिणीरासीदो तिउणमेचा हवति ।

भागभाग वचइस्सामो । सच्चदेवरासिमसखेज्जखडे कए तन्व बहुग्वडा जोइ
सियदेवमिच्छाइट्ठी होति । सेसमसखेज्जखडे कए तत्थ बहुखडा वाणवेतरमिच्छाइट्ठी
होति । सेसमसखेज्जखडे कए बहुभागा सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठी होति । एव जाव
सदार सहस्सारमिच्छाइट्ठी ति । सेसमसखेज्जखडे कए बहुभागा सोहम्मीसाणअमनद-
सम्माइट्ठी होति । सेस सखेज्जखडे कए बहुभागा सम्मामिच्छाइट्ठीणो होति । सेसम
सखेज्जखडे कए बहुभागा सामणसम्माइट्ठीणो होति । एउ सणकुमार-माहिंदप्पहुडि
जाव सहस्सारो ति णेयव्व । तदा जोइसिय वाणवेतर भरणवासिएत्ति णेयव्व । पुणो
सेसस्स सखेज्जखडे कए बहुखडा आणद-पाणदअसजदसम्माइट्ठीणो होति । सेसस्स
सखेज्जखडे कए बहुखडा आरणच्चुदअमजदसम्माइट्ठीणो होति । एव णेयव्व

सर्वाधसिद्धि विमानवासी देव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? सरयात हैं ॥७३॥

सर्वाधसिद्धि विमानवासी देव मनुष्यनियोंके प्रमाणसे तिगुणे हैं ।

आगे भागाभागको बतलाते हैं— सर्व देवराशिके असख्यात खंड करने पर उनमेंसे
बहु भागप्रमाण ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर
उनमेंसे बहुभाग वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर
उनमेंसे बहुभागप्रमाण सौधर्म और पेशान करणके मिथ्यादृष्टि देव हैं । इसीप्रकार शतार और
सहस्रार करणके मिथ्यादृष्टि देवों तक ले जाना चाहिये । शतार और सहस्रारके मिथ्यादृष्टि
प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके असख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण
सौधर्म और पेशान करणके असयतसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असख्यात खंड
करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण यहाँके सम्यग्मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असख्यात
खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण यहाँके सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं । इसीप्रकार
सानुकुमार और माहेन्द्र करणसे लेकर सहस्रार करणतक ले जाना चाहिये । सहस्रार करणसे
आगे ज्योतिषी, वाणव्यन्तर और भरणवासी देवों तक यही क्रम ले जाना चाहिये । पुनः
भवनवासी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके सख्यात
खंड करने पर बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके असयतसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक भागके
सख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आरण और अच्युतके असयतसम्यग्दृष्टि देव हैं ।

जावुवरिमउपरिमगेउज्जो ति । सेमस्म सखेज्जखडे कए बहुभागा आणद-पाणदमिच्छा-
इट्ठिणो होंति । सेमस्स सखेज्जखडे कए बहुभागा आरणच्चुदमिच्छाइट्ठिणो होंति । एवं
णेयच्च जावुवरिमउपरिमगेउज्जो ति । सेमस्म सखेज्जखडे कए बहुभागा अणुदिस-
असजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेमसखेज्जखडे कए बहुभागा अणुत्तरनिजय-वइजयत जयंत-
अपराइदअसदसम्माइट्ठिणो होंति । सेमं सखेज्जखडे कए बहुभागा आणद-पाणदसम्मा-
मिच्छाइट्ठिणो होंति । सेस सखेज्जखडे कए बहुभागा आरणच्चुदसम्मामिच्छाइट्ठिणो
होंति । एव णेयच्चं जावुवरिमउपरिमगेउज्जो ति । सेस सखेज्जखडे कए बहुभागा
आणद पाणदसासणसम्माइट्ठिणो होंति । सेम सखेज्जखडे कए बहुभागा आरणच्चुद-
सासणसम्माइट्ठिणो होंति । एउ णेयच्च जावुवरिममज्झिमगेउज्जसामणसम्माइट्ठि ति ।
सेमसखेज्जखडे कए बहुभागा उपरिमउपरिमगेउज्जसासणसम्माइट्ठिणो होंति । एय-
खंड सव्वड्ढसिद्धिअमजदसम्माइही होंति । एउ भागाभागं समचं ।

इसीप्रकार उपरिम उपरिम प्रवेयक तक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम प्रवेयकके अस-
यतसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाण आनेके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके सत्यात खंड करने पर
बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके मिथ्यादृष्टि देव है । शेष एक भागके सत्यात खंड करने
पर उनमेंसे बहुभाग आरण और अच्युतके मिथ्यादृष्टि देव है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम
प्रवेयकतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम प्रवेयकके मिथ्यादृष्टिप्रमाणके अनन्तर
जो एक भाग शेष रहे उसके सत्यात खंड करने पर बहुभाग अनुदिशके
असयतसम्यग्दृष्टि होते हैं । शेषके असत्यात खंड करने पर बहुभाग विजय, यैजयत,
जयन्त और अपराजित इन चार अनुत्तर विमानोंके असयतसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेषके
सत्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके सम्यग्मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक
भागके सत्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आरण और अच्युतके सम्यग्मिथ्या-
दृष्टि देव है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम प्रवेयक तक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम
प्रवेयकके सम्यग्मिथ्यादृष्टियाके प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके सत्यात खंड करने
पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक भागके
सत्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आरण और अच्युतके सासादनसम्यग्दृष्टि देव
है । इसीप्रकार उपरिम मध्यम प्रवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाण आने तक ले जाना
चाहिये । उपरिम मध्यम प्रवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग
शेष रहे उसके असत्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण उपरिम उपरिम प्रवेयकके
सासादनसम्यग्दृष्टि देव है । शेष एक खंडप्रमाण सर्वार्थसिद्धिके असयतसम्यग्दृष्टि देव हैं । इस
प्रकार भागाभाग समान हुआ ।

अप्याबहुअ तिग्गिह, सत्थाण परत्थाण सव्वपरत्थाण चेदि । सत्थाणे पयद । सव्वत्थोरो देवमिच्छाइड्डिअणहारकालो । विक्खमसूई अससेज्जगुणा । को गुणगारो ? विक्खमसूईए अससेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअणहारकालो । अहमा सेठीए अससेज्जदिभागो अससेज्जाणि सेट्ठिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? अणहारकाल वग्गो । अहमा अससेज्जाणि घणगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? पण्णाट्टिमहस्स पचमय उत्तीसग्गमसूचिअगुलमेत्ताणि । सेठी अससेज्जगुणा । को गुणगारो ? अणहारकालो । दव्वमससेज्जगुण । को गुणगारो ? सगविवक्खमसूई । पदरमससेज्जगुण । को गुणगारो ? सगअणहारकालो । लोमो अससेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेठी । सासणादीण मूलोपमग्गो । एव जोइसिय-णारणैतराण पि णेयव्व । भणणवासियाण सत्थाणे सव्वत्थोवा मिच्छाइड्डि विक्खमसूई । अणहारकालो अससेज्जगुणो । को गुणगारो ? मगअणहारकालस्स अससे ज्जदिभागो । को पडिभागो ? विक्खमसूई । अहवा सेठीए अससेज्जदिभागो अससेजाणि सेट्ठिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो । विक्खमसूचिवग्गो । अहवा घणगुल । सेठी

अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है, स्वस्थान अल्पबहुत्व, परस्थान अल्पबहुत्व और सर्वपरस्थान अल्पबहुत्व । इनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्वमें प्रकृत विषयका निरूपण करते ई-देव मिथ्यादाष्टि अवहारकाल सबसे स्तोक है । उन्हींकी विष्कमसूची अवहारकालसे असख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कमसूचीका असख्यातवा भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा, जगश्रेणीका असख्यातवा भाग गुणकार है, जो जगश्रेणीके असख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अणहारकालका वर्ग प्रतिभाग है । अथवा, असख्यात घनागुल गुणकार है । के कितने हैं ? पैंसठ हजार पाचसौ छत्तीसके धर्गरूप सूत्र्यगुलप्रमाण है । देव विष्कमसूचीसे जगश्रेणी असख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । जगश्रेणीसे मिथ्यादाष्टि देवोंका प्रमाण असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कमसूची गुणकार है । देव मिथ्यादाष्टि द्रव्यसे जगप्रतर असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे घनलोक असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । देव सासा दनसम्यग्दृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व सामान्य प्ररूपणके समान है । इसीप्रकार ज्योतिषी और घाणव्यन्तरोंका भी स्वस्थान अल्पबहुत्व ले जाना चाहिये । भवनवासियोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वमें सबसे स्तोक मिथ्यादाष्टि विष्कमसूची है । उससे अणहारकाल असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने अवहारकालका असख्यातवा भाग गुणकार है प्रतिभाग क्या है ? विष्कमसूची प्रतिभाग है । अथवा, जगश्रेणीका असख्यातवा भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपनी विष्कमसूचीका वर्ग प्रतिभाग है । अपना घनागुल गुणकार है । जगश्रेणी अवहारकालसे असख्यातगुणी है । गुणकार क्या

असखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविक्रममसूई । द्वयमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ?
त्रिक्रममसूई । पदरमसखेज्जगुण । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असखेज्जगुणो ।
को गुणगारो ? सेढी । सासणादीण मूलोधमगो । सोहम्मादि जान उपरिमगेवज्जो चि
सत्थाणप्पावहुग जाणिय णेयव्वं ।

परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोत्रो असजदसम्माइड्डिअवहारकालो । एवं णेयव्व जाव
पलिदोवमो चि । तदो उपरि मिच्छाइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ?
सगअवहारकालस्स असखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवमो । अहवा पदरंगुलस्स
असखेज्जदिभागो असखेज्जाणि सूचिअगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? सूचिअंगुलस्स
असखेज्जदिभागमेत्ताणि । को पडिभागो ? पलिदोवमस्स सखेज्जदिभागो । उवरि
सत्थाणमगो । भणणासियाण सव्वत्थोत्रो असजदसम्माइड्डिअवहारकालो । एवं णेयव्वं
जाव पलिदोवमो चि । तदो उवरि भणणासियाणमिच्छाइड्डिअवहारकालो असखेज्जगुणा ।
को गुणगारो ? सगविक्रममसूईए असखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवमो । अहवा
पदरंगुलस्स असखेज्जदिभागो । असखेज्जाणि सूचिअगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? सूचि-
अगुलपढमवग्गमूलस्स असखेज्जदिभागमेत्ताणि । को पडिभागो ? पलिदोवमो । उवरि

है ? अपनी विष्कमसूची गुणकार है । उन्हींका द्वय जगधेणीसे असख्यातगुणा है । गुणकार
क्या है ? विष्कमसूची गुणकार है । द्वयसे जगप्रतर असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगधेणी
गुणकार है । सासादतसम्यग्दष्टि आदिका मूलोधके समान स्वस्थान अल्पबहुत्व है । सौधर्मसे
लेकर उपरिम प्रेयेयकतर स्वस्थान अल्पबहुत्व जान कर ले जाना चाहिये ।

अथ परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— असयतसम्यग्दष्टियोंका अवहारकाल
सबसे स्तोक है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमके
ऊपर मिथ्यादष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
अपने अवहारकालका असख्यातवा भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपम प्रतिभाग
है । अथवा, प्रतरागुलका असख्यातवा भाग गुणकार है जो असख्यात सूच्यगुलप्रमाण है ।
असख्यात सूच्यगुलोंका प्रमाण कितना है ? सूच्यगुलका असख्यातवा भाग उनका प्रमाण है ।
प्रतिभाग क्या है ? पल्योपमका सख्यातवा भाग प्रतिभाग है । इसके ऊपर अपने स्वस्थान
अल्पबहुत्वके समान है । भवनवासियोंके परस्थानका ध्यान करने पर असंयत-
सम्यग्दष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये ।
पल्योपमके ऊपर भवनवासी मिथ्यादष्टि विष्कमसूची असख्यातगुणी है । गुणकार
क्या है ? अपनी विष्कमसूचीका असख्यातवा भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपम
प्रतिभाग है । अथवा, प्रतरागुलका असख्यातवा भाग गुणकार है, जो असख्यात सूच्यगुल
प्रमाण है । ये नितने हैं ? सूच्यगुलके प्रथम धर्ममूलके असख्यातवै भागप्रमाण हैं । प्रतिभाग क्या
है ? पल्योपम प्रतिभाग है । इसके ऊपर वाणव्यन्तरोंसे लेकर उपरिम उपरिम प्रेयेयकतक अपने

सगसत्याणभगो (वाणरंतरादि जात्र उवरिमउपरिमगेत्रओ चि ।) उवरि परत्याण णत्थि, तत्थ सेसगुणद्वाणणमभावादो । सव्वहे सत्याण पि णत्थि एगपदत्थादो ।

सव्वपरत्याणे पयद । सव्वत्थोवा सव्वट्टसिद्धिविमाणनासियदेवा । सोहम्मीसाण असजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आणलियाए असखेज्जदि-भागस्त सखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सव्वट्टसिद्धिदेवसम्मादिट्ठि ति । तत्थेव सम्मा-मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो सखेज्जगुणो । तदो सणक्कुमार माहिंदअसजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असखेज्जगुणो । एत्र णेयव्व जाव सदर सहस्मारेत्ति । तदो जोइसिय वाणरंतर-भरणनासियाण पि कमेण णेयव्व । भवणनासिय

स्वस्थानके समान हे । उपरिम उपरिम प्रवेयकके ऊपर परस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता हे, क्योंकि, घटा पर शेष गुणस्थान नहा पाये जाते है । सर्वार्थसिद्धिमें एक पदार्थ होनेसे स्वस्थान अल्पबहुत्व भी नहीं हे ।

निशेपार्थ—प्रतियोंमें देवोंके स्वस्थान ओर परस्थान अल्पबहुत्वके पाठ गडबड और कुछ छूट हुए प्रतीत होते है । बहुत कुछ विचारके पश्चात् दूसरे प्रकरणोंके अल्पबहुत्वके विभागानुसार यहा भी उन्हें व्यवस्थित करनेका प्रयत्न किया गया है । प्रतियोंमें पहले सामान्य देवोंका स्वस्थान ओर परस्थान अल्पबहुत्व कहकर अनंतर इसी प्रकार घाणव्यन्तर और ज्योतिपियोंका हे, ऐसा कहा है । तदनन्तर भवनवासियाका स्वस्थान और परस्थान अल्पबहुत्व कह कर सौधर्मादि उपरिम उपरिम प्रवेयकतक स्वस्थान अल्पबहुत्वको समझकर लगा लेनेकी सूचना की हे । अन तर अनुदिशादिमें परस्थानके अभावका कारण और सर्वार्थसिद्धिमें दोनोंके अभावका कारण बतलाया है ।

इन अल्पबहुत्वोंको व्यवस्थित कर देने पर भी सौधर्मादि उपरिम उपरिम प्रवेयकतक परस्थानकी कोई व्यवस्था नहीं पाई जाती है । अनुदिशादिमें परस्थानके अभावका कारण बतलाया है, पर स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है । इसे देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि यहा कुछ पाठ भी छूट गया है ।

अथ सर्व परस्थान अल्पबहुत्वमें प्रवृत्त विषयको बतलाते हे— सर्वार्थसिद्धि विमान वासी देव सपसे स्तोत्र है । उनसे सौधर्म ओर पेशान कल्पके असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । गुणकार क्या हे ? आयलीके असख्यातमें भागका सख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? सर्वार्थसिद्धिके सम्यग्दृष्टि देवोंका प्रमाण प्रतिभाग है । यहाँ पर सम्यग्मिध्यादृष्टियोंका अवहारकाल असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असख्यातगुणा है । सम्यग्मिध्यादृष्टियोंके अवहारकालसे सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सख्यातगुणा है । सौधर्म और पेशान कल्पके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे सानत्कुमार और माहेन्द्र कल्पके असयतसम्यग्दृष्टियाका अवहारकाल असख्यातगुणा है । इसीप्रकार शतार और सहस्रार कल्पतक ले जाना चाहिये । शतार और सहस्रार कल्पके आगे ज्योतिषी, घाणव्यन्तर और भवनवासियोंका भी क्रमसे ले जाना चाहिये ।

सासणाण अवहारकालादो आणद-पाणदअसंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो असखेज्जगुणो । तदो आरणच्चुदअमजदसम्माइड्ढिअवहारकालो सखेज्जगुणो । एव णेयव्वं जाव उवरिम उवरिमगेज्जअसजदसम्माइड्ढिअवहारकालो चि । तदो आणद-पाणदमिच्छाइड्ढिअवहारकालो संखेज्जगुणो । तदो आरणच्चुदमिच्छाइड्ढिअवहारकालो सखेज्जगुणो । एव णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेज्जो चि । तदो अणुदिसअसजदसम्माइड्ढिअवहारकालो संखेज्जगुणो । तदो अणुत्तरविजय-उज्जयत जयंत अवराइदअसजदसम्माइड्ढिअवहारकालो सखेज्जगुणो । तदो आणद पाणदसम्माभिच्छाइड्ढिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तदो आरणच्चुदसम्मामिच्छाइड्ढिअवहारकालो सखेज्जगुणो । एव णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेज्जो चि । तदो आणद पाणदसासणसम्माइड्ढिअवहारकालो सखेज्जगुणो । तदो आरणच्चुदसासणसम्माइड्ढिअवहारकालो सखेज्जगुणो । एव णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेज्जो चि । तदो उवरि तस्सेव दव्वमसखेज्जगुण । उवरिममज्झिमसासणसम्माइड्ढिदव्वं सखेज्जगुणं । तदो उवरिमहेट्ठिमसासणसम्माइड्ढिदव्वं सखेज्जगुणं । एव णेयव्वं

भनतवासी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे आनत और प्राणतके असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । उससे आरण ओर अच्युतके असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सख्यातगुणा है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम प्रवेयकके असयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम प्रवेयकके असयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे आनत और प्राणतके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल सख्यातगुणा है । इससे आरण और अच्युतके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल सख्यातगुणा है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम प्रवेयकके ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम प्रवेयकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे अनुद्विषोंके असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सख्यातगुणा है । इससे विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित इन चार अनुत्तर विमातवासी असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सख्यातगुणा है । इससे आनत और प्राणतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । इससे आरण और अच्युतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल सख्यातगुणा है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम प्रवेयकके ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम प्रवेयकके सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे आनत और प्राणतके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सख्यातगुणा है । इससे आरण ओर अच्युतके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सख्यातगुणा है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम प्रवेयकके ले जाना चाहिये । तदनन्तर उपरिम उपरिम प्रवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालके ऊपर उसी उपरिम उपरिम प्रवेयकका सासादनसम्यग्दृष्टि द्रव्य असख्यातगुणा है । इससे उपरिम मध्यम प्रवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य सख्यातगुणा है । इससे उपरिम अधस्तन प्रवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य है । इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोमरूपसे जयतक सौधसं और कल्पके

अवहारकालपडिलोमेण जाव सोहम्मीसाणअसखेज्जसम्माइडिद्वय पच ति । तदो पलि दोरमसखेज्जगुण । तदो उवरि सोहम्मीसाणपिक्खमसूची असखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगपिक्खमसूचीए असखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोरमपडिभागो । अहवा सूचिअगुलपढमवग्गमूलस्स असखेज्जदिभागो असखेज्जाणि विदियग्गमूलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? तदियग्गमूलस्स असखेज्जदिभागमेत्ताणि । को पडिभागो ? पलि दोरमपडिभागो । भरणवासियमिच्छाइडिपिक्खमसूची असखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पदरगुलम्म असखेज्जदिभागो असखेज्जाणि सूचिअगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? तदियवग्गमूलमेत्ताणि । को पडिभागो ? सोहम्मीमाणमिच्छाइडिपिक्खमसूची व । मिच्छाइडिअवहारकालो असखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सूचिअगुलस्स असखेज्जदिभागो सखेज्जाणि सूचिअगुलपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? भरणवासियमिच्छाइडि पिक्खमसूची पडिभागो । जोइसियदेवमिच्छाइडिअवहारकालो निसेसाहिओ । केरडिओ निसेसो ? पदरगुलम्म सखेज्जदिभागो । गणपंतरमिच्छाइडिअवहारकालो सखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सखेज्जा समय । सणक्खुमार माहिंदमिच्छाइडिअवहारकालो असखेज्जगुणो ।

सम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य प्राप्त होवे तयतक ले जाना चाहिये । सौधर्म और पेशान रूपके भसयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे पद्योपम असख्यातगुणा है । पद्योपमके ऊपर सौधर्म और पेशान रूपकी मिथ्यादृष्टि विष्कमसूची असख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कमसूचीका असख्यातता भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पद्योपम प्रतिभाग है । अथवा, सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलका असख्यातता भाग गुणकार है जो सूच्यगुलके असख्यात द्वितीय वर्गमूलप्रमाण है । सूच्यगुलके उन असख्यात द्वितीय वर्गमूलोंका प्रमाण कितना है ? तीसरे वर्गमूलके असख्यातता भाग है । प्रतिभाग क्या है ? पद्योपम प्रतिभाग है । सौधर्म और पेशान रूपके मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कमसूचीसे भवननासी मिथ्यादृष्टि विष्कमसूची असख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? प्रतरागुलका असख्यातता भाग गुणकार है जो असख्यात सूच्यगुलप्रमाण है । उन असख्यात सूच्यगुलोंका प्रमाण कितना है ? तृतीय वर्गमूलमात्र है । प्रतिभाग क्या है ? सौधर्म और पेशान रूपकी मिथ्यादृष्टि विष्कमसूचीके प्रतिभागके समान प्रतिभाग है । सामान्य देव मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सूच्यगुलके असख्यातता भाग गुणकार है जो सूच्यगुलके सख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? भवनवासियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कमसूची प्रतिभाग है । इम देव मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे ज्योतिषी देवोंके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल विशेष अधिक है । कितना विशेष है ? प्रतरागुलका सख्यातता भाग विशेष है । ज्योतिषियोंके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे धाणव्यतरोंके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल सख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सख्यात समय गुणकार है । धाणव्यतर मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे सणक्खुमार और माहेद रूपके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । गुणकार

को गुणगारो ? सेट्टिणकारसवग्गमूलस्स अमसेज्जदिभागो अससेज्जाणि वारसवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? वाणवेंतरमिच्छाडिट्टिअनहारकालो पडिभागो । तस्सुवरि उम्ह-उम्होत्तर-मिच्छाडिट्टिअनहारकालो अससेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेट्टिणमवग्गमूलस्स अमसेज्जदिभागो अससेज्जाणि दसमवग्गमूलाणि । तातव काविट्ठमिच्छाडिट्टिअनहारकालो अससेज्जगुणो । को गुणगारो ? सत्तमवग्गमूलस्स अससेज्जदिभागो अससेज्जाणि अट्टम-वग्गमूलाणि । सुक्क-महासुक्कमिच्छाडिट्टिअनहारकालो अससेज्जगुणो । को गुणगारो ? पचमवग्गमूलस्स अससेज्जदिभागो अमसेज्जाणि छट्टमवग्गमूलाणि । सदार सहस्सार-मिच्छाडिट्टिअनहारकालो अससेज्जगुणो । को गुणगारो ? पंचमवग्गमूल । तदो सदार-सहस्सारद्वयमसेज्जगुण । को गुणगारो ? सगद्वयस्स अमसेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालपडिभागो । एव णेयव पडिलोमेण जाय सणक्कुमार माहिंदमिच्छा-डिट्टिवमिदि । तस्सुवरि वाणवेंतरमिच्छाडिट्टिविक्रमसई अससेज्जगुणा । को गुणगारो ? तस्सेव विक्रमसईए अससेज्जदिभागो एकारसवग्गमूलस्स अससेज्जदिभागो अससेज्जाणि

क्या है ? जगश्रेणीके ग्यारहवें वर्गमूलका असख्यातवा भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असख्यात बारहवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? वाणवन्तर मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल प्रतिभाग है । सानत्कुमार और माहेन्द्रके मिथ्यादृष्टि अवहारकालके ऊपर ब्रह्म और ब्रह्मोत्तर मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके नौवें वर्गमूलका असख्यातवा भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असख्यात दशम वर्गमूलप्रमाण है । ब्रह्मद्विकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालमे लान्तव और कापिष्ठके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके सातवें वर्गमूलका असख्यातवा भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असख्यात आठवें वर्गमूलप्रमाण है । ला तवाट्टिकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे शुक्र और महाशुक्रके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके पाचवें वर्गमूलका असख्यातवा भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असख्यात छठवें वर्गमूलप्रमाण है । शुक्रद्विकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे शतार और सहस्रारके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका पाचवा वर्गमूल गुणकार है । शतारद्विकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे शतार और सहस्रारका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने द्रव्यका असख्यातवा भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है । इसीप्रकार प्रतिलोमरुमसे सानत्कुमार और माहेन्द्र कस्से मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाण आने तक ले जाना चाहिये । सानत्कुमारद्विकके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर वाणवन्तर मिथ्यादृष्टि विष्णुसूची असख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? उदों वाणवन्तर मिथ्यादृष्टियोंकी विष्णुसूचीका असख्यातवा भाग गुणकार है । शथवा, जगश्रेणीके ग्यारहवें वर्गमूलका असख्यातवा भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके

वारसत्रगमूलाणि वा । को पडिभागो ? सणकजुमार माहिदमिच्छाद्विद्व्यपडिभागो । जोइसियमिच्छाद्विद्विक्रमभसई ससेज्जगुणा । को गुणगारो ? संसेज्जसमया । देव मिच्छाद्विद्विक्रमभसई विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? ससेज्जरूपखडिदएयखडमेत्तेण । भवणवासिमिच्छाद्विद्विअपहारकालो अससेज्जगुणो । को गुणगारो ? पुच्च भणिदो । सोहम्मीमाणमिच्छाद्विद्विअपहारकालो अमसेज्जगुणो । को गुणगारो ? पुच्च भणिदो । सेढी अससेज्जगुणा । को गुणगारो ? विक्रमभसई । तस्सेव दच्चमससेज्जगुण । को गुणगारो ? सगविक्रमभसई । भणजासियमिच्छाद्विद्व्यमससेज्जगुण । को गुणगारो ? पुच्च भणिदो । वाणवेंतरमिच्छाद्विद्व्यमससेज्जगुण । को गुणगारो ? सेढीए अससेज्जदिभागो अससेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? भवण वासिभिक्रमभसचिगुणिदसगअपहारकालपडिभागो । जोइसियमिच्छाद्विद्व्य ससेज्ज गुण । को गुणगारो ? ससेज्जसमया । देवमिच्छाद्विद्व्य विसेसाहिय । केत्तियमेत्तेण ? ससेज्जरूपखडिदएयखडमेत्तेण । पदरमससेज्जगुण । को गुणगारो ? अपहारकालो । लोगो

असख्यात धारद्वयें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? सानत्तुमार और माहेंद्र कल्पके मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण प्रतिभाग है । वाणव्यंतर मिथ्यादृष्टि विष्कभसूचीसे ज्योतिषियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कभसूची सख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? सख्यात समय गुणकार है । ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि विष्कभसूचीसे देव मिथ्यादृष्टि विष्कभसूची विशेष अधिक है । कितनेमात्रसे अधिक है । ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि विष्कभसूचीको सख्यातसे खटित करके जो एक खड लब्ध आवे तमात्र विशेषसे अधिक है । देव मिथ्यादृष्टि विष्कभसूचीसे भवनवासी मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पहले कह आवे हैं । भवनवासी मिथ्यादृष्टि अपहारकालसे सौधर्म और पेशान कल्पके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पहले कह आवे ह । सौधर्म और पेशान कल्पके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे जगध्रेणी असख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? विष्कभसूची गुणकार है । जगध्रेणीसे उदा सौधर्म कल्पके मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कभसूची गुणकार है । सौधर्म और पेशान कल्पके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे भवनवासियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पहले कह आवे ह । भवनवासी मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे वाणव्यंतर मिथ्यादृष्टि द्रव्य असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पहले कह आवे ह जो जगध्रेणीके असख्यातयें भाग है । जिस जगध्रेणीके असख्यातयें भागका प्रमाण जगध्रेणीके असख्यात प्रथम वर्गमूल है । प्रतिभाग क्या है ? भवनवासी मिथ्यादृष्टि विष्कभसूचीसे अपने अवहारकालको गुणित करके जो लब्ध आवे उतना प्रतिभाग है । वाणव्यंतर मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण सख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सख्यात समय गुणकार है । ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे देव मिथ्यादृष्टि द्रव्य विशेष अधिक है । कितनेमात्रसे अधिक है ? सख्यातमे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणके खटित करने पर उनमेंसे एक खड

अमखेज्जगुणो ? को गुणगारो ? सेदी ।

चउगइभागाभागं वचइसामो । तं जहा- सखजीवगसिमणंतखंडे कए तत्थ बहुखडा एइदिय-विगलिंदिया होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा सिद्धा होंति । सेसम-सखेज्जखंडे कए बहुखंडा पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्ता होंति । सेसं सखेज्जखंडे कए बहुखडा पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तमिच्छाइड्डिणो होंति । सेस सखेज्जखंडे कए बहुखडा जोइसियमिच्छाइड्डिणो होंति । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखडा भवणवासियमिच्छाइड्डिणो होंति । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखंडा पढमपुढनिमिच्छाइड्डि होंति । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखंडा सोहम्मिसाणमिच्छाइड्डि होंति । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखडा मणुम-अपज्जत्ता होंति । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखडा विदियपुढविमिच्छाइड्डि होंति । सेसम-सखेज्जखंडे कए बहुखंडा सणक्कुमार-माहिंदमिच्छाइड्डि होंति । एवं तदियपुढनि-ब्रम्ह-ब्रम्होत्तर-बउत्थपुढनि लातवकाविट्ठ पचमपुढनि सुक्कमहासुक्क-सदारसहस्सार-छट्ठपुढनि-सत्तमपुढविमिच्छाइड्डि ति णेयव्वं । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखंडा सोहम्मिसाणअसजद-

मात्र विशेषसे अधिक है । देव मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगप्रतर असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जग श्रेणी गुणकार है ।

अब चतुर्गतिसबन्धी भागाभागको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— सर्व जीवराशिके अनन्त खट करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीव है । शेष एक भागके अनन्त खट करने पर बहुभागप्रमाण सिद्ध हैं । शेष एक भागके असख्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त है । शेष एक भागके सख्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्या-दृष्टि हैं । शेष एक भागके सख्यात खट करने पर बहुभागप्रमाण ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असख्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण भवनवासी मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असख्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पढली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि नारकी हैं । शेष एक भागके असख्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सौधर्म और पेशान कल्पके मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असख्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण मनुष्य अपर्याप्त हैं । शेष एक भागके असख्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि नारकी हैं । शेष एक भागके असख्यात खट करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सानत्कुमार और माहेन्द्र कल्पके मिथ्यादृष्टि देव हैं । इसीप्रकार तीसरी पृथिवी, ब्रह्म और ब्रह्मोत्तर, चौथी पृथिवी, लातव और कापिष्ठ, पाचवी पृथिवी, शुक्र और महाशुक्र, शतार और सहस्रार, छठवीं पृथिवी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण आनेतरु ले जाना चाहिये । सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण आनेके अनन्तर शेष एक भागके असख्यात खड करने पर उनमेंसे बहुखडप्रमाण सौधर्म और पेशान कल्पके असयतसम्यग्दृष्टियोंका प्रमाण है । शेष एक भागके

सम्माइट्टिणो हांति । सेस सरोज्जखण्डे कए बहुखण्डा तस्मेव सम्मामिच्छाइट्टिणो हांति । मेस अमंसेज्जखण्डे कए बहुखण्डा सासणसम्माइट्टिणो हांति । एव णेयव्व जाव सदार सहससारो ति । तदो जोइसिय णाणपैतर भरणणामिय तिरिकख पढमादि जाव सत्तमपुट्टि ति णेयव्व । सेस सरोज्जखण्डे कए बहुखण्डा आणद पाणदअसजदसम्माइट्टिणो हांति । सेस सरोज्जखण्डे कए बहुखण्डा आरणच्चुदअसजदसम्माइट्टिणो हांति । एव णेयव्व जाव उपरिमउपरिमगेवज्जअमजदसम्माइट्टि ति । सेस सरोज्जखण्डे कए बहुखण्डा आणद पाणद-मिच्छाइट्टी हांति । सेस सरोज्जखण्डे कए बहुखण्डा आरणच्चुदमिच्छाइट्टी हांति । एव णेयव्व जाव उपरिमुपरिमगेवज्जअमिच्छाइट्टि ति । सेस सरोज्जखण्डे कए बहुखण्डा अणुदिसअसजदसम्माइट्टिणो हांति । सेससरोज्जखण्डे कए बहुखण्डा अणुत्तरविजय वड जयत जयत-अवराइदअमजदसम्माइट्टी हांति । मेस सरोज्जखण्डे कए बहुखण्डा आणद पाणदसम्मामिच्छाइट्टी हांति । सेस सरोज्जखण्डे कए बहुखण्डा आरणच्चुदसम्मामिच्छाइट्टी हांति । एव णेयव्व जाव उपरिमुपरिमगेवज्जअममिच्छाइट्टि ति । सेस सरोज्जखण्डे कए

सख्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण उर्द्धो सोधर्म ओर पेशान वरूपके सम्यग्मिध्या दृष्टि जीवोंका प्रमाण है । शेष एक भागके असख्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सौधम और पेशान वरूपके मामादनसम्यग्दृष्टि जीव है । इसप्रकार शतार और सहस्रार वरूपतक ले जाना चाहिये । इसके आगे ज्योतिषी, वाणव्यन्तर, भजनवासी, तिर्यंच और प्रथमादि सातों पृथिवियातक ले जाना चाहिये । सातों पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके सख्यात खड करने पर बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके असयतसम्यग्दृष्टि जीव है । शेष एक भागके सख्यात खड करने पर बहुभाग प्रमाण आरण और अच्युतके असयतसम्यग्दृष्टि जीव है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम प्रवेचकके असयतसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाण आनेतर ले जाना चाहिये । शेष एक भागके सख्यात खड करने पर बहुभागप्रमाण आणत और प्राणतके मिध्यादृष्टि देव है । शेष एक भागके सख्यात खड करने पर बहुभागप्रमाण आरण और अच्युत वरूपके मिध्यादृष्टि देव है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम प्रवेचकके मिध्यादृष्टि देवोंके प्रमाण आनेतक ले जाना चाहिये । शेष एक भागके सख्यात खड करने पर बहुभागप्रमाण अनुदिशके असयतसम्यग्दृष्टि देव है । शेष एक भागके असख्यात खड करने पर बहुभागप्रमाण विजय, वेजयत, जयत और अपराजित इन चार अनुत्तरोंके असयतसम्यग्दृष्टि देव है । शेष एक भागके सख्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके सम्यग्मिध्यादृष्टि देव है । शेष एक भागके सख्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आरण और अच्युतके सम्यग्मिध्यादृष्टि देव है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम प्रवेचकके सम्यग्मिध्यादृष्टि देवोंके प्रमाण आनेतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम प्रवेचकके सम्यग्मिध्यादृष्टि देवोंके प्रमाणके अनन्तर शेष एक भागके सख्यात खड करने पर उनमेंसे

बहुसुंटा आणद-पाणदसामणमम्माइट्टी होंति । सेसं सखेज्जखडे कए नहुसुंटा आरण-
 च्चुदसासणमम्माइट्टी होंति । एउ णेयव्व जाव उपरिममज्झिमसासणेत्ति । सेसमसखेज्जखडे
 कए बहुसुंटा उपरिमउपरिमसासणसम्माइट्टी होंति । सेस संखेज्जखडे कए नहुसुंटा
 सव्वट्टिसिद्धिनिमाणासियदेना होंति । मेमं सखेज्जखडे कए नहुसुंटा मणुसिणीमिच्छाइट्टी
 होंति । सेस सखेज्जखडे कए नहुसुंटा मणुमपज्जत्तमिच्छाइट्टी होंति । सेम सखेज्जखडे
 कए नहुसुंटा मणुमअमज्जदमम्माइट्टी होंति । मेस सखेज्जखडे कए नहुसुंटा सम्मा-
 मिच्छाइट्टी होंति । सेस मखेज्जखडे कए नहुसुंटा सासणमम्माइट्टी होंति । सेम संखेज्ज-
 खडे कए नहुसुंटा संजदासज्जदा होंति । मेस सखेज्जखडे कए नहुसुंटा पमत्तसंजदा
 होंति । सेस सखेज्जखडे कए नहुसुंटा अपमत्तसज्जदा होंति । सेस संखेज्जखडे कए
 बहुसुंटा सज्जोगित्ति । सेसं सखेज्जखडे कए नहुसुंटा चउण्ह खणगा । सेम
 सखेज्जखडे कए बहुसुंटा चउण्हमुयममगा । सेसेगखंड अजोगिकेनली होंति । एवं
 चउगइभागाभागां ममत्तं ।

एत्तो चउगइअप्पाब्रहुग पत्तइस्सामो । त जहा । मव्वत्थोमो अजोगिकेवलिरासी ।

बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक भागके सख्यात खंड
 करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आरण और अच्युतके सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं । इसीप्रकार
 उपरिम मध्यम प्रैथेयकके सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंका प्रमाण आनेतक ले जाना चाहिये । शेष
 एक भागके असख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण उपरिम उपरिम प्रैथेयकके सासा-
 दनसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक भागके सख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सर्वार्थ-
 सिद्धि विमाननासी देव हैं । शेष एक भागके सख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण
 मनुष्यनी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके सख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण
 मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके सख्यात खंड करने पर उनमेंसे
 बहुभागप्रमाण मनुष्य असद्यतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके सख्यात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य हैं । शेष एक भागके सख्यात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्य हैं । शेष एक भागके सख्यात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण सपतासयत मनुष्य हैं । शेष एक भागके सख्यात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण प्रमत्तसयत मनुष्य हैं । शेष एक भागके सख्यात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण अप्रमत्तसयत मनुष्य हैं । शेष एक भागके सख्यात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण सयोगिकेनली जिन हैं । शेष एक भागके सख्यात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण चारों गुणस्थानके क्षपक हैं । शेष एक भागके सख्यात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण चारों गुणस्थानोंके उपशामक हैं । शेष एक खंडप्रमाण अयोगि
 केचली जिन हैं ।

इसप्रकार चारों गतिसयन्धी भागाभाग समाप्त हुआ ।

अथ इसके आगे चारों गतिसयन्धी अल्पबहुत्वको धतलाते हैं । वह इसप्रकार है—

चउण्हमुनसामगा संखेज्जगुणा । चउण्ह खवगा संखेज्जगुणा । सज्जोगिकेवली संखेज्जगुणा ।
 अप्पमत्तमज्जदा संखेज्जगुणा । पमत्तमज्जदा संखेज्जगुणा । मणुममज्जदामज्जदा संखेज्जगुणा ।
 मणुससात्तणा संखेज्जगुणा । सम्मामिच्छाड्ढी संखेज्जगुणा । असज्जदसम्माड्ढी संखेज्जगुणा ।
 मणुसपज्जत्तमिच्छाड्ढी संखेज्जगुणा । मणुमिणीमिच्छाड्ढी संखेज्जगुणा । मण्वट्ठमिद्धि
 निमाणनासियेदेना तिउणा मत्तगुणा वा । सेहम्मिसाणअसज्जदसम्माड्ढिअनहारकालो
 असखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आपलियाए अमखेज्जदिभागस्म संखेज्जदिभागो । को
 पडिभागो ? मण्वट्ठमिद्धिदेवपडिभागो । सम्मामिच्छाड्ढिअनहारकालो अमखेज्जगुणो । को
 गुणगारो ? आपलियाए असखेज्जदिभागो । मात्तणमम्माड्ढिअनहारकालो संखेज्जगुणो । ने
 गुणगारो ? संखेज्जममया । एण णेमन्त्र जाण सदर-महस्सरो ति । तदो जोडसिय णाणत्तर
 भणणनासियेदेनि ति णेयव्व । तदो तिरिकएअमज्जदसम्माड्ढि अनहारकालो असखेज्जगुणो ।
 सम्मामिच्छाड्ढिअनहारकालो अमखेज्जगुणो । सामणसम्माड्ढिअनहारकालो संखेज्जगुणो ।

अयोगिकेवली जीवराशि सधसे स्तोक है । इससे चारों गुणस्थानोंके उपशामक सख्यातगुणे
 हैं । चारों गुणस्थानोंके क्षपक उपशामकोंसे सख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली क्षपकोंसे सख्यात
 गुणे हैं । अप्रमत्तसयत जीव सयोगिकेवलीयोंसे सख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसयत जीव
 अमत्तसयतोंसे सख्यातगुणे हैं । मनुष्य सयतासयत प्रमत्तसयतोंसे सख्यातगुणे हैं ।
 सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्य सयतासयत मनुष्योंसे सख्यातगुणे हैं । सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य
 सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्योंसे सख्यातगुणे हैं । असयतसम्यग्दृष्टि मनुष्य सम्यग्मि
 थ्यादृष्टि मनुष्योंसे सख्यातगुणे हैं । पर्याप्त मिथ्यादृष्टि मनुष्य असयतसम्यग्दृष्टि मनुष्योंसे
 सख्यातगुणे हैं । मिथ्यादृष्टि मनुष्य की पर्याप्त मिथ्यादृष्टि मनुष्योंसे सख्यातगुणे हैं । सर्वाथ
 सिद्धि विमानवासी देव मिथ्यादृष्टि मनुष्यनियोंसे तिगुणे अथवा सातगुणे हैं । सौधर्म और
 पेशान कल्पके असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सर्वाथसिद्धिके देवोंसे असख्यातगुणा है ।
 गुणकार क्या है ? आवलीके असख्यातवें भागका सख्यातवा भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या
 है ? सर्वाथसिद्धिके देवोंका प्रमाण प्रतिभाग है । सौधर्म और पेशान कल्पके देवोंका सम्यग्मिथ्या
 दृष्टि अवहारकाल उर्द्धाके असयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असख्यातगुणा है । गुणकार क्या
 है ? आवलीका असख्यातवा भाग गुणकार है । उर्द्धाके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल
 उर्द्धाके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे सख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सख्यात
 समय गुणकार है । इसीप्रकार शतार और सहस्रार कल्पक ले जाना चाहिये । शतार और
 सहस्रार कल्पके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे ज्योतिषी, घाणव्यन्तर और भवनवासी
 देवियों तक ले जाना चाहिये । भवनवासी देवियोंके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे तिर्यचोंका
 असयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल असख्यातगुणा है । इससे उर्द्धाका सम्यग्मिथ्यादृष्टि
 अवहारकाल असख्यातगुणा है । इससे उर्द्धाका सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल सख्यातगुणा

संजदासंजदअहारकालो असखेज्जगुणो । तदो पढमपुढविअसंजदसम्माइड्डिअवहारकालो
 अमखेज्जगुणो । सम्मामिन्डाइड्डिअहारकालो असखेज्जगुणो । सासणसम्माइड्डिअहारकालो
 सखेज्जगुणो । एव णेयव्व विदियादि जाण सत्तमपुढवि ति । तदो आणद-पाणदअसजद-
 सम्माइड्डिअहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।
 आरणच्चुदअसंजदसम्माइड्डिअहारकालो सखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सखेज्जसमया ।
 एव णेयव्व जाण उपरिमउपरिमगेउज्जो ति । तदो आणद-पाणदमिच्छाइड्डिअवहारकालो
 संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । आरणच्चुदमिन्डाइड्डिअवहारकालो संखेज्ज-
 गुणो । को गुणगारो ? सखेज्जसमया । एव णेयव्व जाण उपरिमउपरिमगेउज्जो ति ।
 तदो अणुदिमअमजदसम्माइड्डिअवहारकालो सखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया ।
 अणुत्तरविजय-उइज्यंत-ज्यंत-अपराजिद-अमजदसम्माइड्डिअवहारकालो सखेज्जगुणो । को
 गुणगारो ? सखेज्जसमया । तदो आणद-पाणदसम्माइड्डिअवहारकालो असखेज्जगुणो ।
 को गुणगारो ? आवलियाए असखेज्जदिभागो । आरणच्चुदसम्माइड्डिअवहारकालो

है । इससे उन्हींका सयतासयत अवहारकाल असख्यातगुणा है । तिर्यंच संयतासयतोंके
 अवहारकालसे प्रथम पृथिवीके असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है ।
 इससे उन्हींका सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असख्यातगुणा है । इससे उन्हींका सासादन-
 सम्यग्दृष्टि अवहारकाल संख्यातगुणा है । इसीप्रकार दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं
 पृथिवीतक ले जाना चाहिये । सातवीं पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे आनत
 और प्राणतके असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
 आवलीका असख्यातवा भाग गुणकार है । इससे आरण और अच्युतके असयतसम्यग्दृष्टियोंका
 अवहारकाल सख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार
 उपरिम उपरिम त्रैवेयकतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम त्रैवेयकके असयतसम्यग्दृष्टि
 अवहारकालसे आनत और प्राणतके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल सख्यातगुणा है । गुणकार
 क्या है ? सख्यात समय गुणकार है । इससे आरण और अच्युतके मिथ्यादृष्टियोंका अवहार-
 काल सख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार उपरिम
 उपरिम त्रैवेयकतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम त्रैवेयकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे
 अनुदिशके असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सख्यात
 समय गुणकार है । अनुदिशोंके असयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे विजय, वैजयन्त, जयन्त
 और अपराजित इन अनुसरयासी देवोंका असयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल सख्यातगुणा
 है । गुणकार क्या है ? सख्यात समय गुणकार है । इससे आनत और प्राणतके
 सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका
 असख्यातवा भाग गुणकार है । इससे आरण और अच्युतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका
 अवहारकाल सख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार

सखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सखेज्जममया । एण णेयञ्च जाण उपरिमउपरिमगेणञ्जो चि । तदो जाणद-पाणदसासणमस्माइड्डिअण्हारकालो मरेज्जगुणो । को गुणगारो ? सखेज्जममया । आरणञ्चुटमासणसम्माइड्डिअण्हारकालो सखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सखेज्जममया । एण णेयञ्च जाण उपरिमउपरिमगेणञ्जो चि । तस्सेण द-उमसखेज्जगुण । उपरिममज्झिमसासण सम्माइड्डिदञ्च मरेज्जगुण । एणमण्हारकालपडिलोमेण णेयञ्च जाण सोहम्मीमाणअमज्जद सम्माइड्डिदञ्च चि । तदो पल्लोउमममरेज्जगुण । को गुणगारो ? अण्हारकालो । सोहम्मी-साणनिकखभस्सुअमरेज्जगुणा । को गुणगारो ? सूचिअगुलवटमण्णमूलस्स अमरेज्जदि-भागो असखेज्जाणि विदियण्णमूलानि । केत्तियमेत्ताणि ? तदियवण्णमूलस्स असखेज्जदि-भागमेत्ताणि । को पडिभागो ? पल्लोउमपडिभागो । मणुसअपज्जचअण्हारकालो अम रेज्जगुणो । को गुणगारो ? सूचिअगुलविदियण्णमूल । णेरइयमिन्डाड्डिअण्हारकालो अमरेज्जगुणा । को गुणगारो ? सूचिअगुलविदियण्णमूल । मणुसामियमिन्डाड्डि अण्हारकालो असखेज्जगुणा । को गुणगारो ? णेरइयमिन्डाड्डिअण्हारकालो । पचिदिय-

उपरिम उपरिम प्रवेयकतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम प्रवेयकके सम्बन्धित्वा दृष्टियोंके अवहारकालसे आगत और प्राणतके सासादनसम्बन्धित्वाके अवहारकाल सत्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सत्यात समय गुणकार है । इससे आरण और अच्युतके सासादनसम्बन्धित्वाके अवहारकाल सत्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सत्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम प्रवेयकतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम प्रवेयकके सासादनसम्बन्धित्वाके अवहारकालसे उर्द्धाका द्रव्यप्रमाण असत्यातगुणा है । इससे उपरिम मध्यम प्रवेयकके सासादनसम्बन्धित्वाके द्रव्य सत्यातगुणा है । इसप्रकार अवहार कालके प्रतिलोम क्रमसे जब सौधर्म और पेशान कल्पके असत्यसम्बन्धित्वाके द्रव्य आधे समयतक ले जाना चाहिये । सौधर्मद्विकके असत्यसम्बन्धित्वाके द्रव्यसे पर्योपम असत्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । पर्योपमसे सौधर्म और पेशान कल्पके मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कभस्वी असत्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलका असत्यातका भाग गुणकार है जो सूच्यगुलके असत्यात द्वितीय वर्गप्रमाण है । ये असत्यात द्वितीय वर्गमूल कितने है ? सूच्यगुलके तृतीय वर्गमूलके असत्यातके भागमात्र है । प्रतिभाग क्या है ? पर्योपम प्रतिभाग है । सौधर्मद्विककी मिथ्यादृष्टि विष्कभस्वाते मनुष्य अपर्याप्त अवहारकाल असत्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सूच्यगुलका द्वितीय वर्ग मूल गुणकार है । मनुष्य अपर्याप्त अवहारकालसे नारक मिथ्यादृष्टि विष्कभस्वी असत्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? सूच्यगुलका तृतीय वर्गमूल गुणकार है । नारक मिथ्यादृष्टि विष्कभ स्वीसे भयनवासियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कभस्वी असत्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? नारक

तिरिक्खमिन्हाइडिअहारकालो अससेज्जगुणो । को गुणगारो ? सूचिअगुलपढमग्ग-
मूलस्स अससेज्जदिभागो । पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तअहारकालो विमसाहिओ । केत्तिय-
मेत्तेण ? आपलियाए अससेज्जदिभाएण संडिदमेत्तेण । पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तमिन्हा-
इडिअहारकालो अससेज्जगुणो । को गुणगारो ? आपलियाए अससेज्जदिभागस्स संसेज्जदि-
भागो । देवमिन्हाइडिअहारकालो सखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सखेज्जसमया । जंड-
सियमिन्हाइडिअहारकालो विमसाहिओ । केत्तियमेत्तेण ? ससेज्जरूपेहिं संडिदएयखड-
मेत्तेण । वाणयंतरमिच्छाइडिअहारकालो ससेज्जगुणो । को गुणगारो ? ससेज्जसमया ।
पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइडिअहारकालो ससेज्जगुणो । को गुणगारो ? ससेज्ज-
समया । विदियपुढमिन्हाइडिअहारकालो अससेज्जगुणो । को गुणगारो ? वाग्गहग्ग-
मूलस्स अससेज्जदिभागो असखेज्जाणि तेरसग्गमूलाणि । को पडिभागो ? जोणिणीअग्ग-

मिथ्यादृष्टि विष्कभसूची गुणकार है । भवनवासी मिथ्यादृष्टि विष्कभसूचीसे पचेन्द्रिय
तिर्यच मिथ्यादृष्टि अहारकाल असत्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सूच्यगुलके प्रथम
वर्गमूलका असख्यातवा भाग गुणकार है । पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे
पचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्तोका अहारकाल विशेष अधिक है । नितनेमात्र विशेषसे अधिक है ?
आवलीके असत्यातथै भागसे पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको उचित करके
जो एक भाग लघ आये तन्मात्र विशेषसे अधिक है । पचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्त अहारकालसे
पचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका अहारकाल असत्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
आवलीके असत्यातथै भागमा सत्यातवा भाग गुणकार है । पचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त
अहारकालसे देव मिथ्यादृष्टियोंका अहारकाल सत्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
सख्यात समय गुणकार है । देव मिथ्यादृष्टि अहारकालसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंका
अवहारकाल विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? देव मिथ्यादृष्टियोंके
अवहारकालको सत्यातसे उचित करके जो एक सङ्ग लघ आये तन्मात्र विशेषसे अधिक
है । ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंके अहारकालसे वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल
सत्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सत्यात समय गुणकार है । वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंके
अहारकालसे पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अहारकाल सत्यातगुणा
है । गुणकार क्या है ? सत्यात समय गुणकार है । तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंके अव
हारकालसे वृक्षी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अहारकाल असत्यातगुणा है । गुणकार
क्या है ? जगश्रेणीके वारहवें वर्गमूलका असत्यातवा भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके
असत्यात तेरहवें वर्गमूलभमाण है । प्रतिभाग क्या है ? योनिमतियोंका अवहारकाल प्रतिभाग

हारकालपडिभागो । तदो सणक्कुमारमाहिद-तदियपुढवि-ग्मह्वग्महोत्तर-चउत्थपुढनि-लातव
 काविट्ट-पचमपुढवि सुवमहासुव सदारसहस्मार-उट्ट-सत्तमपुढवीण मिच्छाइडिअहारकालो
 रुमेण असरोज्जगुणो । को गुणगारो ? सेडितारममेवारसम-दसम-णम-अट्टम-सत्तम-उट्टम
 पचम-चउत्थ-तदियग्गमूलणि जहारुमेण गुणगारा । तदो मत्तमपुढविअहारकालस्सुवो
 तस्सेउद्वममसेज्जगुण । को गुणगारो ? पढमग्गमूल । तदो उट्टपुढवि-सदारसहस्मार सुक्
 महासुव-पचमपुढवि-लातवकाविट्ट-चउत्थपुढवि-ग्मह्वग्महोत्तर-तदियपुढवि-सणक्कुमारमाहिद-
 निदियपुढवीण मिच्छाइडिद्वय कमेण जमसेज्जगुणं । को गुणगारो ? सेडितदिय-चउत्थ
 पचम-उट्ट-सत्तम-अट्टम णम दसम एवारमम पारममवग्गमूलणि जहारुमेण गुणगारा ?
 तदो निदियपुढविमिच्छाइडिद्वयस्सुवरि पचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइडिनिक्खभसई
 असरोज्जगुणा । को गुणगारो ? पारसमग्गमूलस्स असरोज्जादिभागो असरोज्जाणि
 तेरसवग्गमूलणि । णणपेतरमिच्छाइडिनिक्खभसई सरोज्जगुणा । को गुणगारो ?
 सरोज्जसमया । जोइसियमिच्छाइडिनिक्खभसई सरोज्जगुणा । को गुणगारो ? सखेज्ज
 समय । देमिच्छाइडिनिक्खभसई विसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? सरोज्जसमय

है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अहारकालसे सानत्कुमार माहेन्द्र, तीसरी पृथिवी, ब्रह्म
 ब्रह्मोत्तर, चौथी पृथिवी, लातव कापिष्ठ, पाचवीं पृथिवी, शुक् महाशुक, शतार सहस्रार
 छठवीं और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल क्रमसे असख्यातगुणा है । गुणकार
 क्या है ? जगश्रेणीका वारहवा, ग्यारहवा दशवा, नौवा, आठवा, सातवा, छठा, पाचवा, चौथा
 तीसरा वर्गमूल क्रमसे गुणकार है । तदनंतर सातवीं पृथिवीके अवहारकालके ऊपर उसीका
 मिथ्यादृष्टि द्रव्य असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका प्रथम वर्गमूल गुणकार
 है । इससे छठी पृथिवी, शतार सहस्रार, शुक् महाशुक, पाचवीं पृथिवी, लातव कापिष्ठ,
 चौथी पृथिवी, ब्रह्म ब्रह्मोत्तर, तीसरी पृथिवी, सानत्कुमार माहेन्द्र और दूसरी पृथिवीके
 मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य क्रमसे असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका तीसरा,
 चौथा, पाचवा, छठा, सातवा, आठवा, नौवा, दशवा, ग्यारहवा और बारहवा वर्गमूल क्रमसे
 गुणकार हैं । अनंतर दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती
 मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कभसूची असख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके बारहवें
 वर्गमूलका असख्यातवा भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असख्यात तेरहवें वर्गमूलप्रमाण है ।
 इससे षाण्णव्यंतर मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कभसूची सख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? सख्यात
 समय गुणकार है । इससे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कभसूची सख्यातगुणी है । गुणकार
 क्या है ? सख्यात समय गुणकार है । इससे देव मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कभसूची विशेष अधिक
 है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है । सख्यात समयसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कभ
 र्गवीकी सहित करके जो एक भाग लब्ध आये तन्मात्र विशेषसे अधिक है । इससे पंचेन्द्रिय

खडिदएयखंडमेत्तेण । पंचिदियतिरिक्खपपज्जत्तमिच्छाडडिनिम्भसूई संसेज्जगुणा । को गुणगारो ? सखेज्जममया । पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तमिन्संभसूई अससेज्जगुणा । को गुणगारो ? आरलियाए असंसेज्जदिभागस्म संसेज्जदिभागो । पंचिदियतिरिक्खमिच्छाडडिनिक्खभसूई निसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? आरलियाए असंसेज्जदिभाएण खंडिदएयखंडमेत्तेण । भणरासियमिच्छाडडिअनहारकालो अससेज्जगुणो । को गुणगारो ? सच्चिअगुलपढमग्गमूलस्स असंसेज्जदिभागो । पढमपुढमिच्छाडडिअनहारकालो असंसेज्जगुणो । को गुणगारो ? णेरहयविक्खभसूई । मणुसअपज्जत्तद्वमससेज्जगुण । को गुणगारो ? सच्चिअगुलतदियग्गमूलं । सोहम्मीसाणमिच्छाडडिअनहारकालो अससेज्जगुणो । को गुणगारो ? सच्चिअगुलनिदियग्गमूलं । सेठी अमंसेज्जगुणा । को गुणगारो ? विक्खभसूई । सोहम्मीसाणमिच्छाडडिद्वमससेज्जगुण । को गुणगारो ? विक्खभसूई । पढमपुढमिच्छाडडिद्वमसखेज्जगुण । को गुणगारो ? सोहम्मीमाणविक्खभसूई । भणरासियमिच्छाडडिद्वमसखेज्जगुण । को गुणगारो ? णेरहयमिच्छाडडिनिक्खभसूई । पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाडडिद्वमससेज्जगुण । को गुणगारो ? सेठीए अससेज्जदिभागो असखे-

तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कभसूची सख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? सख्यात समय गुणकार है । इससे पचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंकी विष्कभसूची असख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? आवलीके असख्यातवें भागका सख्यातवा भाग गुणकार है । इससे पचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कभसूची विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? आवलीके असख्यातवें भागसे पचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंकी विष्कभसूचीको खंडित करके जो एक खंड लघ्य आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । इससे भवनरासियोंका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलका असख्यातवा भाग गुणकार है । इससे पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? नारकियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कभसूची गुणकार है । पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे मनुष्य अपर्याप्तोंका द्रव्य असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सूच्यगुलका तृतीय वर्गमूल गुणकार है । मनुष्य अपर्याप्तोंके द्रव्यसे सौधर्म और पेशानके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सूच्यगुलका द्वितीय वर्गमूल गुणकार है । सौधर्मद्विकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे जगश्रेणी असख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? विष्कभसूची गुणकार है । जगश्रेणीसे सौधर्म और पेशानके मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण असख्यात गुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कभसूची गुणकार है । सौधर्मद्विकके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पहली पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सौधर्म और पेशानकी मिथ्यादृष्टि विष्कभसूची गुणकार है । पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे भवनवासी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? नारकियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कभसूची गुणकार है । भवनवासी मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि द्रव्य

अणंताणंताहि ओसपिणि-उस्सपिणीहि ण अवहिरंति कालेण

॥ ७५ ॥

अर्दीदकालो ओसपिणि उस्सपिणिपमाणेण कीरमाणो अणतोसपिणि-उस्सपिणि पमाण होदि । तेण तारिसेण पि अर्दीदकालेण एदे णर पि राक्षीओ ण अवहिरिज्जति । एइदिर्णहत्तो एगर्जापमाइ काऊण जा उक्कस्सेण पदरस्स अससेज्जदिभागमेत्ता जीवा तसकादएसुप्पज्जति । तसकाइया पि एगर्जापमाइ काऊण जा उक्कस्सेण पदरस्स अससे ज्जदिभागमेत्ता एइदिएसुप्पज्जति । नदरेइदिया निसय पडि अणता सुहुमेइदिएसुप्पज्जति । सुहुमेइदिया नि तत्थिया चेन नदरेइदिएसुप्पज्जति । एव चेन सब्बेसिं पज्जत्ताणमपज्जत्ताण च वत्तव्व । तदो सरिसाय व्ययचादो एदेसिं णण्ह रामीण वेट्ठेट्ठो तिमु पि कालेसु णत्थि चि जणुत्तिसिद्धीदो एद सुत्त णादेरेदव्वमिदि । एत्थ परिहारे बुच्चदे । त जहा- एदेसिं णण्ह रामीण जदि आय-व्वया सरिसा हवति तो एद मुत्त णादेरेदव्व भवदि । किं तु आयादो वओ अब्भहिओ । कुदो ? तत्तो णिप्फदिऊण तसेसुप्पज्जिय सम्मत्त धेत्तूण किया है । शेष कथन जिसप्रकार मूलोच सूत्रमें कह आये हैं उसप्रकार जानना चाहिये ।

कालप्रमाणकी अपेक्षा पूर्वोक्त एकेन्द्रिय जीव आदि नौ राशिया अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होती हैं ॥ ७५ ॥

अतीत कालको अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीके प्रमाणसे करने पर अनन्त अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीप्रमाण अतीत काल होता है । इसप्रकारके भी उस अतीत कालके द्वारा ये नौ राशिया अपहृत नहीं होती हैं ।

शुद्धा — एकेन्द्रियोंमेंसे एक जीवको आदि करके उत्कृष्टरूपसे जगप्रतरके असख्यातवें भागप्रमाण जीव त्रसव्यायिकोंमें उत्पन्न होते हैं और त्रसव्यायिक भी एक जीवको आदि करके उत्कृष्टरूपसे जगप्रतरके असख्यातवें भागप्रमाण जीव एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं । विषयकी अपेक्षा अनन्त यावत् एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं और सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव भी उतने ही यावत् एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं । इसप्रकार सभी पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंका भी कथन करना चाहिये । इसप्रकार समान आय और व्यय होनेसे इन नौ राशियोंका विच्छेद तीनों भी कालोंमें नहीं होता है, इसलिये यह कथन अनुत्तसिद्ध होनेसे यह सूत्र प्रह्वण करने योग्य नहीं है ?

समाधान — आगे पूर्वाक्त कथनका परिहार किया जाता है । वह इसप्रकार है— इन पूर्वाक्त नौ राशियोंका आय और व्यय यदि समान हो तो करने योग्य नहीं होवे । किन्तु इन राशियोंका आयसे व्यय अधिक है, राशियोंमें उत्पन्न होकर तथा सम्यक्त्वकी

त्रिणामिदएहंदिय-त्रीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-असण्णिपंचिदिय-गेरदय-तिरिक्ख-भणणससिय-
वाणरंतर-जोइसिय-इत्थि-णुमय-हय गय गंधव्व णागाठि ससारीजीमाणं पुणो तेसु पनेसा-
भावादो । तदो एदे णव वि रासीओ वयमहिया णिच्छएण हवंति । एं हि वए सैत
वि एदे णव वि रासीओ ण वोच्छेज्जति' सरागसरूपेण छिट्ठअदीदकालत्तादो । सच्च-
जीवरासीदो अदीदकाले अणतगुणे सते अदीदकालेण सव्वजीवा जणहिरिजंति । ण च एव,
तथा अणुनलंभादो । ज तेण कालेण सव्वजीवाण वोच्छेदो ऋण्ण होदि चि भणिदे ण,
अभव्वपट्टिणमवोच्छेदे जभव्वत्तस विविणासप्पसंगादो । सेसं वक्खण जहा ओघकाल-
सुत्तमिह भणिद तहा वत्तव्व ।

खेत्तेण अणंताणता लोगा ॥ ७६ ॥

एदस्म सुत्तस्म वक्खणणे भण्णमाणे जहा मूलोघपेत्तसुत्तस्म भणिद तहा भणिदव्व ।
णपरि एत्थ धुरासी एममुप्पाएदव्वो । त जहा— वेदंदिय तेहदिय चउरिंदिय पंचिदिय-

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय असर्शपचेन्द्रिय, नारकी, तिर्यंच, भयनरासी, वाणव्यन्तर,
ज्योतिषी, खीवेद, नपुमज्जेद, घोडा, हाथी, गधर्व और नाग आदि पर्यायोंका नाश
कर दिया है वे पुन उन पर्यायोंमें प्रवेश नहीं करते हैं, इसलिये ये नौ राशिया नियमसे
व्ययसहित हैं । इसप्रकार इन नौ राशियोंके व्ययसहित होने पर भी ये नौ राशिया कभी भी
विच्छिन्न नहीं होती हैं, क्योंकि, अतीतकालसे वे अपने सरागस्वरूपसे स्थित हैं । यदि
सपूर्ण जीवराशिले अतीतकाल अनन्तगुणा होता तो अतीतकालसे सपूर्ण जीवराशि अपहृत
होती; परन्तु ऐसा तो है नहीं, क्योंकि, इसप्रकारकी उपलब्धि नहीं होती है ।

शुक्रा—उस अतीत कालके द्वारा सपूर्ण जीवराशिका विच्छेद क्यों नहीं होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अव्ययराशिकी प्रतिपक्षभूत अव्ययराशिका विच्छेद मान
लेने पर अव्ययत्वकी सत्ताके नाशका प्रसंग आ जाता है ।

शेष व्याख्यान ओघप्ररूपणके कालखंडमें जिसप्रकार कर अथे है उसप्रकार उसका
कथन करना चाहिये ।

क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा पूर्वोक्त ऐकेन्द्रियादि नौ जीवराशिया अनन्तानन्त लोकप्रमाण
हैं ॥ ७६ ॥

इस सूत्रका व्याख्यान करने पर जिसप्रकार मूलोघ प्ररूपणके समय क्षेत्रसूत्रका
अर्थ बह आये है उसप्रकार कथन करना चाहिये । परन्तु यहा पर धुरासी इसप्रकार उत्पन्न
करना चाहिये । यह इसप्रकार है—

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पचेन्द्रिय और अनिन्द्रिय जीवोंकी राशिकी सपूर्ण जीव

अग्निदियाणं रासिं सव्यजीवरासिस्तुपरि पक्वित्तिय तस्स चेव वग्ग एइदियभाजिद तत्थेव पक्वित्तचे एइदियधुरासी होदि । त सखेज्जरूहेहि भागे हिदे लद्ध तम्हि चेव पक्वित्तचे एइदियपज्जत्तधुरामी होदि । एइदियधुरासिं सखेज्जरूहेहि गुणिदे एइदियअपज्जत्त धुरासी होदि । पुणो एइदियधुरासिमसखेज्जलोएण गुणिदे तदेरेइदियधुरामी होदि । तमसखेज्जलोएण गुणिदे तदेरेइदियपज्जत्ताण धुरासी होदि । तमसखेज्जलोएण भागे हिदे लद्ध तम्हि चेव पक्वित्तचे तदेरेइदियअपज्जत्ताण धुरासी होदि । सामणोइदियधुरासिमसखेज्जलोएण भागे हिदे लद्ध तम्हि चेव पक्वित्तचे सुट्टमेइदियधुरामी होदि । तम्हि सखेज्जरूहेहि भागे हिदे लद्ध तम्हि चेव पक्वित्तचे सुट्टमेइदियपज्जत्तधुरामी होदि । सामणसुट्टमेइदियधुरासिं सखेज्जरूहेहि गुणिदे सुट्टमेइदियअपज्जत्तधुरामी होदि । सग सगधुरासीहि सव्यजीवरासिउपरिमग्गे खडिदादओ ओघमिच्छइट्ठीण व वत्तव्वा । णपरि पमाण भणमाणे एइदियाण ओघभगो । एइदियपज्जत्ता सव्यजीवरासिस्त सखेज्जा भागा । तेसिं चेव अपज्जत्ताण पमाण सव्यजीवरासिस्त सखेज्जदिभागो । तदेरेइदियाण

राशिमें ऊपर प्रक्षिप्त करके और उर्द्धां त्रीन्द्रियादि जीवोंके प्रमाणके वर्गके एके द्वय जीवराशिसे भाजित करके जो लब्ध आवे उसे उसी पूर्वोक्त राशिमें प्रक्षिप्त करने पर एकेन्द्रिय जीवराशिसवर्धी ध्रुवराशि होती है । इसे सख्यातसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी पूर्वोक्त ध्रुवराशिमें मिला देने पर एकेन्द्रिय पर्याप्तसवर्धी ध्रुवराशि होती है । एकेन्द्रिय जीवसवर्धी ध्रुवराशिको सख्यातसे गुणित करने पर एकेन्द्रिय अपर्याप्तसवर्धी ध्रुवराशि होती है । पुनः एकेन्द्रिय जीवसवर्धी ध्रुवराशिको असख्यात लोकसे गुणा करने पर बादर एकेन्द्रिय जीवसवर्धी ध्रुवराशि होती है । इसे असख्यात लोकसे गुणित करने पर बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तसवर्धी ध्रुवराशि होती है । इसमें असख्यात लोकका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तसवर्धी ध्रुवराशि होती है । सामान्य एकेन्द्रियसवर्धी ध्रुवराशिमें असख्यात लोकका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसको उसीमें मिला देने पर सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंकी ध्रुवराशि होती है । इसे सख्यातसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे इसी सूक्ष्म एकेन्द्रिय ध्रुवराशिमें मिला देने पर सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तसवर्धी ध्रुवराशि होती है । सामान्य सूक्ष्म एकेन्द्रियसवर्धी ध्रुवराशिको सख्यातसे गुणित करने पर सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तसवर्धी ध्रुवराशि होती है । इन अपनी अपनी ध्रुवराशियोंके द्वारा सपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके ऊपर खडित आदिकका कथन ओघ मिथ्यादीप्योंके खडित आदिकके कथनके समान करना चाहिये । इतनी विशेषता है कि प्रमाणका कथन करते समय एकेन्द्रियोंका प्रमाण सामान्य प्ररूपणके समान कहना चाहिये । एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सपूर्ण जीवराशिके सख्यात बहुभागप्रमाण है । उर्द्धां एकेन्द्रिय अपर्याप्तका प्रमाण सपूर्ण जीवराशिके सख्यातवें भाग है । बादर एकेन्द्रिय तथा बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त

तेसिं पज्जत्तापज्जत्ताणं पमाण सच्चजीवरासिस्स असखेज्जदिभागो । सुहुमेइंदिया सच्च-
जीवरासिस्स असखेज्जा भागा । सुहुमेइंदियपज्जत्ता सच्चजीवरासिस्स सखेज्जा भागा ।
सुहुमेइंदियापज्जत्ता सच्चजीवरासिस्स सखेज्जदिभागो । कारणमेइंदियाण ताव बुचदे ।
सेसिंदियाणिदिएहि सच्चजीवरासिम्हि भागे हिदे लद्ध निरलेऊण एकेषस्स रूपस्स
सच्चजीवरासिं समखड करिय दिण्णे तत्थेयखडं सेसिंदियाणिंदिया च हांति । सेसन्हुखडा
एइदिया हवति । सेसिंदियाणिंदिय एइदियापज्जत्तेहि य सच्चजीवरासिम्हि भागे हिदे लद्ध
सखेज्जरूपाणि निरलिय सच्चजीवरासिं समखड करिय दिण्णे तत्थ बहुखडा एइंदियपज्जत्ता
हांति । एइंदियअपज्जत्तेहि चेय सच्चजीवरासिम्हि भागे हिदे सखेज्जरूपाणि लभति ।
ताणि निरलिय सच्चजीवरासिं समखड करिय दिण्णे तत्थ एगखडं एइंदियअपज्जत्ता
हांति । सेसिंदिय अणिंदिय नदरेंइंदिएहि य सच्चजीवरासिम्हि भागे हिदे तत्थ लद्धअसं-
खेज्जदिलोगरासिं निरलिय सच्चजीवरासिं समखड करिय दिण्णे तत्थ बहुखडा सुहुमेइंदिया
हांति । त्रि-त्ति चट्टु पचाणिंदिय-वादरेंइंदियसहिदसुहुमेइंदिअपज्जत्तएहि सच्चजीवरासिम्हि

और अपर्याप्तोंका प्रमाण सपूर्ण जीवराशिके असख्यातवें भाग है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव सपूर्ण
जीवराशिके असख्यात बहुभागप्रमाण है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सर्व जीवराशिके
सख्यात बहुभागप्रमाण हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव सर्व जीवराशिके सख्यातवें भाग हैं ।
अथ एकेन्द्रियोंके प्रमाणका कारण कहते हैं— शेषेन्द्रिय अर्थात् द्वान्द्वियादि जीव और अनिन्द्रिय
जीव इनके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसको विरलित
करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खड करके दे देने
पर उनमेंसे एक खडप्रमाण द्वान्द्वियादि शेष इन्द्रियवाले और अनिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण
होता है । शेष बहुभागप्रमाण एकेन्द्रिय जीव हैं । द्वान्द्वियादि शेष इन्द्रियवाले, अनिन्द्रिय
और एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर जो सख्यात
लब्ध आवे उसका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको
समान खड करके देयरूपसे दे देने पर वहा बहुभागप्रमाण एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव होते
हैं । एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंके प्रमाणसे भी सर्व जीवराशिके भाजित करने पर सख्यात लब्ध
आते हैं । उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको
समान खड करके देयरूपसे दे देने पर वहा एक खडप्रमाण एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव होते हैं ।
द्वान्द्वियादि शेष इन्द्रियवाले, अनिन्द्रिय और वादर एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीव
राशिके भाजित करने पर वहा जो असख्यात लोकप्रमाण राशि लब्ध आवे उसे विरलित
करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खड करके
देयरूपसे दे देने पर वहा बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव होते हैं । द्वान्द्विय, त्रीन्द्रिय,
घतुरिन्द्रिय, पचेन्द्रिय, अनिन्द्रिय और वादर एकेन्द्रिय जीवोंसे युक्त सूक्ष्म एकेन्द्रिय
अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर सख्यात लब्ध आते हैं । उसका

भागे हिंदे संक्षेज्जराणि जगच्छति । ताणि निरलिय सव्वजीवरासिं समसुंड करिय दिण्णे तत्थ उहुसडा सुहुमेइदियपज्जना हांति । सुहुमेइदियअपज्जत्तेहि सव्वजीवरासिं हि भागे हिंदे तत्थ लद्धसखेज्जराणि निरलिय सव्वजीवरासिं समसुंड करिय दिण्णे तत्थे गपड सुहुमेइदियअपज्जत्ता हांति । दादेइदिएहि सव्वजीवरासिं हि भागे हिंदे तत्थ लद्धअमसेज्जलोगे निरलिय सव्वजीवरासिं समसुंड करिय दिण्णे तत्थेगरूपधरिद दादे इदिया हांति । दादेइदियअपज्जत्तेहि सव्वजीवरासिं हि भागे हिंदे तत्थ लद्धअमसेज्ज लोगे निरलिय सव्वजीवरासिं समसुंड करिय दिण्णे तत्थेगरूपधरिद दादेइदियअपज्जत्ता हांति । एव दादेइदियपज्जत्ताण पि वत्तत्थ । एसा चेव गिरुत्ती हत्तादि । कुदो ? एत्थ कारणादो गिरुत्तीए भेदाणुत्तभादो ।

वेइदिय-तीइदिय-चउरिदिया तस्मेव पज्जत्ता अपज्जत्ता दव्व पमाणेण केवडिया, अससेज्जा ॥ ७७ ॥

विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खड करके देयरूपसे दे देने पर वहा एउभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव प्राप्त होते हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर वहा जो सख्यात अरु लघु आवें उनका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खड करके देयरूपसे दे देने पर वहा एक एउ प्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव होते हैं । वादर एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर वहा जो असख्यात लोक लघु आवें उन्हें विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खड करके देयरूपसे दे देने पर वहा एक विरलनके प्रति जितना प्रमाण प्राप्त हो उतने वादर एकेन्द्रिय जीव होते हैं । वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर वहा जो असख्यात लोकप्रमाण राशि लघु आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खड करके देयरूपसे दे देने पर वहा एक विरलनके प्रति जितना प्रमाण प्राप्त हो उतने वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव होते हैं । इसीप्रकार वादर एकेन्द्रिय पर्याप्तोंका भी वयन करना चाहिये । और वहाँ निश्चिन्त है, क्योंकि, वहा पर कारणसे निश्चिन्त भेद नहीं पाया जाता है ।

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव तथा उन्हींके पर्याप्त और अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असख्यात है ॥ ७७ ॥

गृहण वीइदियादीण तस्सेत्तेति एगयणणिदेवो कध घडदे ? ण एस दोसो, बहूण पि जादीए एयत्तपिरोहाभावादो । एत्थ अपज्जत्तयणेण अपज्जत्तणामरुम्मोदयसहिदजीवा धेत्तव्वा । अण्णहा पज्जत्तणामरुम्मोदयसहिदणिच्चत्ति-अपज्जत्तण पि अपज्जत्तयणेण गहणप्पसंगादो । एत्तं पज्जत्ता इदि बुत्ते पज्जत्तणाम-रुम्मोदयसहिदजीवा धेत्तव्वा । अण्णहा पज्जत्तणामरुम्मोदयसहिदणिच्चत्तिअपज्जत्तण गहणाणुत्तदीदो । ति-त्ति-चउत्तिदिए ति बुत्ते वीइदिय-त्तीइदिय-चउत्तिदियजादिणामरुम्मोदय-सहिदजीवाणं गहण । त्रेणि इदियाणि जेसि ते रेइदिया इदि धेप्पमाणे को दोसो ? चे ण, अपज्जत्तकाले बद्धमाणजीवाणभिदियाभावेण तेसिमगहणप्पसंगादो । राओत्तसमो इदिय ण दच्चिदियमिदियमिदि चे ण, सजोगिकेत्तलस्म पणट्टप्पओत्तममस्स अणिदियत्तप्पसंगादो । होदु ? चे ण, सुत्तस्स पच्चिदियत्तपदुप्पायणादो । कम्मिह तं सुत्तमिदि चे एत्थेत्त । तं

शका—द्वीन्द्रयादिक जीव बहुत हैं, अतएव उनके लिये ' तस्सेव ' इसप्रकार एक घचन निर्देश कैसे धन सरुता है ?

समाधान - यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, बहुतके भी जातिसे एकएकके प्रति कोई विरोध नहीं आता है ।

यहा सूत्रमें अपर्याप्त पदसे अपर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त जीवोंका ग्रहण करना चाहिये । अन्यथा पर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त निर्वृत्यपर्याप्त जीवोंका भी अपर्याप्त इस वचनसे ग्रहण प्राप्त हो जायगा । इसीप्रकार पर्याप्त ऐसा कहने पर पर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त जीवोंका ग्रहण करना चाहिये । अन्यथा पर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त निर्वृत्यपर्याप्त जीवोंका ग्रहण नहीं होगा । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय, ऐसा कहने पर द्वीन्द्रिय जाति, त्रीन्द्रिय जाति और चतुरिन्द्रिय जाति नामकर्मके उदयसे युक्त जीवोंका ग्रहण करना चाहिये ।

शका—'जिन जीवोंके दो इन्द्रिया पाई जाती है वे द्वीन्द्रिय जीव हैं ' ऐसा ग्रहण करनेमें क्या दोष आता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उपर्युक्त अर्थके ग्रहण करने पर अपर्याप्त कालमें विद्यमान जीवोंके इन्द्रिया नहीं पाई जानेसे उनके नहीं ग्रहण होनेका प्रसंग प्राप्त हो जायगा ।

शका—क्षयोपशमको इन्द्रिय कहते हैं, द्रव्येन्द्रियको इन्द्रिय नहीं कहते हैं; इसलिये अपर्याप्त कालमें द्रव्येन्द्रियोंके नहीं रहने पर भी द्वीन्द्रियादि पदोंके द्वारा उन जीवोंका ग्रहण हो जायगा ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, यदि इन्द्रियका अर्थ क्षयोपशम किया जाय तो जिनका क्षयोपशम नष्ट हो गया है ऐसे सयोगिकेवलीको अनिन्द्रियपनेका प्रसंग था जाता है ।

शका—आ जाने दो ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, सूत्र सयोगिकेवलीको पचेन्द्रियरूपसे प्रतिपादन करता है ।

जहा— पचिदिया सासणसम्मइइट्टिप्पहुडि जाण अनोगिकेरलि चि दव्वपमाणेण केरटिया, औघमिदि ।

सुहुमद्वपरुणङ्ग सुत्तमाह—

असखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥७८॥

एदम्म सुत्तम्म अत्थो सुगमो चि ण बुच्चदे । एदाओ रासीओ सव्वकालमापाणु स्सयसहिदाओ चि ण वोन्हेदमुग्गहुक्कते तदे असखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरति चि रुधमेद घटदे ? सच्च, ण वोच्छिज्जति चेय किं तु एदामिमाणे णिणा जदि वओ चेय भवदि तो णिच्छएण वोच्छिज्जति । अण्णाहा अमरोज्जत्ताणुग्गत्तादो । एदस्सत्थस्स अमरोहणङ्ग अवहिरति चि बुत्त ।

शुक्रा— यह सूत्र कहा पर है ?

समाधान—यहाँ आगे है । यथा— 'पचेन्द्रिय जीव सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेरली गुणस्थानतक द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सामान्य प्ररूपणाके समान पावयें गुणस्थानतक पद्योपमके असख्यातवें भाग और छठवेंसे संख्यात हैं ।

अथ सूक्ष्म अर्थका प्ररूपण करनेके लिये सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव तथा उन्हींके पर्याप्त और अपर्याप्त जीव असख्यात असर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ७८ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, इसलिये नहीं कहते हैं ।

शुक्रा—ये द्वीन्द्रियादि सर्व जीवराशिया सर्व काल आयके अनुरूप व्ययसे युक्त हैं, इसलिये यदि विच्छेदको प्राप्त नहीं होती है तो 'असख्यात असर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होती है, यह कथन कैसे घटित हो सकता है ?

समाधान—यह सत्य है कि उपर्युक्त द्वीन्द्रियादिक जीवराशिया विच्छिन्न नहीं होती है, किन्तु इन राशियोंका आयके विना यदि व्यय ही होता तो निश्चयसे विच्छिन्न हो जाती । यदि ऐसा न माना जाय तो 'द्वीन्द्रियादि राशिया असख्यात है' यह कथन नहीं बन सकता है । इसी अर्थका ज्ञान करनेके लिये 'अवहिरति' ऐसा कहा ।

निशेपार्थ—यह सूत्रमें 'असखेज्जाहि' पाठ है, किन्तु अर्थसद्वर्गकी दृष्टिसे यहा 'असखेज्जासखेज्जाहि' ऐसा पाठ प्रतीत होता है । सुदायध खंडके इसी प्रकरणमें इन्हीं जीवोंकी सामान्य संख्या बतलाने हुए यह सूत्र पाया जाता है— 'असखेज्जासखेज्जाहि ओसप्पिणि उस्सप्पिणीहि अवहिरति कालेण ।' किन्तु यहा टीकमें भी 'असखेज्जाहि' पद होनेसे उसी पाठकी रक्षा की गई ।

स्वेत्तेण वेडंदिद्य-तीडंदिद्य-चउरिंदिय तस्सेव पज्जत्त-अपज्जत्तेहि पदर-
मवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स संखेज्जदि
भागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण ॥७९॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो जुच्चे । त जहा— 'जहा उट्ठेसो तथा णिद्देशो' ति णायदो
पुब्बुद्धिद्वि-ति-चउरिदियाण पमाणं पुब्बुद्धिमेव भवदि । मज्झिहं मज्झमिह समुद्धिपज्जचाणं
भवदि । अतिहं पि अंतुद्धि तेमिमपज्जचाण ह्यदि । एदेहि सामण्णनिगलंदिएहि तेसिं
चेव पज्जत्तेहि निगलंदिद्यअपज्जत्तएहि जगपदरमवहिरदि । अंगुलस्स सूचिअंगुलस्स
असंखेज्जदिभागो सूचिअंगुलमात्रलियाए असंखेज्जदिभाएण खडिदेयभागो । तस्म वग्गो
तारिसेण अरेण गुणिदरासी पडिभागो अणहारकालो । एव चेव अपज्जत्तसुत्तं पि
त्रिरयेच्च । एव चेव पज्जत्तसुत्तं पि वक्खणायच्च । णरि सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभाए

क्षेत्रकी अपेक्षा द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवोंके द्वारा सूच्यगुलके
असख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागमे जगप्रतर अपहृत होता है । तथा उन्हींके पर्याप्त
और अपर्याप्त जीवोंके द्वारा क्रमशः सूच्यगुलके सख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे
और सूच्यगुलके असख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता
है ॥ ७९ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । यह इसप्रकार है— 'उद्देशके अनुसार निर्देश किया
जाता है' इस न्यायके अनुसार सर्व प्रथम कहे गये द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय
जीवोंका प्रमाण सर्व प्रथम कहा गया ही है । मध्यमें कहे गये पर्याप्तोंका प्रमाण मध्यमें कहा
गया है । और अन्तमें कहा गया प्रमाण भी अन्तमें कहे गये उन्हींके अपर्याप्तकोंका है । इनके
द्वारा अर्थात् सामान्य विकलत्रयोंके द्वारा, उन्हींके पर्याप्तकोंके द्वारा और विकलेन्द्रिय
अपर्याप्तकोंके द्वारा जगप्रतर अपहृत होता है । यद्वा पर अंगुलसे तात्पर्य सूच्यगुलका और
उसके असख्यातवें भागसे तात्पर्य सूच्यगुलको आधलीके असख्यातवें भागसे खडित करके
जो एक भाग लब्ध आवे उससे है । उस सूच्यगुलके असख्यातवें भागका वर्ग इसका यह
तात्पर्य हुआ कि उस सूच्यगुलके असख्यातवें भागको तत्प्रमाण दूसरी राशिसे गुणित कर
दो । ऐसा करने पर जो राशि उत्पन्न होगी यह यद्वा पर प्रतिभाग अर्थात् अवहारकाल है ।
इसीप्रकार अपर्याप्त-सूत्रका भी स्पष्टीकरण करना चाहिये और इसीप्रकार पर्याप्त सूत्रका भी
ध्यायान करना चाहिये । इतना विशेष है कि सूच्यगुलके सख्यातवें भागके वर्गित करने पर

१ द्वीन्द्रियाधीन्द्रियारचतुरिन्द्रिया अत्रन्येया शेषय प्रतरासंखेयमागप्रमिता । स. णि १, ८ पज्जत्ता-
पज्जत्ता विविचउ ×× अवहारति । अंगुलसस × × पणसमइय पुणे पवर ॥ पत्त २, १२

धमिदे पञ्जचाणमग्रहारकालो होदि । तेण पडिभाएण । पदरगुलस्म असखेज्जदिभाग
सलागभूद ठनिय निगलिदियअपज्जचेहि जगपदरे अग्रहिरिज्जमाणे सलागाहि सह जग
पदर समप्पदि । पदर्गुलस्म सखेज्जदिभाग सलागभूदं ठनिय निगलिदियपज्जचेहि जग
पदरे अग्रहिरिज्जमाणे सलागाहि सह जगपदर्दं समप्पदि चि ज बुच होदि ।

पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठी दब्बपमाणेण केवडिया,
असखेज्जा ॥ ८० ॥

एदस्स सुचस्स अत्थो सुगमो चि ण उच्येदं ।

असखेज्जासखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण
॥ ८१ ॥

एदस्स वि सुचस्स अत्थो सुगमो चि ण उच्येदं ।

खेत्तेण पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि
अंगुलस्स असखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स सखेज्जदिभाग
'वग्गेपडिभाएण' ॥ ८२ ॥

पर्याप्तोका अवहारकाल होता है । इस प्रतिभागसे । प्रतरांगुलके असख्यातवें भागकी शलाका
रूपसे स्थापित करके विकलेन्द्रिय अपर्याप्तोके द्वारा जगप्रतरके पुन पुन अपहृत करने पर
अर्थात् घटाने पर शलाकाओंके साथ जगप्रतर समाप्त होता है । तथा प्रतरांगुलके सख्यातवें
भागकी शलाकारूपसे स्थापित करके विकलेन्द्रिय पर्याप्तोके द्वारा जगप्रतरके पुन पुन अप
हृत करने पर शलाकाओंके साथ जगप्रतर समाप्त होता है, यह उक्त कथनका तारपर्य है ।

पचेन्द्रिय और पचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमें मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा
'कितने है ? असख्यात है ॥ ८० ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, इसलिये नहीं कहते हैं ।

कालकी अपेक्षा पचेन्द्रिय और पचेन्द्रिय पर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात
अनसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ८१ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, इसलिये नहीं कहते हैं ।

क्षेत्रकी अपेक्षा पचेन्द्रिय और पचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमें मिथ्यादृष्टियोंके द्वारा
सूच्यगुलके असख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे और सूच्यगुलके सख्यातवें भागके
वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ८२ ॥

१ × × मणुसादिगा समेदा ज । जगवारसखेज्जा ॥ गो जी १७५

२ पचेन्द्रियेण मिथ्यादृष्टयो संरूपेया क्षेत्रय प्रतरावरुपेयभागमभिता । स सि १, ८, प्रतिपु 'सखे
ज्जदिभागपडिभाएण' इति पाठ ।

‘जहा उदेसो तहा णिदेसो’ त्ति णायादो अंगुलस्म असखेज्जदिभागस्स वग्गो पंचिदियाण जगपदरस्स पडिभागो होदि । सच्चिअंगुलस्स सखेज्जदिभागस्म वग्गो जगपदरस्स पडिभागो होदि पंचिदियपज्जत्ताण । पडिभागो भागहारो त्ति एयद्धो । विगल्लिदियसुत्तेण मह पंचिदियसुत्त किमिदि ण वुत्त ? ण एस दोसो, उवरिमगुणपडिवण्णसुत्तस्स पंचिदियत्ताणुपट्टानणट्टत्तादो पुथ पंचिदियसुत्त वुत्तदे । तत्थ द्वियपंचिदियणिदेसो किमिदि णाणुपट्टानिज्जदे ? ण, एगजोगणिहिद्विद्विणमेगदेसस्स अणुवट्टणाभावादो ।

सपहि उवरि वुत्तमाणअप्पानहुगअणियोगद्दारसुत्तनलेण पुच्चइरिओअएमनलेण च एदेण सुत्तेण सच्चिद्विगल सयल्लिदियाणमनहारकालनिसेसे भणिस्सामो । तं जहा—आवलियाए अमखेज्जदिभाएण सच्चिअगुले भागे हिदे तत्थ जं लद्धं त वग्गिदे वेद्दियाणमवहारकालो होदि । तम्मि आनलियाए अमखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्ध तम्मि चैव पक्खिपुत्ते वेद्दियअपज्जत्तअवहारकालो होदि । त आनलियाए असखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्ध तम्मि चैव

‘उद्देशके अनुसार निर्देश होता है’ इस न्यायके अनुसार अंगुलके असख्यातवें भागका वर्ग पचेन्द्रिय जीवोंका प्रमाण लानेके लिये जगप्रतरका प्रतिभाग है, और सूच्यगुलके सख्यातवें भागका वर्ग पचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका प्रमाण लानेके लिये जगप्रतरका प्रतिभाग है । प्रतिभाग और भागहार ये दोनों एकार्थवाची शब्द हैं ।

शुद्धा—विकलेन्द्रियोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रके साथ पचेन्द्रियोंके प्रमाणका प्रतिपादक सूत्र क्यों नहीं कहा ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, आगे कहे जानेवाले गुणप्रतिपन्न जीवोंके सूत्रमें पचेन्द्रियत्वकी अनुवृत्ति करनेके लिये पृथक् रूपसे पचेन्द्रियोंके प्रमाणका प्रतिपादक सूत्र कहा ।

शुद्धा—विकलेन्द्रियोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रके साथ पचेन्द्रियोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रके एकत्र कर देने पर क्या स्थित पचेन्द्रिय पदके निर्देशकी अनुवृत्ति क्यों नहीं होती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, एक योगरूपसे निर्दिष्ट अनेक पदोंमेंसे एक देशकी अनुवृत्ति नहीं होती है ।

अब आगे कहे जानेवाले अन्वयद्वय अनुयोगद्धारके सूत्रके चलसे और पूर्वाचार्योंके उपदेशके चलसे इस सूत्रके द्वारा सूचित विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रिय जीवोंके अवहारकाल विशेषोंको कहते हैं । ये इसप्रकार हैं—आवलीके असख्यातवें भागसे सूच्यगुलके भाजित करने पर जो लब्ध भाग उसको योगित करने पर द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल होता है । द्वीन्द्रियोंके अवहारकालको आवलीके असख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध भाग उसे उसी द्वीन्द्रियोंके अवहारकालमें मिला देने पर द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । इस द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालको आवलीके असख्यातवें भागसे भाजित

पक्वित्ते तेइदियअनहारकालो होदि । पुणो तम्हि चेअ आपलियाए असखेज्जदिभाएण भागे हिदे ज लद्ध त तम्हि चेअ पक्वित्ते तेइदियअपज्जत्ताणमअनहारकालो होदि । एअ चउरिंदिय-चउरिंदियअपज्जत्त पचिंदिय पचिंदियअपज्जत्ताण जहाकमेण आपलियाए असखेज्जदि-भाएण खडिदेअसडेण अनहारकाला अब्भहिया कायव्वा । तदो पचिंदियअपज्जत्त अनहारकाले आपलियाए असखेज्जदिभाएण गुणिदे पटरगुलस्म सखेज्जदिभागो तेइदिय-पज्जत्ताण अनहारकालो होदि । तम्हि आपलियाए असखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्ध तम्हि चेअ पक्वित्ते तेइदियपज्जत्ताणमअनहारकालो होदि । तम्हि आपलियाए असखेज्जदि-भाएण भागे हिदे लद्ध तम्हि चेअ पक्वित्ते पचिंदियपज्जत्ताणमअनहारकालो होदि । तम्हि आप-लियाए असखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्ध तम्हि चेअ पक्वित्ते चउरिंदियपज्जत्तअनहार-कालो होदि । एअ सच्चअ रासिअमेसेण रासिमोअट्टाअिय लद्ध रूपूण करिय भागहार भूअआपलियाए असखेज्जदिभागो उप्पाएदव्वो । एदेहि अनहारकालेहि पुअ पुअ जगपदरे भागे हिदे अप्पणो दअपमाणाणि भअति । एअ सडिदादओ जाणिऊण अत्तअ ।

करने पर जो लघ्वा आये उसे उसी द्वीन्द्रिय अपर्याप्त अवहारकालमें मिला देने पर त्रीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल होता है । पुन इस त्रीन्द्रिय जीवोंके अवहारकालको आवलीके असख्यातमें भागसे भाजित करने पर जो लघ्वा आये उसे उसी त्रीन्द्रिय जीवोंके अवहारकालमें मिला देने पर त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकोंका अवहारकाल होता है । इसीप्रकार चतुरिन्द्रिय, चतुरि-न्द्रिय अपर्याप्त, पचेन्द्रिय और पचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके अवहारकालको प्रमले आवलीके असख्यातमें भागसे खडित करके उत्तरोत्तर एक एक भागसे अधिक करना चाहिये । अनन्तर पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके अवहारकालको आवलीके असख्यातमें भागसे गुणित करने पर प्रतरागुलके सख्यातमें भागप्रमाण त्रीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असख्यातमें भागसे भाजित करने पर जो लघ्वा आये उसे उसी त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालमें मिला देने पर द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । इस द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालको आवलीके असख्यातमें भागसे भाजित करने पर जो लघ्वा आये उसे उसी द्वीन्द्रिय पर्याप्त अवहारकालमें मिला देने पर पचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका अवहार-काल होता है । इस पचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके अवहारकालको आवलीके असख्यातमें भागसे भाजित करने पर जो लघ्वा आये उसे इसी पचेन्द्रिय पर्याप्त अवहारकालमें मिला देने पर चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । यहा सर्वत्र राशि विशेषसे राशिको अपर्याप्त करके जो लघ्वा आये उसमेंसे एक कम करके भागहाररूप आवलीका असख्यातमें भाग उत्पन्न कर लेना चाहिये । इन अवहारकालोंसे पृथक् पृथक् जगप्रतरके भाजित करने पर अपने अपने द्रव्यका प्रमाण आता है । यहाँ पर खडित आदिकका कथन समझ कर करना चाहिये ।

सासणसम्माइट्टिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥८३॥

पहुडिसहो क्रियविभेसणं । सासणसम्माइट्टिप्पहुडि आड करिएत्ति । एत्थ पुब्ब-
सुत्तादो पंचिदिय इडि अणुगइदे । तेण सच्चे गुणपडिवण्णा पंचिदिया चैव । सजोगि-
अजोगिकेवलीण पणट्ठासोसिंदियाण पंचिदियवण्णो कधं घडदे ? ण, पंचिदियजादिणाम-
कम्मोदयमरेक्खिय तेसिं पंचिदियवण्णसादो । एदेसिं पमाणपरूवणा मूलोषपरूवणाए तुल्ला ।
कुदो ? पंचिदियवदिग्गिजादीसु गुणपडिवण्णाभासादो ।

पंचिदियअपज्जत्ता द्व्यपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ८४ ॥

एदस्स सुत्तस्म सुगमो अत्थो ।

असंखेज्जामंखेज्जाहि ओसप्पिणि उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण

॥ ८५ ॥

एदस्स वि अत्थो सुगमो ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक
गुणस्थानमें पचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव सामान्य प्ररूपणाके समान पत्योपमके
असरूपतवें भाग हैं ॥ ८३ ॥

यहा पर प्रभृति शब्द क्रियाविशेषण हे । जिससे सामादनसम्यग्दृष्टि प्रभृतिका अर्थ
सासादनसम्यग्दृष्टिको आदि लेकर होता है । यहा पर पूर्व सूत्रसे पचेन्द्रिय पदकी अनुवृत्ति होती
है, इसलिये सपूर्ण गुणस्थानप्रतिपन्न जीव पचेन्द्रिय ही होते हैं, यह अभिप्राय निकल आता है ।

शंका—सयोगिकेवली और अयोगिकेवलियोंके सपूर्ण इन्द्रिया नष्ट हो गई हैं, अतएव
उनके पचेन्द्रिय यह सहा कैसे घटित होती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, पचेन्द्रियजाति नामकर्मकी अपेक्षा सयोगिकेवली और
अयोगिकेवलियोंके पचेन्द्रिय सहा बन जाती है ।

इन गुणस्थानप्रतिपन्न पचेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा मूलोष प्ररूपणाके समान
है, क्योंकि, पचेन्द्रियजातिको छोड़कर दूसरी जातियोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीव नहीं
पाये जाते हैं ।

पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात है ॥ ८४ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है ।

कालकी अपेक्षा पचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव असंख्यातासरयात अवसर्पिणियों
और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ८५ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ सुगम है ।

१ सासादनसम्यग्दृष्ट्यादयो योगकेन्यता सामायोजनरया । स सि १, ८.

खेत्तेण पंचिदियअपज्जत्तएहि पदरमवहिरदि अगुलस्स असंखे
उज्जदिभागवग्गपडिभाएण ॥ ८६ ॥

एद पि सुत्त सुग्ग चेत्त । एदाणि तिण्णि त्रि सुत्ताणि पंचिदियअपज्जत्तपटि-
बद्धाणि त्रिगलिदियापज्जत्तसुत्तं व पंचिदियमिच्छाइड्डिसुत्तमिह चेत किण्ण उत्ताणि त्ति
वुत्ते ण, पंचिदियअपज्जत्तेसु गुणपडिग्गणाभात्तपरूपणट्टत्तादे पुत्त सुत्तारमस्स । अपज्जत्त
काले पि पंचिदिएसु गुणपडिवण्णा जत्थि वेउत्थिय-ओरालियमिस्स-कम्मइयकायजोगेसु
सम्मत्त णाण-दसणोरलमादे । इदि चे, होट्टु णाम णिच्चत्ति पडि अपज्जत्तएसु गुणपडि-
वण्णाणमत्थित्त, अपज्जत्तणामकम्मोदएण सह गुणाण अपट्टाणविरोहा ।

भागभाग वत्तइस्सामो । सच्चजीवरासि सखेज्जसडे कए तत्थ बहुखडा सुट्टुमेइदिय
पज्जत्ता होंति । सेसमसखेज्जलोगमेत्तसखे कए तत्थ बहुखडा सुट्टुमेइदियअपज्जत्ता होंति ।
सेसमसखेज्जसखे कए बहुखडा चादरेइदियअपज्जत्ता होंति । सेसमणत्तसखे कए नहुखडा

क्षेत्रकी अपेक्षा पचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके द्वारा सच्च्यगुलके असख्यातों
भागके वर्गरूप प्रतिभागमे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ८६ ॥

यद सूत्र भी सुग्ग ही है । ये पूर्वार्क तीनों भी सूत्र पचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके
प्रमाणसे प्रतिबद्ध है ।

शुका—जिसप्रकार विकलेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणका प्रतिपादक सूत्र दत्तत्र न
होकर विकलेन्द्रिय ओर उनके पर्याप्तकोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रके साथ ही निषद्ध है,
उसीप्रकार पचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रोंमें ही पचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके
प्रमाणके प्रतिपादक सूत्र निरद्ध करके क्यों नहीं रहें ?

समाधान—ऐसा पूछने पर आचार्य कहते हैं कि नहीं, क्योंकि, पचेन्द्रिय
अपर्याप्तकोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रोंका पृथक् रूपसे आरभ पचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंमें
गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके अभावके प्ररूपण करनेके लिये किया है ।

शुका—अपर्याप्त कालमें भी पचेन्द्रियोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीव होते हैं, क्योंकि,
धैमिविकमिथ, औदारिकमिथ और कर्मणकाययोगमें सम्यग्दर्शन, सन्न्यग्ज्ञान तथा दर्शतकी
उपलधि पाई जाती है ?

समाधान—यदि ऐसा है तो निर्वृत्तिकी अपेक्षा अपर्याप्तकोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न
जीवोंका सद्भाष रहा आवे, परन्तु अपर्याप्त नामकर्मके उदयके साथ सम्यग्दर्शन आदि
गुणोंका सद्भाष माननेमें विरोध आता है ।

अथ भागभागको दत्तलाते हैं—सर्व जीवराशिके सख्यात खंड करने पर उनमेंसे
बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके असख्यात लोकप्रमाण खंड
करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके असख्यात
खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बाह्य एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त

वादेरइदियपज्जत्ता हेंति । सेसमणत्सडे कए नहुखडा अणिया हेंति । सेसरासीदो पलिदोमअसखेज्जदिभागमणोऊण सेमरसिमात्रलियाए अमखेज्जदिभाए ऊणेगखंड पि पुणो पुध वृणिय मेमनहुभागे घेत्तूण चत्तारि सरिसपुजे काऊण ठयेयत्ता । पुणो आप-
लियाए असखेज्जदिभाग विरलेऊण अणिदएगखंड समखंड करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडे पढमपुजे पत्तिरत्ते वेद्दिया हेंति । पुणो आपलियाए असखेज्जदिभाग विरलेऊण दिण्ण-
सेमेगखंड समखंड करिय दिण्णे तत्थ बहुभागे विदियपुंजे पक्खित्ते वेद्दिया हेंति । पुंण्व-
विरलणादो संपहि विरलणा किं सरिसा, किमधिया, किमूणा त्ति पुच्छिदे णत्थि एत्थ उवएसो । पुणो पि तप्पाओग्गमात्रलियाए अमखेज्जदिभाग विरलेऊण मेसेगखंड समखंड करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडे तदियपुजे पक्खित्ते चउरिदिद्या हेंति । मेसेगखंड चउत्थपुजे पक्खित्ते पंचदियमिन्नाइड्डी हेंति । वेद्दियरासिमखेज्जत्सडे कए नहुखडा वेद्दिय-
पज्जत्ता हेंति । सेमेगखंड तेसि पज्जत्ता हेंति । तेद्दिय-चउरिदिद्य-पंचिदिद्याणं पि एए वेए उत्तव्व । पुव्वमणिदपलिदोमस्त अमखेज्जदिभागरासिमखेज्जत्सडे कए

खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण धातुर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण अनिन्द्रिय जीव हैं । शेष राशिमेंसे पल्लोपमके असख्यातयें भागको घटा कर जो राशि अवशिष्ट रहे उसके आवलीके असख्यातयें भागप्रमाण खंड करके बहु भागमेंसे एक भागको भी पुन पृथक् स्थापित करके शेष बहुभागको लेकर चार समान पुज करके स्थापित कर देना चाहिये । पुन आवलीके असख्यातयें भागको विरलित करके उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर निकाल कर पृथक् रखे हुए एक खंडको समान खंड करके देयरूपसे दे देनेके पश्चात् उनमेंसे बहुभागोंको प्रथम पुजमें प्रक्षिप्त करने पर हीन्द्रिय जीवोंका प्रमाण होता है । पुन आवलीके असख्यातयें भागको विरलित करके उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर प्रथम पुजमें देनेसे शेष रहे हुए एक भागको समान खंड करके देयरूपसे देनेके पश्चात् उनमेंसे बहुभागको दूसरे पुजमें मिला देने पर हीन्द्रिय जीवोंका प्रमाण होता है ।

पूर्व विरलनसे यह दूसरा विरलन क्या समान है, क्या अधिक है, या क्या न्यून है ? ऐसा पूछने पर आचार्य उत्तर देते हैं कि इस विषयमें उपदेश नहीं पाया जाता है । फिर भी तद्योग्य आवलीके असख्यातयें भागको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर शेष एक खंडको समान खंड करके देयरूपसे दे देनेके अनन्तर उनमेंसे बहुभाग तीसरे पुजमें मिला देने पर चतुरिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण होता है । शेष एक खंडको चौथे पुजमें मिला देने पर पचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण होता है । हीन्द्रिय जीवरशिसे असख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण हीन्द्रिय अपर्याप्त जीव हैं । हीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पचेन्द्रियोंका भी इसीप्रकार कथन करना चाहिये । पहले घटा कर पृथक् रखी

बहुभाग अमज्जदमम्माइद्वीं होति । एव णेयव्य जाय अजोगिकेणलि चि । अद्या एइ
 दियाण भागाभागो एव वा वत्तव्वो । मव्वेइदियरामी अद्वेद्वेण छेत्तव्वो जाय वादरेइदिय
 रासी अचिद्विदो चि । तत्थ लद्धअद्वच्छेदणयमलागा निरलेऊण निग काऊण अण्णोण
 व्भामे रुदे अमखेज्जलोभमेत्तरामी उप्पज्जदि । एम रासि निरलेऊण एवेवस्स रूयस्स
 सव्वमेइदियरासि समसड करिय दिण्णे रूय पडि वादरेइदियाण पमाण पायेदि । तत्थ
 बहुगडा सुहुमेइदिया एयसड वादरेइदिया । पुणो सुहुमेइदियरासी अद्वेद्वेण छिदिदव्वो
 जाय सुहुमेइदियअपज्जत्तगसी अचिद्विदो चि । तत्थ अद्वच्छेदणए निरलिय निग करिय
 अण्णोण भास रूणेणुप्पणसखेज्जरामि निरलेऊण एवेवस्स रूयस्स सुहुमेइदियरासि समसड
 करिय दिण्णे रूय पडि सुहुमेइदियअपज्जत्तरासी पाणुणदि । तत्थ बहुगडा सुहुमेइदिय
 पज्जत्ता एयसड तेमिमपज्जत्ता हाति । एअ वादरेइदियाण पि वत्तव्वं । एत्थ सदिद्वी । त
 जहा— एइदियरासी वेळ्पणसदमेत्तो २५६ । सुहुमेइदियरासी चालीसव्वमहियवेसयमेत्तो

हृदयपथोपमके असख्यातयें भागरूप राशिके असख्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण
 अस्यतसम्यग्दाष्टि जीव हैं । इसीप्रकार अयोगिकेवलियोंके प्रमाण आनेतक ले जाना
 चाहिये । अथवा, एकेन्द्रियोंके भागाभागको इसप्रकार भी कहना चाहिये— वादर एकेन्द्रिय
 राशि प्राप्त होने तक एकेन्द्रिय राशिको आधी आधी करते जाना चाहिये । इसप्रकार
 अधार्थ करनेसे जितनी अर्धच्छेद शलाकाए प्राप्त होवें उनका विरलन करके और उस राशिके
 प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करने पर असख्यात लोकप्रमाण राशि उत्पन्न
 होती है । इस राशिको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति
 सर्व एकेन्द्रिय राशिको समान खड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके
 प्रति वादर एकेन्द्रिय जीवोंका प्रमाण प्राप्त होता है । वहा बहुभागप्रमाण
 सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव और एक भागप्रमाण वादर एकेन्द्रिय जीव हैं । पुन
 सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि प्राप्त होने तक सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवराशिको अधार्थरूपसे
 छेदित करना चाहिये । ऐसा करनेसे वहा जितने अर्धच्छेद प्राप्त हों उनका विरलन
 करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो
 असख्यात राशि उत्पन्न होवे उसका विरलन करके और उस राशिके प्रत्येक एकके प्रति
 सूक्ष्म एकेन्द्रिय राशिको समान खड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक
 एकके प्रति सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि प्राप्त होती है । वहा पर बहुभागप्रमाण सूक्ष्म
 एकेन्द्रिय पर्याप्त राशि है और एक भागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि है । इसीप्रकार
 वादर एकेन्द्रियोंका भी कथन करना चाहिये । वहा पर संदष्टि देते हैं । वहा इसप्रकार है—

एकेन्द्रिय जीवराशि दोसौ छप्पन २५६ है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय राशि दोसा चालीस
 २५० है । वादर एकेन्द्रियराशि सोलह १६ है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तराशि एकसौ अस्सी

२४०। वादेरेइंदियरासी सोलसमेचो १६। सुहुमेइंदियपज्जत्तरासी असीदिसयमेचो १८०। तेसिमपज्जत्ता सट्टी ६० हवति। वादेरेइंदियअपज्जत्ता नारस १२ हवति। तेसिं पज्जत्तो चत्तारि ४।

संपहि वेइंदियपज्जत्तरासीदो वेइंदिय-तेइंदियरासीण विसेसो कि सरिसो किमहिओ हीणो वा इदि बुत्ते असंसेज्जगुणो हवदि। त जहा। बुच्चे-तेइंदिय-चउरिंदियरासीणं विसेमादो वेइंदिय-तेइंदियरासिंविसेसो असंसेज्जगुणो। तं कथं जाणिज्जेदं? आइरिओव-देसादो भागाभागग्हि परुनिदवक्त्ताणादो य जाणिज्जेदं। तेइंदिय-चउग्दियरामिंविसेसो पुण तेइंदियपज्जत्तरासीदो नहुगो। त रुध णव्वदे? तेइंदियअपज्जत्तरासीदो चउरिंदियरासी विसेसहीणो ति उच्चअप्पाग्रहुगसुत्तादो। तेइंदियपज्जत्तरासीदो पुण वेइंदियपज्जत्तरासी विसेसहीणो। तं कथं णव्वदे? एदं पि अप्पाग्रहुगसुत्तादो चेन णव्वदे। तदो जाणिज्जेदं जहा वेइंदियपज्जत्तरासीदो विसेसाहियतीइंदियपज्जत्तरासीदो ग्रहुदरतीइदिय-चउरिंदिय-

है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तराशि साठ ६० है। वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि धारह १२ है और वादर एकेन्द्रिय पर्याप्त राशि चार ४ है।

अब द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे द्वीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय राशियोंका विशेष अर्थात् अतएव क्या समान है, क्या अधिक है या हीन है? ऐसा पूछने पर द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे असंख्यातगुणा है ऐसा समझना चाहिये। वह इसप्रकार है। आगे उसीको कहते हैं—त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय राशिके विशेषसे द्वीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय जीघराशिका विशेष असंख्यातगुणा है।

शंका—यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—आचार्योंके उपदेशसे और भागाभागमें प्ररूपण किये गये व्याख्यानसे जाना जाता है।

द्वीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय राशिका विशेष त्रीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे अधिक है।

शंका—यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—त्रीन्द्रिय अपर्याप्त राशिके प्रमाणसे चतुरिन्द्रिय राशि विशेष हीन है ऐसा अल्पग्रहत्वके सूत्रमें कहा है, अतएव उससे जाना जाता है।

त्रीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिका प्रमाण विशेष हीन है।

शंका—यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—यह भी अल्पग्रहत्वके सूत्रसे ही जाना जाता है।

इसलिये जाना जाता है कि जिसप्रकार द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिले त्रीन्द्रिय पर्याप्तराशि विशेष अधिक है और इससे त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय राशिका विशेष बढा है। त्रीन्द्रिय

रामिनिमेवादो अमखेज्जगुणो वेइदिय-नेइदियरासिनिमेसो वेइदियपज्जत्तेहिंतो असखज्जगुणो ति ।

अप्याबहुअ तिनिह सत्थाण परत्थाण-सव्वपरत्थाणभेएण । एत्थ ताण सत्थाणप्याबहुअ बुच्चदे । सव्वत्थोना वादरेइदियपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता असखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असखेज्जा लोगा । वादरेइदिया निसेसाहिया । केचियमेत्तेण ? सगपज्जत्तपत्तिउत्तमेत्तेण । सव्वत्थोना सुहुमेइदियअपज्जत्ता । तेसिं पज्जत्ता सखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सखेज्जा समया । सुहुमेइदिया निसेसाहिया । केचियमेत्तेण ? सगअपज्जत्तमेत्तेण । सव्वत्थोरो वेइदियअअहारकालो । विक्खंभसुई असखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविक्खंभसुईए अमखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअअहारकालो । अहवा सेटीए असखेज्जदिभागो असखेज्जाणि सेट्टिपदमज्जगुमूलाणि । को पडिभागो ? सगअअहारकालमगो । सो नि असखेज्जाणि घणगुलाणि सूचिअंगुलस्स असखेज्जदिभागमेत्ताणि । सेटी असखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अअहारकालो । दव्वमसखेज्जगुण । को गुणगारो ? विक्खंभसुई । पदमसखेज्जगुण । को गुणगारो ? अअहारकालो । लोगो असखेज्ज

और घनुरिन्द्रिय राशिके विशेषसे द्वीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय राशिका विशेष असख्यातगुणा है उसीप्रकार द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिसे द्वीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय राशिका विशेष असख्यातगुणा है ।

सस्थान, परस्थान और सर्व परस्थानके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे पदा पर पहले स्वस्थान अल्पबहुत्वको कहते हैं । वादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव उनसे असख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असख्यात स्तोक गुणकार है । वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंसे वादर एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? अपनी पर्याप्त राशिको प्रक्षिप्त करने रूप विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव उनसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? सख्यात समय गुणकार है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । द्वीन्द्रियोंके अवहारकाल सबसे स्तोक है । अवहारकालसे विक्खंभसुची असख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विक्खंभसुचीका असख्यातवा भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपने अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा, जगधेणीका असख्यातवा भाग गुणकार है जो जगधेणीके असख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपने अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है । यह प्रतिभाग भी सूक्ष्मगुलके असख्यातवें भागमात्र असख्यात घनागुलप्रमाण है । विक्खंभसुचीसे जगधेणी असख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । जगधेणीसे द्वीन्द्रियोंका द्रव्यप्रमाण असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विक्खंभसुचीके गुणकार है । द्वीन्द्रियोंके द्रव्यसे जगप्रतर असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने अवहारकालसे लोका असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगधेणी

गुणो । को गुणगरो ? सेठी । एवं वेईदियअपज्जत्ताणं पि वत्तव्व । एवं पज्जत्ताण पि । णरि जम्हि सच्चिअगुलस्स असखेज्जदिभागमेत्ताणि घणंगुलाणि त्ति वुत्तं तम्हि सच्चिअगुलस्स सखेज्जदिभागमेत्ताणि त्ति वत्तव्व । त्ति-चटु-पंचिदियाण तेसिं पज्जत्तापज्जत्ताणं पि जहाफ़मेण वेईदिय-वेईदियपज्जत्तापज्जत्ताण भगो । सासणादीण मूलोघसत्थाणभगो ।

परत्थाणे पयद । तत्थ ताण एइदियपरत्थाणं वुचदे- सव्वत्थोत्ता वादेरेइदिया । सुहुमेइदिया अमपेज्जगुणा । को गुणगरो ? असखेज्जा लोगा । तेसिं छेदणा वि असखेज्जा लोगा । एणं चेव विदियवियप्पो । णरि एइदिया निसेसाहिया । अहवा सव्वत्थोत्ता वादेरेइदियपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता असखेज्जगुणा । को गुणगरो ? असखेज्जा लोगा । सुहुमेइदियअपज्जत्ता अमपेज्जगुणा । को गुणगरो ? असखेज्जा लोगा । तेसिं छेदणा वि असखेज्जा लोगा । सुहुमेइदियपज्जत्ता सखेज्जगुणा । को गुणगरो ? सखेज्जसमया । चउत्थो वियप्पो एवं चेव । णरि एइदिया निसेसाहिया । केत्तियमेत्तेणं वादेरेइदियसाहिदिसुहुमेइदियअपज्जत्तामेत्तेण । सव्वत्थोत्ता वादेरेइदियपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता

गुणकार है । इसीप्रकार द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका भी अल्पबहुत्व कहना चाहिये । इसीप्रकार द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंका भी कहना चाहिये । इतना विशेष है कि जहा पर सूक्ष्मगुलके असख्यातवें भागमात्र घनागुल कहे हैं वहा पर सूक्ष्मगुलके सख्यातवें भागमात्र घनागुल कहना चाहिये । त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पचेन्द्रिय तथा इन्हींके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन यथाक्रमसे द्वीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय पर्याप्त और द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये । इन्द्रियमार्गणमें सासादन-सम्पगृष्टि आदिका स्वस्थान अल्पबहुत्व मूलोघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है । उनमेंसे पहले एकेन्द्रियोंके परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करते हैं— वादर एकेन्द्रिय जीव सबसे स्तोके हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव इनसे असख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असख्यात लोक गुणकार है । उनके अर्धच्छेद भी असख्यात लोक हैं । इसीप्रकार दूसरा विकल्प है । इतना विशेष है कि सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं । अथवा, वादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्तोके हैं । वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव वादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंसे असख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असख्यात लोक गुणकार है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंसे असख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असख्यात लोक गुणकार है । उनके अर्धच्छेद भी असख्यात लोकप्रमाण हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंसे सख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? सख्यात समय गुणकार है । चौथा विकल्प भी इसीप्रकार है । इतना विशेष है कि सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके प्रमाणसे एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणमें वादर एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणको मिला देने पर जो प्रमाण हो तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । वादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्तोके हैं । वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव

तस्सेव अपज्जत्तदव्वमससेज्जगुणं । को गुणगारो ? आरलियाए असखेज्जदिभागस
सखेज्जदिभागो । वेइदियदव्व मिससाहिय । केत्तियमेत्तो ? आरलियाए अमसेज्जदिभाएण
खडिदसगअपज्जत्तमेत्तो । पदरमससेज्जगुण । को गुणगारो ? उडदियअवहारकालो । लोणो
अमखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेठी । एण तीइदिय-चउरिदियारणं । एण पचिदियाण
पि । णरि अजोगिभगवतमाइ काऊण वचव्व ।

मव्वपरत्थाणे पयद । सव्वत्थेत्तमजोगिकेवल्लिदव्व । चत्तारि उव्वसामगा सखेज्जगुणा ।
चत्तारि खवगा मसेज्जगुणा । सजोगिकेवल्लिदव्व संसेज्जगुण । अप्पमत्तसजददव्व
मखेज्जगुण । पमत्तसजददव्व ससेज्जगुण । असजदअवहारकालो असखेज्जगुणो ।
उपरि पलिदोवम चि ओष । तदो वीइदियअवहारकालो अमसेज्जगुणो । को गुणगारो ?
सगअवहारकालस्स मसेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवम । अह्मा पद
गुलस्स अमसेज्जदिभागो अमसेज्जजाणि सच्चिअगुलाणि । को पडिभागो ? आरलियाए
अमखेज्जदिभाएण गुणिदपलिदोवम । तस्सेव अपज्जत्तअवहारकालो विमेमहिओ ।

त्रिष्वसर्वा गुणकार है । उन्हीं द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका द्रव्य द्वीन्द्रिय पद्याप्त जीवोंके
द्रव्यसे असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आधलीके असख्यातवें भागका सख्यातवा भाग
गुणकार है । द्वीन्द्रिय जीवोंका द्रव्य द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके द्रव्यसे विशेष अधिक
है । कितनामात्र विशेष अधिक है ? द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणको आधलीके असख्यातवें
भागसे खडित करके जो लब्ध आवे तन्मात्र विशेष अधिक है । जगप्रतर द्वीन्द्रिय जीवोंके
द्रव्यसे असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल गुणकार है ।
जगप्रतरसे लोक असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगत्रेणी गुणकार है । इसीप्रकार
द्वीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवोंका परस्थान अल्पबहुत्व है । तथा इसीप्रकार पचेन्द्रिय
जीवोंका भी परस्थान अल्पबहुत्व है । इतना विशेष है कि पचेन्द्रिय जीवोंका परस्थान
अल्पबहुत्व कहते समय अयोगी भगवान्को आदि करके उसका कथन करना चाहिये ।

अथ सर्वपरस्थान अल्पबहुत्वमें प्रकृत विषयको कहते हैं— अयोगिवेशलियोंका
द्रव्यप्रमाण सद्यसे श्लोक है । चारों गुणस्थानोंके उपशामक अयोगिवेशलियोंसे सख्यातगुणे
हैं । चारों गुणस्थानोंके श्लोक उपशामकोंसे सख्यातगुणे हैं । सयोगिवेशलियोंका द्रव्यप्रमाण
सपकोंसे सख्यातगुणा है । अप्रमत्तसयतोंका प्रमाण सयोगियोंके प्रमाणसे सख्यातगुणा
है । प्रमत्तसयतोंका प्रमाण अप्रमत्तसयतोंके प्रमाणसे सख्यातगुणा है । असयतोंका
अवहारकाल प्रमत्तसयतोंके प्रमाणसे असख्यातगुणा है । इसके ऊपर पर्योपम तत्र ओषके
समान है । पर्योपमसे द्वीन्द्रियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने
अवहारकालका असख्यातवा भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पर्योपम प्रतिभाग
है । अथवा, प्रतरागुलका सख्यातवा भाग गुणकार है जो असख्यात सख्यागुलप्रमाण है ।
प्रतिभाग क्या है ? आधलीके असख्यातवें भागसे पर्योपमको गुणित करके जो लब्ध आवे
उतना प्रतिभाग है । उन्हीं द्वीन्द्रियोंके अपर्याप्तक जीवोंका अवहारकाल द्वीन्द्रियोंके

केचित्तियमेत्तो ? आत्रलियाए असखेज्जदिभाएण खडिदमेत्तो । एवं तेइंदिय-तेइंदियअपज्जत्त चउत्तंदिय चउत्तंदियअपज्जत्त पंचिदियं पंचिदियअपज्जत्ताणं अवहारकाला कमेण विसेसा हिया । ततो तीइंदियपज्जत्तअवहारकालो असखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असखेज्जदिभागस्म सखेज्जदिभागो । वेइंदियपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिया । केचित्तिय-मेत्तो ? आत्रलियाए असखेज्जदिभाएण खडिदतीइंदियपज्जत्तअवहारकालमेत्तो विसेसो । पंचिदियपज्जत्तअवहारकालो विसेसो । चउत्तंदियपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिया । तस्सेण विक्खमसूई असखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पुब्ब भणिदो । पंचिदियपज्जत्तविक्खंमसूई विसेसाहिया । वेइंदियपज्जत्तविक्खंमसूई विसेसाहिया । तेइंदियपज्जत्तविक्खंमसूई विसेसाहिया । पंचिदियअपज्जत्तविक्खंमसूई असखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए असखेज्जदिभागस्म सखेज्जदिभागो । पंचिदियविक्खंमसूई विसेसाहिया । केचित्तियमेत्तेण ? आत्रलियाए असखेज्जदिभाएण खडिदपंचिदियअपज्जत्तविक्खंमसूचित्तेण । एत्तं णेयवत्तं

अवहारकालसे विशेष अधिक है । कितनामात्र विशेष अधिक है ? आवलीके असख्यातवें भागसे द्वीन्द्रियोंके अवहारकालको खडित करके जो एक भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेष अधिक है । इसीप्रकार त्रीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त, चतुरिन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, पचेन्द्रिय और पचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके अवहारकाल भी क्रमसे विशेष अधिक हैं । पचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके अवहारकालसे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीके असख्यातवें भागका सख्यातया भाग गुणकार है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालसे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंका अवहारकाल विशेष अधिक है । कितनामात्र विशेष अधिक है ? आवलीके असख्यातवें भागसे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालको खडित करके जो भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालसे पचेन्द्रिय पर्याप्तकोंका अवहारकाल विशेष अधिक है । पचेन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालसे चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकोंका अवहारकाल विशेष अधिक है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालसे उर्हकी विष्कमसूची असख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? पहले कहा जा चुका है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कमसूचीसे पचेन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कमसूची विशेष अधिक है । पचेन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कंमसूचीसे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कमसूची विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कंमसूचीसे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कमसूची विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कमसूचीसे पचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंकी विष्कमसूची असख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? आवलीके असख्यातवें भागका सख्यातया भाग गुणकार है । पचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंकी विष्कमसूचीसे पचेन्द्रियोंकी विष्कमसूची विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? आवलीके असख्यातवें भागसे पचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंकी विष्कंम

जान चउरिन्द्रियअपज्जत्त चउरिन्द्रिय-तेइन्द्रियअपज्जत्त तेइन्द्रिय-वेइन्द्रियअपज्जत्त वेइन्द्रियाणं वि
 करमभसूईओत्ति । मेढी असखेज्जगुणा । को गुणगारो ? वेइन्द्रियअवहारकालो । चउरि-
 द्रियपज्जत्तद्वय असखेज्जगुणा । को गुणगारो ? विक्खमभसूई । पंचिन्द्रियपज्जत्तद्वय मिस
 साहिय । वेइन्द्रियपज्जत्तद्वय मिससाहिय । तेइन्द्रियपज्जत्तद्वय मिससाहिय । पंचिन्द्रिय
 अपज्जत्तद्वय अमखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आपलियाए असखेज्जदिभागो । पंचिन्द्रिय
 द्वय मिससाहिय । केत्तियमेत्तेण ? आपलियाए असखेज्जदिभाएण खड्दिदपंचिन्द्रियअपज्जत्त
 द्वयमेत्तेण । एअं चउरिन्द्रियअपज्जत्त-चउरिन्द्रिय-तेइन्द्रियअपज्जत्त तेइन्द्रिय-वेइन्द्रियअपज्जत्त
 वेइन्द्रियाण दव्वाणि जहाकमेण मिससाहियाणि । तदे पदरमसखेज्जगुणा । को गुणगारो ?
 वेइन्द्रियअवहारकालो । लोमो असखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सेठी । अणिन्द्रिया अणतगुणा ।
 को गुणगारो ? अमरमिद्विएहि अणतगुणा । सिद्धाणमसखेज्जदिभागो । को पडिभागो ?
 लोमो । नादेरेइन्द्रियपज्जत्ता अणतगुणा । को गुणगारो ? अमरमिद्विएहि अणतगुणा, मिद्वेहि

सूचीको खडित करके जो भाग लघ्व आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । इसी
 प्रकार चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त, द्वीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय
 अपर्याप्त और द्वीन्द्रिय जीवोंकी विष्कभसूची आनेतक ले जाना चाहिये । द्वीन्द्रिय जीवोंकी
 विष्कभसूचीमे जगधेणी असख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल
 गुणकार है । जगधेणीसे चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका द्रव्य असख्यातगुणा है । गुणकार
 क्या है ? अपनी विष्कभसूची गुणकार है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकोंके द्रव्यसे पंचेन्द्रिय पर्याप्त
 जीवोंका द्रव्य विशेष अधिक है । पंचेन्द्रिय पर्याप्त द्रव्यसे द्वीन्द्रिय पर्याप्त द्रव्य विशेष
 अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्त द्रव्यसे त्रीन्द्रिय पर्याप्त द्रव्य विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्त
 द्रव्यसे पंचेन्द्रियोंका अपर्याप्त द्रव्य असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका अस
 ख्यातया माग गुणकार है । पंचेन्द्रिय अपर्याप्त द्रव्यसे पंचेन्द्रिय द्रव्य विशेष अधिक
 है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? आवलीके असख्यातयें भागसे पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
 द्रव्यको खडित करके जो लघ्व आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । इसीप्रकार चतुरिन्द्रिय
 अपर्याप्त, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त, द्वीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय अपर्याप्त और द्वीन्द्रिय
 जीवोंका द्रव्यप्रमाण यथाक्रमसे विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय द्रव्यप्रमाणसे जगप्रतर असख्यात
 गुणा है । गुणकार क्या है ? द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक
 असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगधेणी गुणकार है । लोकसे अनेन्द्रिय जीवोंका
 प्रमाण अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? अभव्यसिद्ध जीवोंसे अनन्तगुणा और निद्रोंकी
 असख्यातया माग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? लोकका प्रमाण प्रतिभाग है । बाहर
 पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंका प्रमाण अनेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ?
 अभव्यसिद्धोंसे भी अनन्तगुणा, सिद्धोंसे भी अनन्तगुणा, जीवराशिके प्रथम घर्गमूलसे भी

नि अणंतगुणो जीवमगमूलस्म नि अणंतगुणो सच्चजीवरासिस्त असखेज्जदिमागस्त अण-
तिमभागो । को पडिभागो ? अणिदिया । तेमिमपज्जत्ता असखेज्जगुणा । वादरेइंदिया
निसेमाहिया । सुहुमेइदियअपज्जत्ता असखेज्जगुणा । एइदियअपज्जत्ता निसेसाहिया ।
सुहुमेइदियपज्जत्ता सखेज्जगुणा । एइदियपज्जत्ता निसेसाहिया । सुहुमेइंदिया निसे-
साहिया । एइंदिया निसेसाहिया ।

एव इदियमगणा समत्ता ।

कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया तेइउकाया वाउकाइया
वादरपुढविकाइया वादरआउकाइया वादरतेउकाइया वादरवाउकाइया
वादरवणफइकाइया पत्तेयसरीरा तस्सेव अपज्जत्ता सुहुमपुढविकाइया
सुहुमआउकाइया सुहुमतेउकाइया सुहुमवाउकाइया तस्सेव पज्जत्ता-
पज्जत्ता द्व्वपमाणेण केवडिया, असखेज्जा लोगा ॥ ८७ ॥

अनन्तगुणा और सर्व जीवराशिके असख्यातयें भागका अनन्तवा भाग गुणकार है ।
प्रतिभाग क्या है ? अनिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण प्रतिभाग है । वादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके
प्रमाणसे उन्हींके अपर्याप्तक जीव असख्यातगुणे हैं । इनमे वादर एकेन्द्रिय जीव विशेष
अधिक हैं । इनसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव असख्यातगुणे हैं । इनसे एकेन्द्रिय
अपर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं । इनसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सख्यातगुणे हैं । इनसे
एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव विशेष अधिक ह । इनसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं । इनसे
एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं ।

इसप्रकार इन्द्रियमार्गणा समाप्त हुई ।

कायानुवादसे पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक जीव
तथा वादर पृथिवीकायिक, वादर अप्कायिक, वादर तेजस्कायिक, वादर वायुकायिक,
वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीव तथा इन्हीं पाच वादरसबन्धी अपर्याप्त जीव,
सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म अप्कायिक, सूक्ष्म तेजस्कायिक, सूक्ष्म वायुकायिक जीव तथा
इन्हीं चार सूक्ष्मसबन्धी पर्याप्त जीव और अपर्याप्त जीव, ये सब प्रत्येक द्रव्यप्रमाणकी
अपेक्षा कितने हैं ? असख्यात लोकरप्रमाण है ॥ ८७ ॥

१ कायानुवादेन पृथिवीकायिका अप्कायिकास्तेज कायिका वायुकायिका असखेयलोका । स वि. १, ८
आउडुवासेवा लोके अण्णोणसगुणे तेज । मूल-जल-वाऊ अहिया पडिभागो अमखल्लोको दु ॥ गो जी २०४
अपदिद्विदपचेवा असखल्लोणममाणया होति । तच्चो पदिद्विदा पुण असखल्लोणेण सगुणिदा ॥ गो जी २०५ असखया
सेता । पञ्चस २, ९ पचेयपज्जवणकाइयाउ पपर इति लोगस्त । अशुलअसखमाणेण माइय भूदगतणू य । आबल्लिवगो
अतरावली य छणिओ हु मापरा तेऊ । वाऊ य लोगसख तेवतिगमसखिया लोगा ॥ पञ्चस २, १०-११ असखिजा

एतत् पृथ्वी का-जे मरीं जेमि ते पुढनीकाया ति ण वचत्तं, विग्गहर्णंए वट्ट
माणण जीरणमकटत्तपसगादो । पुणो रुवं जुच्चदे ? पुढनिकाइयणामरुम्मोदयरोतो
जीना पुढनिकाइया ति वुच्चति । पुढनिकाइयणामरुम्म ण कर्हिं पि वुच्चमिदि चे ण, तस्म
एइन्द्रियजादिणामरुम्मत्तभूदत्तादो । एउ सदि कम्मण सरत्ताणियमो सुत्तसिद्धो ण घडोद
त्ति वुत्ते जुच्चदे । ण सुत्ते कम्मणि अट्टेउ अट्टेदालपयमेरेत्ति, सरत्तपडिमहपिघायय
एवकाराभावादो । पुणो केत्तियाणि कम्मणि हाति ? हय-गय-निय-फुल्लधुम-सल्लह-मक्क-
पुदेहि-गोमिदादीणि जेत्तियाणि कम्मफलाणि लोणे उरल्लभते कम्मणि पि तत्तियाणि
चेन । एव सेसकट्याण पि वत्तन् । वादरणामरुम्मोदयमहिदपुढनिकाइयादजा
वादरा । धूलमरीरण जीरण वादरत्तं क्खिण जुच्चदे ? ण, वादरेइदियओगाहणादो

यहा पर पृथ्वी है काय अर्थात् शरीर जिनके उन्हें पृथ्वीकाय जीव कहते हैं,
ऐसा नहीं कहना चाहिये, क्योंकि, पृथ्वीकायका ऐसा अर्थ करने पर विप्रवृत्तियोंमें विप्रमान
जीवोंके अकारित्वना अर्थात् पृथ्वीकायित्वके अभावका प्रसंग आ जाता है ।

शुक्रा—तो फिर पृथ्वीकायिकका अर्थ कैसा कहना चाहिये ?

समाधान—पृथ्वीकाय नामकर्मके उदयसे युक्त जीवोंको पृथ्वीकायिक कहते
हैं, इसप्रकार पृथ्वीकायिक शब्दका अर्थ करना चाहिये ।

शुक्रा—पृथ्वीकायिक नामकर्म कहीं भी अर्थात् कर्मके भेदोंमें नहीं कहा गया है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, पृथ्वीकाय नामका कर्म एकेन्द्रिय नामक नामकर्मके
भितर अन्तर्भूत है ।

शुक्रा—यदि ऐसा है तो सूत्रसिद्ध कर्मोंकी संख्याका नियम नहीं रह सकता है ?

समाधान—ऐसा प्रश्न करने पर आचार्य कहते हैं कि सूत्रमें कर्म आठ ही अथवा
एकसौ अठ्ठासी ही नहीं कहे हैं, क्योंकि, आठ या एकसौ अठ्ठासी संख्याको छोड़कर
दूसरी संख्याओंका प्रतिषेध करनेवाला 'एव' ऐसा पद सूत्रमें नहीं पाया जाता है ।

शुक्रा—तो फिर कर्म कितने हैं ?

समाधान—लोभमें घोडा, हाथी, बुक (भेड़िया) भ्रमर, शलभ, मच्छुण, उद्देहिका
(दीमक), गोमी और इन्द्र आदि रूपसे जितने कर्मोंके फल पाये जाते हैं, कर्म भी उतने
ही होते हैं ।

इसीप्रकार शेष कायिक जीवोंके विषयमें भी कथन करना चाहिये । उनमें वादर
नामकर्मके उदयसे युक्त पृथ्वीकायिक आदि जीव वादर कहलाते हैं ।

शुक्रा—स्थूल शरीरवाले जीवोंको वादर क्यों नहीं कहा जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, वेदनक्षेत्रविधानसे वादर एकेन्द्रियोंकी अवगाहनासे

सुहुमेइदियओगाहणाए वेदणखेत्तविहाणादो बहुत्तोत्तलंभा । तदो पडिहम्ममाणसरीरो वादरं । अण्णेहि पोग्गलेहि अपडिहम्ममाणसरीरो जीवो सुहुमो चि वेत्तच्च । एकमेकं प्रति प्रत्येकम्, प्रत्येकं शरीरं येषां ते प्रत्येकशरीराः । एत्थं पत्तेयसरीरणिदेसो साहारणसरीरणणफड्काइयपडिमेहफलो । पुटत्रिकाइयादओ जीवा पत्तेयसरीरा चेर । तेसिं पत्तेयउत्तमो सुचे किण्ण कदो ? तत्थं पत्तेयसरीरस्मं समनो चेर अममनो णत्थि चि ण तेण ते तिसेसिज्जते 'सति समने व्यभिचारे च विशेषणमर्थउत्तमति' इति न्यायात् । सुहुमणामकम्मोदयमहिदपुटत्रिकाइयादओ जीवा सुहुमा हवति । धोत्तसरीरोगाहणाए उट्टमाण जीवा सुहुमा चि ण घेप्पति, सुहुमेइदियओगाहणादो वादेइदियओगाहणाए वेदणखेत्तविहाणसुत्तादो योत्तुत्तलंभा । अपज्जत्तणामकम्मोदयसहिदपुटत्रिकाइयादओ अपज्जत्ता चि वेत्तच्च णाणिप्पणसरीरा, पज्जत्तणामकम्मोदयअणिप्पणसरीराण पि गहणप्पसंगादो । तहा पज्जत्तणामकम्मोदयउत्तो जीवा पज्जत्ता । अण्णहा णिप्पणसरीरजीवाणमेत्तं गहणप्प

सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंकी अथगाहना बड़ी पारि जाती है, इसलिये स्थूल शरीरघाले जीवोंको यादर नहीं कह सकते हैं । अतः जिनका शरीर प्रतिघातयुक्त है वे यादर हैं और अन्य पुट्रकोंसे प्रतिघातरहित जिनका शरीर है वे सूक्ष्म जीव हैं, यह अर्थ यहा पर यादर और सूक्ष्म शब्दसे लेना चाहिये ।

एक एक जीवके प्रति जो शरीर होता है उसे प्रत्येक कहते हैं । जिन जीवोंका प्रत्येकशरीर होता है वे प्रत्येकशरीर जीव हैं । यहाँ सूत्रमें 'प्रत्येकशरीर' पदका निर्देश साधारणशरीर धनस्पतिकायिकके प्रतिषेधके लिये किया है । पृथिवीकायिक आदि जीव प्रत्येकशरीर ही होते हैं ।

शंका—सूत्रमें पृथिवीकायिक आदि जीवोंको प्रत्येक कहा क्यों नहीं भी गई है ?

समाधान—उन पृथिवीकायिक आदि जीवोंमें प्रत्येक शरीरका सम्भव ही है असंभव नहीं है, इसलिये प्रत्येक पदसे उन्हें विशेषित नहीं किया गया है, क्योंकि, व्यभिचारके होने पर, अथवा उसकी समावना होने पर, दिया गया विशेषण सार्थक होता है, ऐसा न्याय है ।

सूक्ष्म नामकर्मके उदयसे युक्त पृथिवीकायिक आदि जीव सूक्ष्म होते हैं । यहा शरीरकी स्तोक अथगाहनाने विद्यमान जीव सूक्ष्म होते हैं, ऐसा अर्थ नहीं लिया गया है, क्योंकि घेदनाक्षेत्रविधानके सूत्रसे सूक्ष्म एकेन्द्रियोंकी अवगाहनाकी अपेक्षा यादर एकेन्द्रियोंकी अथगाहना भी स्तोक पारि जाती है । अपर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त यादर पृथिवीकायिक आदि जीव अपर्याप्त हैं, ऐसा अर्थ यहा पर लेना चाहिये । किंतु जिनका शरीर अभी निष्पन्न नहीं हुआ अर्थात् जिनकी शरीर पर्याप्त पूर्ण नहीं हुई है वे अपर्याप्त हैं, ऐसा अर्थ यहा नहीं लेना चाहिये, क्योंकि, ऐसा अर्थ लेने पर पर्याप्त नामकर्मका उदय रहते हुए भी जिनका शरीर पूर्ण नहीं हुआ है अपर्याप्त पदसे उनके भी ग्रहणका प्रसंग आ जाता है । उसीप्रकार पर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त जीव पर्याप्त हैं, प्रकृतमें पर्याप्त पदसे ऐसा अर्थ लेना चाहिये, अन्यथा जिन जीवोंका शरीर निष्पन्न हो चुका है पर्याप्त पदसे उनका ही ग्रहण होगा ।

ण ने पत्तेयसरीरा । एदे छन्नीसरासीओ दव्यपमाणेण असंयेजलोगमेत्ता हवति । एत्थ विसेस पदुप्पायणोपायाभावादो काल-येत्तेहि परूणा ण कदा ।

सपदि सुत्तानिरुद्धेणाडरियपरपरागदोनएसेण तेउवाइयरासिउप्पायणविहाणं वत्त इस्सामो । त जहा- एग घणलोग सलागभृद् ठपिय अररेग घणलोग निरलिय एक्केवस्स रूपस्स एक्केव घणलोग दाऊण वग्गिदसन्नग्गिद करिय सलागरामीदो एगरूपमवणेयं । दाथे एक्का अणोण्णगुणगरसलागा लद्धा हन्दि । तस्सुप्पण्णराभिस्स पलिदोनमस्स

इनमेंसे प्रथम गतिको छोड़कर दोप तीन गतिया विग्रह अर्थात् मोढेरूप हैं । जब वनस्पति प्राणिक जीव ऐसी मोढेवाली गतिसे न्यूनतन शरीरको ग्रहण करता है तब उसके एक, दो या तीन समयतक साधारण या प्रत्येक नामकर्मका उदय नहीं होता है, क्योंकि, प्रत्येक या साधारण नामकर्मका उदय शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयसे लगाकर होता है । इसी अभिप्रायको ध्यानमें रखकर शास्त्रकारने यह शका की है कि जतक वनस्पतिकायिक जीव विग्रहगतिमें रहता है तबतक उसके उक्त दोनों धर्मोंमेंसे किसी भी कर्मका उदय नहीं पाया जाता है, इसलिये उसकी साधारणशरीर और प्रत्येकशरीर इन दोनोंमें किसी भी भेदमें गणना नहीं हो सकती है । इस शकाका समाधान दो प्रकारसे किया गया है । एक तो यह कि यद्यपि विग्रह अर्थात् मोढेवाली गतिमें उक्त दोनों धर्मोंमेंसे किसी कर्मका उदय नहीं पाया जाता है, यह ठीक है; फिर भी प्रत्यासत्तिते ऐसे जीवको भी प्रत्येक या साधारण कह सकते हैं । अर्थात् ऐसा जीव एक दो या तीन समयके अनन्तर ही प्रत्येक या साधारण नामकर्मके उदयसे युक्त होनेवाला है, अतएव उपचारसे उसे प्रत्येक या साधारण कहनेमें कोई आपत्ति नहीं है । दूसरे विग्रहका अर्थ मोझा न लेकर शरीर ले लेने पर इपुगतिकी अपेक्षा विग्रहगतिमें अर्थात् न्यूनतन शरीरके ग्रहण करनेके लिये होनेवाली गतिमें साधारण या प्रत्येक नामकर्मका उदय पाया ही जाता है, क्योंकि, इपुगतिसे उत्पन्न होनेवाला जीव आहारक ही होता है ।

ये पूर्वाक्त छन्नीस जीवराशियां द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा असंख्यात लोकप्रमाण हैं । यहाँ पर विशेषरूपसे प्रतिपादन करनेका कोई उपाय नहीं पाया जाता है, इसलिये काल और क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा इन छन्नीस जीवराशियोंकी प्ररूपणा नहीं की ।

अथ सूत्रानिरुद्ध आचार्य परपरासे आये हुए उपदेशके अनुसार तेजस्वायिक जीव राशिके प्रमाणके उत्पन्न करनेकी विधिकी बतलाते हैं । यह इसप्रकार है— एक धनलोकको शलाकारूपसे स्थापित करके और दूसरे धनलोकको विरलित करके उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति धनलोकको देयरूपसे देकर और परस्पर वर्गितलघागित करके शलाकाराशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये । तब एक अन्योन्य गुणकार शलाका प्राप्त होती है ।

असंखेज्जादिभागमेत्तवग्गमलागा हवन्ति । नस्सद्धच्छेदणयसलागा असंखेज्जा लोगा । रासी वि असंखेज्जलोगमेत्तो जादो । पुणो उट्ठिदमहारासि निरलेऊण तत्थ एकेकस्स रुवस्स उट्ठिदमहारासिपमाण दाऊण वग्गिदसंवग्गिद करिय सलागगसीदो अणेग रूमरणेयव्वं । ताथे अण्णोण्णगुणगारसलागा दोण्णि । वग्गमलागा अद्धच्छेदणयसलागा रासी च असंखेज्जा लोगा । एवमेदेण कमेण णेदच्च जाव लोगमेत्तमलागरासी समत्तो चि । ताथे अण्णोण्ण-गुणगारसलागपमाणं लोगो । सेसतिगमसंखेज्जा लोगा । पुणो उट्ठिदमहारासि निरलेऊण तं चेय मलागभूद उयिय विरलिय-एक्केक्कस्स रूमस्स उप्पणमहारासिपमाणं दाऊण वग्गिद-सवग्गिद करिय सलागरासीदो एगरूमरणेयव्वं । ताथे अण्णोण्णगुणगारसलागा लोगो रूवाहिओ । सेसतिगमसंखेज्जा लोगा । पुणो उप्पणरासि विरलिय रूवं पडि उप्पण-रासिमेव दाऊण वग्गिदसंवग्गिद करिय सलागरासीदो अण्णेगरूमरणेयव्वं । तदो अण्णोण्ण-गुणगारसलागाओ लोगो दुरूवाहिओ । सेसतिगमसंखेज्जा लोगा । एवमेदेण कमेण

धर्गितसधर्गित करनेसे उत्पन्न हुई उस राशिकी धर्गशलाकाए पस्थोपमके असख्यातवै भागमान होती हैं, उस उत्पन्न राशिकी अर्धच्छेदशलाकाए असख्यातलोकप्रमाण होती हैं और वद्ध उत्पन्न राशि भी असख्यात लोकप्रमाण होती है । पुन इस उत्पन्न हुई महाराशिकी विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उसी उत्पन्न हुई महाराशिकी देय रूपसे देकर परस्पर धर्गितसधर्गित करके शलाकाराशिमेंसे दूसरीवार एक कम करना चाहिये । तब अन्योन्य गुणकार शलाकाए दो होती हैं और धर्गशलाकाए अर्धच्छेदशलाकाए, तथा उत्पन्नराशि असख्यात लोकप्रमाण होती हैं । इसीप्रकार लोकप्रमाण शलाकाराशि समाप्त होनेतक इसी क्रमसे ले जाना चाहिये । तब अन्योन्य गुणकार शलाकाओंका प्रमाण लोक होगा और शेष तीन राशिया अर्थात् उस समय उत्पन्न हुई महाराशि और उसकी धर्गशलाकाए तथा अर्धच्छेदशलाकाए असख्यात लोकप्रमाण होंगी । पुनः इसप्रकार उत्पन्न हुई महाराशिकी विरलित करके और इसी राशिकी शलाकारूपसे स्थापित करके विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उसी उत्पन्न हुई महाराशिके प्रमाणको देयरूपसे देकर धर्गितसधर्गित करके शलाकाराशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये । तब अन्योन्य गुणकार शलाकाए एक अधिक लोकप्रमाण होती हैं । शेष तीनों राशिया अर्थात् उत्पन्न हुई महाराशि, धर्गशलाकाए और अर्धच्छेदशलाकाए असख्यात लोकप्रमाण होती हैं । पुनः उत्पन्न हुई महाराशिकी विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उसी उत्पन्न हुई महाराशिकी देकर धर्गितसधर्गित करके शलाकाराशिमेंसे दूसरीवार एक घटा देना चाहिये । उस समय अन्योन्य गुणकार शलाकाए दो अधिक लोकप्रमाण होती हैं । शेष तीनों राशिया असख्यात लोकप्रमाण

दुरूणुक्कस्ममेज्जमेचलोगसलागासु दुरूणहियलोगम्हि परिट्टासु चत्तारि पि अससेजा लोगा ह्वति । एउ णेयव्व जाउ विदियवाउट्टिदसलागरासी समत्तो चि । ताधे पि चत्तारि रि अससेजा लोगा । पुणो उट्टिदरासिं सलागभूद ठणिय अवरेगमुट्टिदमहारामिपमाण निर लेऊण उट्टिदगहारामिपमाणमेउ रूप षडि दाऊण वग्गिदसग्गिद करिय सलागरामीदो एग रूपमवणेयव्व । ताधे चत्तारि पि अससेजा लोगा । एवमेदेण कमेण णेदव्व जाउ तदियवार ठणियसलागरासी समत्तो चि । ताधे चत्तारि पि अससेजा लोगा । पुणो उट्टिदमहारामिं निप्पट्टिरामिं काऊण तत्थेणं सलागभूदं ट्टणिय अण्णेगरासिं निरलेऊण तत्थ एक्केक्कस्स रूपस्स एगगसिपमाणं दाऊण वग्गिदसग्गिद करिय सलागरासीदो एगरूपमवणेयव्व । एव पुणो पुणो करिय णेयव्व जाउ अदिक्कतअण्णोण्णगुणगारसलागाहि ऊणचउत्थवारट्टिद अण्णोण्णगुणगारमलगरासीं समत्तो चि । ताधे तेउकाइयरासी उट्टिदो ह्वदि' । तस्म

होती है । इसप्रकार इसी क्रमसे दो कम उत्पन्न सत्यातमात्र लोकप्रमाण अन्योन्य गुणकार शलाकाओंके दो अधिक लोकप्रमाण अन्योन्य गुणकार शलाकाओंमें प्रविष्ट होने पर चारों राशिया भी असत्यात लोकप्रमाण होती हैं । इसीप्रकार दूसरीवार स्थापित शलाकाराशि समाप्त होनेतक इसी क्रमसे ले जाना चाहिये । तब भी चारों भी राशिया असत्यात लोकप्रमाण होती हैं । पुन अन्तमें उत्पन्न हुई महाराशिको शलाकारूपसे स्थापित करके और दूसरी उसी उत्पन्न हुई महाराशिके प्रमाणको विरलित करके और उत्पन्न हुई उसी महाराशिके प्रमाणको विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति देयरूपसे देकर परस्पर वर्गितसवर्गित करके शलाकाराशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये । तब भी चारों राशिया असत्यात लोकप्रमाण होती हैं । इसीप्रकार तीसरीवार स्थापित शलाकाराशि समाप्त होनेतक इसी क्रमसे ले जाना चाहिये । तब भी चारों राशिया असत्यात लोकप्रमाण हैं । पुन अन्तमें इस उत्पन्न हुई महाराशिको तीन प्रतिराशिरूप करके उनमेंसे एक राशिको शलाकारूपसे स्थापित करके, दूसरी एक राशिको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति एक राशिके प्रमाणको देयरूपसे देकर परस्पर वर्गितसवर्गित करके शलाकाराशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये । इसप्रकार पुन पुन करके तब तक ले जाना चाहिये जब तक कि अतिमान्त शलाकाओंसे अर्थात् पहली दूसरी और तीसरीवार स्थापित अन्योन्य गुणकार शलाकाओंसे न्यून चौथीवार स्थापित अन्योन्य गुणकार शलाकाराशि समाप्त होती है । तब तेजस्काधिक

गुणगारसलागा चउत्थनार द्विदसलागरासिपमाणं होदि ।

के नि आइरिया सलागरासिस्स अद्वे गदे तेउक्काइयरासी उप्पज्जदि ति भणति ।
 के नि तं गेच्छति । कुदो ? अद्दुद्धुरामिसमुदयस्स वग्गममुट्ठिदत्ताभानादो । तेउक्काइय-
 अण्णोण्णगुणगारसलागा वग्गसमुट्ठिदा ति कथ जाणिज्जेदे ? परियम्मपयणादो । के नि
 आइरिया एवं भणति । जहा— एसो रासी तेउक्काइयरासिस्स गुणगारसलागपमाण ण भनदि ।
 पुणो को होदि ति वुत्ते वुच्चदे— गुणेज्जमाणम्म लोमस्स गुणगारमरूवेण पेसमाणलोगाणं
 जाओ सलागाओ ताओ तेउक्काइयअण्णोण्णगुणगारसलागा वुच्चति । एदाओ वग्गसमुट्ठि-
 दाओ ण पुत्तिह्लाओ ति । तम्हा अद्दुद्धुगुणगारसलागोपएसो निरुज्जदे, एसो ण निरुज्जदे
 इदि । एप पि ण घडदे । कुदो ? लोमद्वेयणएहिं तेउक्काइयरासिस्स अद्वच्छेदणए भागे
 हिदे जं लद्ध तं विरलिय एककेक्कस्स रूपस्स घणलोग दाऊणणोण्णअभत्थे कदे तेउक्काइय-
 रासी उप्पज्जदि । हेट्ठिन्निरलिदरासी नि तेउक्काइयअण्णोण्णगुणगारसलागपमाण भनदि ।

राशि उत्पन्न होती है । उस तेजस्कायिक राशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकाप चौथीघार
 स्थापित अन्योन्य गुणकार शलाकाराशिप्रमाण हैं ।

किन्तु ही आचार्य चौथीघार स्थापित शलाकाराशिके आधे प्रमाणके व्यतीत होने
 पर तेजस्कायिक जीवाराशि उत्पन्न होती है, ऐसा कहते हैं । परन्तु कितने ही आचार्य इस
 कथनको नहीं मानते हैं, क्योंकि, साढ़े तीनघार राशिका समुदाय वर्गधारामें उत्पन्न नहीं है ।

शुद्धा—यह ठीक है कि छठवार (साढ़े तीनघार) राशिका समुदाय वर्गोत्पन्न नहीं है,
 पर तेजस्कायिक राशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकाप वर्गधारामें उत्पन्न हैं, यह कैसे जाना
 जाता है ?

समाधान—उक्त आचार्योंके मतमें यह यात परिकर्मके घचनसे जानी जाती है ।

कितने ही आचार्य इसप्रकार कहते हैं कि यह पूर्वोक्त राशि (छठवार राशि) तेजस्कायिक
 राशिकी गुणकार शलाकाराशिके प्रमाणरूप नहीं है । फिर कौनसी राशि तेजस्कायिक राशिकी
 गुणकार शलाकाराशिके प्रमाणरूप है, ऐसा पूछने पर वे कहते हैं कि गुण्यमान लोकके
 गुणकाररूपसे प्रवेशमे प्राप्त होनेवाले लोकोंकी जितनी शलाकाप हों उतनी तेजस्कायिक
 राशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकाप कही जाती हैं । ये अन्योन्य गुणकार शलाकाप वर्गमें उत्पन्न
 हुई हैं पहलेकी अर्थात् साढ़े तीनघार राशिरूप नहीं, इसलिये छठवार राशिप्रमाण गुणकार-
 शलाकाओंका उपदेश विरोधको प्राप्त होता है, यह उपदेश नहीं ।

परन्तु इसप्रकारका कथन भी घटित नहीं होता है, क्योंकि, लोकके अर्धच्छेदोंसे
 तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदोंके भाजित करने पर जो लब्ध आये उसे विरलित करके और
 उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति घनलोकको देयरूपसे देकर परस्पर गुणा करने पर
 तेजस्कायिक राशि उत्पन्न होती है और अघस्तन विरलित राशि भी तेजस्कायिक राशिकी

णवरि अण्णोण्णगुणगारसलागा तेउफ़ाइयरासिग्गसलागाहिंतो असरेजेज्जगुणच पत्ताओ ।
 कुदो ? तेउफ़ाइयरासिस्म अद्वच्छेदणयसलागापढमग्गमूलादो असरेजेज्जगुणचादो । ण च
 एदमिच्छिज्जन्दे । कुदो ? तेउफ़ाइयराभिग्गमलागादो तस्स अमरेजेज्जगुणहीणचादो । तं कथ
 णन्दे ? परियम्मपणादो । त जहा— तेउफ़ाइयराभिम्म अण्णोण्णगुणगारसलागा णिग्गज्ज
 माणा वणिग्गज्जमाणा असरेजेजे लोणे णग्गे हेट्टादो उपरिमसरेजेज्जगुण गत्तूण तेउफ़ाइय-
 रासिस्स वग्गमलान पापदि ति । एम निगलिदरामी ण वग्गममुट्टिदो रि । कुदो ? लोम-
 द्दुच्छेदणयच्छिण्णतेउफ़ाइयराभिस्स अद्वच्छेदणयमेत्तत्तादो । निगलिद-दिण्णमाणरासीण
 समानाचणेण तेउफ़ाइयरासिस्म घणाघणधाराममुप्पणत्तणेण च तेउफ़ाइयराभिस्म अद्व-
 च्छेदणयसलागाओ ण वग्गसमुट्टिदाओ ति ? ण एद, इट्टत्तादो । ण च परियम्मेण सह
 निरोहो, तस्स तदुहेसपदुप्पायणे वापागदो । एत्थ पुण अद्वुत्तुवारमेत्ताओ चेप तेउफ़ा

अन्योन्य गुणकार शलाकाओंके प्रमाणरूप होती है। पर इस मतमें इतना विशेष है कि अन्योन्य
 गुणकार शलाकाए तेजस्कायिक राशिकी घर्गशलाकाओंसे असख्यातगुणी हो जाती हैं,
 क्योंकि, इसप्रकार जो अन्योन्य गुणकार शलाकाए उत्पन्न होती हैं वे तेजस्कायिक राशिकी
 अर्धच्छेदशलाकाओंके प्रथम घर्गमूलसे असख्यातगुणी हो जाती हैं । लेकिन यह इष्ट
 नहीं है, क्योंकि, तेजस्कायिक राशिकी घर्गशलाकाओंसे अन्योन्य गुणकार शलाकाराशि
 असख्यातगुणी हीन है ।

शका— यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— परिकर्मके घचनसे जाना जाता है । उसका स्वरधीकरण इसप्रकार है—
 तेजस्कायिकराशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकाओंको उत्तरीत्तर घर्गित करते हुए अस
 ख्यात लोकप्रमाण अर्थात् अधस्तन घर्गोंसे ऊपर असख्यातगुणे जाकर तेजस्कायिकराशिकी
 घर्गशलाकाए प्राप्त होती हैं ।

दूसरे यह विरलित राशि, अर्थात् गुणकाररूपसे प्रवेशको प्राप्त होनेवाले लोकोंकी
 जितनी शलाकाए हैं वह राशि, घर्गसमुत्पन्न भी नहीं है, क्योंकि, यह लोकके अधच्छेदोंसे
 छिन्न तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदप्रमाण है ।

शका— विरलितराशि और देयराशि समान होनेसे और तेजस्कायिकराशि घनाघन
 धारामें उत्पन्न हुई होनेसे तेजस्कायिकराशिकी अर्धच्छेदशलाकाए भी तो घर्गसमुत्पन्न नहीं हैं ।

समाधान— पर यह कोई बात नहीं है, क्योंकि, यह बात हमें इष्ट है । और इसतरह
 परिकर्मके साथ भी विरोध नहीं आता है, क्योंकि, परिकर्मका उसके उद्देश्यानुसार प्रतिपादन कर
 नेमें ध्यापार होता है । यहा पर तो केवल तेजस्कायिकराशिकी साढ़े २ अन्योन्य

इयरसिअण्णोगुणगारसलागाओ चि घेत्तव्व, आइरियपरांपरागओनएसत्तादो । ण च वग्गसमुट्ठिदत्तं गुणगारसलागाणं णत्थि चि अट्टुट्टुनएसो ण भदओ, अट्टुट्टुवएसण्णहाणुन-
वत्तीदो चेव तदवग्गसमुट्ठिदत्तस्म अजगमादो । ण परियम्मदो वग्गत्तमिद्धी, तस्स तेउक्का-
इयअट्टुच्छेदणएहि अणेयंतियत्तादो ।

अहवा तेउक्काइयरामिस्त अण्णोगुणगारसलागाओ सलागभूदाओ द्विज्जण

गुणकार शलाकाए होती हैं, ऐसा ग्रहण करना चाहिये। क्योंकि, आचार्य परपरासे इसी-
प्रकारका उपदेश आ रहा है। गुणकार शलाकाए वर्गसमुत्पन्न नहीं हैं, इसलिये साढे
तीनवारका उपदेश ठीक नहीं है, सो घात भी नहीं है, क्योंकि, साढे तीनवारका उपदेश
अन्यथा बन नहीं सकता है, इसीसे गुणकार शलाकाए वर्गसमुत्पन्न नहीं हैं, यह घात जानी
जाता है। परिकर्मसे इनके वर्गत्वकी भी सिद्धि नहीं होती है, क्योंकि, इसका तेजस्कायिक
राशिके अर्धच्छेदोंके साथ अनेकान्त है।

निशेपार्थ—यह पर तेजस्कायिकराशिकी अन्योन्य गुणकारशलाकाए कितनी हैं, इस
विषयमें आचार्य परपरासे आये हुए मतके अतिरिक्त दो और मतोंका उल्लेख किया गया
है। घनलोकको लेकर विरलन, देय और शलाकाक्रमसे तीसरीवार शलाकाराशिके समाप्त
होने पर जो महाराशि उत्पन्न हो उसमेंसे पहली, दूसरी और तीसरी शलाकाराशिके घटा देने
पर शेष राशिको शलाका मान कर साढे तीन राशिवार अन्योन्य गुणकार शलाकाओंका प्रमाण
आ जाता है। यह मत आचार्य परपरासे आया हुआ होनेसे प्रमाण है। दूसरा मत यह है कि
तीसरीवार शलाकाराशिके समाप्त होने पर जो महाराशि उत्पन्न हो उसके आधे प्रमाणको
शलाकारूपसे स्थापित करना चाहिये तब जाकर साढे तीन राशिवार अन्योन्य गुणकार शला-
काओंका प्रमाण होता है। पर कितने ही आचार्य इस मतका विरोध करते हैं। उनके
मतसे यह साढे तीन राशिवार अन्योन्य गुणकार शलाकाराशिकी उपदेश वर्गसमुत्पन्न
नहीं है, इसलिये प्रमाणभूत नहीं है। तेजस्कायिक राशिकी अन्योन्य गुणकार शला-
काए वर्गसमुत्पन्न हैं इस मतकी पुष्टि वे आचार्य परिकर्मके आधारसे करते हैं।
कितने ही आचार्य ऐसा कथन करते हैं कि जितने लोकप्रमाणराशिके प्रत्येक एक पर
लोकको स्थापित करके परस्पर गुणित करनेसे तेजस्कायिकराशि उत्पन्न होती है उतने
लोकप्रमाणराशि तेजस्कायिकराशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकाए होती हैं। इन्हें वे वर्गसमुत्पन्न
भी मानते हैं। पर वीरसेनस्वामिने दूसरे मतके समान इस मतकी भी प्रमाणभूत नहीं माना
है, क्योंकि, इसप्रकार अन्योन्य गुणकार शलाकाओंका जो प्रमाण प्राप्त होता है वह
तेजस्कायिकराशिकी वर्गशलाकाराशिसे असव्यातगुणा हो जाता है। पर क्रमानुसार अन्योन्य
गुणकार शलाकाराशिसे वर्गशलाकाराशि असव्यातगुणी होनी चाहिये।

अथवा, तेजस्कायिकराशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकाओंको शलाकारूपसे स्थापित

णपरि अण्णोण्णगुणगरसलागा तेउकाइयरासिउग्गसलागाहिंतो असखेज्जगुणत्त पत्ताओ । कुदो ? तेउकाइयरासिम्म अद्दच्छेदणयसलागापढमवग्गमूलादो असखेज्जगुणत्तादो । ण च एदमिच्छिज्जदे । कुदो ? तेउकाइयरासिउग्गसलागादो तस्स असंखेज्जगुणहीणत्तादो । त कथ णव्वदे ? परियम्मउयणादो । त जहा—तेउकाइयरासिस्त अण्णोण्णगुणगरसलागा वग्गिज्ज-
माणा वग्गिज्जमाणा असखेज्जे लेमे वग्गे हेट्ठदो उपरिमसखेज्जगुण गतूण तेउकाइय-
रासिस्त वग्गमलाग पादि ति । एस तिरलिदरासी ण वग्गसमुट्ठिदो मि । कुदो ? लोण
द्धेदणयच्छिण्णतेउकाइयरासिस्त अद्दच्छेदणयमेत्तत्तादो । तिरलिद-दिण्णमाणरासीण
समाणत्तणेण तेउकाइयरासिस्त घणाघणधारसमुप्पणत्तणेण च तेउकाइयरासिस्त अद्द
च्छेदणयसलागाओ ण उग्गसमुट्ठिउओ ति ? ण एद, इट्ठत्तादो । ण च परियम्मेण सह
निगेहे, तस्म तदुद्देसपदुप्पायणे वापरादो । एत्थ पुण अद्दधुट्ठारमेत्ताओ चेन तेउका

अन्योन्य गुणकार शलाकाओंके प्रमाणरूप होती है। पर इस मतमें इतना विरोध है कि अन्योन्य गुणकार शलाकाए तेजस्कायिक राशिकी वर्गशलाकाओंसे असंख्यातगुणी हो जाती हैं, क्योंकि, इसप्रकार जो अन्योन्य गुणकार शलाकाए उत्पन्न होती है वे तेजस्कायिक राशिकी अर्धच्छेदशलाकाओंके प्रथम वर्गमूलसे असंख्यातगुणी हो जाती हैं । लेकिन यह इष्ट नहीं है, क्योंकि, तेजस्कायिक राशिकी वर्गशलाकाओंमें अन्योन्य गुणकार शलाकाराशि असंख्यातगुणी हीन है ।

शुक्रा—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—परिकर्मके घचनसे जाना जाता है । उसका स्थायीकरण इसप्रकार है—
तेजस्कायिकराशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकाओंको उत्तरोत्तर वर्गित करते हुए असंख्यात लोकप्रमाण अर्थात् अधस्तन वर्गोंसे ऊपर असंख्यातगुणे जाकर तेजस्कायिकराशिकी वर्गशलाकाए प्राप्त होती है ।

दूसरे यह विरलित राशि, अर्थात् गुणकाररूपसे प्रवेशको प्राप्त होनेवाले लोकोंकी जितनी शलाकाए हों यह राशि, वर्गसमुत्पन्न भी नहीं है, क्योंकि, यह लोकके अर्धच्छेदोंसे छिन्न तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदप्रमाण है ।

शुक्रा—विरलितराशि और देयराशि समान होनेसे और तेजस्कायिकराशि घनाघन धारामें उत्पन्न हुई होनेसे तेजस्कायिकराशिकी अर्धच्छेदशलाकाए भी तो वर्गसमुत्पन्न नहीं हैं ।

समाधान—पर यह कोई बात नहीं है, क्योंकि, यह बात हमें इष्ट है । और इसतरह परिकर्मके साथ भी विरोध नहीं आता है, क्योंकि, परिकर्मका उसके उद्देश्यमात्रके प्रतिपादन करनेमें व्यापार होता है । यहाँ पर तो केवल तेजस्कायिकराशिकी साढ़े तीन राशिवाचक अन्योन्य

तदुपरिमगमे भागे हिदे तेउक्काइयरामी आगच्छदि । तस्त भागहारस्त अद्वच्छेदणयमेत्ते रामिस्त अद्वच्छेदणए कदे नि तेउक्काइयरासी आगच्छदि । घणाघगे^१ उचइम्मामो । तेउक्काइयरासिणा तेउक्काइयरासिउपरिमगममाणअद्वरूवणग गुणेऊग तस्सुवरिमवग्ग मोत्तूण तदुपरिमवग्गसमाणनेरूवणग गुणेऊग तस्सुवरिमगग मोत्तूण तदुपरिमगमे भागे हिदे तेउक्काइयरासी आगच्छदि । तस्त भागहारस्त अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्त अद्वच्छेदणए कदे नि तेउक्काइयरासी अरचिद्वेद । विहज्जमाणग्गमाणं अमसेज्जदिभाएण गहिदग्गहिदो गहिदगुणगारो च वत्तव्वो । एउ तेउक्काइयपरूवणा समत्ता ।

तेउक्काइयरासिममखेज्जलोगेण भागे हिदे लद्ध तम्हि चेव पक्खित्ते पुढनिकाइयरासी होदि । तम्हि अससेज्जलोगेण भागे हिदे लद्ध तम्हि चेव पक्खित्ते आउकाइयरासी होदि । तम्हि अससेज्जलोगेण भागे हिदे लद्ध तम्हि चेव पक्खित्ते वाउकाइयरासी होदि । एदेसिं तिण्ण रासीण अउहारकालस्सुप्पायण-

पर तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है ।

अब घनाघनमें उपरिम विस्वरको बतलाते हैं— तेजस्कायिक राशिके तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गके समान घनके उपरिम वर्गको गुणित करके पुन तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गको छोडकर उसके उपरिम वर्गके समान द्विरूपके वर्गको गुणित करके तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको छोडकर उसके उपरिम वर्गमें भाग देने पर तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है । विभज्यमान वर्गोंके असख्यातवें भागरूप तेजस्कायिक राशिके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन करना चाहिये । इसप्रकार तेजस्कायिक जीवरिशिकी प्ररूपणा समाप्त हुई ।

तेजस्कायिक राशिको असख्यात लोकोंके प्रमाणसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी तेजस्कायिक राशिके प्रमाणमें प्रक्षिप्त करने पर पृथिवीकायिक राशिका प्रमाण होता है । इस पृथिवीकायिक राशिको असख्यात लोकोंके प्रमाणसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी पृथिवीकायिक राशिके प्रमाणमें मिला देने पर अण्कायिक राशिका प्रमाण होता है । इस अण्कायिक राशिको असख्यात लोकोंके प्रमाणसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी अण्कायिक राशिके प्रमाणमें मिला देने पर वायुकायिक राशिका प्रमाण होता है ।

अब इन तीनों राशियोंके अबद्वारकालके उत्पन्न करनेकी विधिको बतलते

तदुपत्तिनिमित्तरामीणं वग्निदसत्रग्निदे काऊण तेउकाइयरासी उप्पाएदच्चा । तेउका
इयरासिं भागहार काऊण तस्सुपरिमवग्ग निहज्जमाणरासिं करिय राडिद-भाजिद-भिरलिद-
अरहिदाणि जाणिऊण वत्तच्चाणि । तस्स पमाणमुपरिमवग्गस्म असखेज्जदिभागो । कारण,
तेउकाइयरासिणा उवरिमवग्गे भागे हिदे तेउकाइयरासी चेव आगच्छदि ति । एत्थ संदेहा-
भावा णिरुची ण वत्तच्चा ।

त्रियप्पो दुभिहो, हेट्ठिमत्रियप्पो उपरिमत्रियप्पो चेदि । एत्थ हेट्ठिमत्रियप्पो णत्थि,
तेउकाइयरासिस्म निहज्जमाणरामिपदमवग्गमूलमेत्तत्तादो । उपरिमत्रियप्पो त्रिभिहो,
गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ गहिद वत्तइस्सामो । तेउकाइयरासिणा
उपरिमवग्गे भागे हिदे तेउकाइयरासी आगच्छदि । तस्म भागहारस्म अद्वच्छेदणयमेत्ते
रासिस्स अद्वच्छेदणये क्खेदे तेउकाइयरासी आगच्छदि । अहवा तेउकाइयरासिणा तस्सु
वग्गिमवग्ग गुणेऊण तदुपरिमवग्गे भागे हिदे तेउकाइयरासी आगच्छदि । तस्सद्वच्छेदण-
यमेत्ते गमिस्म अद्वच्छेदणये क्खेदे पि तेउकाइयरासी आगच्छदि । अट्ठरूपे वत्तइस्सामो ।
तेउकाइयरासिणा तेउकाइयउपरिमवग्गसमाणअट्ठरूपवग्ग गुणेऊण तस्सुपरिमवग्ग मोत्तूण

करके और उसकी उत्पत्तिकी निमित्तभूत राशियोंकी धर्मितसवर्गित करके तेजस्कायिकराशि
उत्पन्न कर लेना चाहिये । तेजस्कायिकराशिको भागहार करके और उसके उपरिम धर्मको
भज्यमानराशि करके खडित, भाजित, धिरलित और अपहृतका जानकर कथन करना चाहिये ।
उसका प्रमाण तेजस्कायिक राशिके उपरिम धर्मका अस्तव्यस्तवा भाग है । इसका
कारण यह है कि तेजस्कायिकराशिसे उसके उपरिम धमरे भाजित करने पर तेजस्कायिक
जीवराशि ही भाती है । यहा पर संदेह नहीं होनेसे निरुक्तिके कथनकी आवश्यकता नहीं है ।

त्रिकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । परंतु यहा पर
अधस्तन विकल्प नहीं पाया जाता है, क्योंकि, तेजस्कायिकराशि भज्यमान राशिके प्रथम
धर्ममूलप्रमाण है ।

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार । उनमेंसे
गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—तेजस्कायिक राशिसे उसके उपरिम धर्मके भाजित
करने पर तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है । उक्त भागहारके अर्धच्छेदप्रमाण उक्त
भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी तेजस्कायिक राशि जाती है । अथवा, तेजस्कायिक
राशिके प्रमाणसे उसके उपरिम धर्मको गुणित करके लब्ध राशिका उपरिम धर्मके उपरिम
धर्ममें भाग देने पर तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है । उक्त भागहारके अर्धच्छेदप्रमाण
उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है ।

अथ अपरूपमें उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—तेजस्कायिक राशिसे तेजस्कायिक
राशिके उपरिम धर्मके समान धनके उपरिम धर्मको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका
तेजस्कायिक राशिके उपरिम धर्मको छोटकर उसके उपरिम धर्ममें भाग देने

तदुपरिमग्गे भागे हिदे तेउक्काइयरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे पि तेउक्काइयरासी आगच्छदि । घणाघगे^१ वत्तइस्सामो । तेउक्काइयरासिणा तेउक्काइयरासिउपरिमग्गसमाणअद्वरूपवग्ग गुणेऊग तस्सुवरिमवग्ग मोत्तूण तदुवरिमग्गसमाणेरूपवग्ग गुणेऊण तस्सुवरिमग्ग मोत्तूण तदुपरिमवग्गे भागे हिदे तेउक्काइयरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे पि तेउक्काइयरासी अरच्चिद्धे । विहज्जमाणग्गमाणं अमरेज्जदिमाण गहिद-गहिदो गहिदगुणगारो च वत्तव्वो । एउ तेउक्काइयपरूणा समत्ता ।

तेउक्काइयरासिमरेज्जलोगेण भागे हिदे लद्ध तम्हि चेय पक्सिस्सत्ते पुढनिकाइयरासी होदि । तम्हि असरेज्जलोगेण भागे हिदे लद्ध तम्हि चेय पक्सिस्सत्ते आउक्काइयरासी होदि । तम्हि असरेज्जलोगेण भागे हिदे लद्ध तम्हि चेय पक्सिस्सत्ते वाउक्काइयरासी होदि । एदेसिं तिण्णं रासीण अउहारकालस्सुप्पायण-

पर तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है । उक्त भागद्वारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है ।

अब घनाघनमें उपरिम विक्षेपको घतलाते हैं— तेजस्कायिक राशिके तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गके समान घनके उपरिम वर्गको गुणित करके पुन तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गको छोड़कर उसके उपरिम वर्गके समान ऋरूपके वर्गको गुणित करके तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको छोड़कर उसके उपरिम वर्गमें भाग देने पर तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है । उक्त भागद्वारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है । विभज्यमान वर्गके असख्यातमें भागरूप तेजस्कायिक राशिके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन करना चाहिये । इसप्रकार तेजस्कायिक जीवरराशिकी प्ररूपणा समाप्त हुई ।

तेजस्कायिक राशिको असख्यात लोकोंके प्रमाणसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी तेजस्कायिक राशिके प्रमाणमें प्रक्षिप्त करने पर पृथिवीकायिक राशिका प्रमाण होता है । इस पृथिवीकायिक राशिको असख्यात लोकोंके प्रमाणसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी पृथिवीकायिक राशिके प्रमाणमें मिला देने पर अण्कायिक राशिका प्रमाण होता है । इस अण्कायिक राशिको असख्यात लोकोंके प्रमाणसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी अण्कायिक राशिके प्रमाणमें मिला देने पर धायुकायिक राशिका प्रमाण होता है ।

अब इन तीनों राशियोंके अक्षद्वारकालके उत्पन्न करनेकी विधिको बनलते

निहाण उचदे । त जहा- तेउक्काइयरासिं पुढनिकाइयरासिं सोहिय सेमेण तेउ
क्काइयरासिं भागे हिदे अमरोज्जलोमरासी आगच्छदि । तेण रूनाहिण तेउक्का
इयरासिमोडिय लद्धं तम्हि चेन अनणिदे पुढनिकाइयअवहारकालो होदि । पुणो पुढनि
काइयरासिं अउक्काइयरासिं सोहिय सेमेण पुढनिकाइयरासिं भागे हिदे अतंसेज्ज-
लोमरेतरासी आगच्छदि । तेण रूनाहिण पुढनिकाइयअवहारकालमोडिय लद्धं तम्हि
चेन अनणिदे आउक्काइयअवहारकालो होदि । पुणो आउक्काइयरासिं वाउक्काइयरासिं
सोहिय तन्थापसिद्धरासिणा आउक्काइयरासिं भागे हिदे अतंसेज्जलोमरेतरासी
लद्धंदि । तेण रूनाहिण आउक्काइयअवहारकाले भागे हिदे लद्धं तम्हि चेन अनणिदे
वाउक्काइयअवहारकालो होदि । एत्थुपउज्जती गाहा-

रासिसेमेणवहिरासिं य ज हिये' समुलद्ध ।

रूवूणहिणवहिरासिं उणाहिओ तेण ॥ ७५ ॥

हैं । यह इसप्रकार है— तेजस्कायिक राशिको पृथिवीकायिक राशिमेंसे घटा कर
जो शेष रहे उससे तेजस्कायिक राशिके भाजित करने पर असख्यात लोकप्रमाण राशि आती
है । एक अधिक उस असख्यात लोकप्रमाणराशिसे तेजस्कायिक राशिको भाजित करके
जो लब्ध आवे उसे उसी तेजस्कायिक राशिमेंसे घटा देने पर पृथिवीकायिक राशिसब
अवहारकाल होता है । पुन पृथिवीकायिक राशिको जलकायिक राशिमेंसे घटा कर जो शेष
रहे उससे पृथिवीकायिक राशिने भाजित करने पर असख्यात लोकप्रमाणराशि आती है । एक
अधिक उस असख्यात लोकप्रमाण राशिसे पृथिवीकायिक राशिके अवहारकालने भाजित
करके जो लब्ध आवे उसे उसी पृथिवीकायिक राशिके अवहारकालमेंसे घटा देने पर
जलकायिक राशिसबधी अवहारकाल होता है । पुन अष्कायिक राशिको वायुकायिक राशि
मेंसे घटा कर यदा जो राशि अपशिष्ट रहे उससे अष्कायिक राशिके भाजित करने पर अ-
ख्यात लोकप्रमाण राशि लब्ध आती है । एक अधिक उस असख्यात लोकप्रमाण राशिसे
अष्कायिक राशिके अवहारकालके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी अष्कायिक
राशिके अवहारकालमेंसे घटा देने पर वायुकायिक राशिसबधी अवहारकाल होता है । यदा
पर उपयुक्त गाथा ही जाती है—

राशियिशेषसे राशिके भाजित करने पर जो भाग लब्ध आवे उसमेंसे यदि एक कम
करके शेष राशिसे भागद्वारा भाजित किया जाय तो उस लब्धको उसी भागद्वारमें मिला देवे
और यदि लब्ध राशिमें एक अधिक करके उससे भागद्वारा भाजित किया जाय तो भागद्वारके
भाजित करने पर जो लब्ध राशि आवे उन्ने भागद्वारमेंसे घटा देना चाहिये ॥ ७५ ॥

एसा किरिया इंदिय-कसाय जोगमगणासु विसैसाहियरासीणं विसैसहीणरासीण च निरयवा कायव्या । एदे पुव्वुत्ते चत्तारि अनहारकाले विरलिय तेउकाइयरासिस्सुपरिम-वग्ग चउण्ह विरलणाण पुघ पुघ समखडं करिय दिण्णे अप्पप्पणो रासिपमाण पावेदि । पुणो सगसगनादरजीवेहिं सगसगनिरलणाए एगरूपेपरि द्विदसगसगरासिम्हि भागे हिदे अससेज्जलोगमेचरासी आगच्छदि । तेण रूवूणेण सगसगअवहारकालेसु ओपद्विदेसु लद्धं तम्हि चैव पक्खिचे सगसगसुहुमाणं अनहारकाला भवति । पुणो एदे चत्तारि नि सुहुम-जीनअनहारकाले' पुघ पुघ विरलिय तेउक्काइयरासिस्सुपरिमग्गं समखडं करिय दिण्णे रूपं पडि सगसगसुहुमपमाण पावेदि । पुणो सगसगनिरलणाए एगरूपेवरि द्विदसुहुमगमिं सगसगसुहुमअपज्जत्तएहिं भागे हिदे तत्थ लद्धससेज्जरूपेहि रूवूणेहि सगसगसुहुम-अवहारकाले ओपद्विय लद्धं तम्हि चैव पक्खिचे सगसगसुहुमपज्जचाणमनहारकाला भवति । पुघ भागलद्धससेज्जरूपेहिं सगसगसुहुमजीनअनहारकालेसु गुणिदेसु सगसग-सुहुमअपज्जत्तअनहारकाला भवति । चउण्ह वादराण पुव्वुप्पादिदेहिं अससेज्जलोगमेत्त-

इन्द्रिय, कषाय और योग इन तीन मार्गणाओंमें विशेष अधिक राशियोंके और विशेष हीन राशियोंके सन्बन्धमें सपूर्ण रूपसे यह क्रिया करना चाहिये। पूर्वोक्त इन चारों अवहारकालोंको विरलित करके और तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गको चारों विरलनोंके ऊपर पृथक् पृथक् समान खड करके दे देने पर अपनी अपनी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है। पुन, अपनी अपनी वादरकायिक जीवराशिके प्रमाणका अपने अपने विरलनके एक अंकके ऊपर स्थित अपनी अपनी राशिके प्रमाणमें भाग देने पर असख्यात लोकप्रमाण राशि प्राप्त होती है। एक कम उस असख्यात लोकप्रमाण राशिसे अपने अपने अवहारकालोंके भाजित करने पर जो जो लब्ध आवे उसे उसी अपने अपने अवहारकालमें मिला देने पर अपने अपने सूक्ष्म जीवोंके प्रमाण खानेके लिये अवहारकाल होते हैं। पुन सूक्ष्म जीवसबकी इन चारों भी अवहारकालोंको पृथक् पृथक् विरलित करके और उन विरलनोंके प्रत्येक एकके ऊपर तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गको समान खड करके दे देने पर विरलनोंके प्रत्येक एकके प्रति अपने अपने सूक्ष्म जीवोंका प्रमाण प्राप्त होता है। पुन अपने अपने विरलनके एक विरलन अंकके ऊपर स्थित सूक्ष्म जीवराशिके प्रमाणको अपनी अपनी सूक्ष्म अपर्याप्त जीवराशिके प्रमाणसे भाजित करने पर वहा जो संख्यात लब्ध अर्थ उनमेंसे एक कम करके शेष राशिसे अपने अपने सूक्ष्म जीवोंके अवहारकालको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे उन्हीं अवहारकालोंमें मिला देने पर अपने अपने सूक्ष्म पर्याप्त जीवोंके अवहारकाल होते हैं। पहले भाग देने पर जो संख्यात लब्ध आवे ये उनसे अपने अपने सूक्ष्म जीवोंके अवहारकालोंके गुणित करने पर अपने अपने सूक्ष्म अपर्याप्त जीवोंके अवहारकाल होते हैं। चारों वादरोंके

गुणगारेहि सगसगमामण्यवहारकालेसु गुणिदेसु सगमगनादराणमवहारकाला भवति ।

पुणो मुत्तापिरुद्धेण आइरिजोपसेण सुत्त व पमाणभूदेण 'वादराणमद्वन्द्वेदणए वत्तस्सामो । त जहा- एगसागरोपमादो एग पलिदोपम धेत्तूण तमावलियाए असखेज्जदि भागेण खडिय तत्थेगएण्ड पुध इणिय सेसबहुभागे तग्हि चेप पक्खिचे वादरतेउक्काइय- अद्वन्द्वेदणयसलागा हरति । ज पुध द्विदेयएण्ड त पुणो नि आगलियाए असखेज्जदिभाएण खडिय तत्थेगएण्डमणिय बहुखडे पुत्तमिं दुप्पडिरासिं काळण पक्खिचे वादरणणफइ- पचेयमरीराण अद्वन्द्वेदणयसलागा हरति । एव वादरणिगोदपदिद्विद वादरपुठमि वादर जाळण च वत्तव्व । अते अणणिदएगएण्ड वादरआउक्काइयअद्वन्द्वेदणयसलागासु पक्खिचे वादरआउक्काइयअद्वन्द्वेदणयसलागा सायरोपममेत्ता जादा । वादरतेउक्काइयअद्वन्द्वेदणए विरलिय निग करिय अण्णोण्यमत्थे कदे वादरतेउक्काइयराणी उप्पज्जदि । अहना धणलोपलेयणएहिं वादरतेउक्काइयअद्वन्द्वेदणएसु ओवट्टिदेसु लद्ध विरलेऊण रुं पडि

जो पहले असख्यात लोकरप्रमाण गुणकार उत्पन्न क्रिये थे उनसे अपने अपने सामान्य अवहार कालोंके गुणित करने पर अपने अपने वादर जीवोंके अवहारकाल होते हैं ।

अब आगे सूत्रके समान प्रमाणभूत सूत्राविकरुद्व अत्रायोंके उपदेशके अनुसार वादर जीवोंके अर्धच्छेद बतलाते हैं । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— एक सागरोपममेंसे एक पत्थोपमको ग्रहण करके और उसे बावलीके असख्यातवें भागसे खण्डित करके वहा जो एक भाग लघ्व आये उसे पृथक् स्थापित करके शेष बहुभागको उसी राशिमें अर्थात् पत्थवम सागरमें मिला देने पर वादर तेजस्कायिक राशिकी अर्धच्छेद शलाकाए होती है । जो एक भाग पृथक् स्थापित किया था उसे फिर भी बावलीके असख्यातवें भागसे खण्डित करके वहा जो एक भाग लघ्व आया उसे घटा कर अवशेष बहुभागको पूर्वराशि अर्थात् वादर तेजस्कायिक राशिसे अर्धच्छेदोंकी दो प्रतिराशिया करके और उनमेंसे एकमें मिला देने पर वादर धनस्पाति प्रत्येकशरीर जीवोंकी अर्धच्छेदशलाकाए होती है । इसीप्रकार वादर निगोदप्रतिष्ठित, वादर पृथिवीमायिक और वादर अष्कायिक जीवराशिके अर्धच्छेदोंका कथन करना चाहिये । अतमें अपनीन एक छटकी वादर अष्कायिक जीवोंकी अर्धच्छेद शलाकाओंमें मिला देने पर सागरोपमप्रमाण वादर वायुकायिक जीवोंकी अर्धच्छेदशलाकाए हो जाती हैं ।

वादर तेजस्कायिक राशिकी अर्धच्छेदशलाकाओंका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणित करने पर वादर तेजस्कायिक जीवराशि उत्पन्न होती है । अथवा, धनलोकके अर्धच्छेदोंने वादर तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदोंके

१ अबलिग्रहसमागेणवदिदपन्दुणसायद्विदिदा । वादरतेपणिधुज्जवादाणं चरिगसापर पुण्ण ॥ गो

घणलोगं दाऊण अण्णोण्णम्भत्थे कए वादरतेउकाइयरासी उप्पज्जदि । अहमा वादर-
 तेउअद्धच्छेदणए वादरवणप्फदिपत्तेयसरीरद्धछेदणएहिंतो सोहिय अत्सेसरासिं निरलिय निग
 करिय अण्णोण्णम्भत्थरासिणा वादरवणप्फइपत्तेयसरीररासिम्हि भागे हिदे वादरतेउकाइय-
 रासी उप्पज्जदि । अहवा वादरवणप्फइपत्तेयरासिस्स अहियद्धच्छेयणयमेत्ते' अद्धच्छे-
 यणए कए वादरतेउकाइयरासी उप्पज्जदि । अहमा घणलोगछेदणएहि अहियद्धछेदणएसु
 ओवट्टिदेसु तत्थ लद्ध निरलेऊण एक्केक्कस्स रूस्स घणलोगं दाऊण अण्णोण्णम्भत्थे कए
 जो रासी तेण वादरवणप्फइपत्तेयसरीररासिम्हि भागे हिदे वादरतेउकाइयरासी होदि ।
 एअं वादरणिगोदपदिट्टिद वादरपुढनिकाइय-वादरजाउकाइय वादरजाउकाइयाणं अप्पप्पणो
 अद्धच्छेदणएहिंतो वादरतेउकाइयरासी उप्पादेद्वमा । एव वादरतेउकाइयरासिस्स
 सत्तारसनिहा परूणणा क्कदा ।

— — —

भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक
 एकके प्रति घनलोकको देकर परस्पर गुणित करने पर वादर तेजस्कायिक राशि उत्पन्न
 होती है। अथवा, वादर तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदोंको वादर घनस्पति प्रत्येकशरीर
 जीवोंके अर्धच्छेदोंमेंसे घटाकर जो राशि शेष रहे उसे विरलित करके और उस विरलित
 राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणित करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे वादर
 घनस्पति प्रत्येकशरीर जीवोंकी राशिके भाजित करने पर वादर तेजस्कायिक राशि उत्पन्न
 होती है। अथवा, वादर घनस्पति प्रत्येकराशिके जितने अधिक अर्धच्छेद हों उतनीवार वादर
 घनस्पति प्रत्येकशरीर राशिके अर्धच्छेद करने पर भी वादर तेजस्कायिक राशि उत्पन्न होती
 है। अथवा, घनलोकके अर्धच्छेदोंसे अधिक अर्धच्छेदोंके भाजित करने पर वहा जो लब्ध
 आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति घनलोकको देयरूपसे
 देकर परस्पर गुणित करने पर जो राशि आवे उससे वादर घनस्पति प्रत्येकशरीर जीवरराशिके
 भाजित करने पर वादर तेजस्कायिक राशि आती है। इसीप्रकार वादर निर्गोदप्रतिष्ठित, वादर
 पृथिवीकायिक, वादर अप्कायिक और वादर वायुकायिक जीवोंके अपने अपने अर्धच्छेदोंसे
 वादर तेजस्कायिक राशि उत्पन्न कर लेना चाहिये। इसप्रकार वादर तेजस्कायिक राशिकी
 सत्रह प्रकारकी प्ररूपणा की।

विशेषार्थ—ऊपर पाच प्रकारसे तेजस्कायिक जीवरराशि उत्पन्न करने बतला आवे
 है। प्रथमवार तेजस्कायिक जीवरराशिके अर्धच्छेदोंका और दूसरीवार घनलोकके अर्धच्छेदोंका
 आश्रय लेकर तेजस्कायिक जीवरराशि उत्पन्न की गई है। अन्तिम तीन प्रकारसे तेजस्कायिक
 जीवरराशिके उत्पन्न करनेमें वादर घनस्पति प्रत्येकशरीर जीवरराशिके अर्धच्छेदोंकी सुप्यता

वाटरवणफडकाइयपत्तेयमरीररामिस्म अद्रच्छेदणए निरलेऊण निग करिय अणो
 ण्णमत्थे रुढे वाटरवणफडिपत्तेयसरीररासी उप्पज्जदि । अहना घणलोगच्छेदणएहि
 वाटरवणफडिपत्तेयमरीरअद्रच्छेयणएगु अंतद्विदेसु लद्ध निरलेऊण रूप पडि घणलोग
 ढाऊण अणोण्णमत्थे कए वाटरवणफडिपत्तेयसरीररामी उप्पज्जदि । वाटरतेउकाइय-
 रासीदो वाटरवणफडिपत्तेयसरीररामिमुष्पाइज्जमाणे अहियद्धच्छेयणमेत्ते वाटरतेउकाइय-
 रासिस्स दुउणगुणगारे कए वाटरवणफडिपत्तेयसरीररामी उप्पज्जदि । अहना अन्महिय-

है । वाटर तेजस्वायिक राशिसे वाटर घनस्पति प्रत्येकशरीर राशि घबी है, अतएय तेजस्वायिक
 राशिके अधच्छेदोंसे इस राशिके जितने अधिक अर्धच्छेद हों, उतनीवार वे रश्मकर
 परस्पर गुणित करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे वाटर घनस्पति प्रत्येकशरीर राशिके
 भाजित कर देने पर, अथवा जितने अर्धच्छेद अधिक हैं उतनीवार वाटर घनस्पति
 प्रत्येकशरीर राशिके अर्धित करने पर, वाटर तेजस्वायिक जीव राशि उत्पन्न होती है । वाटर
 घनस्पति प्रत्येकशरीर राशिके अधच्छेदाका आश्रय करके वाटर तेजस्वायिक राशिके उत्पन्न
 करनेके दो प्रकार तो ये हुए । तीसरे प्रकारमें घनलोकके अर्धच्छेदोंका आश्रय और ले लिया
 जाता है। अर्थात् घनलोकके अर्धच्छेदोंसे वाटर घनस्पति प्रत्येकशरीर जीव राशिके वाटर तेज
 स्वायिक राशिके अर्धच्छेदोंसे अधिक अधच्छेदोंके भाजित कर देने पर जो लघ्य आये
 उतनीवार घनलोकके परस्पर गुणित करने पर आई हुई राशिका वाटर घनस्पति प्रत्येक
 शरीर जीवराशिमें भाग देने पर वाटर तेजस्वायिक जीवराशि उत्पन्न होती है । इन्हीं तीनों
 प्रकारोंसे वाटर निगोद प्रतिष्ठित जीवराशि, वाटर पृथिवीकायिक, वाटर अण्कायिक और
 वाटर वायुकायिक राशिके अधच्छेदोंका आश्रय लेकर तेजस्वायिक राशिके उत्पन्न करने पर
 वाटर प्रकारसे तेजस्वायिक राशिका प्रमाण उत्पन्न होता है । इन वाटर भेदोंमें पूर्वोक्त पाच
 भेदोंके मिला देने पर तेजस्वायिक राशिकी प्ररूपणा सबह प्रकारसे हो जाती है ।

वाटर घनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवराशिके अर्धच्छेदोंको विरलित करके और
 उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणित करने पर वाटर घनस्पति
 कायिक प्रत्येकशरीर जीवराशि उत्पन्न होती है । अथवा, घनलोकके अधच्छेदोंसे वाटर
 घनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर राशिके अर्धच्छेदोंके भाजित करने पर जो लघ्य आये उसे
 विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति घनलोकको द्वैयरूपसे देकर
 परस्पर गुणित करने पर वाटर घनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवराशि उत्पन्न होती है ।
 वाटर तेजस्वायिक राशिसे वाटर घनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर राशिके उत्पन्न करने पर
 अधिक अधच्छेदप्रमाण वाटर तेजस्वायिक राशिके दुगुणित करने पर वाटर घनस्पतिकायिक
 प्रत्येकशरीर जीवराशि उत्पन्न होती है । अथवा, अधिक अधच्छेदोंको विरलित करके और

च्छेयणए निरलिय निग करिय अण्णोण्णव्भत्थरुदरासिणा वादरतेउकाइयरासिं गुणिदे वादरवणफ्फदिपत्तेगसरीररासी हेड । अहना अहियच्छेयणए घणलोगउेयणएहि ओपड्विय लद्धं निरलेऊण रूप पडि घणलोग दाऊण अण्णोण्णव्भत्थरुदरासिणा वादरतेउकाइयरासिं गुणिदे वादरवणफ्फइपत्तेगसरीररासी हेदि । वादरणिगोदपदिड्ढिद वादरपुढपिकाइय वादर-आउरुइय-वादरवाउरुइएहिंते वादरवणफ्फइपत्तेयसरीररासिसुप्पाइज्जमाणे जहा तेउका-इयरासी उप्पाइदो तथा उप्पादेदव्वा । वादरणिगोदपदिड्ढिद-वादरपुढपिकाइय-वादरआउ-काइय वादरवाउकाइयाण च एव चेव सत्तारसविहा परूणणा परूदेव्वा । पत्तेग-साधारणसरीरवदिरिचो वादरणिगोदपदिड्ढिदरासी ण जाणिज्जदि चिं वुत्ते सच्च, तेहिं वदिरिचो वणफ्फइरुइएसु जीवरासी णत्थि चेव, किं तु पत्तेयसरीरा दुविहा भवन्ति वादरणिगोदजीवणं

उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे वादर तेजस्कायिक राशिके गुणित करने पर वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवराशि होती है । अथवा, अधिक अर्धच्छेदोंको घनलोकके अर्धच्छेदोंसे भाजित करके जो लघ्व आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति घनलोकको द्वेयरूपसे देकर परस्पर गुणित करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे वादर तेजस्कायिक जीव-राशिके गुणित करने पर वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवराशि होती है । वादर निगोदप्रतिष्ठित, वादर पृथिवीकायिक, वादर अण्णायिक और वादर वायुकायिक जीवराशिके प्रमाणसे वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर राशिके उत्पन्न करने पर जिसप्रकार इन राशियोंसे तेजस्कायिक जीवराशि उत्पन्न की गई उसीप्रकार उत्पन्न करना चाहिये । वादर निगोदप्रतिष्ठित, वादर पृथिवीकायिक, वादर अण्णायिक और वादर वायुकायिक जीवराशिका इसीप्रकार सत्रह सत्रह प्रकारकी प्ररूपणासे प्ररूपण करना चाहिये ।

विशेषार्थ—जहा बर्धी राशिका आश्रय लेकर छोटी राशि उत्पन्न की जावे वहां पर छोटी राशिके अर्धच्छेदोंसे बर्धी राशिके अर्धच्छेद जितने अधिक होयें उतनीवार बर्धी राशिके आधे आधे करने पर, अथवा, उतने अर्धच्छेदप्रमाण दोके परस्पर गुणित करनेसे जो लघ्व आवे उसका बर्धी राशिमें भाग देने पर छोटी राशि आती है । तथा जहा छोटी राशिका आश्रय लेकर बर्धी राशि उत्पन्न की जावे वहा अधिक अर्धच्छेदप्रमाण छोटी राशिके द्विगुणित करने पर, अथवा, उतने अर्धच्छेदप्रमाण दोके परस्पर गुणित करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे छोटी राशिके गुणित कर देने पर बर्धी राशि आ जाती है । शेष कथन स्पष्ट ही है । इसप्रकार तेजस्कायिक राशिकी सत्रह प्रकारकी प्ररूपणाके समान प्ररूपणा करनेसे उपर्युक्त प्रत्येक राशिकी प्ररूपणा सत्रह सत्रह प्रकारकी हो जाती है ।

शुद्धा—प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर, इन दोनों जीवराशियोंको छोड़कर वादर-निगोद प्रतिष्ठित जीवराशि क्या है, यह नहीं मालूम पडता है ?

समाधान—यह सत्य है कि उक्त दोनों राशियोंके अतिरिक्त वनस्पतिकायिकोंमें और कोई जीवराशि नहीं है, किन्तु प्रत्येकशरीर वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके हैं, एक

जोणीभूदसरीरा तवियरीदसरीरा चेदि । तत्थ जे वादरणिगोदाणं जोणीभूदसरीरपक्क
सरीरजीना ते वादरणिगोदपदिद्धिदा भणति । के ते ? मूलयद्दु-भट्टय मूग्ण-गलोड-लोगेमप-
भादयो । उच्च च—

बीजे जोणीभूदे जीरो वक्कमइ मो व अण्णो वा ।

जे नि य मूक्कादीया ने पत्तेया पडमदाए' ॥ ७६ ॥

सुचे वादरवणफट्टिपत्तेयसरीराणमेव गहण कद, (ण तन्भेदाण)? ण,
वादरवणफट्टिकाड्यपत्तेयसरीरजीनेसु चेव तेमिमत्त-माणादो । एदेसिं वादरपजनत्ताण पर
वमाणेण परूणणद्दुमुत्तरसुत्तमाह—

वादरपुठविकाइय-वादरआउकाइय-वादरवणफट्टिकाइयपत्तेयसरीर
पज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असखेज्जा ॥ ८८ ॥

एदस्स मुत्तस्स उत्थो सुगमो चि ण उच्चदे । असखेज्जा इट्ठि सामण्यवणेण

तो वादरनिगोद जीवोंके योनिभूत प्रत्येकशरीर और दूसरे उनसे चिपरीत शरीरवाले अर्थात्
वादरनिगोद जीवोंके अयोनिभूत प्रत्येकशरीर जीव । उनमेंसे जो वादरनिगोद जीवोंके
योनिभूतशरीर प्रत्येकशरीर जीव हैं उन्हें वादरनिगोद प्रतिष्ठित कहते हैं ।

शंका—वे वादरनिगोद जीवोंके योनिभूत प्रत्येकशरीर जीव कौन हैं ?

समाधान—मूली, बदरक (?) भल्लक (भद्रक), सूरण, गलोड (गुडची या गुरखेल)

लोकेश्वरप्रभा ? आदि वादरनिगोद प्रतिष्ठित हैं । कदा भी है—

योनिभूत बीजमें वही जीव उत्पन्न होता है, अथवा दूसरा कोई जीव उत्पन्न होता है ।
यह और जितने भी मूली आदिक सप्रतिष्ठितप्रत्येक हैं वे प्रथम अस्थामें प्रत्येक ही हैं ॥७६॥

शंका—सूत्रमें वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंका ही ग्रहण किया है, उनके
भेदाका क्या नहीं किया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंमें ही उनका
अन्तर्भाव हो जाता है ।

अथ इन वादर पर्याप्तोंकी प्ररूपणाके प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

वादर पृथिवीकायिक, वादर अप्कायिक और वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर
पर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असख्यात हैं ॥ ८८ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, इसलिये नहीं कहते हैं । सूत्रमें 'असख्यात' है, ऐसा

१ वा प्रती 'गलोड' इति पाठ ।

२ गो जी १८७ बीद नीणिम्मूण जावी वक्कमइ सो व अणो वा । जोऽपि य मूले जीवी सा वि व पत्ते
पडमदाए ॥ प्रज्ञापना १, ४५, गा ५१, पृ ११९

३ प्रतियु 'गहण कथ ण' इति पाठ । ४ प्रतियु 'वादरआउकाइय' इति पाठ नारित ।

णपण्मससेज्जाण गहण पत्ते णिच्छिउदाससेज्जपडिसेहट्टमुत्तरसुत्त भणदि—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति
कालेण ॥ ८९ ॥

एदस्स वि सुत्तस्स अत्थो सुगमो चैव । एदेण अजगद-अससेज्जासंखेज्जस्स त्रिसेमेण
तल्लद्विणिमित्तमुत्तरसुत्तमाह—

खेत्तेण वादरपुढविकाइय-वादरआउकाइय-वादरवणप्फइकाइय-
पत्तेयसरीरपज्जत्तएहि पदरमवहिरदि अगुलस्म असखेज्जदिभागवग्ग-
पडिभागेण ॥ ९० ॥

एत्थ अगुलमिदि उत्ते पमाणागुल धेत्तव्व । तस्म अमंखेज्जदिभागम्म जो वग्गो
तेण पडिभागेण भागहारेण । एत्थ णिमित्ते तइया ढट्टया । एदेण अजहारकालेण वादर-
पुढविपज्जत्तादीहि जगपदरमवहिरदि ति ज बुत्त होटि ।

सामान्य घट्टन देनेसे नौ प्रकारके असरयाताका प्रदण प्राप्त होने पर अनिच्छित्त असख्यातोंके प्रतिषेध करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा वादर पृथिवीकायिक पर्याप्त वादर अप्कायिक पर्याप्त और
वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवमर्षिणियों और
उत्सर्षिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ८९ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ सुगम ही है । यद्यपि इस सूत्रसे असख्यातासख्यात अवगत हो
गया, फिर भी उसकी विशेषरूपसे प्राप्ति करानेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा वादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, वादर अप्कायिक पर्याप्त और
वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंके द्वारा सूच्यगुलके असरयातों भागके
वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ९० ॥

यहां सूत्रमें अगुल पेसा कहने पर प्रमाणागुलका प्रदण करना चाहिये । उस
प्रमाणागुलके असख्यातों भागका जो वर्ग तद्रूप प्रतिभागसे अर्थात् भागहारसे । यहा निमित्तमें
नृत्तया धिभक्ति जानना चाहिये । इस अवहारकालसे वादर पृथिवीकायिक पर्याप्त आदि
जीवोंके द्वारा जगप्रतर अपहृत होता है, यह इस सूत्रका अभिप्राय है ।

विशेषार्थ—उत्सेधागुल, प्रमाणागुल और आत्मागुलके भेदसे अंगुल तीन प्रकारका
है । आठ धक्का एक उत्सेधागुल होता है । पाचसो उत्सेधागुलोंका एक प्रमाणागुल होता है ।

१ षट्ठावलिज्जवदिपदागुलमातिदे जगप्रतर । जलमूनिपदारया पुण्णा आनलिअसत्तमजिदकमा ॥
गो जी १०९.

एत्थ सुत्तसूचिदमाइरिओपएसेण भागहारणं त्रिसस भणिस्सामो । त जहा-
पलिदोमस्स असखेज्जदिभागेण सूचिअगुलममहरिय लद्ध णग्गिदे वादरआउकाइयपज्जत्त
अनहारकालो हेदि । तम्हि आपलियाए असखेज्जदिभाएण गुणिदे वादरपुढमिआइय
पज्जत्तअनहारकालो हेदि । तम्हि आपलियाए असखेज्जदिभाएण गुणिदे वादरणिगोद
पठिद्धिटपज्जत्तअनहारकालो हेदि । तम्हि आपलियाए असखेज्जदिभाएण गुणिदे वादर-
वणफ्फदिपत्तेयसरीग्गज्जत्तअवहारकालो हेदि । कारण, सगरासिन्हुचणिमघणत्ता । एदेमि
ममहात्तकालाण खंडिदादीण पच्चिदियतिरिक्खमगो । णरि पदरगुलभागहारो एत्थ पलि
दोमस्स अमखेज्जदिभागे । एदेहि अनहारकालेहि जगपदरे भागे हिदे सगमगद्वपमाण
मागच्छदि ।

वादरतेउपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असखेज्जा । असखेज्जा-
वलियवग्गो आवलियघणस्स अंतो ॥ ११ ॥

अपने अपने अगुलको आत्मागुल कहते हैं । इनमेंसे यहा प्रमाणागुलरूप सूच्यगुलका ही ग्रहण
किया गया है, क्योंकि, छौप आदिकी गणनामें यही अगुल लिया गया है । इसीप्रकार द्रव्य
प्रमाणानुगममें जहा अगुलका समर्थ आया है यहा इसी अंगुलका अभिप्राय जानना चाहिये ।

अब यहा पर आचार्योंके उपदेशानुसार सूत्रसे सूचित भागहारोंके विशेषको कहते हैं ।
यह इसप्रकार है— पच्योपमके असख्यातवें भागसे सूच्यगुलको भाजित करके जो लग्न आये
उसके घणित करने पर वादर अस्कायिक पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । इस
वादर अस्कायिक पर्याप्त जीवोंके अवहारकालको आवलीके असख्यातवें भागसे गुणित
करने पर वादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । इस वादर पृथिवी
कायिक पर्याप्त जीवोंके अवहारकालको आवलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर
वादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । इस वादर निगोदप्रतिष्ठित
पर्याप्त जीवोंके अवहारकालको आवलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर वादर
घनस्थानि प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । यहाँ अवहारकालोंके उत्तरोत्तर
अधिक होनेका कारण यह है कि पूर्व पूर्ववर्ती अपनी अपनी राशि बहुत बहुत पाई जाती
है । इन अवहारकालोंके खंडित आदिकका कथन पञ्चोद्भिय तिर्यंचके खंडित भादिकके कथनके
समान करना चाहिये । इतना विशेष है कि यहा पर प्रतरागुल भागहार है और यहा पर
पच्योपमका असख्यातया भाग भागहार है । इन अवहारकालोंसे जगप्रतरके भाजित करने पर
अपने अपने द्रव्यका प्रमाण आता है ।

वादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असख्यात
है । यह असख्यातरूप प्रमाण असख्यात आवलियोंके वर्गरूप है जो आवलीके घनके
भीतर आता है ॥ ११ ॥

१ विदावलिओगणमसेस सेलं व तउवाउणं । पत्रसार्णं पमाणं ॥ गो की २१० आवलिक्कमी अन्तरा
बडीय गणिओ ह्वावाता तेऊ । पवत्तं २, ११

असखेज्जा इदि सामणेण उत्ते णवपिहस्म असंखेज्जस्स गहणं पसत्तं तप्पडिसे-
हट्ट अमखेज्जाप्रलियवग्गो त्ति णिहेसो कदे। असखेज्जाप्रलियवग्गो त्ति वयणेण
घणाप्रलियादीणमुपरिमाणं गहणे पत्ते तप्पडिसेहट्टमानप्रलियघणस्म अतो इदि णिहेसो कदे।
घणाप्रलियाए अब्भत्तेरे चेव वादरतेउपज्जत्तरामी होदि त्ति उच्च भवदि। आइरियपरं-
परागओपएसेण वादरतेउपज्जत्तरासिस्म अवहारकालं भणिस्सामो। तं जहा—आवलियाए
असंखेज्जदिभाएण पदराप्रलियमवहारिय लद्धेण पदराप्रलियउपरिमवग्गे भागे हिदे वादर-
तेउकाइयपज्जत्तरासी होदि। एत्थ सडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिदाणि जाणिऊण भणिऊण
भाणिदव्वाणि। तस्स पमाणं उच्चदे। पदराप्रलियउपरिमवग्गस्स असखेज्जदिभागो असखे-
ज्जाओ पदराप्रलियाओ। त जहा—पदराप्रलियाए तदुवरिमवग्गे भागे हिदे पदराप्रलिय
आगच्छदि। तिस्से दुभागेण भागे हिदे दोष्णि, तिष्णिभागेण भागे हिदे तिष्णि, एवं

सूत्रमें 'असख्यात हैं' इसप्रकार सामान्यरूपसे कथन करने पर नौ प्रकारके असं-
ख्यातोंका ग्रहण प्राप्त होता है, अथ उनके प्रतिषेध करनेके लिये 'यह असख्यातरूप प्रमाण
असख्यात आवलीके वर्णरूप है' ऐसा निर्देश किया है। 'असख्यात आवलीके वर्णरूप है'
इस वचनसे घनावली आदि उपरिम सख्याओंके ग्रहणके प्राप्त होने पर उसके प्रतिषेध करनेके
लिये 'आवलीके घनके भीतर है' इसप्रकारका निर्देश किया। इसका अभिप्राय यह हुआ कि
यादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि घनावलीके भीतर ही है। अब आचार्य परंपरासे आये हुए
उपदेशके अनुसार यादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिका अवहारकाल कहते हैं। यह इसप्रकार
है—आवलीके असख्यातवर्षे भागसे प्रतरावलीको भाजित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरा-
वलीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर यादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि होती है। यदा पर
खडित, भाजित, विरलित और अपहृतोंको जानकर, कहकर, कहलवाना चाहिये।

विशेषार्थ—यद्यपि ऊपर यादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिके अवहारकाल लानेकी
प्रतिष्ठा की गई है और अन्तमें यादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिका प्रमाण कितना है यह
बतलाया है। फिर भी इससे ऊपरकी प्रतिष्ठामें कोई विसंगति नहीं आती है, क्योंकि,
'आवलीके असख्यातवर्षे भागसे प्रतरावलीको भाजित करके जो लब्ध आवे' इस कथनके
द्वारा यादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिके अवहारकालका कथन हो जाता है।

आगे यादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिका प्रमाण कहते हैं। प्रतरावलीके उपरिम
वर्गका असख्यातवर्षे भाग यादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिका प्रमाण है, जो प्रतरावलीके
उपरिम वर्गका असख्यातवर्षे भाग असंख्यात प्रतरावलीप्रमाण है। आगे इसीका स्पष्टीकरण
करते हैं—प्रतरावलीका उसीके उपरिम वर्गमें भाग देने पर प्रतरावलीका प्रमाण आता है।
प्रतरावलीके द्वितीय भागका प्रतरावलीके उपरिम वर्गमें भाग देने पर दो प्रतरावलिया लब्ध

पदरात्रलियउपरिमग्गे भागे हिदे वादरतेउपज्जत्तरामी आगच्छदि । एवमागच्छदि ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहण कद । तस्म भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्म अद्धच्छेदणए कदे वादरतेउपज्जत्तरामी आगच्छदि । घणाघणे उचइत्सामो । पदरात्रलियाए असखेज्जि-
भागेण पदरात्रलियउपरिमग्गस्सुपरिमग्गं गुणेऊण तेण पदरात्रलियघणउपरिमग्गस्सु
वरिमग्ग गुणेऊण तेण गुणिदराभिणा घणाघणात्रलियउपरिमग्गस्सुपरिमग्गे भागे हिदे
वादरतेउपज्जत्तरामी आगच्छदि । त जहा— पदरात्रलियघणउवरिमग्गस्सुपरिमग्गेण
घणाघणात्रलियउपरिमग्गस्सुपरिमग्गे भागे हिदे घणात्रलियउवरिमग्गस्सुपरिमग्गेण
आगच्छदि । पुणो वि पदरात्रलियउपरिमग्गस्सुपरिमग्गेण तम्हि भागे हिदे पदरात्रलिय
उपरिमग्गो आगच्छदि । पुणो वि पदरात्रलियाए असखेज्जिभाएण पदरात्रलियउपरिम-
ग्गे भागे हिदे वादरतेउपज्जत्तरामी आगच्छदि । एवमागच्छदि ति कट्टु गुणेऊण
भागग्गहण कद । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्म अद्धच्छेदणए कदे वि
वादरतेउपज्जत्तरामी आगच्छदि । एउ सखेज्जासंखेज्जाणतेसु णेयच्च । पदरात्रलिय
उपरिमग्गस्स घणात्रलियउपरिमग्गस्स घणाघणा (त्रलियउपरिमग्गस्स) च असखेज्जिदि

हे । पुन प्रतरावलीके असख्यातवें भागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर वादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है । इसप्रकार वादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर वादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है ।

अथ घनाघनमें गृहीत उपरिम विरल्पको घतलाते हैं— प्रतरावलीके असख्यातवें भागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरावलीके घनके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो गुणित राशि लब्ध आवे उससे घनाघनावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गके भाजित करने पर वादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— प्रतरावलीके घनके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गसे घनाघनावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गके भाजित करने पर घनाघलीके उपरिम घनका उपरिम वर्ग आता है । फिर भी प्रतरावलीके उपरिम घनके उपरिम वर्गसे घनाघलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गके भाजित करने पर प्रतरावलीका उपरिम वर्ग आता है । फिर भी प्रतरावलीके असख्यातवें भागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर वादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है । इसप्रकार वादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी वादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है । इसीप्रकार सख्यात, असख्यात और अनन्त स्थानोंमें ले जाना चाहिये । प्रतरावलीके उपरिम वर्गके असख्यातवें भागरूप, घनावलीके उपरिम वर्गके

भाएण बादरतेउपज्जत्तरासिणा गहिदग्गिहो गहिदग्गुणमारो च वत्तव्वो । एत्थ सुत्तगाहा-
आत्रलियाए वग्गो आत्रलियासखमाग्गुणियो द्ढु ।
तप्हा घणस्स अतो बादरपज्जत्ततेज्जण ॥ ७७ ॥

वाद्दरवाउकाइयपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥९२॥

एदस्स सुत्तस्म अत्थो सुग्गो । असंखेज्जा इदि सामण्यवयणेण णमनिहासंखेज्जस्स
गहणे पत्ते अणिच्छिदासंखेज्जपडिसेहद्दमुत्तरसुत्तमाह—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उत्सप्पिणीहि अवहिरंति
कालेण ॥ ९३ ॥

एदस्म नि सुत्तस्स अत्थो णिकसेवादीहि पुच्च व परूरेदव्वो । एदम्हादो सुचादो
सेसअद्दनिहअसंखेज्जस्म पडिसेहे जादे नि अजहण्णाणुक्कस्सअमंखेज्जासंखेज्जओसप्पिणि-
उत्सप्पिणीओ घणलोगादिभेएण अणेयत्रियप्पाओ तदो तप्पडिसेहद्दमुत्तरसुत्तं भणदि—

खेत्तेण असंखेज्जाणि जग्गपदराणि लोगस्स संखेज्जादिभागो ॥९४॥

असंख्यातवें भागरूप ओर घनाघनावलीके उपरिम वर्गके असंख्यातवें भागरूप बादर तेज-
स्कायिक पर्याप्त राशिके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन करना चाहिये ।
यहा सूत्रगाथा दी जाती है—

चूकि आवलीके असंख्यातवें भागसे आवलीके वर्गको गुणित कर देने पर बादर
तेजस्कायिक पर्याप्त राशिका प्रमाण होता है, इसलिये यह प्रमाण घनावलीके
भीतर है ॥ ७७ ॥

बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात
हैं ॥ ९२ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है । सूत्रमें ' असंख्यात है ' ऐसा सामान्य मन्त्र देनेसे नौ
प्रकारके असंख्यातोंका ग्रहण प्राप्त होने पर अनिच्छित असंख्यातोंका प्रतिषेध करनेके लिये
भागका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवस-
सर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ९३ ॥

निक्षेप आदिके द्वारा इस सूत्रके भी अर्थका पहलेके समान प्ररूपण करना चाहिये । इस
सूत्रसे शेष आठ प्रकारके असंख्यातोंके प्रतिषेध हो जाने पर भी अज्ञघन्यानुत्पष्ट असंख्याता
संख्यात अवसर्पिणिया और उत्सर्पिणिया घनलोक आदिके भेदसे अनेक प्रकारकी हैं, इसलिये
उनका प्रतिषेध करनेके लिये भागेका सूत्र कहते हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव असंख्यात जगप्रतरप्रमाण हैं,

१ X लोपाण X सखं XX वाऊण । पज्जान पमाण । गो जी २१० वाऊ य लोगसखं । पचस २, ११.

अससेजाणि त्ति णिदेसो जगपदरादिहेट्टिमजससेज्जामरेजेनपडिसेहफलो । घण
 लोगादिउपरिमससेज्जामरेजेज्जपटिसेहेट्टु लोगस्त मरेज्जदिभागप्रयण । सेत्तेण इति
 वपणे तइया दट्टव्वा । सेस सुगम । संसेज्जमेहेहि घणलोगे भागे हिडे पादग्गाउपज्जच
 दव्वमागन्ठदि त्ति वुत्त होदि । एत्थ गाहा—

जगसेदीए धग्गे जगसेणीससभागगुणिदेो द्दु ।

तम्हा णलोगता पादरपन्त्तनाउण ॥ ७८ ॥

घणफइकाइया णिगोदजीवा वादरा सुहुमा पज्जत्तापज्जत्ता
 दव्वपमाणेण केवडिया, अणत्ता ॥ ९५ ॥

वनस्पति काय. शरीर येषा ते वनस्पतिकाया, वनस्पतिकाया एव वनस्पति

जो असरयात् जगप्रतरप्रमाण लोकके सरयात्तरे भाग है ॥ ९४ ॥

सूत्रमें 'असरयात्' यह वचन जगप्रतर आदि अद्यस्तन असरयातासरयातके
 प्रतिषेधके लिये दिया है। घनलोफ आदि उपरिम असरयातासरयातके प्रतिषेध करनेके लिये
 'लोकके सरयातके भागप्रमाण' यह वचन दिया है। 'सेत्तेण' इस पदम नृत्तिया विमनि
 जानना चाहिये। शेष वचन सुगम है। सरयातसे घनलोफके भाजित करने पर वादर वायु
 कायिक पर्याप्त जीवोंका द्रव्य आता है, यह इस कथनका तात्पर्य है। यहा गाया की जाती है—

चूकि अगधेणीके घर्गको जगधेणीके सरयात्तरे भागसे गुणित करने पर वादर वायु
 कायिक पर्याप्त राशि आती है। इसलिये उक्त प्रमाण घनलोफके भीतर आता है ॥ ७८ ॥

वनस्पतिकायिक जीव, निगोद जीव, वनस्पतिकायिक वादर जीव, वनस्पति
 कायिक सूक्ष्म जीव, वनस्पतिकायिक वादर पर्याप्त जीव, वनस्पतिकायिक वादर अपर्याप्त
 जीव, वनस्पतिकायिक सूक्ष्म पर्याप्त जीव, वनस्पतिकायिक सूक्ष्म अपर्याप्त जीव, निगोद
 वादर जीव, निगोद सूक्ष्म जीव, निगोद वादर पर्याप्त जीव, निगोद वादर अपर्याप्त
 जीव, निगोद सूक्ष्म पर्याप्त जीव और निगोद सूक्ष्म अपर्याप्त जीव, प्रत्येक द्रव्यप्रमाणकी
 अपेक्षा कितने है ? अनन्त हैं ॥ ९५ ॥

वनस्पति ही काय अथात् शरीर जिन जीवोंके होता है वे वनस्पतिकाय कहलाते हैं।

१ तसससिपुग्गिआदिउत्तपत्तयहाणससात्ता । साहारणजीवाण परिमाण होदि निणदिट्ठे ॥ सगसग
 अक्षसमागो वादरकामाण होदि परिमाण । सेसा एहुमपमाण पडिमागो पुव्वणिदिट्ठो ॥ सुहुमसु सेसमाग सखामाग
 अणुणमा इहा । अरिह अणुणद्धादो पुणद्धा सखणुणिकमा ॥ गो जी २०६-२०८ साहारणवादरेसु' असस
 भाग अक्षमाग भागा । पुण्णामपुण्णमा परिमाण हादि अणुक्कमसो ॥ गो जी २२१ साहारणमाग मया चउरी
 अणत्ता । पम्बस २, ९

कायिका [एवं मदि-विग्गहर्गए वड्डमाणाण वणफडकाइयत्तं ण पावेदि ? चे, ण एस दोमो, णणफडकाइयमग्गेण सुह-दुक्खानुहणणिमित्तकम्मणेयत्तमुवगयजीवानुसुयारेण वणफडकाइयत्ताविरोहा । णणफडकाइयमग्गेण जीवा विग्गहर्गए उड्डमाणा वि णणफ- डकाइया भवति । जेमिणताणं तजीवानमेव च चेर सर्गं भवदि साधारणरूपेण ते णिगोठजीवा भवति । मखेज्जासरेज्जपडिसेहफले णणतणिदेमो । सेसं सुगम । अणता इदि मामण्णयणेण णवनिहस्स णणतस्स गहणे पत्ते अविनकिरुदस्स अट्टविहाणतस्स पडिसेहड्डमुत्तरसुत्तं भणदि—

तथा वनस्पतिकाय ही जनस्पतिकायिक कहलति ह ।

शका—यदि ऐसा है तो विग्रहगतिमें विद्यमान जीवोंको जनस्पतिकायिकपता नहीं प्राप्त होता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, वनस्पतिकायके सधन्धले सुख और दुःखके अनुभव करनेमें निमित्तभूत कर्मके साथ एकरूपको प्राप्त हुए जीवोंके उपचारसे विग्रहगतिमें वनस्पतिकायिक कहनेमें कोई विरोध नहीं आता है । जिन जीवोंके वनस्पति नामकर्मका उदय पाया जाता है वे विग्रहगतिमें रहने हुए भी वनस्पतिकायिक कहे जाते हैं ।

विशेषार्थ—यहां पर शकानारना यह अभिप्राय है कि जो जीव विग्रहगतिमें रहते हैं उनके एक, दो या तीन समयतक नो कर्म वर्गणाओंका प्रहण नहीं होता है, इसलिये उन्हें उस समय वनस्पतिकायिक आदि कहा सकते हैं । इस शकाना समाधान यह है कि विग्रह- गतिके प्रथम समयसे ही जीवोंके स्थावरकाय या जलकाय नामकर्मका उदय हो जाता है । स्थावरकायके पृथिवीकायिक आदि पाच अग्रान्तर भेद हैं और सामान्य अपने विशेषोंको छोड़कर स्वतन्त्र कहा पाया जाता है, इसलिये पृथिवी जीवके पृथिवीकाय, वनस्पति जीवके वनस्पतिकाय नामकर्मका उदय विग्रहगतिके प्रथम समयसे ही हो जाता है, यह सिद्ध हुआ । अब यदि एक, दो या तीन समयतक उसके नो कर्म वर्गणाओंका प्रहण नहीं भी होता है, तो भी वह जीव उस उस पर्यायमें सुख और दुःखके अनुभव करनेमें निमित्तभूत कर्मोंके साथ एकरूपको प्राप्त हो चुका है, इसलिये उसे उपचारसे वनस्पतिकायिक आदि कहना विरोधको प्राप्त नहीं होता है ।

जिन अनन्तान्त जीवोंका साधारणरूपसे एक ही शरीर होता है उन्हें तिगोड जीव कहते हैं । सूत्रमें सरयात और असंख्यातका प्रतिषेध करनेके लिये 'अनन्त' पदका निर्देश किया है । शेष कथन सुगम है । सूत्रमें 'अनन्त' है 'ऐसा सामान्य पचन देनेसे नो प्रकारके अनन्तोंके प्रहणके प्राप्त होने पर अविश्वित आठ प्रकारके अनन्तोंके प्रतिषेध करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

अणताणताहि ओसपिणि-उस्सपिणीहि ण अवहिरंति कालेण

॥ ९६ ॥

जदि पुव्वरासीणमणताणतत्ताप्पोहणट्टमागट्ठमिद सुच्चं, तो ण अवहिरंति कालेणेति वचणं निरुत्थयमिदि चे, ण एम दोमो, उभयऋज्जमाहणट्टत्ताटो । पुव्वरासीणमणताणतत्त च सते वि ए अणतेण वि अदीदकालेण असमत्तिं च पदुप्पादेदि ति । अणमेम सुगम ।

खेत्तेण अणताणता लोमा ॥ ९७ ॥

अदीदकाले ओसपिणि उस्सपिणीपमाणेण कीरमाणे ण अणताणताओ ओसपिणि उस्सपिणीओ भवति । एदाहि अणताणताहि ओसपिणि-उस्सपिणीहि पुव्वुत्तचोइस जीवरासीणो ण अवहिरंति ति भणतेण पुव्विहल्लसुत्तेण एदाण रासीणमणताणतत्तमदीद कालादो बहुत्त च जाणाविद । सपहि इमेण सुत्तेण को अपुच्चो अत्थो जाणाविदो जेणेस्स सुत्तस्स पारमो सफलो होज्ज ? बुच्चदे— एदाण रासीणमदीदकालादो बहुत्तमेत्त पुव्विहल्ल सुत्तेण जाणाविद, ण तस्स भिसेसो । एटेण पुण सुत्तेण तेत्तिं रासीणमदीदकालादो अणत

कालकी अपेक्षा पूर्वोक्त चौदह जीवराशिया अनन्तानन्त अणमपिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होती है ॥ ९६ ॥

शुद्धा— यदि पूर्वोक्त जीवराशियोंके अनन्तानन्तत्वके ज्ञान करानेके लिये यह सूत्र आया है तो ' ण अवहिरंति कालेण ' यह वचन निरर्थक है ?

समाधान— यह कोई दोष नही है, क्योंकि, उभय धार्योंके साधन करनेके लिये उक्त वचन दिया है । उक्त पद एक तो पूर्वोक्त राशियोंके अनन्तानन्तत्वका और दूसरे उनमेंसे प्रत्येक राशिके ध्यय होने पर भी अनन्त अतीत कालके द्वारा भी वे समाप्त नहीं होती हैं, इसका प्रतिपादन करता है । शेष वचन सुगम है ।

वे चौदह जीवराशिया देशकी अपेक्षा अनन्तानन्त लोकरुप्रमाण हैं ॥ ९७ ॥

शुद्धा— अतीत कालको अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीके प्रमाणसे करने पर वे अवसर्पिणिया और उत्सर्पिणिया अनन्तानन्त नहीं होती हैं, ऐसी अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा पूर्वोक्त चौदह जीवराशिया अपहृत नहीं होती हैं, इसप्रकार प्रतिपादन करनेवाले इसके पहले सूत्रसे इन चौदह राशियोंके अनन्तानन्तत्वका और अतीतकालसे वृत्तवका ज्ञान हो जाता है । परंतु इस समय कहे गये इस सूत्रसे कौनसा अपूर्व धर्म जाना जाता है, जिससे इस सूत्रका प्रारंभ सफल होवे ?

समाधान— पूर्व अतीत सूत्रने इन चौदह राशियोंका अतीत कालसे वृत्तवका ज्ञान करा दिया, किन्तु उसकी विशेषताका ज्ञान नहीं कराया । परंतु यह सूत्र उन राशियोंका अतीत कालसे अनन्तगुणत्वका ज्ञान कराता है । आगे उसीका स्पष्टीकरण करते हैं— पूर्व सूत्रमें

गुणच जाणात्रिजदे । त जहा— पुचिपुसुत्ते गुणिज्जमाणरासी कप्पो, एत्थ पुण तदो अमरोज्जगुणो लोणो चि वुत्तो । कप्पमस्र गुणगागसीदो घणलोगगुणगारो अणंतगुणो । कुदो ? एदस्स सुत्तस्स अवयवभूटसोलमपडियअप्पात्रहुगणयणादो जाणिज्जदे । तम्हा सफलो एस सुत्तारभो चि धेत्तव ।

सपहि एत्थ धुरासी उप्पाडज्जदे । तं जहा— पुढनिकाइय-आउकाइय-तेउकाइय-आउ-काइय-तसकाइए अकाइए च, एदेसिं चेव पमाण वग्ग णणफडयकाइयभाजित च मव्वजीर-रामिन्हि पक्सिचे णणफडकाइयधुरासी होदि । णणफडकाइयमदिरित्तसेसरसिणा' सव्वजीर-रासिमोअट्टिय लद्धरूणेण भजिदमव्वजीरसिं तम्हि चेव पक्सिचे णणफडकाइयधुरासी होदि चि पुत्त भग्गि । एदेण धुरामिणा सव्वजीरसिसुपरिमग्गे भागे हिदे वणफड-काइयामी आगन्ठदि । वणफडकाइयधुरामिसंखेज्जलोगेण सडिडेयसड तम्हि चेव पक्सिचे सुहूमणणफडकाइयधुरासी होदि । एदेण पुपुत्तअमंखेज्जलोगणफडिकाइय-धुरामिभागहारेण रूाहिएण णणफडकाइयधुरामिं गुणिदे वादरवणफडकाइयधुरामी

गुण्यमान राशि कल्प कही गई है, परंतु इस सूत्रमें कल्पसे असख्यातगुणा लोक गुण्यमान राशि कहा गया है । तथा कल्पकी गुणकार राशिसे घनलोकका गुणकार अनन्तगुणा है ।

शुका— यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— इस सूत्रके अवयवभूत सोलहप्रतिक अल्पबहुत्रके वचनसे यह जाना जाता है ।

इसलिये इस सूत्रका आरभ सफल है, ऐसा यहा ग्रहण करना चाहिये ।

अथ यहा ध्रुवराशि उत्पन्न की जाती है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— पृथिवी कायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, त्रसकायिक और अक्कायिक, इन जीवराशियोंके प्रमाणके तथा घनस्पतिकायिक जीवराशिके प्रमाणसे भाजित उक्त राशियोंके प्रमाणके वर्गको सर्व जीवराशिमें मिला देने पर घनस्पतिकायिक ध्रुवराशि होती है । घनस्पतिकायिक जीवराशिको छोड़कर शेष राशिके द्वारा सर्व जीवराशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसमेंसे एक कम करके जो शेष रहे उससे सर्व जीवराशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे उसी सर्व जीवराशिमें मिला देने पर घनस्पतिकायिक जीवराशिकी ध्रुवराशि होती है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है । इस ध्रुवराशिसे सर्व जीवराशिके उपरिम वर्गके भाजित करने पर घनस्पतिकायिक जीवराशि आती है । घनस्पतिकायिक ध्रुवराशिको असख्यात लोकप्रमाणसे छडित करके जो एक खंड लब्ध आवे उसे उसी घनस्पतिकायिक ध्रुवराशिमें मिला देने पर सूत्रम घनस्पतिकायिक जीवराशिकी ध्रुवराशि होती है । ऊपर जो असख्यात लोकप्रमाण घनस्पतिकायिक ध्रुवराशिमा भागहार कह आवे है उसमें एक मिला कर जो प्रमाण हो उससे घनस्पतिकायिक ध्रुवराशिके गुणित करने पर वादर घनस्पतिकायिक ध्रुवराशि होती है । पुन

सेसत्रियप्पा पडिसिद्धा त्ति दट्टव्वा । जगपदरे कदजुम्म वग्गसमुट्ठिद पदरंगुल पि ऋजुम्म वग्गसमुट्ठिद चेव । तेमि द्ढिदिदसव्वभागहारा त्रि वग्गसमुट्ठिदा कदजुम्म चेदि जाणाण्ह मगुलस्स अससेज्जदिभागवग्गपण । अण्णहा तस्म फलाणुपलभादे । पदरगुलस्स अससेज्जदिभाएण पदरगुलस्स सखेज्जदिभागेण च जगपदरे भागे हिदे जहाकमेण तम काइया तमकाइयपज्जत्ता च भवति त्ति बुत्त भवदि ।

सासणसम्माइट्टिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघ ॥१०१॥

एत्थ तसकाइय तसकाइयपज्जत्ता इदि पुच्चसुत्तादो अणुपट्टे । कुदो ? उव्वरि पुथ अपज्जत्तमुत्तारभण्णहाणुपवत्तीदो । सेम सुगम ।

तसकाइयअपज्जत्ता पचिदियअपज्जत्ताण भगो ॥ १०२ ॥

शेष त्रिकल्प प्रतिपिद्ध हो जाते हैं, ऐसा समझना चाहिये । जगप्रतर दृत्तयुग्म सख्यारूप और वर्गसमुत्थित है । प्रतरगुल भी दृत्तयुग्म सख्यारूप और वर्गसमुत्थित है । उसीप्रकार उनके स्थापित भागद्वार भी वर्गसमुत्थित और दृत्तयुग्मरूप हैं, इसका ज्ञान करानेके लिये 'अगुलके असख्यातव भागना वर्ग' यह वचन दिया, अन्यथा उसकी दूसरी कोई सफलता नहीं पाई जाती है । प्रतरगुलके असख्यातव भागसे और प्रतरगुलके सख्यातव भागसे जगप्रतरके भाजित करने पर यथाक्रमसे प्रसक्त्यायिक और प्रसक्त्यायिक पर्याप्त जीव होते हैं, यह इस सूत्रका अभिप्राय है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें प्रसक्त्यायिक और प्रसक्त्यायिक पर्याप्त जीव सामान्य प्ररूपणाके समान हैं ॥ १०१ ॥

इस सूत्रमें 'प्रसक्त्यायिक और प्रसक्त्यायिक पर्याप्त' इस वचनकी पूर्ण सूत्रसे अनुवृत्ति होती है, क्योंकि, आगेके लक्ष्यपर्याप्त जीवोंके प्रमाणके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रका आरंभ पृथक् रूपसे अन्यथा वन नहीं सजता था । शेष कथन सुगम है ।

निशेपार्थ—क्योंकि आगे प्रसक्त्यायिक लक्ष्यपर्याप्त जीवोंके प्रमाणका प्रतिपादन करनेवाला सूत्र पृथक् रूपसे रचा गया है, इससे प्रतीत होता है कि पूर्वोक्त सूत्रमें 'प्रसक्त्यायिक और प्रसक्त्यायिक पर्याप्त' पदकी अनुवृत्ति अपने पूर्ववर्ती सूत्रसे हुई है । इस कथनका तात्पर्य यह है कि यद्यपि सामान्य प्रसक्त्यायिक जीवोंमें लक्ष्यपर्याप्तक जीवोंका अन्तर्भाव हो जाता है फिर भी लक्ष्यपर्याप्तक जीव गुणस्थानप्रतिपन्न नहीं होते हैं, अर्थात् मिथ्यादृष्टि ही होते हैं । अतएव इस विषयका ज्ञान करानेके लिये प्रसक्त्यायिकोंके प्रमाणके अन्तर्गत हीचमें सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका प्रमाण कह कर अतन्तर लक्ष्य पर्याप्त प्रसक्त्यायिकोंका प्रमाण कहा ।

प्रसक्त्यायिक लक्ष्यपर्याप्त जीवोंका प्रमाण पचे समान है ॥ १०२ ॥

१५० प्रमाणके

पेइंदिय-तेइदिय चउरिंदिय-पचिंदियअपज्जत्तजीउं' एगडे कडे तपकाइयअपज्जत्ता हवति । कथ तेसिं परुण्णा पचिंदियअपज्जत्तपरुण्णाए ममाणा भवदि ? ण एस दोसो, उभयत्थ पदरंगुलस्स जससेज्जदिभाग भागहार पेक्खिउण तहोअसादो । अत्थदो पुणो तेसिं तिसेसो गणहरेदि पि ण वगिज्जे ।

भागाभाग उचइस्सामो । सव्वजीवरासिं ससेज्जखडे कए बहुखडा सुहुम-णिगोदजीवपज्जत्ता होंति । सेममससेज्जखडे कए बहुखडा सुहुमणिगोदअपज्जत्ता होंति । सेममससेज्जखडे कए बहुखडा वादरणिगोदअपज्जत्ता होंति । सेसं अणत्तखडे कए बहुखडा वादरणिगोदपज्जत्ता हाति । सेसे अणत्तखडे कए बहुखडा अरुइया होंति । सेसरामीदो अससेज्जलोगपमाणमरणेउण पुघ ठपिय पुणो सेमरामिससेज्जलोएण खडिय एयखटमरणेउण त पि पुघ ठपिय पुणो सेसरसिं चत्तारि समपुंजे काऊग अणितएयसंड अमसेज्जलोगेण खडिय तत्थ बहुखडे पदमपुजे पत्तिखत्ते सुहुमनाउकाइया हांति । सेमेगखडमससेज्जलोगेण खडिय तत्थ बहुखडा

शुक्रा—अब कि द्विन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पचेन्द्रिय लक्ष्यपर्याप्तकोंको एत्र करने पर त्रसत्रायिक लक्ष्यपर्याप्त जीव होते हैं, तत्र फिर त्रसत्रायिक लक्ष्यपर्याप्त-कोंकी प्ररूपणा पचेन्द्रिय लक्ष्यपर्याप्तोंकी प्ररूपणाके समान कैसे हो सकती है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, उभयत्र अर्थात् पचेन्द्रिय लक्ष्यपर्याप्तक और त्रसत्रायिक लक्ष्यपर्याप्तक, इन दोनोंका प्रमाण लानेके लिये प्रतरागुलके असत्पातवर् भागरूप भागद्वारको देखकर इत प्रकारका उपदेश दिया । अर्थकी अपेक्षा जो उन दोनोंकी प्ररूपणामें विशेष है उसका गणवर भी निराकरण नहीं कर सकते हैं ।

अब भागाभागको पतलाते हैं—सर्व जीवराशिके सत्पात खट करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके अनख्यान खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके असत्पात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण वादर निगोद अपर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण वादर निगोद पर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण अकायिक जीव हैं । शेष एक भागप्रमाण राशिमेंसे असत्पात लोकप्रमाण राशिको निकालकर पृथक् स्थापित करके पुन शेष राशिको असत्पात लोकप्रमाणसे खंडित करके जो एक खंड आवे उसे निकालकर और उसे भी पृथक् स्थापित करके पुन जो शेष बहुभाग राशि है उसके चार समान पुज करके निकाले हुए पृथक् स्थापित एक खंडको असत्पात लोकप्रमाणसे खंडित करके उनमेंसे बहुभागोंको प्रथम पुजमें मिला देने पर सूक्ष्म धायुकायिक जीवोंका प्रमाण होता है । शेष एक खंडको असत्पात लोकप्रमाणसे खंडित

विदियपुत्रे पन्ध्रसत्ते सुदुमआउकाटया हंति । मेमेयसटममखेज्जलोएण सडिय वट्टमटा तदियपुत्रे पन्ध्रसत्ते सुदुमपुट्टमिआद्या हंति । मेमेयसट चउत्तपुत्रे पन्ध्रसत्ते सुदुम वेडकाटया हंति । सग-सगरामि सग्गेज्जसटे रुदे तत्थ वहुसटा अप्पप्पणो पज्जत्ता हंति । एयसट तेमिमपज्जत्ता । पुत्तमत्रणिट्टममखेज्जलोगगमिमसखेज्जसटे कए वहुसटा वादरवाउअपज्जत्ता हंति । सेमममखेज्जसटे कए वहुसटा वादरआउकाटयअपज्जत्ता हंति । सेसमसखेज्जसटे कए वहुसटा वादरपुट्टमिअपज्जत्ता हंति । मेमममखेज्जसटे कए वहुसटा वादरणिगोदपाट्टिटा अपज्जत्ता हंति । सेसममखेज्जसटे कए वहुसटा वादर- चणफट्टिआडयअपज्जत्ता हंति । सेममसखेज्जसटे कए वहुसटा वादरतेउआडयअपज्जत्ता हंति । मेमममखेज्जसटे कए वहुसटा वादरवाउकाटयअपज्जत्ता हंति । वादरआउकाटय- वादरपुट्टमिआडय वादरणिगोदपाट्टिटा वादरचणफट्टपत्तेगमरीरपज्जत्ताणमेत्त चेत्त जेयत्त । त्ते सेमे अमग्गेज्जसटे कए वहुसटा तमकाडयअपज्जत्ता हंति । मेमममखेज्जसटे

करके उनमेंसे बहुभागको दूसरे पुत्रमें मिला देने पर सूक्ष्म अण्व्याधिक जीवोंका प्रमाण होता है। पुन शेष एक भागको जमर्यात लोकप्रमाणसे खटित करके उनमेंसे बहुभागको तीसरे पुत्रमें मिला देने पर सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंका प्रमाण होता है। पुन शेष एक मडके चौथे पुत्रमें मिला देने पर सूक्ष्म तेजस्कायिक जीवोंका प्रमाण होता है। इन चारों राशियोंमेंसे अपनी अपनी राशिके सत्यात खट करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण अपने अपने पर्याप्त जीवोंका प्रमाण होता है और एक भागप्रमाण उन उनसे अपर्याप्त जीव होते हैं। पुन पहले निकाल कर पृथक् स्थापित की हुई असत्यात लोकप्रमाण राशिके असत्यात खट करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण वादर वायुकायिक अपर्याप्त जीव होते हैं। शेष एक भागके असत्यात खट करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण वादर अण्व्याधिक अपर्याप्त जीव होते हैं। शेष एक भागके असत्यात खट करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण वादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव होते हैं। शेष एक भागके असत्यात खट करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण वादर तेजस्कायिक अपर्याप्त जीव होते हैं। शेष एक भागके असत्यात खट करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण वादर वायुकायिक पर्याप्त जीव होते हैं। भागे वादर अण्व्याधिक, वादर पृथिवीकायिक, वादर निगोदप्रतिष्ठित और वादर वनस्पति प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंका मागामाग इसीप्रकार ले जाना चाहिये। वादर प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंके प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके

१ गो जी ३०७

१ प्रतिपु 'वादरणिगोदकाटया' इति पाठ ।

२ अ प्रती 'उसकाटयअसखे जा', क प्रती 'उसकाटयअसखे' इति पाठ ।

कए बहुखंडा तसकाइयपज्जचमिच्छाइड्ढीं होंति । सेसे असरेज्जखंडे कए बहुखंडा असजदसम्माड्ढिणो होंति । एव णेयच्च जात्र सजदासजदा त्ति । सेसे जसरेज्जखंडे कए बहुखंडा वादरतेउकाइयपज्जत्ता होंति । सेसे सरेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तमजदा होंति । एव णेयच्च जात्र अजोगिक्केरलि त्ति ।

अप्यावहुग तिग्घिह, सत्थाण परत्थाण सच्चपरत्थाणं चेदि । सत्थाणे पयद । सच्चत्थोना वादरपुढनिकाइयपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता असरेज्जगुणा । को गुणगारो ? असरेज्जा लोगा । वादरपुढनिकाइया तिसेसाहिया । सच्चत्थोना सुहुमपुढनिकाइयअपज्जत्ता । तेसिं पज्जत्ता संसेज्जगुणा । को गुणगारो ? मरेज्जसमया । सुहुमपुढनिकाइया तिसेसाहिया । एव आउकाइय तेउकाइय-वाउकाइयाण च सत्थाण वत्तच्च । सच्चत्थोना वादरवणफ्फइकाइयपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता असरेज्जगुणा । को गुणगारो ? असरेज्जा लोगा । वादरवणफ्फइकाइया तिसेसाहिया । सच्चत्थोना सुहुमवणफ्फइकाइयअपज्जत्ता । तेमि

असख्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण त्रसकायिक अपर्याप्त जीव होते हैं । शेष एक भागके असख्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण त्रसकायिक पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । शेष एक भागके असख्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण असयतसम्पदृष्टि जीव होते हैं । इसीप्रकार सयतासयतोंका प्रमाण आने तक भागा-भागका कथन ले जाना चाहिये । शेष एक भागके असख्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभाग प्रमाण वादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके सख्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण प्रमत्तसयत जीव हैं । इसीप्रकार अयोगिकेरलियोंके प्रमाण आनेतक भागा-भागका कथन करना चाहिये ।

अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है, स्वस्थान अल्पबहुत्व, परस्थान अल्पबहुत्व और सर्व परस्थान अल्पबहुत्व । उनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्वमें प्रकृत विषयको बतलाते हैं— वादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सयसे स्तोक हैं । वादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असयतागुणे हैं । गुणकार क्या है ? असख्यात लोक गुणकार है । वादर पृथिवीकायिक जीव वादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव सयसे स्तोक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे सख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? सख्यात समय गुणकार है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । इसीप्रकार अक्कायिक, तेजस्कायिक और वायुकायिक जीवोंका भी स्वस्थान अल्पबहुत्व कहना चाहिये । वादर घनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सयसे स्तोक हैं । वादर घनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव वादर घनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असख्यात लोक गुणकार है । वादर घनस्पतिकायिक जीव वादर घनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म घनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव सयसे स्तोक हैं । सूक्ष्म घनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म घनस्पतिकायिक

पञ्चत्ता सखेज्जगुणा । को गुणगारो ? समेज्जा समय । सुहमवणफइकाइया निमिसहिया ।
 सवत्थोपो तमकाइयअहरकालो । निम्पमभइ जमसेज्जगुणा । सेठी अमखेज्जगुणा ।
 को गुणगारो ? सगअहरकालो । दवमसखेज्जगुण । को गुणगारो ? निम्पमभइ ।
 पदमसखेज्जगुण । को गुणगारो ? सगअहरकालो । लोमो अमखेज्जगुणो । को गुणगारो ?
 सेठी । एउ वादरपफइपञ्चत्त पत्तेयमरीरपञ्चत्त वादरणिगोदपदिद्विदपञ्चत्त वादरपुढनि
 पञ्चत्त वादरअउपञ्चत्त तमकाइयपञ्चत्तमिच्छाडडि-तमकाइयअपञ्चत्ताण च वत्तव्व । सण
 णादीणमोघसत्याणभगो । एउ सत्याणप्पाउहुग समत्त ।

परत्याण पयद । मवत्थोपो वादरपुढनिकाइया । सुहमपुढनिकाइया असखेज्जगुणा ।
 को गुणगारो ? जमसेज्जा लोमा । सवत्थोपो वादरपुढनिकाइया । सुहमपुढनिकाइया
 अमखेज्जगुणा । को गुणगारो ? जसमेज्जा लोमा । पुढनिकाइया निमिसहिया । सवत्थोपो
 वादरपुढनिपञ्चत्ता । तस्सेअ अपञ्चत्ता असखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अमखेज्जा
 लोमा । सुहमपुढनिकाइयअपञ्चत्ता असखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असखेज्जा लोमा ।

अपर्याप्तोसे असख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असख्यात समय गुणकार है । सूक्ष्म वनस्पति
 कायिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्तोसे विशेष अधिक हैं । असकायिक जीवोंका
 अवहारकाल सत्रसे स्तोफ हैं । ऊर्ध्वीकी विष्कभसूची अवहारकालसे असख्यातगुणी है । जग
 थ्रेणी विष्कभसूचीसे असख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है ।
 असकायिक जीवोंका द्रव्य जगथ्रेणीसे असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कभ
 सूची गुणकार हैं । जगप्रतर असकायिक जीवोंके द्रव्यसे असख्यातगुणा है । गुणकार क्या
 है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । लोक जगप्रतरसे असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
 जगथ्रेणी गुणकार हैं । इसप्रकार वादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त, प्रत्येकशरीर पर्याप्त, वादर
 निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त, वादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, वादर अष्कायिक पर्याप्त, असकायिक
 पर्याप्त मिथ्यादाष्टि और असकायिक अपर्याप्त जीवोंका स्थान अल्पगुणत्व कहना चाहिये ।
 कायमार्गणामें सासादनसम्यग्दाष्टि आदिना स्थान अल्पगुणत्व सामान्य स्थान अल्पगुणत्वके
 समान है । इसप्रकार स्थान अल्पगुणत्व समाप्त हुआ ।

अथ परस्थानमें अल्पगुणत्व प्रवृत्त है— वादर पृथिवीकायिक जीव सबसे स्तोफ हैं ।
 सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव वादर पृथिवीकायिकोंसे असख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ?
 असख्यात लोक गुणकार है । अथवा, वादर पृथिवीकायिक जीव सबसे स्तोफ हैं । सूक्ष्म पृथिवी
 कायिक जीव उनसे असख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असख्यात लोक गुणकार है ।
 पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिकोंसे विशेष अधिक हैं । अथवा, वादर पृथिवीकायिक
 पर्याप्त जीव सबसे स्तोफ हैं । वादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असख्यातगुणे हैं । गुण
 कार क्या है ? असख्यात लोक गुणकार है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव वादर पृथिवी
 कायिक अपर्याप्तोसे असख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असख्यात लोक गुणकार है । सूक्ष्म

सुहृमपुटनिकाइयपञ्जता सखेज्जगुणा । एन चउत्थो त्रियप्पो । णरि पुटनिकाइया
 त्रिसैसाहिया । सन्नत्थोरा रादरपुटनिकाइयपञ्जता । तेमिमपञ्जता । असखेज्जगुणा । को
 गुणगारो ? असखेज्जा लोगा । रादरपुटनिकाइया त्रिसैसाहिया । सुहृमपुटनिकाइयपञ्जता
 अमखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असखेज्जा लोगा । सुहृमपुटनिकाइयपञ्जता सखेज्ज-
 गुणा । को गुणगारो ? सखेज्जसमया । सुहृमपुटनिकाइया त्रिसैसाहिया । एव चेन छट्ठो
 त्रियप्पो । णरि पुटनिकाइया त्रिसैसाहिया । सन्नत्थोरा रादरपुटनिकाइयपञ्जता ।
 तेमिमपञ्जता अमखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असखेज्जा लोगा । रादरपुटनि-
 काइया त्रिसैसाहिया । केत्थियमेत्तेण ? रादरपुटनिकाइयपञ्जत्तमेत्तेण । सुहृमपुटनि-
 काइयपञ्जता असखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असखेज्जा लोगा । पुटनिकाइयपञ्जता
 त्रिसैसाहिया । केत्थियमेत्तेण ? रादरपुटनिकाइयपञ्जत्तमेत्तेण । सुहृमपुटनिकाइयपञ्जता
 सखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सखेज्जा समया । पुटनिकाइयपञ्जता त्रिसैसाहिया ।
 केत्थियमेत्तेण ? रादरपुटनिकाइयपञ्जत्तमेत्तेण । सुहृमपुटनिकाइया त्रिसैसाहिया । केत्थिय-

पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे सख्यातगुणे है । इसीप्रकार
 चौथा विन्दु है । इतनी विशेषता है कि पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे
 विशेष अधिक हैं । बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सखे स्तोक हैं । बादर पृथिवीकायिक
 अपर्याप्त जीव उनसे असख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असख्यात लोक गुणकार है । बादर
 पृथिवीकायिक जीव बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक
 अपर्याप्त जीव बादर पृथिवीकायिकोंसे असख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असख्यात लोक
 गुणकार है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे सख्यातगुणे
 हैं । गुणकार क्या है ? सख्यात समय गुणकार है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक
 पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । इसीप्रकार छठवा विन्दु है । इतनी विशेषता है कि पृथिवी
 कायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिकोंसे विशेष अधिक है । बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सखे
 स्तोक है । बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ?
 असख्यात लोक गुणकार है । बादर पृथिवीकायिक जीव बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे
 विशेष अधिक हैं । कितनेमात्रसे विशेष अधिक है ? बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंका जितना
 प्रमाण है तन्मान विशेषसे अधिक है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव बादर पृथिवी
 कायिकोंसे असख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असख्यात लोक गुणकार है । पृथिवीकायिक
 अपर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । कितने प्रमाणसे अधिक
 है ? बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है उतने प्रमाणसे अधिक है । सूक्ष्म
 पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे सख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ?
 सख्यात समय गुणकार है । पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष
 अधिक है । कितने प्रमाणसे अधिक है ? बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है

भेत्तेण ? वादरपुढनिकाइयपज्जचपरिहीणसुहुमपुढनिकाइयअपज्जचमेत्तेण । एव चेत्त अहुमो
 नियप्पो । णरि पुढनिकाइया निसेसाहिया । एगुत्तरग्घिक्रमेण' एत्तिया चेत्त अप्पानहुग
 नियप्पा । अणहारकाल निक्खमसूचीं भेदि-पदर लोणे कमेण पवेमिय अप्पानहुगे कीरमाणे
 मि नियप्पा लम्भति च्चि ? ण, ताण क्कमप्पेसस्स कारणभात्ता । पुढनिकाइयरासिस्स
 सगहभेयपदुप्पायणद्ध पुढनिकाइयरासिस्स कमेण भेदो कीरदे । ण च अणहारकालादिसु
 कमेण पवेमिज्जमाणेसु पुढनिकाइयरासी भिज्जे । तदो एत्तिया चेत्त एगुत्तरग्घिनियप्पा
 होंति च्चि द्विद । अतिमनियप्प वचइस्सामो । सवत्थोपो वादरपुढनिकाइयपज्जचअ
 हारकालो । तस्सेत्त निक्खमसूचीं अससेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगनिक्खमसूचीं
 अमसेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअणहारकालो । अहवा सेटीए अससेज्जदिभागो
 अमसेज्जानि सेडिपडमग्गामूलाणि । को पडिभागो । अणहारकालग्गो । सेटी अससेज्ज
 गुणा । को गुणगारो ? अणहारकालो । दव्वमससेज्जगुण । को गुणगारो ? निक्खमसूचीं ।

उत्तरे प्रमाणसे अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक
 हैं । कितने प्रमाणसे अधिक हैं ? वादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके प्रमाणसे हीन सूक्ष्म पृथिवी
 कायिक अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण रहे उतनेसे अधिक हैं । इसप्रकार आठवा विकल्प है ।
 इतनी विशेषता है कि पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिकोंसे विशेष अधिक हैं ।
 एकोत्तर वृद्धिके क्रमसे अल्पगुत्वके इतने ही विकल्प होते हैं ।

शुक्रा — अणहारकाल, विष्कमसूची, जगश्रेणी, जगप्रतर और लोक इनको क्रमसे
 प्रविष्ट करके अल्पगुत्व करने पर भी विकल्प प्राप्त होते हैं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, इन अवहारकाल आदिकके क्रमप्रवेशका कोई कारण
 नहीं है । सप्रदरूप पृथिवीकायिक राशिके भेदोंके प्रतिपादन करनेके लिये पृथिवीकायिक
 राशिजा क्रमसे भेद किया है । परन्तु अणहारकालादिकके क्रमसे प्रविश्यमान होने पर
 पृथिवीकायिक राशि भेदको प्राप्त नहीं होती है । इसलिये एकोत्तर वृद्धिके क्रमसे विकल्प
 इतने ही होते हैं, यह बात निश्चिन हो जाती है ।

अथ अंतिम विकल्पको बतलाते हैं— वादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंका
 अणहारकाल सत्रसे स्तोक है । उन्हींकी विष्कमसूची अणहारकालसे असख्यात
 गुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कमसूचीका असख्यातया भाग
 गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अणहारकाल प्रतिभाग है । अथवा, जगश्रेणीका
 असख्यातया भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या
 है ? अपने अणहारकालका वर्ग प्रतिभाग है । जगश्रेणी विष्कमसूचीसे असख्यातगुणी है । गुणकार
 क्या है ? अपना अणहारकाल गुणकार है । उन्हींका (वादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंका) द्रव्य
 जगश्रेणीसे असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कमसूची गुणकार है । जगप्रतर

पदरमसंसेज्जगुण । को गुणगारो ? अत्रहारकालो । लोगो असंसेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेठी । वादरपुढनिकाइयअपज्जत्तदव्यमसंसेज्जगुणं । को गुणगारो ? असंसेज्जा लोगा । वादरपुढनिकाइया विसेसाहिया । सुहुमपुढनिकाइयअपज्जत्ता असंसेज्जगुणा । को गुणगारो ? अमसेज्जा लोगा । पुढनिकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमपुढनिकाइयअपज्जत्ता ससेज्जगुणा । को गुणगारो ? ससेज्जसमया । पुढनिकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमपुढनिकाइया विसेसाहिया । पुढनिकाइया विसेसाहिया । एव चाउतेउ वाउणं परत्थाण जाणिऊण वचचं ।

वादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके द्रव्यसे असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अवधारकाल गुणकार है । लोक जगप्रतरसे असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । वादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य लोकेसे असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? असख्यात लोक गुणकार है । वादर पृथिवीकायिक जीव वादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव वादर पृथिवीकायिकोंसे असख्यातगुणे है । गुणकार क्या है ? असख्यात लोक गुणकार है । पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे सख्यातगुणे है । गुणकार क्या है ? सख्यात समय गुणकार है । पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिकोंसे विशेष अधिक हैं । इसीप्रकार अणुकायिक, तेजस्कायिक और वायुकायिक जीवोंके परस्थान अल्पबहुत्वका समझकर कथन करना चाहिये ।

पृथिवीकायिक जीवोंके पञ्चोत्तर वृद्धिक्रमसे भेदोंके अल्पबहुत्वके क्रमका बतलानेवाला कोष्ठक

बा पृ	बा पृ.	बा पृ प	बा पृ प	बा पृ प	बा पृ प	बा पृ प	बा पृ प
स्. पृ	स् पृ	बा पृ अप	बा पृ अप	बा पृ अप	बा पृ अप	बा पृ अ	बा पृ अ
	पृ सा	स् पृ अप	स् पृ अप	बा पृ	बा पृ	बा पृ	बा पृ
		स् पृ प	स् पृ प	स् पृ अप	स् पृ अप	स् पृ अ	स् पृ अ
			पृ सा	स् पृ प	स् पृ प	पृ अ	पृ अ
				स् पृ	स् पृ	स् पृ प	स् पृ प
					पृ सा	पृ प	पृ प
						स् पृ	स् पृ
						स् पृ	स् पृ सा

संपहि वणप्फइपरत्थाणप्पावहुग वत्तडस्सामो । सव्वत्थोना वादरवणप्फइकाइया । सुहुमवणप्फइकाइया अमरखेज्जगुणा । एव विदिय पि । णरि वणप्फइकाइया निसेमाहिया । अहवा सव्वत्थोना वादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता । वादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असखेज्जगुणा । को गुणमारो ? असखेज्जलोमा । सुहुमवणप्फइकाइयपज्जत्ता असखेज्जगुणा । को गुणमारो ? असखेज्जलोमा । सुहुमवणप्फइकाइयपज्जत्ता मरखेज्जगुणा । को गुणमारो ? सखेज्जसमया । एव चउत्थ पि । णरि वणप्फइकाइया निसेमाहिया । अहवा सव्वत्थोना वादरवणप्फइपज्जत्ता । वादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असखेज्जगुणा । वादरवणप्फइकाइया निसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? वादरवणप्फइकाइयपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असखेज्जगुणा । को गुणमारो ? असखेज्जा लोमा । सुहुमवणप्फइकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । सुहुमवणप्फइकाइया निसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्तमेत्तेण । एव छट्ठं पि । णरि वणप्फइकाइया निसेमाहिया । अहवा सव्वत्थोना वादरवणप्फइ

अथ धनस्पतिकायिक जीवोंके परस्थान अल्पबहुत्वको धतलाते हैं— वादर धनस्पतिकायिक जीव सबसे स्तोक हैं । सूक्ष्म धनस्पतिकायिक जीव उनसे असख्यातगुणे हैं । इसीप्रकार दूसरा विकल्प भी है । इतनी विशेषता है कि धनस्पतिकायिक जीव सूक्ष्म धनस्पतिकायिक जीवोंसे विशेष अधिक हैं । अथवा, वादर धनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । वादर धनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असख्यात लोक गुणकार है । सूक्ष्म धनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव वादर धनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे असख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असख्यात लोक गुणकार है । सूक्ष्म धनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म धनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे सख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? सख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार चौथा विकल्प भी है । इतनी विशेषता है कि धनस्पतिकायिक जीव सूक्ष्म धनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । अथवा, वादर धनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । वादर धनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असख्यातगुणे हैं । वादर धनस्पतिकायिक जीव वादर धनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? वादर धनस्पतिकायिक पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म धनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव वादर धनस्पतिकायिकोंसे असख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असख्यात लोक गुणकार है । सूक्ष्म धनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म धनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे सख्यातगुणे हैं । सूक्ष्म धनस्पतिकायिक जीव सूक्ष्म धनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? सूक्ष्म धनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । इसीप्रकार छठवा विकल्प भी है । इतनी विशेषता है कि धनस्पतिकायिक जीव सूक्ष्म धनस्पतिकायिकोंसे विशेष अधिक हैं । अथवा, वादर धनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । वादर

सपहि एदेसु णउपदेसु णिगोदछपदाणि पनिसिय पण्णारमपदअप्पाउहुंगं वत्त
इस्सामो । सव्वत्थोना वादरणिगोदपज्जत्ता । वादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता निसेसाहिया ।
केत्तियमेत्तेण ? वादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरिरपज्जत्तेण' पदरस्स असखेज्जदिभागमेत्तेण ।
उवरि अट्टपदाणि पुञ्ज व । अहवा सव्वत्थोना वादरणिगोदपज्जत्ता । वादरवणप्फइकाइय
पज्जत्ता निसेसाहिया । वादरणिगोदअपज्जत्ता असखेज्जगुणा । को गुणमारो ? असखेज्जा
लोमा । वादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता निसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? वादरवणप्फइकाइय-
पत्तेयसरिरअपज्जत्तअसखेज्जलोममेत्तेण । उवरि सत्तपदाणि पुञ्ज व । अहवा सव्वत्थोना
वादरणिगोदपज्जत्ता । वादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता निसेसाहिया । वादरणिगोदअपज्जत्ता ।
असखेज्जगुणा । वादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता निसेसाहिया । वादरणिगोदा निसेसाहिया ।
केत्तियमेत्तेण ? वादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरिरअपज्जत्तेणणवादरणिगोदपज्जत्तमेत्तेण । वादर
वणप्फइकाइया निसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? वादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरिरमेत्तेण । उवरि

अब इन पूर्वाक्त नौ स्थानोंमें निगोदसवन्धी छद्द स्थानोंका प्रवेश कराके पदद्व
स्थानोंमें अस्पष्टत्वको घटलाते हैं— वादरनिगोद पर्याप्त जीव सधसे स्तोत्र है । वादर
घनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव वादरनिगोद पर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । कितने अधिक है ?
वादर घनस्पतिकायिक पर्याप्त, जो कि जगप्रतरके असख्यातवें भाग है, तन्मात्र विशेषसे
अधिक है । इसके ऊपर आठ स्थान पहलेके समान है । अथवा, वादरनिगोद पर्याप्त जीव
सधसे स्तोत्र है । वादर घनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव उससे विशेष अधिक है । वादरनिगोद
अपर्याप्त जीव वादर घनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असख्यातगुणे है । गुणकार क्या है ? अस
ख्यात लोक गुणकार है । वादर घनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव वादरनिगोद अपर्याप्तोंसे
विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? वादर घनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर
अपर्याप्त, जो कि असख्यात लोकप्रमाण है, तन्मात्र विशेषसे अधिक है । इसके ऊपर सात
स्थान पहलेके समान है । अथवा, वादरनिगोद पर्याप्त जीव सधसे स्तोत्र है । वादर घन
स्पतिकायिक पर्याप्त जीव उनसे विशेष अधिक है । वादरनिगोद अपर्याप्त जीव वादर घन
स्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असख्यातगुणे है । वादर घनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव वादरनिगोद
अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । वादरनिगोद जीव वादर घनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे
विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? वादर घनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर
अपर्याप्तोंके प्रमाणसे न्यून वादरनिगोद पर्याप्तोंका जितना प्रमाण हो तन्मात्र विशेषसे
अधिक है । वादर घनस्पतिकायिक जीव वादरनिगोद जीवोंसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र
विशेषसे अधिक है ? वादर घनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र

छप्पदाणि पुच्चं न । अहना सच्चत्थोवा चादरणिगोदपज्जत्ता । नादरणणफइकाइयपज्जत्ता विमेसाहिया । चादरणिगोदअपज्जत्ता असखेज्जगुणा । चादरणणफइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । चादरणिगोदा विसेसाहिया । चादरणणफइकाइया विसेसाहिया । सुहुमवण-
 फइकाइयअपज्जत्ता असखेज्जगुणा । णिगोदअपज्जत्ता विसेसाहिया । वणफइकाइय-
 अपज्जत्ता विसेसाहिया । केचियमेत्तेण ? असखेज्जलोगमेत्तपत्तेयसरीरमेत्तेण । उतरि
 चत्तारि पदाणि पुच्चं न । अहना सच्चत्थोवा चादरणिगोदपज्जत्ता । चादरणणफइकाइय-
 पज्जत्ता विसेसाहिया । नादरणिगोदअपज्जत्ता असखेज्जगुणा । चादरणणफइकाइयअपज्जत्ता
 विमेसाहिया । चादरणिगोदा विसेसाहिया । चादरणणफइकाइया विसेसाहिया । सुहुमणणफइ-
 काइयअपज्जत्ता असखेज्जगुणा । णिगोदअपज्जत्ता विसेसाहिया । वणफइकाइयअपज्जत्ता
 विसेसाहिया । सुहुमणणफइकाइयपज्जत्ता सखेज्जगुणा । णिगोदपज्जत्ता विसेसाहिया ।

विशेषसे अधिक है । इसके ऊपर छह स्थान पहलेके समान हैं । अथवा चादरनिगोद पर्याप्त जीव सबसे स्तोके हैं । चादर घनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव उनसे विशेष अधिक हैं । चादर निगोद अपर्याप्त जीव चादर घनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असख्यातगुणे हैं । चादर घनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव चादरनिगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । चादरनिगोद जीव चादर घनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । चादर घनस्पतिकायिक जीव चादरनिगोद जीवोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म घनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव चादर घनस्पतिकायिकोंसे असख्यातगुणे हैं । निगोद अपर्याप्त जीव सूक्ष्म घनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । घनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं । असख्यात लोकप्रमाण प्रत्येकशरीर जीवोंसे विशेष अधिक हैं । इसके ऊपर चार स्थान पहलेके समान हैं । अथवा, चादरनिगोद पर्याप्त जीव सबसे स्तोके हैं । चादर घनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव चादरनिगोद पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । चादरनिगोद अपर्याप्त जीव चादर घनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असख्यातगुणे हैं । चादर घनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव चादरनिगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । चादरनिगोद जीव चादर घनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । चादर घनस्पतिकायिक जीव चादर निगोदोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म घनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव चादर घनस्पतिकायिकोंसे असख्यातगुणे हैं । निगोद अपर्याप्त जीव सूक्ष्म घनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । घनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म घनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव घनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे सख्यातगुणे हैं । निगोद पर्याप्त जीव सूक्ष्म घनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेषसे अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे

केचियमेत्तेण ? वादरणिगोदपज्जत्तमेत्तेण । वणप्फइकाइयपज्जत्ता त्रिसेसाहिया । केचिय
 मेत्तेण ? पत्तेयसररीरपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमरणप्फइकाइया त्रिसेसाहिया । वणप्फइकाइया
 त्रिसेसाहिया । अहवा मच्चरथोपा वादरणिगोदपज्जत्ता । वादररणप्फइकाइयपज्जत्ता त्रिसे
 साहिया । वादरणिगोदअपज्जत्ता असत्तेज्जगुणा । वादररणप्फइकाइयअपज्जत्ता त्रिसेसाहिया ।
 वादरणिगोदा त्रिसेसाहिया । वादररणप्फइकाइया त्रिसेसाहिया । सुहुमरणप्फइकाइय
 अपज्जत्ता असत्तेज्जगुणा । णिगोदअपज्जत्ता त्रिसेसाहिया । वणप्फइकाइयअपज्जत्ता त्रिसे
 साहिया । सुहुमरणप्फइकाइयपज्जत्ता सत्तेज्जगुणा । णिगोदपज्जत्ता त्रिसेसाहिया ।
 वणप्फइकाइयपज्जत्ता त्रिसेसाहिया । सुहुमरणप्फइकाइया त्रिसेसाहिया । णिगोदा त्रिसे
 साहिया । केचियमेत्तेण ? वादरणिगोदमेत्तेण । वणप्फइकाइया त्रिसेसाहिया । केचियमेत्तेण ?
 पत्तेयमरीरवणप्फइकाइयमेत्तेण ।

अधिरु इ ? वादर निगोद पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है ।
 घनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव निगोद पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे
 अधिक है ? प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । सूक्ष्म
 घनस्पतिकायिक जीव घनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । घनस्पतिकायिक
 जीव सूक्ष्म घनस्पतिकायिकोंसे विशेष अधिक है । अथवा, वादर निगोद पर्याप्त जीव
 सत्रसे स्तोत्र है । वादर घनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव इनसे विशेष अधिरु है । वादर निगोद
 अपर्याप्त जीव वादर घनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असख्यातगुणे है । वादर घनस्पतिकायिक
 अपर्याप्त जीव वादर निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । वादर निगोद जीव वादर
 घनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । वादर घनस्पतिकायिक जीव वादर निगोदोंसे
 विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म घनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव वादर घनस्पतिकायिकोंसे
 असख्यातगुणे हैं । निगोद अपर्याप्त जीव सूक्ष्म घनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष
 अधिक हैं । घनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म
 घनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव घनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे सख्यातगुणे हैं । निगोद पर्याप्त
 जीव सूक्ष्म घनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । घनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव
 निगोद पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म घनस्पतिकायिक जीव घनस्पतिकायिक
 पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । निगोद जीव सूक्ष्म घनस्पतिकायिकोंसे विशेष अधिक हैं ।
 कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? वादर निगोदोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे
 अधिक है । घनस्पतिकायिक जीव निगोद जीवोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे
 अधिक है ? प्रत्येकशरीर घनस्पतिकायिकोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है ।

संपहि वादरुणफ्फइऋइयपत्तेयमरीरपज्जत्त वादरुणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्त वादरुण-
फ्फइऋइयपत्तेयमरीरअपज्जत्त वादरुणफ्फइऋइयपत्तेयसरीर—वादरुणिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्त-
वादरुणिगोदपदिट्ठिदा एदाणि छप्पदाणि पुच्चिच्छपण्णारसपट्टेसु पक्खेयिय एकावीसपद-
अप्पावहुग वत्तइस्सामो । तं जहा— सच्चत्थोत्तं वादरुणफ्फइऋइयपत्तेयसरीर-
पज्जत्तदव्वं । वादरुणिगोदपज्जत्तदव्वमणंतगुणं । को गुणगारो ? सगरासिस्स असंखेज्जदि-

पूर्वोक्त नौ राशियोंमें निगोदकी उह राशिया मिला देने पर अल्पग्रहत्वके

क्रमको बतलानेजाला कोष्ठक

वा नि प	वा नि प	वा नि प	वा नि प	वा नि प	वा नि प
वा घ प	वा घ प	वा घ प	वा घ प	वा घ प	वा घ प
वा च अ	वा नि अ	वा नि अ	वा नि अ	वा नि अ	वा नि अ
वा च	वा घ अ	वा घ अ	वा घ अ	वा घ अ	वा घ अ
सू घ अ	वा घ	वा नि	वा नि	वा नि	वा नि
व अ	सू घ अ	वा घ	वा घ	वा घ	वा घ
सू घ प	घ अ	सू घ अ	सू घ अ	सू घ अ	सू घ अ
व प	सू घ प	व अ	नि अ	नि अ	नि अ
सू व	घ प	सू व प	व अ	व अ	व अ
घ	सू घ	घ प	सू व प	सू व प	सू व प
	व	सू व	व प	नि प	नि प
		व	सू व	घ प	घ प
			घ	सू व	सू व
				घ	नि
					व

अथ वादर घनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त, वादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त, वादर घनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त, वादर घनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर, वादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त और वादर निगोदप्रतिष्ठित, इत छद् स्थानोंको पूर्वोक्त पन्द्रह स्थानोंमें मिलाकर इफकीस स्थानोंमें अल्पग्रहत्वको बतलाते हैं। यह इसप्रकार है— वादर घनस्पति कायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्य सत्रसे स्तोक है। वादर निगोद पर्याप्तोंका द्रव्य उससे अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है ? अपनी राशिका असंख्यातया भाग गुणकार है। प्रतिभाग

१ प्रतिपु ' वादरुणफ्फइ० पत्तेयसरीर— वादरुणफ्फइ० पत्तेयसरीर ' इति अधिक पाठ ।

भागो । को पडिभागो ? पदरस्म असखेज्जदिभागमेत्तपत्तेयसरीरपज्जत्तद्व्व पडिभागो ।
 उवरि चोदसपदाणि पुव्व व । अहवा सव्वत्थेव वादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तद्व्व ।
 वादरणिगोदपदिद्विदपज्जत्तद्व्वमसखेज्जगुण । को गुणगारो ? आरलियाए असखेज्जदि
 भागो । उवरि पण्णारस पदाणि पुव्व व । अहवा सव्वत्थेव वादरवणप्फइकाइयपत्तेय-
 सरीरपज्जत्तद्व्व । वादरणिगोदपदिद्विदपज्जत्तद्व्वमसखेज्जगुण । वादरवणप्फइकाइयपत्तेय-
 सरीरपज्जत्तद्व्वमसखेज्जगुण । को गुणगारो ? असखेज्जा लोगा । को पडिभागो ? पदरस्स
 असखेज्जदिभागमेत्तवादरणिगोदपदिद्विदपज्जत्तद्व्वपडिभागो । वादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरा
 विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? पत्तेयसरीरपज्जत्तमेत्तेण । वादरणिगोदपज्जत्ता अणतगुणा ।
 को गुणगारो ? सगरासिस्म असखेज्जदिभागो । को पडिभागो । असखेज्जलोगमेत्तपत्तेय
 सरीरद्व्वपडिभागो । उवरि चोदस पदाणि पुव्व व । अहवा सव्वत्थेव वादरवणप्फइ
 काइयपत्तेयसरीरपज्जत्तद्व्व । वादरणिगोदपदिद्विदपज्जत्तद्व्वमसखेज्जगुण । वादरवणप्फइ

क्या है ? जगप्रतरके असख्यातवें भागमात्र प्रत्येकशरीर पर्याप्त द्रव्यप्रमाण प्रतिभाग है । इसके
 ऊपर चौदह स्थान पहलेके समान हैं । अथवा, वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका
 द्रव्य सबसे स्तोक है । वादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका द्रव्य इससे असख्यातगुणा है ।
 गुणकार क्या है ? आवलीका असख्यातवा भाग गुणकार है । इसके ऊपर पंद्रह स्थान पहलेके
 समान हैं । अथवा, वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्य सबसे स्तोक है ।
 वादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका द्रव्य उससे असख्यातगुणा है । वादर वनस्पतिकायिक
 प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंका द्रव्य वादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंसे असख्यातगुणा है ।
 गुणकार क्या है ? असख्यात लोक गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? जगप्रतरके असख्यातवें
 भागमात्र वादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्य प्रतिभाग है । वादर वनस्पतिकायिक
 प्रत्येकशरीर जीव वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक है ।
 कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे
 अधिक है । वादर निगोद पर्याप्त जीव वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंसे अनन्तगुणे
 है । गुणकार क्या है ? अपनी राशिका असख्यातवा भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ?
 असख्यात लोकप्रमाण प्रत्येकशरीर द्रव्य प्रतिभाग है । इसके ऊपर चौदह स्थान पहलेके
 समान हैं । अथवा, वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त द्रव्य सबसे स्तोक है । वादर
 निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्य इससे असख्यातगुणा है । वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर

१ क अपर्याप्त असखेज्जा लोगा । को परिभागो ? पदरस्म असखेज्जदिभागमेत्तवादरणिगोदपदिद्विद
 पज्जत्तद्व्व पडिभागो ? इत्याधिक पाठ ।

२ आ-कमारो ' को गुणगारो दम्बपडिभागो ' इति पाठ नास्ति ।

काइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तदव्वममंखेज्जगुणं । वादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरा विसेसाहिया ।
 वादरणिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्तदव्वममंखेज्जगुण । को गुणमारो ? अमखेज्जा लोमा । उअणि
 पणारम पदाणि पुव्व व । अहरा सव्वत्थेअ वादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तदव्व ।
 वादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तदव्वममंखेज्जगुणं । वादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तदव्वम-
 मंखेज्जगुण । वादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरा विसेसाहिया । वादरणिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्तदव्व
 असंखेज्जगुणं । वादरणिगोदपदिट्ठिदा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? वादरणिगोदपदिट्ठिद-
 पज्जत्तमेत्तेण । उअरिमपणारम पदाणि पुव्वं व ।

अपर्याप्त द्रव्य वादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्यसे असख्यातगुणा है । वादर वनस्पतिकायिक
 प्रत्येकशरीर जीव वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं ।
 वादर निगोद प्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्य वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर द्रव्यसे असख्यात
 गुणा है । गुणकार क्या है ? असख्यात लोक गुणकार है । इसके ऊपर पन्द्रह स्थान पहलेके
 समान है । अथवा, वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त द्रव्य सबसे स्तोरु है । वादर
 निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्य उससे असख्यातगुणा है । वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर
 अपर्याप्त द्रव्य वादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्यसे असख्यातगुणा है । वादर वनस्पति
 कायिक प्रत्येकशरीर जीव वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष
 अधिक हैं । वादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्य वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवसे
 असख्यातगुणा है । वादर निगोदप्रतिष्ठित जीव वादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष
 अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? वादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका जितना प्रमाण
 है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । इसके ऊपर पन्द्रह स्थान पहलेके समान हैं ।

विशेषार्थ—ऊपर दिये हुए तीन कोष्ठक और आगे दिये हुए निम्न कोष्ठकसे इस बातका
 ज्ञान अच्छे प्रकारसे हो जाता है कि प्रथम स्थानसे दूसरेमें और तीसरे आदिसे चौथे आदिमें
 क्या अंतर है । यद्यपि इन कोष्ठकोंमें परस्पर अल्पबहुत्वकी विशेषता नहीं बतलाई है, तो भी
 इनसे अल्पबहुत्वका क्रम अवश्य ही समझमें आ जाता है । विशेषताका ज्ञान मूलसे किया जा
 सकता है । वनस्पतिके पहले कोष्ठकमें नौ भेदोंकी मुख्यतासे, दूसरेमें उन नौ भेदोंमें ६ और
 मिलाकर पन्द्रह भेदोंकी मुख्यतासे और निम्न तीसरे कोष्ठकमें उपर्युक्त पन्द्रह भेदोंमें उह भेद
 और मिलाकर इकौस भेदोंकी मुख्यतासे अल्पबहुत्व बतलाया है । जहां 'ऊपर सात स्थान पह-
 लेके समान हैं, पन्द्रह स्थान पहलेके समान है' इत्यादि कहा है उसका यह अभिप्राय है कि
 प्रारम्भके जितने स्थानोंमें विशेषता बहनी थी वह कह दो । आगे अन्तके सात या पन्द्रह आदि
 स्थान पहलेके कहे हुए जोड़ लेना चाहिये ।

सपत्ति वादरणिगोटपदिद्विदपज्जचअनहारकालो वादरवणप्फइकाडयपत्तेयसरीरपज्जच
अनहारकालो तस्सेअ विक्खभसुई वादरणिगोटपदिद्विदपज्जचअनिकरभसुई सेठी जगपदर लोगा
इदि सत्त पटाणि एक्काणीसपदेसु पत्तिखनिय अट्टानीसपदप्पानहुग वत्तइस्सामो ।

पूर्वोक्त पन्द्रह स्थानोंमें छह स्थान जोड़कर इक्कीस स्थानोंमें अल्पबहुत्वके
क्रमका ज्ञान करनेवाला षोष्ठक

वा व प्र प	वा य प्र प	वा घ प्र प	वा ङ प्र प	वा च प्र प
वा ति प	वा नि प्रति प	वा नि प्रति प	वा नि प्रति प	वा नि प्रति प
वा व प	वा नि प	वा व प्र अ	वा व प्र अ	वा व प्र अ
वा नि अ	वा व प	वा व प्र	वा व प्र	वा व प्र
वा घ अ	वा नि अ	वा नि प	वा नि प्रति अ	वा नि प्रति अ
वा नि	वा व अ	वा घ प	वा नि प	वा नि प्रति
वा च	वा नि	वा नि अ	वा व प	वा नि प
सू व अ	वा घ	वा घ अ	वा नि अ	वा व प
नि अ	सू व अ	वा ति	वा घ अ	वा नि अ
घ अ	नि अ	वा व	वा नि	वा व अ
सू व प	घ अ	सू व अ	वा च	वा नि
नि प	सू व प	नि अ	सू व अ	वा घ
घ प	नि प	घ अ	नि अ	सू व अ
सू घ प	घ प	सू घ प	घ अ	नि अ
नि	सू व नि प	नि प	सू घ प	घ अ
घ	घ	घ प	नि प	सू व प
		सू घ नि व	घ प	नि प
			सू घ नि घ	व प
				सू घ नि घ

अथ वादर निगोदप्रतिष्ठित पयाप्त जीर्णोका अवहारकाल, वादर घनरूपतिकायिक
प्रत्येकशरीर पर्वाप्तोंका अवहारकाल, उसीकी विष्कभसुई, वादर निगोदप्रतिष्ठित पर्वाप्तोंकी
विष्कभसुई, जगभ्रेणी, जगप्रतर और लोक, इन सात स्थानोंको पूर्वाक्त इक्कीस स्थानोंमें
- पट्टारस स्थानोंमें अल्पबहुत्वको बतलाते हैं— यहा ये सातों स्थान एकसाथ मिला

एदाणि सत्त नि पदाणि एवमारेण पविसिदव्याणि । कुदो ? कमप्पवेसकाणा-
 भत्ता । रासिमगहभेदपदुप्पायणद्ध कमेण पसेो कीरदे । ण च एत्थ रासिभेदो
 अत्थि, पत्तभिज्जमाणभेदपज्जंतत्तादे । सच्चत्थेणो वादरणिगोदपदिद्धिदपज्जत्तअनहार-
 कालो । वादरवणप्फड्काइयपत्तेयसरीरपज्जत्तअवहारकालो अमसेज्जगुणो । को गुणगारो ?
 आनलियाए अससेज्जदिभागो । तस्सेव निक्खमभ्र्दई अससेज्जगुणा । वादरणिगोदपदि-
 द्धिदपज्जत्तनिकसमभ्र्दई अससेज्जगुणा । को गुणगारो ? आनलियाए अससेज्जदिभागो ।
 सेढी अमसेज्जगुणा । वादरवणप्फड्काइयपत्तेयसरीरपज्जत्तदवमससेज्जगुणं । वादरणिगोद-
 पदिद्धिदपज्जत्तदवमससेज्जगुण । को गुणगारो ? आनलियाए अमसेज्जदिभागो । पदरम-
 ससेज्जगुण । को गुणगारो ? वादरणिगोदपदिद्धिदपज्जत्तअनहारकालो । लोगो अससेज्जगुणो ।
 को गुणगारो ? मेट्ठी । वादरवणप्फड्काइयपत्तेयसरीरपज्जत्तदव अससेज्जगुणं । को
 गुणगारो ? अससेज्जा लोगो । वादरवणप्फड्काइयपत्तेयसरीरा निमेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ?
 तस्सेन वादरवणप्फड्काइयपत्तेयसरीरपज्जत्तमेत्तेण । वादरणिगोदपदिद्धिदपज्जत्ता अस-
 सेज्जगुणा । को गुणगारो ? अमसेज्जा लोगो । वादरणिगोदपदिद्धिदा निसेसाहिया ।

देना चाहिये । क्योंकि, उनके क्रमसे मिलानेका कोई कारण नहीं है । सप्रद्वरूप राशियोंके भेदके प्रतिपादन करनेके लिये क्रमसे राशि मिलाई जाती है । परन्तु यहा पर तो राशिमैं कोई भेद पाया नहीं जाता है, क्योंकि, भिद्यमान राशियोंमें जितने भेद प्राप्त थे उतने भेद किये जा चुके हैं । वादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका अवहारकाल पूर्वोक्त अवहारकालसे असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आचलीका असख्यातवा भाग गुणकार है । उन्हीं वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंकी विष्कभसूची अवहारकालसे असख्यातगुणी है । वादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंकी विष्कभसूची पूर्वोक्त विष्कभसूचीसे असख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? आचलीका असख्यातवा भाग गुणकार है । जगध्रेणी उक्त विष्कभसूचीमे असख्यातगुणी है । वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्य जगध्रेणीसे असख्यातगुणा है । वादर निगोद-प्रतिष्ठित पर्याप्तोंका द्रव्य वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंके द्रव्यसे असख्यात गुणा है । गुणकार क्या है ? आचलीका असख्यातवा भाग गुणकार है । जगप्रतर वादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्तोंके द्रव्यसे असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? वादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका अवहारकाल गुणकार है । लोक जगप्रतरसे असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगध्रेणी गुणकार है । वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंका द्रव्य लोकसे असख्यात गुणा है । गुणकार क्या है ? असख्यात लोक गुणकार है । वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक-शरीर जीव वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? उन्हींके पर्याप्तोंका अर्थात् वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मान विशेषसे अधिक हैं । वादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त जीव वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंसे असख्यातगुणे है । गुणकार क्या है ? असख्यात लोक

केचित्तियमेत्तेण ? वादरणिगोदपडिद्विद्विपञ्जत्तमेत्तेण । वादरणिगोदपञ्जत्ता अणतगुणा । को गुणगारो ? सगरासिस्स असखेज्जदिभागो । तस्म को पडिभागो ? वादरणिगोदपडिद्विद्विपडिभागो । वादरणण्फइकाइयपञ्जत्ता विसेसाहिया । केचित्तियमेत्तेण ? वादरणण्फइकाइयपत्तेयसरीरपञ्जत्तमेत्तेण । वादरणिगोदअपञ्जत्ता असखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असखेज्जालोगा । वादरणण्फइकाइयअपञ्जत्ता विसेसाहिया । केचित्तियमेत्तेण ? वादरणण्फइकाइयपत्तेयमरीरअपञ्जत्तमेत्तेण । वादरणिगोदा विसेसाहिया । केचित्तियमेत्तेण ? पत्तेयसरीरअपञ्जत्तेणूणवादरणिगोदपञ्जत्तमेत्तेण । वादरणण्फइकाइया विसेसाहिया । केचित्तियमेत्तेण ? वादरणण्फइपत्तेयमरीरमेत्तेण । मुहुमणण्फइकाइयअपञ्जत्ता असखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असखेज्जालोगा । णिगोदअपञ्जत्ता विसेसाहिया । केचित्तियमेत्तेण ? वादरणिगोदअपञ्जत्तमेत्तेण । वणण्फइकाइयअपञ्जत्ता विसेसाहिया । केचित्तियमेत्तेण ? वादरणण्फइकाइयपत्तेय

गुणकार है । वादर निगोदप्रतिष्ठित जीव वादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? वादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । वादर निगोद पर्याप्त जीव वादर निगोदप्रतिष्ठित जीवोंसे अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अपनी राशिका असख्यातनां भाग गुणकार है । उसका प्रतिभाग क्या है ? वादर निगोदप्रतिष्ठित जीवोंका प्रमाण प्रतिभाग है । वादर घनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव वादर निगोद पर्याप्तोंके प्रमाणसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? वादर घनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । वादर निगोद अपर्याप्त जीव वादर घनस्पतिकायिक पर्याप्तोंके प्रमाणसे असख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असख्यात लोक गुणकार है । वादर घनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव वादर निगोद अपर्याप्तोंके प्रमाणसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? वादर घनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । वादर निगोद जीव वादर घनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवोंसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंके प्रमाणसे न्यून वादर निगोद पर्याप्तोंका जितना प्रमाण हो न मात्र विशेषसे अधिक है । वादर घनस्पतिकायिक जीव वादर निगोद जीवोंसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? वादर घनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । सूक्ष्म घनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव वादर घनस्पतिकायिक जीवोंसे असख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असख्यात लोक गुणकार है । निगोद अपर्याप्त जीव सूक्ष्म घनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? वादर निगोद अपर्याप्त जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । घनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? वादर घनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । सूक्ष्म

सरीरअपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमणप्फदिकाइयपज्जत्ता सखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सखेज्जा समया । णिगोदपज्जत्ता विसेमाहिया । केत्तियमेत्तेण ? वादरणिगोदपज्जत्तमेत्तेण । वणप्फइ-
काइयपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? वादरवणप्फदिपत्तेयसरीरपज्जत्तमेत्तेण ।
सुहुमणप्फदिऋइया विसेमाहिया । केत्तियमेत्तेण ? वादरगणप्फदिपज्जत्तेणूणसुहुमवण-
प्फदिअपज्जत्तमेत्तेण । णिगोदा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? वादरणिगोदमेत्तेण ।
वणप्फइकाइया विसेमाहिया । केत्तियमेत्तेण ? वादरगणप्फइकाइयपत्तेयसरीरमेत्तेण । एउ
वणप्फइकाइयपरत्थाणप्पाउहुग समत्त । तसकाइयपरत्थाणसस पच्चिदियपरत्थाणमगो ।
एउ परत्थाणप्पाउहुग समत्त ।

सउवपरत्थाणप्पाउहुग पत्तइस्सामो । सउवत्थेना अजेगिक्केउली । चत्तारि उव-
सामगा सखेज्जगुणा । चत्तारि सउवा मखेज्जगुणा । सजेगिक्केउली सखेज्जगुणा ।
अपमत्तसज्जदा सखेज्जगुणा । पमत्तसज्जदा सखेज्जगुणा । पमत्तापमत्तरासीहिंती वादरवाउ-
पज्जत्तअवहारकालो किमहिओ ऊणो चि ण जाणिज्जदे । कुदो ? सपहि उणएसामापादो ।

घनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव घनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे सख्यातगुणे हैं । गुणकार
क्या है ? सख्यात समय गुणकार है । निगोद पर्याप्त जीव सूक्ष्म घनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे
विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? वादर निगोद पर्याप्तोंका जितना प्रमाण
है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । घनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव निगोद पर्याप्तोंसे विशेष
अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? वादर घनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका
जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । सूक्ष्म घनस्पतिकायिक जीव घनस्पतिकायिक
पर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? वादर घनस्पति पर्याप्तोंके
प्रमाणसे न्यून सूक्ष्म घनस्पति अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण हो तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं ।
निगोद जीव सूक्ष्म घनस्पतिकायिक जीवोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ?
वादर निगोद जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । घनस्पतिकायिक जीव
विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? वादर घनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर
जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । इसप्रकार घनस्पतिकायिक जीवोंका
परस्थान अल्पउहुत्व समाप्त हुआ । प्रसफायिक जीवोंका परस्थान अल्पउहुत्व पचेन्द्रिय
जीवोंके परस्थान अल्पउहुत्वके समान है । इसप्रकार परस्थान अल्पउहुत्व समाप्त हुआ ।

अत्र सर्वपरस्थान अल्पउहुत्वको धतलाते हैं—अयोगिकेवली जीव सबसे थोड़े हैं । चारों
गुणस्थानोंके उपशामक अयोगिकेवलीयोंसे सख्यातगुणे हैं । चारों गुणस्थानोंके क्षपक
उपशामकोंसे सख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली जीव क्षपकोंसे सख्यातगुणे हैं । अपमत्तसयत
जीव सयोगिकेवलीयोंसे सख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसयत जीव अपमत्तसयतोंसे सख्यातगुणे हैं ।
प्रमत्तसयत और अपमत्तसयत जीवराशिसे वादर घायुकायिक पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल
क्या अधिक है, या कम, यह नहीं जाना जाता है, क्योंकि, इस समय इस प्रकारका

विदेव विदेविये । वाप्यडकाइया विसेसाहिया ।

एव कायमगणा समता ।

जेगागुगदेण पंचमणजोगि-तिष्णित्रचिजोगीसु मिच्छाद्वी दव
ज्याने केवडिया ? देवाणं सखेज्जदिभागो ॥ १०३ ॥

एव विदेव चैव वचिनोगाणं संगहो किमद्वो कदो ? ण एम दोसो । कुणे ?
विदेवो तत्रचचनोत्रचिजोगेहि मह एदेसि तिष्ण वचिनोगाण दव्यालाव पडि समाणचा
नचये । इनालावाजनेगवोगो भवदि, ण भिष्णालायाण । देवाण जाणि दव्व काल-खेच
एवये पुव्व पन्विदाणि तेमि सखेज्जदिभागो णेमिमद्वुह्ण रामीण पमाण हेदि ।
इदो ! इदो एदे अद्व वि जोगा सम्पाणि चैव भवति, णो अमष्पीणं, तथ पडिसिद्धचादा ।
उमन्तु वि पहाया देवा चैव, सेमगदिमष्पीण देवाणं सखेज्जदिभागचादो । तथ वि
इवेदु एते कदवोगरातो भव-वचिजोगारामोदो सखेज्जगुणचादो । त पि कथ जाणिन्दे !

एते इतस्तत्रे पणेत इत्यते विदोप बाधिक ह । निगोद जांव सूत्तमनस्पतिकायिक इत्यते
विदोप बाधिक है । वनस्त उवापिक जीव निगोद जीधोसे विदोप बाधिक है ।

इत्तरकार कायमार्गाण समाप्त हुर् ।

वेदनादिचे अनुवादसे पाचा मनोयोगियों और तीन वचनयोगियों
निष्पादित होइ इत्यदनामकी अपेक्षा कितने हैं ? देवोंके सत्यातवों भाष
है ॥ १०३ ॥

इच्छा—यहां तीन ही वचनयोगियोंका समूह किसलिये किया है ?

उत्तर—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, वचनयोगियों और अनुमय वचनयोगि
योंके साथ इन तीनों वचनयोगियोंके इच्छालापके प्रति समानता नहीं पाई जाती है । समाना
तापेक्षा ही एक दोष होता है, निष्कलापेक्षा नहीं । देवोंका इच्छ, खात होर क्षेत्रकी अपेक्षा
के प्रधान करते हुए होते हैं वचनयोगियोंका भाष इन बात राशियोंका प्रधान है । क्योंकि,
वे बड़े मनो-समर्थ हैं होते हैं वचनयोगियोंके नहीं, क्योंकि, सच-इयोंमें वे भाषों
योग प्रतिनिधि हैं । सच-इयोंमें भी प्रधान देव ही हैं, क्योंकि, दोर तीन शक्तिके सभी
बाद देवोंके सत्यातवों भाष होते हैं । यहां देवोंमें भी प्रधान काययोगियोंकी राशि है, क्योंकि,
काययोगियोंका प्रधान मनोयोगियों और वचनयोगियोंसे सत्यातवुपा है ।

संज्ञा—यह कैसे जाना जाना है ?

सरीरअपञ्जत्तमेत्तेण । सुहुमणणफ्फदिकाइयपञ्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सखेज्जा
समया । णिगोदपञ्जत्ता त्रिसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? वादरणिगोदपञ्जत्तमेत्तेण । वणफ्फइ-
काइयपञ्जत्ता त्रिसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? वादरवणणफ्फदिपत्तेयसरीरपञ्जत्तमेत्तेण ।
सुहुमणणफ्फदिकाइया त्रिसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? वादरणणफ्फदिपञ्जत्तेणसुहुमवण-
णफ्फदिअपञ्जत्तमेत्तेण । णिगोदा त्रिसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? वादरणिगोदमेत्तेण ।
वणफ्फइकाइया त्रिसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? वादरवणणफ्फइकाइयपत्तेयसरीरमेत्तेण । एव
वणफ्फइकाइयपरत्थाणप्यानुग समत्त । तसकाइयपरत्थाणस्म पंचिदियपरत्थाणभनो ।
एव परत्थाणप्यानुग समत्त ।

सच्चपरत्थाणप्यानुग उच्चइस्सामो । सच्चरयोना अजोगिकेजली । चत्तारि उव-
सामगा सखेज्जगुणा । चत्तारि राग्गा मखेज्जगुणा । सजोगिकेजली सखेज्जगुणा ।
अपमत्तसजदा सखेज्जगुणा । पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । पमत्तापमत्तरासीहिंतो वादरानउ-
पञ्जत्तअनहारकालो किमहिओ उणो त्ति ण जणिज्जदे । कुदो ? संपहि उणएसामादाओ ।

घनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव घनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे सख्यातगुणे ह । गुणकार
क्या है ? सख्यात समय गुणकार है । निगोद पर्याप्त जीव सूक्ष्म घनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे
विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? वादर निगोद पर्याप्तोंका जितना प्रमाण
है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । घनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव निगोद पर्याप्तोंसे विशेष
अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? वादर घनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका
जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । सूक्ष्म घनस्पतिकायिक जीव घनस्पतिकायिक
पर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? वादर घनस्पति पर्याप्तोंके
प्रमाणसे न्यून सूक्ष्म घनस्पति अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण हो तन्मात्र विशेषसे अधिक है ।
निगोद जीव सूक्ष्म घनस्पतिकायिक जीवोंसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ?
वादर निगोद जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । घनस्पतिकायिक जीव
विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? वादर घनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर
जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । इसप्रकार घनस्पतिकायिक जीवोंका
पररधान अल्पवहुत्व समाप्त हुआ । प्रसक्तिकायिक जीवोंका पररधान अल्पवहुत्व पचेन्द्रिय
जीवोंके पररधान अल्पवहुत्वके समान है । इसप्रकार पररस्थान अल्पवहुत्व समाप्त हुआ ।

अत्र सर्वपरस्थान अल्पवहुत्वको घतलाते हैं—अयोगिकेधली जीव समसे थोड़े हैं । चारों
गुणस्थानोंके उपशामक अयोगिकेधलियोंसे सख्यातगुणे हैं । चारों गुणस्थानोंके क्षपक
उपशामकोंसे सख्यातगुणे हैं । सयोगिकेजली जीव क्षपकोंसे सख्यातगुणे हैं । अपमत्तसयत
जीव सयोगिकेधलियोंसे सख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसयत जीव अपमत्तसयतोंसे सख्यातगुणे हैं ।
प्रमत्तसयत और अपमत्तसयत जीवराशिसे वादर पर्याप्त जीवोंका अनहारकाल
क्या अधिक है, या कम, यह नहीं जाना कि, इस समय इस

तदे अमनसमन्मारादृष्टिअवहारकात्रे अमंगेज्जगुणे । एवं ज्ञानिउण जेयं ज्ञान मन्दा
 सत्तदअवहारकालो षि । तथा वादग्नेउपज्जत्ता अमंगेज्जगुणा । तदे मन्तामन्त्रद्वयम
 मंगेज्जगुण । एवं ज्ञानिउण जेयं नार पलित्तोमो षि । तदे वादग्नेउपज्जत्त
 अवहारकात्रे अमंगेज्जगुणा । वादग्नेउपज्जत्तअवहारकाले अमंगेज्जगुणो । को
 गुणमारो ? आरलियाण अमंगेज्जदिमागो । वादग्नेउपज्जत्तअवहारकाले
 अमंगेज्जगुणो । को गुणमारो ? आरलियाण अमंगेज्जदिमागो । वादग्नेउपज्जत्तअवहारकाले
 पत्तेयपज्जत्त अवहारकाले अमंगेज्जगुणो । को गुणमारो ? आरलियाण अमंगेज्जदिमागो ।
 तमकादयमिउदृष्टि अवहारकाले अमंगेज्जगुणो । को गुणमारो ? पलित्तोममम अमंगे
 ज्जदिमागो । तमकादयअपज्जत्तअवहारकाले विमेमादित्रे । केधियमेधेण ? आरलियाण
 अमंगेज्जदिमाण्ण सत्तिदेमसटेण । तमकादयपज्जत्तअवहारकाले अमंगेज्जगुणो । को
 गुणमारो ? आरलियाण अमंगेज्जदिमाण्णम मंगेज्जदिमागो । तदे तमकादयपज्जत्त

उपदेश नहीं पाया जाता है । वादर वायुशायिक पर्याप्तोंके अवहारकालसे अमनसमन्मारादि
 योंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । इसीप्रकार समझकर सपतामयतोंके अवहारकालतक
 ले जाना चाहिये । सपतामयतोंके अवहारकालसे वादर सेअरवायिक पर्याप्त असख्यातगुणे
 हैं । इससे सपतामयताका द्रव्य असख्यातगुणा है । इसीप्रकार जानकर पस्योपमसक छ
 जाना चाहिये । पस्योपमसे वादर अवायिक जीवोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । वादर
 पृथिवीशायिक पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल वादर अवायिक पर्याप्त जीवोंके अवहारकालसे
 असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असख्यातया भाग गुणकार है । वादर
 निगोदमनिष्ठित प्रत्येक जीवोंका अवहारकाल वादर पृथिवीशायिक पर्याप्तोंके अवहारकालसे
 असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असख्यातया भाग गुणकार है । वादर
 वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल वादर निगोदमनिष्ठित पर्याप्तोंके
 अवहारकालसे असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आयनीका असख्यतया भाग गुणकार है ।
 प्रसकायिक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंके
 अवहारकालसे असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पस्योपमका असख्यातया भाग गुणकार
 है । प्रसकायिक अपर्याप्त जीवोंका अवहारकाल प्रसकायिक मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे
 विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? आवलीके असख्यातयें भागसे प्रसकायिक
 मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको संक्षिप्त करके जो एक भाग लब्ध आये तन्मात्र विशेषसे
 अधिक है । प्रसकायिक पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल प्रसकायिक अपर्याप्तोंके अवहारकालसे
 असख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीके असख्यातयें भागका असख्यातया भाग
 गुणकार है । प्रसकायिक पर्याप्तोंके अवहारकालसे प्रसकायिक पर्याप्तोंकी विष्कभत्की

विस्त्रभस्र्द्धं अससेज्जगुणा । तमकाइयअपज्जचत्रिकसंभस्र्द्धं अससेज्जगुणा । तसकाइय-
 विस्त्रभस्र्द्धं विसेमाहिया । वादरणणफडकाइयपचेयमरीरपज्जचत्रिकसंभस्र्द्धं अससेज्जगुणा ।
 वादरणिगोदपदिद्विदपज्जचत्रिकसंभस्र्द्धं अससेज्जगुणा । वादरपुढनिकाइयपज्जचत्रिकसंभ-
 स्र्द्धं अमसेज्जगुणा । वादरआउकाइयपज्जचत्रिकसंभस्र्द्धं अमसेज्जगुणा । वादर-
 वाउकाइयपज्जचत्रिकसंभस्र्द्धं अससेज्जगुणा । सेढी सखेज्जगुणा । तसकाइय-
 पज्जचदवमसखेज्जगुण । तसकाइयअपज्जचदवमसखेज्जगुण । तमकाइयदव्वं विसे-
 साहिय । वादरणणफडकाइयपचेयसरीरपज्जचदवमसखेज्जगुण । वादरणिगोदपदि-
 द्विदपज्जचदवमसखेज्जगुण । (वादरपुढनिकाइयपज्जचदवमसखेज्जगुण ।) वादरआउ-
 पज्जचदवमसखेज्जगुण । पदरमसखेज्जगुण । वादरनाउपज्जचदवमसखेज्जगुण । लोमो
 सखेज्जगुणो । तदे वादरतेउअपज्जचदवमसखेज्जगुण । वादरतेउदव्वं विसेसाहिय ।

असख्यातगुणी है । तसकायिक अपर्याप्त जीवोंकी विष्कभसूची तसकायिक पर्याप्तोंकी
 विष्कभसूची असख्यातगुणी है । तसकायिक जीवोंकी विष्कभसूची तसकायिक अपर्याप्तोंकी
 विष्कभसूचीसे विशेष अधिक है । वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंकी
 विष्कभसूची तसकायिकोंकी विष्कभसूचीसे असख्यातगुणी है । वादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त
 जीवोंकी विष्कभसूची वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंकी विष्कभसूचीसे
 असख्यातगुणी है । वादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंकी विष्कभसूची वादर निगोदप्रतिष्ठित
 पर्याप्तोंकी विष्कभसूचीसे असख्यातगुणी है । वादर अकायिक पर्याप्त जीवोंकी विष्कभसूची
 वादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंकी विष्कभसूचीसे असख्यातगुणी है । वादर वायुकायिक पर्याप्तोंकी
 विष्कभसूची वादर अकायिक पर्याप्तोंकी विष्कभसूचीसे असख्यातगुणी है । जगध्रेणी वादर
 वायुकायिक पर्याप्तोंकी विष्कभसूचीसे सख्यातगुणी है । तसकायिक पर्याप्तोंका द्रव्य जगध्रेणीसे
 असख्यातगुणा है । तसकायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य तसकायिक पर्याप्तोंके द्रव्यसे असख्यातगुणा
 है । तसकायिकोंका द्रव्य तसकायिक अपर्याप्तोंके द्रव्यसे विशेष अधिक है । वादर
 वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्य तसकायिकोंके द्रव्यसे असख्यातगुणा है । वादर
 निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका द्रव्य वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंके द्रव्यसे
 असख्यातगुणा है । वादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंका द्रव्य वादर निगोदप्रतिष्ठितोंसे अस-
 ख्यातगुणा है । वादर अकायिक पर्याप्तोंका द्रव्य वादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके द्रव्यसे
 असख्यातगुणा है । जगध्रतर वादर अकायिक पर्याप्तोंके द्रव्यसे असख्यातगुणा है । वादर
 वायुकायिक पर्याप्तोंका द्रव्य जगध्रतरसे असख्यातगुणा है । लोक वादर वायुकायिक
 पर्याप्तोंके द्रव्यसे सख्यातगुणा है । लोकसे वादर तेजस्कायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य
 असख्यातगुणा है । वादर तेजस्कायिकोंका द्रव्य वादर तेजस्कायिक अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष

त्रिसेसाहिया । सुहुमवाउपज्जत्ता विसेसाहिया । वाउपज्जत्ता त्रिसेसाहिया । सुहुमतेउ-
 काइया विसेसाहिया । तेउकाइया विसेसाहिया । सुहुमपुढप्रिकाइया विसेसाहिया । पुढवि-
 काइया विसेसाहिया । सुहुमआउकाइया विसेसाहिया । आउकाइया विसेसाहिया । सुहुम-
 वाउकाइया विसेसाहिया । वाउकाइया विसेसाहिया । अकाइया अणतगुणा । चादरणिगोद-
 पज्जत्ता^१ अणतगुणा । चादरवणप्फइपज्जत्ता विसेसाहिया । चादरणिगोदअपज्जत्ता असरेज्ज-
 गुणा । चादरवणप्फइअपज्जत्ता विसेसाहिया । चादरणिगोदा विसेसाहिया । चादरवणप्फइ-
 काइया विसेसाहिया^१ । सुहुमउणप्फइअपज्जत्ता असरेज्जगुणा । णिगोदअपज्जत्ता त्रिसे-
 साहिया । वणप्फइअपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमउणप्फइपज्जत्ता सरेज्जगुणा । णिगोद-
 पज्जत्ता विसेसाहिया । वणप्फइपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमउणप्फइकाइया विसेसाहिया ।

सूक्ष्म अण्कायिक पर्याप्त जीव पृथिवीकायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है । अण्कायिक
 पर्याप्त जीव सूक्ष्म अण्कायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है । सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्त
 जीव अण्कायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है । वायुकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म
 वायुकायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है । सूक्ष्म तेजस्कायिक जीव वायुकायिक पर्याप्त
 द्रव्यसे विशेष अधिक है । तेजस्कायिक जीव सूक्ष्म तेजस्कायिक द्रव्यसे विशेष अधिक है ।
 सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव तेजस्कायिक द्रव्यसे विशेष अधिक है । पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म
 पृथिवीकायिक द्रव्यसे विशेष अधिक है । सूक्ष्म अण्कायिक जीव पृथिवीकायिक द्रव्यसे
 विशेष अधिक है । अण्कायिक जीव सूक्ष्म अण्कायिक द्रव्यसे विशेष अधिक है । सूक्ष्म
 वायुकायिक जीव अण्कायिक द्रव्यसे विशेष अधिक है । वायुकायिक जीव सूक्ष्म
 वायुकायिक जीव द्रव्यसे विशेष अधिक है । अण्कायिक जीव वायुकायिक द्रव्यसे अपर्याप्त
 है । चादर निगोद पर्याप्त जीव अण्कायिक जीवोंसे अनन्तगुणे है । चादर वनस्पति पर्याप्त
 जीव चादर निगोद पर्याप्तोंसे विशेष अधिक है । चादर निगोद अपर्याप्त जीव चादर
 वनस्पति पर्याप्त द्रव्यसे असख्यातगुणे है । चादर वनस्पति अपर्याप्त जीव चादर निगोद
 अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है । चादर निगोद जीव चादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त द्रव्यसे
 विशेष अधिक है । चादर वनस्पतिकायिक जीव चादर निगोद द्रव्यसे विशेष अधिक है ।
 सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव चादर वनस्पतिकायिक द्रव्यसे असख्यातगुणे है ।
 निगोद अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पति अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है । वनस्पति अपर्याप्त
 जीव निगोद अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है । सूक्ष्म वनस्पति पर्याप्त जीव वनस्पति अपर्याप्त
 द्रव्यसे सख्यातगुणे है । निगोद पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पति पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है ।
 वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव निगोद पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है । सूक्ष्म वनस्पति

१ प्रतिपु 'अपज्ज' इति पाठ ।

२ आ व्रतयो 'सुहुमवणप्फइ' विसे' इति अधिक पाठ ।

जोगद्व्यपमाणहृगादो । त जहा— 'सच्चरत्योवा मणजोगद्वा । वचिजोगद्वा संखेज्जगुणा । कायजोगद्वा संखेज्जगुणा चि ।' पुणो एदेसिमद्वाण समास काऊण तेण तिहं जोगाणं सण्णिरासिमोअट्टिय अप्पणो अद्वाहि पुव पुध गुणिदे मण वचि कायजोगरासीओ हन्ति । तदो द्विमेद एदे अट्ट नि मिच्छाडिद्विरासीओ देणणं संखेज्जदिभागो चि ।

सासणसम्मादिद्विप्पहुडि जाव संजदासंजदा चि ओघं ॥ १०४ ॥

पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागत्तं पडि ओघजीपेहि सह एदेसिं समाणत्तमत्थि चि ओघमिदि उच्च । पज्जअट्टियणए पुण अवलपिज्जमाणे तेहितो एदेसिं अत्थि महतो भेदो । कुदो ? एदेसिमोघरासिस्स संखेज्जदिभागत्तादो । त पि कव णच्चे ? पुच्चुत्तद्रप्पावहुगादो । सेस सुगम ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि चि द्व्यपमाणेण केव-
डिया, संखेज्जा ॥ १०५ ॥

समाधान—योगकालके अल्पबहुत्वसे यह जाना जाता है । यह इमप्रकार है— 'मनोयोगका काल सबसे स्तोके हे । वचनयोगका काल उससे सख्यातगुणा है । काययोगका काल वचनयोगके कालसे सख्यातगुणा है ।' अनन्तर इन कालोंका जोड़ करके जो फल हो उससे तीनों योगोंकी सही जीवराशिको अपवर्तित करके जो लघु आवे उसे अपने अपने कालसे पृथक् पृथक् गुणित करने पर मनोयोगी, वचनयोगी और काययोगी जीवराशि होती है । इसलिये यह निश्चित हुआ कि ये आठ ही मिथ्यादृष्टि जीवराशिया देवोंके सख्यातवें भाग हैं ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयत्तासयत्त गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें पूर्वोक्त आठ योगवाले जीवोंका प्रमाण सामान्य प्ररूपणाके समान पर्योपमके असंख्यातवें भाग है ॥ १०४ ॥

पर्योपमके असंख्यातवें भागके प्रति ओघ जीवोंके साथ इन आठ जीवराशियोंकी समानता है, इसलिये सूत्रमें 'ओघ' ऐसा कहा । परन्तु पर्यायार्थिक नयका अघलक्षन करने पर तो सासादनादि सयत्तासयत्तात्त गुणस्थानप्रतिपन्न ओघप्ररूपणासे गुणस्थानप्रतिपन्न इन आठ राशियोंमें महान् भेद है, क्योंकि, ये राशिया ओघराशिके सख्यातवें भाग हैं ।

शकां—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—पूर्वोक्त योगकालके अल्पबहुत्वसे यह जाना जाता है । शेष कथन सुगम है ।

प्रमत्तसंयत्त गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें

१ प्रतिपु 'जोगवदप्पा' इति पाठ ।

णिगोदा विसेसाहिया । वणफडकाइया विसेसाहिया ।

एव कायमगणा समता ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि'-तिण्णवचिजोगीसु मिच्छाहट्ठी दब्ब-
पमाणेण केवडिया ? देवाण सखेज्जदिभागो ॥ १०३ ॥

एत्थ तिण्ह चेव वचिजोगाण सगहो किमट्ठो कटो ? ण एस दोसो । कुदो ?
वचिजोग-असन्चमोसत्रचिजोगोह सह एदेसि तिण्ह वचिजोगाण दब्बालाण पडि समाणत्ता
भागादो । समाणालाणमेगजोगो भवदि, ण भिण्णालाण । देवाण जाणि दब्ब काल सेत्त
पमाणणि पुव्व पक्खिदाणि तेमिं सखेज्जदिभागो एदेसिमट्ठह रासीण पमाण होदि ।
कुदो ? जदो एदे अट्ठ पि जोगा सण्णीण चेव भवति, णो असण्णीण, तत्थ पडिसिद्धत्तादो ।
सण्णीसु पि पहाणां देवा चेव, सेमगदिसण्णीण देवाण सखेज्जदिभागत्तादो । तत्थ पि
देवेषु पहाणो कायजोगरासी, मण-वचिजोगरासीदो सखेज्जगुणत्तादो । त पि कथ जाणिज्जदो ?

जीव वनस्पति पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक ह । निगोद जीव सूक्ष्मवतस्पनिकायिक द्रव्यसे
विशेष अधिक हैं । वनस्पतिकायिक जीव निगोद जीवोंसे विशेष अधिक हैं ।

इसप्रकार कायमार्गणा समाप्त हुई ।

योगमार्गणाके अनुवादसे पाचा मनोयोगियों और तीन वचनयोगियोंमें
मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? देवोंके सख्यातवें भाग
हैं ॥ १०३ ॥

शुक्रा — यह तीन ही वचनयोगियोंका समग्र किसलिये किया है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, वचनयोगियों और अनुभय वचनयोगि-
योंके साथ इन तीन वचनयोगियोंकी द्रव्यालापके प्रति समानता नहीं पाई जाती है । समाना-
लापोंका ही एव योग होता है, मित्रालापोंका नहीं । देवोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा
जो प्रमाण पहले कह आये हैं उसके सख्यातवें भाग इन आठ राशियोंका प्रमाण है । क्योंकि,
ये आठों योग सक्षियोंके ही होते हैं असक्षियोंके नहीं, क्योंकि, असक्षियोंमें ये आठों
योग प्रतिभिद्ध हैं । संक्षियोंमें भी प्रधान देव ही हैं, क्योंकि, दोष तीन गतिके सभी
जीव देवोंके सख्यातवें भाग ही हैं । वहा देवोंमें भी प्रधान काययोगियोंकी राशि है, क्योंकि,
काययोगियोंका प्रमाण मनोयोगियों और वचनयोगियोंसे सख्यातगुणा है ।

शुक्रा — यह कैसे जाना जाना है ?

१ मनोयोगिनो × मिथ्यादृष्टयो-सख्या श्रेणय प्रवरासख्येयभागधमिता । स सि १, ८,
'पहाण' इति पाठ ।

जोगद्व्वपानहुगादो । तं जहा— 'सच्चत्थोरा मणजोगद्धा । वच्चिजोगद्धा सखेज्जगुणा । कायजोगद्धा सखेज्जगुणा चि ।' पुणो एदेसिमद्व्वणं समासं काऊण तेण तिण्हं जोगाणं सण्णिरासिमोअद्व्विय अप्पणो अद्व्वहि पुव पुव गुणित्ते मण रच्चि कायजोगरासीओ हवति । तदो द्व्विदमेदं एदे अद्व्व नि भिच्छाडद्व्विरासीओ देणं संखेज्जदिभागो चि ।

सासणसम्मादिद्व्विप्पहुडि जाव सजदासंजदा त्ति ओघं ॥ १०४ ॥

पलिदोपमस्स असखेज्जदिभागत्तं पडि ओघजीवेहि सह एदेसिं समाणत्तमत्थि चि ओघमिदि उच्च । पज्जवद्व्वियणए पुण अरलंभिज्जमाणे तोहंतो एदेसिं अत्थि महतो भेदो । हुदो ? एदेसिमोघरासिस्स सखेज्जदिभागत्तादो । तं पि कध णव्वदे ? पुच्चुत्तद्व्वपानहुगादो । सेस सुगमं ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति द्व्वपमाणेण केव-
डिया, संखेज्जा ॥ १०५ ॥

समाधान—योगकालके अव्यवहृत्यसे यह जाना जाता है । वह इसप्रकार है— 'मनोयोगका काल सघसे स्तोक है । वचनयोगका काल उससे सरयातगुणा है । काययोगका काल वचनयोगके कालसे सरयातगुणा है ।' अनन्तर इन कालोंका जोड़ करके जो फल हो उससे तीनों योगोंकी सर्वा जीवराशिको अपवर्तित करके जो लघ्व आवे उसे अपने अपने कालसे पृथक् पृथक् गुणित करने पर मनोयोगी, वचनयोगी और काययोगी जीवराशि होती है । इसलिये यह निश्चित हुआ कि ये आठ ही मिथ्यादृष्टि जीवराशिया देवोंके सख्यातवें भाग हैं ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें पूर्वोक्त आठ योगराले जीवोंका प्रमाण सामान्य प्ररूपणाके समान परयोपमके असंरयातवें भाग हैं ॥ १०४ ॥

परयोपमके असंरयातवें भागके प्रति ओघ जीवोंके साथ इत आठ जीवराशियोंका समानता है, इसलिये सूत्रमें 'ओघ' ऐसा कहा । परन्तु पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर तो सासादनादि सयतासयतात्त गुणस्थानप्रतिपन्न ओघप्ररूपणासे गुणस्थानप्रतिपन्न इन आठ राशियोंमें महान् भेद है, क्योंकि, ये राशिया ओघराशिके सख्यातवें भाग हैं ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—पूर्वाक्त योगकालके अव्यवहृत्यसे यह जाना जाता है । शेष कथन सुगम है ।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें

१ प्रतिपु 'जोगवदप्पा' इति पाठ ।

- एत्थ औघ्रगमिणा सरोज्जत्त पडि एदेसिं रासीण समाणत्ते सते किमट्ठमोघमिदि ण यरुदि सुत्ते ? ण, एत्थ अपलविदपज्जरद्वियणयत्तादो । सो वि एत्थ किमट्ठमवलज्जदे ? जोगद्वप्पावहुगमम्मिऊण गमिन्निसेमपदुप्पायणद्व । कध जोगद्वप्पावहुगमिदि बुत्ते बुच्चदे— 'मच्चरथोरा सच्चमणजोगद्धा । मौममणजोगद्धा सरोज्जगुणा । सच्चमोसमण जोगद्धा मरोज्जगुणा । अमच्चमोसमणजोगद्धा मरोज्जगुणा । मणजोगद्धा निसेसाहिया । सच्चरचिजोगद्धा सरोज्जगुणा । मौसरचिजोगद्धा मरोज्जगुणा । 'सच्चमोसरचिजोगद्धा सरोज्जगुणा । असच्चमोसरचिजोगद्धा मरोज्जगुणा । वचिजोगद्धा निसेसाहिया । काय-जोगद्धा संखेज्जगुणा' ति ।

वचिजोगि-असच्चमोसवचिजोगीसु मिच्छाइटी दव्वपमाणेण केव-
डिया, असरोज्जा ॥ १०६ ॥

पूर्वोक्त आठ जीवराशिया द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितनी है ? सख्यात हे ॥ १०५ ॥

यहा पर सख्यातत्वकी अपेक्षा प्रमत्तादि ओघराशिके साथ इन राशियोंकी समानता रहने पर सूत्रमें 'ओघ' ऐसा किसलिये नहीं कहा ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, यहा पर पर्यायाधिक नयका अवलम्बन लिया गया है, अतः सूत्रमें 'ओघ' ऐसा नहीं कहा ।

शंका—यह पर्यायाधिक नय भी यहाँ पर किसलिये ग्रहण किया गया है ?

समाधान—योगकालका आश्रय लेकर राशिविशेषका प्रतिपादन करनेके लिये यहा पर पर्यायाधिक नयका अवलम्बन लिया गया है ।

योगकालके आश्रयसे अव्ययवृत्त्य किसप्रकार है, ऐसा पूछने पर आचार्य कहते हैं— सत्य मनोयोगका काल सबसे स्तोक है । मृपामनोयोगका काल उससे सख्यातगुणा है । उभयमनोयोगका काल मृपामनोयोगके कालसे सख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगका काल उभय मनोयोगके कालसे सख्यातगुणा है । इससे मनोयोगका काल विशेष अधिक है । सत्य वचनयोगका काल मनोयोगके कालसे सख्यातगुणा है । मृपा वचनयोगका काल सत्य वचन योगके कालसे सख्यातगुणा है । उभय वचनयोगका काल मृपा वचनयोगके कालसे सख्यात गुणा है । अनुभय वचनयोगका काल उभय वचनयोगके कालसे सख्यातगुणा है । वचनयोगका काल अनुभय वचनयोगके कालसे विशेष अधिक है । काययोगका काल वचनयोगके कालसे सख्यातगुणा है ।

वचनयोगियों और असत्यमृपा अर्थात् अनुभय वचनयोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असख्यात हैं ॥ १०६ ॥

१ अर्थोद्बुद्धमेवा चउमणजोगा कमेण सखगुणा । तन्नेणा सामणं पडवचिनेणा तथो दु सखगुणा ॥
सामणं काओ सखाइदो विजोगमिदं । गो जी २६० २६३

एत्थ मिच्छाइट्ठी इदि एगयणणिहेसो, केवडिया इदि उहुवयणणिहेसो; कथमेटाण भिण्णाहियरणाणमेयद्वपउत्ती ? ण, एयाणोयाणमण्णोण्णाजहुवुत्तीणमेयद्वत्तात्रोहा । सेमं सुगम । अससेज्जा इदि सामण्णेण णमिहम्साम्पेज्जस्स गहणे पमचे अणिच्छिदा-सखेज्जपडिसेहद्वमुत्तरसुत्त भणदि—

असखेज्जासखेज्जाहि ओसप्पिणि—उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ १०७ ॥

एदं सुत्तमइसुगम । अणिच्छिदाससेज्जाससेज्जमियप्पपडिमेहणिमित्तमुत्तरसुत्ता-वदारे भणदि—

खेत्तेण वचिचोगिअसच्चमोसवचिजोगीसु मिच्छाइट्ठीहि पदरम-वहिरदि अंगुलस्स सखेज्जदिभागवग्गपडिभागेण ॥ १०८ ॥

वचिजोगो असच्चमोमत्रचिजोगो च गीइदियप्पहुडीणमुत्तरिमाण जीवसमासाणं भासापज्जत्तीए पज्जत्तयाण भणदि, तेण पि ति चउत्तरिदिय असण्णिगपत्तिदियपज्जत्तरासीओ

शका—इस सूत्रमें 'मिच्छाइट्ठी' यह पक्षवचन निर्देश है, ओर 'केवडिया' यह बहुवचन निर्देश है। अतएव भिन्न भिन्न अधिकरणवाले इन दोनोंकी एकार्थमें कैसे प्रवृत्ति हो सकती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, एक ओर अनेक अन्योन्य अजहद्वृत्ति हैं, इसलिये इन दोनोंकी एकार्थमें प्रवृत्ति होनेमें कोई विरोध नहीं आता है।

शेष वचन सुगम है। 'असख्यातं द्वं' इसप्रकार सामान्य वचन देनेसे नौ प्रकारके असख्यातोंका ग्रहण प्राप्त होता है, अतएव अनिच्छित्त असख्यातोंके प्रतिषेध करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा वचनयोगी और अनुभव वचनयोगी जीव असख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ १०७ ॥

यह सूत्र अतिसुगम है। अनिच्छित्त असख्यातासंख्यातरूप विकल्पके प्रतिषेध करनेके लिये आगेके सूत्रका अन्वय हुआ है—

क्षेत्रकी अपेक्षा वचनयोगियों और अनुभव वचनयोगियोंमें मिश्र्यादृष्टि जीवोंके द्वारा अंगुलके संख्यातरों भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ १०८ ॥

द्विन्द्रियोंसे लेकर ऊपरके सपूर्ण जीवसमासोंमें भाषापर्याप्तिले-पर्याप्त हुए जीवोंके वचनयोग ओर, अनुभव वचनयोग पाया जाता है, इसलिये द्विन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय

१ प्रतिपु 'मणदि' इति पाठ ।

२ भोगाउपदेन २०८ भाषायोगिनश्च मिथ्यादृष्टयोऽन्तरपेया शेषश्च प्रतरामन्येषमागप्रमिता । स ति १,८

एगट्ट करिय वचिनोग कायजोगद्वाममासेण सखिय एगरुंड वचिनोगद्वारे गुणिय पंचि
दिय असन्चमोसवचिनोगरासि पन्निस्से जमन्चमोसवचिनोगरामी होदि । एत्थ सच्चाणि
सेसवचिनोगरासि पन्निस्से वचिनोगरामी होदि । अद्वाममामस्म आरलियाए गुणगारत्तेण
द्विदिससेज्जरूपेहिंते पदरगुलस्म हेट्ठा भागहारत्तेण द्विदिससेज्जरूपाणि जेण मखेज्ज
गुणाणि तेण पदरगुलस्म ससेज्जदिभागो भागहारो भवदि ।

सेसाण मणिजोगिभगो ॥ १०९ ॥

जघा मणजोगरामी जोगमामणादीण ससेज्जदिभागो, तथा वचिनोगि असच्चमोस
वचिनोगीसु सासणादओ ओघसासणादीण ससेज्जदिभागो । सेम सुगम ।

सपहि अप्पानहुगलेण पुत्तिह्लमुत्तेसु पुत्तरासीणमनहारकाला परुविज्जते । त
जहा—सखेज्जरूपेहि सचिअगुले भागे हिंदे लद्धे रगिगेदे वचिनोगिअनहारकालो होदि ।
तम्हि ससेज्जरूपेहि सखिय लद्धे तम्हि चेव पन्निस्से असच्चमोसवचिनोगिअनहारकालो

और असर्षा पचेन्द्रिय पर्याप्त जीवराशिको एकत्रित करके और उसे वचनयोग और काययोगके
कालके जाडरूप प्रमाणसे खडित करके जो एक भाग लब्ध आये उसे वचनयोगके कालसे गुणित
करके जो प्रमाण हो उसमें पचेन्द्रिय अनुभय वचनयोगी राशिके मिला देने पर अनुभय
वचनयोगी जीवराशि होती है । इसमें सत्यवचनयोगी जीवराशि आदि शेष वचनयोगी
जीवराशियोंके मिला देने पर वचनयोगी जीवराशि होती है । यहा पर अद्वासमासके लिये
आवलीके गुणकाररूपसे स्थापित सख्यातसे प्रतरागुलके नीचे भागहाररूपसे स्थापित
सख्यात चूके सख्यातगुणा है, इसलिये प्रथममें प्रतरागुलका सख्यातवा भाग भागहार है ।

सासादनसम्यग्दष्टि आदि शेष गुणस्थानवर्ती वचनयोगी और अनुभय वचन-
योगी जीव सासादनसम्यग्दष्टि आदि मनोयोगिराशिके समान हैं ॥ १०९ ॥

जिसप्रकार मनोयोगी जीवराशि ओघसासादनसम्यग्दष्टि आदिके सख्यातवें भाग है,
उसीप्रकार वचनयोगियों और अनुभय वचनयोगियोंमें सासादनसम्यग्दष्टि आदि जीवराशि
ओघ सासादनसम्यग्दष्टि आदिके सख्यातवें भाग है । शेष वचन सुगम है ।

अब अल्पमनुष्यके बलसे पूर्वाक्त सूत्रोंमें कही गई राशियोंके अवहारकाल बड़े
आते हैं । वे इसप्रकार हैं—सख्यातसे सूच्यगुलके भाजित करने पर जो लब्ध आये उसके
घणित करने पर वचनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इसे सख्यातसे खडित करके जो
लब्ध आये उसे इसी वचनयोगियोंके अवहारकालमें मिला देने पर अनुभय वचनयोगियोंका
अवहारकाल होता है । इसे सख्यातसे गुणित करने पर वैक्यिक काययोगियोंका अवहारकाल

होदि । तम्हि सखेज्जरूपेहि गुणिदे वेउच्चियकायजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि सखेज्जरूपेहि गुणिदे सच्चमोमवचिजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि सखेज्जरूपेहि गुणिदे मोसवचिजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूपेहि गुणिदे सच्चवचिजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूपेहि गुणिदे मणजोगिअवहारकालो होदि । त हि सखेज्जरूपेहि खडिय लद्ध तम्हि चैय पक्खित्ते अमच्चमोममणजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि मखेज्जरूपेहि गुणिदे सच्चमोसमणजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि सखेज्जरूपेहि गुणिदे मोममणजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि सखेज्जरूपेहि गुणिदे मच्चमणजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि सखेज्जरूपेहि गुणिदे वेउच्चियमिस्सअवहारकालो होदि । किं कारण ? जेण अतो-मुहुत्तमेत्तवेउच्चियमिस्सुअवहारकालादां सखेज्जरस्ताउपदेवाणमुवक्कमणकालो सखेज्जगुणो तेण देवाण सखेज्जदिभागो वेउच्चियमिस्सरसी होदि । हेतो वि सच्चमणरामिस्स सखेज्जदिभागो । कुदो ? सच्चमणजोगद्वोपट्टिदसयलद्धासमासअंतोमुहुत्तमेत्तद्वए आयलियगुणगारसखेज्जरूपेहिंतो वेउच्चियमिस्सट्टोपट्टिदसखेज्जरस्सेसु मखेज्जगुणरूपोअलभादो ।

सपहि ओषअसजदसम्माइड्डिअवहारकाल संखेज्जरूपेहि खडिय लद्ध तम्हि चैय

होता है । इसे सख्यातसे गुणित करने पर उभय वचनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इसे सख्यातसे गुणित करने पर मृषा वचनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इसे सख्यातसे गुणित करने पर मनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इसे सख्यातसे खटित करके जो लब्ध आवे उसे इसी मनयोगियोंके अवहारकालमें मिला देने पर अनुभय मनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इसे सख्यातसे गुणित करने पर उभय मनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इसे सख्यातसे गुणित करने पर मृषा मनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इसे सख्यातसे गुणित करने पर सत्यमनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इसे सख्यातसे गुणित करने पर वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका अवहारकाल होता है ।

शुका—इसका क्या कारण है ?

समाधान—चूकि अन्तर्मुहूर्तमात्र वैक्रियिकमिश्रके उपक्रमणकालसे सख्यात धर्मकी आयुवाले देवोंका उपक्रमणकाल सख्यातगुणा है, इससे तो यह सिद्ध हुआ कि वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंकी राशि देवोंके सख्यातमें भाग है, पर यह वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंकी राशि देवोंके सख्यातमें भाग होते हुए भी सत्यमनयोगियोंके प्रमाणके सख्यातमें भाग है, क्योंकि सत्यमनयोगके कालसे सर्व कालके जोडरूप अन्तर्मुहूर्त कालके अपवर्तित करने पर जो लब्ध आवे उसके लिये आवलीके गुणकार सख्यातसे वैक्रियिकमिश्रके कालसे अपवर्तित सख्यात धर्ममें सख्यातगुणी सख्या पाई जाती है ।

अथ ओष धसयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको सख्यातसे खटित करके जो

परिसरत्ते कायजोगिअसजदमम्माइडिअवहारकालो होदि । तम्हि आपलियाए असखेजदि-
 भाण्ण भागे हिदे लद्ध तम्हि चेप परिसरत्ते वेउअवियअसजदसम्माइडिअवहारकालो होदि ।
 तम्हि सखेज्जरूपेहि गुणिदे वचिजोगिअसजदमम्माइडिअवहारकालो होदि । त हि सखेज्ज-
 रूपेहि सटिय लद्ध तम्हि चेप पक्खिसत्ते असच्चमोसत्रचिजोगिअसजदमम्माइडिअवहार-
 कालो होदि । तम्हि सखेज्जरूपेहि गुणिदे सच्चमोमत्रचिजोगिअसजदसम्माइडिअवहार
 कालो होदि । तम्हि सखेज्जरूपेहि गुणिदे मोमत्रचिजोगिअसजदसम्माइडिअवहारकालो
 होदि । तम्हि सखेज्जरूपेहि गुणिदे सच्चत्रचिजोगिअसजदसम्माइडिअवहारकालो होदि ।
 तम्हि सखेज्जरूपेहि गुणिदे मणनोगिअवहारकालो होदि । त हि सखेज्जरूपेहि
 सटिय लद्ध तम्हि चेप पक्खिसत्ते अमच्चमोमणनोगिअवहारकालो होदि । (तम्हि
 सखेज्जरूपेहि गुणिदे सच्चमोसमणजोगिअवहारकालो होदि ।) तम्हि सखेज्जरूपेहि
 गुणिदे मोममणनोगिअवहारकालो होदि । तम्हि सखेज्जरूपेहि गुणिदे सच्चमणनोगि
 अवहारकालो होदि । तम्हि आपलियाए असखेज्जदिभाण्ण गुणिदे औरालियकायजोगि-

लब्ध आवे उसे उसी ओघ असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें मिला देने पर काययोगी
 असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस काययोगी असयतसम्यग्दृष्टियोंके
 अवहारकालको आपलीक असख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध
 आवे उसे उसी काययोगी असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें मिला देने पर
 वैक्रियिककाययोगी असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस वैक्रियिककाययोगी
 असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको सख्यातसे गुणित करने पर वचनयोगी असयतसम्य-
 ग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस वचनयोगी असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको
 सख्यातसे अहित करके जो लब्ध आवे उसे उसी वचनयोगी असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहार
 कालमें मिला देने पर अनुभय वचनयोगी असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस
 अनुभय वचनयोगी असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको सख्यातसे गुणित करने पर उभय
 वचनयोगी असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस उभय वचनयोगी असयतसम्य-
 ग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे सख्यातसे गुणित करने पर सत्यवचनयोगी असयत
 दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस सत्यवचनयोगियोंके अवहारकालको सख्यातसे गुणित
 करने पर मनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इस मनयोगियोंके अवहारकालको सख्यातसे
 अहित करके जो लब्ध आवे उसे उसी मनयोगियोंके अवहारकालमें मिला देने पर अनुभय मनो-
 योगियोंका अवहारकाल होता है । इस अनुभय मनोयोगियोंके अवहारकालको सख्यातसे गुणित
 करने पर उभयमनोयोगियोंका अवहारकाल होता है । इस उभय मनोयोगियोंके अवहारकालको
 सख्यातसे गुणित करने पर मृपामनोयोगियोंका अवहारकाल होता है । इस मृपामनोयोगियोंके
 अवहारकालको सख्यातसे गुणित करने पर सत्यमनोयोगियोंका अवहारकाल होता है । इस
 सत्यमनोयोगियोंके अवहारकालको सख्यातसे गुणित करने पर औदारिक

असंजदसम्माइड्डिअवहारकालो हेदि । तम्हि आपलियाए अससेज्जदिभाएण गुणिदे वेउ-
 वियमिस्सकायजोगिअसजदसम्माइड्डिअवहारकालो हेदि । तम्हि आपलियाए अससेज्जदि-
 भाएण गुणिदे कम्मइयकायजोगिअसजदसम्माइड्डिअवहारकालो हेदि । एवं सम्मामिच्छा-
 इड्डिस्स । णत्ति वेउवियमिस्सं कम्मइयं च छोड्डिय वत्तघं । ओषसासणसम्माइड्डिअव-
 हारकाल ससेज्जरूपेहि सडिय लद्ध तम्हि चेव पक्खित्ते कापजोगिसासणसम्माइड्डि-
 अवहारकालो हेदि । त हि आपलियाए अससेज्जदिभाएण सडिय लद्ध तम्हि चेव
 पक्खित्ते वेउवियकायजोगिमासणसम्माइड्डिअवहारकालो हेदि । तम्हि संसेज्जरूपेहि
 गुणिदे वचिजोगिमासणसम्माइड्डिअवहारकालो हेदि । तम्हि संसेज्जरूपेहि भागे हिदे
 लद्ध तम्हि चेव पक्खित्ते असच्चमोसवचिजोगिमासणसम्माइड्डिअवहारकालो हेदि । तम्हि
 संसेज्जरूपेहि गुणिदे सच्चमोसवचिजोगिअवहारकालो हेदि । एव मोसवचिजोगि सच्चवचि-
 जोगिअवहारकालाण जहाकमेण ससेज्जरूपेहि गुणेयव्व । तम्हि ससेज्जरूपेहि गुणिदे
 मणजोगिसासणसम्माइड्डिअवहारकालो हेदि । त हि संसेज्जरूपेहि संडिय लद्ध तम्हि चेव
 पक्खित्ते असच्चमोसमणजोगिसासणसम्माइड्डिअवहारकालो हेदि । तदो सच्चमोसमण-

काययोगी असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आपलीके असख्यातवें भागसे
 गुणित करने पर वैकियिकमिश्रकाययोगी असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे
 आपलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर कर्मणकाययोगी असयतसम्यग्दृष्टियोंका
 अवहारकाल होता है । इसीप्रकार सम्यग्निश्चयादृष्टियोंका भी अवहारकाल करना चाहिये । परंतु
 इतनी विशेषता है कि वैकियिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोगको छोडकर ही कथन
 करना चाहिये । ओष सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको सख्यातसे घटित करके
 जो लब्ध आवे उसे उसी ओष सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें मिला देने पर
 काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आपलीके असख्यातवें भागसे
 घटित करके जो लब्ध आवे उसे उसी काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें
 मिला देने पर वैकियिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे
 सख्यातसे गुणित करने पर वचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे
 सख्यातसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी वचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके
 अवहारकालमें मिला देने पर अनुभय वचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है ।
 इसे सख्यातसे गुणित करके पर उभय वचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका अवहारकाल होता
 है । इसीप्रकार मूपावचनयोगी और सत्यवचनयोगी जीवोंका अवहारकाल लानेके लिये यथाक्रमसे
 सख्यातसे गुणित करना चाहिये । सत्यवचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको सख्या-
 तसे गुणित करने पर मनोयोगी सामादासम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे सख्यातसे
 घटित करके जो लब्ध आवे उसे इसी मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें
 मिला देने पर अनुभय मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसके आगे

जोगि मोममणजोगि सच्चमणाण जहाक्रमेण सरोज्जस्त्रेहिं गुणिज्जदि । तम्हि आणलियाण असरोज्जदिभाएण गुणिदे ओरालियकायजोगिमामणसम्माइडिअणहारकालो होदि । तम्हि आणलियाण असरोज्जदिभाएण गुणिदे ओरालियमिस्मसामणसम्माइडिअणहारकालो होदि । तम्हि आणलियाण असरोज्जदिभाएण गुणिदे वेउरियमिस्मजोगिमामणसम्माइडिअणहारकालो होदि । तम्हि आणलियाण असरोज्जदिभाएण गुणिदे कम्मइयसामणसम्माइडिअणहारकालो होदि । एव सज्जदामजदाण । णपरि ओघाणहारकाल सरोज्जरूपेहिं राडिय लद्ध तम्हि चेव पणिसत्ते ओरालियकायजोगिसज्जदामजदाण अणहारकालो होदि । तम्हि सरोज्जरूपेहिं गुणिदे वचिजोगिमज्जदामजदाण अणहारकालो होदि । सेस पुव्व व वत्तच्च । पमचादीण वुच्चदे । मणजोगि वचिजोगि-कायजोगिद्वाराण समामेण अप्पप्पणो रासिमिह भागे हिदे लद्ध तिप्पटिरासिं काऊण पुणो अप्पप्पणो अद्धाहि गुणिदे एवेकम्हि गुणद्वारेण मण वचि कायजोगिरासीओ हवति । पुणो सच्चमोस-असच्चमोममणजोगिद्वाराण ममासेण मणजोगिरासिं राडिय लद्ध च दुप्पटिरासिं काऊण अप्पप्पणो अद्धाहि गुणिदे सच्चमोम

उभयमनोयोगी, मृषामनोयोगी और सत्यमनोयोगी जीवोंका अवहारकाल लानेके लिये यथाक्रमसे सख्यातसे गुणित करना चाहिये । सत्यमनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आचल्यके असख्यातवर्ग भागसे गुणित करने पर औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आचल्यके असख्यातवर्ग भागसे गुणित करने पर औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आचल्यके असख्यातवर्ग भागसे गुणित करने पर वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आचल्यके असख्यातवर्ग भागसे गुणित करने पर फार्मणकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसीप्रकार सयतासयत वचनयोगी, मनोयोगी और काययोगियावा अवहारकाल जानना चाहिये । यद्यपि इतनी विशेषता है कि सयतासयत औघ अवहारकालको सख्यातसे गणित करके जो लब्ध आवे उसे उसी सयतासयत औघ अवहारकालम मिला देने पर औदारिककाययोगी सयतासयतोंका अवहारकाल होता है । इन्हे सख्यातसे गुणित करने पर वचनयोगी सयतासयतोंका अवहारकाल होता है । शेष कथन पहलेके समान करना चाहिये । अर प्रमत्तसयत आदिका द्रव्यप्रमाण कहते हैं— मनोयोग, वचनयोग और काययोगके कालके जोड़से अपने अपने गुणस्थानसय वा राशिमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उसकी तीन प्रतिराशिया करके पुन उन्हीं अपने अपने कालसे गुणित कर देने पर एक एक गुणस्थानमें मनोयोगी, वचनयोगी और काययोगियोंकी राशिया होती ह । पुन उभय मनोयोगी और अनुभय मनोयोगके कालोंके जोड़से मनोयोगी जीवराशिकी खडित करके जो लब्ध आवे उसकी दो प्रतिराशिया करके अपने अपने कालसे गुणित करने पर उभय

असन्चमोसमणजोगरासीओ हन्ति । एत्तं वच्चिजोगरासिस्म त्रि वचचवं ।

कायजोगि-ओरालियकायजोगीसु मिच्छाड्डी मूलोधं ॥ ११० ॥

एदे दो त्रि रासीओ अणता । अणताणताहि ओसपिणि-उस्सपिणीहि ण अउहरिंति कालेण । सेत्तेण अणताणता लोगा इदि वुत्तं होदि । सेस सुगमं ।

सासणसम्माइडिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति जहा मणजोगि-भंगो ॥ १११ ॥

एदं सुत्त सुगम । एत्थ धुरासिपिहाणं वुत्तदे । तं जहा—सगुणपडिउण्णमण-जोगि त्रिजोगिरासिं सिद्ध अजोगिरासिं च कायजोगिभजिदं एदेमिं उगं च सव्वजीव-रासिभिह पक्खित्ते कायजोगिवुरासी होदि । त पडिरासिं काऊण तथेव्वरासिभिह सखेज्जस्वेहि भागे हिदे लद्ध त्ति च पक्खित्ते ओरालियकायजोगिधुवगमी होदि ।

मनोयोगी ओर अनुभय मनोयोगी जीवराशिया होती ह । इसीप्रकार वचनयोगी जीवराशिका भी कथन करना चाहिये ।

काययोगियों और औदारिककाययोगियों में मिथ्यादृष्टि जीव सामान्य प्ररूपणाके समान है ॥ ११० ॥

उपर्युक्त ये दोनों भी राशियां अनन्त हैं । कालर्षी अपेक्षा काययोगी और औदारिक-काययोगी मिथ्यादृष्टि जीव अन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होते हैं ओर क्षेत्रकी अपेक्षा अनन्तानन्त लोकप्रमाण हैं, यह इस कथनका तात्पर्य है । शेष कथन सुगम है ।

सासादनसम्पग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक काययोगी और औदारिककाययोगी जीव मनोयोगियोंके समान हैं ॥ १११ ॥

यह ध्वन सुगम है । अथ यहा पर धुवराशिकी विधिका कथन करते हैं । यह इसप्रकार है—गुणस्थानप्रतिपन्न मनोयोगिराशि, वचनयोगिराशि, सिद्धराशि और अयोगि-राशिकी तथा इन चारों राशियोंके धर्मों काययोगिराशिका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे सर्व जीवराशिमें मिला देने पर काययोगियोंकी धुवराशि होती है । अनन्तर इसकी प्रतिराशि करके उनमेंसे एक राशिमें सख्यातका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे उसी धुवराशिमें मिला देने पर औदारिककाययोगियोंकी धुवराशि होती है । सासादनसम्पग्दृष्टि

१ काययोगिदु मिथ्यादृष्टिगतान्ता । स सि १, < तदूणा सधारी एकजोगा ह ।
गो जी १११.

सासणादीण सग सगअनहारकाले सखेज्जन्मेणे^१ खाडिय लद्ध तम्हि चैत्र पक्सिते काय जोगिसामणादिगुणपटिउण्णाण अनहारकाला भवति । एदे अनहारकाले आउलिषाण असखेज्जदिभाएण गुणिडे जोगलियकायजोगिसामणादीणमनहारकाला भवति । कुणे ? तिरिक्स मणुम्सगुणपडिउण्णरामीण देउगुणपडिवण्णरामिस्स असखेज्जदिभागत्तादे । सज्जदा सज्जदाण पुण कायजोगिअनहारकालो चैत्र औरालियकायजोगिअनहारकालो होदि, तत्थ तच्चदिरित्तकायजोगिभावादे ।

ओरालियमिस्सकायजोगीसु मिच्छाडट्टी मूलोघ^१ ॥ ११२ ॥

एद पि सुत्त सुगम । एत्थ धुररासी उच्चे । ओरालियकायजोगिपुररामि पुच्च परुनिद सखेज्जस्सेहिं गुणिडे ओरालियमिस्सकायजोगिधुररासी होदि । वृद्धो ? सुद्धमे इंदियअपज्जत्तरासीए पज्जत्तरासिस्स सखेज्जदिभागत्तादे । त जहा— तिरिक्स-मणुत्त अपज्जत्तद्वादो पज्जत्तद्वा सखेज्जगुणा । ताणमद्वान समामेण तिरिक्सरामि खाडिय

भादि गुणस्थानोंके अपने अपने अनहारकालको सख्यातसे खटित करके जो लघ्व आवे उसे उसी सामान्य अवहारकालमें मिला देने पर काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि भादि गुणस्थान प्रतिपक्ष जीवोंके अवहारकाल होते हैं । इन अवहारकालानो आचलीक असख्यातवें भागसे गुणित करने पर औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि भादि जीवोंके अवहारकाल होते हैं, क्योंकि, गुणस्थानप्रतिपक्ष तिर्यच और मनुष्य राशिया गुणस्थानप्रतिपक्ष देवराशिके असख्यातवें भागमात्र हैं । औदारिककाययोगकी अपेक्षा सयतासयतोंका अवहारकाल ही औदारिककाययोगियोंका अवहारकाल है, क्योंकि, सयतासयत गुणस्थानम औदारिककाय योगको छोडकर और दूसरा कोई काययोग नहीं पाया जाता है ।

औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव ओघपरूपणाके समान हैं ॥११२॥

यह सूत्र भी सुगम है । अत्र यदा धुरराशिना कथन करते हैं— पहले जो औदारिक काययोगियोंकी धुरराशि कह आये है उसे सख्यातसे गुणित करने पर औदारिकमिश्रकाय योगियोंकी धुरराशि होती है, क्योंकि, सूक्ष्म एवंन्द्रिय अपत्यात्त राशि पर्याप्त राशिके सख्यातवें भागमात्र है । उसका स्पष्टाकरण हमप्रकार है— तिर्यच और मनुष्योंके अपर्याप्त कालसे पर्याप्त काल सख्यातगुणा है । पुन उन कालाने जो उसे तिर्यच राशिको खटित करके

१ प्रीति ' सखेज्जन्मे' इति पाठ ।

२ कम्माराणियमिस्सवयअर लद्धाडु सविदअनता । कम्माराणियमिस्सवयओरालियजोगिणो जावा । समय-
३ सुगुणाकलमिमात्तदिशासी । सगुणशुण्णिदे धावा असत्तमसाइदो कससो ॥ गो जी २६४-२६५

लद्धमपज्जत्तद्वाए गुणिदे ओरालियमिस्सरामी हउदि । तमद्वाए गुणगारेण गुणिदे ओरालियकायजोगरासी हउदि । तेण ओरालियकायजोगरासीदे ओरालियमिस्सकायजोगरासी सखेज्जगुणहीणो ।

सासणसम्माड्ढी ओघं ॥ ११३ ॥

मामणसम्माड्ढिणो देव-णेउडया जेण तिग्गिख मणुस्सेसु उउउज्जमाणा पलिदोउमस्स असखेज्जदिभागमेत्ता लद्धंति तेण एदेसि पमाणपरुवणाए ओवभगो हउदि । एदेमिउहारकालो चुउदे । त जहा— ओरालियकायजोगिसासणउउहारकालमानलियाए असखेज्जदिभाएण गुणिदे ओरालियमिस्सकायजोगिमामणसम्माड्ढिअउहारकालो होदि । कुदो ? देव-णेउडएहिंती तिग्गिख मणुस्सेसु उउउज्जमाणरामिणो पुउउड्ढिउगमिस्स असखेज्जदिभागत्तादे ।

असंजदसम्माड्ढी मजोगिकेवली दव्वपमाणेण केवडिया, सखेज्जा ॥ ११४ ॥

देवणेउडयसम्माड्ढिणो मणुस्सेसु उउउज्जमाणा संखेज्जा चेउ लद्धंति, मणुसपज्जत्तरामिस्स अण्णहा अमखेज्जत्तप्पसगा । जोगालियमिस्सकायजोगिह मुत्तापिउद्वेण

जो लद्ध अथे उसे अपर्यात्त कालमे गुणित कर देने पर औदारिकमिश्रकाययोगी राशि होती है । इस औदारिकमिश्रकाययोगी जीउराशिको औदारिककाययोगके कालके गुणफ रसे गुणित कर देने पर औदारिककाययोगीराशि होती है । इसलिये औदारिककाययोगी जीउ राशिके औदारिकमिश्रकाययोगी जीउराशि सख्यातगुणी हीन है, यह सिद्ध हुआ ।

औदारिकमिश्रकाययोगी सामादनसम्यग्दृष्टि जीउ मामान्य प्ररूपणाके समान हैं ॥ ११३ ॥

सूक्ति तिर्यंच और मनुष्योंमें उत्पन्न होते हुए सासादनसम्यग्दृष्टि देव और नारकी जीव पश्योपमके असख्यातमें भाग पाये जाने ह, इसलिये औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणकी प्ररूपणा सामान्य प्ररूपणाके समान होती है । अउ इनका अवहारकाल कहते हैं । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आउलीके असख्यातव भागसे गुणित करने पर औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, देव और नारकियोंमेंसे तिर्यंच और मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाली राशिया पहले स्थित राशिके असख्यातव भागमान होती हैं ।

असयतमस्यग्दृष्टि और मयोगिकेवली औदारिकमिश्रकाययोगी जीव कितने हैं ? सख्यात हैं ॥ ११४ ॥

सम्यग्दृष्टि देव और नारकी जीव मनुष्योंम उत्पन्न होते हुए सख्यात ही पाये जाते हैं । यदि येना न माना जाय तो मनुष्य पर्याप्त राशिको असख्यातपनेका प्रसन्न आ जाता है ।

अङ्कुरिओनएसेण' मज्जेमिक्कएलिणो चचालीम हवति । त जहा— कुराडे आरुहता नीम २०,
ओदरता रीसेत्ति २० ।

वेडव्वियकायजोगीसु मिच्छाडट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, देवाण
सखेज्जदिभागूणो ॥ ११५ ॥

एणस्म मुत्तम्म अत्थो उचुदे । देवाण जो रासी^१ अप्पप्पणो सखेज्जदिभाण
परिहीणो वेडव्वियकायजोगिमिच्छाडट्ठीण पमाण होदि । कुदो ? देव णेरइयराभिमेगट्ठं
करिय मण चच्चिजायजोगद्वाममासेण खडिय लद्ध तिप्पडिराणिं काऊण अप्पप्पणो अट्ठाहि
गुणिदे सम सगरामीओ हवति । जेण मण-चच्चिजोगरामीओ देवाण सखेज्जदिभागो हवति,

विशेषार्थ— असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें औदारिकमिश्रकाययोग तिर्यंच और मनुष्य
दोनोंम पाया जाता है । फिर भी जो सम्यग्दृष्टि जीव मरकर तिर्यंचोंमें उत्पन्न होते हैं वे
मनुष्य ही होते हैं अतएव ऐसे उत्पन्न होनेवाले जीवोंका प्रमाण स्वरूप ही रहेगा । तथा मनुष्य
गतिसे जो जीव सम्यक्त्वके साथ मनुष्योंमें उत्पन्न होंगे उनका भी प्रमाण स्वरूप ही रहेगा ।
जर रह गई नरक और देवगतिकी बात, सो इन दोनों गतियासे सम्यग्दृष्टि मरकर मनुष्योंमें
ही उत्पन्न होते हैं । किन्तु पर्याप्त मनुष्योंका प्रमाण सख्यात ही है । अतएव नरक और देवगतिसे
मरकर मनुष्योंमें होनेवाले सम्यग्दृष्टि जीव सख्यात ही उत्पन्न होंगे, अधिक नहीं । इसलिये
ओदारिकमिश्रकाययोगी सम्यग्दृष्टियोंका प्रमाण सख्यात ही होगा, अधिक नहीं, यह सिद्ध हो
जाता है ।

सूत्रक अधिकरुद्ध आचार्योंके उपदेशानुसार ओदारिकमिश्रकाययोगमें सयोगिकेवली जीव
घालीस होते हैं । इसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— कपाट समुदातमें आगेहण करनेवाले
ओदारिकमिश्रकाययोगी घीस और उतरते हुए घीस होते हैं ।

वैक्रियिककाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?
देवोंके सख्यातमें भाग कम है ॥ ११५ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— अपनी अपनी राशिके सख्यातमें भागसे न्यूव देवोंकी
जो राशि है उसका वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण है, क्योंकि, देव और नारकि
घीसकी राशिके एकत्रित करके मनोयोग, वचनयोग और काययोगके कालके जोड़से खंडित
करके जो लघ्य भाग्ये उसकी तीन प्रतिराशिया करके अपने अपने कालसे गुणित करने पर
अपनी अपनी राशियोंका प्रमाण होता है । चूंकि मनोयोगी जीविराशि और वचनयोगी जीव

१ मत्थिनु 'ओनएण' इति पाठ ।

२ एरणियकायजाणा वेडव्वियकायजोगा हु ॥ गा जी २६५

३ मत्थिनु 'रासीओ' इति पाठ ।

तेण वेडवियकायजोगिमिन्डाइडिरामिपमाणं ससेज्जदिभागपरिहीणदेवरासिणा समाण भवदि ।

एतय अणहारकालो उच्चदे । देण णेरइयमिन्डाइडिगसिसमासम्मि मण वचिन्नेडविय-
मिस्सकाय-कम्मइयकायजोगिदेण-णेरइयमिन्डाइडिरासिसमासेण भागे हिदे ससेज्जकूणाणि
लब्धति । तेहि रूवणेहि ससेज्जयदरगुलमेत्त देव णेरइयसमासअणहारकाल संडिय लद्ध
तम्मि चेण पक्खित्ते वेडवियकायजोगिमिन्डाइडिअणहारकालो होदि ।

सासणमम्माइट्ठी सम्माभिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी द्व्यपमाणेण
केवडिया, ओघं ॥ ११६ ॥

देणगुणपडिण्णमाणं रामिपमाणं अप्पण्णो ससेज्जदिभाएण उण वेडवियकाय-
जोगिगुणपडिण्णरासिपमाणं होदि । त जहा- देण णेरइयगुणपडिण्णरासिम्मि अप्पण्णो
मण वचिन्नेडवियमिस्स कम्मइयगसीहि भागे हिदे तत्थ लद्धससेज्जकूणेहि रूवणेहि देण-
णेइयममामअणहारकाल संडिय लद्ध तम्मि चेण पक्खित्ते वेडवियकायजोगिगुणपडि-
वण्णामअणहारकालो भवति ।

राशि देवोंके सख्यातवें भाग है, इसलिये वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण सख्या
तवें भाग कम देवराशिके समान होता है ।

अब यहा पर अणहारकालका कथन करते हैं— देव मिथ्यादृष्टिराशि ओर नारक
मिथ्यादृष्टिराशिका जितना योग हो उसे मनोयोगी, वचनयोगी, वैक्रियिकमिश्रकाययोगी ओर
कार्मणकाययोगी देव ओर नारकी मिथ्यादृष्टि राशिके योगसे भाजित करने पर सख्यात
लब्ध आते हैं । एक कम उस सख्यातसे सख्यात प्रतरागुणमात्र देव और नारकियोंके जोडरूप
अवहारकालको सडित करके जो लब्ध आये उसे उन्हीं दोनोंके जोडरूप अवहारकालमें मिला
देने पर वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टियोंका अणहारकाल होता है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और अमयतसम्यग्दृष्टि वैक्रियिककाय-
योगी जीव द्व्यपमाणकी अपेक्षा जितने हैं ? ओघप्ररूपणोक्त समान हैं ॥ ११६ ॥

गुणस्थानप्रतिपन्न देवोंकी राशिका जो प्रमाण है, अपनी अपनी उस राशिमेंसे
सख्यात भाग न्यून करने पर वैक्रियिककाययोगी गुणस्थानप्रतिपन्न अपनी अपनी राशिका
प्रमाण होता है । यह इसप्रकार है— गुणस्थानप्रतिपन्न देव और नारक राशिमें अपनी अपनी
मनोयोगी, वचनयोगी, वैक्रियिकमिश्रकाययोगी और कार्मणकाययोगी जीवोंकी राशियोंका भाग
देने पर यहा जो सख्यात लब्ध आये उसमें एक कम करके दोपसे देव और नारकियोंके योग-
रूप अवहारकालको सडित करके जो लब्ध आये उसे उसी देव और नारकियोंके मिले हुए अ-
वहारकालमें मिला देने पर वैक्रियिककाययोगी गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके अवहारकाल होते हैं ।

वेदवियमिस्सकायजोगीसु मिच्छाद्दृष्टी दव्यपमाणेण केवडिया,
देवाण ससेज्जटिभागो ॥ ११७ ॥

एदस्म सुत्तस्म वक्कमाण चुन्नेदे । मसेज्जप्रम्माउअव्वतरजावलिपाण अससेज्जटि-
भागमेत्तउत्तमणकालेण' जदि' देवरासिमचजो लब्धदि, तो एदम्हाटो मसेज्जगुणहीण
वेदवियमिस्सउत्तमणकालेहि केत्तियमेत्तरामिस्सचय लभामो त्ति इन्डारागिणा पमाण
रासिमिहि भागे हिदे तत्थ लद्धमसेज्जम्पेहि देवगामिहि भागे हिदे तत्थेगभागो वेदविय
मिस्सकायजोगिमिच्छाद्दृष्टिपमाण हेदि । सेस सुगम ।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगियांम मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने
हैं ? देवोंके सख्यातत्र भाग है ॥ ११७ ॥

अब इस मूलका व्याख्यान करते हैं— सख्यात वर्षकी आयुके भीतर आवर्णके
असख्यातवें भागमात्र उपक्रमण करने यदि देवराशिका सचय प्राप्त होता है, तो इससे
सख्यातगुण हीन वैक्रियिकमिश्र उपक्रमण काउके भीतर कितनामात्र राशिना सचय प्राप्त होगा,
इसप्रकार त्रैराशिक करके इच्छाराशिसे प्रमाणराशिके भाजित करने पर वहा जो सख्यात
लब्ध आधेगे उससे देवराशिके भाजित करने पर वहा एक भागप्रमाण वैक्रियिकमिश्रकाययोगी
मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण होता है । शेष कथन सुगम है ।

विशेषार्थ—उत्पत्तिको उपक्रमण कहते हैं, और इस सहित कालको सोपक्रमकाल
कहते हैं । यह सोपक्रमकाल आगलीके असख्यातवें भागमात्र है । अर्थात् देवोंमें यदि निरंतर
जीव उत्पन्न हों तो इनने काल तक उत्पन्न होंगे । इसके पश्चात् अन्तर पड जायगा । यह
अंतरकाल जघन्य एक समय है और उत्पन्न सोपक्रमकालसे सख्यातगुणा है । देवोंमें सख्यात
वर्षकी आयु लेकर अधिक जीव उत्पन्न होते हैं, इसलिये यहा उन्हींकी विवक्षा है । इसप्रकार
सख्यात वर्षके भीतर जितने उपक्रमकाल होने ह उनमें यदि देवराशिका सचय प्राप्त होता है
तो इससे सख्यातगुणे हीन मिथ्याकालमें (अपवाप्त असख्याके सोपक्रमकालमें) कितने जीव होंगे ।
इसप्रकार त्रैराशिक करने पर सर्व देवराशिके सख्यातत्र भागमात्र वैक्रियिकमिश्रकाययोगियाका
प्रमाण होता है । यहा असख्यात वर्षकी आयुउल्ले देवों और नारकियोंकी अपेक्षा वैक्रियिकमिश्र
काययोगियोंके प्रमाणने नहीं लानेका कारण यह है कि उनका अनुपक्रमकाल अधिक होनेसे
उनमें वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका प्रमाण अल्प होगा, इसलिये उनकी यहा विवक्षा नहीं की है ।

१ सोपक्रमणानुपक्रमकालो सख त्रैराशेट्तिविय । आगलिअसखमागो सखेत्तजावलिपमा कवसो ॥ तदि
सत्र सुद्धमला सोपक्रमकालदा इ सखगुणा । तत्तो सखदृशुणा अपुण्णकालमिद्दि सुद्धमला ॥ त सुद्धमलागामिदामिण
रासिमिणुण्णकालेहि । सुद्धमलागामिद्दि गुणे वतरवगवमिस्सा इ ॥ तदि समदेवगायमिस्समुद्ध स वमिस्सगवेषु ॥
गो वा २६६-२६९

२ तत्र उत्पत्ति उपक्रम, तसहित काउ सापक्रमकाल निरंतरो पविक्काल इत्यर्थ । गो जा २६६ टिका

३ अ प्रती - कालेण गदिद जदि' इति पाठ

सासणसम्माइट्टी असंजदसम्माइट्टी द्व्यपमाणेण केवडिया,
ओघं ॥ ११८ ॥

तिरिक्ख-मणुससासण-असंजदसम्माइट्टिणो जेण देवेसुप्पज्जमाणा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता लब्धंति तेणेदेसिं पमाणपरूणा ओघं, ओघेण समाणा चि घुत्त होदि । एदेसिमवहारकालुप्पत्ती घुत्तदे । त जहा—ओरालियमिस्ससासणसम्माइट्टिअनहारकालमावलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वेउत्त्वियमिस्सकायजोगिसासणसम्माइट्टिअनहारकालो होदि । ओरालियकायजोगिअनहारकालमावलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वेउत्त्वियमिस्सकायजोगिअसंजदसम्माइट्टिअनहारकालो होदि । कि कारणं ? तिरिक्खाणमसंखेज्जदिभागस्स देवेसुप्पत्तीदे । केण कारणेण वेउत्त्वियमिस्सकायजोगिसासणेहिंतो ओरालियमिस्सकायजोगिसासणसम्माइट्टिणो असंखेज्जगुणा ? ण एस दोसो, कुदो ? देवेसुप्पज्जमाणतिरिक्खसामणेहिंतो तिरिक्खेसुप्पज्जमाणदेवसासणाणमसंखेज्जगुणचादो ।

आहारकायजोगीसु पमत्तसंजदा द्व्यपमाणेण केवडिया, चदु-
वणं ॥ ११९ ॥

सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीव द्रव्य-
प्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ ११८ ॥

चूकि सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि तिर्यंच और मनुष्य देवोंमें उत्पन्न होते हुए पत्न्योपमके असख्यातयें भागप्रमाण पाये जाते हैं, इसलिये इनके प्रमाणकी प्ररूपणा ओघ अर्थात् ओघप्ररूपणाके तुल्य होती है, यह इसका अभिप्राय है । अब इनके अवहारकालकी उत्पात्तिका कथन करते हैं । यह इसप्रकार है—औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असख्यातयें भागसे गुणित करने पर वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । असंयतसम्यग्दृष्टि औदारिककाययोगियोंके अवहारकालको आवलीके असख्यातयें भागसे गुणित करने पर वैक्रियिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, तिर्यंचोंके असख्यातयें भागप्रमाण राशि देवोंमें उत्पन्न होती है ।

शका—वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंसे औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणे किस कारणसे हैं ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, देवोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंसे तिर्यंचोंमें उत्पन्न होनेवाले देव सासादनसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणे पाये जाते हैं ।

आहारकाययोगियोंमें प्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?

१ आहारकायजोगा चउवणं होति एकधमयन्दि ॥ गो. जी. २७०

। आहारमरीरमण्णगुणद्वारेणु णत्थि त्ति जाणान्णद्व पमत्तगहण कद । सेस सुदु सुगम ।

आहारमिस्सकायजोगीसु पमत्तसंजदा दब्बपमाणेण केवडिया, संखेज्जा' ॥ १२० ॥

एत्थ आहारियपण्णगदोणमेण आहारमिस्सकायजोगे सत्तावीस २७ जीवा हवति । अहमा आहारमिस्सकायजोगे जिणदिट्ठमाणा सखेज्जजीवा हवति, ण सत्तावीस, सुत्ते सखेज्जणिंसण्णहाणुणरत्तादो म्मिस्सकायजोगेहिंतो आहारकायजोगीणं सखेज्जगुणत्तादो च । ण च दोण्हेमेत्थ गहण, जजहण्णअणुक्कस्ससखेज्जस्स सच्चगहणादो, सच्चअपज्जत्तद्वाहिंतो पज्जत्तद्वाण जट्ठणाण पि सखेज्जगुणत्तदसणादो ।

कम्मइयकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी दब्बपमाणेण केवडिया, मूलोर्ध' ॥ १२१ ॥

चौवन हं ॥ ११९ ॥

प्रमत्तसयत गुणस्थानको छोडकर दूसरे गुणस्थानोंमें आहारशरीर नहीं पाया जाता है, इसका ध्यान करानेके लिये प्रमत्तसयत पदका प्रहण किया । शेष कथन सुगम है ।

आहारमिश्रकाययोगियोंमें प्रमत्तसयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १२० ॥

यहां पर आचार्य परंपरासे आये हुए उपदेशानुसार आहारमिश्रकाययोगमें सत्तावीस जीव होते हैं । अथवा, आहारमिश्रकाययोगम जिनदेवने जितनी सख्या देखी हो उतने सख्यात जीव होते हैं, सत्तावीस नहीं, क्योंकि, सूत्रमें सख्यात, यह निर्देश अन्यथा बन नहीं सकता है । तथा मिश्रयोगियोंसे आहारकाययोगी जीव सख्यातगुणे हैं, इससे भी प्रतीत होता है कि आहारमिश्रकाययोगी जीव सख्यात हैं, सत्तावीस नहीं । वद्वज्जि कदा आप कि दो भी तो सख्यात हैं । परंतु दो यह सख्या सख्यात होते हुए भी उसका यहां पर प्रहण नहीं किया है, क्योंकि, मयके द्वारा जघन्ययानुत्कृष्टरूप सख्यातका ही प्रहण किया है । अथवा, सर्व अपर्याप्तकालसे जघन्य पर्याप्त काल भी सख्यातगुणा है, इससे भी यही प्रतीत होता है कि आहारमिश्रकाययोगी सत्तावीस नहीं लेना चाहिये ।

कर्मणकाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? औषप्ररूपणाके समान हैं ॥ १२१ ॥

जदो मव्वजीपरासी गगापनाहो च्व गिरतरं विग्गहं काऊणुप्पज्जदि, तेण कम्मइय-
रासिस्स मूलोघपरूषणा ण विरुद्धा । एदस्स सुत्तस्स धुरासी वुच्चदे । कायजोगिधुव-
रासिमतोमुहुत्तेण गुणिदे कम्मइयजोगिधुवरासी होदि । त जहा—संखेज्जावलयमेत्त-
अंतोमुहुत्तकालेण जदि मव्वजीपरासिस्स सचओ होदि, तो तिण्हं समयण केत्तियं संचयं
लभामो चि पमाणेण इच्छागुणिटफलमोअट्टिय अंतोमुहुत्तोवट्टियसव्वजीपरासी आगच्छदि ।

सासणसम्माइट्ठी असजदसम्माइट्ठी द्व्यपमाणेण केवडिया,
ओघं ॥ १२२ ॥

जेण पलिदोवमस्स अमखेज्जदिभागमेत्ता तिरिक्खअसंजदसम्माइट्ठिणो विग्गहं
काऊणु टेपेसुप्पज्जमाणा लब्भति, देव तिरिक्खसासणसम्माइट्ठिणो पलिदोवमस्स असंखे-
ज्जदिभागमेत्ता तिरिक्खदेपेसु विग्गह करिय उवज्जमाणा लब्भति, तेण एदेसिं पमाण-
परूषणा ओघपरूषणाए तुल्ला । एदेसिमअहारकालुप्पत्ती वुच्चदे । असंजदसम्माइट्ठि-सासण-
सम्माइट्ठिउच्चियमिस्सअअहारकाले आअलियाए अमरेज्जदिभाएण गुणिदे कम्मइयकाय-
जोगिअसजदसम्माइट्ठि-सासणसम्माइट्ठिअवहारकाला भवति । कुदो ? विग्गह करिय

चूके सर्वे जीवराशि गगानदीके प्रवाहके समान निरतर विप्रह करके उत्पन्न होती
है, इसलिये कर्मणकाय राशिकी प्ररूपणा मूलोघ प्ररूपणाके समान होती है, विरुद्ध नहीं ।

अथ इस सूत्रमें कहे गये कर्मणकाययोगियोंके प्रमाणकी धुवराशि कहते हैं—
काययोगियोंकी धुवराशिको अन्तर्मुहूर्तसे गुणित करने पर कर्मणकाययोगियोंकी धुवराशि
होती है । उसका स्पर्शकरण इसप्रकार है— सख्यात आवलीमाघ अन्तर्मुहूर्तकालके द्वारा
यादि सर्व जीवराशिका सचय होता है, तो तीन समयमें फितना सचय प्राप्त होगा, इसप्रकार
इच्छाराशिसे फलराशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उसे प्रमाणराशिसे भाजित करने
पर अन्तर्मुहूर्तकालसे भाजित सर्व जीवराशि आती है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि कर्मणकाययोगी जीव द्रव्यप्रमाणकी
अपेक्षा कितने हैं ? सामान्य प्ररूपणाके समान पल्योपमके असख्यातवें भाग है ॥१२२॥

चूकि पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण तिर्यंच असयतसम्यग्दृष्टि जीव विप्रह करके
देवोंमें उत्पन्न होते हुए पाये जाते हैं । तथा पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण देव
सासादनसम्यग्दृष्टि जीव, और उतने ही तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीव क्रमसे तिर्यंच और
देवोंमें विप्रह करके उत्पन्न होते हुए पाये जाते है, इसलिये सासादनसम्यग्दृष्टि और
असयतसम्यग्दृष्टि कर्मणकाययोगियोंकी प्ररूपणा सामान्य प्ररूपणाके तुल्य है । अथ इनके
अवहारकालकी उत्पत्तिको कहते हैं— असयतसम्यग्दृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि वैकृतिक
मिथ्र अथहारकालको आवलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर क्रमसे कर्मणकाययोगी
असयतसम्यग्दृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अवहारकाल होते हैं, यथोक्ति, विप्रह

मरमाणरासीए देवेसु उववज्जमाणरासीस्म असरेज्जदिभागत्तादो ।

सजोगिकेवली दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १२३ ॥

एत्थ पुब्बाइरिओनएसेण सट्ठी जीमा हवति । कुदो ? पदरे वीस, लोगपूरणे वीस, पुणरवि ओदरमागा पदरे वीस चेव भवति चि ।

भागामाग वत्तइस्सामो । सच्चजीवरसिं संखेज्जखडे कए तत्थ बहुखडा ओरालियकायजोगरासीओ । सेसमसरेज्जखडे कए बहुखडा ओरालियमिस्सकायजोगरासी होदि । सेसमणतखडे कए बहुखडा कम्मइयकायमिच्छाइट्टिरासी होदि । सेसमणतखडे कए बहुखडा सिद्धा हांति । सेसमसरेज्जखडे कए बहुखडा असच्चमोसपचिजोगिमिच्छाइट्टिणो हांति । सेस सरेज्जखडे कए बहुखडा वेउच्चियकायजोगिमिच्छाइट्टिणो हांति । सेसमसरेज्जखडे कए बहुखडा सच्चमोसपचिजोगिमिच्छाइट्टिणो हांति । सेस सखेज्जखडे कए बहुखडा मोमवचिजोगिमिच्छाइट्टिणो हांति । सेस सरेज्जखडे कए बहुखडा सच्चवचिजोगिमिच्छाइट्टिणो हांति । सेस सरेज्जखडे कए बहुखडा असच्चमोसमणमिच्छाइट्टी हांति । सेस सरेज्जखडे कए बहुखडा सच्चमोसमणमिच्छाइट्टी हांति । सेस सरेज्जखडे कए बहुखडा मोसमणमिच्छाइट्टिणो हांति । सेस सरेज्जखडे कए बहुखडा सच्चमणमिच्छाइट्टिणो हांति ।

करके मरनेवाली राशि देवमें उत्पन्न होनेवाली राशिके असख्यातयें भागमात्र पार्ई जाती है ।

कार्मणकाययोगी सयोगिकेवली जीव कितने हैं ? सख्यात हैं ॥ १२३ ॥

पूर्व आचार्योंके उपदेशानुसार सयोगिकेवलियोंमें कार्मणकाययोगी जीव साठ होते हैं, पर्यंकि, प्रतर समुदातमें वीस, लोकपूरण समुदातमें वीस और उतरते हुए प्रतर समुदातमें पुन वीस जीव होते हैं ।

अथ भागामागको घतलते हैं— सर्व जीवराशिके सख्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण औदारिककाययोगी जीवराशि है । शेष एक भागके असख्यात खड करने पर बहुभागप्रमाण औदारिकमिथ्याकाययोगी जीवराशि है । शेष एक भागके अनन्त खड करने पर बहुभागप्रमाण कार्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि राशि है । शेष एक भागके अनन्त खड करने पर बहुभागप्रमाण सिद्ध जीव हैं । शेष एक भागके असख्यात खड करने पर बहुभाग अनुभव यचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके सख्यात खड करने पर बहुभाग वैक्रियिक काययोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असख्यात खड करने पर उनमेंसे बहुभाग उभय यचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके सख्यात खड करने पर बहुभाग मूया यचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके सख्यात खड करने पर बहुभाग सत्य यचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके सख्यात खड करने पर बहुभाग अनुभव मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके सख्यात खड करने पर बहुभाग उभय मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके सख्यात खड करने पर बहुभाग मूया मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके सख्यात खड करने पर बहुभाग सत्य मनोयोगी

जोगिसम्मामिच्छाइट्टिरामी होदि । सेस सखेज्जखडे कए बहुखडा असचमोसमणजोगि-
सम्मामिच्छाइट्टिरामी होदि । सेस सखेज्जखडे कए बहुखडा सचमोसमणजोगिसम्मामिच्छा
इट्टिरामी होदि । सेस सखेज्जखडे कए बहुखडा मोसमणजोगिसम्मामिच्छाइट्टिरामी होदि । सेस
सखेज्जखडे कए बहुखडा सन्चमणजोगिसम्मामिच्छाइट्टिरामी होदि । ओघसासणरामीदे
ओघसम्मामिच्छाइट्टिरामी सखेज्जगुणो चि सुत्तसिद्धो । सपहि ओघसम्मामिच्छाइट्टिरामिस्स
सखेज्जदिमागो मन्चमणजोगिसम्मामिच्छाइट्टिरामी कध ओघसासणरामीदे सखेज्जगुणो
होदि चि उत्ते जुच्छे— जोगद्धागुणगारादो' सम्मामिच्छाइट्टिरामि पटि सासणसम्मा
इट्टिरामिस्स गुणगारे वट्ठो, तेण मन्चमणजोगिसम्मामिच्छाइट्टिरामी सेसस्स सखेज्ज
भागो । त कध पण्ये पुत्तेण पिणा ? पत्थि सुत्त उक्खाण वा, किंतु आइयियपणमेव
केवलमत्थि । सेस सखेज्जखडे कए बहुखडा पेउत्तियकायजोगिमासणसम्माइट्टिरामी
होदि । सेस सखेज्जखडे कए बहुखडा अमन्चमोसचिजोगिमासणसम्मामिच्छाइट्टिरामी होदि ।

षट्भाग सत्यवचनयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके सख्यात खंड करने
पर षट्भाग अनुभय मनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड
करने पर षट्भाग उभयमनोयोगी सद्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके सख्यात
खंड करने पर षट्भाग मृषामनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके
सख्यात खंड करने पर षट्भाग सत्यमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । ओघ
सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे ओघसम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि सख्यातगुणी है, यह सूत्र सिद्ध
है । अब ओघ सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशिके सख्यातमें भागप्रमाण सत्यमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि
जीवराशि ओघ सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे सख्यातगुणी कैसे है, आगे इसी विषयके पूछने
पर कहते हैं— योगनालके गुणकारसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी अपेक्षा सासादनसम्यग्दृष्टि
जीवराशिमा गुणकार बहुत है, इसलिये सत्यमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि
भागभागमें मृषामनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टिका प्रमाण होनेके अनन्तर जो एक भाग शेष
रहता है उसका सख्यातवा भाग है ।

शुक्रा—सूत्रके बिना यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यद्यपि इस विषयमें सूत्र या व्याख्यान नहीं पाया जाता है, किंतु आचार्य
कींके वचन हींके बचल पाये जाते हैं, जिससे यह कथन जाना जाता है ।

सत्यमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके
सख्यात खंड करने पर षट्भाग वैकिकिकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष
एक भागके सख्यात खंड करने पर षट्भाग अनुभयवचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि

१ आ वता ' जोगद्धाए गुण-' इति पाठ ।

२ प्रतिः ' सखेज्जा मागो ' इति पाठ ।

मणजोगिसंजदामजदरामी होदि । सेस सखेज्जखडे कए बहुखडा मोसमणजोगिसजदा सजदरासी होदि । सेस सखेज्जखडे कए बहुखडा सच्चमणजोगिसजदामजदरामी होदि । सुचेण विणा वेउन्वियमिस्सकायजोगिअसजदसम्माइड्डिरासी तिरिक्खसम्माभिच्छाइड्डि प्पहुडि तीहि वि रामीरित्तो असखेज्जगुणहीणो चि कध णव्वदे ? आइरियण्यणादो । आइ रियण्यणमणेयतमिदि चे, हांडु णाम, णरिय मज्जेत्थ अग्गहो । सेसमसखेज्जखडे कए बहुखडा वेउन्वियमिस्सकायजोगिअसजदसरमाइड्डिरासी होदि । सेसमसखेज्जखडे कए बहुखडा कम्मइयकायजोगिअसजदसम्माइड्डिरामी होदि । सेसमसखेज्जखडे कए बहुखडा ओरालि यमिस्सकायजोगिमाअणसम्माइड्डिरासी होदि । सेसमसखेज्जखडे कए बहुखडा वेउन्विय मिस्सकायजोगिसासणा हांति । सेसमसखेज्जखडे कए बहुखडा कम्मइयकायजोगिसासणा सम्माइड्डिरासी होदि । सेस जाणिऊण णेयव्व ।

अप्पाबहुअ तिरिक्ख सत्थाणादिभेएण । मत्थाणे पयद । पचमणजोगि तिण्णिवचिजोगि

है । शेष एक भागके सख्यात खंड करने पर बहुभाग मृगामनोयोगी सत्यतासयत जीवराशि है । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्यमनोयोगी सत्यतासयत जीवराशि है ।

शुका—सूत्रके बिना वैकियिकमिश्र काययोगी सम्यग्मिध्यादष्टि जीवराशि तिर्यक् सम्यग्मिध्यादष्टि जीवराशिसे टेकर तीनों राशियोंसे असख्यातगुणी हीन है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यह कथन आचार्योंके वचनसे जाना जाता है ।

शुका—आचार्योंके वचनमें अनेकान्त है, अर्थात् वे अनेक प्रकारके पाये जाते हैं ।

समाधान—यदि वे अनेक प्रकारके पाये जाते हैं तो पाये जाओ, इसमें हमारा आप्रश्न नहीं है ।

सत्यमनोयोगी सत्यतासयत राशिके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके असख्यात खंड करने पर बहुभाग वैकियिकमिश्रकाययोगी असयतसम्यग्दष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग कामर्णकाययोगी असयतसम्यग्दष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग औदारिकमिश्रकाययोगी सासादन सम्यग्दष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग वैकियिकमिश्र काययोगी सासादनसम्यग्दष्टि जीव है । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग कामर्णकाययोगी सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशि है । शेष कथन समझकर ले जाना चाहिये ।

स्वरयान आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वरयान अल्पबहुत्व प्रकृत है । पार्श्व मनोयोगी, तीन वचनयोगी, वैकियिककाययोगी और वैकियिकमिश्रकाययोगियोंका

त्रेउच्चिय वेउच्चियमिस्सकायजोगाण सत्थाणस्स देवगइभगो । वचिजोगि-असच्चमोस-
वचिजोगीणं सत्थाणस्स पचिदियतिरिक्खपज्जत्तभंगो । सेसकायजोगीसु मिच्छाइड्डीणं
मत्थाण णट्ठिय । सासणसम्माइड्ढि सम्मामिच्छाड्ढि-असजदसम्माइड्ढि-संजदासजदाणं
सत्थाणस्स ओचभगो ।

परत्थाणे पयद । सच्चत्थोना असच्चमोसमणजोगिणो चत्तारि उउसामगा । असच्च-
मोममणजोगिणो चत्तारि खग्गा सखेज्जगुणा । असच्चमोसमणजोगिणो सजोगिकेवलीं
सखेज्जगुणा । असच्चमोममणजोगिणो अप्पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । असच्चमोसमण-
जोगिणो पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । असच्चमोसमणजोगिसजदसम्माइड्ढिअनहारकालो
असखेज्जगुणो । अमच्चमोममणजोगिमम्मामिच्छाड्ढिअनहारकालो असखेज्जगुणो । असच्च-
मोममणजोगिसासणसम्माइड्ढिअनहारकालो सखेज्जगुणो । असच्चमोसमणजोगिसजदा-
सजदअनहारकालो असखेज्जगुणो । तस्सेउ दच्चमसखेज्जगुण । असच्चमोसमणजोगि-
सासणसम्माइड्ढिअममरेज्जगुण । असच्चमोममणजोगिमम्मामिच्छाड्ढिद्वयं सखेज्जगुणं ।

स्वस्थान अल्पगुह्यत्व देवगतिके समान है । वचनयोगी ओर अनुभयवचनयोगियोंका स्वस्थान
अल्पगुह्यत्व पचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्तोंके स्वस्थान अल्पगुह्यत्वके समान है । शेष काययोगियोंमें
मिथ्यादृष्टि जीवोंके स्वस्थान अल्पगुह्यत्व नहीं पाया जाता है । उन्हांके सासादनसम्यग्दृष्टि,
सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असयतसम्यग्दृष्टि आर सयतासयतोंका स्वस्थान अल्पगुह्यत्व ओध स्वस्थान
अल्पगुह्यत्वके समान है ।

अथ परस्थानमे अल्पगुह्यत्व प्रवृत्त है । अनुभय मनोयोगी चारों गुणस्थानधर्तों
उपशामक सयसे स्तोरु ह । अनुभय मनोयोगी चार गुणस्थानधर्ता क्षपक उपशामकोंसे
सख्यातगुणे हैं । अनुभय मनोयोगी सयोगिकेवलीं जीव उक्त क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । अनुभय
मनोयोगी अप्रमत्तसयत जीव उक्त सयोगिकेवलियोंने सख्यातगुणे है । अनुभय मनोयोगी प्रमत्त-
सयत जीव उक्त अप्रमत्तसयतोंसे सख्यातगुणे है । अनुभयमनोयोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अव-
हारकाल उक्त प्रमत्तसयतोंसे असख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहार-
काल उक्त असयत अवहारकोंसे असख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका
अवहारकाल उक्त सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगी सयता-
सयतोंका अवहारकाल उक्त सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असख्यातगुणा है । उन्हीं अनुभय-
मनोयोगी सयतासयतोंका द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगी
सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य उक्त सयतासयतोंके द्रव्यसे असख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगी
सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य उक्त सासादनसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे सख्यातगुणा है । अनुभयमनो-

१ प्रतिपु ' अजोगिकेवला ' इति पाठ ।

२ प्रतिपु असखे० गुणा ' इति पाठ ।

असच्चमोसमणजोगि असजदसम्माइद्धिद्वमसखेज्जगुण । पलिटोपमसखेज्जगुण । अमच्च
मोसमणजोगिमिच्छाइद्धिअनहारकालो असखेज्जगुणो । तस्सेव त्रिक्खंभद्धई असखेज्जगुणा ।
सेही असखेज्जगुणा । दच्चमसखेज्जगुणं । पदरमसखेज्जगुण । लोगो अमखेज्जगुणो ।
एव चत्तारिमण पचत्रचिनोगीण परत्थाणप्पात्रुग वत्तव्वं । पेउच्चियकायजोगीसु मच्चत्थोमो
असजदसम्माइद्धिअनहारकालो । उवरि मणजोगिपरत्थाणभगो । पेउच्चियमिस्सकायजोगीसु
सच्चत्थोमो अमजदसम्माइद्धिअनहारकालो । सामणसम्माइद्धिअनहारकालो असखेज्जगुणो ।
तस्सेव दच्चमसखेज्जगुण । अमजदसम्माइद्धिद्वमसखेज्जगुण । उवरि मणजोगिपरत्थाण
भगो । मच्चत्थोना कायजोगीणो उवसामगा । सग्गा संखेज्जगुणा । एव पेयच्च जाण पलि
दोरम ति । पलिटोपमादो उवरि मिच्छाइद्धी अणतगुणा । एउ आंगलियकायजोगीण पि
वत्तव्व । आंगलियमिस्सकायजोगीसु सच्चत्थोना सजोगिकेवली । अमजदसम्माइद्धी सखेज्ज
गुणा । सासणसम्माइद्धिअनहारकालो असखेज्जगुणो । तस्सेव दच्चमसखेज्जगुण । पलिटो
पमसखेज्जगुण । मिच्छाइद्धी अणतगुणा । आहार आहारमिस्सेसु णटिय सत्थाण परत्थाण

योगी असयतसम्यग्दृष्टियाका द्रव्य उक्त सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे असख्यातगुणा है । पल्यो
पम उक्त असयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे असख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगी मिथ्यादृष्टियोंका
अवधारकाल पल्योपमसे असख्यातगुणा है । उन्हींकी विष्कम्भसूची अवधारकालसे असख्यातगुणी
है । जगधेर्णा विष्कम्भसूचीसे असख्यातगुणा है । उन्हीं अनुभयमनोयोगी मिथ्यादृष्टियोंका
द्रव्य जगधेर्णासे असख्यातगुणा है । जगप्रतर द्रव्यप्रमाणसे असख्यातगुणा है । लोक
जगप्रतरसे असख्यातगुणा है । इसीप्रकार शेष चार मनोयोगी आर पाचों ध्वनययोगियोंका
परस्थान अल्पवृत्त्व कहना चाहिये । वैत्रियिकनाययोगियोंमें असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवधार
काल सयसे स्तोक है । इसके ऊपर मनोयोगके परस्थान अल्पवृत्त्वके समान जानना
चाहिये । वैत्रियिकमिश्रकाययोगियोंमें असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवधारकाल सयसे स्तोक
है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवधारकाल असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवधारकालसे असख्यात
गुणा है । उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि वैत्रियिकमिश्रकाययोगियोंका द्रव्य अपने अवधारकालसे
असख्यातगुणा है । असयतसम्यग्दृष्टि वैत्रियिकमिश्रकाययोगियोंका द्रव्य सासादन द्रव्यसे
असख्यातगुणा है । इसके ऊपर मनोयोगियोंके परस्थान अल्पवृत्त्वके समान जानना चाहिये ।
काययोगी उपशामक सबसे स्तोक है । काययोगी क्षपक काययोगी उपशामकोंसे सख्यातगुणे है ।
इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमके ऊपर काययोगी मिथ्यादृष्टि जीव अनन्त
गुणे है । इसीप्रकार औदारिककाययोगियोंका भी कथन करना चाहिये । औदारिकमिश्रकाय
योगियोंमें सयोगिकेवली जीव सबसे स्तोक है । असयतसम्यग्दृष्टि जीव सयोगिकेवलीसे
सख्यातगुणे है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवधारकाल असयत सम्यग्दृष्टियोंसे असख्यातगुणा
है । उन्हींका द्रव्य अपने अवधारकालसे असख्यातगुणा है । पल्योपम सासादनसम्यग्दृष्टि औदा
रिकमिश्रकाययोगियोंसे असख्यातगुणा है । औदारिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीव पल्योपमसे

ना । कम्मइयकायजोगीसु सखत्थोना सजोगिणो । असंजदसम्माइड्डिअवहारकालो अस-
खेज्जगुणो । सामणसम्माइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव द्वयमसखेज्जगुणं ।
असजदसम्माइड्डिअवमसंखेज्जगुण । पलिदोउममसखेज्जगुण । कम्मइयकायजोगिमिच्छा-
इड्डिणो अणतगुणा ।

सञ्चपरत्थाणे पयद । सञ्चत्थोना आहारमिस्सकायजोगिजीना । आहारकायजोगि-
जीना सखेज्जगुणा । जप्पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । पमत्तमंजदा सखेज्जगुणा । सव्वेत्तिम-
सजदसम्मादिड्डिण अवहारकालो असखेज्जगुणो । एउं णेयच्च ज्ञाप पलिदोउमं त्ति ।
किमट्ठमेउं जाणिज्जे ? वेउच्चियमिस्स ओरालियमिस्स-कम्मइयकायजोगीसु सामणसम्मा-
इड्डि असजदसम्माइड्डिरामीण माहप्प ण जाणिज्जदि त्ति । पुच्च किमिद परुविद ? ण,
आइगियाण तस्स अभिप्पायंतरदरिसणहुत्तादो । पलिदोउमादो उवरि वचिजोगिअवहारकालो
अमत्तखेज्जगुणो । असच्चमोसउचिजोगिअवहारकालो त्तिसेसाहिओ । उउच्चियकायजोगि-

अनन्तगुणे ह । आहारकाययोग और आहारकमिश्रकाययोगमें स्वरधान अथवा परस्थान
अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है । कर्मणकाययोगियोंमें सयोगिकेवली जीव सबसे स्तोक
हैं । असयतसम्यग्दृष्टियाँका अवहारकाल सयोगियोंके प्रमाणसे असख्यातगुणा है । सासादन-
सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असख्यातगुणा है । उन्हींका
द्रव्य अपने अवहारकालसे असख्यातगुणा है । असयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य सासादन द्रव्यसे
असख्यातगुणा है । पल्योपम असयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे असख्यातगुणा है । कर्मणकाय-
योगों मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य पर्योपमसे अनन्तगुणा है ।

अथ सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है । आहारकमिश्रकाययोगी जीव सबसे स्तोक है ।
आहारकाययोगी जीव आहारमिश्र जीवोंसे सख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसयन जीव आहारकाय-
योगियोंसे सख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसयन जीव अप्रमत्तसयनोंसे सख्यातगुणे हैं । सभीका असयत
सम्यग्दृष्टि अवहारकाल प्रमत्तसयनोंसे असख्यातगुणा है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले
जाना चाहिये ।

शंका—येसा किसलिये समझें ?

समाधान—वैक्रियमिश्र, ओदारिकमिश्र और कर्मणक ययोगियोंमें सासादन-
सम्यग्दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि राशियोंका माहात्म्य अर्थात् परस्पर अल्पबहुत्व नहीं जाना
जाता है, इसलिये येसा सम्यना चाहिये ।

शंका—तो फिर इनके अल्पबहुत्वका पहले प्ररूपण किसलिये किया है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, वहाँ दूसरे आचार्योंका अभिप्रायान्तर दिखलाना उनके
अल्पबहुत्वके कथनका प्रयोजन था ।

पल्योपमके ऊपर वचनयोगियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । अनुभववचनयोगि-
योंका अवहारकाल वचनयोगियोंके अवहारकालसे विशेष अधिक है । वैकियिकाययोगियोंका

अवहारकालो मखेज्जगुणो । एव सच्चमोसमणजोगि मोसमणजोगि सच्चमणजोगि-
मणजोगीणं अवहारकालो मखेज्जगुणा । असच्चमोसमणजोगीणं अवहारकालो निसेसाहियो ।
सच्चमोसमणजोगि अवहारकालो मखेज्जगुणो । एव मोसमणजोगि सच्चमणजोगि-वेउच्चिय
मिस्सकायजोगीणं अवहारकालो मखेज्जगुणा । तस्सेव विक्खभसूई असखेज्जगुणा ।
सच्चमणजोगिविक्खभसूई मखेज्जगुणा । एव मोसमणजोगि सच्चमोसमणजोगि असच्च
मोसमणजोगीण । तदो मणजोगिविक्खभसूई निसेसाहिया । सच्चमणजोगिविक्खभसूई
सखेज्जगुणा । एव मोसमणजोगि (सच्चमोसमणजोगि) वेउच्चियकायजोगि असच्च
मोसमणजोगिविक्खभसूईअो मखेज्जगुणाओ । वच्चिजोगिविक्खभसूई निसेसाहिया ।
सेदी असखेज्जगुणा । तदो वेउच्चियमिस्सकायजोगिमिच्छाडिट्ठव्वममखेज्जगुण । सच्चमण
जोगिदच्च मखेज्जगुण । एव मोसमणजोगि सच्चमोसमणजोगि असच्चमोसमणजोगि
दव्वाणि जहारुमेण मखेज्जगुणाणि । मणजोगिदच्च निसेसाहिय । सच्चमणजोगिदच्च

अवहारकाल अनुभववचनयोगियोंके अवहारकालसे सख्यातगुणा है । इसीप्रकार उभय
वचनयोगी, मृषावचनयोगी और सत्यवचनयोगी जीयोंका अवहारकाल उत्तरोत्तर सख्यातगुणा
है । अनुभवमनोयोगियोंका अवहारकाल सत्यवचनयोगियोंके अवहारकालसे विशेष अधिक
है । उभयमनोयोगियोंका अवहारकाल अनुभवमनोयोगियोंके अवहारकालसे सख्यातगुणा
है । इसीप्रकार असत्यमनोयोगी, सत्यमनोयोगी और वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका अवहारकाल
उत्तरोत्तर सख्यातगुणा है । उदाहरी अथात् वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंकी विष्कभसूची उर्दीके
अवहारकालसे असख्यातगुणी है । सत्यमनोयोगियोंकी विष्कभसूची वैक्रियिकमिश्रकाययोगि
योंकी विष्कभसूचीसे सख्यातगुणी है । इसीप्रकार मृषामनोयोगी, उभयमनोयोगी और अनुभव
मनोयोगियोंकी विष्कभसूची भी समझना चाहिये । अनुभवमनोयोगियोंकी विष्कभसूचीसे मनो
योगियोंकी विष्कभसूची विशेष अधिक है । सत्यवचनयोगियोंकी विष्कभसूची मनोयोगियोंकी
विष्कभसूचीसे सख्यातगुणी है । इसीप्रकार मृषावचनयोगी, उभयवचनयोगी, वैक्रियिककाययोगी
और अनुभववचनयोगियोंकी विष्कभसूचीया भी उत्तरोत्तर सख्यातगुणी है । वचनयोगियोंकी
विष्कभसूची अनुभववचनयोगियोंकी विष्कभसूचीसे विशेष अधिक है । जगश्रेणी वचनयोगि
योंकी विष्कभसूचीमे असख्यातगुणी है । जगश्रेणीसे वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका द्रव्य
असख्यातगुणा है । सत्यमनोयोगियोंका द्रव्य वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंके द्रव्यसे सख्यातगुणा है ।
इसीप्रकार मृषामनोयोगी, उभयमनोयोगी, अनुभवमनोयोगियोंका द्रव्य यथाक्रमसे सख्यातगुणा
है । मनोयोगियोंका द्रव्य अनुभव मनोयोगियोंके द्रव्यसे विशेष अधिक है । सत्यवचनयोगियोंका

१ शत्रि ' अवहारकालमेसेन ' इति पाठ ।

सखेज्जगुणं । एवं मोसत्रचिजोगि-सच्चमोसत्रचिजोगि-त्रेउत्रियकायजोगि असच्चमोसत्रचि-
जोगिट्वाणि जहाक्रमेण सखेज्जगुणाणि । तदो वचिजोगिट्वा त्रिमेसाहिय । पदरमसखेज्ज-
गुणं । लोगो असखेज्जगुणो । तदो अजेठणो अगतगुणा । कम्मइयकायजोगिणो अणत-
गुणा । ओरालियमिम्मकायजोगिणो असखेज्जगुणा । ओरालियकायजोगिणो मिच्छाड्ढी
सखेज्जगुणा ।

एव जोगमार्गणा समता ।

वेदानुवादेण इत्थिवेदएसु मिच्छाड्ढी द्व्यपमाणेण केवाडिया,
देवीहि सादिरियं ॥ १२४ ॥

देवमार्गणाए देवीणि पमाणमेत्थिय होदि चि सुत्तमिह ण वृत्त, तो कथ जाणिज्जदे
इत्थिवेदरामी देवीहितो सादिरियो इदि ? जदि चि एत्थ ण तुतो तो चि 'ईमाणरूप-
वामियदेवाणमुत्तरि तमिह चेव देवीओ सखेज्जगुणाओ । तदो सोहम्मरूपनासियेदेवा
सखेज्जगुणा । तमिह चेव देवीओ सखेज्जगुणाओ । पदमाए पुढरीए णेरइया असखेज्ज-

द्रव्य मनोयोगियोंके द्रव्यसे सख्यातगुणा है । इसीप्रकार मृषावचनयोगी, उभयवचनयोगी,
धैरियिककाययोगी और अनुभय वचनयोगियोंका द्रव्य यथाक्रमसे सख्यातगुणा है । अनुभय
वचनयोगियोंके द्रव्यसे वचनयोगियोंका द्रव्य विशेष अधिक है । जगप्रतर वचनयोगियोंके द्रव्यसे
असख्यातगुणा है । लोक जगप्रतरसे असख्यातगुणा है । लोकसे अयोगी जीव अन्तगुणे हैं ।
अयोगियोंसे कामणकाययोगी जीव अन्तगुणे हैं । कामणकाययोगियोंसे औदारिकमिश्रकाययोगी
जीव असख्यातगुणे हैं । औदारिकमिश्रकाययोगियोंसे औदारिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीव
सख्यातगुणे हैं ।

इसप्रकार योगमार्गणा समान हुई ।

वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेदियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा
कितने हैं ? देवियोंमें कुछ अधिक है ॥ १२४ ॥

शुद्धा—देवगति मार्गणमें देवियोंका प्रमाण इतना है, यह सूत्रमें नहीं कहा है,
अनप्य यह कैसे जाना जाता है कि स्त्रीवेदराशि देवियोंसे साधिक होती है ?

समाधान—यद्यपि यहा जीवद्वयमें यह बात नहीं कही है तो भी 'ऊपर ईशान-
कल्पवासी देवोंके चर्चा पर देविया उनसे सख्यातगुणी है । उनसे सौधर्म कल्पवासी देव
सख्यातगुणे हैं और चर्चा पर देविया देवोंसे सख्यातगुणी हैं । पहली पृथिवीमें
नारकी जीव सौधर्म कल्पनी देवियोंसे असख्यातगुणे हैं । भयनवासी देव नारकियोंसे

१ वेदानुवादेन सावेदा ×× मिथ्याप्रमाणसम्बन्धेया धेणय प्रतरासखेज्जगुणापमिताः । स मि १, ८,
देवीहि सादिया इत्या । गो नी २७९

गुणा । भरणयामियदेना अससेज्जगुणा । देवीजो ससेज्जगुणाओ । पचिदियतिगिरस-
जोणिणीओ ससेज्जगुणाओ । वाणतग्देना ससेज्जगुणा । देवीओ ससेज्जगुणाओ ।
जोइसियदेवा ससेज्जगुणा । देवीजो ससेज्जगुणाओ चि ' एदम्हादो सुदानधसुत्तादो
जाणिज्जे जहा देवाण ससेज्जा भागा देवीजो होंति चि । तिरिकसजोणिणीओ देवीण
ससेज्जदिभागो । ताओ देवीसु पन्निस्सत्ते इथियेदरामी होदि चि रुडु देवीहि सादिरेयमिदि
तासि पमाण सुत्ते सुत्त ।

तामिमरहारकालुप्पचि पत्तडस्सामो । देवअरहारकालम्हि वत्तीमस्सेहि भागे हिदे
लद्ध तम्हि चेत्त पन्निस्सविय तिग्गिरस मणुमित्थेयदागमणिमित्त तत्तो एवस्स पदरगुलस्स
ससेज्जदिभाए जणिदे इत्थियेदअरहारकालस्स भागहारो होदि । वत्तीसस्साणि देव-
अरहारकालस्स भागहारो होंति चि क्वण णव्वदे ? तेहिंतो देवीओ वत्तीमगुणा हवति चि
आरियपरपरागणुदेमादो णव्वदे । एदेण अरहारकालेण जगपदरे भागे हिदे इत्थियेद-
रामी होदि ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव सजदासजदा ति ओधं ॥ १२५ ॥

असख्यातगुणे ह । तथा चहा पर देविया देवोंसे सख्यातगुणी ह । पचेत्त्रिय तिर्येच योनिमती
जीष भवनवासी देवोंसे सख्यातगुणे ह । घाणव्यतर देव पचेत्त्रिय निर्येच योनिमतियोंसे
सख्यातगुणे ह । तथा चहा पर देविया देवोंसे सख्यातगुणी ह । ज्योतिषी देव घाणव्यतर
देवियोंसे सख्यातगुणे ह । तथा चहीं पर देविया देवोंसे सख्यातगुणी ह । इस सुहाव्यके
सूत्रसे यह जाना जाता है कि देवोंके सख्यात अर्धभाग देविया होती ह । तथा तिर्येच योनिमती
जीष देवियोंके सख्यातवें भाग होते ह । अतएव इन तिर्येच योनिमतियोंके प्रमाणको देवियोंके
प्रमाणम मिला देने पर स्त्रीवेद जीवराशि होती ह, ऐसा समझकर देवियोंमें कुछ अधिक इस
प्रकार स्त्रीवेदी जीवोंका प्रमाण सूत्रमें कहा ।

अब स्त्रीवेदियोंके अवहारकालकी उत्पत्तिको बतलाते ह— देवोंके अवहारकालको
पत्तीससे भाजित करके जो लब्ध आये उसे उसा देव अवहारकालमें मिला कर जो योग हो
उसमेंसे, तिर्येच और मनुष्य स्त्रीवेदी जीवोंका प्रमाण लानेके लिये, पर प्रतरागुलके सख्यातवें
भागके निकाल लेने पर स्त्रीवेदी जीवोंका अवहारकाल होता है ।

शुक्रा— देव अवहारकालका भागहार पत्तीस होता है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— देवोंसे देविया पत्तीसगुणी ह, इसप्रकार आचार्य परपरासे आये हुए
उपदेशसे यह जाना जाता है ।

योनिमतियोंके इस पूर्वार्क अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर स्त्रीवेद
जीवराशि होती है ।

सामानसम्पग्दष्टि गुणस्थानसे लेकर सयतासयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुण-

१ स्त्रीवेदा ×× सामानसम्पग्दष्ट्यादय सयतासयतादा सामान्योत्तरया । स ति १, ४

जेणेदे चदुगुणद्व्याणिणो' जीवा पलिदोत्रमस्म अससेज्जदिभागमेत्ता तेणेदेसिं परूपाणा ओघ होदि । ओघपमाणादो ऊणइत्थियेदगुणपडिवण्णाण कवमोघत्तं जुज्जेदं ? ण, ओघमिअ ओघमिदि उपयारेण तिस्से ओपत्तिसिद्धीदो । ओपत्तिसज्जदसम्माइट्ठिअअहारकालमात्रलियाए अससेज्जदिभाएण गुणिदे इत्थियेदअसंनदसम्माइट्ठिअअहारकालो होदि । कुदो ? कारिसिग्गिममाणइत्थियेदेण टज्जतहिययाणमित्थीण सणिदाणाणं पउर सम्मत्तपरिणामासमयादो । तम्हि आपलियाए जमसेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअअहारकालो होदि । तम्हि मखेज्जस्सेहि गुणिदे सासणमम्माइट्ठिअअहारकालो होदि । तम्हि आपलियाए अससेज्जदिभाएण गुणिदे सज्जदासज्जदअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि पलिदोत्रमे भागे हिदे सग सगरासीओ भवति ।

पमत्तसज्जदप्पहुडि जाव अणियट्ठिवाटरसांपराइयपविट्ठ उवसमा खवा दव्वपमाणेण केवडिया, सखेज्जा' ॥ १२६ ॥

स्थानमे स्त्रीवेदी जीव ओघप्ररूपणाके समान पल्योपमके असत्प्रातर्वे भाग हे ॥ १२५ ॥

चूकि ये चार गुणस्थानवर्ता जीव परपोपमके असत्प्रातर्वे भागप्रमाण हे, इसलिये इनकी प्ररूपणा ओघप्ररूपणाके समान होती है ।

शंका— गुणस्थानप्रतिपन्न ओघप्ररूपणासे न्यून गुणस्थानप्रतिपन्न स्त्रीवेदियोंके प्रमाणको ओघपना कैसे बन सकता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, ओघके समानको भी ओघ कहा जाता है, इसलिये उपचारासे स्त्रीवेदियोंकी सत्प्रातर्वे ओघत्वं सिद्ध हो जाता है ।

ओघ असत्प्रातर्वेसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आचलीके असत्प्रातर्वे भागसे गुणित करने पर स्त्रीवेदी असत्प्रातर्वेसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, उपलेकी अशिके समान स्त्रीवेदसे जिनका हृदय जल रहा है ओर जो कामाभिलाष सहित है, ऐसी स्त्रियोंके प्रचुरतासे सम्यक्परिणाम मभय नहीं है । अर्थात् स्त्रीवेदके साथ प्रचुर सम्यग्दृष्टि जीव नहीं होते हैं । उस स्त्रीवेदी असत्प्रातर्वेसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आचलीके असत्प्रातर्वे भागसे गुणित करने पर स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको सत्प्रातर्वेसे गुणित करने पर स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आचलीके असत्प्रातर्वे भागसे गुणित करने पर स्त्रीवेदी सत्प्रातर्वेसा अवहारकाल होता है । इन अवहारकालोंसे पल्योपमके भाजित करने पर अपनी अपनी राशियोंका प्रमाण आता है ।

प्रमत्तसत्प्रातर्वे गुणस्थानसे लेकर अनिष्टुचिनादसापरायप्रतिष्ठ उपशमरु और

१ प्रतिशु ' चदुगुणद्व्याणिणो ' इति पाठ । २ प्रतिशु ' मणिघाणाण ' इति पाठ ।

३ प्रमत्तसत्प्रातर्वे अनिष्टुचिनादसापरायप्रतिष्ठ सम्येया । स वि १, ८

गुणा । भरणपामियदेवा जससेज्जगुणा । देवी ते ससेज्जगुणाओ । पचिदियतिरिक्ख-
जोणिणीओ ससेज्जगुणाओ । वाणपतरदेवा ससेज्जगुणा । देवीओ ससेज्जगुणाओ ।
जोइमियदेवा ससेज्जगुणा । देवीओ ससेज्जगुणाओ चि ' एदम्हादे। सुदान'प्रसुत्ताओ
जाणिज्जे जहा देवाण ससेज्जा भग्गा देवीओ हँति चि । तिरिक्खजोणिणीओ देवीण
ससेज्जदिभागो । ताओ देवीसु पन्निपत्ते इत्थिपेदरामी होदि चि रुद्धु देवहि सादिरेयमिदि
तासि पमाण सुत्ते वुत्त ।

तामिमअहारकालुप्पत्ति पचइस्सामो । देवअअहारकालम्हि वत्तीमम्पेहि भागे हिदे
लद्ध तम्हि चं पन्निपत्तिय तिरिक्ख मणुमित्थिपेदागमणिमित्त तत्तो एवस्म पदग्गुलस्म
ससेज्जदिभाए अण्णिदे इत्थिपेदअअहारकालस्म भागहारो होदि । वत्तीमस्साणि देव-
अअहारकास्स भागहारे हँति चि कय णव्वदे ? तेहितो देवीओ पत्तीसगुणा हँति चि
आइरियपरपगागधुपदेमाओ णव्वदे । एदेण अअहारकालेण जगपदेरे भागे हिदे इत्थिपेद-
रामी होदि ।

सासणसम्माडट्टिप्पहुडि जाव सजदासजदा ति ओधं ॥ १२५ ॥

असख्यातगुणे ह । तथा वहा पर देविया देवोंसे सख्यातगुणी ह । पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती
जीव भवनवासी देवोंसे सख्यातगुणे ह । वाणध्यतर देव पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतियोंसे
सख्यातगुणे ह । तथा वहा पर देविया देवोंसे सख्यातगुणी ह । ज्योतिषी देव वाणयतर
देवियोंसे सख्यातगुणे ह । तथा वहाँ पर देविया देवोंसे सख्यातगुणी ह ।' इस खुदावन्धके
सूत्रसे यह जाना जाता है कि देवोंके सख्यात बहुभाग देविया होती है । तथा तिर्यच योनिमती
जीव देवियोंके सख्यातवें भाग होते ह । अतएव इन तिर्यच योनिमतियोंके प्रमाणको देवियोंके
प्रमाणमें मिला देने पर खींचे जावराशि होती है, ऐसा स्पष्टकर देवियोंसे कुछ अधिक इस
प्रकार खींचेकी जीवोंका प्रमाण सूत्रमें कहा ।

अथ खींचेदियोंके अवहारकालकी उत्पत्तिको बतलते ह— देवोंके अवहारकालको
वत्तीससे भाजित करके जो लघु भाग उल्लेख उल्लेख उल्लेख देव अवहारकालमें मिला कर जो योग हो
उल्लेखसे, तिर्यच और मनुष्य खींचेकी जीवोंका प्रमाण खानेके त्रिये, एक प्रतरागुलके सख्यातवें
भागके निकाल लेने पर खींचेकी जीवोंका अवहारकाल होता है ।

शुक्रा— देव अवहारकालका भागहार वत्तीस होता है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— देवोंसे देविया वत्तीसगुणी ह, इसप्रकार वाचार्थ परपराने जाये हुए
उपदेशसे यह जाना जाता है ।

योनिमतियोंके इन पूर्वाक्त अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर खींचे
कीवराशि होती है ।

साभादनसम्प्यडट्टि गुणस्थानमे लेरु सयतासयत गुणस्थानतरु प्रत्येक गुण

इत्थिवेदपमत्तादिरासिस्त संखेज्जदिभागमेत्तां णुत्तयवेदपमत्तादिरासी होदि ।
 १ इडुपागग्गिममाणेण णुत्तयवेदोदयेण सणिदाणेण' पउरं सम्मत्त सज्जमादीणमुवलभा-
 वादो । ओघपमाण ण पावति चि जाणाणद्व सुत्ते सखेज्जणिदेमो रुओ । णुत्तयवेद-
 पसामगा पच ५, सउगा वस १० । इत्थिवेद णुत्तयवेदे पमत्ता अपमत्ता च एत्तिया
 व होंति चि सपहि उअएसो णत्थि ।

अपगद्वेदएसु तिण्हं उवसामगां केवडिया, पवेसेण एको वा
 दो वा तिणिण वा, उक्कस्सेण चउवण्णं ॥ १३१ ॥

एत्थ पुरदो भण्णमाणअपगद्वेदजीवमचयपदुप्पायणसुत्तेणेण पज्जत्तं किमणेण
 अपगद्वेदपवेसपरुखणासुत्तेणेत्ति ? ण एस दोमो, उअसमसेट्ठिपवेसणतुल्लो अवगयवेदपज्जाय-
 पवेसो चि जाणाणफलत्तादो । तिण्हमिदि णेद छट्ठीपहुवयणं किंतु पढमानहुवयणमिदि
 घेत्तच्च, छट्ठिपिहत्तिउप्पत्तिणिमित्ताभावादो । रुधमुअसंतरुसायस्म उवसामगववएसो ? ण,

स्त्रीवेदी प्रमत्तसयत आदि राशिके सख्यातवें भागमात्र नपुंसकवेदी प्रमत्तसयत आदि
 जीवराशि होती है, क्योंकि, इष्टपाककी अन्निके समान नपुंसकवेदके उदयसे अतिक्रामाभिलापसे
 युक्त होनेके कारण प्रचुरतासे सम्यक्त्व और संयमादि परिणामोंका उपलभ नहीं पाया जाता
 है । प्रमत्तसयत आदि नपुंसकवेदी जीवराशि ओघप्रमाणको नहीं प्राप्त होता है, इसका ज्ञान
 करानेके लिये सूत्रमें सख्यात पदका निर्देश किया है । नपुंसकवेदी उपशामक पाच और क्षपक
 दश होते हैं । स्त्रीवेदी और नपुंसकवेदी प्रमत्तसयत और अप्रमत्तसयत जीव इतने ही होते हैं,
 इसप्रकार इस समय उपदेश नहीं पाया जाता है ।

अपगतवेदियोंमें तीन गुणस्थानवर्ती उपशामक जीव कितने हैं ? प्रवेशसे एक,
 दो या तीन, और उत्कृष्टरूपसे चौवन हे ॥ १३१ ॥

शुक्रा—यहा आगे कहा जानेवाला अपगतवेदी जीवोंके सञ्चयका प्ररूपक सूत्र ही
 पर्याप्त है, फिर अपगतवेदी जीवोंके प्रवेशके प्ररूपण करनेवाले इस सूत्रका क्या प्रयोजन है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, उपशामधेणीमें प्रवेश करनेके समान
 ही अपगतवेद पर्यायमें प्रवेश होता है, इस बातका ज्ञान कराना इस सूत्रका फल है ।

सूत्रमें आया हुआ ' तिण्ह ' पद पृष्ठी विभक्तिका बहुवचन नहीं है, किन्तु प्रथमा
 विभक्तिका बहुवचन है, यहा ऐसा अर्थ लेना चाहिये, क्योंकि, यहा पर पृष्ठी विभक्तिकी
 उत्पत्तिका कोई निमित्त नहीं पाया जाता है ।

१ प्रोष्ठु ' सणिग्गणेण ' इति पाठ ।

२ प्रतियु ' उवसमाणेण ' इति पाठ ।

३ अपगतवेदा अग्निश्रुतिवादादयोऽगोशकैवच्य जा साधुशोक्तस्य । स वि १, ८.

पमत्तादीण ओघरासिं सखन्नेरडे कए एयरडमिन्थियेडपमत्तादजो भवति । इत्थिपेदउवसामगा दम १०, सखा गीत २० ।

पुरिसवेदएसु मिच्छाइट्टी दव्वपमाणेण केवडिया, देवेहि सादिरैय' ॥ १२७ ॥

देवलोए देवीग सखेज्जदिभागमेत्ता देवा भवति । पचिदिपतिरिक्खजेणिणीण सखेज्जदिभागमेत्ता तिरिक्खेसु पुरिमवेदा भवति । तेसु देवेषु पन्निस्सत्तेसु देवेहि सादिरैय पुरिसवेदरासिपमाणं हेदि ।

एत्थं जगहारकालुप्पत्तिं वत्तस्सामो । देवजगहारकालं तेत्तीसरूपेहि गुणियं ततो एकपदरगुलं घेत्तुणं सखेज्जखडं काऊणं तत्थेगखडमणियं बहुखडं तत्थेयं पन्निस्सत्ते पुरिसवेदमिच्छाइट्टिजगहारकालो हेदि । एदेण जगपट्टेरे भागे हिदे पुरिसवेदमिच्छाइट्टिरामी हेदि ।

सासणसम्माडडिप्पहुडि जाव अणियट्टिवादरसांपराइयपविट्ट उवसमा सवा दव्वपमाणेण केवडिया ओघ' ॥ १२८ ॥

क्षपक गुणस्थानतरु जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने है ? सख्यात है ॥ १२६ ॥

प्रमत्तसयन आदि गुणस्थानसब धी ओघरासिकी सख्यातसे खडित करने पर एक खंडप्रमाण खीवेदी प्रमत्तसयन आदि गुणस्थानवता जीव होते हैं । खीवेदी उपशामक दश और क्षपक घीस हैं ।

पुरुषवेदियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने है ? देवोंसे कुछ अधिक है ॥ १२७ ॥

देवलोकमें देवियाके सख्यातयें भागमात्र देव है । पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंके सख्यातयें भागमात्र तिर्यंचोंमें पुरुषवेदी जीव है । इन पुरुषवेदी तिर्यंचोंके प्रमाणको देवोंमें प्रक्षिप्त कर देने पर देवोंमें कुछ अधिक पुरुषवेद जीवराशिका प्रमाण होता है ।

अब यहा उक्त जीवोंके अवधारकालका उत्पत्तिको बतलाते हैं— देवोंके अवधारकालको तैर्तीससे गुणित करके जो लब्ध आवे उसमेंसे एक प्रतरागुलको ग्रहण करके और उसके सख्यात खड करके उनमेंसे एक खटको घटाकर बचा— पूर्वार्क राशिमें मिला देने पर पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि अवधारकाल होता है । इस जगत्तरके जिन करने पर पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि राशि होती है ।

सासादनसम्यग्

नसे

उपशामक

१ ब्रह्मचर्यदेन ××

दरहि सादिरैया प्री ।

सि १, ८

इत्थिनेद-णनुसयवेदरामिपतिहीणो ओघराक्षी पुरिमवेदस्म भवति । कथं तस्स ओघत्तं जुञ्जे ? ण एस दोसो, ओघमिअ ओघमिदि तस्स ओघत्तासिद्धीदो ।

एत्थ अअहारकालो युच्चदे । ओघअसंजदसम्माइड्डिअअहारकाल आअलियाए अस-
खेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्ध तम्हि चेअ पक्खित्ते पुरिसनेदअसजदसम्माइड्डिअअहारकालो
होदि । तम्हि आअलियाए असखेज्जदिभागेण गुणिदे सम्मामिच्छाइड्डिअअहारकालो
होदि । तम्हि असखेजरूपेहि गुणिदे सामणमम्माइड्डिअअहारकालो होदि । तम्हि आअलियाए
असखेज्जदिभागेण गुणिदे सजदामजदअअहारकालो होदि । ओघपमत्तादिअ अप्पणो सखेज्ज-
भागभूदइत्थि णनुसयवेदरामिपमाणमणिदे पुरिसनेदपमत्तादजो भवति ।

णनुसयवेदेअु मिच्छाइड्डिपुण्डुडि जाव संजदासजदा त्ति ओघं'
॥ १२९ ॥

और क्षपक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओघप्ररूपणाके समान है ॥ १२८ ॥
ओघराक्षिमेंसे खीवेदी और नपुसकवेदी राशिको कम कर देने पर जो लघ्व रहे
उतना पुरुषवेदियोंका प्रमाण है ।

शंका— इस सासादनसम्यग्दृष्टि आदि पुरुषवेदीराशिको ओघपना कैसे बन
सकता है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, ओघके समानको भी ओघ कहते हैं,
इसलिये उस सासादनसम्यग्दृष्टि आदि पुरुषवेदीराशिके ओघपना सिद्ध हो जाता है ।

अथ पुरुषवेदियोंके अघहारकालको कहते हैं— ओघ असयतसम्यग्दृष्टियोंके अघहार
कालको आघलीके असख्यातर्धे भागसे भाजित करने पर जो लघ्व आवे उसे उसी ओघ
असयतसम्यग्दृष्टियोंके अघहारकालम मिला देने पर पुरुषवेदी असयतसम्यग्दृष्टियोंका
अघहारकाल होता है । इसे आघलीके असख्यातर्धे भागसे गुणित करने पर पुरुषवेदी सम्य-
ग्मिथ्यादृष्टियोंका अघहारकाल होता है । इसे सख्यातसे गुणित करने पर पुरुषवेदी सासादन-
सम्यग्दृष्टियोंका अघहारकाल होता है । इसे आघलीके असख्यातर्धे भागसे गुणित करने पर
पुरुषवेदी सयतासयतोंका अघहारकाल होता है । ओघ प्रमत्तसयत आदि राशियोंमेंसे उन्हींके
सख्यातर्धे भागभूत खीवेदी और नपुसकवेदी राशिके प्रमाणको घटा देने पर पुरुषवेदी
प्रमत्तसयत आदि जीव होते हैं ।

नपुसकवेदियोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर मयतासयत गुणस्थानतक जीव
ओघप्ररूपणाके समान है ॥ १२९ ॥

१ नपुसकवेदा मिथ्यादृष्टयो नन्दातता । ×× नपुसकवेदादच सासादनसम्यग्दृष्टयादय सयतासयतान्ता
सामान्यादस्यथा । स वि १, ८ तेषु विज्ञान सत्रदो राशि सगण परिमाण ॥ गो जी २७१

पमचादीण ओघरासिं मखेज्जखेडे ऱए एयसडमित्थिरेदपमचादो भन्ति । इत्थिरेदउवसामगा दम १०, सग्गा वीस २० ।

पुरिसवेदएसु मिच्छाडट्टी दव्वपमाणेण केवडिया, देवेहि सादरेय' ॥ १२७ ॥

देवलोए देवीग सखेज्जदिभागमेत्ता देवा भन्ति । पचिदियतिरिक्खजोणिणीण सखेज्जदिभागमेत्ता तिरिक्खेसु पुरिसवेदा भन्ति । तेसु देवेषु पत्रिसत्तेसु देवेहि सादरेय पुरिसवेदरासिपमाण हेदि ।

गत्थ अणहारकालुप्पत्ति पत्तइस्सामो । देवअणहारकाल तेचीसरूपेहि गुणिय तत्ते एक्कपदरगुल धेत्तण सखेज्जगड काऊण तत्थेगखडमणिय बहुगडे तत्थेन पत्रिसत्ते पुरिसवेदमिच्छाडट्टिअणहारकालो हेदि । एदेण जगपदरे भागे हिदे पुरिसवेदमिच्छाडट्टिरामी हेदि ।

सासणसम्माडट्टिप्पहुडि जाव अणियट्टिवादरसांपराइयपविट्ट उवसमा खवा दव्वपमाणेण केवडिया, ओघ' ॥ १२८ ॥

सुपरु गुणस्थाननक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने है ? सरयात ह ॥ १२६ ॥

प्रमत्तसयत आदि गुणस्थानसब धो ओघराशिको सरयातसे खडित करने पर एक गडप्रमाण रविदेदी प्रमत्तसयत आदि गुणस्थानवर्ती जीव होते हैं। र्वीवेदी उपशामक दश और क्षपक बीस है ।

पुरुपवेदियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने ह ? देवोंसे कुछ अधिक है ॥ १२७ ॥

देवलोकेमें देवियोंके सरयातवें भागमात्र देव हैं। पचेद्वय तिर्यच योनिमतियोंके सरयातवें भागमात्र तिर्यचोंमें पुरुपवेदी जीव है। इन पुरुपवेदी तिर्यचोंके प्रमाणको देवोंमें प्रक्षिप्त कर देने पर देवोंमें कुछ अधिक पुरुपवेद जीवराशिका प्रमाण होता है ।

अथ यदा उक्त जीवोंके अवहारकालकी उत्पत्तिको बतलाते हे— देवोंके अवहारकालको तेतीससे गुणित करके जो लघु अथे उसमेंसे एक प्रतरागुलको ग्रहण करके और उसके सख्यात खड करके उनमेंसे एक खडको घटाकर बहुभाग उसी पूर्वाक राशिमें मिला देने पर पुरुपवेदी मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है। इस अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर पुरुपवेदा मिथ्यादृष्टि राशि होती है ।

सासादनसम्भगदृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्ति चादरसापरायप्रविष्ट उपशमक

१ बदसुकादन × × पुवदाश्च मिथ्यादृष्टोऽसरयया अथय प्रतरासरयैयमागप्रमिता । स ति १, ८
दशहि सादरेया पुरिता । गा जी २७९

इत्थियेदपमत्तादिरासिस्त संखेज्जदिभागमेत्तो णवुसययेदपमत्तादिरासी होदि । कुदो ? इट्ठपागग्गिममाणेण णवुंसयवेदोदयेण सणिटाणेण^१ पउर सम्मत्त-सजमादीणमुत्तलभा-
भावादे । ओघपमाण ण पावति ति जाणाणइ सुत्ते सखेज्जणिदेमो रुओ । णवुसयवेद-
उत्तसामगा पंच ५, रत्तगा दस १० । इत्थियेद णवुसययेदे पमत्ता अपमत्ता च एत्तिपा
चेव हँति ति संपहि उवएसो णत्थि ।

अपगदवेदएसु तिण्हं उवसामगां केवडिया, पवेसेण एको वा
दो वा तिण्णि वा, उक्खसेण चउवण्णं ॥ १३१ ॥

एत्थ पुरदो भण्णमाणअपगदवेदजीवमचयपदुप्पायणसुत्तेणेव पज्जत्तं किमणेण
अपगदवेदपेसपरूषणासुत्तेणेचि ? ण एस दोमो, उत्तसमसेदिपेसणतुल्लो अवगयवेदपज्जाय-
पेसो ति जाणाणफलत्तादे । तिण्हमिदि णेद उट्ठीपट्टयण किंतु पटमात्रह्वयणमिदि
धेत्तव्व, उट्ठविहत्तिउप्पत्तिणिमित्ताभावो । रुधमुत्तसत्तकसायस्त उवसामगवत्तएसो ? ण,

स्त्रीवेदी प्रमत्तसयत आदि राशिके सख्यातवें भागमात्र नपुंसकवेदी प्रमत्तसयत आदि
जीवराशि होती है, क्योंकि, इष्टपाककी अशिके समान नपुंसक वेदके उदयसे अतिक्रमाभिलापसे
युक्त होनेके कारण प्रचुरतासे सम्यक्त्व और संयमादि परिणामोंका उपलभ नहीं पाया जाता
है । प्रमत्तसयत आदि नपुंसकवेदी जीवराशि ओघप्रमाणको नहीं प्राप्त होती है, इसका ज्ञान
करानेके लिये सूत्रमें सख्यात पदका निर्देश किया है । नपुंसकवेदी उपशामक पाच और क्षपक
दश होते हैं । स्त्रीवेदी और नपुंसकवेदी प्रमत्तसयत और अप्रमत्तसयत जीव इतने ही होते हैं,
इसप्रकार इस समय उपदेश नहीं पाया जाता है ।

अपगतवेदियोंमें तीन गुणस्थानवर्ती उपशामक जीव कितने हे ? प्रवेशसे एक,
दो या तीन, और उरुकृष्टरूपसे चौवन हैं ॥ १३१ ॥

शुक्रा—यहा आगे कहा जानेवाला अपगतवेदी जीवोंके सचयका प्ररूपक सूत्र ही
पर्याप्त है, फिर अपगतवेदी जीवोंके प्रवेशके प्ररूपण करनेवाले इस सूत्रका क्या प्रयोजन है ?

समाधान—यह कोई दोष नहा है, क्योंकि, उपशामश्रेणीमें प्रवेश करनेके समान
ही अपगतवेद पर्यायमें प्रवेश होता है, इस बातका ज्ञान कराना इस सूत्रका फल है ।

सूत्रमें आया हुआ ' तिण्ह ' पद पृष्ठी विभक्तिका बहुवचन नहीं है, किन्तु प्रथमा
विभक्तिका बहुवचन है, यहा ऐसा अर्थ लेना चाहिये, क्योंकि, यहा पर पृष्ठी विभक्तिकी
उत्पत्तिका कोई निमित्त नहीं पाया जाता है ।

१ प्रतिपु ' सणिष्ठाण ' इति पाठ ।

२ प्रतिपु ' उवसमाणेण ' इति पाठ ।

३ अपगतवेदा अनिष्टुत्तिश्रदादयोऽपीगकवत्त्वं वा साभायाकाम्यं । स वि १, ६.

णवुसयवेदमिच्छाद्विणो अणतत्तणेण ओघमिच्छाद्विहि समाणा । सासणादओ
 पलिदोअमस्स असंखदिभागत्तणेण ओघगुणपडिअण्णेहि समाणा चि ओघत्तमेदेसिं जुअदे ।
 एत्थ जवहारकालुप्पत्ती चुचदे । त जह—इत्थि पुरिसवेदसगुणपडिअण्णे अणदवेदजीने च
 णवुसयवेदमिच्छाद्विणोसिभजिदमेदेसिं वग्ग च सव्वजीणसिस्सुवरि पक्खिअत्ते धुणरासी
 होदि । एतेण सव्वजीणसिस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे णवुसयवेदमिच्छाद्विणोसि होदि ।
 इत्थिवेदअसजदसग्गमाद्विअणहारकाल आरलियाअ असखेज्जदिभागेण गुणिदे णवुसयवेद
 असजदसग्गमाद्विअणहारकालो होदि । तग्गिह आरलियाए असखेज्जदिभाएण गुणिदे
 सम्मामिच्छाद्विअणहारकालो होदि । तग्गिह सखेज्जरूपेहि गुणिदे सासणसग्गमाद्विअणहार-
 कालो होदि । तग्गिह आवलियाए असखेज्जदिभाएण गुणिदे सजदासंजदअणहारकालो होदि ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियद्विवादरसांपराइयपविट्ठ उवसमा
 सवा दव्वपमाणेण केवडिया, सखेज्जा' ॥ १३० ॥

नपुसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तत्वकी अपेक्षा ओघमिथ्यादृष्टियोंके समान हैं और
 नपुसकवेदी सासादान्तर्यामिण्यदृष्टि आदि जीव पल्योपमके अन्तर्यातवें भागत्वकी अपेक्षा ओघ
 गुणस्थानप्रतिपन्नोके समान हैं, इसलिये नपुसकवेदी इन राशियोंके ओघपना धन जाता है ।
 अब इन नपुसकवेदियोंके अवहारकालकी उत्पत्तिकी कहते हैं । वह इसप्रकार है— गुणस्थान
 प्रतिपन्न स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी जीव राशिको तथा अपगतवेदी जीवराशिको तथा नपुसकवेदी
 मिथ्यादृष्टि राशिसे भाजित इहाँ स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी और अपगतवेदी राशिके घगकी सर्व
 जीवराशिमें मिला देने पर नपुसकवेदी मिथ्यादृष्टियोंकी धुवराशि होती है । इससे सर्व
 जीवराशिके उपरिम घगके भाजित करने पर नपुसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है ।
 स्त्रीवेदी असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आधलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने
 पर नपुसकवेदी असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आधलीके असख्यातवें
 भागसे गुणित करने पर नपुसकवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे
 सख्यातसे गुणित करने पर नपुसकवेदी सासादान्तर्यामिण्यदृष्टियोंका अवहारकाल होता है ।
 इसे आधलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर नपुसकवेदी सयताम्यतोंका अवहार
 काल होता है ।

प्रमत्तसयत गुणस्थानसे लेकर अनिच्छादरसांपरायिकप्रविष्ट उपशामक और
 सपक गुणस्थानतक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सरयात हैं ॥ १३० ॥

इत्थिवेदपमत्तादिरासिस्म सखेज्जदिभागमेत्तो णवुसयवेदपमत्तादिरासी होदि । कुदो ? इदुपागग्गिममाणेण णवुसयवेदोदयेण सणिदाणेण^१ पउर सम्मत्त-सजमादीणसुवलंभा-भावादो । ओघपमाण ण पावेंति त्ति जाणाणण्ह सुत्ते सखेज्जणिहेसो ऋओ । णवुसयवेद-उत्तसामगा पच ५, सउगा ढस १० । इत्थिवेद णवुसयवेदे पमत्ता अपमत्ता च एत्तिया चेव होंति त्ति सपहि उवएसो णत्थि ।

अपगदवेदएसु तिण्हं उवसामगा^१ केवडिया, पवेसेण एको वा दो वा तिणिण वा, उक्खस्सेण चउवण्ण^१ ॥ १३१ ॥

एत्थ पुरदो भण्णमाणअपगदवेदजीवसचयपदुप्पायणसुत्तेणेउ पज्जत्तं किमणेण अपगदवेदपवेसपरुखणासुत्तेणेत्ति ? ण एस दोमो, उवसमसेडिपवेसणतुलो अवगयवेदपज्जाय-पवेसो त्ति जाणाणणफलत्तादो । तिण्हमिदि णेद छट्ठीअहुयण फित्तु पढमाणहुयणमिदि घेत्तच्च, छट्ठिअहित्तिउप्पत्तिणिमित्ताभावादो । कधमुउसतकमायस्स उवसामगवणएसो ? ण,

स्त्रीवेदी प्रमत्तसयत आदि राशिके सख्यातवें भागमात्र नपुंसकवेदी प्रमत्तसयत आदि जीवराशि होती है, क्योंकि, इष्टपाकधी अशिके समान नपुंसक वेदके उदयसे अतिकामाभिलाषसे युक्त होनेके कारण प्रचुरतासे सम्यक्त्व और सयमादि परिणामोंका उपलभ नहीं पाया जाता है । प्रमत्तसयत आदि नपुंसकवेदी जीवराशि ओघप्रमाणको नहीं प्राप्त होती है, इसका ज्ञान करानेके लिये सूत्रमें सख्यात पदका निर्देश किया है । नपुंसकवेदी उपशामक पाच और क्षपक दश होते हैं । स्त्रीवेदी और नपुंसकवेदी प्रमत्तसयत और अपमत्तसयत जीव इतने ही होते हैं, इसप्रकार इस समय उपदेश नहीं पाया जाता है ।

अपगतवेदियोंमें तीन गुणस्थानवर्ती उपशामक जीव कितने हे ? प्रवेशसे एक, दो या तीन, और उत्कृष्टरूपसे चौबन है ॥ १३१ ॥

शुका—यद्वा आगे कहा जानेवाला अपगतवेदी जीवोंके सचयना प्ररूपक सूत्र ही पर्याप्त है, फिर अपगतवेदी जीवोंके प्रवेशके प्ररूपण करनेवाले इस सूत्रका क्या प्रयोजन है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, उपशामथेणीमें प्रवेश करनेके समान ही अपगतवेद पर्यायमें प्रवेश होता है, इस बातका ज्ञान कराना इस सूत्रका फल है ।

सूत्रमें आया हुआ ' तिण्हं ' पद पछी विभक्तिका बहुवचन नहीं है, किन्तु प्रथमा विभक्तिका बहुवचन है, यद्वा ऐसा अर्थ लेना चाहिये, क्योंकि, यद्वा पर पछी विभक्तिकी उपत्तिका कोई निमित्त नहीं पाया जाता है ।

१ प्रतिपु ' सग्गिधानेण ' इति पाठ ।

२ प्रतिपु ' उवसमाणेण ' इति पाठ ।

३ अपगतवेदा अनिष्टसिद्धादरादयोऽयोग्येकव्यं जा सामा'योक' इत्य' । स वि १, ६.

सजोगिकेवली ओषं ॥ १३४ ॥

गदत्थमेद सुत्त ।

भागामाग वचडसामो । सव्वजीनरामिमणत्तखटे कए बहुखडा णवुसयवेदमिच्छा-
इट्ठिणो भरति । सेसमणत्तखटे कए बहुखडा अगगदेवो हावति । सेस संखेज्जखटे कए
बहुखडा इत्थियेदमिच्छाइट्ठिणो हाति । मेसमखेज्जखटे कए बहुखडा पुरिमवेदमिच्छा-
इट्ठिणो हाति । सेसमखेज्जखटे कए बहुखडा सव्वेसिममजदसम्माइट्ठिणो होति । सेसमोष ।

अप्पाचहुग तिग्गिह सत्थाणादिभेएण । सत्थाणे पयद । इत्थियेद-पुरिसवेदानं
मत्थाण देवमिच्छाइट्ठिण भगो । मामणादि जात्र सजदासजदाणं सन्थाणमोष । णवुमयवेद-
मिच्छाइट्ठिमत्थाण णत्थिय । सासणादीण सत्थाणमोष ।

परत्थाणे पयद । सव्वत्थोरा इत्थियेदुवसामगा । खरगा मंखेज्जगुणा । अप्प-
मत्तमजदा सखेज्जगुणा । पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । असजदसम्माइट्ठिअवहारकालो
अमखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो अमखेज्जगुणो । सामणसम्माइट्ठिअवहारकालो

अपगतवेदियोंमें सयोगिकेवली जीव ओषप्ररूपणाके समान है ॥ १३४ ॥

इस सूत्रका अर्थ भी वही है जैसा ऊपर उद्धृत आये है ।

अब भागाभागको घटलाते हैं— सर्व जीवराशिके अनन्त खड करने पर बहुभाग
नपुसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खड करने पर बहुभाग अपगतवेदी
जीव हैं । शेष एक भागके सख्यात खड करने पर बहुभाग स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीव हैं ।
शेष एक भागके असख्यात खड करने पर बहुभाग पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक
भागके असख्यात खड करने पर बहुभाग सर्व असयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष कथन
ओषप्ररूपणाके समान है ।

स्थान आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वस्थानमें अल्पबहुत्व
प्रकृत है । स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व देव मिथ्यादृष्टियोंके स्वस्थान
अल्पबहुत्वके समान है । सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयतासयततक स्वस्थान
अल्पबहुत्व ओष स्थान अल्पबहुत्वके समान है । नपुसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्थान
अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, सासादनसम्यग्दृष्टि आदि नपुसकवेदियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व
ओष स्थानके समान है ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— स्त्रीवेदी उपशमक सयसे स्तोक हैं । स्त्रीवेदी
क्षपक जीव स्त्रीवेदी उपशमकोंसे सख्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदी अप्रमत्तसयत जीव स्त्रीवेदी
क्षपकोंसे सख्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदी प्रमत्तसयत जीव स्त्रीवेदी अप्रमत्तसयतोंसे
सख्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदी असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी प्रमत्तसयतोंसे
असख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी असयतसम्यग्दृष्टियोंके
अवहारकालसे असख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी

दृक्प्रद्वियणय पडुच्च उवमंतकसाथस्स णि उरसामगगएसं पडि विरोहाभाभादो । एत्थ पपेसपिधी उरमममेडिपपेसणेण तुल्ला । एदेण सग्गअग्गदपेदपवेमो णि सग्गसेडि-पपेमेण तुल्लो ति जाणादिद । वुदो ? सग्गअग्गदपेदपेस पडि पुघ सुत्तारभाभाभादो ।

अद्द पडुच्च संखेज्जा ॥ १३२ ॥

एत्थ संखेज्जा ति ण भणिय ओघमिदि उत्तच्चं ? ण, अरलंनियपज्जयत्तादो ।
सेम सुग्गम ।

त्तिणि ख्वा अजोगिकेवली ओघ ॥ १३३ ॥

ओघादो एदेसिं पमाण पडि निमेसाभावा ओघत्त जुन्दे ।

शंका— उपशान्तकवाय जीवको उपशामक सज्ञा कैसे प्राप्त हो सकती है ?

समाधान—नहा, क्योंकि, द्रव्याधिक नयकी अपेक्षा उपशान्तकवाय जीवके भी उपशामक इस सज्ञाके प्रति कोई विरोध नहीं आता है ।

यहां अपगतवेदस्थानमें प्रवेशाधिकि उपशामश्रेणीसबर्धी प्रवेशाधिकि समान है । इसी कथनसे क्षपक अपगतवेदियोंका प्रवेश भी क्षपकश्रेणीसबर्धी प्रवेशके समान है, इसका ज्ञान करा दिया, क्योंकि, क्षपक अपगतवेदियोंके प्रवेशके प्रति पृथक् रूपसे सूत्रका आरंभ नहीं पाया जाता है ।

विशेषार्थ—जिसप्रकार उपशामश्रेणीके प्रत्येक गुणस्थानमें सामान्यसे जघय एक और उत्कृष्ट चौवन जीव प्रवेश करते हैं, और विशेषरूपसे पहले आदि समयमें एक जीवसे लेकर सोलह आदि जीवतक प्रवेश करते हैं; तथा क्षपकश्रेणीमें सामान्यसे जघय एक और उत्कृष्ट एकसौ आठ जीव प्रवेश करते हैं, और विशेषरूपसे पहले आदि समयमें एक जीवसे लेकर बत्तीस आदि जीव प्रवेश करते हैं; यही नियम यहा अपगतवेदियोंके लिये भी प्रवेशकी अपेक्षा समझना चाहिये ।

कालकी अपेक्षा अपगतवेदी उपशामक सरयात हे ॥ १३२ ॥

शंका—इस सूत्रमें ' सरयात ह ' इसप्रकार न कहकर ' ओघप्ररूपणाके समान ह ' ऐसा कहना चाहिये ?

समाधान—नहा, क्योंकि, यहा पर्यायाधिक नयका अवलम्बन लिया है । शेष कथन सुग्गम है ।

अपगतवेदियोंमें तीन गुणस्थानवर्ती क्षपक और अयोगिकेवली जीव ओघ प्ररूपणाके समान हैं ॥ १३३ ॥

ओघसे इन तीन गुणस्थागवर्ती क्षपक और अयोगिकेवलियाके प्रमाणके प्रति कोई शिरोपता नहीं है, इसलिये ओघपना दन जाता है ।

सजोगिकेवली ओषं ॥ १३४ ॥

गदत्थमेदं सुत्त ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिमणत्तखडे कए ऱहुखंडा णवुसयवेदमिच्छा-
इट्ठिणो भवति । सेसमणत्तखडे कए बहुखंडा अणगदवेदा हंतंति । सेसं संखेज्जखडे कए
बहुखंडा इत्थियेदमिच्छाइट्ठिणो हंतंति । सेसमणत्तखडे कए बहुखंडा पुरिसवेदमिच्छा-
इट्ठिणो हंतंति । सेसमणत्तखडे कए ऱहुखंडा सव्वेसिममजदसम्माइट्ठिणो हंतंति । सेसमोष ।

अप्यात्रहुग तिग्गिह सत्थाणादिभेएण । सत्थाणे पयद । इत्थियेद-पुरिसनेदाणं
मत्थाण देवमिच्छाइट्ठिण भगो । मासणादि जान सजदासजदाण सत्थाणमोष । णवुंसयवेद-
मिच्छाइट्ठिमत्थाणं णत्थिय । सामणादीण सत्थाणमोष ।

परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा इत्थियेदुवसामगा । खग्गा मंखेज्जगुणा । अप्प-
मत्तमनटा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा सखेज्जगुणा । असजदसम्माइट्ठिअहारकालो
अमखेज्जगुणो । सम्माभिच्छाइट्ठिअवहारकालो अमखेज्जगुणो । सामणसम्माइट्ठिअवहारकालो

अपगतवेदियोंमें सयोगिकेवली जीव ओषप्ररूपणाके समान हैं ॥ १३४ ॥

इस सूत्रका अर्थ भी वही है जैसा ऊपर कह आये हैं ।

अब भागाभागको घटलाने हैं— सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग
नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अपगतवेदी
जीव हैं । शेष एक भागके सख्यात खंड करने पर बहुभाग स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीव हैं ।
शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक
भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग सर्व असयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष अथत
ओषप्ररूपणाके समान है ।

स्वस्थान आदिकके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वस्थानमें अल्पबहुत्व
प्रकृत है । स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व देव मिथ्यादृष्टियोंके स्वस्थान
अल्पबहुत्वके समान है । सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर मयतासयततक स्वस्थान
अल्पबहुत्व ओष स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्वस्थान
अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, सासादनसम्यग्दृष्टि आदि नपुंसकवेदियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व
ओष स्वस्थानके समान है ।

अत्र परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— स्त्रीवेदी उपशामक सत्रसे स्तोक हैं । स्त्रीवेदी
क्षपक जीव स्त्रीवेदी उपशामकोंसे सख्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदी अप्रमत्तसयत जीव स्त्रीवेदी
क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदी प्रमत्तसयत जीव स्त्रीवेदी अप्रमत्तसयतोंसे
सख्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदी असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी प्रमत्तसयतोंसे
असख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी असयतसम्यग्दृष्टियोंके
अवहारकालसे अप्रमत्तसयतगुणा है । स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी

सखेज्जगुणो । सजदासजदअनहारकालो असखेज्जगुणो । तस्सेर दव्वमसखेज्जगुणं । एव
 पडिलोमेण णेयव्व जाव असजदसम्माइड्ढिदव्व चि । तदो पडिलोवममसखेज्जगुण । तदो
 इत्थिवेदमिच्छाइड्ढिअनहारकालो असखेज्जगुणो । निक्खमव्वई असखेज्जगुणा । सेढी
 असखेज्जगुणा । दव्वमसखेज्जगुण । पदरमसखेज्जगुण । लोगो असखेज्जगुणो । एव
 पुरिमयेदम्म त्रि उचव्व । एव चेव णवुसयवेदम्म । णवरि पडिलोवमादो उवरि मिच्छाइड्ढी
 अणतगुणा चि वचव्व ।

सच्चपरत्याणे पयद । सच्चत्थोना णवुसयवेदुपसामगा । रवगा मखेज्जगुणा ।
 इत्थिवेदुवमामगा तच्चिया चेव । तेसिं रवगा सखेज्जगुणा । पुरिसयेदुवमामगा सखेज्जगुणा ।
 तेसिं रवगा मखेज्जगुणा । णवुसयवेदे अप्पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । तम्हि चेव पमत्त
 सजदा सखेज्जगुणा । इत्थिवेदे अप्पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । तम्हि चेव पमत्तसजदा
 सखेज्जगुणा । सजोगिनेरली सखेज्जगुणा । पुरिसयेद अप्पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । तम्हि

सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे सत्यातगुणा है । स्त्रीवेदी सयतासयतोंका अवहारकाल
 स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असत्यातगुणा है । उन्हीं सयतासयतोंका द्रव्य
 गदने अवहारकालसे असत्यातगुणा है । इसप्रकार प्रतिलोमरूपसे स्त्रीवेदी असयतसम्यग्दृष्टियोंके
 द्रव्य आने तक ले जाना चाहिये । स्त्रीवेदी असयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे पल्योपम असत्यातगुणा
 है । पल्योपमसे स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असत्यातगुणा है । स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि
 अवहारकालसे स्त्रीवेदियोंकी विष्कमसूची असत्यातगुणा है । स्त्रीवेदियाकी विष्कमसूचीसे
 जगधेना असत्यातगुणा है । जगधेनीसे स्त्रीवेदियोंका द्रव्य असत्यातगुणा है । द्रव्यसे
 जगप्रतर असत्यातगुणा है । जगप्रतरसे लोक असत्यातगुणा है । इसीप्रकार पुरुषवेदका
 भी परस्थान अस्पयहृत्य कहना चाहिये । तथा इसीप्रकार नपुसकवेदका भी । परंतु इतनी
 विशेषता है कि नपुसकवेदियाका कहते समय पल्योपमके ऊपर मिथ्यादृष्टि अनंतगुणे हैं,
 यह कहना चाहिये ।

अब सर्व परस्थानमें अस्पयहृत्य प्रकृत है— नपुसकवेदी उपशामक जीव सबसे स्तोक
 है । नपुसकवेदी क्षपक जीव सत्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदी उपशामक जीव नपुसकवेदी क्षपकोंका
 जितना प्रमाण है उतने ही है । स्त्रीवेदी क्षपक जीव स्त्रीवेदी उपशामकसे सत्यातगुणे हैं ।
 पुरुषवेदी उपशामक जीव स्त्रीवेदी क्षपकोंसे सत्यातगुणे हैं । पुरुषवेदी क्षपक जीव पुरुषवेदी
 उपशामकोंसे सत्यातगुणे हैं । नपुसकवेदमें अप्रमत्तसयत जीव पुरुषवेदी क्षपकोंसे संख्यात
 गुणे हैं । नपुसकवेदमें ही प्रमत्तसयत जीव नपुसकवेदी अप्रमत्तसयतोंसे सत्यातगुणे हैं ।
 स्त्रीवेदी अप्रमत्तसयत जीव नपुसकवेदी प्रमत्तसयतोंसे सत्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदमें ही
 प्रमत्तसयत जीव स्त्रीवेदी अप्रमत्तसयतोंसे सत्यातगुणे हैं । सयोगिकेवरी जीव स्त्रीवेदी
 अप्रमत्तसयतोंसे संख्यातगुणे हैं । पुरुषवेदी अप्रमत्तसयत जीव सयोगिकेवलियोंसे सत्यात

चेन पमत्तसजदा संखेज्जगुणा । पुरिसवेदअसजदसम्माइड्डिअवहारकालो असखेज्जगुणो ।
 सम्मामिच्छाइड्डिअवहारकालो असखेज्जगुणो । सासणसम्माइड्डिअवहारकालो सखेज्जगुणो ।
 संजदासजदअवहारकालो असखेज्जगुणो । इत्थिवेदअसजदसम्माइड्डिअवहारकालो असखेज्ज-
 गुणो । सम्मामिच्छाइड्डिअवहारकालो असखेज्जगुणो । सासणसम्माइड्डिअवहारकालो सखेज्ज-
 गुणो । सजदासंजदअवहारकालो असखेज्जगुणो । णवुमयवेदअसजदसम्माइड्डिअवहारकालो
 असखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइड्डिअवहारकालो असखेज्जगुणो । सासणसम्माइड्डिअवहारकालो
 सखेज्जगुणो । सजदासजदअवहारकालो असखेज्जगुणो । तस्सेव दन्मसखेज्जगुणं । एन
 पडिलोमिण णेदच्च जाय पलिदोवमं ति । तदे इत्थिवेदमिच्छाइड्डिअवहारकालो असखेज्ज-
 गुणो । पुरिसवेदमिच्छाइड्डिअवहारकालो सखेज्जगुणो । तस्सेन विकरभसूई असखेज्जगुणा ।
 इत्थिवेदमिच्छाइड्डिविकरभसूई सखेज्जगुणा । सेठी असखेज्जगुणा । पुरिसवेदमिच्छाइड्डि-

गुणे हे । पुरुषवेदमें ही प्रमत्तसयत जीव पुरुषवेदी अप्रमत्तसयतोंसे सख्यातगुणे हे । पुरुषवेदी
 असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल पुरुषवेदी प्रमत्तसयतोंसे असख्यातगुणा है । पुरुषवेदी
 सम्यग्मिध्यादृष्टियोंका अवहारकाल पुरुषवेदी असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असख्यात
 गुणा है । पुरुषवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल पुरुषवेदी सम्यग्मिध्यादृष्टियोंके अवहार-
 कालसे सख्यातगुणा है । पुरुषवेदी सयतासयतोंका अवहारकाल पुरुषवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि-
 योंके अवहारकालसे असख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल पुरुषवेदी
 सयतासयतोंके अवहारकालसे असख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी सम्यग्मिध्यादृष्टियोंका अवहारकाल
 स्त्रीवेदी असयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका
 अवहारकाल स्त्रीवेदी सम्यग्मिध्यादृष्टि अवहारकालसे सख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी सयतासय-
 तोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असख्यातगुणा है ।
 नपुंसकवेदी असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी सयतासयतोंके अवहारकालसे
 असख्यातगुणा है । नपुंसकवेदी सम्यग्मिध्यादृष्टियोंका अवहारकाल नपुंसकवेदी असयत-
 सम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असख्यातगुणा है । नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल
 नपुंसकवेदी सम्यग्मिध्यादृष्टि अवहारकालसे सख्यातगुणा है । नपुंसकवेदी सयतासयतोंका
 अवहारकाल नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असख्यातगुणा है । उन्हीं
 नपुंसकवेदी सयतासयतोंका द्रव्य अपने अवहारकालसे असख्यातगुणा है । इसीप्रकार प्रति-
 लोमक्रमसे पत्न्योपमतक ले जाना चाहिये । पत्न्योपमसे स्त्रीवेदी मिध्यादृष्टियोंका अवहारकाल
 असख्यातगुणा है । पुरुषवेदी मिध्यादृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी मिध्यादृष्टियोंके अवहार-
 कालसे सख्यातगुणा है । उन्हीं पुरुषवेदी मिध्यादृष्टियोंकी विष्कभसूची उन्हींके अवहारकालसे
 असख्यातगुणी है । स्त्रीवेदी मिध्यादृष्टियोंकी विष्कभसूची पुरुषवेदी मिध्यादृष्टियोंकी विष्कभ-
 सूचीसे सख्यातगुणी है । जगथेणी स्त्रीवेदी मिध्यादृष्टि विष्कभसूचीसे असख्यातगुणी है ।

द्वयमसरेज्जगुण । इत्थियेदमिच्छाद्विद्व्य सखेज्जगुणं । पदरमसरेज्जगुण । लोगो
 असखेज्जगुणो । अत्रगतयेदा अणतगुणा । णुमयेदमिच्छाद्विद्वी अणतगुणा । वेदगुणपडि-
 वण्णगुणगारो णं णच्चदि चि के नि आइरिया भणति । तेमिमभिप्पाएण मच्चपरत्थाण
 बुच्चदे । सच्चथोना अप्पमत्तसनदा तिपेदगदा । (पमत्तसजदा सरेज्जगुणा । सजदा)
 तिपेदा निसेसाहिया । तिपेदअसंजदसम्माइद्विअवहारकालो असरेज्जगुणो । एव णेदच्च
 जान पल्लोयम ति । उपरि इत्थियेदमिच्छाद्विअवहारकालो असरेज्जगुणो । तदुवणि पुच्चं
 च वच्च ।

एव वेदमग्गणा समत्ता ।

कसायाणुवादेण कोधकसाइ-माणकसाइ-मायकसाइ-लोभकसाईसु
 मिच्छाद्विपहुडि जाव सजदासजदा चि ओघं ॥ १३५ ॥

एदस्म सुत्तस्स अत्थो बुच्चदे । त जहा— अणतत्तणेण पल्लोयमस्स असखेज्जदि

गुरुपेदी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य जगधेणीसे असख्यातगुणा है । खीवेदी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य
 गुरुपेदेद मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे सख्यातगुणा है । जगप्रतर खीवेद् मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे असख्यात
 गुणा है । लोरु जगप्रतरसे असख्यातगुणा है । अपगतवेदी जीव लोरसे अनन्तगुणे है
 गुरुपेदी मिथ्यादृष्टि जीव अपगतवेदियोंसे अनन्तगुणे है । वेद गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंके
 अवहारकालका गुणकार ज्ञात नहीं है, ऐसा कितने हा आचार्योंका कथन है । आगे उर्दीके
 अग्निप्रमाणानुसार सर्व परस्वान अल्पबहुत्वका कथन करते हैं । तीनों वेदोंसे युक्त अग्रमत्तसयत
 जीव सधसे स्तोत्र हैं । तीनों वेदोंसे युक्त अग्रमत्तसयत जीव उनसे सख्यातगुणे हैं । तीन
 वेदवाले संयत जीव विशेष अधिक हैं । त्रिवेदी असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असख्या
 तगुणा है । इसीप्रकार पत्थोपमत्तक ले जाना चाहिये । इससे ऊपर खीवेदी मिथ्यादृष्टियोंका
 अवहारकाल असख्यातगुणा है । इससे ऊपर पहलेके समान कथन करना चाहिये ।

इसप्रकार वेदमार्गणा समाप्त हुई ।

कपायमार्गणाके अनुवादसे क्रोधकपायी, मानकपायी, मायाकपायी और लोभ
 कपायी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयतामयत गुणस्थानतक प्रत्येक
 गुणस्थानमें जीव सामान्य प्ररूपणाके समान हैं ॥ १३५ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इसप्रकार है— अन तत्वकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीव
 ओर पत्थोपमके असख्यातयें भागत्वकी अपेक्षा गुणस्थानप्रतिपक्ष जीव ओघ मिथ्यादृष्टि ओर

१ प्रतियु ' -गुणगारण ' इति पाठ ।

२ कपायानुवादेन क्राधमानमायावु मिथ्यादृष्ट्यादय सयतामयतादा सामान्यत्वस्य । लोभकपायाण
 षट एव कम । स नि १, <

भागत्तणेण च मिच्छाइट्ठी गुणपडिवण्णा च ओघमिच्छाइट्ठि-गुणपडिवण्णेहि समाणा ति कट्ट सुत्ते एदेसिं परूवणा ओघमिदि चुत्ता । पज्जत्रट्टियणए पुण अत्रलविज्जमाणे अत्थि निसेसो । तं कथं ? चट्टुकमायमिच्छाइट्ठीसु तिरिक्खरासी पहाणो, सेसगदिरासिस्स तदणंतभागत्तादो । तत्थ वि चट्टुकसायमिच्छाइट्ठिरासी णं अण्णोण्णेण समाणो । कुदो ? तदद्धानं सारिच्छाभावा । त जहा—

तिरिक्ख मणुसेसु सब्बत्थोना माणद्धा । कोधद्धा निसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? आपलियाए असखेज्जिभागमेत्तेण । मायद्धा निसेसाहिया । केत्तियमेत्तो निसेसो ? पुच्च परूविदो । लोभद्धा निसेसाहिया । केत्तियमेत्तो निसेसो ? आवलियाए असखेज्जिभागमेत्तो । ण च अट्टासु असरिसासु तत्थ ट्टिदरासीण समाणणिग्गम-पवेत्ताण सताण पडि गगाप-वाहो व्व अवट्टिदाण सरिसत्त जुज्जेद । तदो चउण्हमद्धानं समासं काऊण चट्टुकमाइमिच्छा-इट्ठिरासिंहि भागे हिंदे लद्ध चउप्पडिरासिं करिय भाणादीणमद्दाहि पडिनाडीए गुणिदे सग सगरासीओ भंतिं । एदमट्टपद काऊण चट्टुकसाइमिच्छाइट्ठिस्म रासिस्स अनहार-

गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके समान है, ऐसा समझकर सूत्रमें क्रोधदि कपाययुक्त ओघ मिथ्यादृष्टि और ओघ गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंकी प्ररूपणा ओघप्ररूपणाके समान है, यह कहा । परंतु पर्या-यार्थिक नयका अवलम्बन करने पर विशेषता है ही ।

शुका—यह विशेषता कैसे है ?

समाधान—चारों कपायवाले मिथ्यादृष्टि जीवोंमें तिर्यचराशि प्रधान है, क्योंकि, शेष तीन गतिसयन्धी जीवराशि तिर्यचराशिके अनन्तर्वे भाग है । उसमें भी चारों कपायवाली मिथ्यादृष्टिराशि परस्पर समान नहीं है, क्योंकि, चारों कपायोंका काल समान नहीं है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—तिर्यच और मनुष्योंमें मानका काल सबसे स्तोत्र है । क्रोधका काल मानकालसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? आवलीके असख्यातवै भागमात्र विशेषसे अधिक है । मायाका काल क्रोधके कालसे विशेष अधिक है । कितनामात्र विशेष है ? पहले प्ररूपण कर दिया है, अर्थात् आवलीका असख्यातवै भाग विशेष है । लोभका काल मायाके कालसे विशेष अधिक है । कितनामात्र विशेष है ? आवलीका असख्यातवै भागप्रमाण विशेष अधिक है । इसप्रकार कालोंके विसदृश रहने पर जिनका निर्गम और प्रवेश समान है और सतानकी अपेक्षा गगानदीके प्रवाहके समान जो अस्थिर है, ऐसी कहा स्थित उन राशियोंकी सदृशता नहीं बन सकती है । तदनन्तर चारों कपायोंके कालोंका योग करके उसका चारों कपायवाली मिथ्यादृष्टिराशिमै भाग देने पर जो लब्ध आवे उसकी चार प्रतिराशिया करके मानादिकके कालोंसे परिपाटीक्रमसे

१ प्रतिपु 'ण' इति पाठ ।

२ परतिरियलोभमायाकाहो माणो विहदियादिस्व । आवन्निअसखमग्गजा सगकाळ व समात्तेच्च ॥
शु. श्री १९८.

फालो बुच्चदे—

चउरुमाइगुणपडिपणपमाणमरुसइपमाण च चदुरुमाइमिच्छाइट्टिरासिभिदि
तच्चग्ग च सच्चजीवरासिस्सुपरि पक्खिस्सत्ते चदुरुमाइधुररासी होदि । त चदुहि गुणिदे क्कमाय
रासिचदुब्बभागस्स भागहारो होदि । पुणो तम्मिह अपणलियाए अमसेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्ध
तम्मिह चेन पक्खिस्सत्ते माणरुसाइधुररासी होदि । पुच्चभागहारमभहिय काऊण क्कमायचउ
ब्बभागभागहाररासिम्मिह भागे हिदे लद्ध तम्मिह चेन पक्खिस्सत्ते कोधरुमाइधुररासी होदि । पुणो
कोधरुमाइभागहारमभहिय काऊण पुच्चिहधुरगमिम्मिह भागे हिदे लद्ध तम्मिह चेन पक्खिस्सत्ते
मायरुमाइधुररासी होदि । क्कमायचउब्बभागधुररासिमाणलियाए अमसेज्जदिभाएण खड्डिय
लद्ध तम्मिह चेन अपणिदे लोभरुसाइधुररासी होदि । एदेहि अपहारकालेहि सच्चजीव
रासिस्सुपरिमन्गे भागे हिदे सग-सगरासीओ आगच्छति । तिण्ह क्कमायमिच्छाइट्टीण
पमाण सच्चजीवरासिस्स चउब्बभागो देवणो । लोभरुमाइमिच्छाइट्टिपमाण चदुब्बभागो
सादिरेगो । गुणपडिपण्णेषु देवरासी पहाणो । कुदो ? सेसगदिरासिस्स तदसखेज्जदि-

गुणित करने पर अपनी अपनी राशिया होती हैं । इस अर्थपदको समझकर चार कथायवाली
मिथ्यादृष्टिराशिका अथहारकाल कहते हैं—

गुणस्थानप्रतिपन्न चारों कथायवाले जीवोंके प्रमाणको ओर कथाय रहित जीवोंके
प्रमाणको तथा चार कथायवाले मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणसे भक्त पूर्वोक्त दोनों राशियोंके
धर्मको सर्व जीवराशिके ऊपर प्रक्षिप्त करने पर चारों कथायवाले जीवोंकी धुरराशि होती
है । उसे चारसे गुणित करने पर कथायराशिके चौथे भागका भागहार होता है । पुन इसे
आवलीके असख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर
मानकथायवाले जीवोंकी धुरराशि होती है । पुन इस भागहारको अभ्यधिक करके उसका
कथायराशिके चौथे भागकी भागहारराशिमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे उसी भागहार
राशिमें मिला देने पर मोधकथायवाले जीवोंकी धुरराशि होनी है । पुन मोधकथायके
भागहारको अभ्यधिक करके उसका पूर्वोक्त धुरराशिमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे
उसी धुरराशिमें मिला देने पर मायाकथायवाले जीवोंकी धुरराशि होती है । कथायराशिके
चौथे भागकी धुरराशिकी (भागहारको) आवलीके असख्यातवें भागसे श्रद्धित करके जो लब्ध
आवे उसे उसी धुरराशिमेंसे निशाल लेने पर लोभकथाय जीवोंकी धुरराशि होती है । इन
अथहारकालोंसे सर्व जीवराशिके उपरिम चर्मेके भाजित करने पर अपनी अपनी राशिया आती
हैं । मोध, मान, और माया, इन तीनों कथायवाले मिथ्यादृष्टियोंके पृथक् पृथक् प्रमाण सब
जीवराशिका कुछ कम चौथा भाग है । लोभकथायवाले मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण कुछ
अधिक चौथा भाग है । गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंमें देवराशि प्रधान है, क्योंकि, शेष तीन
गातियोंकी गुणस्थानप्रतिपन्न जीवराशि गुणस्थानप्रतिपन्न देवराशिके असख्यातवें भाग है ।

भागचाटो । देवेषु चउकसायगुणपडिवण्णरासी ण समाणो तदद्वाणाण समाणचाभाजादो । तं जहा- देवेषु सव्वत्थोपा कोवद्धा । माणद्धा सखेज्जगुणा । मायद्धा मखेज्जगुणा । लोभद्धा सखेज्जगुणा । णेरुद्धेषु सव्वत्थोपा लोभद्धा । मायद्धा सखेज्जगुणा । माणद्धा सखेज्जगुणा । कोवद्धा सखेज्जगुणा । एत्थ देवगदिअद्वाण समास काऊण ओघअसंजदरासिं खट्टिय चउप्पडिरासिं काऊण परिवारुणी कोवद्धिअद्वाहि गुणिदे सग-सगरासीओ भवति । एव सम्मामिच्छाड्ढि सासनमम्मादिट्ठीण पि कायव्व । सजदासंजदाणं पुण तिरिक्रगइअद्वाणमास काऊण ओघमंजदासजदरासिं खडिय चदुप्पडिरासिं करिय कमेण कोधादिअद्वाहि गुणिदे मग-सगरासीओ भवति । एतेण धीयपदेण एदेसिमवहार-कालुप्पत्ती वुच्चदे । त जहा- ओघअमजदसम्माड्ढिअवहारकाल सखेज्जरूपेहि खडिय लद्ध तम्हि चैव पनिसत्ते लोभकसाडअसजदसम्माड्ढिअवहारकालो हेदि । तम्हि सखेज्जरूपेहि गुणिदे मायकसाडअसजदसम्माड्ढिअवहारकालो हेदि । तम्हि सखेज्जरूपेहि

देवोंमें चारों षपायगाली गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवराशि समान नहीं है, क्योंकि, उन चारों षपायोंके काल समान नहीं हैं । आगे इसी विषयका स्पष्टीकरण करते हैं- देवोंमें क्रोधका काल सबसे स्तोत्र है । मानका काल उससे सख्यातगुणा है । मायाका काल मानके कालसे सख्यातगुणा है । लोभका काल मायाके कालसे सख्यातगुणा है । नारकियोंमें लोभका काल सबसे स्तोत्र है । मायाका काल लोभके कालसे सख्यातगुणा है । मानका काल मायाके कालसे सख्यातगुणा है । क्रोधका काल मानके कालसे सख्यातगुणा है । यद्वा देवगतिके कणयसवन्धी कालका योग करके उससे देवोंकी ओघ अनयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको खडित करके जो लघ्न आवे उसकी चार प्रतिराशिया करके उन्हें परिपाटीक्रमसे क्रोधादिकके कालोंसे गुणित करने पर अपनी अपनी राशिया होती हैं । इसीप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशियोंका भी करना चाहिये । सयतासयतोंका प्रमाण लाने समय तो तिर्यगगतिसवन्धी षपायोंके कालका योग करके और उससे ओघसयतासयत राशिको खडित करके जो लघ्न आवे उसकी चार प्रतिराशिया करके क्रमसे क्रोधादिकके कालोंसे गुणित करने पर अपनी अपनी राशिया होती हैं । इस धीजपदके अनुसार इन पूर्वांक राशियोंके अवहारकालकी उत्पत्तिको यतलाते हैं । यद्वा इसप्रकार है— ओघ असयतसम्यग्दृष्टियेक अत्रहारकालको सख्यातसे खडित करके जो लघ्न आवे उसे उसी अवहारकालमें मिला देने पर लोभकषायचाले असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस लोभ असयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालको सख्यातसे गुणित करने पर मायाकषायचाले असयत

१ पुह पुह षपायकालो गिरये अतोषुहुषपरिमाणो । लोहादा सखयुपा द्वेषु य कौहपट्टदीदो ॥ सख
समानेणवहिससगरासी पुणा वि छगुणिदे । सगमगुणगारेहिं य सगसगरासीण परिमाण ॥ गो जी २९६, २९७
२ प्रतिपु ' दौमाओ ' इति पाठ ।

गुणिदे माणकसाडअसजदसम्माइडिअवहारकालो होदि । तम्हि ससेज्जरूपेहि गुणिदे कोधकसाडअसजदसम्माइडिअवहारकालो होदि । एव सम्मामिच्छाइडि सासणसम्माइडिण पि वच्चव्व । औपसनदासजदअवहारकाल चदुहि गुणिय चदुप्पडिगसिं काऊण तत्थेग रासिमसरेज्जेहि रूपेहि सडिय लद्ध तम्हि चेन पक्खिउत्ते माणकसाडमजदासजदअवहारकालो होदि । पुणो पुच्चभागहारमच्चहिय काऊण चदुगुणियभागहार सडिय लद्ध तम्हि चेव पक्खिउत्ते कोधममाइसजदासजदअवहारकालो होदि । पुणो पुच्चभागहारमच्चहिय काऊण चदुगुणिदअवहारकाल सडिय लद्ध तम्हि चेन पक्खिउत्ते मायकसाइसजदासजदअवहारकालो होदि । चदुगुणभागहारमसखेज्जरूपेहि सडिय लद्ध तम्हि चेन अवणिदे लोभनमाइमजदासजदअवहारकालो होदि ।

प्रमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्ठि ति दव्वपमाणेण केवडिया,
संखेज्जा ॥ १३६ ॥

ओघमिदि अणिय सखेज्जा इदि किमट्ठ वुच्चदे ? ण एस दोसो, बुदो ? ओघ

सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस मायाकपाय असयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालको सख्यातसे गुणित करने पर मानकपायवाले असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस मानकपाय असयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालको सख्यातसे गुणित करने पर कोधकपायी असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसीप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि और सासादन सम्यग्दृष्टियोंका भी कथन करना चाहिये । ओघ सयतासयतोंके अवहारकालको चारसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसकी चार प्रतिराशिया करके उनमेंसे एक राशिको असख्यातसे खडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी राशिमें मिला देने पर मानकपायवाले सयतासयतोंका अवहारकाल होता है । पुन पूर्व भागहारको अभ्यधिक करके और उससे चतुर्गुणित भागहारको खडित करके जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर कोधकपायी सयतासयतोंका अवहारकाल होता है । पुन पूर्व भागहारको अभ्यधिक करके और उससे चतुर्गुणित अवहारकालको खडित करके जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर मायाकपायी सयतासयतोंका अवहारकाल होता है । चतुर्गुणित भागहारको असख्यातसे खडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी चतुर्गुणित भागहारमेंसे घटा देने पर लोभकपायी सयतासयतोंका अवहारकाल होता है ।

प्रमत्तसयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानतरु चारों कपायवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सख्यात हैं ॥ १३६ ॥

शंका—सूत्रमें 'ओघ' ऐसा न बह कर 'सखेज्जा' इसप्रकार किसलिये कहा है ?

पमत्तादिरासिं चटुण्ह कसायाण पडिभागेण चउपिहा पिहत्ते तत्थ ओघरासिपमाणाणुवलंभादो । कथमेत्थ पिहज्जदे ? पुच्चदे— चउण्ह कसायाणमद्वासमास करिय चटुप्पडिरासिं अप्पप्पणो अट्ठाहि ओवट्ठिय लद्धसखेज्जरूपेहि इच्छिदरासिम्हि भागे हिदे सग-सगरासीओ भवति । एत्थ चोदगो भणदि— पमत्तादीण चटुकसायरासीओ समाणा आनलियाए जसखेज्जादिभागमेत्तद्वापिसेसाओ ति । आनलिअसखेज्जादिभागमेत्तद्वापिसेसत्ते पि ण रासीणं पिसेसाहियत्त पिरुज्जदे, पमेमातराण संखाणियमाभाणदो । तेणेत्य तेरासिय ण कीरदे ? ण, पमत्तादिसु माणकमायरासी थोपो । कोवकमायरासी पिसेसाहियो । माय-कसायरासी पिसेसाहियो । लोभकमायरासी पिसेसाहियो ।

णवरि लोभकसाईसु सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा उवममा खवा मूलोव' ॥ १३७ ॥

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, ओघ प्रमत्तसयत आदि राशिको चार कपायोंके भागद्वारसे भाजित करने पर यहा ओघराशिका प्रमाण प्राप्त नहीं हो सकता है ।

शका— इन राशियोंका यह विभाग किसप्रकार होता है ?

समाधान— चारों कपायोंके कालोंका योग करके और उसकी चार प्रतिराशियां करके अपने अपने ऋतुसे अपघटित करके जो सख्यात लघु आधे उससे इच्छित राशिके भाजित करने पर अपनी अपनी राशिया होती हैं ।

शंका— यहा पर शकाकार कहता है, एक तो प्रमत्तसयत आदिमें चारों कपायराशिया समान हैं, क्योंकि, यहा पर आचलके असख्यातधे भागप्रमाण कालकी विशेषता नहीं है ? दूसरे, आचलके असख्यातधे भागप्रमाण कालकी विशेषता नहीं होने पर भी राशियोंकी विशेषाधिकता विरोधकी प्राप्त नहीं होती है, क्योंकि प्रवेशान्तर करनेवाले जीवोंके सख्याका कोई नियम नहीं पाया जाता है । इसलिये यहा पर त्रैराशिक नहीं करना चाहिये ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, प्रमत्तसयत आदि गुणस्थानोंमें मानकपाय जीवराशि सबसे स्तोत्र है । मोघकपाय जीवराशि मानकपाय राशिसे विशेष अधिक है । मायाकपाय जीवराशि मोघकपाय राशिसे विशेष अधिक है । लोभकपाय जीवराशि मायाकपाय जीवराशिसे विशेष अधिक है ।

इतना विशेष है कि लोभकपायी जीवोंमें सूक्ष्मसापरायिक शुद्धिसंपत्त उपशमक और क्षयरु जीव मूलोघ प्ररूपणाके समान है ॥ १३७ ॥

१ आ प्रतो '—मेवदाए' इति पाठः ।

२ अथ तु विशेष, सूक्ष्मसापरायस्यता सामन्योत्तरयो । स सि १, ८

खगोनसामगसुहुमसापराइएसु सुहुमलोभकसायवदिरित्तिसापरायाभावदो ओघत्त
ण विरुज्जदे ।

अकसाईसु उवसंतकसायवीदरागछट्टुमत्था ओघं ॥ १३८ ॥

एत्थ भावरूमायाभावर पेक्खिउत्तण उरमतरूमाया अकसाइणो ण दच्चरूमायामावं
पडि, उदओदीरभोकइणुक्कइण-परपयडिसरूमादिरिहिददच्चरूम्मस्स तत्थुत्तभादो । चउ-
व्विहदच्चरूम्मभेण्ण चउच्चिहत्तो मूलो उरमतरूमायरासी कध पादेव मूलोघपमाण
पादे ? ण एस दोमो, बुदो ? उरुचदे- ण तार दच्चरूसायविसेसणमेत्थ सभरइ, तेण
अहियागभावा । ण भावरूसायविसेसण पि सभरइ, तस्स तत्थाभावादो । तदो उवसत-
कसायरासी ण चट्टुविहा विहज्जेदो तो चेव मूलोघत्त पि तस्म ण विरुज्जदि त्ति ।

खीणकसायवीदरागछट्टुमत्था अजोगिकेवली ओघ ॥ १३९ ॥

क्षपक और उपशामक सूक्ष्म सापरायिक जीवोंमें सूक्ष्म लोभ कपायसे व्यतिरिक्त
कपाय नहीं पाए जानेके कारण सूक्ष्म लोभियोंके प्रमाणको ओघत्वका प्रतिपादन करना
विरोधको प्राप्त नहीं होना है ।

कपायरहित जीवोंमें उपशान्तरूपाय धीतराग छद्मस्थ जीव ओघप्ररूपणाने
समान हैं ॥ १३८ ॥

यहां भाव कपायका अभाव देखकर उपशान्तरूपाय जीवोंको अकपायी कहा है,
द्रव्य कपायके अभावकी अपेक्षासे नहीं, क्योंकि, उदय, उद्वारणा, अपकषण, उत्कर्षण और
परप्रवृत्तिसम्भरण आदिसे रहित द्रव्य कर्म वहां उपशान्तरूपाय गुणस्थानमें पाया जाता है ।

शंका—द्रव्य कर्म चार प्रकारका होनेसे चार भेदोंमें विभक्त मूल उपशान्तरूपायराशि
प्रत्येक मूलोघ प्रमाणको कैसे प्राप्त होती है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है । दोष क्यों नहीं है, आगे इसीका कारण कहते हैं—
द्रव्यकपायरूप विशेषण तो वहां सभय नहीं है, क्योंकि, उसका वहां अधिकार नहीं है ।
भावकपाय विशेषण भी सभय नहीं है, क्योंकि, भावकपाय वहां पाया नहीं जाता है । अतएव
उपशा-तरूपाय जीवराशि चार भेदोंमें विभक्त नहीं होती है और इसलिये उसके मूलोघपना
भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है ।

खीणकपायवीतरागछद्मस्थ जीव और अयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाने
समान हैं ॥ १३९ ॥

एत्थ समुच्चयद्वं च-सहोपादान कायञ्च ? ण, च-सहेण विणा नि तदड्ढोपलद्धीदो । एदेसिं दोण्ह गुणट्ठाणाणभेगजोगरुण किमद्वमिदि चे, ण एस दोसो, द्व्यपमाण पडि एदेसिं गुणट्ठाणाण पच्चासत्तिं पेन्निखय एगच्चविरोहाभावादो । ण च ओषत्तं निरुज्झदे, णिन्विसेमणत्तादो ।

सजोगिकेवली ओघं ॥ १४० ॥

सजोगि अजोगिकेवलीणभेगमेव सुत्त किण्ण कीग्दे, केवलित्तं पडि पच्चासत्ति-सभवदो ? ण, दोण्हं पमाणगदपहणपच्चासत्तीए अभावादो । कध पमाणस्स पधानत्तं ? तेणेत्थ अहियारादो । सेस सुगमं ।

भागाभाग उत्तइस्तामो । सञ्जजीवरासिमणत्तखडे कए तत्थ बहुखड्डा चउकसाय-मिच्छाइड्डिणो भवति । एगखडमकसाइणो गुणपडिउण्णा च । पुणो चदुरुसायमिच्छाइड्डि-रासिमात्रलियाए असखेज्जदिभाएण खडिय तत्थेगखंड पुध इणिय सेसबहुखडे चचारि

शुक्रा—इस ध्वजमें समुच्चयार्थ च शब्दका प्रद्वण करना चाहिये ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, च शब्दके विना भी समुच्चयरूप अर्थकी उपलब्धि हो जाती है ।

शुक्रा—इन दोनों गुणस्थानोंका एक योग किसलिये किया है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, द्रव्यप्रमाणके प्रति दोनों गुणस्थानोंकी प्रत्यासत्ति देखकर एक योग करनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

ओषत्थ भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है, क्योंकि, ये दोनों गुणस्थान निर्विशेषण हैं ।

सयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणके समान हैं ॥ १४० ॥

शुक्रा—सयोगिकेवली और अयोगिकेवली, इन दोनोंका एक ही सूत्र क्यों नहीं बनाया है, क्योंकि, केवलित्तके प्रति इन दोनोंकी प्रत्यासत्ति पाई जाती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, इन दोनोंकी प्रमाणगत प्रधान प्रत्यासत्ति नहीं पाई जाती है, इसलिये इन दोनोंका एक सूत्र नहीं किया ।

शुक्रा—प्रमाणको प्रधानता किस कारणसे है ?

समाधान—क्योंकि, यहा उसका अधिकार है । शेष कथन सुगम है ।

अथ भागाभागको बतलाते हैं—सूर्य जीवराशिके अनन्त खड करने पर उनमेंसे बहुभाग चार कषाय मिथ्यादृष्टि जीव हैं और एक भागप्रमाण अकषायी और गुणस्थानप्रतिपन्न जीव है । पुन चार कषाय मिथ्यादृष्टि राशिको आधलीके असख्यातयें भागसे खंडित करके उनमेंसे एक खडको पृथक् करके शेष बहुभागके चार समान पुत्र करके स्थापित करना

१ अ प्रती 'पाशात्तविरोहादो भावादो' इति पाठ ।

समपुजे करिय द्वैदव्य । पुणे अण्णिदएयगंडमात्रलियाए असखेज्जदिभाएण खडेऊण तत्थ बहुखडे पढमपुजे पक्खित्ते लोभकमायमिच्छाइट्टिरामी होदि । सेसेयखडमात्रलियाए असखेज्जदिभाएण खडेऊण बहुखडे निद्रियपुजे पक्खित्ते मायकसायमिच्छाइट्टिरामी होदि । सेसेयखडमात्रलियाए अमखेज्जदिभाएण खडिय बहुखडे तदियपुजे पक्खित्ते कोधकमाइमिच्छाइट्टिरामी होदि । सेस चउत्थपुजे पक्खित्ते माणकसायमिच्छाइट्टिरामी होदि । सेसमणत्तखडे कए बहुखडा अकमाया होंति । एत्तो उररि कसायगुणगारेहिंतो सम्मानिच्छाइट्टिरासिं पडि सासणसम्माइट्टिगुणगारो सखेज्जगुणे ति उवएसमप्रलाभिय भागाभागो उच्चदे । सेसं सखेज्जखडे कए बहुखडा लोभकसायअसजदसम्माइट्टिरामी होदि । सेस सखेज्जखडे कए बहुखडा मायकसायअसजदसम्माइट्टिरामी होदि । सेस सखेज्जखडे कए बहुखडा माणकसायअसजदसम्माइट्टिरामी होदि । सेससखेज्जखडे कए बहुखडा कोधकसायअसजदसम्माइट्टिरामी होदि । सेस सखेज्जखडे कए बहुखडा लोभकसायसम्माइमिच्छाइट्टिरामी होदि । सेस सखेज्जखडे कए बहुखडा मायकसायसम्माइमिच्छाइट्टिरामी होदि । सेस सखेज्जखडे कए बहुखडा माणकसायसम्माइमिच्छाइट्टिरामी होदि ।

चाहिये । पुन निकालकर पृथक् रखते हुए एक भागको आधलीके असख्यातयें भागसे खडित करके उनमेंसे बहुभाग पहले पुजमें मिला देने पर लोभकसाय मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है । शेष एक खडको आधलीके असख्यातयें भागसे खडित करके बहुभाग दूसरे पुजमें मिला देने पर मायाकसाय मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है । शेष एक खडको आधलीके असख्यातयें भागसे खडित करके बहुभाग तीसरे पुजमें मिला देने पर क्रोधकसाय मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है । शेष एक भागको चौथे पुजमें मिला देने पर मानकसाय मिथ्यादृष्टि राशि होती है । सर्व जीवराशिके अन्त खडोंमेंसे जो एक खड प्रमाण अकसायी और गुणस्थानप्रतिपन्न वतलएये थे उम एक खडके अनन्त खड करने पर बहुभाग अकसाय जीव होते हैं । अन्त भागके कसायके गुणकारसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रति सासाधन सम्यग्दृष्टिका गुणकार संख्यातगुणा है । इसप्रकारके उपदेशका अवलम्बन लेकर भागाभागका कथन करते हैं । शेषके संख्यात खड करने पर बहुभाग लोभकसाय असयतसम्यग्दृष्टि जीव राशि है । शेष एक भागके संख्यात खड करने पर बहुभाग मायाकसाय असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खड करने पर बहुभाग मानकसाय असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खड करने पर बहुभाग क्रोधकसाय असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खड करने पर बहुभाग लोभकसाय सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खड करने पर बहुभाग मायाकसाय सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खड करने पर बहुभाग मानकसाय सम्यग्मिथ्यादृष्टि

होदि । सेस सखेज्जखडे कए बहुखंडा क्रोधकसायसम्माभिच्छाइडिगसी होदि । सेस सखेज्जखडे कए बहुखंडा लोभकसायसामणसम्माइडिरासी होदि । सेस सखेज्जखडे कए बहुखंडा मायकसायसामणसम्माइडिरामी होदि । सेस सखेज्जखडे कए बहुखंडा माणकसायसासणसम्माइडिरासी होदि । सेसमसखेज्जखडे कए बहुखंडा क्रोधकसायसासणसम्माइडिरासी होदि । सेसमसखेज्जखडे कए बहुखंडा चउरुमायसंजदासजदरासी होदि । तदो सजदासजदरासिस्स अमखेज्जदिभागमरणिय सेस चत्तारि समपुजे करिय ड्वेदव्य । पुणो पुञ्चमणदिदएयखंडमसखेज्जखंडे करिय तथ बहुखंडे पढमपुजे पक्खिचे लोभकसाइसंजदासजदरासी होदि । सेसमसखेज्जखडे करिय बहुखंडे त्रिदियपुजे पक्खिचे मायकसाइसंजदासजदरासी होदि । सेसमसखेज्जखडे करिय बहुखंडे त्रिदियपुजे पक्खिचे क्रोधकसाइसंजदासजदरासी होदि । सेस चउत्थपुजे पक्खिचे माणकसाइसंजदासजदरासी होदि । सेस जाणिऊण णेयवं ।

अप्यात्रहुग तिन्निह सत्थाणादिभेएण । तथ सत्थाण वचइस्सामो । मिच्छाइड्डीण सत्थाण णत्थि, रासीदो मिच्छाइड्धिधुवरासिस्स अधिगत्तादो । अमजदमम्माइडिप्पहुडि जान सजदासंजदा चि सत्थाणस्स मूलोचभगो ।

जीवराशि है । शेष एक भागके सख्यात खड करने पर बहुभाग क्रोधकपाय सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके सख्यात खड करने पर बहुभाग लोभकपाय सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके सख्यात खड करने पर बहुभाग मायाकपाय सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके सख्यात खड करने पर बहुभाग मानकपाय सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके असख्यात खड करने पर बहुभाग क्रोधकपाय सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके असख्यात खड करने पर बहुभाग चार कपाय सयतासयत जीवराशि है । तदनन्तर सयतासयत जीवराशिके असख्यातके भागको घटा कर शेषके चार समान पुज करके स्थापित कर देना चाहिये । पुन पहले घटा कर रखे हुए एक खडके असख्यात खड करके उनमेंसे बहुभाग प्रथम पुजमें प्रक्षिप्त करने पर लोभकपाय सयतासयत जीवराशि होती है । शेष एक भागके असख्यात खड करके उनमेंसे बहुभाग दूसरे पुजमें मिला देने पर मायाकपायी सयतासयत जीवराशि होती है । शेष एक भागके असख्यात खड करके बहुभाग तीसरे पुजमें मिला देने पर क्रोधकपायी सयतासयत जीवराशि होती है । शेष एक भागको चौथे पुजमें मिला देने पर मानकपायी सयतासयत जीवराशि होती है । शेष कथन जानकर ले जाना चाहिये ।

स्वस्थान त्रिदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वस्थान अल्प बहुत्वको बतलाते हैं— मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि जीवराशिमें मिथ्यादृष्टि धुवराशि अधिक है । असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयतासयत गुणस्थानतक स्वस्थान अल्पबहुत्व मूलोच स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है ।

परस्थाने पयद । सञ्चरन्त्याना कोधकसाड्डउत्सामगा । रत्नगा संखेज्जगुणा । अप्प-
मत्तसज्जदा संखेज्जगुणा । पमत्तसज्जदा संखेज्जगुणा । असज्जदसम्माइड्डिवहारकालो
असखेज्जगुणो । एव पेयव्व जाण पल्लिदोवम ति । को'प'रुसादमिच्छाहट्टिरासी अणत्तगुणो ।
एव माण माय लोभाण पि परत्याण वत्तच । अरुसाड्डिसु सञ्चरन्त्याना उत्सत्तकसाया ।
खीणकसाया संखेज्जगुणा । जजोगिकेवली तत्तिया चैव । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा ।
सिद्धा अणत्तगुणा ।

सञ्चरन्त्याने पयदं । सञ्चरन्त्याना माणसायउत्सामगा । कोधकसायउत्सामगा
विसेसाहिया । मायकसायउत्सामगा विसेसाहिया । लोभकसायउत्सामगा विसेसाहिया ।
माणकसायउत्सामगा विसेसाहिया । कोधकसायउत्सामगा विसेसाहिया । मायकसायउत्सामगा विसे-
साहिया । लोभकसायउत्सामगा विसेसाहिया । एव जाम्मि गुणद्वारेण चचारि कमाया सभन्ति
तमस्सिउण भणितं । अण्णत्तुत्तमामएहिंत्तो रत्नगा दुगुणा चैव । ससारत्था अरुसाया
संखेज्जगुणा । माणकसायअपमत्तसज्जदा संखेज्जगुणा । कोधकसायअपमत्तसज्जदा विसे-

परस्थानम् अल्पवृत्त्य प्रकृतं द्वे— क्रोधकपायी उपशामक जीव सयसे स्तोत्र है ।
क्रोधकपायी क्षपक जीव उपशामकोंसे सख्यातगुणे है । क्रोधकपायी अप्रमत्तसयत जीव
क्षपकोंसे सख्यातगुणे है । क्रोधकपायी प्रमत्तसयत जीव अप्रमत्तसयतोंसे सख्यातगुणे है ।
क्रोधकपायी असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल प्रमत्तसयतोंसे असख्यातगुणा है । इसीप्रकार
पयोपमतक ले जाना चाहिये । परयोपमसे क्रोधकपायी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण अनन्तगुणा
है । इसीप्रकार मान, माया और लोभकपायके परस्थान अल्पवृत्त्यका भी ध्यान करना
चाहिये । कपायरहित जीवोंमें उपशान्तकपाय जीव सयसे स्तोत्र है । क्षीणकपाय जीव
उपशान्तकपाय जीवोंसे सख्यातगुणे है । अयोगिकेवली जीव उतने ही हैं । सयोगिकेवली
जीव अयोगियोंसे सख्यातगुणे है । सिद्ध जीव सयोगियोंसे अनन्तगुणे है ।

अथ सर्वपरस्थानम् अल्पवृत्त्य प्रकृतं द्वे— मानकपायी उपशामक जीव सयसे
स्तोत्र है । क्रोधकपायी उपशामक जीव मानकपायी उपशामकोंसे विशेष अधिक हैं । माया
कपायी उपशामक जीव मानकपायी उपशामकोंसे विशेष अधिक हैं । लोभकपायी उपशामक जीव
मायाकपायी उपशामकोंसे विशेष अधिक हैं । मानकपायी क्षपक जीव लोभकपायी
उपशामकोंसे विशेष अधिक हैं । क्रोधकपायी क्षपक जीव मानकपायी क्षपकोंसे विशेष
अधिक हैं । मायाकपायी क्षपक जीव क्रोधकपायी क्षपकोंसे विशेष अधिक हैं । लोभकपायी
क्षपक जीव मायाकपायी क्षपकोंसे विशेष अधिक हैं । इसप्रकार जिस गुणस्थानमें चारों
कपाय सम्यक् हैं उसका आध्य लेकर ध्यान किया । अथ उपशामकोंसे क्षपक होने ही
होते हैं । कपाय रहित ससारी जीव लोभकपायी क्षपकोंसे सख्यातगुणे है । मानकपाय
अप्रमत्तसयत जीव ससारी कपाय रहित जीवोंसे सख्यातगुणे है । क्रोधकपाय अप्रमत्तसयत

मायकमायसजदासजदअवहारकालो विसेसाहियो । क्रोधकसायसजदासजदअवहारकालो विसेसाहियो । माणकमायसजदासजदअवहारकालो विसेसाहियो । तस्सेन दच्चमसवेज्जुण । एव अवहारकालपडिलोमेण णेयच्च जाय पलिदोयम ति । अरुमाई अणतगुणा । माणकसाइ-मिच्छाइट्ठी अणतगुणा । क्रोधकसाइमिच्छाइट्ठी विसेसाहिया । मायकसाइमिच्छाइट्ठी विसेसाहिया । लोभकसाइमिच्छाइट्ठी विसेसाहिया ।

एव कसायमग्गणा समत्ता ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणीसु मिच्छाइट्ठी सासण-सम्माइट्ठी दच्चपमाणेण केवडिया, ओघं ॥ १४१ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे । त जहा— ओघमिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठिरामीहितो मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठिरामिणो ण एकेण वि जीरेण उग्गा भवति, दुवि-हणाणविरट्ठिय मिच्छाइट्ठी-सासणसम्माइट्ठीणमभावादो । विभग्गणाणिणो मिच्छाइट्ठी-सासण-

गुणा है । मायाकपाय सयतासयताका अवहारकाल लोभकपाय सयतासयत अवहारकालसे विशेष अधिक है । क्रोधकपाय सयतासयतोंका अवहारकाल मायाकपाय सयतासयत अवहारकालसे विशेष अधिक है । मानकपाय सयतासयत अवहारकाल क्रोध कपाय सयतासयत अवहारकालसे विशेष अधिक है । मानकपाय सयतासयतोंका द्रव्य उर्दाके अवहारकालसे असख्यातगुणा है । इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोमक्रमसे पत्थोपमतक ले जाना चाहिये । पत्थोपमसे कपायरहित जीव अनन्तगुणे ह । मानकपायी मिथ्यादृष्टि जीव कपायरहित जीवोंसे अनन्तगुणे हैं । क्रोधकपायी मिथ्यादृष्टि जीव मानकपायी मिथ्यादृष्टियोंसे विशेष अधिक हैं । मायाकपायी मिथ्यादृष्टि जीव क्रोधकपायी मिथ्यादृष्टियोंसे विशेष अधिक हैं । लोभकपायी मिथ्यादृष्टि जीव मायाकपायी मिथ्यादृष्टियोंसे विशेष अधिक हैं ।

इसप्रकार कपायमार्गणा समाप्त हुई ।

ज्ञानमार्गणाके अनुवादमे मत्त्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने ह ? ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १४१ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते ह । वह इसप्रकार है— ओघ मिथ्यादृष्टिराशि और ओघ सासा दनसम्यग्दृष्टि राशिसे मत्त्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टिराशि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव राशि एक भी जीव प्रमाणसे कम नहीं है, क्योंकि, उक्त दोनों प्रकारके ज्ञानोंने रहित मिथ्या दृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव नहीं पाये जाते हैं ।

१ ज्ञानादुवादेन मत्त्यज्ञानेन श्रुताज्ञानेन च मिथ्यादृष्टिसासादनसम्यग्दृष्टय सामापोतसस्य । स सि-
२, ८ सण्णानित्तपिक्कपपरिदोणो हय्वजीवरासा ह । मदिहदअण्णाणीण वत्तय होदि परिमाणं ॥ गो जी ५६५

असरोज्जसेडिमेत्ता भवन्ति । तासिं सेटीण विक्खभसूई असरोज्जघणगुलमेत्ता । केत्तिय-
मेत्ताणि घणगुलाणि ? पल्लिदोत्रमस्स असरोज्जदिभागमेत्ताणि । तदो देवमिच्छाइड्डिरासीदो
विहगणाणमिच्छाइड्डिरासी विससाहिओ भवदि । विहगणाणपिरहिददेवापज्जचरासिं णेर-
इय तिरिक्खविहगणाणीहिहो असरोज्जगुण देवेहिहो अणिण्दे देवेहिं सादिरेयत्त ण घडदि ति
णासरुणिज्ज, विहगणाणिमदस्साविच्चिरुणेण विहगणाणिदेवा ॥ गहणादो । वेउत्तियमिस्स-
रामिस्स सातरत्तेण, देवपज्जत्ताण सच्चकालमसभया च । एदस्स अणहारकालो बुद्धे ।
त जहा— देवमिच्छाइड्डिअवहारकालमिह एगपदरगुलं घेत्तूण असरोज्जसड करिय तत्थेग
संडमवणिय बहुराडे तमिह चेत्त पक्खित्ते विहगणाणिमिच्छाइड्डिअवहारकालो होदि ।
एदेण जगपदेरे भागे हिदे विहगणाणिमिच्छाइड्डिरामी आगच्छदि ।

सासणसम्माइट्ठी ओघ ॥ १४३ ॥

ओघसासणसम्माइट्ठिरासीदो जदि नि एमो सासणसम्माइट्ठिरासी अप्पणो अस-

असख्यातवें भागप्रमाण होते हुए भी असख्यात धेणीप्रमाण होते हैं । उन असख्यात
धेणियोंकी विक्खभसूची असख्यात घनागुलप्रमाण है । ये असख्यात घनागुल कितने
होते हैं ? पल्लोपमके असख्यातवें भागमात्र होते हैं । अतएव देव मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे
विभगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवराशि विशेष अधिक होती है । नारक और तिर्यंच विभगज्ञानियोंसे
विभगज्ञानसे रहित देव अपर्याप्त राशि असख्यातगुणी है । अतएव उसे देवराशिमेंसे घटा
देने पर देवोंसे साधिक विभगज्ञानियोंका प्रमाण नहीं बन सकता है, इसप्रकार भी आशका
नहीं करनी चाहिये, क्योंकि, प्रकृतमें विभगज्ञानी शब्दकी आवृत्ति कर लेनेसे विभगज्ञानी
देवोंका प्रदहन किया है । दूसरे धैमियिकमिश्र राशि सान्तर होनेके कारण देव अपर्याप्त जीव
सर्वदा पाये भी नहीं जाते हैं, इसलिये विभगज्ञानियोंका प्रमाण देवोंसे साधिक है इस कथनमें
भी कोई बाधा नहीं आती है ।

अथ विभगज्ञानी मिथ्यादृष्टि राशिका अवहारकाल कहते हैं । यह इसप्रकार है— देव
मिथ्यादृष्टि राशिमेंसे एक प्रदरंगुलको प्रदहन करके और उसके असख्यात खंड करके उनमेंसे
एक खंडको निकाल कर बहुभाग उसी देवमिथ्यादृष्टि अवहारकालमें मिला देने पर विभगज्ञानी
मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस अवहारकालसे जगत्तरके भाजित करने पर
विभगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

विभगज्ञानी सासादनसम्पग्दृष्टि जीव ओघप्ररूपणाके समान पल्लोपमके अस-
ख्यातवें भागप्रमाण हैं ॥ १४३ ॥

ओघ सासादनसम्पग्दृष्टि राशिसे यद्यपि यह विभगज्ञानी सासादनसम्पग्दृष्टि राशि

खेज्जदिभाएण तिरिक्ख मणुमदुणाणिपमाणेण हीणे, तो पि पलिदोममस्स असखेज्जदि-
भागमेत्तणेण दोण्हं पि रासीण पच्चासत्ती अत्थि ति ओघमिदि वुच्चदे ।

आभिणिवोहियणाणि-सुदणाणि-ओहिणाणीसु असंजदसम्माइड्डि-
प्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागच्छदुमत्था त्ति ओघं ॥ १४४ ॥

आभिणिवोहिय-सुदणाणीणं पमाणस्स ओघत्त जुज्जे, तेहि निरहिद-असंजदसम्मा-
इड्डिआदीणमणुत्तलभादो । ण पुण ओहिणाणीणं ओघत्त जुज्जे, ओहिणाणनिरहिदतिरिक्ख-
मणुत्तसम्माइड्डिणणुत्तलभा ? ण एस दोसो, ब्रह्मसो दत्तुत्तरादो ।

एदेसिमवहारकालुप्पत्ती वुच्चदे । त जहा— आभिणिवोहियणाणि-सुदणाणिअसंजद-
सम्माइड्डिअवहारकालो ओघअसंजदसम्माइड्डिअवहारकालो चेत्त भवदि । तम्हि आपलियाए
असखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्ध तम्हि चेत्त पक्खित्ते ओहिणाणिअसंजदसम्माइड्डिअवहार-

अपने असख्यातवें भागरूप मत्यज्ञान और श्रुतज्ञान इन दो अज्ञानोंसे युक्त तिर्यक् और मनुष्योंके
प्रमाणसे हीन है, तो भी पल्लोपमके असंख्यातवें भागत्वकी अपेक्षा ओघसासादनसम्यग्दृष्टि
राशि और विभगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि राशि इन दोनोंकी प्रत्यासत्ति पाई जाती है,
इसलिये सूत्रमें 'ओघ' पेसा कहा है ।

आभिनिवोधिक्खानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि
गुणस्थानसे लेकर क्षीणकपाय बीतराग छद्मस्थ गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव
ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १४४ ॥

शंका— आभिनिवोधिक ओर श्रुतज्ञानी जीवोंके प्रमाणके ओघपना बन जाता है,
क्योंकि, इन दोनों ज्ञानोंके बिना असंयतसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थान नहीं पाये जाते हैं । परंतु
अवधिज्ञानियोंके प्रमाणके ओघपना नहीं बन सकता है, क्योंकि, अवधिज्ञानसे रहित तिर्यक्
और मनुष्य सम्यग्दृष्टि पाये जाते हैं ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, इस प्रकारके प्रश्नका अनेकधार उत्तर
दे आये हैं ।

अब इनके अवधारकालोंकी उत्पत्तिको कहते हैं । यह इसप्रकार है— ओघ असंयत-
सम्यग्दृष्टि जीवोंका अवधारकाल ही आभिनिवोधिक्खानी और श्रुतज्ञानी जीवोंका अवधारकाल
होता है । इसे आवलीके असख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी
अवधारकालमें मिला देने पर अवधिज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवधारकाल होता है ।

मतिश्रुतिज्ञानिनोऽसंयतसम्यग्दृष्ट्याद्य क्षीणकपायात्ता सामायोक्तसख्या । अवधिज्ञानिनोऽसंयतसम्यग्दृष्टि-
संपदास्यतात्ता सामायोक्तसख्या । स ति १, ८ च्छद्मदिमदितुदयोहा पत्तासखेज्जया ॥ गो जी ४६१
ओहिरिदा तिरिक्खा मदिणाणिअसंजदरागा मणुया । सखेज्जा इत्तदुत्ता मदिणाणी ओधिपिमाण ॥ गो जी ४६२

असुरेज्जसेदिमेत्ता भवति । तासिं सेदीण त्रिकखभसुई असुरेज्जघर्णगुलमेत्ता । केचित्प-
मेत्ताणि घणगुलाणि ? पलिदोयमस्स असुरेज्जदिभागमेत्ताणि । तदो देवमिच्छाइड्डिरासीदो
निहगणाणमिच्छाइड्डिरासी विसेसाहिओ भवदि । निहगणाणरिहदिदेनापज्जत्तरासिं णेर-
इय तिरिक्खत्तिहगणाणीहिंतो असुरेज्जगुण देनेहिंतो अण्णिदे देवेहिं सादिरेयत्त ण घडदि त्ति
णासकण्णिज्ज, निहगणाणिमइस्सत्तिरुत्तरणेण निहगणाणिदेना ग गहणादो । वेउव्वियमिस्स-
रासिस्म सात्तरणेण, देवपज्जत्ताण सव्वकालममभवा च । एदस्स अनहारकालो पुच्चदे ।
त जहा— देवमिच्छाइड्डिअनहारकालमिह एगपदरगुल घेत्तूण असुरेज्जसड करिय तत्थेग
सडमवणिय घुराडे तमिह चेव पत्तिरुत्ते विहगणाणिमिच्छाइड्डिअवहारकालो होदि ।
एदेण जगपदरे भागे हिदे निहगणाणिमिच्छाइड्डिरासी आगच्छदि ।

सासणसम्माइट्ठी ओघ' ॥ १४३ ॥

ओघसासणसम्माइट्ठिरासीदो जदि ति एसो सासणसम्माइट्ठिरासी अप्पणो अस-

असख्यातयें भागप्रमाण होते हुए भी असख्यात श्रेणीप्रमाण होते हैं । उन असख्यात
श्रेणियोंकी विषयभसुधी असख्यात घनागुलप्रमाण है । ये असख्यात घनागुल कितने
होते हैं ? पद्योपमके असख्यातयें भागमात्र होते हैं । अतएव देव मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे
विभगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवराशि विशेष अधिक होती है । नारक और तिर्यक विभगज्ञानियोंसे
विभगज्ञानसे रहित देव अपर्याप्त राशि असख्यातगुणी है । अतएव उसे देवराशिमेंसे घटा
देने पर देवोंसे साधिक विभगज्ञानियोंका प्रमाण नहीं बन सकता है, इसप्रकार भी आशका
नहीं करनी चाहिये, क्योंकि, प्रकृतमें विभगज्ञानी शब्दकी आवृत्ति कर लेनेसे विभगज्ञानी
देवोंका प्रहण किया है । दूसरे व्यक्तिविशेष राशि सान्तर होनेके कारण देव अपर्याप्त जीव
सर्पदा पाये भी नहीं जाते हैं, इसलिये विभगज्ञानियोंका प्रमाण देवोंसे साधिक है इस कथनमें
भी कोई बाधा नहीं आती है ।

अथ विभगज्ञानी मिथ्यादृष्टि राशिका अवहारकाल कहते हैं । यह इसप्रकार है— देव
मिथ्यादृष्टि राशिमेंसे एक प्रतरागुलको प्रहण करके और उसके असख्यात खंड करके उनमेंसे
एक खंडको निकाल कर बहुभाग उसी देवमिथ्यादृष्टि अवहारकालमें मिला देने पर विभगज्ञानी
मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर
विभगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

विभगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीव ओघप्ररूपणाके समान पद्योपमके अस-
ख्यातयें भागप्रमाण हैं ॥ १४३ ॥

ओघ सासादनसम्यग्दृष्टि राशिसे यद्यपि यह विभगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि राशि

कालो होदि । तम्हि आपलियाए असखेज्जदिभागेण गुणिदे (मिसमदि सुदअण्णाणि-) सम्मामिच्छाइडिअवहारकालो होदि । तम्हि आपलियाए असखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्ध चेव पक्खिउत्ते मिसमतिणाणिसम्मामिच्छाइडिअवहारकालो होदि । तम्हि सखेज्जरूपेहि गुणिदे मदि सुदअण्णाणिसासणमम्माइडिअवहारकालो होदि । तम्हि आपलियाए असखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्ध तम्हि चेव पक्खिउत्ते त्रिहगणाणिसासणमम्माइडिअवहारकालो होदि । तम्हि आपलियाए असखेज्जदिभाएण गुणिदे आभिणिचोहियणाणि मुदणाणिसज्जदासज्जद-अवहारकालो होदि । तम्हि आपलियाए असखेज्जदिभाएण गुणिदे ओहिणाणिमज्जदासज्जद-अवहारकालो होदि । अहया ओघजमज्जदमम्माइडिअवहारकालम्हि आपलियाए असखेज्जदि-भाएण भागे हिदे लद्ध तम्हि चेव पक्खिउत्ते तिणाणिसज्जदसम्मामिच्छाइडिअवहारकालो होदि । तम्हि आपलियाए असखेज्जदिभाएण गुणिदे मिसमतिणाणिसम्मामिच्छाइडिअवहारकालो होदि । तम्हि सखेज्जरूपेहि गुणिदे तिणाणिसासणसम्मामिच्छाइडिअवहारकालो होदि । तम्हि आपलि-याए असखेज्जदिभाएण गुणिदे दुणाणिसज्जदसम्मामिच्छाइडिअवहारकालो होदि । तम्हि आपलियाए असखेज्जदिभाएण गुणिदे मिसमदुणाणिसम्मामिच्छाइडिअवहारकालो होदि । तम्हि सखेज्ज-रूपेहि गुणिदे दुणाणिसासणसम्मामिच्छाइडिअवहारकालो होदि । तम्हि आपलियाए असखेज्जदि-

इस अवधिज्ञानी असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आधलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर मिथ दो ज्ञानी सम्यग्मिध्यादृष्टियाँका अवहारकाल होता है । इसे आधलीके असख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी अवहारकालमें मिला देने पर मिथ तीन ज्ञानवाले सम्यग्मिध्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे सख्यातसे गुणित करने पर मत्पज्ञानी और श्रुताज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आधलीके असख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी अवहारकालमें मिला देने पर विभगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आधलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर आमिनिरोधिक्खज्ञानी और श्रुतज्ञानी सयतासयतोंका अवहारकाल होता है । इसे आधलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर अवधिज्ञानी सयतासयतोंका अवहारकाल होता है । अथवा ओघ असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आधलीके असख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी ओघ असयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालमें मिला देने पर तीन ज्ञानवाले असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आधलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर मिथ तीन ज्ञानवाले सम्यग्मिध्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे सख्यातसे गुणित करने पर तीन ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आधलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर दो ज्ञानवाले असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आधलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर मिथ दो ज्ञानवाले सम्यग्मिध्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे सख्यातसे गुणित

भाएण गुणिदे दुणाणिसजदासंजदअरहारकालो होदि । तम्हि आत्रलियाए असखेज्जदि-
भाएण गुणिदे तिणाणिसंजदासंजदअरहारकालो होदि । एदेहि अरहारकालेहि पलिदोवमे
भागे हिदे मग-मगगसाओ हंति । पमत्तादीण पमाण ओघमेन भवदि, त्रिसेसामानादो ।
ओहिणाणिपमत्तादीण पि ओघत्त पत्ते तप्पडिसेहद्दमुत्तरसुत्त मणदि—

णवरि विसेसो, ओहिणाणिसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीणकसाय
वीयरायछदुमत्था ति द्व्यपमाणेण केवडिया, संखेज्जा' ॥ १४५ ॥

ओहिणाणिणो पमत्तसजदा अपमत्तसजदा च राग सगरासिस्स मखेज्जदिभागमेत्ता
भवति । किंतु एत्थिवा इदि परिप्फुड ण णवरति, सपहियकाले गुरुवएसाभावादो । णवरि
ओहिणाणिणो उजसामगा चोइस १४, सवगा अट्ठामीस २८ ।

मणपज्जवणाणीसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीणकसायवीदराग-
छदुमत्था ति द्व्यपमाणेण केवडिया, संखेज्जा' ॥ १४६ ॥

पमत्तापमत्तगुणट्ठानेसु मणपज्जवणाणिणो तत्थद्वियदुणाणीण सखेज्जदिभागमेत्ता

धरने पर दो क्षानवाले सयतासयतोंका अरहारकाल होता है । इसे आवलीके अर्सख्यातवें
भागसे गुणित करने पर तीन क्षानवाले सयतासयतोंका अरहारकाल होता है । इन अरहार
कालोंसे पृथक् पृथक् पल्योपमके भाजित करने पर अपनी अपनी राशिवा आती है । प्रमत्तसयत
आदिका प्रमाण ओघरूप ही होता है क्योंकि वहा विशेष का अभाव है । अवधिज्ञानी प्रमत्तसयत
आदिके प्रमाणसे ओघत्तकी प्राप्ति होने पर उसका प्रतिपेध करनेकालिये आगेका सूत्र कहते हैं—

इतना विशेष है कि अवधिज्ञानियोंमें प्रमत्तसयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणरूपाय
वीतराग छद्मस्थ गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने
हैं ? संख्यात हैं ॥ १४५ ॥

अवधिज्ञानी प्रमत्तसयत और अप्रमत्तसयत जीव अपनी अपनी राशिके संख्यातवें
भागमात्र होते हैं, किंतु वे इतने ही होते हैं यह स्पष्ट नहीं जाना जाता है, क्योंकि, वर्तमान
कालमें इसप्रकारका गुरुका उपदेश नहीं पाया जाता है । इतना विशेष है कि अवधिज्ञानी
उपशामक चौदह और क्षपक अट्ठाईस होते हैं ।

मनःपर्यायज्ञानियोंमें प्रमत्तसयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणरूपाय वीतराग छद्मस्थ
गुणस्थानतक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १४६ ॥

प्रमत्तसयत और अप्रमत्तसयत गुणस्थानोंमें मन पर्यायज्ञानी जीव वहा स्थित दो

१ प्रमत्तसयतादय क्षाणकसायाता सरयेया । स सि १, ८

२ मन पर्यायज्ञानिन प्रमत्तसयतादय क्षीणकसायाता सरयेया । स सि १, ८ मणपज्जा
सखेज्जा ॥ गो जी ४६१

भ्रति, लट्टिसंपण्णरामीण ऱ्हणममभ्रादो । ते च एत्तिया इदि सम्म ण णच्चति, सप
हियकाले उरएमाभात्तदो । णरति मणएज्जराणाणिणो उरमामगा दस १०, सुग्गा २० ।

केवलणाणीसु सजोगिकेवली अजोगिकेवली ओघं ॥ १४७॥

सुगममिदं सुत्तं ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । मवज्जीवरामिमणतएडे कए ऱ्हुरसडा मदि सुदअण्णाणि
मिच्छाहट्टिणो भवति । सेसमसरोज्जसखडे कए ऱ्हुरसडा केवलणाणिणो भवति । सेसम
सरोज्जसखडे कए ऱ्हुरसडा विभगणाणिमिच्छाहट्टिणो हंति । सेसमसखेज्जसखडे कए
ऱ्हुरसडा आभिणिणोहिय सुदणाणिअसजदमम्माइहट्टिणो भवति । ते चेय पडिरासि काऊण
आवलियाए जसरोज्जदिभाएण भागे हिदे लद्ध तम्हि चेय अणिदे ओहिणाणिअसजद
सम्माइहट्टिणो हंति । सेस सखेज्जसखडे कए ऱ्हुरसडा मिस्सदुणाणिसम्माभिच्छाहट्टिणो
हंति । ते चेय पडिरासि काऊण आवलियाए असरोज्जदिभाएण भागे हिदे लद्ध तम्हि

शावाले जीवोंन सख्यातयें भागमात्र होते हैं, क्योंकि, लघिसप्तम राशिया बहुत नहीं हो
सकती है। फिर भी ये इतने ही होते हैं यह ठीक नहीं जाना जाता है, क्योंकि वतमानकालमें
इसप्रकारका उपदेश नहीं पाया जाता है। इतना विशेष है कि मन पर्ययज्ञानी उपशामक
दश और क्षपक चीस होते हैं।

केवलज्ञानियोंमें मयोगिकेवली और अयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान
है ॥ १४७ ॥

यह सूत्र सुगम है।

अर भागाभागरी वतलते हैं— सर्व जीवराशिके अनन्त खड करने पर उनमेंसे
बहुभाग मत्तज्ञानी और श्रुतज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असख्यात खड करने
पर उनमेंसे बहुभाग वेदज्ञानी जीव हैं। शेष एक भागके असख्यात खड करने पर बहुभाग
विभगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असख्यात खड करने पर बहुभाग
आभिनिषोधिकज्ञानी और श्रुतज्ञानी असयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। इहाँ आभिनिषोधिकज्ञानी
और श्रुतज्ञानी असयतसम्यग्दृष्टियोंकी प्रतिराशि करने और उसे आवलीके असख्यातयें
भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी प्रतिराशिमेंसे घटा देने पर अवधिज्ञानी
असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है। शेष एक भागके सख्यात खड करने पर बहुभाग मिथ्र
दो ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं। उहाँ मिथ्र दो ज्ञानवाले जीवोंके प्रमाणकी
प्रतिराशि करके और उसे आवलीके असख्यातयें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे

१ प्रतिशु वृद्धि इति पाठ ।

२ कवलज्ञानिन सयागा अयागाश्च सामायापसरया । स सि १, ८ केवलिणा सिद्धादो हंति
ओदीरत्ता ॥ गी जी ४६१

चेव अण्णिदे मिससत्तिणाणिमम्मामिच्छाड्ढिणीं होंति । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखंडा मदि सुदअण्णाणिसासणमम्मामिच्छाड्ढिणीं होंति । ते चेव पडिरासिं काळण जाणलियाए असखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्ध तग्हि चेव अण्णिदे त्रिभगणाणिसासणसम्मामिच्छाड्ढिणीं होंति । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखंडा आभिणिरोहिय सुदणाणिसज्जदासज्जदा होंति । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओहिणाणिसज्जदासज्जदा होंति । सेस जाणिय वचच्य ।

अहरा सच्चजीवरासिमणतखंडे कए बहुखंडा मदि सुदअण्णाणिमिच्छाड्ढिणीं होंति । सेसमणतखंडे कए बहुखंडा केरलणाणिणो भवति । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखंडा विहंगणाणिमिच्छाड्ढिणीं होंति । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखंडा तिणाणिअमंजदसम्मामिच्छाड्ढिणीं हति । सेस सखेज्जखंडे कए बहुखंडा तिणाणिसम्मामिच्छाड्ढिणीं हति । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखंडा तिणाणिसासणसम्मामिच्छाड्ढिणीं हति । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणिअमंजदसम्मामिच्छाड्ढिणीं हति । सेस सखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणिसम्मामिच्छाड्ढिणीं हति । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणिसासणसम्मामिच्छाड्ढिणीं हति । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणिसज्जदासज्जदा हति । सेसमसखेज्जखंडे

उसे उसी प्रतिराशिमेंसे घटा देने पर मिश्र तीन ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग मत्यज्ञानी और धृताज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं । उहाँ मत्यज्ञानी और धृताज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिकी प्रतिराशि करके और उसे उनी आवलीके असख्यातमें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी प्रतिराशिमेंसे घटा देने पर विभगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग आभिनिरोधिकज्ञानी और धृतज्ञानी सयतासयत होते हैं । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग अवधिज्ञानी सयतासयत जीव होते हैं । शेष अल्पपरदृष्टका जानकर कथन करना चाहिये । अथवा, सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग मत्यज्ञानी और धृताज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग केरलज्ञानी जीव हैं । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग त्रिभगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग तीन ज्ञानवाले असयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले सयतासयत जीव हैं । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले सयतासयत जीव हैं । शेष एक भागके असख्यात खंड

भवति, लक्ष्मिपण्णरागौण बहुणममभरादो । ते च एत्थिया इदि सम्म ण णव्वति, सप
हियकाले उपएमाभरादो । णरि मणवज्जराणिणो उपमामगा दस १०, सग्गा २०।

केवलणाणीसु मजोगिकेवली अजोगिकेवली ओघं ॥ १४७।

सुगममिद सुत्त ।

भागभारं वत्तस्मातो । मव्वजीपरामिमणत्तएडे कए णहुसडा मदि सुदअण्णाणि
मिच्छाइट्टिणो भवति । मेसमसखेज्जएडे कए णहुसडा केवलणाणिणो भवति । सेसम-
सखेज्जएडे कए णहुसडा विभगणाणिमिच्छाइट्टिणो हांति । सेसमसखेज्जएडे कए
णहुसडा आभिणिणोहिय सुदणाणिअसंजदसम्माइट्टिणो भवति । ते चैत्र पडिरासिं काऊण
आरुलियाए असखेज्जदिभाएण भागे हिडे लद्ध तम्हि चैत्र अण्णिदे ओहिणाणिअसन्द
सम्माइट्टिणो हांति । सेस सखेज्जएडे कए णहुसडा मिस्सदुणाणिसम्मामिच्छाइट्टिणो
हाति । ते चैत्र पडिरासिं काऊण आरुलियाए अमसखेज्जदिभाएण भागे हिडे लद्ध तम्हि

ज्ञानवाले जीवोंके सरयातवें भागप्राप्त होते हैं, क्योंकि, लक्षिसपन्न राशिया बहुत नहीं हो
सकती हैं । फिर भी वे इनने ही होते हैं यह ठीक नहीं जाना जाता है, क्योंकि वतमानकालमें
इसप्रकारका उपदेश नहीं पाया जाता है । इतना विशेष है कि मन पर्ययज्ञानी उपशामक
दश और क्षपक थीस होते हैं ।

केवलज्ञानियोंमें सयोगिकेवली और अयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान
हैं ॥ १४७ ॥

यह छत्र सुगम है ।

अर भागभागमें वत्तलते हैं— सर्व जीवराशिके अनन्त खड करने पर उनमेंसे
बहुभाग सखेज्जानी और सुताज्ञानी मि यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असरयात खड करने
पर उनमेंसे बहुभाग केवलज्ञानी जीव ह । शेष एक भागके असरयात खड करने पर बहुभाग
विभगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असरयात खड करने पर बहुभाग
आभिनिनेोधिसज्ञानी और श्रुतज्ञानी असयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । इन्हीं आभिनिनेोधिसज्ञानी
और श्रुतज्ञानी असयतसम्यग्दृष्टियोंकी प्रतिराशि करके और उसे आवलीके असखयात
भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी प्रतिराशिमेंसे घटा देने पर अवधिज्ञान
असयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है । शेष एक भागके सरयात खड करने पर बहुभाग मिथ
दो ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । उन्हीं मिथ्र दो ज्ञानवाले जीवोंके प्रमाणकी
प्रतिराशि करके और उसे आवलीके असखयातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे

१ प्रतिपु ' तद्धि इति पाठ ।

२ वत्तलानिन् सयागा अयोगादव सामायाकमरया । स मि १, ८ केवलियो सिद्धादो हीं
अदीरत्ता ॥ गो जी ४६२

चेन अपणिदे मिससतिणाणिसम्मामिच्छाड्ढी हंति । सेसमसरेज्जखंडे कए बहुखंडा मदि सुदअण्णाणिमामणसम्माइड्डिणो हंति । ते चेन पडिरासिं काळण आपलियाए अस-
खेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्ध तमिह चेन अपणिदे विभगणाणिमासणसम्माइड्डिणो हंति ।
सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखंडा आभिणिरोहिय सुदणाणिमज्जदामंजदा हंति । सेसम-
सरेज्जखंडे कए बहुखंडा जोहिणाणिमज्जदासज्जदा हंति । सेस जाणिय वचन्य ।

अहया सव्वजीमरामिमणत्तखंडे कए बहुखंडा मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाड्ढिणो हंति ।
सेसमणत्तखंडे कए बहुखंडा केवलणाणिणो भवति । मेममसरेज्जखंडे कए बहुखंडा
विहसणाणिमिच्छाड्ढिणो हंति । सेसमसरेज्जखंडे कए बहुखंडा तिणाणिअमज्जदसम्मा-
इड्डिणो हंति । सेम सखेज्जखंडे कए बहुखंडा तिणाणिमम्मामिच्छाड्ढिणो हंति । सेसम-
सखेज्जखंडे कए बहुखंडा तिणाणिसासणसम्माइड्डिणो हंति । मेममसरेज्जखंडे कए
बहुखंडा दुणाणिअसज्जदसम्माइड्डिणो हंति । सेसं सखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणि-
सम्मामिच्छाड्ढिणो हंति । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणिमामणसम्माइड्डिणो
हंति । सेमसखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणिमज्जदामंजदा हंति । मेममसखेज्जखंडे

उसे उसी प्रतिराशिमेंसे घटा देने पर मिश्र तीन ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादष्टि जीव होते हैं।
शेष एक भागके असख्यात खट करने पर बहुभाग मत्यक्षानी और श्रुताक्षानी सासादनसम्य-
ग्दष्टि जीव होते हैं । उन्हीं मत्यक्षानी और श्रुताक्षानी सासादनसम्यग्दष्टि जीवरादिकाकी
प्रतिराशि फरके और उसे उसी आरलीके असख्यातघें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध
आये उसे उसी प्रतिराशिमेंसे घटा देने पर विभगक्षानी सासादनसम्यग्दष्टि जीव होते हैं।
शेष एक भागके असख्यात खट करने पर बहुभाग आभिनिरोधिकक्षानी और श्रुतक्षानी
सयतासयत होते हैं। शेष एक भागके असख्यात खट करने पर बहुभाग अवधिक्षानी
सयतासयत जीव होते हैं। शेष अल्पबहुत्वका जानकर कथन करना चाहिये। अथवा, सर्व
जीवराशिके अनन्त खट करने पर बहुभाग मत्यक्षानी और श्रुताक्षानी मिथ्यादष्टि जीव हैं। शेष
एक भागके अनन्त खट करने पर बहुभाग केवलक्षानी जीव हैं। शेष एक भागके असख्यात
खट करने पर बहुभाग विभगक्षानी मिथ्यादष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असख्यात खट
करने पर बहुभाग तीन ज्ञानवाले असयतसम्यग्दष्टि जीव हैं। शेष एक भागके सख्यात खट
करने पर बहुभाग तीन ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असख्यात खट
करने पर बहुभाग तीन ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असख्यात खट
करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले असयतसम्यग्दष्टि जीव हैं। शेष एक भागके सख्यात खट
करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असख्यात खट
करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असख्यात खट
करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले सयतासयत जीव हैं। शेष एक भागके असख्यात खट

कए बहुखडा तिणाणिसजदासजदा हंति । सेस जाणिय वत्तव ।

अप्पात्रहुअ तिप्पिह सत्थाणादिभेएण । मदि सुदअण्णाणीसु मत्थाण णत्थि । कारण पुव्वभणिदं । सामणसम्माइड्ढिमत्थाणप्पात्रहुमे ओघभगो । विभगणाणिमिच्छाइट्ठीण सत्थाणस्स देवमिच्छाइट्ठीण सत्थाणभगो । तिणाणीसु मदि सुदणाणीसु च असनदसम्मा इट्ठि सजदासजदेसु मत्थाणमोघ । सत्थाणप्पात्रहुम गद ।

परत्थाणे पयद । सच्चत्थेपो मदि सुदअण्णाणिसामणसम्माइड्ढिअवहारकालो । दव्वमसखेज्जगुण । पलिटोपमसखेज्जगुण । मिच्छाइड्ढिदव्वमणतगुण । सच्चत्थेपो विभगणाणिसामणसम्माइड्ढिअवहारकालो । दव्वमसखेज्जगुण । पलिटोपमसखेज्जगुण । विभगणाणिमिच्छाइड्ढिअवहारकालो जमखेज्जगुणो । विक्खमभूर्द्धे असखेज्जगुणा । (सेठी असखेज्जगुणा ।) दव्वमसखेज्जगुण । पदरमसखेज्जगुण । लोपो असखेज्जगुणो । सच्चत्थेपो मदि सुदणाणिणो चत्तारि उउसामगा । सग्गा सखेज्जगुणा । अप्पमत्तसजदा

करणे पर बहुभाग तीन ज्ञानवाले सयतासयत जीव ह । शेषका जानकर कथन करना चाहिये ।

स्वस्थान आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवोंमें स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है । कारण पहले कहा जा चुका है । मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । विभगज्ञानी मिथ्यादृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व देघ मिथ्यादृष्टियोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । तीन ज्ञानवाले असयतसम्यग्दृष्टि आर सयतासयतोंम तथा मनि और श्रुत इन दो ज्ञानवाले असयतसम्यग्दृष्टि आर सयतासयतोंमें स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघरूपस्थान अल्पबहुत्वके समान है । इसप्रकार स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अथ परस्थानम अल्पबहुत्व प्रवृत्त है— मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोत्र है । उर्द्धाका द्रव्य अवहारकालसे असख्यातगुणा है । पल्योपम द्रव्यप्रमाणसे असख्यातगुणा ह । मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य पल्योपमसे अनन्तगुणा है । विभगज्ञानी सामादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोत्र है । उर्द्धाका द्रव्य अवहारकालसे असख्यातगुणा है । पल्योपम द्रव्यप्रमाणसे असख्यातगुणा है । विभगज्ञानी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल पल्योपमसे असख्यातगुणा है । उर्द्धाकी विक्कमसूची अवहारकालसे असख्यातगुणी है । (जगध्रेणी विक्कमसूचीसे असख्यातगुणी है ।) जगध्रेणीसे उर्द्धाका द्रव्य असख्यातगुणा है । द्रव्यप्रमाणसे जगधर असख्यातगुणा है । जगधरसे लोक असख्यातगुणा है । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी चार गुणस्थानोंके उपशामक सबसे स्तोत्र है । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी क्षपक जीव उपशामकासे सख्यातगुणे है । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी अप्रमत्तसयत जीव क्षपकोंसे सख्यातगुणे ह । मनिज्ञानी और श्रुतज्ञानी प्रमत्तसयत जीव

१ प्रतिशु ' मदि सुदणाण ' इति पाठः ।

संसेज्जगुणा । पमत्तसज्जदा संसेज्जगुणा । असंजदसम्माइट्ठिअणहारकालो अससेज्जगुणो । संजदासज्जदअणहारकालो अससेज्जगुणो । तस्सेव द्वयममसेज्जगुणं । अमंजदमम्माइट्ठि-
द्वयमसंसेज्जगुणं । पल्लिदोअममससेज्जगुण । एअ चेअ ओहिणाणिपरत्थाण पि वत्तअ ।
मणपज्जणणाणिणो सअत्थोअ उअसामगा । सअगा ससेज्जगुणा । अप्पमत्तसज्जदा
ससेज्जगुणा । पमत्तसंजदा ससेज्जगुणा । केअलणाणीसु मअत्थोअ सजोगिकेअली ।
अजोगिकेअली अणतगुणा । परत्थाणं गद ।

सअपरत्थाणे पयद । सअत्थोअ मणपज्जणणाणिउअसामगा दस १० । ओहि-
णाणिउअसामगा तिसेअहिया १४ । मणपज्जणणाणिसअगा तिसेअहिया २० । ओहिणाणि-
सअगा तिसेअहिया २८ । मणपज्जणणाणिणो अप्पमत्तसज्जदा ससेज्जगुणा । तत्थेअ
ओहिणाणिणो तिसेअहिया । मणपज्जणणाणिणो पमत्ता तिसेअहिया । तत्थेअ ओहिणाणिणो
तिसेअहिया । कुदो एदमअगम्मदे ? उअमम-खअगमेट्ठिअहि एदेअि दोण्ह णाणाण एदेणेअ

अप्रमत्तसयतोंसे सख्यातगुणे हैं । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल
प्रमत्तसयतोंसे असख्यातगुणा है । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी सयतासयतोंका अवहारकाल असयत
सम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असख्यातगुणा है । उर्द्धाका द्रव्य अवहारकालसे असख्यातगुणा
है । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी असयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य सयतासयतोंके द्रव्यसे असख्यात
गुणा है । पल्योपम असयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे असख्यातगुणा है । इसीप्रकार अवधि
ज्ञानियोंके परस्थान अल्पबहुत्वका भी कथन करना चाहिये । मन पर्ययज्ञानी उपशामक सबसे
स्तोक हैं । मन पर्ययज्ञानी क्षपक जीव उपशामकोंसे सख्यातगुणे हैं । मन पर्ययज्ञानी अप्रमत्त
सयत जीव क्षपकोंसे सख्यातगुणे हैं । मन पर्ययज्ञानी प्रमत्तसयत जीव अप्रमत्तसयतोंसे
सख्यातगुणे हैं । केवलज्ञानियोंमें सयोगिकेवली जीव सबसे स्तोक हैं । अयोगिकेवली जीव
सयोगिकेवलियोंसे अनन्तगुणे हैं । इसप्रकार परस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

सर्वपरस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— मन पर्ययज्ञानी उपशामक जीव सबसे स्तोक
होते हुए दश हैं । अवधिज्ञानी उपशामक मन पर्ययज्ञानियोंसे विशेष अधिक होते हुए
चौदह हैं । मन पर्ययज्ञानी क्षपक विशेष अधिक होते हुए बीस हैं । अवधिज्ञानी क्षपक
विशेष अधिक होते हुए अठ्ठाईस हैं । मन पर्ययज्ञानी अप्रमत्तसयत जीव अवधिज्ञानी क्षपकोंसे
सख्यातगुणे हैं । वहीं पर अर्थात् प्रमत्तसयत गुणस्थानमें अवधिज्ञानी जीव मन पर्ययज्ञानि-
योंसे विशेष अधिक हैं । मन पर्ययज्ञानी प्रमत्तसयत जीव अवधिज्ञानी अप्रमत्तसयतोंसे
विशेष अधिक हैं । वहीं पर अर्थात् प्रमत्तसयत गुणस्थानमें ही अवधिज्ञानी जीव मन पर्यय-
ज्ञानियोंसे विशेष अधिक हैं ।

शुका— यह कैसे जा रा जाता है ?

समाधान— उपशाम और क्षपक श्रेणियोंमें इन दोनों ज्ञानोंके प्रमाणका प्ररूपण इसी

कमेण पमाणपरूपादो । कञ्जं कारणाणुरूपं सञ्चहा ण होदि ति ण वत्तच्च, कत्थं ति
 कारणाणुरूपरूज्जन्दसणादो । ण जिगतरेण वभिचारो, तस्म पडिणियदतित्थपडिबद्धत्तादो ।
 दुणाणिजमजदसम्माइड्डिअनहारकालो असखेज्जगुणो । तिणाणिअसजदसम्मइड्डिअनहार-
 कालो विमेषाहिओ । दुणाणिसम्माभिच्छाइड्डिअनहारकालो असखेज्जगुणो । तिणाणिसम्मा
 मिच्छाइड्डिअनहारकालो विमेषाहिओ । दुणाणिसासनमम्माइड्डिअनहारकालो सखेज्जगुणो ।
 तिणाणिसामणसम्माइड्डिअनहारकालो विमेषाहिओ । दुणाणिसजदासजदअनहारकालो अस-
 खेज्जगुणो । निगाणिमजदासजदअनहारकालो अमखेज्जगुणो । तस्मेण दच्चममखेज्जगुण ।
 एवमनहारकालपडिलोभेण णेदच्च जाण पलिटोपम ति । तदे विहगणाणिमिच्छाइड्डिअन-
 हारकालो असखेज्जगुणो । विस्सभसुइ असखेज्जगुणा । सेठी अमखेज्जगुणा । दच्चम
 सखेज्जगुण । पदरममखेज्जगुण । लेणो असखेज्जगुणो । केवलणाणिणो अणंतगुणा ।
 मदि सुदज्जणाणिमिच्छाइड्डिणो जणंतगुणा ।

पथ पाणम रणा समत्ता ।

प्रमसे किया है । कार्य सर्वदा कारणके अनुरूप नडा होता है, यह भी नडा उठना चाहिये,
 क्योंकि, कर्षा पर भी कारणके अनुरूप कार्य देखा जाता है । जिना-तरसे व्यभिचार भी नहीं
 आता है, क्योंकि, जिनांतर प्रतिनियत तीर्थसे प्रतिरज्ज होता है ।

अवधिज्ञानी प्रमत्तसयतीने दो ज्ञानवाले असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असख्यात
 गुणा है । तीन ज्ञानवाले असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल दो ज्ञानवाले असयतसम्यग्दृष्टि-
 योंके अवहारकालसे विशेष अधिक है । दो ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल
 तीन ज्ञानवाले असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असख्यातगुणा है । तीन ज्ञानवाले
 सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल दो ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे विशेष
 अधिक है । दो ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल तीन ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्या-
 दृष्टियोंके अवहारकालसे असख्यातगुणा है । तीन ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल
 दो ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे विशेष अधिक है । दो ज्ञानवाले
 सयतासयतीका अवहारकाल तीन ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे
 असख्यातगुणा है । तीन ज्ञानवाले सयतासयतीका अवहारकाल दो ज्ञानवाले सयतासयतीके
 अवहारकालसे असख्यातगुणा है । उर्द्धो तीन ज्ञानवाले सयतासयतीका द्रव्य उर्द्धोके
 अवहारकालसे असख्यातगुणा है । इसप्रकार अवहारकालके प्रतिलोमक्रमसे पह्योपमतक ले
 जाना चाहिये । पर्योपमसे त्रिभगज्ञानी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है ।
 उर्द्धोकी विष्कम्बसूची अवहारकालसे असख्यातगुणी है । अगश्रेणी विष्कम्बसूचीसे असख्यात
 गुणी है । उर्द्धोका द्रव्य जगश्रेणीसे असख्यातगुणा है । जगप्रतर द्रव्यसे असख्यातगुणा है ।
 लोक जगप्रतरसे असख्यातगुणा है । केवलज्ञानी लोकमे अनंतगुणे हैं । मत्तज्ञानी और
 धृताज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव केवलज्ञानियोंसे अनंतगुणे हैं ।

इसप्रकार धानमागेणा समाप्त दुर् ।

संजमाणुवादेण संजदेसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि
त्ति ओघं ॥ १४८ ॥

एत्थ ओघद्वारादेो ण किंचि ऊणमवियं वा अत्थि, भेदणिघघणपिसेमाभाप्रादेो ।
तदेो एत्थ ओघत्त जुज्जे ।

सामाह्य- छेदोवद्वावणमुद्धिसजदेसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणि-
यद्धिवादरसांपराइयपविद्ध उवसमा खवा त्ति ओघं ॥ १४९ ॥

एत्थ पि ओघत्तं ण निरुज्जे । कुदो ? द्वाट्टियणयात्रणणेण पडिगहिदेगजमा
सामाह्यमुद्धिसजदा वुच्चंति, ते चेय पज्जट्टियणयात्रणणेण ति-चदु-पचादिभेएण
पुनिल्लनम फालियं पडिण्णा छेदोवद्वावणमुद्धिसजदा णाम । तदेो देो पि रासीओ
ओघरापिपमाणो ण भिज्जति ति ओघत्त जुज्जे ।

एत्थ चोदगो भणदि- उभयणयात्रणं किं कमेण भरदि, आहो अकमेणेत्ति ?

सयम मार्गणाके अनुवादसे सयमियों प्रमत्तसयत गुणस्थानसे लेकर अयोगि-
केवली गुणस्थानतरु प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओघप्ररूपणाके समान सरयात है ॥ १४८ ॥

यहा ओघद्रव्यप्रमाणसे कुछ न्यून या अधिक प्रमाण नहीं होता है, क्योंकि, सामान्य
प्ररूपणमें भेदना कारणभूत विशेषकी अपेक्षा नहीं होती है, इसलिये यहा सयममार्गणामें
सामान्यसे ओघपना धन जाता है ।

सामायिक और छेदोपस्थापन शुद्धिसयत जीवोंमें प्रमत्तसयत गुणस्थानसे लेकर
अनिवृत्तिवादरसांपरायिकप्रतिष्ठ उपशमरु और क्षपक गुणस्थानतरु प्रत्येक गुणस्थानमें
जीव ओघप्रमाणके समान सरयात है ॥ १४९ ॥

यहा सामायिक और छेदोपस्थापन शुद्धिसयतोंमें भी प्रमाणकी अपेक्षा ओघत्व
विरोधको प्राप्त नहीं होता है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेकी अपेक्षा जिन्होंने
'मै सर्व सायचसे विरत हूँ' इसप्रकार एक यमको स्वीकार किया है, वे सामायिकशुद्धिसयत
कहे जाते हैं । तथा वे ही जीव पर्यायविक नयके अवलम्बन करनेकी अपेक्षा तीन, चार
और पाच आदि भेदरूपसे पहलेके यमको भेद करके स्वीकार करते हुए छेदोपस्थापन
शुद्धिसयत कहे जाते हैं । इसलिये ये दोनों राशिया जोघटादिके प्रमाणसे भेदको प्राप्त नहीं
होती हैं, इसलिये ओघपना धन जाता है ।

शुक्रा—यहा पर शकाकार कहता है कि दोनों नयोंका अवलम्बन क्या धमसे होता

१ सयमावृत्तानेन सामाह्यच्छेदोपस्थापनशुद्धिसयत प्रमत्ताहयो-निवृत्तिवादात्ता सामायोत्तमव्या
स वि १, ८ पनचादिचउहृ उदी सामायियदुग ॥ गो जी ४८०

२ प्रतिशु '—संजम पाणिय' इति पाठ ।

कमेण पमाणपरूणानो । कञ्ज कारणाणुरूप मव्वहा ण होदि त्ति ण वत्तव्व, कत्थ वि
 कारणाणुरूपरुज्जर्दमणादो । ण जिगतरेण वभिचारो, तस्म पडिणियदतित्थपडिचट्टाचो ।
 दुणाणिअमजदसम्माइट्टिअवहारकालो अससेज्जगुणो । तिणाणिअमजदसम्माइट्टिअवहार
 कालो तिससाहिओ । दुणाणिसम्माभिच्छाडिट्टिअवहारकालो अससेज्जगुणो । तिणाणिसम्मा
 मिच्छाइट्टिअवहारकालो तिससाहिओ । दुणाणिसामणसम्माइट्टिअवहारकालो ससेज्जगुणो ।
 तिणाणिसामणसम्माइट्टिअवहारकालो तिससाहिओ । दुणाणिमजदामजदअवहारकालो अस
 सेज्जगुणो । तिणाणिमजदासजदअवहारकालो अससेज्जगुणो । तस्मेव दच्चममखेज्जगुण ।
 एमवहारकालपटिलोमेण णेदच्च जाण पल्लोवम ति । तदो तिहणाणिमिच्छाइट्टिअ
 वहारकालो अससेज्जगुणो । विक्कमम्वइ अससेज्जगुणा । सेढी अससेज्जगुणा । दच्चम
 ससेज्जगुण । पदरमससेज्जगुण । लेणो अससेज्जगुणो । केवलणाणिणो अणत्तगुणा ।
 मदि सुदअण्णाणिमिच्छाइट्टिणो जणत्तगुणा ।

एव णाणमग्गा समत्ता ।

प्रमत्ते किया है । कार्य सर्वदा कारणके अनुरूप नहीं होता है, यह भी नहीं कहना चाहिये,
 क्योंकि, कहीं पर भी कारणके अनुरूप कार्य देखा जाता है । जिनान्तरसे व्यभिचार भी नहीं
 आता है, क्योंकि, जिान्तर प्रतिनियत तीर्थसे प्रतिबद्ध होना है ।

अवधिज्ञानी प्रमत्तसयतींसे दो ज्ञानवाले असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असख्यात
 गुणा है । तीन ज्ञानवाले असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल दो ज्ञानवाले असयतसम्यग्दृष्टि
 योंके अवहारकालसे विशेष अधिक है । दो ज्ञानवाले सम्यग्मिध्यादृष्टियोंका अवहारकाल
 तीन ज्ञानवाले असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असख्यातगुणा है । तीन ज्ञानवाले
 सम्यग्मिध्यादृष्टियोंका अवहारकाल दो ज्ञानवाले सम्यग्मिध्यादृष्टियोंके अवहारकालसे विशेष
 अधिक है । दो ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल तीन ज्ञानवाले सम्यग्मिध्या
 दृष्टियोंके अवहारकालसे सरयातगुणा है । तीन ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल
 दो ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे विशेष अधिक है । दो ज्ञानवाले
 सयतासयतींका अवहारकाल तीन ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे
 असरयातगुणा है । तीन ज्ञानवाले सयतासयतींका अवहारकाल दो ज्ञानवाले सयतासयतींके
 अवहारकालसे असरयातगुणा है । उन्हीं तीन ज्ञानवाले सयतासयतींका द्रव्य उन्हींके
 अवहारकालसे असख्यातगुणा है । इसप्रकार अवहारकालके प्रतिलोमक्रमसे पक्ष्योपमतक ले
 जाना चाहिये । पक्ष्योपमसे त्रिभगवानी मिध्यादृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है ।
 उन्हींकी विष्कम्भस्त्री अवहारकालसे असख्यातगुणा है । जगधेणी विष्कम्भस्त्रीसे असख्यात
 गुणा है । उन्हींका द्रव्य जगधेणीसे असख्यातगुणा है । जगप्रतर द्रव्यसे असख्यातगुणा है ।
 लोक जगप्रतरसे असरयातगुणा है । केवलज्ञानी लोकसे अनन्तगुणे है । मत्त्यज्ञानी और
 धृताज्ञानी मिध्यादृष्टि जीव केवलज्ञानियोंसे अनन्तगुणे है ।

इसप्रकार ज्ञानमात्रणा समाप्त दुर् ।

तेसिं दुण्णयत्तापत्तीदो । तदो जे सामाइयसुद्धिसजदा ते चेय छेदोपट्टापणसुद्धिसजदा
होंति । जे छेदोपट्टापणसुद्धिसजदा ते चेय सामाइयसुद्धिसजदा होंति ति । तदो दोण्ह
रासीणमोवत्त जुज्जद ।

परिहारसुद्धिसंजदेसु पमत्तापमत्तसंजदा द्ववपमाणेण केवडिया,
संखेज्जा' ॥ १५० ॥

ओघसजदपमाण ण पावेंति ति भणिद होदि । तो वि ते केत्तिया ति भणिदे
उच्चदे, तिरूवूण सत्तसहस्समेत्ता हवति ।

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा उवसमा
खवा द्ववपमाणेण केवडिया, ओघ' ॥ १५१ ॥

एत्थ एग सुहुमसांपराइयग्गहण अहियारपदुप्पायणइ, अनेग गुणट्टाणणिदेसो ।
तेसिं पमाण तिरूवूण-णत्तसदेमत्त । वुत्त च—

पेसा नहीं है, क्योंकि, पेसा मानने पर उनको दुर्णयपनेकी आपत्ति आ जाती है। इसलिये
जो सामायिकशुद्धिसयत जीव हैं, वे ही छेदोपस्थापनाशुद्धिसयत होते हैं। तथा जो
छेदोपस्थापनाशुद्धिसयत जीव हैं, वे ही सामायिकशुद्धिसयत होते हैं। अतएव उक्त दोनों
राशियोंके ओघपना बन जाता है।

परिहारविशुद्धिसयतोंमें प्रमत्तसयत और अप्रमत्तसयत जीव द्रव्यप्रमाणकी
अपेक्षा कितने है ? सख्यात हैं ॥ १५० ॥

परिहारविशुद्धिसयतसे युक्त प्रमत्तसयत और अप्रमत्तसयतोंका प्रमाण ओघसयतोंके
प्रमाणको प्राप्त नहीं होता है, यह इस सूत्रका तात्पर्य है। तो भी उन परिहारविशुद्धिसयतोंका
प्रमाण कितना है, पेसा पूछने पर कहते हैं कि वे परिहारविशुद्धिसयत तीन कम सात
हजार होते हैं।

सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसयतोंमें सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसयत उपशमक और धूपक
जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओघप्ररूपणाके समान है ॥ १५१ ॥

इस सूत्रमें प्रथमवार सूक्ष्मसांपरायिक पदका ग्रहण अधिकारका प्रतिपादन करनेके
लिये किया है। और दूसरीवार सूक्ष्मसांपरायिक पदका ग्रहण गुणस्थानका निर्देशरूप किया
है। उन सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसयतोंका प्रमाण तीन कम नौ सौ है। कहा भी है—

१ परिहारविशुद्धिसयता प्रमत्तसयतस्य सरयेया । स ति १, ८ कमेण सेसत्रिय सपसहसा
णवसय णवत्तरा सीहिं परिहाणा ॥ गो जी ४८०

२ सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसयता सामापोत्तसख्या । स ति १, ८

ण ताव अवमेण', निरुद्धेहि भेदाभेदेहि जुगमं वनहाराणुवनचीदो । अह कमेण, ण सामा-
 ह्यमुद्धिसजदा छेदोपट्ठाणमुद्धिसजदा भवति, एगच्चञ्जणसायाण भेदञ्जणसाइत्तिरिरोहादो ।
 छेदोपट्ठाणामुद्धिसजदा ण सामाह्यमुद्धिसजदा तत्काले भवति, भेदञ्जणसायाणमभेदञ्ज-
 वमाइत्तिरिरोहादो । तदो अक्रमेण दोहि णएहि पादिटोषसजदगामी तत्थेगेण भागेण ओघ-
 पमाण ण पावेदि चि ओघन ण जुज्जे । अप उदाइ सवो' सजदरासी अवमेण एक विय
 णयमणलनिऊण जदि चिद्धदि चि इच्छिउज्जदि, तो एदाओ दुप्रिहसजदरासीओ सातराओ
 हरति । ण च एण, कालाणिओमे एदासिं णिरतरत्तुणलभादो । एत्थ परिहारो पुच्चदे । त
 जहा- दण्डियणण अणलविद सवोसिं सजदाण एकेओ चैय जमो होदि चि सामाह्य-
 मुद्धिमनदाण ओघमजदपमाण होदि । पञ्चण्डियणण अणलविदे सवोसिं सजदाण पादेक
 पच पच जमा हवति चि छेदोपट्ठाणमुद्धिसजदा णि ओघसजदराभिपमाण पावेति तेणे-
 देसिमाघच जुज्जे । ण च एण चैयञ्जणमाया एयतेण अप्पण्णो पडिवक्खणिरवेक्खा,

है या अक्रमसे ? अक्रमसे तो हो नहीं सकता, क्योंकि, परस्पर विरुद्ध भेद और अभेद इनके
 द्वारा एकसाथ व्यवहार नहीं बन सकता है । यदि क्रमसे होना है तो सामायिक शुद्धिसयत
 जीव उदापस्थापनाशुद्धिसयत नहीं हो सकते हैं, क्योंकि, एकरवरूप परिणामोंका भेदरूप
 परिणामोंके साथ विरोध है । उसीप्रकार छेदोपस्थापनाशुद्धिसयत जीव भी उसी समय
 सामायिकशुद्धिसयत नहीं हो सकते हैं, क्योंकि, भेदरूप परिणामोंका अभेदरूप परिणामोंके
 साथ विरोध है । इसलिये अक्रमसे दोनों नयींकी अपेक्षा ओघसयतराशि समयमार्गणामें एक
 भागके द्वारा ओघप्रमाणको प्राप्त नहीं हो सकती है, इसलिये सामायिकशुद्धिसयतों ओर
 छेदोपस्थापनाशुद्धिसयतोंका प्रमाण ओघप्रमाणपनेको प्राप्त नहीं हो सकता है ? वद्वचित्त
 सयतराशि अक्रमसे एन ही नयना अवलम्बन लेकर यदि रहती है, ऐसा आप चाहते हैं, तो ये
 दोनों सयतराशिया सा तर हो जाती हैं । परंतु ऐसा है नहीं, क्योंकि, कालानुयोगमें ये
 राशिया निरन्तर हैं, ऐसा पाया जाता है ?

समाधान—यहां पूर्वाक्त शकाका परिहार करते हैं । यह इसप्रकार है— द्रव्यार्थिक
 नयना अवलम्बन करने पर सर्व समयियोंके एक एक ही यम होता है, इसलिये सामायिक
 शुद्धिसयतोंके ओघसयताका प्रमाण बन जाता है । पयार्थिक नयना अवलम्बन करने पर
 तो सर्व समयियोंके प्रत्येकके पाच पाच समय होते हैं, इसलिये छेदोपस्थापनाशुद्धिसयत
 भी ओघसयतराशिके प्रमाणको प्राप्त हो जाते हैं, अतएव, इन दोनों सयतोंके ओघपना बन
 जाता है । कुछ एक जानिके परिणाम एकान्तसे अपने प्रतिपक्षी परिणामोंसे निरपेक्ष होते हैं,

१ प्रतियु 'अवम' इति पाठ ।

२ प्रतियु 'सत्थो' इति पाठ ।

३ अ-आगत्यो 'एग चद-', क प्रती 'एग चेद-' इति पाठ ।

तेसिं दुण्णयत्तापचीदो । तदो जे सामाइयसुद्धिसजदा ते चैय छेदोवट्ठावणसुद्धिसजदा
होंति । जे छेदोपट्ठावणसुद्धिसजदा ते चैय सामाइयसुद्धिसजदा होंति चि । तदो दोण्ह
रार्माणमोघत्त जुज्जेद ।

परिहारसुद्धिसंजदेसु पमत्तापमत्तसंजदा द्व्यपमाणेण केवडिया,
संखेज्जा' ॥ १५० ॥

ओघसजदपमाण ण पारंति चि भणिद होदि । तो वि ते केत्तिया चि भणिदे
उच्चदे, तिरूवूण सत्तसहस्समेत्ता हवति ।

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा उवसमा
खवा द्व्यपमाणेण केवडिया, ओघं' ॥ १५१ ॥

एत्थ एग सुहुमसांपराइयगहण अहियारपदुप्पायणइ, अवरेग गुणट्ठाणणिदेसो ।
तेसिं पमाण तिरूवूण णसदेमत्त । वुत्त च—

पेसा नहीं है, क्योंकि, ऐसा मानने पर उनको दुर्णयपनेकी आपत्ति आ जाती है । इसलिये
जो सामायिकशुद्धिसयत जीव हैं, वे ही छेदोपस्थापनाशुद्धिसयत होते हैं । तथा जो
छेदोपस्थापनाशुद्धिसयत जीव है, वे ही सामायिकशुद्धिसयत होते हैं । अतएव उक्त दोनों
राशियोंके ओघपना घन जाता है ।

परिहारविशुद्धिमयतामें प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसयत जीव द्रव्यप्रमाणकी
अपेक्षा कितने हैं ? सरूपात्त हैं ॥ १५० ॥

परिहारविशुद्धिसयतसे युक्त प्रमत्तसयत और अप्रमत्तसयतोंका प्रमाण ओघसयतोंके
प्रमाणको प्राप्त नहीं होता है, यह इस सूत्रका तात्पर्य है । तो भी उन परिहारविशुद्धिसयतोंका
प्रमाण कितना है, ऐसा पूछने पर कहते हैं कि वे परिहारविशुद्धिसयत तीन कम सात
हजार होते हैं ।

सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसयतामें सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयत उपशमक और क्षपक
जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १५१ ॥

इस सूत्रमें प्रथमवार सूक्ष्मसांपरायिक पदका ग्रहण अधिकारका प्रतिपादन करनेके
लिये किया है । और दूसरीवार सूक्ष्मसांपरायिक पदका ग्रहण गुणस्थानका निर्दशरूप किया
है । उन सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसयतोंका प्रमाण तीन कम नौ सौ है । कदा भी है—

१ परिहारविशुद्धिसयता प्रमत्तसंयतप्रमत्तसंयत सरयेया । स सि १, < कमेण सेसत्तिय सत्तवहत्ता
णवसय णवत्तवत्ता तीहिं परिहाणा ॥ गो जी ४८०

२ सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसयता सामायोत्तख्या । स सि १, <

सत्तादी छक्कना दोणवमग्गा य होंति परिद्वारा ।

सत्तादी अट्टता णमग्गा सुट्टमरागा दु ॥ ७९ ॥

जहाक्खादविहारसुद्धिसजदेसु चउट्टाणं ओघं ॥ १५२ ॥

चउट्टाणमिदि कधमेगणयणणिदेसो ? ण, चउण्ह पि जादीए एगत्तमवलविय
तथोपदेसादो । सेस सुगम ।

संजदासंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ॥ १५३ ॥

सुगममिदं सुत्त ।

असजदेसु मिच्छाइद्विप्पहुडि जाव असजदसम्माइद्वि ति दव्व-
पमाणेण केवडिया, ओघं ॥ १५४ ॥

चदुप्पहमसजदगुणट्टाणाण ओघचदुगुणट्टाणेहितो अपिसिट्टाणमोघत्त जुज्जे । एत्थ

जिस सख्याके आदिमें सात, अतमें छह और मध्यमें दोवार नौ हैं उतने अर्थात् छह
हजार नौसौ सत्तानवें परिहारविशुद्धिसयत जीव हैं । तथा जिस सख्याके आदिमें सात,
अतमें आठ और मध्यमें नौ है उतने अर्थात् आठसौ सत्तानवें सुट्टमरागवाले जीव है ॥ ७९ ॥

यथाख्यात विहारशुद्धिसयतोंमें ग्यारहवें, चारहवें, तेरहवें और चौदहवें गुण-
स्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण ओघप्ररूपणाके समान है ॥ १५२ ॥

शुका—सूत्रमें 'चउट्टाण' इसप्रकार एकघचन निर्देश कैसे धन सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, जातिकी अपेक्षा एकत्वका अवलम्बन लेकर चारों गुण
स्थानोंका एक घचनरूपसे उपदेश दिया है । शेष ध्यन सुगम है ।

सयतासयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओघप्ररूपणाके समान
पर्योपमके असख्यातवें भाग हैं ॥ १५३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असयतोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानतक जीव
द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सामान्य प्ररूपणाके समान हैं ॥ १५४ ॥

असयतसबकी चारों गुणस्थान ओघ चारों गुणस्थानोंके समान हैं, इसलिये असयत
चारों गुणस्थानोंके प्रमाणके ओघपना धन जाता है । अथ यहा पर अवधारकालकी उत्पत्ति

१ यथाख्यातविहारशुद्धिसयता सामायोज्यपर्या । स सि १, ८

२ सयतासयता सामायोज्यपर्या । स सि १, ८ पल्लामखण्डिमि विरदाविरदाण दव्वपरिमाण ॥
गो बी ४८१

३ असयतान्ध सामायोज्यपर्या । स सि १, ८ पुब्बुत्तराविहाणा ससारी अविरदाण पमा ॥
गो बी ४८१

अवहारकालुप्पत्ती वुच्चदे । तं जहा— सिद्ध-तेरसगुणपडिउण्णरासिं मिच्छाइट्टिरासिभजिद-
तव्वग्ग च सव्वजीवरासिस्सुउरि पक्खिचे मिच्छाइट्टिधुउरसी हेदि । सासणादीणमउहार-
कालुप्पत्ती ओघसमाणा । एउ संजदासजदाणं पि ।

भागाभाग वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिमणतखडे कए बहुउखडा मिच्छाइट्टिणो
हैंति । सेसमणतखडे कए बहुखडा सिद्धा हेंति । सेसमसखेज्जखडे कए बहुखंडा
असजदा हेंति । सेस सखेज्जखडे कए बहुखडा सम्मामिच्छाइट्टिणो हेंति । सेसम-
सखेज्जखडे कए बहुखंडा सामणसम्माइट्टिणो हेंति । सेसमसखेज्जखडे कए बहुखंडा
सजदासजदा हेंति । सेस सखेज्जखडे' कए बहुखडा सामाइय छेदेउट्टाउणसुद्धिसजदा
हेंति । सेस सखेज्जखंडे कए बहुखडा जहाक्खादसुद्धिसंजदा हेंति । सेस सखेज्जखडे
कए बहुखडा परिहारया हेंति । (सेसेगखड सुहुमसापराइयसुद्धिसजदा हेंति ।)

अप्पाउहुग तिविह सत्थाणादिभेएण । तत्थ सत्थाणे पयदं । सजदाण सत्थाण
णत्थि, अवहाराभाउदो । मिच्छाइट्टीण पि सत्थाण णत्थि, रासीदो भागहारस्म बहुत्तादो ।
सासणसम्माइट्टिमादिं करिय जाउ संजदासंजदा त्ति एदेसिं सत्थाणस्स ओघमगो ।

—

कहते हैं । यह इसप्रकार है— सिद्धराशि और सासादनसम्यग्दृष्टि भादि तेरह गुणस्थानवर्ती
राशिकी तथा मिथ्यादृष्टि राशिसे भाजित सिद्ध और तेरह गुणस्थानवर्ती राशिके धर्मको सर्व
जीवराशिमें मिला देने पर मिथ्यादृष्टिराशिकी धुवराशि होती है । सासादनसम्यग्दृष्टि भादिके
अवहारकालोंकी उत्पत्ति ओघ सासादनसम्यग्दृष्टि भादि अवहारकालोंकी उत्पत्तिके समान है ।
इसीप्रकार सयतासयतोंके अवहारकालकी उत्पत्ति भी समझना चाहिये ।

अथ भागाभागकी बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग
मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग सिद्ध जीव होते हैं ।
शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग असयतसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं । शेष एक
भागके सख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । शेष एक भागके
असख्यात खंड करने पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं । शेष एक भागके
असख्यात खंड करने पर बहुभाग सयतासयत जीव होते हैं । शेष एक भागके सख्यात खंड
करने पर बहुभाग सामायिक और छेदेपस्थापनाशुद्धिसयत होते हैं । शेष एक भागके सख्यात
खंड करने पर बहुभाग यथाख्यातशुद्धिसयत होते हैं । शेष एक भागके सख्यात खंड करने पर
बहुभाग परिहारविशुद्धिसयत होते हैं । (शेष एक भाग सुद्धिसांपरायिकशुद्धिसयत हैं ।)

स्वस्थान अल्पबहुत्व आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे यहाँ
स्वस्थान अल्पबहुत्व प्रकृत है— सयत जीवोंके अवहारकालका अभाव होनेसे स्वस्थान
अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है । मिथ्यादृष्टियोंके भी स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं है, क्योंकि,
मिथ्यादृष्टि राशिसे भागहार बहुत बड़ा है । सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयतासयत
गुणस्थानतक इन जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्वसामान्य स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है ।

दसणाणुवादेण चक्खुदंसणीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया,
असंखेजा ॥ १५५ ॥

सुगममेद मुत्तं, बहुमो चक्खणिदत्तादो ।

असंखेजासंखेजाहि ओसाप्पिणि-उस्साप्पिणीहि अवहिरंति कालेण

॥ १५६ ॥

अड्ढल बुल-सुहुमपरूषणाओ तिण्णि पि परिवाडीए किमड्ड बुच्चति, सुहुमपरूषणमेउ
किण्ण बुच्चदे ? ण, मेहापि मदाइमदमेहापिजणाणुग्गहकारणेण तहेएएसा । सस सुगम ।

खेत्तेण चक्खुदसणीसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरादि अंगुलस्स
सखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण ॥ १५७ ॥

सखेज्जरूवेहि सच्चिअगुले भागे हिटे तत्थ ज लद्ध त रग्गिदे चक्खुदंसणिमिच्छा-
इट्ठीणं पडिभागो होदि । एटेण पडिभागेण चक्खुदसणिमिच्छाइट्ठीहि जगपदरमवहिरदि ।
एत्थ किं चक्खुदसणाउरणरूम्मक्खओउममा जीया चक्खुदसणिणो बुच्चति, आहो चक्खु-

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी
अपेक्षा कितने हैं ? असरयात हैं ॥ १५५ ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, अनेकवार व्याख्यान हो गया है ।

कालकी अपेक्षा चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीव असरयातासरयात अवसर्पिणियों
और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ १५६ ॥

शंका— अतिस्थूल, स्थूल और सूक्ष्म, ये तीनों प्ररूपणाए परिपटीक्रमसे किसलिये
कही जाती है, केवल एक सूक्ष्म प्ररूपणा क्यों कहा कही जाती है ?

समाधान— नहा, क्योंकि, मेधावी, मन्दबुद्धि और अतिमन्दबुद्धि जनोंका अनुग्रह
करनेके कारण इसप्रकारका उपदेश दिया गया है । शेष कथन सुगम है ।

क्षेत्रकी अपेक्षा चक्षुदर्शनीयोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंके द्वारा सूच्यगुलके सरयातवें
भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ १५७ ॥

सूच्यगुलमें सरयातका भाग देने पर कहा जो लब्ध भावे उसे धर्मित करने पर
चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रतिभाग होता है । इस प्रतिभागसे चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि
जीवोंके द्वारा जगप्रतर अपहृत होता है ।

शंका— यहाँ पर क्या चक्षुदर्शनावरणकर्मके क्षयोपशमसे युक्त जीव चक्षुदर्शनी
कहे जाते हैं, या चक्षुदर्शनरूप उपयोगसे युक्त जीव चक्षुदर्शनी कहे जाते हैं ? इनमेंसे प्रथम

१ दर्शनानुवादेण चक्खुदर्शनिना मिथ्यादृष्टयोस्सरयाया धणय प्रथामग्गयेयमागामिता । स ति १, ८.

योगे चउरसखाण वचवखाण व खीणवाणिण चक्खुण । गो जी ४८७

परत्थाणे पयद । सच्चत्थोना सामाइय छेदोपट्टाणसुद्धिसजदउत्तमामगा । तेसिं
 खवगा संखेज्जगुणा । अपमत्तसजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । परिहार-
 सुद्धिसजदेसु सच्चत्थोना अपमत्तसजदा । पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । सुहुमसापराइयसुद्धि-
 सजदेसु सच्चत्थोना उत्तसामगा । मग्गगा संखेज्जगुणा । जहात्पादसजदेसु सच्चत्थोना
 उत्तसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । सजदासजदेसु परत्थाण
 पत्थि । असजदेसु सच्चत्थोना असजदसम्माइट्ठिअणहारकालो । सम्माभिच्छाइट्ठिअणहारकालो
 असखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअणहारकालो सखेज्जगुणो । तस्सेव दच्चमसखेज्जगुण ।
 एव णेयव्व जान पलिदोवम ति । तदो मिच्छाइट्ठी अणतगुणा ।

सच्चपरत्थाणे पयद । सच्चत्थोना सुहुमसापराइयसुद्धिसजदा । परिहारसुद्धिसजदा
 संखेज्जगुणा । जहात्पादसुद्धिसजदा संखेज्जगुणा । सामाइय छेदोपट्टाणसुद्धिसजदा दो
 नि तुल्ला संखेज्जगुणा । असजदसम्माइट्ठिअणहारकालो असखेज्जगुणो । एव णेयव्व जान
 पलिदोवम ति । तदो उवरि मिच्छाइट्ठी अणतगुणा ।

एव सजममग्गणा गदा ।

अत्र परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— सामायिक और छेदोपस्थापनशुद्धिसयत
 उपशामक जीव सखे स्तोत्र हैं । उर्हाँके क्षपक उपशामकोंसे सख्यातगुणे हैं । वे ही
 अप्रमत्तसयत जीव क्षपकोंसे सख्यातगुणे हैं । वे ही प्रमत्तसयत जीव अप्रमत्तसयतोंसे
 सख्यातगुणे हैं । परिहारविशुद्धिसयतोंमें अप्रमत्तसयत जीव सखे स्तोत्र हैं । प्रमत्तसयत जीव
 उनसे सख्यातगुणे हैं । सुक्ष्मसापरायिकशुद्धिसयतोंमें उपशामक जीव सखे थोड़े हैं । क्षपक
 जीव उनसे सख्यातगुणे हैं । यथाख्यात सयतोंमें उपशामक जीव सबसे थोड़े हैं । क्षपक जीव
 उपशामकोंसे सख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली जीव क्षपकोंसे सख्यातगुणे हैं । सयतासयतोंमें
 परस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है । असयतोंमें असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सखे
 स्तोत्र हैं । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असयत सम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असख्यात
 गुणा है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे सख्यातगुणा
 है । उर्हाँ सासादनसम्यग्दृष्टियोंका इच्छे उर्हाँके अवहारकालसे असख्यातगुणा है । इसीप्रकार
 पत्थोपमत्तक ले जाना चाहिये । पत्थोपमत्तसे मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं ।

अथ सर्वपरस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— सुक्ष्मसापरायिकशुद्धिसयत जीव सबसे
 स्तोत्र हैं । परिहारविशुद्धिसयत जीव उनसे सख्यातगुणे हैं । यथाख्यातशुद्धिसयत जीव
 परिहारविशुद्धिसयतोंसे सख्यातगुणे हैं । सामायिक और छेदोपस्थापनशुद्धिसयत जीव दोनों
 समान होते हुए यथाख्यातसयतोंसे सख्यातगुणे हैं । असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल
 इन दोनों सयतोंके प्रमाणसे असख्यातगुणा है । इसीप्रकार पत्थोपमत्तक ले जाना चाहिये ।
 पत्थोपमत्तसे अपर मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं ।

इसप्रकार संयममार्गणा समाप्त हुई ।

कुदो ? चक्खुदंसणक्खओवसमरहिदग्गुणपडिवण्णाभाजादो ।

अचक्खुदंसणीसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदराग-
छट्टुमत्था त्ति ओघं ॥ १५९ ॥

किं कारणं? अचक्खुदंसणक्खओवसमरहिदग्गुणमत्थजीवाभाजादो । सपहि अचक्खु-
दंसणीण धुरासी युच्चदे । तं जहा— सिद्ध तेरसग्गुणपडिवण्णारासिमचक्खुदंसणमिच्छाइट्ठि-
रासिभज्जिदत्तग्ग च सच्चजीवरासिस्सुपरि पक्खित्ते अचक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठिधुरासी
होदि । एदेण सच्चजीवरासिस्सुपरिमवग्गे भागे हिदे अचक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठिद्व्व होदि ।
सामणादीणमोघब्धि भणिदअत्रहारे चेव वत्तव्वो, विमेसामाजादो ।

ओहिदंसणी ओहिणाणिभंगो ॥ १६० ॥

क्योंकि, गुणस्थानप्रतिपन्न जीव अक्षुदर्शनरूप क्षयोपशमसे रहित नहीं होते हैं ।
अर्थात् गुणस्थानप्रतिपन्न प्रत्येक जीवके अक्षुदर्शनावरण कर्मका क्षयोपशम पाया जाता है,
अतएव गुणस्थानप्रतिपन्न अक्षुदर्शनी जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा ओघप्ररूपणाके समान है ।

अचक्षुदर्शनियोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकपायवीतरागलभस्य
गुणस्थानतरु प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १५९ ॥

शंका—अचक्षुदर्शनी जीवोंका प्रमाण सामान्य प्ररूपणाके समान है, इसका क्या
कारण है ?

समाधान—क्योंकि, अचक्षुदर्शनरूप क्षयोपशमसे रहित उग्रस्थ जीव नहीं पाये
जाते हैं, इसलिये उनका प्रमाण ओघप्रमाणके समान कहा है ।

अथ अचक्षुदर्शनी जीवोंकी धुराशिका कथन करते हैं । यह इसप्रकार है— सिद्ध
राशि और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानप्रतिपन्न जीवराशिको तथा
मिथ्यादृष्टि राशिसे भाजित सिद्धराशि और गुणस्थानप्रतिपन्न राशिके घर्गको सर्व जीवराशिमें
मिला देने पर अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंकी धुराशि होती है । इस धुराशिसे सर्व
जीवराशिके उपरिम घर्गके भाजित करने पर अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्यप्रमाण होता
है । अचक्षुदर्शनी सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीवोंका ओघप्ररूपणामें कहा गया अघहारकाल
हो कहना चाहिये, क्योंकि, गुणस्थानप्रतिपन्न ओघ अवहारकालसे अचक्षुदर्शनी गुणस्थान
प्रतिपन्न जीवोंके अघहारकालमें कोई विशेषता नहीं है ।

अवधिदर्शनी जीव अवधिज्ञानियोंके समान हैं ॥ १६० ॥

१ अचक्षुदर्शिनो मिथ्यादृष्टोऽनन्तान्तात् । उभये च सासादनसम्यग्दृष्ट्यादय क्षीणकपायात्ता सामायोक्त-
सरया । स मि १, ८ एदियपहुदीण खीणकसायतणवरासीण । ओगी अचक्खुदंसणजावाण होदि परिमाण ॥
या जी ४८८

२ अवधिदशनिनाऽवधिज्ञानिवत् । स मि १, ८

दंसणोपओगसहिदजीना त्ति ? पढमपक्खे चक्खुदसणिमिच्छाइड्डिअणहारकालेण पदरगुलस्स असखेज्जदिभाएण होदव्व, चदु-पच्चिदियापज्जत्तरासीण पाहण्णादो । ण विदियपक्खो मि, चक्खुदसणद्धिदीए^१ अतोमुहुत्तप्पसगादो त्ति ? एत्थ परिहारो बुच्चदे । असखेज्जदिभाए चत्थिदियपडिभागे^२ चक्खुदसणुपजोगपाओगगचक्खुदसणसओपसमा चक्खुदंसणिणो त्ति जेण बुच्चति तेण लद्धिअपज्जत्ताणं गहण ण भवदि, तेसु चत्थिदियणिप्पत्तिविराहिदेसु चक्खुदसणोपओगसहिदत्तवसओपसमाभावादो । सखेज्जसागरोपममेत्ता चक्खुदसणिद्धिदी^३ वि ण निरूज्जेदे, उओपममस्स पहाणत्तन्धुगमादो । तदो पदरगुलस्स सखेज्जदिभागमेत्तो चक्खुदसणिमिच्छाइड्डिअणहारकालो होदि त्ति मिद्ध, चदु-पच्चिदियपज्जत्तरासीण पहाणत्तन्धुगमादो ।

मासणमम्माइड्डिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागच्छदुमत्था त्ति ओघं ॥ १५८ ॥

पक्षके ग्रहण करने पर चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल प्रतरागुलके असख्यातवै भागमात्र होना चाहिये, क्योंकि, ऐसी स्थितिमें चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त और पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी प्रधानता है । इसप्रकार पहला पक्ष तो ठीक नहीं है । उसीप्रकार दूसरा पक्ष भी ठीक नहीं है, क्योंकि, उसके मानने पर चक्षुदर्शनीकी स्थितिको अन्तमुहूर्तमात्रका प्रसंग आ जाता है ?

समाधान— आगे पूर्वोक्त शकाका परिहार करते हैं— चक्षुदर्शनीवाले मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल सूक्ष्मगुलके असख्यातवै भागरूप आक्षेपका परिहार यह है कि चूँकि चक्षुदर्शनोपयोगके योग्य चक्षुदर्शनावरणके क्षयोपशमवाले जीव चक्षुदर्शनी कहे जाते हैं, इसलिये यहा पर लक्ष्यपर्याप्त जीवोंका ग्रहण नहीं होता है, क्योंकि, वे जीव चक्षु इन्द्रियकी निष्पत्तिसे रहित होते हैं, इसलिये उनमें चक्षुदर्शनरूप उपयोगसे युक्त चक्षुदर्शनरूप क्षयोपशम नहीं पाया जाता है । तथा चक्षुदर्शनवाले जीवोंकी स्थिति सख्यातसागरोपममात्र होती है, यह कथन भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है, क्योंकि, यहा पर क्षयोपशमकी प्रधानता स्वीकार की है । इसलिये चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल प्रतरागुलके सख्यातवै भागमात्र होता है, यह कथन सिद्ध होता है, क्योंकि, यहा पर चक्षुदर्शनी जीवोंके प्रमाणके कथनमें चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी प्रधानता स्वीकार की है ।

सासादनसम्भयग्दष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकपायवीतरागच्छस्य गुणस्थानतरु प्रत्येक गुणस्थानमें चक्षुदर्शनी जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १५८ ॥

१ प्रतिपु ' -दंसणद्धिदीए ' इति पाठ ।

२ अ कप्रसो ' पडिवाद ', आपत्ती ' पडिवादि ' इति पाठ ।

३ ' चक्खुदसणाइ मिच्छादी उक्खरेण वेनागरोपमसहरताणि ' जी का दू २७९-२८१

कृदो ? चक्रबुदंसणखओवसमराहिदगुणपडिचण्णाभाभादो ।

अचक्रबुदंसणीसु मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदराग-
छदुमत्था त्ति ओघं ॥ १५९ ॥

किं कारणं ? अचक्रबुदंसणखओवसमराहिदछदुमत्थजीवाभाभादो । सपहि अचक्रबु-
दंसणीण धुवरासी बुच्चदे । त जहा— सिद्ध तेरसगुणपडिचण्णारासिमचक्रबुदंसणमिच्छाइट्टि-
रासिभजित्तव्यग्ग च सव्वजीवरासिस्सुपरि पक्खित्ते अचक्रबुदंसणमिच्छाइट्टिधुवरासी
होदि । एदेण सव्वजीवरासिस्सुपरिमग्गे भागे हिदे अचक्रबुदंसणमिच्छाइट्टिदव्व होदि ।
सासणादीणमोघम्मि भणिदअरहारे चेर उत्तव्वे, निमेषाभाभादो ।

ओहिदंसणी ओहिणाणिभंगो ॥ १६० ॥

क्योंकि, गुणस्थानप्रतिपन्न जीव चक्षुदर्शनरूप क्षयोपशमसे रहित नहीं होते हैं ।
अर्थात् गुणस्थानप्रतिपन्न प्रत्येक जीवके चक्षुदर्शनावरण कर्मका क्षयोपशम पाया जाता है,
अतएव गुणस्थानप्रतिपन्न चक्षुदर्शनी जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा ओघप्ररूपणाके समान हैं ।

अचक्षुदर्शनियोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकपायवीतरागद्वय
गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १५९ ॥

शंका—अचक्षुदर्शनी जीवोंका प्रमाण सामान्य प्ररूपणाके समान है, इसका क्या
कारण है ?

समाधान—क्योंकि, अचक्षुदर्शनरूप क्षयोपशमसे रहित छद्मस्य जीव नहीं पाये
जाते हैं, इसलिये उनका प्रमाण ओघप्रमाणके समान कहा है ।

अब अचक्षुदर्शनी जीवोंकी धुवराशिका कथन करते हैं । यह इसप्रकार है— सिद्ध-
राशि और सासादनसम्पग्गदृष्टि आदि तेरह गुणस्थानप्रतिपन्न जीवराशिको तथा
मिथ्यादृष्टि राशिसे भाजित सिद्धराशि और गुणस्थानप्रतिपन्न राशिके वर्गको सर्व जीवराशियों
मिला देने पर अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंकी धुवराशि होती है । इस धुवराशिसे सर्व
जीवराशिके उपरिम वर्गके भाजित करने पर अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्यप्रमाण होता
है । अचक्षुदर्शनी सासादनसम्पग्गदृष्टि आदि जीवोंका ओघप्ररूपणामें कहा गया अघहारकाल
ही कहना चाहिये, क्योंकि, गुणस्थानप्रतिपन्न ओघ अघहारकालसे अचक्षुदर्शनी गुणस्थान-
प्रतिपन्न जीवोंके अघहारकालमें कोई विशेषता नहीं है ।

अवधिदर्शनी जीव अवधिज्ञानियोंके समान हैं ॥ १६० ॥

१ अचक्षुदर्शिनो मिथ्यादृष्टोऽनन्तानन्ता । उभये च सासादनसम्पग्गदृष्ट्यादय खीणकपायात्ता सामायोज-
सक्या । स ति १, ८. एइदियपहुदीण खानकवायतणवरासीण । जोगो अचक्रबुदंसणजीवाण होदि परिमाण ॥
या जी ५८८

२ अवधिदर्शनिनाऽभिज्ञानिवत् । स ति १, ८

दंसणोवओगसहिदजीना त्ति ? पढमपक्खे चक्खुदसणिमिच्छाइड्डिअवहारकालेण पदरगुलस्म असखेज्जदिभाएण होदच्च, चहु-पच्चिदियापज्जचरासीण पाहण्णादो । ण विदियपक्खो वि, चक्खुदसणद्धिदीए' अतोमुह्त्तप्पसमादो त्ति ? एत्थ परिहारो बुच्चवेद । असखेज्जदिभाए चक्खिअदियपडिभागे' चक्खुदसणुअजोगपाओग्गचक्खुदंसणखओपसमा चक्खुदंसणिणो त्ति जेण बुच्चति तेण लद्धिअपज्जत्ताण गहणं ण भवदि, तेसु चच्चिअदियणिप्पत्तिअरिहिदेसु चक्खुदसणोअओगसहिदतक्खओपसमाभावादो । सखेज्जसागरोअममेत्ता चक्खुदसणिद्धिदी' वि ण अरुज्जदे, सओअमस्म पहाणत्तञ्चुअगमादो । तदो पदरगुलस्म सखेज्जदिभागमेत्तो चक्खुदसणिमिच्छाइड्डिअवहारकालो होदि त्ति सिद्ध, चहु पच्चिदियपज्जचरासीण पहाणत्त च्चुअगमादो ।

सासणसम्माइड्डिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओष ॥ १५८ ॥

पक्षके ग्रहण करने पर चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल प्रतरागुलके असख्यातवै भागमात्र होना चाहिये, क्योंकि, ऐसी स्थितिमें चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त और पचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी प्रधानता है । इसप्रकार पहला पक्ष तो ठीक नहीं है । उसीप्रकार दूसरा पक्ष भी ठीक नहीं है, क्योंकि, उसके मानने पर चक्षुदर्शनीकी स्थितिको अतमुहूर्तमात्रका प्रमाण आ जाता है ?

समाधान— आगे पूर्वोक्त शकाका परिहार करते हैं— चक्षुदर्शनवाले मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल सूक्ष्मगुलके असख्यातवै भागरूप आक्षेपका परिहार यह है कि चूँकि चक्षुदर्शनोपयोगके योग्य चक्षुदर्शनावरणके क्षयोपशमवाले जीव चक्षुदर्शनी कहे जाते हैं, इसलिये यहाँ पर ह्यपर्याप्त जीवोंका ग्रहण नहीं होता है, क्योंकि, वे जीव चक्षु इन्द्रियकी निष्पत्तिले रहित होते हैं, इसलिये उनमें चक्षुदर्शनरूप उपयोगसे युक्त चक्षुदर्शनरूप क्षयोपशम नहीं पाया जाता है । तथा चक्षुदर्शनवाले जीवोंकी स्थिति सत्यातसागरोपममात्र होती है, यह कथन भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है, क्योंकि, यहाँ पर क्षयोपशमकी प्रधानता स्वीकार की है । इसलिये चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल प्रतरागुलके सख्यातवै भागमात्र होता है, यह कथन सिद्ध होता है, क्योंकि, यहाँ पर चक्षुदर्शनी जीवोंके प्रमाणके कथनमें चतुरिन्द्रिय और पचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी प्रधानता स्वीकार की है ।

सासादनसम्पग्घट्टि गुणस्थानसे लेकर धीणकपायवीतरागछदस्य गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें चक्षुदर्शनी जीव ओषप्ररूपणाके समान हैं ॥ १५८ ॥

१ प्रथेणु ' -दसणदिहोए ' इति पाठ ।

२ अ-अरुज्जो ' पच्चिदो', आपत्ती ' पच्चिदो ' इति पाठ ।

३ ' चक्खुदसणाव मिच्छाइड्डी उक्खेण वेणागरोअमसहस्वाणि ' जी का वू २७५-२८१

णाणस्स वि दंसणमत्थि, तस्स वि तधाप्रिधत्तादो । जदि सरूपसंपेदण दंसणं तो एदेसिं पि दंसणस्स अत्थिच्चं पसज्जेदे चेन्न, उत्तरज्ञानोत्पत्तिनिमित्तप्रयत्नप्रिशिष्टस्वसंवेदनस्य दर्शनत्वात् । ण च केरलिम्हि एसो कमो, तत्थ अक्खमेण णाण दंसणपउत्तीदो । ण च छदुमत्थेसु दोण्हमक्खमेण वुत्ती अत्थि, 'हृदि दुणे णत्थि उरजोगा' चि पडिसिद्धत्तादो । ण च णाणादो पच्छा दंसण भवदि, 'दंसणपुच्छ णाणं, ण णाणपुच्छं तु दंसणमत्थि' इदि वयणादो ।

भागाभागं वचदस्सामो । सब्जजीवरासिमणतखंडे कए बहुखडा अचक्खुदंसण-मिच्छाइड्डी हांति । सेसमणतखंडे कए बहुखडा केरलदंसणिणो हांति । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखडा चक्खुदंसणमिच्छाइड्ढिणो हांति । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखडा चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिअसंजदसम्माइड्ढिदव्व होदि । तत्थ तस्सेव असखेज्जदिभागमवणिदे ओहिदंसणि-दव्व होदि । सेस संखेज्जखंडे कए बहुखडा चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसम्मामिच्छाइड्ढिदव्वं होदि । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखडा मामणभम्माइड्ढिदव्व होदि । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखडा चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसंजदासज्जदव्वं होदि । सेसमसखेज्जखंडे कए

शका—यदि दर्शनका स्वरूप स्वरूपसवेदन है, तो इन दोनों धानोंके भी दर्शनके अस्तित्वकी प्राप्ति होती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उत्तरज्ञानकी उत्पत्तिके निमित्तभूत प्रयत्नविशिष्ट स्वसवेदनको दर्शन माना है । परंतु केवलमें यह क्रम नहीं पाया जाता है, क्योंकि, वहा पर अक्रमसे ज्ञान और दर्शनकी प्रवृत्ति होती है । छद्मस्थोंमें दर्शन और ज्ञान, इन दोनोंकी अक्रमसे प्रवृत्ति होती है, यदि ऐसा कहा जाये सो भी ठीक नहीं है, क्योंकि, छद्मस्थोंके 'दोनों उपयोग एक साथ नहीं होते हैं' इस आगमवचनसे छद्मस्थोंके दोनों उपयोगोंके अक्रमसे होनेका प्रतिषेध हो जाता है । ज्ञानपूर्वक दर्शन होता है, यदि ऐसा कहा जाये सो भी ठीक नहीं है, क्योंकि, 'दर्शनपूर्वक ज्ञान होता है, त्रिंतु ज्ञानपूर्वक दर्शन नहीं होता है' ऐसा आगमवचन है ।

अब भागाभागकी बतलाते हैं—सर्व जीवराशिके अनन्त खड करने पर बहुभाग अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीव है । शेष एक भागके अनन्त खड करने पर बहुभाग केवलदर्शनी जीव है । शेष एक भागके असख्यात खड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीव है । शेष एक भागके असख्यात खड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी अस्त यतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य है । इसमेंसे इसीका असख्यातवा भाग घटा देने पर शेष अवधिदर्शनी जीवोंका द्रव्यप्रमाण होता है । शेष एक भागके सख्यात खड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्यप्रमाण होता है । शेष एक भागके असख्यात खड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्यप्रमाण होता है । शेष एक भागके असख्यात खड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी संयतासयतोंका द्रव्यप्रमाण होता है । शेष एक भागके असख्यात खड करने पर बहुभाग

ओहिदसणप्रिहिटओहिणाणीणमभावादे । एत्थ अणहारकालो बुच्चदे । जो ओघ-
असजदसम्माइडिअणहारकालो सो चेव अचस्सुदसणि चस्सुदसणिअसजदसम्माइडिअ-
हारकालो होदि । तम्हि अणलियाए अमरेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्ध तम्हि चेव पक्खित्ते
ओहिदसणिअसजदसम्माइडिअणहारकालो होदि । तम्हि अणलियाए अमरेज्जदिभाएण
गुणिदे चस्सुदसणि अचस्सुदसणिअसजदसम्माइडिअणहारकालो होदि । तम्हि संसेज्जरूपेहि
गुणिदे चस्सुदसणि अचस्सुदसणिसासणसम्माइडिअणहारकालो होदि । तम्हि अणलियाए
असखेज्जदिभाएण गुणिदे चस्सुदसणि अचस्सुदसणिसजदासजदअणहारकालो होदि । तम्हि
अणलियाए अमरेज्जदिभाएण गुणिदे ओहिदसणिसजदासजदअणहारकालो होदि ।

केवलदसणी केवलणाणिभंगो ॥ १६१ ॥

केवलणाणप्रिहिटकेवलदमणाभावादे । सुद मणपज्जणणाण' किमिदि ण दसण'
बुच्चदे- ण ताण सुदणाणस्स दसणमत्थि, तस्स मदिणाणपुव्वत्तादे । ण मणपज्ज-

चूक अवधिदर्शनको छोड़कर अवधिज्ञानी जीव नहीं पाये जाते हैं, इसलिये दोनोंका
प्रमाण समान है । अत्र यहाँ पर इनके अणहारकालका कथन करते हैं— जो ओघ असयत
सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल है, वही अचक्षुदर्शनी और चक्षुदर्शनी असयतसम्यग्दृष्टियोंका
अवहारकाल है । इसे आधलीके असख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे
उसी अणहारकालमें मिला देने पर अवधिदर्शनी असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है ।
इस अवधिदर्शनी असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आधलीके असख्यातवें भागसे गुणित
करने पर चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे
सख्यातसे गुणित करने पर चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहार-
काल होता है । इसे आधलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर चक्षुदर्शनी और अचक्षु-
दर्शनी सयतासयतोंका अवहारकाल होता है । इसे आधलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने
पर अवधिदर्शनी सयतासयतोंका अवहारकाल होता है ।

केवलदर्शनी जीव केवलज्ञानियोंके समान हैं ॥ १६१ ॥

चूक केवलज्ञानसे रहित केवलदर्शन नहीं पाया जाता है, इसलिये दोनों राशियोंका
प्रमाण समान है ।

ज्ञाना—श्रुतज्ञान और मन पर्ययज्ञानका दर्शन क्यों नहीं रुद्ध जाता है ?

समाधान—श्रुतज्ञानका दर्शन तो हो नहीं सकता है, क्योंकि, वह मतिज्ञानपूर्व
होता है । उसीप्रकार मन पर्ययज्ञानका भी दर्शन नहीं है, क्योंकि, मन पर्ययज्ञान
उसीप्रकारका है, अर्थात् मन पर्ययज्ञान भी मतिज्ञानपूर्वक होता है, इसलिये उसका दर्शन
नहीं पाया जाता है ।

१ केवलदर्शनिन केवलज्ञानिकम् । स ति १, ८ आहिकवलपरिमाण ताण णाण च ।। सो जी ४८५

२ प्रतिबु ' सुद मणप-जवणाण इति पाठ ।

णाणस्म पि दसणमत्थि, तस्स पि तघानिघत्तादो । जदि सरूपसरोदण दंसणं तो एदेसिं पि
 ढसणस्स अत्थिचं पमज्जेदे चैन, उत्तरजानोत्पत्तिनिमित्तप्रयत्नविशिष्टस्वसंवेदनस्य
 दर्शनत्वात् । ण च केवलमिह एसो रुमो, तत्थ अक्केण णाण-दंसणपउत्तीदो । ण च
 छदुमत्थेसु दोण्हमक्केण युत्ती अत्थि, 'हृदि दुणे गत्थि उभजोगा' चि पडिसिद्धत्तादो ।
 ण च णाणादो पच्छा दंसणं भवदि, 'दसणपुच्च णाणं, ण णाणपुच्चं तु दसणमत्थि'
 इदि वयणादो ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सच्चजीवरासिमणतखंडे कए बहुखडा अचक्खुदंसण-
 मिच्छाइट्ठीं होंति । सेसमणतखंडे कए ऋखडा केवलदसणिणो होंति । सेमसरोज्जखंडे
 कए बहुखडा चक्खुदसणमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसरोज्जखंडे कए बहुखडा चक्खुदसणि-
 अचक्खुदसणिअसजदसम्माइट्ठिद्वय होदि । तत्थ तस्सेप जसखेज्जदिभागमण्डि ओहिदसणि-
 दव्व होदि । सेस संसेज्जखंडे कए बहुखडा चक्खुदसणि-अचक्खुदंसणिसम्मामिच्छाइट्ठिद्वय
 होदि । सेसमसरोज्जखंडे कए बहुखडा सासणसम्मामिच्छाइट्ठिद्वय होदि । मेमसरोज्जखंडे
 कए बहुखडा चक्खुदसणि अचक्खुदसणिसंजदासजदद्वय होदि । सेसमसरोज्जखंडे कए

ज्ञाना—यदि दर्शनका स्वरूप स्वरूपसंवेदन है, तो इन दोनों ज्ञानोंके भी दर्शनके
 आस्तित्वकी प्राप्ति होती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उत्तरज्ञानकी उत्पत्तिके निमित्तभूत प्रयत्नविशिष्ट स्वसंवेद-
 नको दर्शन माना है । परंतु केवलमें यह क्रम नहीं पाया जाता है, क्योंकि, वहा पर अक्रमसे
 ज्ञान और दर्शनकी प्रवृत्ति होती है । छद्मस्थोंमें दर्शन और ज्ञान, इन दोनोंकी अक्रमसे प्रवृत्ति
 होती है, यदि ऐसा कहा जाये तो भी ठीक नहीं है, क्योंकि, छद्मस्थोंके 'दोनों उपयोग एक
 साथ नहीं होते हैं' इस आगमवचनसे छद्मस्थोंके दोनों उपयोगोंके अक्रमसे होनेका प्रतिषेध
 हो जाता है । ज्ञानपूर्वक दर्शन होता है, यदि ऐसा कहा जाये तो भी ठीक नहीं है, क्योंकि,
 'दर्शनपूर्वक ज्ञान होता है, किंतु ज्ञानपूर्वक दर्शन नहीं होता है' ऐसा आगमवचन है ।

अथ भागाभागको बतलाते हैं—सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग
 अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीव है । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग फेवलदर्शनी
 जीव है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि
 जीव है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी अस
 यतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य है । इसमेंसे इसीका असंख्यातता भाग घटा देने पर शेष अथधिदर्शनी
 जीवोंका द्रव्यप्रमाण होता है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी
 और अचक्षुदर्शनी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्यप्रमाण होता है । शेष एक भागके असंख्यात
 खंड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी सामादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्यप्रमाण
 होता है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी
 संयुक्तसंयुक्त द्रव्यप्रमाण होता है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग

गुणा । पञ्चसजदा सखेज्जगुणा । दुदसणिअसजदसम्माइड्डिअवहारकालो असखेज्जगुणो ।
 तिदसणअसजदसम्माइड्डिअवहारकालो विसेसाहिओ । दुदसणसम्माभिच्छाइड्डिअवहारकालो
 अमखेज्जगुणो । दुदमणसासणसम्माइड्डिअवहारकालो सखेज्जगुणो । दुदसणसजदासजद-
 अवहारकालो अमखेज्जगुणो । तिदसणसजदासजदअवहारकालो असखेज्जगुणो । तस्सेण
 द्वयममखेज्जगुणं । एवमवहारकालपडिलोमेण णेदच्च जाव पल्लिदोणम ति । तदो चक्खु-
 दसणिभिच्छाइड्डिअवहारकालो अमखेज्जगुणो । पिक्खुभसुई अमखेज्जगुणा । सेही अमखेज्ज-
 गुणा । द्वयममखेज्जगुण । पदममखेज्जगुण । लोणो अमखेज्जगुणो । केवलदमणी
 अणतगुणा । अचक्खुदसणी अणतगुणा ।

एतदसणमगणा गदा ।

लेसाणुवादेण किण्हलेस्सियणीललेस्सियकाउलेस्सिएसु मिच्छा-
 इड्डिप्पहुडि जाव असजदसम्माइड्डि ति ओघं ॥ १६२ ॥

दर्शनवाले प्रमत्तसयतोंसे असख्यातगुणा है । तीन दर्शनवाले अत्यंतसम्यग्दृष्टियोंका अवहार-
 काल दो दर्शनवाले असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे विशेष अधिक है । दो दर्शनवाले
 सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल तीन दर्शनवाले असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे
 असख्यातगुणा है । दो दर्शनवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल दो दर्शनवाले सम्य-
 ग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे सख्यातगुणा है । दो दर्शनवाले सयतासयतोंका अवहारकाल
 दो दर्शनवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असख्यातगुणा है । तीन दर्शनवाले
 सयतासयतोंका अवहारकाल दो दर्शनवाले सयतासयतोंके अवहारकालसे असख्यातगुणा है ।
 उन्हीं तीन दर्शनवाले सयतासयतोंका द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असख्यातगुणा है ।
 इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिरोधरूपप्रमत्तसे पर्योपमत्तक ले जाना चाहिये । पर्योपमत्तसे वस्तु
 दर्शनी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । उन्हींकी विष्वभसूची अपने अवहार-
 कालसे असख्यातगुणी है । जगध्रेणी विष्वभसूचीसे असख्यातगुणी है । उन्हींका द्रव्य जग
 ध्रेणीसे असख्यातगुणा है । जगप्रतर द्रव्यसे असख्यातगुणा है । लोक जगप्रतरसे असख्यात
 गुणा है । केवलदर्शनी जीव लोकसे अनन्तगुणे है । अचक्षुर्दर्शनी जीव केवलदर्शनोंके
 प्रमाणसे अनन्तगुण है ।

इसप्रकार दर्शनमार्गणा समाप्त हुई ।

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले और कापोतलेश्यावाले
 जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अमयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें
 जीव ओषपरूपणाके समान हैं ॥ १६२ ॥

१ प्रतिपु 'असखेज्जगुणो' इति पाठ ।

२ लेश्यामार्गदेन दृग्गणालकापोतलेश्या मिथ्यादृष्ट्यादयोऽप्यवहम्यग्दृष्ट्या साधारणोत्तरया । स
 षि १, ८ किण्णदारासिमाताउअणखमाणेण मज्झिम पविमते । हण्णफणा काउ वा अरिअय द'वा उ मज्झिदया ॥

बहुखडा ओहिदसणिसेजदासंजददव्व होदि । सेसं जाणिय वचव्व ।

अप्पावहुग तिग्गिह सत्थाणादिभेएण । सत्थाणे पयद । चक्खुदसणिमिच्छाइड्ढि-
सत्थाणस्स तपपज्जचमिच्छाइड्ढिसत्थाणभगो । सामणादीण सत्थाणस्स ओघसत्थाणभंगो ।

परत्थाणे पयदं । अचक्खरुदसणीसु सव्वत्थोना उरसामगा । खग्गा सखेज्जगुणा ।
अप्पमत्तसज्जदा सखेज्जगुणा । पमत्तसज्जदा सखेज्जगुणा । उररि ओघपच्चिदिय व वचव्वं
जाप पलिदोयम ति । तदो मिच्छाइड्ढिणो अणत्तगुणा । एउ चेउ चक्खरुदमणिपरत्थाणप्पावहुग
वचव्व । णउरि पलिदोयमादो उररि चक्खरुदसणिमिच्छाइड्ढिणो असखेज्जगुणा । ओहि-
दसणीणमोहिणाणिभगो । केउलदसणीण केउलणाणिभगो ।

सव्वपरत्थाणे पयद । सव्वत्थोना ओहिदसणउरसामगा । खग्गा सखेज्जगुणा ।
चक्खरुदमणि अचक्खरुदसणिउरसामगा सखेज्जगुणा । खग्गा सखेज्जगुणा । ओहिदसण-
अप्पमत्तसज्जदा सखेज्जगुणा । पमत्तसज्जदा सखेज्जगुणा । दुदसणिअप्पमत्तसज्जदा सखेज्ज-

अवधिदर्शनी सयतासयतोंका द्रव्य होता है। शेष भागाभागका कथन जानकर करना चाहिये।
स्वस्थानादिकके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है। उनमेंसे स्वस्थानमें अल्पबहुत्व
प्रकृत है— चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व त्रस पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंके
स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है। सासादनसम्यग्दृष्टि आदिका स्वस्थान अल्पबहुत्व
ओघस्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है।

अथ परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— अचक्षुदर्शनियोंमें सबसे स्तोत्र उपशामक
जीव हैं। क्षपक जीव उपशामकोंसे सख्यातगुणे हैं। अप्रमत्तसयत जीव क्षपकोंसे सख्यातगुणे
हैं। प्रमत्तसयत जीव अप्रमत्तसयतोंसे सख्यातगुणे हैं। इसके ऊपर पल्योपमतक ओघ
पचेन्द्रियोंके परस्थान अल्पबहुत्वके समान कथन करना चाहिये। पल्योपमसे मिथ्यादृष्टि
जीव अनन्तगुणे हैं। इसीप्रकार चक्षुदर्शनियोंके परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये।
इतना विशेष है कि पल्योपमसे ऊपर चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीव असख्यातगुणे हैं। अवधि
दर्शनवालोंका अल्पबहुत्व अवधिदानियोंके अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये। केवलदर्शन
वालोंका केवलज्ञानियोंके अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये।

अथ सूर्यपरस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— अवधिदर्शनी उपशामक जीव सबसे स्तोत्र
हैं। अवधिदर्शनी क्षपक जीव उपशामकोंसे सख्यातगुणे हैं। चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी
उपशामक जीव अवधिज्ञानी क्षपकोंसे सख्यातगुणे हैं। वे ही क्षपक जीव अपने उपशामकोंसे
सख्यातगुणे हैं। अवधिदर्शनी अप्रमत्तरूपत जाव चक्षु और अचक्षुदर्शनवाले क्षपकोंसे
सख्यातगुणे हैं। वे ही प्रमत्तसयत जीव अप्रमत्तसयतोंसे सख्यातगुणे हैं। दो दर्शनवाले
अप्रमत्तसयत जीव अवधिदर्शनी प्रमत्तसयतोंसे सख्यातगुणे हैं। वे ही प्रमत्तसयत जीव
अप्रमत्तसयतोंसे सख्यातगुणे हैं। दो दर्शनवाल असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल दो

तेउलेस्सिएसु मिच्छाइट्टी दव्वपमाणेण केवडिया, जोइसियदेवेहि सादिरेयं ॥ १६३ ॥

एदस्स अत्थो बुच्चदे । जोइसियदेवा पज्जत्तकाले सव्वे तेउलेस्सिया भवति । अपज्जत्तकाले पुण ते चेय किण्ह-णील काउलेस्मिया होंति । ते च पज्जत्तरास्सिस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता । वाणत्तरदेवा वि पज्जत्तकाले तेउलेस्मिया चेव होंति । ते च जोइसियदेवाण सखेज्जदिभागमेत्ता होंति । एदेमिमपज्जत्ता किण्ह णील काउलेस्सिया भवति । ते च सगपज्जत्ताणं सखेज्जदिभागमेत्ता । मणुस तिरिक्खेसु वि तेउलेस्मिय-मिच्छाइट्टिरासी पदरम्म अमखेज्जदिभागमेत्तो तिरिक्खपम्मलेस्मियगसीदो संखेज्जगुणो अत्थि । एदे तिणि वि रासीओ भणणासिय सोहम्मीसाणमिच्छाइट्टीहि सह गदाओ जोइसियदेवेहि सादिरेया हवति । एदेमिमअहारकाले बुच्चदे । तं जहा- जोइसियअअहार-कालादो पदरगुलस्स मखेज्जदिभागे अणिदे तेउलेस्मियअअहारकालो हेदि । तदा एक-पदरगुल धेत्तण सखेज्जत्तड करिय एगत्तडमणिय बहुत्तडे तम्हि चेव पविसत्ते तेउ-

तेजोलेश्यावाले जीवोंमें मिध्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ज्योतिषी देवोंसे कुछ अधिक हैं ॥ १६३ ॥

अथ इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— पर्याप्तकालमें सभी ज्योतिषी देव तेजोलेश्यासे युक्त होते हैं । तथा अपर्याप्त कालमें वे ही देव कृष्ण, नील और कापोतलेश्यासे युक्त होते हैं । वे अपर्याप्त ज्योतिषी जीव अपनी पर्याप्त राशिके असख्यातवें भागमात्र होते हैं । वाणव्यन्तर देव भी पर्याप्तकालमें तेजोलेश्यासे युक्त होते हैं, और वे वाणव्यन्तर पर्याप्त जीव ज्योतिषियोंके सख्यातवें भागमात्र होते हैं । इन्हीं वाणव्यन्तरोंमें अपर्याप्त जीव कृष्ण, नील और कापोतलेश्यासे युक्त होते हैं, और वे अपर्याप्त वाणव्यन्तर देव अपनी पर्याप्त राशिके सख्यातवें भागमात्र होते हैं । मनुष्य और तिर्यग्वोंमें भी तेजोलेश्यासे युक्त मिध्यादृष्टिराशि जगप्रतरके असख्यातवें भागप्रमाण है, जो पक्षलेश्यासे युक्त तिर्यचराशिसे सख्यातगुणी है । इन तीनों राशियोंको भवनवासी और सोधर्मपेशान राशिके साथ एकत्रित कर देने पर यह राशि ज्योतिषी देवोंसे कुछ अधिक हो जाती है । अथ इस राशिके अघहारकालका कथन करते हैं । यह इसप्रकार है— ज्योतिषी देवोंके अघहारकालमेंसे प्रतरागुलके सख्यातवें भागप्रमाणको घटा देने पर तेजोलेश्यासे युक्त अघराशिका अघहारकाल होता है । उक्त तेजोलेश्यासे युक्त जीवराशिके अघहारकालमेंसे एक प्रतरागुलको ग्रहण करके और उसके सख्यात खंड करके एक खंडको घटा कर शेष बहुत खंडोंको उसी अघहारकालमें मिला देने पर

१ तजपंचलस्या मिध्यादृष्ट्यादयो सयतासयताताः श्रुवेदन् । स सि १, c तेउटिया संखेज्जा सखासखेज्जमागकमा ॥ जोइमियादो अहिया तिरिक्खण्णस्स सखमागो दु । सुहस्स अगुलस य असखमाग दु तेउटियं ॥ तेउडु असखकथा . । औरिअसखेज्जदिम तेउटिया सावदो होंति ॥ गो जी ५३९, ५४०, ५४१

जणतत्तणेण पलिदोपमस्स अससेज्जदिभागेण च ओघेण साधम्ममत्थि ति ओघमिदि भणिद । तिससे अपलपिज्जमाणे पुण णिय ममाणत्त, सेसलेस्सोपलमिखय-जीराण पयदगुणद्वणेषु असभवादो । एत्थ धुरामी उच्चदे । तं जहा— सिद्ध तेरसगुण-पडिवण्ण तेउ पम्म सुक्खलेस्समिच्छाइड्डिरामिं किण्ह णील काउलेस्समिच्छाइड्डिरासिभज्जिद-मेदेसिं वगं च सच्चजीवरासिस्सुपरि पम्मिपचे हि किण्ह-णील काउलेस्समिच्छाइड्डिपुरामी होदि । त तीहि रूपेहि गुणेऊण आपलियाए अससेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्ध तम्मि हेन पक्खिचे काउलेस्सियधुरामी होदि । पुव्वभागहारमग्गभिय काऊण तिगुणधुव-रासिम्मि भागे हिदे लद्ध तम्मि हेन पम्मिपचे णीललेस्सियधुरामी होदि । तमावलियाए अससेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्ध तम्मि हेन अपणिदे किण्हलेस्सियधुरामी होदि । काउ णीललेस्सरासीओ मच्चजीवरासिस्स तिभागो देग्गणो । किण्हलेस्सियरासी तिभागो मादिरेओ । गुणपडिवण्णाणमपहारकाल पुरदो भणिस्सामो ।

उक्त तीन लेख्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंकी अनन्तत्वकी अपेक्षा, और सासादनसम्बन्धदि भादि गुणस्थानवर्ती जीवोंकी पश्योपमके असख्यातर्षे भागत्यकी अपेक्षा ओघप्रमाणके साथ समानता पाई जाती है, इसलिये सूत्रमें 'ओघ' ऐसा कहा है। विशेष अर्थात् पर्यायाधिक नयका अधलभ्यत करने पर तो उक्त तीन लेख्यावाले जीवोंके प्रमाणशी ओघप्रमाणप्ररूपणाके साथ समानता नहीं है, क्योंकि, ऐसा मान लेने पर शेर लेख्याओंसे उपलक्षित जीवोंका प्रकृत गुणस्थानोंमें रहना अमभव मानना पड़ेगा। अब यहा पर धुवराशि का कथन करते हैं। यह इसप्रकार है— सिद्धराशि, सासादनसम्बन्धदि आदि तेरह गुणस्थानप्रतिपन्न राशि और पीत, पद्म तथा शुक्ललेख्यावाले मिथ्यादृष्टियोंकी राशियों, तथा इन सर्व राशियोंके धर्मों कृष्ण, नील और कापोतलेख्यावाली मिथ्यादृष्टि राशिका भाग देनेसे जो लब्ध आवे उसे सर्व जीवराशियोंमें मिला देने पर कृष्ण, नील और कापोतलेख्यासे युक्त मिथ्यादृष्टि जीवोंकी धुवराशि होती है। इसे तीनसे गुणित करके जो प्रमाण हो उसे आवलीके असख्यातर्षे भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर कापोतलेख्यासे युक्त जीवोंकी धुवराशि होती है। पूर्वोक्त भागहारकी अभ्यधिक करके और उसका त्रिगुणित धुवराशियोंमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे उसी त्रिगुणित धुवराशियोंमें मिला देने पर नीललेख्यासे युक्त जीवोंकी धुवराशि होती है। इसे आवलीके असख्यातर्षे भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमेंसे घटा देने पर कृष्णलेख्यासे युक्त जीवोंकी धुवराशि होती है। कापोतलेख्यासे युक्त और नीललेख्यासे युक्त प्रत्येक जीवराशि सर्व जीवराशिके कुछ कम तीसरे भागप्रमाण है। तथा कृष्णलेख्यासे युक्त जीवराशि कुछ अधिक तीसरे भाग प्रमाण है। उक्त तीन लेख्याओंसे युक्त गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके अयहारकालका कथन आगे करेंगे।

छेपादो अइइतिया लणनलागा कमेण परिहीणा । कालादो तादादो जगतशुण्णिदा कमा हीणा ॥ केवत्तयाणावत्तिप्रमाणा
मावाइ किण्हदियजीवा ॥ गो नी ५२७, ५२९

सुगममेद सुचं । एदस्स अग्रहारकालो बुच्चदे । पंचिदियतिरिक्खजोणिणीअग्रहार-
काले सखेज्जरूपेहि गुणिदे सण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिणीमवहारकालो होदि । तम्हि
सखेज्जरूपेहि गुणिदे सण्णिपंचिदियतिरिक्खतेउलेस्सियमिच्छाहट्टीणमवहारकालो होदि ।
तम्हि सखेज्जरूपेहि गुणिदे पम्मलेस्सियमिच्छाहट्टीणमवहारकालो होदि ।

सासणसम्माहट्टिप्पहुडि जाव संजदासजदा ति ओघं ॥ १६७ ॥

एदस्स नि सुचस्स अत्थो सुगमो ।

पमत्त-अप्पमत्तसंजदा द्व्यपमाणेण केवडिया, मंखेजा ॥ १६८ ॥

तेउलेस्सियमाणं संखेज्जदिभागमेत्ता हवंति । कुदो ? पम्मलेस्साए' सह गदजीणाण
पउर सभनामानादो ।

सुकलेस्सिएसु मिच्छाहट्टिप्पहुडि जाव सजदासंजदा ति द्व्य-
पमाणेण केवडिया, पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदो-
वममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण ॥ १६९ ॥

यह सूत्र सुगम है । अथ पद्मलेश्यासे युक्त मिथ्यादृष्टि जीवराशिके अग्रहारकालका
कथन करते हैं— पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंके अवहारकालको सख्यातसे गुणित करने पर
सखी पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंका अग्रहारकाल होता है । इसे सख्यातसे गुणित करने पर
सखी पचेन्द्रिय तिर्यंच तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे सख्यातसे
गुणित करने पर पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है ।

पद्मलेश्यावाले जीव सामादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयतासयत
गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें ओघप्ररूपणाके समान पल्योपमके असख्यातवें भाग
प्रमाण हैं ॥ १६७ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ सरल है ।

पद्मलेश्यावाले प्रमत्तसयत जीव और अप्रमत्तसयत जीव द्व्यपमाणकी अपेक्षा
कितने हैं ? सरयात है ॥ १६८ ॥

पद्मलेश्यावाले प्रमत्तसयत और अप्रमत्तसयत जीव तेजोलेश्यावाले प्रमत्तसयत ओर
अप्रमत्तसयत जीवोंके सरयातवें भागप्रमाण होते हैं, क्योंकि, पद्मलेश्यासे युक्त प्रमत्तसयत
और अप्रमत्तसयत गुणस्थानको प्राप्त हुए जीव प्रचुर नहीं होते हैं ।

शुक्लेश्यावालमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयतासयत गुणस्थानतक प्रत्येक

१ प्रतिपु ' देस्ता ' इति पाठ ।

२ शुक्लेश्या मिथ्यादृष्ट्यादय सयतासयतान्ता परयोपमासम्येयमागश्रमिता । स मि १, ८ पला-
सखेज्जमागया धुवका ॥ गो जी ५४२

लेस्सियमिच्छाइद्विअवहारकालो होदि । सेस जोइसियभगो ।

सासणसम्माइद्विप्पहुडि जाव सजदासंजदा ति ओघं ॥ १६४ ॥

छसु लेम्मासु द्विदंघअमजदसम्माइद्वि-सम्मामिच्छाइदि सामणसम्मादिद्विदि
सरिमो एकाए तेउलेस्माण द्विदरासीं वध होदि ? ण, पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागचेण
सरिमत्तमेत्थिगय जोघोणएसादो ।

पमत्त-अप्पमत्तसजदा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा' ॥१६५॥

अघराभियमाण ण पूरेदि चि ज बुत्त होदि ।

पम्मलेस्सिएसु मिच्छाइद्वी दव्वपमाणेण केवडिया, साणिपचिदिय-
तिरिक्खजोणणीण सरजेज्जदिभागो ॥ १६६ ॥

तेजोलेश्यासे युक्त मिथ्यादृष्टि जीवराशिका अवहारकाल होता है । शेष कथन ज्योतिषी देवोंके
कथनके समान है ।

तेजोलेश्यासे युक्त जीव सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयत्तासयत्
गुणस्थानतरु प्रत्येक गुणस्थानमें ओघप्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग
हैं ॥ १६४ ॥

श्रुता—ओघ असयत्तसम्यग्दृष्टि राशि, ओघ सम्यग्मिथ्यादृष्टिराशि और ओघ
सासादनसम्यग्दृष्टिराशि छदों लेश्याओंमें स्थित है, अतएव उसके साथ केवल तेजोलेश्यामें
स्थित असयत्तसम्यग्दृष्टिराशि, सम्यग्मिथ्यादृष्टिराशि और सासादनसम्यग्दृष्टिराशि समान
केसे हो सकती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, पल्योपमके असंख्यातवें भागत्वकी अपेक्षा उक्त दोनों राशि
योंमें समानता देखकर तेजोलेश्यासे युक्त सासादनसम्यग्दृष्टि आदि राशिका ओघरूपसे उपदेश
निया है ।

तेजोलेश्यासे युक्त प्रमत्तसयत्त जीव और अप्रमत्तसयत्त जीव द्रव्यप्रमाणकी
ओघा कितने हैं ? सख्यात हैं ॥ १६५ ॥

उक्त दो गुणस्थानोंमें तेजोलेश्यासे युक्त जीवराशि ओघप्रमाणको पूर्ण नहीं करती
है, यह इत सूत्रमें सख्यात पदके देनेका अभिप्राय है ।

पम्मलेश्यावालोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सत्री
पचेन्द्रिय तिर्यक योनिमती जीवोंके सख्यातवें भागप्रमाण है ॥ १६६ ॥

सुगममेदं सुच । एदस्स अपहारकालो बुच्चवे । पंचिदियतिरिक्खजोणिणीअपहार-
काले सखेज्जरूवेहि गुणिदे सण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिणीणमवहारकालो हेदि । तम्हि
सखेज्जरूवेहि गुणिदे सण्णिपंचिदियतिरिक्खतेउलेस्सिमिच्छाड्डीणमवहारकालो हेदि ।
तम्हि सखेज्जरूवेहि गुणिदे पम्मलेस्सिमिच्छाड्डीणमवहारकालो हेदि ।

सासणसम्माहट्ठिप्पहुडि जाव सजदामंजदा ति ओघं ॥ १६७ ॥

एदस्स मि सुचस्स अत्थो सुगमो ।

पमत्त-अप्पमत्तसंजदा द्व्यपमाणेण केवडिया, संखेजा ॥ १६८ ॥

तेउलेस्सिमयाण सखेज्जदिभागमेत्ता हंति । कुदो ? पम्मलेस्साए' सह गदजीनाणं
पउर समवाभावादो ।

सुकलेस्सिएसु मिच्छाहट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा ति द्व्य-
पमाणेण केवडिया, पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदो-
वममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण ॥ १६९ ॥

यद् सूत्र सुगम है । अथ पद्मलेद्यासे युक्त मिथ्यादृष्टि जीवराशिके अवहारकालका
कथन करते हैं— पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंके अवहारकालको सख्यातसे गुणित करने पर
सखी पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंका अवहारकाल होता है । इसे सख्यातसे गुणित करने पर
सखी पचेन्द्रिय तिर्यंच तेजोलेद्यावाले मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे सख्यातसे
गुणित करने पर पद्मलेद्यावाले मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है ।

पद्मलेद्यावाले जीव सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयतासयत
गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें ओघप्ररूपणाके समान पर्योपमके असख्यातवें भाग
प्रमाण है ॥ १६७ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ सरल है ।

पद्मलेद्यावाले प्रमत्तसयत जीव और अप्रमत्तसयत जीव द्व्यप्रमाणकी अपेक्षा
कितने हैं ? सख्यात हैं ॥ १६८ ॥

पद्मलेद्यावाले प्रमत्तसयत और अप्रमत्तसयत जीव तेजोलेद्यावाले प्रमत्तसयत और
अप्रमत्तसयत जीवोंके सख्यातवें भागप्रमाण होते हैं, क्योंकि, पद्मलेद्यासे युक्त प्रमत्तसयत
और अप्रमत्तसयत गुणस्थानको प्राप्त हुए जीव प्रचुर नहीं होते हैं ।

शुक्कलेद्यावालांमिं मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासयत गुणस्थानतक प्रत्येक

१ प्रतिपु 'लेस्ता' इति पाठ ।

२ शुक्कलेद्या मिथ्यादृष्ट्यादय सयतासयता पर्योपमानरूपेयमागप्रभिता । म मि १, ८ पल्ल-
सखेज्जमागया ध्वक्का ॥ गो जी ५४२

एतथ पलिदोरमस्स अससेज्जदिभागणयणं साणहारपरूणण ओघपमाणपडिसेहफलं । बुदोरमम्मदे ? सगहपरिहारेण पज्जवणयाणलवणणादो । एतथ अणहारकालो चुच्चदे । ओघ-असजदसम्माइट्ठिअणहारकाल आणलियाए अससेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्ध तम्मिह चेव पक्खिसुत्ते तेउलेस्सियअसजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्मिह आवलियाए अससेज्जदिभाएण गुणिदे पम्मलेस्सियअसजदसम्माइट्ठिअणहारकालो होदि । तम्मिह आणलियाए अससेज्जदिभाएण गुणिदे काउलेस्सियअसजदसम्माइट्ठिअणहारकालो होदि । तम्मिह आणलियाए अससेज्जदिभागेण गुणिदे किण्हलेस्सियअसजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्मिह आणलियाए अससेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्ध तम्मिह चेव पक्खिसुत्ते णीललेस्सियअसजदसम्माइट्ठिअणहारकालो होदि । तम्मिह आवलियाए अससेज्जदिभाएण गुणिदे सुक्कलेस्सियअसजदसम्माइट्ठिअणहारकालो होदि । सग सगअसजदसम्माइट्ठिअणहारकाले आणलियाए असखेज्जदिभाएण गुणिदे सग सगसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । ते

गुणस्थानमें जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? पल्योपमके अमरयातवें भागप्रमाण हैं । इन जीवोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्त कालसे पल्योपम अपहृत होता है ॥ १६९ ॥

इस सूत्रमें अवधारकालसहित पल्योपमके असख्यातवें भागप्रमाण इस वचनका प्ररूपण ओघप्रमाणके प्रतिषेध करनेके लिये दिया है ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—सप्रहनयथा परिहार करके पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन लेनेसे यह जाना जाता है ।

अन यथा पर अवधारकालका प्ररूपण करते हैं— ओघ असयतसम्यग्दृष्टि अवधारकालको आवलीके असख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लघ आवे उसे उसीमें मिला देने पर तेजोलेदयासे युक्त असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवधारकाल होता है । इसे आवलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर पञ्चलेदयासे युक्त असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवधारकाल होता है । इसे आवलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर कापोतलेदयासे युक्त असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवधारकाल होता है । इसे आवलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर वृष्णलेदयासे युक्त असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवधारकाल होता है । इसे आवलीके असख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लघ आवे उसे उसीमें मिला देने पर नीलेदयासे युक्त असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवधारकाल होता है । इसे आवलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर शुक्लेदयासे युक्त असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवधारकाल होता है । इन अपने अपने असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवधारकालोंको आवलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर अपने अपने सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवधारकाल होता है । इन अपने अपने सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवधारकालको

सखेज्जरूपेहि गुणिदे सग-सगमामणसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । तेसु आवलियाए असखेज्जदिभाएण गुणिदेसु तेउ-पम्मलेस्सियमजंदापजदअवहारकालो होदि । णवरि सुक्कलेस्सियमजदसम्माइड्डिअवहारकाले सखेज्जरूपेहि गुणिदे सुक्कमिच्छाइड्डिअवहारकालो होदि । तम्हि आपलियाए असखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइड्डिअवहारकालो होदि । तम्हि आपलियाए असखेज्जदिभाएण गुणिदे सुक्कलेस्सियमजदसंजदअवहारकालो होदि । सग-सग-अवहारकालेण पलिदोममे भागे हिदे सग-सगरामिणो इंतंति ।

पमत्त-अप्पमत्तसंजदा द्व्यपमाणेण केवडिया, संखेज्जा' ॥१७०॥

एदे दो वि रासिणो ओघपमाण ण पावति, तेउ-पम्मसुक्कलेस्सासु अकमेण विहजिय डिदत्तादो । सेस सुगेज्जं ।

अपुव्वकरणप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि ति ओघं ॥१७१॥

सख्यातसे गुणित करने पर अपने अपने सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इन्हें अर्थात् तेजोलेद्यावाले और पद्मलेद्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालोंको आवलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर तेजोलेद्यावाले और पद्मलेद्यावाले सयतासयतोंके अवहारकाल होते हैं। इतना विशेष है कि शुक्कलेद्यावाले असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको सख्यातसे गुणित करने पर शुक्कलेद्यावाले मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर शुक्कलेद्यावाले सम्यग्मिथ्या-दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे सख्यातसे गुणित करने पर शुक्कलेद्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर शुक्कलेद्यावाले सयतासयतोंका अवहारकाल होता है। इस अपने अपने अवहार-कालसे पल्योपमके भाजित करने पर अपनी अपनी राशिका प्रमाण आता है।

शुक्कलेद्यावाले प्रमत्तसयत और अप्रमत्तसयत जीव द्व्यपमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात है ॥ १७० ॥

शुक्कलेद्यासे युक्त प्रमत्तसयत और अप्रमत्तसयत ये दोनों राशिया ओघप्रमाणको प्राप्त नहीं होती हैं, क्योंकि, प्रमत्तसयत और अप्रमत्तसयत गुणस्थानमें जीव तेजोलेद्या, पद्मलेद्या और शुक्कलेद्यामें युगपत् विभक्त होकर स्थित है। शेष कथन सुग्राह्य है।

शुक्कलेद्यावाले जीव अपूर्णकरण गुणस्थानमें लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७१ ॥

१ प्रमत्ताप्रमत्तसयता सख्याया स मि १, ८

२ अपूर्णकरणदय, सयोगिकेवत्यता अलेद्याश्च सामायोकरस्यता । स मि १, ८

कुदो ? अण्णलेस्माभावादो । अजोगिणो अलेस्सिया । कुदो ? कम्मलेअण्णमित्त-
जोग कमायामा । जोगम्म कथ लेस्मानवएमो ? ण, लिपदि ति जोगस्स पि लेस्सा-
ववएमसिद्वीदो ।

भागभाग वचइस्सामो । सव्वजीनराग्गिमणत्तखडे कए बहुखडा तिलेस्सिया हँति ।
सेसमणत्तखडे कए बहुखडा अलेस्सिया हँति । सेस सखेज्जखडे कए बहुखडा तेउ-
लेस्सिया हँति । सेसमसंखेज्जखडे कए बहुखडा पम्मलेस्सिया । सेसेगभागो सुक्क-
लेस्सिया । तिलेस्सियरासिमात्रलियाए अमखेज्जदिभाएण खडेऊण तत्थेगखड तदो पुत्र
इणिय सेसे बहुभागे धेत्तूण तिण्णि समपुंज करिय अण्णिदेगखडमावलियाए असखेज्जदि-
भाएण खंडिय तत्थ बहुखडे पढमपुजे पक्खित्ते ऋण्णलेस्सिया । सेसेगखडमावलियाए
असखेज्जदिभागेण खडिय बहुखडे विदियपुजे पक्खित्ते णीललेस्सिया । सेसेगखड
तदियपुजे पक्खित्ते काउलेस्सिया । तदो काउलेस्सियरासिमणत्तखडे कए बहुखडा मिच्छा-
इद्विणो । सेसमसखेज्जखडे कए बहुखडा असजदसम्माइद्विणो । सेस संखेज्जखंडे कए

धूकि अपूर्वकरण आदि गुणस्थानोंमें शुक्ललेद्याको छोड़कर दूसरी लेद्या नहीं पाई
जाती है, इसलिये अपूर्वकरण आदि गुणस्थानोंमें ओघप्रमाण ही शुक्ललेद्यायालोंका प्रमाण
है। अयोगी जीव लेद्यारहित है, क्योंकि, अयोगी गुणस्थानमें कर्मलेपका कारणभूत योग और
कपाय नहीं पाया जाता है ।

शुका—केवल योगको लेद्या यह सक्षा कैसे प्राप्त हो सकती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, 'जो लिपन करती है वह लेद्या है' इस निकटिके
अनुसार योगके भी लेद्या संज्ञा सिद्ध हो जाती है ।

अब भागाभागको यतलाते हैं—सर्व जीवराशिके अनन्त खड करने पर बहुभाग-
प्रमाण कृष्ण, नील और कापोत इन तीन लेद्यावाले जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खड
करने पर बहुभाग लेद्यारहित जीव हैं । शेष एक भागके सव्वयात खड करने पर बहुभाग
तेजोलेद्यावाले जीव हैं । शेष एक भागके असख्यात खड करने पर बहुभाग पञ्चलेद्यावाले
जीव हैं । शेष एक भागप्रमाण शुक्ललेद्यावाले जीव हैं । कृष्ण, नील और कापोत इन तीन
लेद्यासे युक्त जीवराशिको आवलीके असंख्यातयें भागसे खंडित करके उनमेंसे एक खडको
पृथक् स्थापित करके और शेष बहुभागके समान तीन पुज करके घट(कर पृथक् रखके हुए
एक खंडको आवलीके असंख्यातयें भागसे खंडित करके घटा जो बहुभाग आवे उसे प्रथम पुजमें
मिला देने पर कृष्णलेद्यावाले जीवोंका प्रमाण होता है । शेष एक भागको आवलीके
असंख्यातयें भागसे खंडित करके बहुभाग दूसरे पुजमें मिला देने पर नीललेद्यावाले
जीवोंका प्रमाण होता है । शेष एक भाग तीसरे पुजमें मिला देने पर कापोतलेद्यावाले
जीवोंका प्रमाण होता है । अनन्तर कापोतलेद्यावाली राशिके अनन्त खड करने पर बहुभाग
मिष्पाद्ये जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खड करने पर बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि

बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्टिणो । सेसेगखंडं सासणसम्माइट्टिणो । एवं णील-किण्हलेस्साणं वि भागाभाग कायवणं । तेउलेस्सियरासिमसखेज्जखंडं कए बहुखंडा मिच्छाइट्टिणो । सेसम-संखेज्जखंडं कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्टिणो । मेसं सखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मा-मिच्छाइट्टिणो । सेसमसखेज्जखंडं कए बहुखंडा सासणसम्माइट्टिणो । सेसमसखेज्जखंडं कए बहुखंडा संजदामजदा । सेसेगभागो पमचापमत्तसजदा । पम्मलेस्सियरासिमसंखेज्ज-खंडं कए बहुखंडा मिच्छाइट्टिणो । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्टिणो । सेस सखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्टिणो । सेसमसखेज्जखंडं कए बहुखंडा सासणसम्माइट्टिणो । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखंडा सजदासजदा । सेसेगभागो पमचा-पमत्तसजदा । सुकलेस्सियरासिं सखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्टिणो । सेसम-सखेज्जखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्टिणो । सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छा-इट्टिणो । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्टिणो । सेसमसखेज्जखंडं कए बहुखंडा सजदासंजदा । सेसेगभागो पमचापमत्तादओ ।

- अप्पावहुग तिविहं सत्थाणाटिभेएण । सत्थाणे पयदं । किण्ह-णील-काउलेस्सिय-

जीव हैं । शेष एक भागके सख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिध्यादष्टि जीव हैं । शेष एक भाग प्रमाण सासादनसम्यग्दष्टि जीव हैं । इसीप्रकार नील और कापोतलेद्या-धालोंका भी भागाभाग कर लेना चाहिये । तेजोलेद्याधाली जीवराशिके असख्यात खंड करने पर बहुभाग मिध्यादष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयत्सम्यग्दष्टि जीव हैं । शेष एक भागके सख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिध्यादष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग सासादनसम्यग्दष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग सयत्तासयत् जीव हैं । शेष एक भागप्रमाण प्रमत्तसयत् और अप्रमत्तसयत् जीव हैं । पम्मलेद्याधाली जीवराशिके असख्यात खंड करने पर बहुभाग मिध्यादष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयत्सम्यग्दष्टि जीव हैं । शेष एक भागके सख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिध्यादष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग सासादनसम्यग्दष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग सयत्तासयत् जीव हैं । शेष एक भागप्रमाण प्रमत्तसयत् और अप्रमत्तसयत् जीव हैं । शुक्लेद्यक राशिके सख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयत्सम्यग्दष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग मिध्यादष्टि जीव हैं । शेष एक भागके सख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिध्यादष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग सासादनसम्यग्दष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग सयत्तासयत् जीव हैं । शेष एक भागप्रमाण प्रमत्तसयत् भादि जीव हैं ।

स्वस्थान भादिके भेदसे अष्टपञ्चदश त्रीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वस्थानमें अष्टपञ्चदश

लेस्सियामिच्छाइडिअवहारकालो असखेज्जगुणो । उपरि सत्थाणभंगो । एअं पम्मलेस्माए । सुकलेस्माए सवत्थोवा चत्तारि उअसामगा । खग्गा सखेज्जगुणा । सजोगिकेवली सखेज्जगुणा । अप्पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । असजदसम्माइडिअवहारकालो अमखेज्जगुणो । मिच्छाइडिअवहारकालो सखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइडिअवहारकालो अमखेज्जगुणो । सामणसम्माइडिअवहारकालो सखेज्जगुणो । सजदामजदअवहारकालो असखेज्जगुणो । तस्सेअ द्वयमसखेज्जगुण । एवमवहारकालपडिलोमेण णेयव्व जाअ पलिदोअमं ति । परत्थाण गद ।

सवत्थपरत्थाणे पयद । सवत्थोवा चत्तारि उअसामगा । खग्गा मखेज्जगुणा । सजोगिकेवली सखेज्जगुणा । सुकलेस्मियअप्पमत्तसजदा मखेज्जगुणा । पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । पम्मलेस्मियअप्पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । तेउलेस्सियअप्पमत्तमजदा सखेज्जगुणा । पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । तेउलेस्मियअसजदसम्माइडिअवहारकालो असखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइडिअवहारकालो असखेज्जगुणो । सासणसम्मा-

तेजोलेदयक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । इसके ऊपर स्वस्थान अल्प बहुत्वके समान कथन करना चाहिये । इसीप्रकार पञ्चलेदयके परस्थान अल्पगुहृत्यका कथन करना चाहिये । शुक्लेदयामें चारों उपशामक सखसे स्तोक हैं । क्षपक उपशामकोंसे सख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली जीव क्षपकोंसे सरयातगुणे हैं । अप्रमत्तसयत जीव सयोगिकेवलियोंसे सख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसयत जीव अप्रमत्तसयतोंसे सरयातगुणे हैं । असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल प्रमत्तसयतोंसे असख्यातगुणा है । मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे सख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे असख्यातगुणा है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे सख्यातगुणा है । सयतासयताका अवहारकाल सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असख्यातगुणा है । उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असख्यातगुणा है । इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोम क्रमसे पद्योपमतक ले जाना चाहिये । इसप्रकार परस्थान अल्पगुहृत्य समाप्त हुआ ।

अथ सर्व परस्थानमें अल्पगुहृत्य प्रकृत है- चारों उपशामक सखसे स्तोक हैं । क्षपक उपशामकोंसे सख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली सख्यातगुणे हैं । शुक्लेदयक अप्रमत्तसयत जीव सयोगियोंसे सरयातगुणे हैं । प्रमत्तसयत जीव अप्रमत्तसयतोंसे सख्यातगुणे हैं । पञ्चलेदयक अप्रमत्तसयत जीव शुक्लेदयक प्रमत्तसयतोंसे सख्यातगुणे हैं । पञ्चलेदयक प्रमत्तसयत जीव पञ्चलेदयक अप्रमत्तसयत जीवोंसे सख्यातगुणे हैं । तेजोलेदयक अप्रमत्तसयत जीव पञ्चलेदयक प्रमत्तसयत जीवोंसे सख्यातगुणे हैं । तेजोलेदयक प्रमत्तसयत जीव तेजोलेदयक अप्रमत्तसयतोंसे सख्यातगुणे हैं । तेजोलेदयक असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल तेजोलेदयक प्रमत्तसयतोंसे असख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि

मिच्छाद्दृष्टिण सत्थाणं णत्थि, रासीदो योउदरभागहाराभावा । सासणादीणमोघभंगो ।
सव्वत्थोवो तेउलेस्सिमयमिच्छाद्दृष्टिअणहारकालो । निक्खमसखेज्जगुणा । सेढी
असखेज्जगुणा । दव्वमसखेज्जगुण । पदरमसखेज्जगुण । लोगो असखेज्जगुणो । सास
णादीणमोघ । एवं चैव पम्म-सुधलेस्साण सत्थाण वत्तव्व । सत्थाण गदं ।

परत्थाणे पयद । सव्वत्थोवो काउलेस्सियअमजदसम्माड्ढिअणहारकालो । सम्मा
मिच्छाद्दृष्टिअणहारकालो असखेज्जगुणो । सासणमम्माड्ढिअणहारकालो सखेज्जगुणो । तस्सेव
दव्वमसखेज्जगुण । एउ णेयव्व जाउ पलिदोअम ति । तदो काउलेस्सियमिच्छाद्दृष्टिणो
अणतगुणा । एउ णील किण्हाण । सव्वत्थोवो तेउलेस्सियअपमत्तसजदा । पमत्तसजदा
सखेज्जगुणा । असजदसम्माड्ढिअणहारकालो असखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाद्दृष्टिअणहारकालो
असखेज्जगुणो । सासणसम्माड्ढिअणहारकालो सखेज्जगुणो । संजटासजदअणहारकालो
असखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसखेज्जगुण । एउ णेयव्व जाउ पलिदोअम ति । तदो तेउ-

प्रकृत है— वृष्ण, नील और कापोतलेश्याघालोंके स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है,
क्योंकि वृष्ण नील और कापोतलेश्याक राशियोंसे उनके भागहार स्तोक नहीं है । सासादन
सम्यग्दृष्टि आदिके स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान हैं । तेजोलेश्याक
मिथ्यादृष्टियोंका अघहारकाल सत्रसे स्तोक है । उर्द्धांगी विष्कभसूची अणहारकालसे असख्यात
गुणी है । जगध्रेणी विष्कभसूचासे असख्यातगुणी है । द्रव्य जगध्रेणीसे असख्यातगुणा है ।
जगप्रतर द्रव्यसे असख्यातगुणा है । लोक जगप्रतरसे असख्यातगुणा है । सासादनसम्यग्दृष्टि
आदिका स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । इसीप्रकार पद्मलेश्या
और शुकुलेश्याघालोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । इसप्रकार स्वस्थान
अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अत्र परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— कापोतलेश्याक असयतसम्यग्दृष्टियोंका अघ
हारकाल सत्रसे स्तोक है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अणहारकाल असयतसम्यग्दृष्टियोंके
अघहारकालसे असख्यातगुणा है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अघहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके
अघहारकालसे असख्यातगुणा है । उर्द्धांगी द्रव्य अघहारकालसे असख्यातगुणा है । इसीप्रकार
पश्योपमतक ले जाना चाहिये । पश्योपमतसे कापोतलेश्याक मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं ।
इसीप्रकार नील और वृष्णलेश्याक जीवोंके परस्थान अल्पबहुत्वका भी कथन करना चाहिये ।
तेजोलेश्याक अप्रमत्तसयत जीव सत्रसे स्तोक है । प्रमत्तसयत जीव अप्रमत्तसयतोंसे सख्यात
गुणे हैं । असयतसम्यग्दृष्टियोंका अघहारकाल प्रमत्तसयतोंसे असख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्या
दृष्टियोंका अघहारकाल असयतसम्यग्दृष्टियोंके अघहारकालसे असख्यातगुणा है । सासादन
सम्यग्दृष्टियोंका अघहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अणहारकालसे असख्यातगुणा है । सयत
सयतोंका अघहारकाल सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अघहारकालसे असख्यातगुणा है । उर्द्धांगी
द्रव्य अघहारकालसे असख्यातगुणा है । इसीप्रकार पश्योपमतक ले जाना चाहिये । पश्योपमतसे

लेस्सियमिच्छाइडिअवहारकालो असखेज्जगुणो । उतरि सत्थाणभंगो । एतं पम्मलेस्साए । सुकलेस्साए सवत्थोना चत्तारि उरसामगा । खग्गा सखेज्जगुणा । सजोगिकेनली सखेज्जगुणा । अप्पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । पमत्तसजदा संखेज्जगुणा । अमजदसम्माइडिअवहारकालो असखेज्जगुणो । मिच्छाइडिअवहारकालो सखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइडिअवहारकालो असखेज्जगुणो । सासणसम्माइडिअवहारकालो सखेज्जगुणो । सजदामंजदअवहारकालो असखेज्जगुणो । तस्सेए दवमसखेज्जगुण । एवमवहारकालपडिलोमेषणेयव्वं जाव पलिदोम ति । परत्थाण गद ।

सवपरत्थाणे पयद । सवत्थोना चत्तारि उरसामगा । खग्गा सखेज्जगुणा । सजोगिकेनली सखेज्जगुणा । सुकलेस्सियअप्पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । पम्मलेस्सियअप्पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । तेउलेस्सियअप्पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । तेउलेस्सियअसजदमम्माइडिअवहारकालो असखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइडिअवहारकालो असखेज्जगुणो । सासणसम्मा-

तेजोलेदयक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इसके ऊपर स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान कथन करना चाहिये । इसीप्रकार पद्मलेदयके परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । शुक्लेदयमें चारों उपशामक सखे स्तोक हैं । क्षपक उपशामकोंसे सख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली जीव क्षपकोंसे सख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसयत जीव सयोगिकेवलियोंसे सख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसयत जीव अप्रमत्तसयतोंसे सख्यातगुणे हैं । असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल प्रमत्तसयतोंसे असख्यातगुणा है । मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे सख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे असख्यातगुणा है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे सख्यातगुणा है । सयतासयताका अवहारकाल सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असख्यातगुणा है । उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असख्यातगुणा है । इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोम क्रमसे पर्योपमतरु ले जाना चाहिये । इसप्रकार परस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अब सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है- चारों उपशामक सखे स्तोक हैं । क्षपक उपशामकोंसे सख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली सख्यातगुणे हैं । शुक्लेदयक अप्रमत्तसयत जीव सयोगियोंसे सख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसयत जीव अप्रमत्तसयतोंसे सख्यातगुणे हैं । पद्मलेदयक अप्रमत्तसयत जीव शुक्लेदयक प्रमत्तसयतोंसे सख्यातगुणे हैं । पद्मलेदयक प्रमत्तसयत जीव पद्मलेदयक अप्रमत्तसयत जीवोंसे सख्यातगुणे हैं । तेजोलेदयक अप्रमत्तसयत जीव पद्मलेदयक प्रमत्तसयत जीवोंसे सख्यातगुणे हैं । तेजोलेदयक प्रमत्तसयत जीव तेजोलेदयक अप्रमत्तसयतोंसे सख्यातगुणे हैं । तेजोलेदयक असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल तेजोलेदयक प्रमत्तसयतोंसे असख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि

इष्टिअवहारकालो सखेज्जगुणो । पम्मलेस्सियअसजदसम्माइष्टिअवहारकालो असखेज्जगुणो ।
सम्मामिच्छाइष्टिअवहारकालो असखेज्जगुणो । सासणमम्माइष्टिअवहारकालो सखेज्जगुणो ।
काउलेस्सियअमंजदसम्माइष्टिअवहारकालो असखेज्जगुणो । किण्हलेस्सियअसजदसम्माइष्टि-
अवहारकालो असखेज्जगुणो । नीललेस्सियअसजदसम्माइष्टिअवहारकालो निसेमाहिओ ।
काउलेस्सियमम्मामिच्छाइष्टिअवहारकालो अमखेज्जगुणो । सासणसम्माइष्टिअवहारकालो
सखेज्जगुणो । किण्हलेस्सियसम्मामिच्छाइष्टिअवहारकालो अमखेज्जगुणो । नीललेस्सिय-
सम्मामिच्छाइष्टिअवहारकालो निसेसाहिओ । किण्हलेस्सियमासणसम्माइष्टिअवहारकालो
सखेज्जगुणो । नीललेस्सियसासणसम्माइष्टिअवहारकालो निसेसाहिओ । तेउलेस्सियसजदा-
सजदअवहारकालो असखेज्जगुणो । पम्मलेस्सियसंजदामंजदअवहारकालो सखेज्जगुणो ।

योंका अवहारकाल असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असख्यातगुणा है । सासा-
दनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे सख्यातगुणा है ।
पद्मलेद्यक असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल तेजोलेद्यक सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहार-
कालसे असख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असयतसम्यग्दृष्टियोंके
अवहारकालसे असख्यातगुणा है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके
अवहारकालसे सख्यातगुणा है । कापोतलेद्यक असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल
पद्मलेद्यक सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असख्यातगुणा है । कृष्णलेद्यक असयत
सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल कापोतलेद्यक असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असख्यात
गुणा है । नीललेद्यक असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल कृष्णलेद्यक असयतसम्यग्दृष्टि-
अवहारकालसे विशेष अधिक है । कापोतलेद्यक सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल नीललेद्यक
असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असख्यातगुणा है । कापोतलेद्यक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका
अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संबद्यागुतणा है । कृष्णलेद्यक सम्यग्मिथ्या
दृष्टियोंका अवहारकाल कापोतलेद्यक सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असख्यातगुणा
है । नीललेद्यक सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल कृष्णलेद्यक सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके
अवहारकालसे विशेष अधिक है । कृष्णलेद्यक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल
नीललेद्यक सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे सख्यातगुणा है । नीललेद्यक सासादन
सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल कृष्णलेद्यक सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे विशेष
अधिक है । तेजोलेद्यक सयतासयतोंका अवहारकाल नीललेद्यक सासादनसम्यग्दृष्टियोंके
अवहारकालसे असख्यातगुणा है । पद्मलेद्यक सयतासयतोंका अवहारकाल तेजोलेद्यक
सयतासयतोंके अवहारकालसे सख्यातगुणा है । शुक्ललेद्यक असयतसम्यग्दृष्टियोंका

सुकलेस्सियअसंजदसम्माइड्डिअवहारकालो असखेज्जगुणो । सुकलेस्सियमिच्छाइड्डिअवहार-
 कालो सखेज्जगुणो । सुकलेस्सियमम्माभिच्छाइड्डिअवहारकालो असखेज्जगुणो । सुकलेस्सिय-
 सासणसम्माइड्डिअवहारकालो संखेज्जगुणो । सुकलेस्सियमंजदासंजदअवहारकालो असखेज्ज-
 गुणो । तस्सेव दव्वमसखेज्जगुण । एवमवहारकालपडिलोमेण षोद्वं जाय पलिदानं ति ।
 तदेा तेउलेस्सियमिच्छाइड्डिअवहारकालो असखेज्जगुणो । पम्मलेस्सियमिच्छाइड्डिअवहारकालो
 सखेज्जगुणो । तस्मेअ पिक्खमसूई असखेज्जगुणा । तेउलेस्सियमिच्छाइड्डिविक्खंमसूई सखेज्ज-
 गुणा । सेढी असखेज्जगुणा । पम्मलेस्सियमिच्छाइड्डिदव्वमसखेज्जगुण । तेउलेस्सियमिच्छा-
 इड्डिदव्व सखेज्जगुण । पदरमसखेज्जगुण । लोगो असखेज्जगुणो । अलेस्सिया अणंतगुणा ।
 काउलेस्सिया अणतगुणा । नीललेस्सिया विसेसाहिया । णिण्हेलेस्सिया विसेसाहिया । एसो
 सव्वपरत्थाणअप्पाअहुओ गुरूअएसेण लिहिदो, णत्थि एत्थ सुत्तजुत्ती वक्खणं वा ।

एअ लेस्साणुवादो गदो ।

अवहारकाल पद्मलेश्यक सयतासयतोंके अवहारकालसे असख्यातगुणा है । शुक्ललेश्यक
 मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल उर्द्धोंके असयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे सख्यातगुणा है ।
 शुक्ललेश्यक सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल उर्द्धोंके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे असख्यात-
 गुणा है । शुक्ललेश्यक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल उर्द्धोंके सम्यग्मिथ्यादृष्टि अष-
 हारकालसे सख्यातगुणा है । शुक्ललेश्यक सयतासयतोंका अवहारकाल उर्द्धोंके सासादन
 सम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असख्यातगुणा है । उर्द्धोंका द्रव्य पत्योपमसे असख्यातगुणा है ।
 इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोम क्रमसे पत्योपमतक ले जाना चाहिये । पत्योपमसे
 तेजोलेश्यक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । पद्मलेश्यक मिथ्यादृष्टियोंका
 अवहारकाल तेजोलेश्यक मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे सख्यातगुणा है । उर्द्धोंकी विष्कभसूची
 अवहारकालसे असख्यातगुणी है । तेजोलेश्यक मिथ्यादृष्टि जीवोंकी विष्कभसूची पद्मलेश्यक
 जीवोंकी विष्कभसूचीसे सख्यातगुणी है । जगत्रेणी तेजोलेश्यक विष्कभसूचीसे असख्यातगुणी
 है । पद्मलेश्यक मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य जगत्रेणसे असख्यातगुणा है । तेजोलेश्यक मिथ्यादृष्टि
 जीवोंका द्रव्य पद्मलेश्यक मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे सख्यातगुणा है । जगत्रतर तेजोलेश्यक द्रव्यसे अस-
 ख्यातगुणा है । लोक जगत्रतरसे असख्यातगुणा है । लेद्यारहित जीव लोकसे अनन्तगुणे हैं ।
 कापोतलेश्यक जीव लेद्यारहित जीवोंसे अनन्तगुणे हैं । नीललेष्पाचाले जीव कापोतलेश्यक
 जीवोंसे विशेष अधिक हैं । कृष्णलेश्यक जीव नीललेश्यक जीवोंसे विशेष अधिक हैं ।
 यह सर्व परस्थान अल्पबहुत्व गुरुके उपदेशसे लिखा है । परंतु इस विषयमें सूत्रयुक्ति
 मयथा व्याख्यान नहीं पाया जाता है ।

इसप्रकार लेद्यालुधाद् समाप्त हुआ ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिणसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगि-
केवलि ति ओघं ॥ १७२ ॥

एदस्म सुचस्म अत्थो सुगमो । णररि अभवसिद्धियसहिदसिद्ध तेरसगुणपडिवण्ण-
रामिं भवसिद्धियमिच्छाइट्ठिभजिद तेमिं उग्ग च सव्वजीवराशिस्सुवरि पक्खिस्सत्ते भवसिद्धिय
मिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि ।

अभवसिद्धिया दच्चपमाणेण केवडिया, अणंतां ॥ १७३ ॥

एत्थ अणतउयण ससेज्जनामसेज्जपडिमेहफल । एत्थ कालपमाणं सुत्ते किमिदि ण
वुत्त ? ण एस दोतो, अभवसिद्धियाण वयाभारा । वयाभातो रिं तेमिं मोक्खामारादो
अरगम्मदे ।

सेत्तपमाण किमिदि ण वुत्त इदि चेण, अपरिप्फुडस्स अत्थस्स फुडंकरणद्ध

भव्यमार्गगाके अनुवादसे भव्यसिद्धिकोमं मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेऊर अयोगि
केवली गुणस्थानतरु प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७२ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है । इतना विशेष है कि अव्यवसिद्धिक जीवराशिसहित
सिद्धराशि और तेरह गुणस्थानप्रतिपन्न जीवराशिको तथा उक्त राशियोंके घर्गमें भव्यसिद्धिक
मिथ्यादृष्टि राशिका भाग देनेसे जो लघ्व आवे उसे सर्व जीवराशिमें मिला देने पर
भव्यसिद्धिक मिथ्यादृष्टि ध्रुवराशि होती है ।

अभव्यसिद्धिक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं ॥ १७३ ॥

यहा सूत्रमें अनन्त यह ध्वनन सख्यात ओर धनख्यातके प्रतिषेधके लिये दिया है ।

शुक्रा — यहा भव्य मार्गणामें अव्यव्योका प्रमाण कहते समय सूत्रमें कालकी अपेक्षा
प्रमाण क्यों नहीं कहा ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, अव्यव्यव्योका व्यय नहीं होता । उनका
व्यय नहीं होता है यह कथन उनको मोक्षकी प्राप्ति नहीं होती है इससे जाना जाता है ।

शुक्रा — अव्यव्योका प्रमाण क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा क्यों नहीं कहा ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, जो अर्थ अपरिस्फुट हो उसके स्फुट करनेके लिये

१ मव्याणुवादन म षु मिथ्यादृष्ट्यादया योगवेव यता सामायोतवरया । स सि १, ८ ठेण
विदिणो धञ्जो ससारा मव्वरापिस्स ॥ गो जी ५६०

२ अमया अनता । स सि १, ८ अवतो उच्चारणतो अमवरासिस्स होदि परिमाण ॥ गो जी ५६०

३ प्राविणु ' वयामावादि ' इति पाठ ।

स्वेत्तपमाण वृच्छेद । एसो पुण अभमसिद्धियरासिपमाणं सुहु परिष्फुडो । कुदो ? अभव-
सिद्धियरासिपमाण जहणजुत्ताणंत्तमिदि सयलाहरियजयप्पसिद्धादो ।

भागाभाग वत्तइस्सामो । सच्चजीवरासिमणंतखडे कए बहुरखंडा भवमिद्धियमिच्छा-
इट्ठिणो । सेसमणतखडे कए बहुरखंडा णेय भमसिद्धिया णेय अभवसिद्धिया । सेसमणंतखडे
कए बहुरखंडा अभमसिद्धिया । सेसमसखेज्जखडे कए बहुरखंडा असजदसम्माइट्ठिणो ।
सेसमोषभंगो ।

अप्पात्रहुग तिप्पिट्ठ सत्थाणादिभेएण । भमसिद्धियसत्थाण परत्थाणं मिच्छाइट्ठि-
प्पहुडि जाय अजोगिकेनलि त्ति ओघ । जभमसिद्धियसत्थाणं णत्थि ।

सच्चपरत्थाणे सच्चत्थोना अजोगिकेनली । चत्तारि उत्रसामगा सखेज्जगुणा । एव
जाय पल्लिदोयमं ति णेयव्वं । तदो अभमसिद्धिया अणंतगुणा । णेय भमसिद्धिया णेय
अभमसिद्धिया अणतगुणा । भमसिद्धियमिच्छाइट्ठि अणतगुणा ।

एव भ्रियमगणा समत्ता ।

क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण कहा जाता है । परन्तु यह अभव्यसिद्धिक राशिका प्रमाण अत्यन्त स्फुट
है, क्योंकि, अभव्यसिद्धिक राशिका प्रमाण जघन्य युक्तान्त है, यह सर्व आचार्य जगत्में
प्रसिद्ध है ।

अथ भागाभागको वतलाते ह— सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग
भव्यसिद्धिक मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग भव्यसिद्धिक
और अभव्यसिद्धिक चिकल्परहित जीव होते हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर
बहुभाग अभव्यसिद्धिक जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग असंख्य-
सम्पन्नाष्टि जीव हैं । शेष भागाभाग ओघ भागाभागके समान है ।

स्वस्थान अल्पबहुत्व आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे भव्य-
सिद्धिक जीवोंका स्वस्थान आर परस्थान अल्पबहुत्व मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर
अयोगिकेवली गुणस्थानतक ओघ स्वस्थान और परस्थान अल्पबहुत्वके समान है ।
अभव्यसिद्धिक जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है ।

सर्व परस्थान अल्पबहुत्वमें अयोगिकेवली जीव सबसे स्तोका हैं । चारों उपनामक
अयोगियोंसे सख्यातगुणे हैं । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे अभव्य
सिद्धिक जीव अनन्तगुणे हैं । भमसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक विकल्पसे रक्षित जीव
अभव्यसिद्धिक जीवोंसे अनन्तगुणे हैं । भव्यसिद्धिक मिथ्यादृष्टि जीव अभव्योंसे अनन्तगुणे हैं ।

इसप्रकार भव्यमार्गणा समाप्त हुई ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्टीसु असंजदसम्माइट्टिप्पहुडि जाव
अजोगिकेवालि त्ति ओघ ॥ १७४ ॥

केण कारणेण ? सम्मत्तमामण्णेण अहियारादे । ण हि सामण्णमदिरिचो तच्चिसेसो
अत्थि । तम्हा ओघपरूवणा चेय णिरवयया एत्थ वत्तव्या ।

खइयसम्माइट्टीसु असजदसम्माइट्टी ओघ ॥ १७५ ॥

जदि मि एसो खइयसम्माइट्टिरासी ओघअसजदसम्म इट्टिरासिस्स असंखेज्जदि-
भागमेचो, तो वि ओघपरूवण लभेदे, पलिदोमस्स असंखेज्जदिभागमेत्त पडि विसेसा-
मावा ।

सजदासंजदप्पहुडि जाव उवसंतकसायवीदरागछट्टुमत्था दव्व-
पमाणेण केवडिया, सखेज्जा ॥ १७६ ॥

सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादेसे सम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर
अयोगिकेवली गुणस्थानतरु जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७४ ॥

शंका—सम्यक्त्वी जीव असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुण
स्थानतरु ओघप्ररूपणाके समान किस कारणसे हैं ?

समाधान—क्योंकि, यहा पर सम्यक्त्व सामान्यका अधिकार है । सामान्यको
छोड़कर उसके विशेष नहीं पाये जाते हैं । इसलिये ओघप्ररूपणा ही विशेष यहा पर कहना
चाहिये ।

ध्यायिकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७५ ॥

यद्यपि यह ध्यायिक असंयतसम्यग्दृष्टिराशि ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि राशिके अस-
ख्यातयें भगमात्र है तो भी यह ओघप्ररूपणाको प्राप्त होती है, क्योंकि, पल्लोपमके
असख्यातयें भागत्वके प्रति उक्त दोना राशियोंमें कोई विशेषता नहीं है ।

संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकपाय वीतराग छद्मस्थ गुणस्थानतरु
ध्यायिकसम्यग्दृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? मख्यात हैं ॥ १७६ ॥

१ प्रतिपु '—केवली' इति पाठ ।

२ सम्यक्त्वानुवादन ध्यायिकसम्यग्दृष्टिपु असंयतसम्यग्दृष्टय पल्लोपमावरयेयमागप्रमिता । स ति १, ८
बाधमुचते सरया सखेजा जइ इवति साइम्म । तो सखपल्लठिदिये क्वदिया एवमशुपादे ॥ सखालिहिदपल्ला
सरया ॥ गो की ६५७-६५८

३ संयतासंयतदय वपशान्तकपायान्ता सरया । स ति १, ८

सजोगिकेवली ओघं ॥ १७८ ॥

हुदो ? सडयसम्मत्तेण विणा सजोगिकेवलीणमणुलभा ।

वेदगसम्माइट्टीसु असजदसम्माइट्टिप्पहुडि जाव अप्पमतसंजदा
त्ति ओघं ॥ १७९ ॥

एत्थ ओघरासी चेव त्योणुणो वेदगरासी होदि तेणोघत्त ण विरुज्झदे ।

उवसमसम्माइट्टीसु असजदसम्माइट्टि-सजदासंजदा ओघं ॥ १८० ॥

एदे दो वि रासीओ ओघअसजदसम्माइट्टि सजदासजदाणममसेज्जदिभागमेत्ता जदि
वि हाति, तो वि पल्लिदोमसस असरेज्जदिभागत्तेण समाणत्तमत्थि त्ति ओघमिदि भणिद ।
सेसं सुगम ।

यिमात्तिका निर्देश नहीं बन सकता है । अर्थात् सूत्रमें आया हुआ 'सउण्ह' यह पद प्रथमा
यिमात्तरूप है, पछी नहीं, इसलिये गुणस्थानोंका विशेषण नहीं हो सकता है । शेष कथन
सुगम है ।

सयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान है ॥ १७८ ॥

चूकि सयोगिकेवली जीव क्षायिकसम्यक्त्वके विना नहीं पाये जाते है, इसलिये
उनका प्रमाण ओघप्ररूपणाके समान है ।

वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसयत गुण-
स्थानतक जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७९ ॥

असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसयत गुणस्थानतक ओघराशि ही कुछ
कम वेदकसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है, इसलिये ओघत्व विरोधको प्राप्त नहा होता है ।

उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें असयतसम्यग्दृष्टि और सयतासयत जीव ओघप्ररूपणाके
समान हैं ॥ १८० ॥

ये दोनों भी राशिया ओघ असयतसम्यग्दृष्टि और सयतासयतोंके असत्प्रातर्वें भाग
प्रमाण होती हैं, तो भी पक्ष्योपमके असत्प्रातर्वें भागत्वकी अपेक्षा उपशमसम्यग्दृष्टि असयत
सम्यग्दृष्टि और सयतासयतोंकी ओघ असयतसम्यग्दृष्टि और सयतासयतोंके साथ समानता
है, इसलिये सूत्रमें 'ओघ' ऐसा कहा है । शेष कथन सुगम है ।

१ क्षायोपमसम्यग्दृष्टियु असयतसम्यग्दृष्टिपादयोऽप्रमत्तात्ता साम्रायोत्तरया । स. सि. १, ८ तयो
य वेदमुत्रमया । आकलिअमसगुणिदा अससगुणर्दीणया कमनी ॥ यो जी ६५८

२ प्रतियु 'त्थात्ती' इति पाठ ।

३ अपक्षयिकसम्यग्दृष्टियु असयतसम्यग्दृष्टिसयतासयता पक्ष्योपमास्येयमागप्रतिता । स. सि. १, ८

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव उवसंतकसायवीदरागच्छुमत्था त्ति दव्व-
पमाणेण केवडिया, संखेज्जा' ॥ १८१ ॥

एत्थ सखेज्जयण ओघपमाणपडिमेहफल । ओघद्व्यपमाणं ण भवेदि त्ति कध-
मग्गम्मदे ? ओघपमत्तादिरामिस्स सखेज्जदिभागो तम्हि तम्हि उनसममम्माइड्डिरामी
होदि त्ति अप्पाअहुग्गयणाढो ।

सासणसम्माइड्डी ओघ ॥ १८२ ॥

सम्मामिच्छाइड्डी ओघं ॥ १८३ ॥

मिच्छाइड्डी ओघ' ॥ १८४ ॥

एदाणि तिण्णि नि सुत्ताणि ओघम्मि परुविदाणि त्ति णेह परुविज्जत्ति । एत्थ
अनहारकालुप्पायणनिहिं वत्तइस्सामो । ओघअसजदसम्माइड्डिअनहारकाले आपलियाए

प्रमत्तसयत गुणस्थानसे लेकर उपशान्तरूपाय वीतरागउग्रथ्य गुणस्थानतक
उपशमसम्यग्दष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सरयात है ॥ १८१ ॥

यदा सूत्रमें 'सख्यात है' यह वचन ओघप्रमाणके प्रतिषेधके लिये दिया है ।

शुका—प्रमत्तादि उपशातरूपाय गुणस्थानतक उपशमसम्यग्दष्टि जीव ओघ
द्रव्यप्रमाणको प्राप्त नहीं होते हैं, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—'ओघ प्रमत्तसयत आदि गुणस्थानवर्ती राशिके सख्यातवें भाग उस
उस गुणस्थानमें उपशमसम्यग्दष्टि जीव होते हैं' इस अल्पव्युत्तर अनुयोगद्वारके घचनसे
जाना जाता है कि प्रमत्तसयत आदि उपशान्तरूपायतक प्रत्येक गुणस्थानके उपशमसम्यग्दष्टि
जीव ओघप्रमाणको प्राप्त नहीं होते हैं ।

सासादनसम्यग्दष्टि जीव ओघप्ररूपणाके समान पत्योपमके असख्यातवें भाग
हैं ॥ १८२ ॥

सम्यग्मिथ्यादष्टि जीव ओघप्ररूपणाके मामन पत्योपमके असख्यातवें भाग
हैं ॥ १८३ ॥

मिथ्यादष्टि जीव ओघप्ररूपणाके समान अनन्तानन्त है ॥ १८४ ॥

इन तीनों सूत्रोंका प्ररूपण ओघप्ररूपणाके समय कर आये हैं, इसलिये यहाँ उनका
प्ररूपण नहीं करते हैं । अत्र यदा पर अन्वहारकालके उत्पन्न करनेकी विधिकी घतलाते हैं—

१ प्रमत्ताप्रमत्तसयतो सरयेया । चत्वार औपशमिका साधायोत्तमरया । स सि १, ८

२ सासादनसम्यग्दष्टय सम्यग्मिथ्यादष्टयो मिथ्यादष्टयश्च साधायोत्तमरया । स सि १, ८ पच्छा-
सखेज्जदिना सासणमिच्छा य सखगुणिदा ह । मिस्सा वेहिं विहीणो सत्ता वानपरिमाण ॥ गो जी ६५९

बहुखडा सम्भामिच्छाइडिणो । सेसमसखेजखडे कए बहुखडा सासणसम्भाइडिणो । सेसमसखेजखडे कए बहुखडा वेदगसम्भाइडिसजदासजदा । सेसमसखेजखडे कए बहुखडा उवसमसम्भाइडिसंजदासजदा । सेस सखेजखडे कए बहुखडा सइयसम्भाइडिसंजदासंजदा । सेस सखेजखडे कए बहुखडा पमत्तमंजदा । सेस सखेजखडे कए बहुखडा अप्पमत्तसजदा । सेस जाणिय वत्तव्वं ।

अप्यावहुग तिपिह सत्थाणादिभेएण । सव्वेमिं सत्थाणमोव । परत्थाणे पयद । सव्वत्थोवा वेदगसम्भाइडिअप्पमत्तमजदा । पमत्तमजदा सखेज्जगुणा । असजदमम्भाइडिअप्रहारकालो अमसखेज्जगुणो । सजदासजदअप्रहारकालो असखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसखेज्जगुण । एव णेयव्व जाव पलिदोयम ति । उवसमसम्भाइड्डीसु सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा । खगगा सखेज्जगुणा । अप्पमत्तसजदा मखेज्जगुणा । पमत्तसजदा मखेज्जगुणा । उवति वेदगपरत्थाणभगो । खइयमम्भाइड्डीसु सव्वत्थोवा चत्तारि उवसारगा । खगगा सखेज्जगुणा । अप्पमत्तमजदा सखेज्जगुणा । पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । सजदासंजदा सखेज्जगुणा । असजदमम्भाइडिअप्रहारकालो अमसखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वम-

भागके सख्यात खड करने पर बहुभाग सम्यग्मिच्छादि जीव ह । शेष एक भागके असख्यात खड करने पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हे । शेष एक भागके असख्यात खड करने पर बहुभाग वेदकसम्यग्दृष्टि सयतासयत जीव ह । शेष एक भागके असख्यात खड करने पर बहुभाग उपशमसम्यग्दृष्टि सयतासयत जीव ह । शेष एक भागके सख्यात खड करने पर बहुभाग क्षायिकसम्यग्दृष्टि सयतासयत जीव हे । शेष एक भागके सख्यात खड करने पर बहुभाग प्रमत्तसयत जीव ह । शेष एक भागके सख्यात खड करने पर बहुभाग अप्रमत्तसयत जीव ह । शेष भागाभागना कथन जानकर करना चाहिये ।

स्वस्थान अल्पबहुत्व आदिके भेदमे अल्पगुह्य तीन प्रकारका है । उनमेंसे सभीका स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघपरुणाके समान है । अथ परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रवृत्त है— वेदक सम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसयत जीव सबसे स्तोत्र हे । इनसे प्रमत्तसयत जीव सख्यातगुणे हैं । इनसे असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा हे । इन्में सयतासयतोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । उर्हींका द्रव्य अवहारकालमे असख्यातगुणा है । इसीप्रकार पत्योपमतरु ले जाना चाहिये । उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें चारों उपशामरु सबसे थोड़े ह । क्षपक सख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसयत जीव क्षपकोंसे सख्यातगुणे ह । प्रमत्तसयत जीव अप्रमत्तसयतोंसे सख्यातगुणे ह । इसके ऊपर वेदकसम्यग्दृष्टियोंके परस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये । क्षायिक सम्यग्दृष्टियोंमें चारों उपशामक सबसे स्तोत्र ह । क्षपक उनसे सख्यातगुणे ह । इनसे अप्रमत्तसयत सख्यातगुणे हे । इनसे प्रमत्तसयत सख्यातगुणे ह । इनसे सयतासयत सख्यातगुणे ह । इनसे असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा

असखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्ध तम्हि चेन पत्रियत्ते वेदगअसजदसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । तम्हि आपलियाण असखेज्जदिभाएण गुणिदे खइयअसजदसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । तम्हि आपलियाण असखेज्जदिभाएण गुणिदे अमजदउउसमसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । तम्हि आपलियाण असखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइड्डिअवहारकालो होदि । तम्हि सखेज्जस्सेहि गुणिदे सासणसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । तम्हि आपलियाण असखेज्जदिभाएण गुणिदे वेदगसम्माइड्डिसजदामजदअवहारकालो होदि । तम्हि आपलियाण असखेज्जदिभाएण गुणिदे उउसमसम्माइड्डिसजदासजदअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि पलिदोपमे भागे हिदे सग सगरामीओ जागच्छति । सिद्ध-तेगसगुणद्वाराणि मिच्छाइड्डिभनिदतग्ग च सन्पजीवगसिस्सुपरि पत्रियत्ते मिच्छाइड्डि-धुरासी होदि ।

भागाभाग वत्तइस्सामो । सन्पजीवरासिमणत्तखडे कए बहुखडा मिच्छाइड्डिणो होति । सेसमणत्तखडे कए बहुखडा सिद्धा । सेसमसखेज्जखडे कए बहुखडा वेदग-असजदसम्माइड्डिणो । सेसमसखेज्जखडे कए बहुखडा खइयअसजदसम्माइड्डिणो । सेससखेज्जखडे कए बहुखडा उउसमअसजदसम्माइड्डिणो । सेस सखेज्जखडे कए

ओष असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लघु भाग उसे उसी अवहारकालम मिला देने पर घेदक असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर क्षायिक असयत सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर असयत उपशमसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर सम्यग्मिव्याहृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे सख्यातसे गुणित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर वेदकसम्यग्दृष्टि सयतासयतोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असख्यातवें भागसे गुणित करने पर उपशमसम्यग्दृष्टि सयतासयतोंका अवहारकाल होता है । इन अवहारकालोंमें पशोपमके भाजित करने पर अपनी अपनी राशिया आती ह ।

सिद्धराशि और तेरह गुणस्थानवर्ती राशियों तथा मिथ्यादृष्टि राशिले भाजित उन राशियोंके वर्गको सर्व जीवराशियोंमें मिला देने पर मिथ्यादृष्टियोंकी युवराशि होती है ।

अथ भागाभागको वतलाते ह—सर्व जीवराशिके अन त खड करने पर उनमेंसे बहुभाग मिथ्यादृष्टि जीव होते ह । शेष एक भागके अनन्त खड करने पर बहुभाग सिद्ध जीव ह । शेष एक भागके असख्यात खड करने पर बहुभाग घेदकअसयतसम्यग्दृष्टि जीव ह । शेष एक भागके असख्यात सट करने पर बहुभाग क्षायिक असयतसम्यग्दृष्टि जीव ह । शेष एक भागके असख्यात खड करने पर बहुभाग उपशम असयतसम्यग्दृष्टि जीव ह । शेष एक

बहुखडा सम्मामिच्छाइड्डिणो । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखडा सासणसम्माइड्डिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखडा वेदगमम्माइड्डिमंजदासंजदा । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखडा उयसमसम्माइड्डिसजदासजदा । सेसं सरोज्जखंडे कए बहुखडा रडयसम्माइड्डि-संजदासजदा । सेसं सखेज्जखंडे कए बहुखडा पमत्तमंजदा । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा अप्पमत्तसजदा । सेस जाणिय वत्तव ।

अप्याग्रहुग तिनिह सत्थाणादिभेएण । सव्वेमिं सत्थाणमोव । परत्थाणे पयद । सव्वत्थोरा वेदगमम्माइड्डिअप्पमत्तमजदा । पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । असजदसम्माइड्डिअग्रहारकालो असखेज्जगुणो । सजदासजदअग्रहारकालो असखेज्जगुणो । तस्सेण ढव्वमसखेज्जगुणं । एव णेयव्व जाण पल्लिदोयम ति । उयममसम्माइड्डिसु सव्वत्थोरा चत्तारि उयसामगा । खवगा सखेज्जगुणा । अप्पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । उवरि वेदगपरत्थाणभगो । रडयमम्माइड्डिसु सव्वत्थोरा चत्तारि उयसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । पमत्तमजदा सखेज्जगुणा । सजदासजदा सखेज्जगुणा । असजदसम्माइड्डिअग्रहारकालो असखेज्जगुणो । तस्सेव ढव्वम-

भागके सख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्निष्ठागृष्टि जीव है । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग सासादनसम्यग्गृष्टि जीव है । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग वेदकसम्यग्गृष्टि सयतासयत जीव है । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग उपशमसम्यग्गृष्टि सयतासयत जीव है । शेष एक भागके सख्यात खंड करने पर बहुभाग क्षायिकसम्यग्गृष्टि सयतासयत जीव है । शेष एक भागके सख्यात खंड करने पर बहुभाग प्रमत्तसयत जीव है । शेष एक भागके सख्यात खंड करने पर बहुभाग अप्रमत्तसयत जीव है । शेष भागाभागाका कथन जानकर करना चाहिये ।

स्यस्थान अल्पबहुत्व आदिके भेदमे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे सभोका स्यस्थान अल्पबहुत्व भोगप्ररूपणके समान है । अय परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है—वेदक सम्यग्गृष्टि अप्रमत्तसयत जीव सयसे स्तोत्र है । इनसे प्रमत्तसयत जीव सख्यातगुणे है । इनसे असयतसम्यग्गृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । इससे सयतासयतोंका अवहारकाल असख्यातगुणा है । उर्द्धाका द्रव्य अघहारकालमे असख्यातगुणा है । इसीप्रकार पत्थोपमतक ले जाना चाहिये । उपशमसम्यग्गृष्टियोंमें चारों उपशामक सयसे योडे हैं । क्षपक सख्यातगुणे है । अप्रमत्तसयत जीव क्षपकोंसे सख्यातगुणे है । प्रमत्तसयत जीव अप्रमत्तसयतोंसे सख्यातगुणे है । इसके ऊपर वेदकसम्यग्गृष्टियोंके परस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये । क्षायिक सम्यग्गृष्टियोंमें चारों उपशामक सयने स्तोत्र है । क्षपक उनसे सख्यातगुणे है । इनसे अप्रमत्तसयत सख्यातगुणे है । इनसे प्रमत्तसयत सख्यातगुणे है । इनसे सयतासयत सख्यातगुणे है । इनमे असयतसम्यग्गृष्टियोंका अवहारकाल असख्यातगुणा

सखेज्जगुण । पलिद्रांममममेज्जगुण । केवलणाणिणो अणतगुणा ।

सच्चपरस्थाने पयदं । सच्चस्थोना उरसममम्माइट्ठिणो चत्तारि उरमामगा ।
तत्थेयं सइयसम्माइट्ठिणो सखेज्जगुणा । ररगा मखेज्जगुणा । अप्पमत्तसज्जउरसम
मम्माइट्ठिणो मखेज्जगुणा । कारण, चागिच्चमोहणीयसणकालादो उरममसम्मत्तकालसस
सखेज्जगुणत्ता । पमत्तसज्जदा सखेज्जगुणा । अप्पमत्तमंजदा सइयसम्माइट्ठिणो सखेज्ज
गुणा । पमत्तमज्जदा सखेज्जगुणा । वेदगमम्माइट्ठिअप्पमत्तमज्जदा सखेज्जगुणा । पमत्ता
सखेज्जगुणा । सइयमम्माइट्ठिसनदामंजदा सखेज्जगुणा । पमत्तसज्जदाण सखेज्जभागमेत्त-
पमत्तसज्जदवेदगमम्माइट्ठिहितो कथं मणुमसज्जदासज्जदाण सखेज्जदिभागमेत्तसइयसम्माइट्ठि
सज्जदासज्जदाण सखेज्जगुणत्त ? ण, मच्चमम्मत्तेसु सज्जेहितो देससज्जदाणं देममज्जेहितो
असज्जदाण बहुत्तुनलभादो । त पि बुदो ? चारित्तावरणरओरसमसस सच्चमम्मत्तेसुप्पायण-

है । इससे उर्द्धाका द्रव्य असत्यातगुणा है । इससे पथ्योपम असत्यातगुणा है । इससे केवल
ज्ञानी अनन्तगुणे ह ।

सर्वपरस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— उपशमश्रेणीके चारों गुणस्थानवर्ती उपशम
सम्यग्दृष्टि जीव सत्यसे स्तोक है । उपशमश्रेणीके चारों गुणस्थानवर्ती क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव
उनसे सत्यातगुणे ह । क्षपक जीव उपशमश्रेणीके चारों गुणस्थानवर्ती क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे
सख्यातगुणे है । अप्रमत्तसत्यत उपशमसम्यग्दृष्टि जीव क्षपक जीवोंसे सत्यातगुणे हैं, क्योंकि,
चरित्त मोहनीयके क्षपण कालसे उपशमसम्यक्त्वका काल सख्यातगुणा है । प्रमत्तसत्यत
उपशमसम्यग्दृष्टि जीव अप्रमत्तसत्यत उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे सख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसत्यत
क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव प्रमत्तसत्यत उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे सख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसत्यत
क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव अप्रमत्तसत्यत क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे सख्यातगुणे है । वेदकसम्य
ग्दृष्टि अप्रमत्तसत्यत जीव क्षायिकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसत्यतोंसे सत्यातगुणे हैं । वेदकसम्यग्दृष्टि
प्रमत्तसत्यत जीव वेदकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसत्यतोंसे सख्यातगुणे है । क्षायिकसम्यग्दृष्टि
सत्यतासत्यत जीव वेदकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसत्यतोंसे सत्यातगुणे है ।

शुका— प्रमत्तसत्यतोंके सत्यातमें भागमात्र प्रमत्तसत्यत वेदकसम्यग्दृष्टियोंसे मनुष्य
सत्यतासत्यतोंके सत्यातमें भागमात्र क्षायिकसम्यग्दृष्टि सत्यतासत्यत जीव सत्यातगुणे कैसे
हो सकते हैं ?

समाधान— नहीं क्योंकि, सर्व सम्यक्त्वोंमें सत्यतोंसे देशसत्यत और देशसत्यतोंसे
असत्यत जीव प्रकृत पाये जाते हैं, इसलिये मनुष्य सत्यतासत्यतोंके सख्यातमें भागमात्र
क्षायिकसम्यग्दृष्टि सत्यतासत्यत जीव प्रमत्तसत्यतोंके सख्यातमें भागमात्र वेदकसम्यग्दृष्टियोंसे
सख्यातगुणे बन जाते हैं ।

शुका— सर्व सम्यक्त्वोंमें सत्यतोंसे सत्यतासत्यत और सत्यतासत्यतोंसे असत्यत बहुत
होते हैं, यह कैसे जाना जाता है ?

संभवाभावादो । ' तेरसकोडी देसे ' एदीए गाहाए एदस्स प्रक्खाणस्स किण्ण विरोहो ? होउ णाम । कध पुण विरुद्धप्रक्खाणस्स भद्दत्तं ? ण, जुत्तिमिद्धस्स आइरियपरंपगगयम्म एदीए गाहाए णामद्दत्त काऊण सक्किज्जदि, अइप्पसगादो । वेदगअसंजदसम्माइद्धिअवहारकालो असखेज्जगुणो । खइयअसंजदसम्माइद्धिअवहारकालो असखेज्जगुणो । उअसमअसंजदसम्माइद्धिअवहारकालो असखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइद्धिअवहारकालो असखेज्जगुणो । सासणसम्माइद्धिअवहारकालो संखेज्जगुणो । वेदगसम्माइद्धिसंजदासंजदअवहारकालो असखेज्जगुणो । उअसमसम्माइद्धिसंजदासंजदअवहारकालो असखेज्जगुणं । एवमअवहारकालपडिलेमेण णेयच्च जाय पल्लिदोअम ति । तदो खइयसम्माइद्धिणो केवलणाणिणो अणंतगुणा । मिच्छाइद्धिणो अणंतगुणा ।

एअ समत्तमगणा गदा ।

समाधान—चूकि चरित्रावरण मोहनियकर्मका क्षयोपशम सर्ग सम्यक्त्वोंमें प्राय संभव नहीं है, इसलिये यह जाना जाता है कि सर्ग सम्यक्त्वोंमें सयतोंसे सयतासयत और सयतासयतोंसे असयत जीव अधिक होते हैं ।

शुद्धा—यदि ऐसा है तो 'देशसयतमें तेरह करोड मनुष्य हैं' इस गाथाके साथ इस पूर्वोक्त व्याख्यानका विरोध क्यों नहीं आ जायगा ?

समाधान—यदि उक्त गाथार्थके साथ पूर्वोक्त व्याख्यानका विरोध प्राज्ञ होता है तो होओ ।

शुद्धा—तो इसप्रकारके विरुद्ध व्याख्यानको समीचीनता कैसे प्राप्त हो सकती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, जो युक्तिसिद्ध है और आचार्य परंपरासे आया हुआ है उसमें इस गाथासे असमीचीनता नहीं लाई जा सकती, अन्यथा अतिप्रसंग दोष आ जायगा ।

वेदकसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासयतोंसे असख्यातगुणा है । क्षायिकअसयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल वेदकअसयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असख्यातगुणा है । उपशमअसयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल क्षायिकअसयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल उपशमअसयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे सख्यातगुणा है । वेदकसम्यग्दृष्टि सयतासयतोंका अवहारकाल सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असख्यातगुणा है । उपशमसम्यग्दृष्टि सयतासयतोंका अवहारकाल वेदकसम्यग्दृष्टि सयतासयतोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हीं उपशमसम्यग्दृष्टि सयतासयतोंका द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोमक्रमसे पर्योपमतक ले जाना चाहिये । पर्योपमसे क्षायिकसम्यग्दृष्टि केवलज्ञानी अनन्तगुणे है । मिथ्यादृष्टि जीव क्षायिकसम्यग्दृष्टि केवलज्ञानियोंसे अनन्तगुणे है ।

इसप्रकार सम्यक्त्वमार्गणा समाप्त हुई ।

अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण
॥ १८८ ॥

खेत्तेण अणंताणंता लोका ॥ १८९ ॥

एदाणि तिण्णि सुचाणि अरगद्धयाणि ति एदेसिं ण रक्खणं वुच्चदे । एत्थ धुरासिं वत्तइस्सामो । सण्णिरामिं णेव-सण्णि-णेव असण्णिरामि च असण्णिभज्जितव्वग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते असण्णिधुरासी होदि ।

भागामाग उच्यते । सव्वजीवरासिमणतखंडे कए बहुखडा असण्णिणो होंति । सेसमणतखंडे कए बहुखडा णेव सण्णी णेव असण्णी होंति । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखडा सण्णिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमोवभागामागभगे ।

तिनिहमवि अप्पावहुग जाणिऊण माणिट्ठव ।

एव सण्णिमग्गणा समत्ता ।

आहाराणवादेण आहारएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगि
केवलि ति ओघं ॥ १९० ॥

कालकी अपेक्षा असंज्ञी मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होते हैं ॥ १८८ ॥

क्षेत्रकी अपेक्षा असंज्ञी मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त लोकरूपमाण है ॥ १८९ ॥

इन तीनों सूत्रोंका अर्थ अथगत है, इसलिये इनका व्याख्यान नहीं किया है । अब यहा पर भुवराशिका प्रतिपादन करते हैं— सखीराशि और सखी तथा असखी इन दोनों व्यपदेशोंसे रहित जीवराशिको तथा असखी राशिसे भाजित उक्त राशियोंके वर्गको सर्व जीवराशिमिं मिला देने पर असखी जीवोंके प्रमाण लानेके लिये भुवराशि होती है ।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अनन्त खड करने पर उनमेंसे बहुभाग असखी जीव है । शेष एक भागके अनन्त खड करने पर उनमेंसे बहुभाग सखी और असखी इन दोनों व्यपदेशोंसे रहित जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खड करने पर बहुभाग सखी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष भागाभागका ओघ भागाभागके समान कथन करना चाहिये ।

तीनों प्रकारके अल्पबहुत्वका भी जानकर कथन करना चाहिये ।

इसप्रकार सखीमार्गणा समाप्त हुई ।

आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारकोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगि-

सण्णियाणुवादेण मण्णीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया,
देवेहि सादरेय ॥ १८५ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो बुच्चदे । सव्वे देवमिच्छाइट्ठिणो सण्णिणो चेय । तेसिं
सखेज्जदिभागमेत्ता तिगदिसण्णिमिच्छाइट्ठिणो हँति । तेण सण्णिमिच्छाइट्ठिणो देवेहि
सादरेया । एत्थ अणहारकालो बुच्चदे । त जहा— देवअणहारकालादो पदरगुलमेरं धेत्तूण
सखेज्जसडे करिय तत्थेणसडमणिय सेसणहुसड तम्हि चेय पक्खित्ते सण्णिमिच्छाइट्ठि-
अणहारकालो होदि । एदेण जगपदरे भागे हिदे सण्णिमिच्छाइट्ठिदव्व होदि ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागळुदुमत्था त्ति
ओघ' ॥ १८६ ॥

सुगममेद सुत्त ।

असण्णी दव्वपमाणेण केवडिया, अणंता' ॥ १८७ ॥

सञ्जीमार्गणाके अनुवादसे सञ्चियामें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा
कितने है ? देवोंसे कुछ अधिक है ॥ १८५ ॥

अथ इमं सूत्रका अर्थ कहते हैं । सर्व देव मिथ्यादृष्टि जीव सक्षी ही होते हैं । तथा
उनके सख्यातयें भागप्रमाण तीन गतिसबन्धी सञ्जी मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । इसलिये
सक्षी मिथ्यादृष्टि जीव देवोंसे कुछ अधिक हैं, ऐसा सूत्रमें कहा है ।

अथ यथा पर अवधारकालका कथन करते हैं । यह इसप्रकार है— देव अवधारकालमें
एक प्रतरागुलको ग्रहण करके और उसके सरपात राड करके उनमेंसे एक खडको निकालकर शेष
यहु खड उसीमें मिला देने पर संप्री मिथ्यादृष्टियोंका अवधारकाल होता है । इस अवधार
कालसे जगप्रतरके भाजित करने पर सक्षी मिथ्यादृष्टि द्रव्य होता है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणरूपाय वीतरागळुदुस्य गुणस्थानतक
प्रत्येक गुणस्थानमें सञ्जी जीव ओघप्ररूपणाके समान है ॥ १८६ ॥

यद्द सूत्र सुगम है ।

असणी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त है ॥ १८७ ॥

१ सञ्जातवादन सत्तिपु मिथ्यादृष्टयादय क्षीणरूपाया तत्त्वव्युद्भयानिक्त् । स सि १, ८ दवहि सादिरगो
राज्ञी सण्णाण होदि परिमाण ॥ गो जा ६६३

२ असत्तिनो मिथ्यादृष्टयोधनन्तानन्ता । तदुभयपपदेसहित सामायात्तरया । स सि १, ८
द्वेषणी सञ्जाती सन्धेविमसण्णिजीवाण ॥ गो जी ६६३

तन्निह आपलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे अणाहारिसासणसम्माइड्डिअणहारकालो होदि ।

अजोगिकेवली ओघं ॥ १९२ ॥

सुगममेदं ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सच्चजीपरासिमसखेज्जखडे कए बहुखंडा आहारि-
मिच्छाइड्डिणो होंति । सेसमणतखंडे कए बहुखटा अणाहारिअधगा होंति । सेसमणंतखंडे
कए बहुखडा अणाहारिअधगा होंति । सेसमसखेज्जखडे कए बहुखडा आहारि-
असजदसम्माइड्डिणो होंति । सेम मखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइड्डिणो होंति ।
सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखडा आहारिसासणसम्माइड्डिणो होंति । सेसमसखेज्जखंडे कए
बहुखंडा सजदासंजदा होंति । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणाहारिअसजदसम्मा-
इड्डिणो होंति । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखडा अणाहारिसासणसम्माइड्डिणो होंति । सेस
सखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तसजदा होंति । सेसखंडे अप्पमत्तसंजदाओ' होंति ।

अप्याबहुग तिबिह सत्थाणादिभेएण । तत्थ सत्थाण मूलोघभगो । परत्थाणे पयद ।

असख्यातघं भागसे गुणित करने पर अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल
होता है ।

अनाहारक अयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १९२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अन भागाभागको वतलाते हैं— सर्व जीवराशिके असंख्यात खंड करनेपर बहुभाग
आहारक मिथ्यादृष्टि जीव है । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अनाहारक
बन्धयुक्त जीव है । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अनाहारक अत्यन्त
जीव है । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग आहारक अस्यतसम्यग्दृष्टि
जीव है । शेष एक भागके संप्राप्त खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव है ।
शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीव है ।
शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग स्यतस्यत जीव है । शेष एक
भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग अनाहारक अस्यतसम्यग्दृष्टि जीव है । शेष एक
भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीव है । शेष एक
भागके सख्यात खंड करने पर बहुभाग प्रमत्तस्यत जीव है । शेष एकभाग प्रमाण अप्रमत्तस्यत
भावि जीव है ।

स्वस्थान अल्पबहुत्व आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वस्थान
अल्पबहुत्व मूल ओघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है ।

एद पि सुत्त सुगमं चेय । णरि सगुणपडिवण्णअणाहाररामिं आहारमिच्छाइट्ठि
रासिभजिदत्त्वग्ग च सव्वजीवरासिस्सुणरि पन्निस्सत्ते आहारिमिच्छाइट्ठिधुनरासी होदि ।

अणाहारएसु कम्मइयकायजोगिभंगो ॥ १९१ ॥

एद पि सुत्त सुगमं चेय । एत्थ धुनरासी वुच्चदे । ओषमिच्छाइट्ठिधुनरासि
मतोमुहुत्तेण गुणिदे अणाहारिमिच्छाइट्ठिधुनरासी होदि । ओषअसजदसम्माइट्ठिअणहारकाल
आवलियाए असरेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्ध तम्हि चेव पन्निस्सत्ते आहारिअसजदसम्मा
इट्ठिअणहारकालो होदि । तम्हि आणलियाए असरेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठि
अणहारकालो होदि । तम्हि असरेज्जरूपेहि गुणिदे सासणमम्माइट्ठिअवहारकालो होदि ।
तम्हि आणलियाए असरेज्जदिभाएण गुणिदे सजदासंजदअवहारकालो होदि । तम्हि
आणलियाए असरेज्जदिभाएण गुणिदे अणाहारिअमजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि ।

केवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १९० ॥

यह भी सूत्र सुगम है । इतना विशेष है कि गुणस्थानप्रतिपन्न राशि और अनाहारक
जीवराशिको तथा आहारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे भाजित उक्त राशियोंके वर्गको सर्व
जीवराशिमें मिला देने पर आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण लानेके लिये ध्रुवराशि
होती है ।

अनाहारकोंमें मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और सयोगि
केवली जीवोंका प्रमाण कर्मणकाययोगियोंके प्रमाणके समान है ॥ १९१ ॥

यह भी सूत्र सुगम ही है । अब यदा ध्रुवराशिका प्रतिपादन करते हैं— ओष
मिथ्यादृष्टियोंकी ध्रुवराशिको अ तमुहुत्तसे गुणित करने पर अनाहारक मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाण
लानेके लिये ध्रुवराशि होती है । ओषअसंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आघलीके
असख्यातर्धे भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आधे उसे उसीमें मिला देने पर आहारक
असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आघलीके असख्यातर्धे भागसे गुणित
करने पर सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे सख्यातसे गुणित करने पर आह
रक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आघलीके असख्यातर्धे भागसे गुणित
करने पर आहारक संयतसंयतोंका अवहारकाल होता है । इसे आघलीके असख्यातर्धे भागसे
गुणित करने पर अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आघलीके

तन्निवरीदसंघाती सव्वो आहारपरिमाण ॥ गो जी ६७१

१ अनाहारकेषु मिथ्यादृष्टिसासादनसम्यग्दृष्टअसंयतसम्यग्दृष्टय समानायात्तरया । सयोगिकेवलिन
सख्यात । स ति १, ८ कम्मइयकायजोगी होदि अणाहारयाण परिमाण ॥ गो जी ५७१

तन्नि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे अणाहारिसासणसम्माइड्डिअनहारकालो होदि ।

अजोगिकेवली ओघं ॥ १९२ ॥

सुगममेद ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिमसखेज्जखंडे कए बहुखंडा आहारि-
मिच्छाइड्डिणो होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अणाहारिबंधगा होंति । सेसमणंतखंडे
कए बहुखंडा अणाहारिअबंधगा होंति । सेसमसखेज्जखंडे कए नहुखंडा आहारि-
असजदसम्माइड्डिणो होंति । सेस सखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइड्डिणो होंति ।
सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखंडा आहारिसासणसम्माइड्डिणो होंति । सेसमसखेज्जखंडे कए
बहुखंडा सजदासंजदा होंति । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणाहारिअसजदसम्मा-
इड्डिणो होंति । सेसमसखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणाहारिसासणसम्माइड्डिणो होंति । सेस
सखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तसजदा होंति । सेसखंड अप्पमत्तसजदादओ' होंति ।

अप्पानहुग तिविह सत्थाणादिभेएण । तत्थ सत्थाण मूलोघभगो । परत्थाणे पयद ।

असंख्यातधेँ भागसे गुणित करने पर अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल
होता है ।

अनाहारक अयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १९२ ॥

यह छत्र सुगम है ।

अत्र भागाभागको वतलाते हैं— सर्व जीवराशिके असख्यात खंड करनेपर बहुभाग
आहारक मिथ्यादृष्टि जीव है । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अनाहारक
बन्धयुक्त जीव है । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अनाहारक अवन्धक
जीव है । शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग आहारक असयतसम्यग्दृष्टि
जीव है । शेष एक भागके सख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव है ।
शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीव है ।
शेष एक भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग सयतासयत जीव है । शेष एक
भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग अनाहारक असयतसम्यग्दृष्टि जीव है । शेष एक
भागके असख्यात खंड करने पर बहुभाग अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीव है । शेष एक
भागके सख्यात खंड करने पर बहुभाग प्रमत्तसयत जीव है । शेष एकभाग प्रमाण अप्रमत्तसयत
आदि जीव है ।

स्वस्थान अल्पबहुत्व आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वस्थान
अल्पबहुत्व मूल ओघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है ।

सञ्चत्थोवा चचारि उवसामगा । खवगा सखेज्जगुणा । अप्पमत्तसज्जदा मखेज्जगुणा ।
पमत्तसज्जदा संखेज्जगुणा । आहारिअसज्जदसम्माइड्डिअवहारकालो असखेज्जगुणो । सम्मा
मिच्छाइड्डिअवहारकालो असखेज्जगुणो । आहारिसासणसम्माइड्डिअवहारकालो सखेज्जगुणो ।
सज्जदासज्जदअवहारकालो असखेज्जगुणो । तस्सेव ढक्खमसखेज्जगुण । एव णेयच्च जान
पलिदोअम ति । तदो आहारिमिच्छाइड्डिअणतगुणा । अणाहारणसु सञ्चत्थोवा सजोगि-
केअली । असज्जदसम्माइड्डिअवहारकालो असखेज्जगुणो । सासणसम्माइड्डिअवहारकालो
असखेज्जगुणो । तस्सेव ढक्खमसखेज्जगुण । एव णेयच्च जान पलिदोअम ति । तदो
अवधगा अणतगुणा । वधगा अणतगुणा ।

सञ्चपररथाणे पयद । सञ्चत्थोवा अणाहारिसजोगिकेअली । (अजोगिकेअली सखेज्ज
गुणा ।) चचारि उवसामगा सखेज्जगुणा । (खवगा सखेज्जगुणा ।) आहारिसजोगिकेअली सखेज्ज-
गुणा । अप्पमत्तसज्जदा सखेज्जगुणा । पमत्तसज्जदा सखेज्जगुणा । आहारिअसज्जदसम्माइड्डिअव-

अव परस्थानम अल्पबहुत्व प्रवृत्त है— चारों गुणस्थानधर्ती उपशामक जीव सयसे
स्तोक है । क्षपक जीव उपशामकोंसे सख्यातगुणे हैं । अप्पमत्तसयत जीव क्षपकोंसे सख्यातगुणे
हैं । प्रमत्तसयत जीव अप्पमत्तसयतोंसे सख्यातगुणे हैं । आहारक असयतसम्यग्दृष्टियोंका
अवहारकाल प्रमत्तसयतोंसे असख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल
आहारक असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असख्यातगुणा है । आहारक सासादन
सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल आहारक सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे सख्यातगुणा
है । सयतासयतोंका अवहारकाल आहारक सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे
असख्यातगुणा है । उर्दीका द्रव्य उर्दीके अवहारकालसे असख्यातगुणा है । इसीप्रकार
पन्योपमतक ले जाना चाहिये । पन्योपमसे आहारक मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं । अना
हारकोंमें सयोगिकेअली जीव सबसे स्तोक हैं । अनाहारक असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल
अनाहारक सयोगिकेअलियोंसे असख्यातगुणा है । अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका
अवहारकाल अनाहारक असयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असख्यातगुणा है । उर्दीका
द्रव्य उर्दीके अवहारकालसे असख्यातगुणा है । इसीप्रकार पर्योपमतक ले जाना चाहिये ।
पन्योपमसे अवन्धक जीव अनन्तगुणे हैं । बंधक जीव अवन्धकोंसे अनन्तगुणे हैं ।

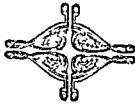
अथ सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रवृत्त है— अनाहारक सयोगिकेअली जीव
सबसे स्तोक हैं । अयोगिकेअली जीव उनसे सख्यातगुणे हैं । चार गुण
स्थानधर्ती उपशामक जीव अयोगिकेअलियोंसे सख्यातगुणे हैं । क्षपक जीव
उपशामकोंसे सख्यातगुणे हैं । आहारक सयोगिकेअली जीव क्षपकोंसे सख्यातगुणे हैं ।
अप्पमत्तसयत जीव आहारक सयोगिकेअलियोंसे सख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसयत जीव
अप्पमत्तसयतोंसे सख्यातगुणे हैं । आहारक असयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल प्रमत्तसयतोंसे

हारकालो असखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाडडिअवहारकालो असखेज्जगुणो । आहारिसासण-
सम्माइडिअवहारकालो संखेज्जगुणो । संजदामजदअवहारकालो असखेज्जगुणो । अणाहारि-
असजदसम्माइडिअवहारकालो असखेज्जगुणो । अणाहारिसासणसम्माइडिअवहारकालो
असखेज्जगुणो । तस्सेर दन्वमसखेज्जगुण । एत्तं णेयव्व जाव पल्लिदोपम ति । तदे अघघगा
अणत्तगुणा । अणाहारिणो मधंगा मिच्छाडडिणो अणत्तगुणा । तदे आहारिणो मिच्छा-
इडिणो असखेज्जगुणा ।

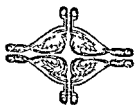
एव दन्वाणिओगद्वार समत्त ।

असख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आहारक अस्यतसम्यग्दृष्टि अवहार-
कालसे असख्यातगुणा है । आहारक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टि
अवहारकालसे सख्यातगुणा है । सयतासयतोंका अवहारकाल आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि
अवहारकालसे असख्यातगुणा है । अनाहारक अस्यतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सयता
सयतोंके अजहारकालसे असख्यातगुणा है । अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अजहारकाल
अनाहारक अस्यतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असख्यातगुणा है । उन्हींका द्रव्य अपने अवहार-
कालसे असख्यातगुणा है । इसीप्रकार पल्योपमत्तक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे अबन्धक
जीव अनन्तगुणे हैं । अनाहारक बन्धक मिथ्यादृष्टि जीव अबन्धकोंमे अनन्तगुणे हैं । इनसे
आहारक बन्धक जीव असख्यातगुणे हैं ।

इसप्रकार द्रव्यानुयोगद्वार समाप्त हुआ ।



परिशिष्ट



परिशिष्ट

१ दन्वपरूवणासुत्ताणि ।

सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	दन्वपमाणाणुगमेण दुनिहो णिदेसो ओघेण आदेसेण य ।		१२	अद्द पडुच्च सखेज्जा ।	९३
२	ओघेण मिच्छाइट्ठी दन्वपमाणेण केरडिया, अणंता ।	१०	१३	सजोगिकेरली दन्वपमाणेण केरडिया, परोसेण एको वा दो वा तिण्णि वा, उक्कस्सेण अद्दुत्तरसयं ।	९५
३	अणत्ताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरति कालेण ।	२७	१४	अद्द पडुच्च सदसहस्सपुधत्तं ।	९५
४	खेत्तेण अणत्ताणंता लोणा ।	३२	१५	आदेसेण गदियाणुगदेण गिरय-गईए णेरइएसु मिच्छाइट्ठी दन्वपमाणेण केरडिया, असखेज्जा ।	१२१
५	तिण्ह पि अधिगमो भावपमाण ।	३८	१६	असखेज्जासखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरति कालेण ।	१२९
६	सामणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव सज-दामजदा च्चि दन्वपमाणेण केरडिया, पलिदोवमस्स असखेज्जदि-भागो । एदेहि पलिदोवममवहिरि-ज्जदि अतोमुट्टुत्तेण ।	६३	१७	खेत्तेण असखेज्जाओ सेटीओ जग-पदरस्स असखेज्जदिभागमेत्ताओ । तासिं सेटीणं विक्खभच्चो अगुल-वग्गमूल विदियवग्गमूलगुणित्तेण ।	१३१
७	पमत्तसंजदा दन्वपमाणेण केरडिया, कोडिपुधत्त ।	८८	१८	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव असं-जदसम्माइट्ठि च्चि दन्वपमाणेण केरडिया, ओघ ।	१५६
८	अप्पमत्तसंजदा दन्वपमाणेण केरडिया, सखेज्जा ।	८९	१९	एवं पठमाए पुट्ठीए णेरडया ।	१६१
९	चदुण्हमुवसामगा दन्वपमाणेण केरडिया, परोसेण एको वा दो वा तिण्णि वा, उक्कस्सेण चउवण्ण ।	९०	२०	विदियादि जाव सत्तमाए पुट्ठीए णेरइएसु मिच्छाइट्ठी दन्वपमाणेण केरडिया, असखेज्जा ।	१९८
१०	अद्द पडुच्च सखेज्जा ।	९१	२१	असखेज्जासखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	१९८
११	चउण्ह स्वगा अजोगिकेरली दन्वपमाणेण केरडिया, परोसेण एको वा दो वा तिण्णि वा, उक्कस्सेण अद्दुत्तरसद ।	९२	२२	खेत्तेण सेटीए असखेज्जदिभागो । तिस्से सेटीए आयामो अस-	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	खेज्जाओ जोयणकोडीओ पठमा दियाण सेठिनग्गमूलाण मखेज्जाण अण्णोण्णभासेण ।	१९९	३४	इट्ठी दव्वपमाणेण केरडिया, अम- खेज्जा ।	२२९
२३	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाण अस- जदसम्माइट्ठि चि ओघ ।	२०६	३५	अमखेज्जासखेज्जाहि ओमप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अनहिरति कालेण । २३०	
२४	तिरिक्खगईए तिरिक्खेसु मिच्छा- इट्ठिप्पहुडि जाण सनदासजदा चि ओघ ।	२१५	३६	खेत्तेण पच्चिदियतिरिक्खजोणिणि- मिच्छाइट्ठीहि पदरमअहिरदि देव- अवहारकालादो सखेज्जगुणेण का- लेण ।	२३०
२५	पच्चिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठी दव्व- पमाणेण केरडिया, मखेज्जा ।	२१७	३७	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाण सज- दासजदा चि ओघ ।	२३७
२६	असखेज्जासखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरति कालेण ।	२१७	३८	पच्चिदियतिरिक्खअपज्जत्ता दव्व- पमाणेण केरडिया, असखेज्जा ।	२३९
२७	खेत्तेण पच्चिदियतिरिक्खमिच्छा- इट्ठीहि पदरमअहिरदि देवअवहार- कालादो असखेज्जगुणहीणकालेण ।	२१९	३९	असखेज्जामखेज्जाहि ओमप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अनहिरति कालेण । २३९	
२८	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाण सन दासजदा चि तिरिक्खओघ ।	२२६	४०	खेत्तेण पच्चिदियतिरिक्खअपज्जत्तेहि पदरमअहिरदि देवअवहारकालादो असखेज्जगुणहीणेण कालेण ।	२३९
२९	पच्चिदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केरडिया, असखेज्जा ।	२२६	४१	मणुसगईए मणुस्सेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केरडिया, असखेज्जा ।	२४४
३०	असखेज्जामखेज्जाहि ओमप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अनहिरति कालेण ।	२२७	४२	अमखेज्जासखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरति कालेण । २४५	
३१	खेत्तेण पच्चिदियतिरिक्खपज्जत्त- मिच्छाइट्ठीहि पदरमअहिरदि देव अवहारकालादो सखेज्जगुणहीणेण कालेण ।	२२८	४३	खेत्तेण सेठीए असखेज्जदिभागो । तिस्से सेठीए आयामो अमखेज्जदि- जोयणकोडीओ । मणुसमिच्छा- इट्ठीहि रूना पक्खत्तएहि सेठी अनहिरदि अगुलअग्गमूल तदिय- वग्गमूलगुणिदेण ।	२४५
३२	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाण सज- दामजदा चि ओघ ।	२२९			
३३	पच्चिदियतिरिक्खजोणिणीसु मिच्छा-				

सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
	डिया, सखेज्जा ।	२५१		अगुलरगमूल तदियरगमूलगुणि- देण ।	२६२
४४	पमत्तसंजदप्पहुडि जाण अजोगि- केवलि ति ओघ ।	२५२	५३	देवगईए देवेसु मिच्छाडट्टी दव्व- पमाणेण केरडिया, अमखेज्जा ।	२६६
४५	मणुसपज्जत्तेसु मिच्छाडट्टी दव्व- पमाणेण केरडिया, कोडाकोडा- कोडीए उवरि कोडाकोडाकोडा- कोडीए हेट्टदो छण्ह वग्माणमुवरि सत्तण्ह वग्माण हेट्टदो ।	२५३	५४	अमखेज्जाअमखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अग्रहिरति कालेण ।	२६८
४६	सासणसम्माडट्टिप्पहुडि जाण संज दासजदा ति दव्वपमाणेण केर- डिया, सखेज्जा ।	२५९	५५	खेत्तेण पदरस्म नेउप्पणगुलसय- रगपडिभाणेण ।	२६८
४७	पमत्तसजदप्पहुडि जाण अजोगि- केवलि ति ओघ ।	२६०	५६	सामणमम्माडट्टि सम्मामिच्छाडट्टि- अमजदमम्माडट्टिण ओघ ।	२६९
४८	मणुसिणीसु मिच्छाडट्टी दव्वपमा- णेण केरडिया, कोडाकोडाकोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हे- ट्टदो छण्ह वग्माणमुवरि सत्तण्ह रगमाण हेट्टदो ।	२६०	५७	भरणरामियदेवेसु मिच्छाडट्टी दव्व- पमाणेण केरडिया, असखेज्जा ।	२७०
४९	मणुमिणीसु सामणसम्माडट्टिप्पहु- डि जाण अजोगिकेवलि ति दव्व- पमाणेण केरडिया, सखेज्जा ।	२६१	५८	असखेज्जासखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अग्रहिरति कालेण ।	२७०
५०	मणुसअपज्जत्ता दव्वपमाणेण केर- डिया, अमखेज्जा ।	२६२	५९	खेत्तेण अमखेज्जाओ सेठीओ पद- रस्म असखेज्जदिभागो । तासिं सेठीण रिस्समखई अगुल अगुल- रगमूलगुणिदेण ।	२७०
५१	असखेज्जासखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अग्रहिरति कालेण ।	२६२	६०	सामणमम्माडट्टि-सम्मामिच्छाडट्टि- अमजदमम्माडट्टिपररूपा ओघ ।	२७१
५२	खेत्तेण सेठीए अमखेज्जदिभागो । तिस्ये सेठीए आयामो अमखेज्जाओ जोयणकोडीओ । मणुसअपज्जत्तेहि रूवा पन्निस्सत्तेहि सेट्टिमग्रहिरदि		६१	रणवेतरदेवेसु मिच्छाडट्टी दव्व- पमाणेण केरडिया, असखेज्जा ।	२७२
			६२	अमखेज्जासखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अग्रहिरति कालेण ।	२७२
			६३	खेत्तेण पदरस्म मखेज्जजोयणसद- रगपडिभाणेण ।	२७२
			६४	मासगसम्माडट्टि-सम्मामिच्छाडट्टि- अमजदसम्माडट्टी ओघ ।	२७४
			६५	जोइसियदेवा देवगईण भगो ।	२७५

सूत्रसत्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र सत्या	सूत्र	पृष्ठ
६६ सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु मि च्छाइट्ठी दब्बपमाणेण केवडिया, असखेज्जा ।		२७६	७५ अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्स प्पिणीहि ण अरहिरति कालेण ।		३०६
६७ असखेज्जासखेज्जाहि ओमप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अरहिरति कालेण ।		२७६	७६ खेत्तेण अणताणता लोगा ।		३०७
६८ खेत्तेण असखेज्जाओ सेठीओ पद रस्स असखेज्जदिभागो । तासिं सेठीणं विकरुभसूई अगुलविट्ठिय-वग्गमूल तदियग्गमूलगुणिदेण ।		२७६	७७ वेइदिय-तीइदिय चउरिंदिया तस्सेन पज्जत्ता अपज्जत्ता दब्बपमाणेण केवडिया, असखेज्जा ।		३१०
६९ सासणसम्माइट्ठि सम्मामिच्छाइट्ठि-असजदसम्माइट्ठी ओघ ।		२८०	७८ असखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पि-णीहि अरहिरति कालेण ।		३१२
७० मणक्कुमारप्पहुडि जाण सदार-सहस्सारकप्पवासियदेवेसु जहा सत्तमाए पुठरीए णेरइयाण भगो ।		२८०	७९ खेत्तेण वेइदिय तीइदिय-चउरिंदिय तस्सेव पज्जत्त अपज्जत्तेहि पदरम-वहिरदि अगुलस्म असखेज्जदि-भागग्गपडिभाएण अगुलस्स सखेज्जदिभागग्गपडिभाएण अं-गुलस्म असखेज्जदिभागग्गपडि-भाएण ।		३१३
७१ आणद-वाणद जाण णग्गेरेज्ज-विमाणवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठि-प्पहुडि जाण असजदसम्माइट्ठि चि दब्बपमाणेण केवडिया, पलिदो-वमस्स असखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोवममरहिरदि अतोमुहत्तेण ।		२८१	८० पचिंदिय पचिंदियपज्जत्तएसु मि-च्छाइट्ठी दब्बपमाणेण केवडिया, असखेज्जा ।		३१४
७२ अणुदिस जाण अत्राइदविमाण-वासियदेवेसु असजदसम्माइट्ठी दब्बपमाणेण केवडिया, पलिदो-वमस्स असखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोवममरहिरदि अतोमुहत्तेण ।		२८१	८१ असखेज्जासखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अरहिरति कालेण ।		३१४
७३ सच्चट्ठिसिद्धि विमाणवासियदेवा द-ब्बपमाणेण केवडिया, सखेज्जा ।		२८६	८२ खेत्तेण पचिंदिय पचिंदियपज्ज-त्तएसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमरहिरदि अगुलस्म असखेज्जदिभागग्ग-पडिभाएण अगुलस्म सखेज्जदि-भागग्गपडिभाएण ।		३१४
७४ इदियाणुनादेण एइदिया वादरा गुट्टुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता दब्ब-पमाणेण केवडिया, अणता ।		३०५	८३ सामणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाण अजो-गिक्केरलि चि ओघ ।		३१७
			८४ पचिंदियअपज्जत्ता दब्बपमाणेण केवडिया, असखेज्जा ।		३१७
			८५ असखेज्जासखेज्जाहि ओसप्पिणि-		

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	उस्सप्पिणीहि अग्रहिरति कालेण ।	३१७		केरडिया, अमखेजा ।	३५५
८६	खेत्तेण पचिंदियअपज्जत्तेहि पदर- मग्रहिरदि अंगुलस्स असखेज्जदि- भागग्गपडिभाएण ।	३१८	९३	असखेज्जासखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अग्रहिरति कालेण ।	३५५
८७	कायाणुवादेण पुढनिकाइया आउ- काइया तेउकाइया गउकाइया वादरपुढनिकाइया वादरआउकाइया वादरतेउकाइया वादरगउकाइया वादरवणफ्फइकाइया पचेयसरीरा तस्सेव अपज्जत्ता सुहुमपुढनि- काइया सुहुमआउकाइया सुहुम- तेउकाइया सुहुमगउकाइया तस्सेव पज्जत्तापज्जत्ता द्व्यपमाणेण केर- डिया, असखेजा लोगा ॥	३२९	९४	खेत्तेण असखेज्जाणि जगपदराणि लोगस्स सखेज्जदिभागो ।	३५५
८८	वादरपुढनिकाइय वादरआउकाइय- वादरवणफ्फइकाइयपचेयसरीर- पज्जत्ता द्व्यपमाणेण केरडिया, असखेजा ।	३४८	९५	वणफ्फइकाइया णिगोदजीवा वादरा सुहुमा पज्जत्तापज्जत्ता द्व्य- पमाणेण केरडिया, अणता ।	३५६
८९	असखेजासखेजाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अग्रहिरति कालेण ।	३४९	९६	अणताणंताहि ओसप्पिणि-उस्स- प्पिणीहि ण अग्रहिरंति कालेण ।	३५८
९०	खेत्तेण वादरपुढनिकाइय-वादर- गउकाइय वादरवणफ्फइकाइय- पचेयसरीरपज्जत्तएहि पदरमग्रहिदि- अंगुलस्स असखेज्जदिभागग्ग- पडिभाएण ।	३४९	९७	खेत्तेण अणताणता लोगा ।	३५८
९१	वादरतेउपज्जत्ता द्व्यपमाणेण केर- डिया, असखेजा । असखेजाग- लियग्गो आगलियघणस्स अतो ।	३५०	९८	तसकाइय तमकाइयपज्जत्तएसु मि- च्छाइट्ठी द्व्यपमाणेण केरडिया, असखेजा ।	३६०
९२	वादरवाउकाइयपज्जत्ता द्व्यपमाणेण		९९	असखेज्जासखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अग्रहिरंति कालेण ।	३६१
			१००	खेत्तेण तमकाइय-तसकाइयपज्ज- त्तएसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमग्रहि- रदि अंगुलस्स असखेज्जदिभाग- ग्गपडिभाएण अंगुलस्स सखे- ज्जदिभागग्गपडिभाएण ।	३६१
			१०१	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिक्केरालि ति ओघ ।	३६२
			१०२	तसकाइयअपज्जत्ता पचिंदियअप- ज्जत्ताण भगो ।	३६२
			१०३	जोगाणुवादेण पचमणजोगि-ति प्पिणरचिजोगीसु मिच्छाइट्ठी द्व्य- पमाणेण केरडिया, देवाण सखे- ज्जदिभागो ।	३८६

सूत्र सख्या	सूत्र	शृङ्ग मूल सख्या	सूत्र	
१०४	मासणमम्मादिट्टिप्पहुडि जात्र सजदामजदा त्ति ओघ ।	३८७	इट्ठी अमजदसम्माइट्ठी दव्वपमाणेण केरडिया, ओघ ।	३९९
१०५	पमत्तसजदप्पहुडि जात्र सजोगि- केवलि त्ति दव्वपमाणेण केर- डिया, मखेज्जा ।	३८७	११७ वेउवियमिस्सकायजोगीसु मि- च्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केरडिया, देवाण सखेज्जदिभागो ।	४००
१०६	अचिनोगि असच्चमोमअचिजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केर- डिया, असखेज्जा ।	३८८	११८ सासणसम्माइट्ठी असजदसम्मा इट्ठी दव्वपमाणेण केरडिया, ओघ ।	४०१
१०७	असखेज्जासखेज्जाहि ओसप्पिणि- उम्मप्पिणीहि अरहिरति कालेण ।	३८९	११९ आहारकायजोगीसु पमत्तसजदा दव्वपमाणेण केरडिया, चदुरण्ण ।	४०१
१०८	एतेण अचिजोगि असच्चमोस अचिनोगीसु मिच्छाइट्ठीहि पद- म्मरहिरदि अगुलस्स सखेज्जदि- भागमगपडिभागेण ।	३८९	१२० आहारमिस्सकायजोगीसु पमत्त- सजदा दव्वपमाणेण केरडिया, सखेज्जा ।	४०२
१०९	सेसाण मणजोगिभगो ।	३९०	१२१ कम्मइयकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केरडिया, मूलोघ ।	४०२
११०	कायजोगि ओरालियकायजोगीसु- मिच्छाइट्ठी मूलोघ ।	३९५	१२२ सामणसम्माइट्ठी असजदसम्मा इट्ठी दव्वपमाणेण केरडिया, ओघ ।	४०३
१११	मासणमम्माइट्टिप्पहुडि जात्र सजोगिकेवलि त्ति जहा मण- जोगिभगो ।	३९५	१२३ सजोगिकेवली दव्वपमाणेण केर- डिया, सखेज्जा ।	४०४
११२	जोगालियमिस्सकायजोगीसु मि- च्छाइट्ठी मूलोघ ।	३९६	१२४ वेदाणुवादेण इत्थियेदयसु मिच्छा इट्ठी दव्वपमाणेण केरडिया, देवाहि सादिरेय ।	४१३
११३	सासणसम्माइट्ठी ओघ ।	३९७	१२५ सासणसम्माइट्टिप्पहुडि जात्र स- जदासजदा त्ति ओघ ।	४१४
११४	अमजदसम्माइट्ठी सजोगिकेवली दव्वपमाणेण केरडिया, सखेज्जा ।	३९७	१२६ पमत्तसजदप्पहुडि जात्र अणिय- ट्टिवादरसापराइयपनिट्ठ उरसमा खमा दव्वपमाणेण केरडिया, सखेज्जा ।	४१५
११५	वेउवियकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केरडिया, देवाण सखेज्जदिभागणो ।	३९८		
११६	मासणसम्माइट्ठी मम्मामिच्छा			

सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
१२७	पुरिसवेदएसु मिच्छाइट्ठी दव्व- पमाणेण केरडिया, देनेहि सादि- रेयं ।	४१६	मूलेष ।		४२९
१२८	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाण अणियट्ठिवाटरसापराइयपविट्ठ उ- वसमा खवा दव्वपमाणेण केर- डिया, ओष ।	४१६	१२८ अरुसाईसु उरसतकमायरीदराग- छदुमत्था ओष ।		४३०
१२९	णवुसयणेदेसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाण संजदासजदा त्ति ओष ।	४१७	१२९ स्त्रीणकमायरीदरागछदुमत्था अ- जोगिकेनली ओष ।		४३०
१३०	पमत्तसजदप्पहुडि जाण अणि- यट्ठिवाटरसापराइयपविट्ठ उर- समा खवा दव्वपमाणेण केर- डिया, सखेज्जा ।	४१८	१३० सजोगिकेनली ओष ।		४३१
१३१	अपगदवेदएसु तिण्ह उरसामगा दव्वपमाणेण केरडिया, पसेणेण एक्को वा दो मा तिण्णि वा, उक्कस्सेण चउरण्ण ।	४१९	१३१ णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि सुद- अण्णाणीसु मिच्छाइट्ठी सासण- सम्माइट्ठी दव्वपमाणेण केर- डिया, ओषं ।		४३६
१३२	अद्द पडुच्च सखेज्जा ।	४२०	१३२ निभगणाणीसु मिच्छाइट्ठी दव्व- पमाणेण केरडिया, देनेहि सादि- रेय ।		४३७
१३३	तिण्णि सग्गा अजोगिकेनली ओषं ।	४२०	१३३ सासणसम्माइट्ठी ओष ।		४३८
१३४	सजोगिकेनली ओष ।	४२१	१३४ आभिणिगोहियणाणि-सुदणाणि- ओहिणाणीसु अमजदसम्माइट्ठि- प्पहुडि जाण स्त्रीणकसायरीद- रागछदुमत्था त्ति जोषं ।		४३९
१३५	कमायाणुवादेण कोवकमाइ- माणरुसाइ मायरुसाइ-लौभकमा- ईसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाण सजदासंजदा त्ति ओष ।	४२४	१३५ णवरि त्रिसेसो, ओहिणाणीसु पमत्तमजदप्पहुडि जाण स्त्रीण- कमायरीयरायछदुमत्था त्ति दव्व- पमाणेण केरडिया, सखेज्जा ।		४४१
१३६	पमत्तमजदप्पहुडि जाण अणि- यट्ठि त्ति दव्वपमाणेण केर- डिया, मखेज्जा ।	४२८	१३६ मणपज्जणणीसु पमत्तसजद- प्पहुडि जाण स्त्रीणकसायरीद- रागछदुमत्था त्ति दव्वपमाणेण केरडिया, सखेज्जा ।		४४१
१३७	णवरि लोभरुसाईसु सुट्टमसाप- राह्यसुद्धिसजदा उरसमा खवा		१३७ केरलणाणीसु सजोगिकेनली अजोगिकेनली ओष ।		४४२
			१३८ सजमाणुवादेण सजदेसु पमत्त-		

सूत्र संख्या	सूत्र	श्रुत सूत्र संख्या	सूत्र
	सजदप्पहुडि जात्र अजोगिकेरलि त्ति ओघ ।	४४७	१५८ सासणसम्माइडिप्पहुडि जात्र सीणकसायरीदरागउदुमत्या त्ति ओघ । ४१
१४९	मामाइय छेदोपट्टाणमुद्धिमज्जेसु पमत्तसजदप्पहुडि जात्र अणि- यीडिवादरसापराइयपनिट्ट उर- समा खना त्ति ओघ ।	४४७	१५९ अचमसुदसणीसु मिच्छाइडि प्पहुडि जात्र सीणकसायरीद- रागउदुमत्या त्ति ओघ । ४५५
१५०	परिहारसुद्धिसज्जेसु पमत्तापमत्त मत्तदा दच्चपमाणेण केरडिया, मसेज्जा ।	४४९	१६० ओहिदमणी ओहिणाणिभगो । ४५५ १६१ केरलदमणी केरलणाणिभगो । ४५६
१५१	सुहुमसापराइयसुद्धिसज्जेसु सुहु मसापराइयसुद्धिसत्तदा उरममा खना दच्चपमाणेण केरडिया, ओघ ।	४४९	१६२ लेस्साणुनादेण किण्हलेस्मिय- णील्लेम्मिय काउलेस्सिएसु मि- च्छाइडिप्पहुडि जात्र असजद- सम्माइडि त्ति ओघ । ४५९
१५२	जहाकसादीहारसुद्धिसज्जेसु च- उट्टाण ओघ ।	४१०	१६३ तेउलेस्मिएसु मिच्छाइडि दच्च- पमाणेण केरडिया, जोइसिय देवेहि सादिरेय । ४६१
१५३	सज्जासज्जा दच्चपमाणेण केर डिया, ओघ ।	४५०	१६४ सासणसम्माइडिप्पहुडि जात्र सज्जासज्जा त्ति ओघ । ४६२
१५४	अमज्जेसु मिच्छाइडिप्पहुडि जात्र असज्जेसुम्माइडि त्ति दच्चपमा- णेण केरडिया, ओघ ।	४५०	१६५ पमत्त अप्पमत्तसज्जा दच्चपमा- णेण केरडिया, मसेज्जा । ४६२
१५५	दसणाणुनादेण चक्खुदमणीसु मिच्छाइडि दच्चपमाणेण केर डिया, मसेज्जा ।	४५३	१६६ पम्मलेस्सिएसु मिच्छाइडि दच्च- पमाणेण केरडिया, सण्णिपत्तिं दियतिरिक्खजोणिणीण मसेज्ज- दिभागो । ४६२
१५६	अमसेज्जाससेज्जाहि जोसप्पि- णिउस्मप्पिणीहि अरहिरति कालेण ।	४५३	१६७ सासणसम्माइडिप्पहुडि जात्र सज्जासज्जा त्ति ओघ । ४६३
१५७	सेत्तेण चक्खुदसणीसु मिच्छा- इडिहि पदरमरहिरदि जगुलस्म मसेज्जदिभागमग्गपडिमाणेण ।	४५३	१६८ पमत्त अप्पमत्तसज्जा दच्चपमा- णेण केरडिया, मसेज्जा । ४६३ १६९ सुक्कलेस्सिएसु मिच्छाइडिप्प- हुडि जात्र सज्जासज्जा त्ति

सूत्र संख्या	सूत्र	शृङ्खला सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	द्वयपमाणेण केरडिया, प- लिदोयमस्स अमसेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोयममणहिरदि अतो- मुहुत्तेण ।		१८० उपसमसम्माइट्ठीसु असंजदस- म्माइट्ठि सजदामजदा ओघ ।	४७६
१७०	पमत्त अप्पमत्तसजदा द्वयपमा- णेण केरडिया, मसेज्जा ।	४६३	१८१ पमत्तमजदप्पहुडि जाय उपसंत- कमाययीदरागाउदुमत्था ति द- व्यपमाणेण केरडिया, सखेज्जा ।	४७७
१७१	अपुच्चरुणप्पहुडि जाय सजोगि- केरलि ति ओघ ।	४६५	१८२ सामणमम्माइट्ठी ओघ ।	४७७
१७२	भनियाणुवादेण भयमिद्विएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाय अजो गिकेरलि ति ओघ ।	४६५	१८३ सम्मामिच्छाइट्ठी जोय ।	४७७
१७३	अभयसिद्धिया द्वयपमाणेण के- रडिया, अणता ।	४७२	१८४ मिच्छाइट्ठी ओघ ।	४७७
१७४	सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठीसु असजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाय अजोगिकेरलि ति ओघ ।	४७२	१८५ सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छा- इट्ठी द्वयपमाणेण केरडिया, देवेहि सादिरेय ।	४८२
१७५	सद्यमम्माइट्ठीसु असजदसम्मा इट्ठी ओघ ।	४७२	१८६ सामणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाय स्त्री- णकपाययीदरागाउदुमत्था ति ओघ ।	४८२
१७६	सजदासजदप्पहुडि जाय उपसत- कमाययीदरागाउदुमत्था द्वय- पमाणेण केरडिया, सखेज्जा ।	४७४	१८७ असण्णी द्वयपमाणेण केरडिया, अणता ।	४८२
१७७	चउण्ह खया अजोगिकेरली ओघ ।	४७४	१८८ अणताणताहि ओसपिणि उस्म- पिणीहि ण अयहिरति कालेण ।	४८३
१७८	सजोगिकेरली ओघ ।	४७६	१८९ सेत्तेण अणताणता लेग्गा ।	४८३
१७९	वेदगमम्माइट्ठीसु असजदसम्मा- इट्ठिप्पहुडि जाय अप्पमत्तमजदा ति ओघ ।	४७६	१९० आहारणुवादेण आहारएसु मि- च्छाइट्ठिप्पहुडि जाय सजोगि- केरलि ति ओघ ।	४८३
			१९१ अणहारणमु कम्मइयकायजोगि- भगो ।	४८४
			१९२ अजोगिकेरली ओघ ।	४८५

२ अवतरण गाथा सूची ।

क्रम सूच्या	गाथा	पृष्ठ अथवा कहां	क्रम सरया	गाथा	पृष्ठ अन्यत्र कहां
३४	अट्टसीसद्धल्वा	६६	गो जी ५०५	८ नाम दृवणाद्विय मण	११
४८	अट्टेय सयसहस्ता अट्टा	९६	गो जी ६२९	७ नाम दृवणाद्विय मस	१२३
४९	अट्टेय सयसहस्ता णय	९७		४१ तिगद्विय सद णयणउदी	९० गो जी ६२५
३५	अट्टस्त अणलसस्त य	६९	गो जी टीका, आदि	३६ तिगिण सहस्ता सत्त य	६६ अनु आदि
१२	अवगयणिवारणदृ	१७		४५ तिसदिं वदनि केई	९४ गो जी ६२६
५९	अवगयणिपारणदृ	१२६		७० तेरस कोडी देसे चाय	२५४ गो जी ६३२
१	अरसमरुवमगव	२	प्रयच आदि	६९ तेरह कोडी देसे पण्णा	२५२
२९	अवणयणरासिगुणिदो	४८		६८ तेरह कोडी देसे ताय	२५२ गो जी ६३२
२५	अउहारवट्टिग्या	४६		१९ धम्माधम्मागासा	२०
२५	अउहारविसेलेण य	४६		६२ धम्माधम्मा लोगा	१२९
१०	आगमो छात्तवचन	१२	अनु टीका	३ नयोपतथैकाताना	५ आ मी १०७
३३	आवलि असखसमया	६	गो जा ५७३	७ नानात्मतामप्रजइत्तदेक	६ युक्त्यनु ५०
७७	आवलियाप चमो	३५५		३० पक्खेपरासिगुणिदो	४९
४४	उत्तरदलहयगच्छे	९४		३८ पण्णो च सहस्ता	८८
४७	एक्केनकमुण्डाणे	९५		२२ पत्थेण कोद्वेण य	३२
४	एयद्वियम्मि जे	६	गो जी आदि	२० प थो तिहा तिट्ठो	२९
२१	कालो तिहा जिहत्तो	२९		६५ पहो सायर सुई	१३२ त्रि मा ९२
७१	गयणदुणयकसाया	२०५		२ पुट्टी जल च छाया	३ गो जी आदि
४६	चउत्तरतिगिमय	९४		९ पूर्वापरिउरुदादे	१२
५२	चउसदु छ च मया	९९		१८ " "	१२३
५६	छम्मादो छम्मेता	१०१		३० पवसय वारसुत्तर	८८
७८	जगसेट्ठीय चमो	३५६		५३ पचेव सयसहस्ता उग	१००
६०	जए जहा जाणेउजो	१२६		५ पचेव सयसहस्ता ते	१०१
१३	जए चह जाणेउजो	१७		१४ प्रमाणनयनिशेयै	१७
३१	जे अहिया अवहार	४२		६१ " "	१२६
३२	जे ऊगा अवहार	४२		७ धदिरथां वहुमीहि	७
१५	ज्ञान प्रमाणमित्थाहु	१८	लघीय ६, ७	६ वहुमीहाययीभावो	६
५०	णव चेव सयसहस्ता	९७		७६ वीजि जोणीभूइ	३४८
				११ रागादा द्वेषादा मोहादा	१०

क्रम सत्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहा	क्रम सत्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहा
७५	रात्रिपितृसेषेणवह्निर्	३४२		७३	सत्तसहस्रसङ्ख्येति	२५६	
२६	लङ्घवित्सेसच्छिषण	४६		५१	सत्तादी अदृता	९८ गो जी	६६३
२७	लङ्घतरसगुणित्	४७		७९	सत्तादी छक्कता	४५०	
२३	लागागासपदेसे	३३		७३	साहारणमाहारो	३३२ गो जी	१९२
४३	वत्तीसमदृदाक	९३ गो जी	६२८	१६	सिद्धा णिगोद्वीया	२६ ति प	आदि
३७	वत्तीस सोलस चत्तारि	८७		१७	सुहुमो य हवदि	इवदि	२७ ति भा
६६	वारस वम अद्वेव य	१६७		६३	सुहुमो य हवदि	जायदे	१३०
६७	"	२०१		१८	सुहुम तु हवदि	हवदि	७८
३९	विसहस्र अड्याल	८८		६४	सुहुम तु हवदि	जायदे	१३०
५३	वे श्रीडि सत्तवीसा	१००		४२	सालमय चडवीस	९१ गो जी	६२७
७२	सत्त णत्र सुण्ण पच	२५६		७८	हारान्ताह्वनहारा	४७	

३ न्यायोक्तियां ।

सूचना—न्यायशास्त्रके पश्चात् १, ३ सत्या भागसूचक और शेष सत्याए पृष्ठसूचक हैं ।

	भाग पृष्ठ		भाग पृष्ठ
१ अग्निरिच माणवक्रोऽग्नि ।	१, २८	१६ भूतपूर्वगति-न्यायसमाधयणात् ।	१, २६३
२ कज्जणाणत्तादो कारणणाणस मणुमाणिज्जदि ।	१, २८९	१७ भूतपूर्वगति ।	१, १६६
३ कारणकम्माणसारी कज्जकमो ।	१, २९८	१८ भूदपुष्यगइ ।	१, १७९
४ कारणधर्मस्य कार्यानुत्ति ।	१, २३७	१९ भूदपुत्रजाणण ।	१, २५
५ कारणानुरूप कार्यम् ।	१, २७०	२० यथोद्देशरतया निर्देशः ।	१, १६१
६ जहा उहेसो तहा णिहेसो ।	३, १० ३१३ ३१५	२१ यथेकशब्देन न जानाति ततोऽ- न्येनापि शब्देन धापयितव्य ।	१, ३२
७ ज धूल अणघण्णणीय त पुण्य मेघ भाणियव्य ।	३, २७ १३०	२२ कूटितन्त्रा व्युत्पत्ति ।	१, १४०
८ नदीस्रोतेन्याय ।	१, १८०	२३ वस्तुप्रामाण्यद्वयनप्रामा ण्यम् ।	१, ७२ १९६, ३, ११
९ नदि प्रमाण प्रमाणान्तरमपेक्षते	१, २०४	२४ व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्ति ।	३, १८
१० न दि स्वभाव परपर्यनु योगाहा ।	१, २९६	सति समये व्यभिचारे च विशेषणमर्थयद्भवति ।	१, १८५
११ नागमस्तर्कगोचर ।	१, ३०४	२५ स-जकालप्रगट्टिदरासीण घया- णुसारिणा आवण होदव्य ।	३, १२०
१२ पमाणेण पमाणाविरोहिणा होदव्य ।	१, २१७	२६ सामान्यबोदनाच्च विशेषेण तिष्ठन्ते ।	१, १४०
१३ परिशेषन्याय	१, ४२ १५७	२७ सिद्धासिद्धाश्रया द्वि कथामार्गो	१, ३४९
१४ प्रतिपाद्यस्य बुभुरिसतार्थविषय निर्णयोत्पादन चक्रनुचवम फलम् ।	१, ९२७	२८ सते समये विपदिचारे च विसे खणमस्थयत् भवति ।	१, २६२-३३१
१५ भाषिणि भूतयत् (उपचार)	१, १८१	२९ सुपरिष्ठा हियपणिष्णुरकरा ।	१, ७०

४ ग्रन्थोल्लेख ।

भाग पृष्ठ

१ अप्पावहृग मुत्त

- १ 'उवसमसम्माइद्धी धोवा । एइयसम्माइद्धी असरोज्जगुणा । वेदयसम्माइद्धी असखेज्जगुणा' ति अप्पावहृगमुत्तादो णत्तदे । ३ ६८
- २ 'तेइदियअपज्जत्तरासीदो चउरिंदियरासी विसेसहीणो' ति युत्तअप्पावहृग मुत्तादो । ××× एत्त पि अप्पावहृगमुत्तादो चेव णत्तदे । ३ ३२१
- ३ 'सट्पत्थोवा णवुसयवेदअसज्जदसम्माइद्धिणो । इतिववेदअसज्जदसम्माइद्धिणो असखेज्जगुणा । पुरिसवेदअसज्जदसम्माइद्धिणो असखेज्जगुणा' इदि अप्पावहृग मुत्तादो कारणस्स थोयत्तण जाणिज्जे । ३ २६१
- ४ अण्णहा अप्पावहृगमुत्तेण सह विरोहादो । ३ २७३

२ कमायपाहुड, पाहुडमुत्त

- १ कसायपाहुटउवपसो पुण अट्ठकसापसु खाणिसे पच्छा अतोसुहुत्त गत्तण सोलस कम्माणि खविज्जति ति । १ २१७
- २ आइरियकहियाण ×× कसायपाहुड्ढाण । १ २२१
- ३ 'अणत्तर पच्छदो य मिन्त्त' इदि अणेण पाहुडमुत्तेण सह विरोहादो । २ १६६

३ कालमूत्र (कालानुयोग)

- १ कालसूत्रेण सह विरोध किञ्च भवेदिति चेन्न, तत्र क्षयोपशमस्य प्राधान्यात् । १ १४२
- २ तो एदाओ दुविहसज्जदरासीओ सातराओ ह्यति । ण च एव, कालानुयोगे एदासिं णित्तरत्तुवलभादो । ३ ४४८

४ सुदानध

- १ 'पविंदियतिरिन्धजोणिणीहितो वाणत्तरेदेवा सरोज्जगुणा, तत्थेय देवीओ सखेज्जगुणाओ' एदम्हादो सुदानधमुत्तादो जाणिज्जे । ३ २३१
- २ 'मणुसगईए मणुसेहि रुव पन्निखत्तपहि सेद्धी अगहिरदि अगुलवग्गमूल तदियवग्गमूलगुणिदेण' इदि सुदानधमुत्तादो । ३ २४९
- ३ 'ईसाणकपयासियदेवाणमुवरि तम्हि चेव देवीओ सखेज्जगुणाओ । तदो सोहम्मकप्पयासियदेवा सखेज्जगुणा । तम्हि चेव देवीओ सखेज्जगुणाओ । पदमाए पुदवीए णेरइया असखेज्जगुणा । भवणयासियदेवा असखेज्जगुणा ।

देवीओ सखेजगुणाओ । पचिन्द्रियतिरिदरजोणिणीओ सखेजगुणाओ । घाण
वैतरदेया सखेजगुणा । देवीओ सखेजगुणाओ । जोइसियदेया सखेजगुणा ।
देवीओ सखेजगुणाओ' त्ति एदम्हादो खुदायधसुत्ताओ जाणिजेदे जहा देवाण
सखेजगुणा भागा देवीओ ह्यंति ।

३ ४१४

४ खुदायधे वि घणधरूपणविक्रमसूर्देण पादोलभादो वा ।

३ २७९

५ खुदायधुवसहारजीवट्टाणस्स मिच्छाइट्टिविन्धमसूर्देण सामणविक्रम
सूचिसमाणत्तविरोद्धा । एव खुदायधमिह बुत्तसअवहारकाया जीवट्टाणे
सादिरेया वत्तया ।

३ २७९

६ अवनेसिदमणसरसिपरुवणादो जुत्त खुदायधमिह भागलद्धादो एगरुस्स
अवणयण ।

३ २४९

७ सपदि खुदायधेण सामणेण जीवपमाणपरुवण जाओ विन्धमसूर्देओ
XXX इदि एसा खुदायधे XXX खुदायधे उत्ता XXX खुदायधे बुत्ता XXX ।
तम्हा एत्थ बुत्तविक्रममसूर्देहि ऊणियाहि खुदायधुत्तविन्धमसूर्देहि वा अधि
याहि होदव्वमिदि चोदगो भणदि । एत्थ परिहारो बुत्तवेदे । जीवट्टाणबुत्तविन्धम
सूर्देओ सपुण्णाओ, खुदायधमिह उत्तविन्धमसूर्देओ साधियाओ ।

३ २७३

८ खुदायधमिह बुत्तविन्धमसूर्देओ सपुण्णाओ विण्ण ह्यंति ? XXX अहवा
एत्थ बुत्तविन्धमसूर्देओ देवणाओ, खुदायधमिह उत्तविन्धमसूर्देओ सपुण्णाओ ।

३ २७५

५ जीवट्टाण

१ जीवट्टाणमिच्छाइट्टिविन्धमसूर्दिपादो वि खुदायधसामणविक्रमसूर्दि-
पादेण समाणो ।

३ २७९

२ एत्थ पुण जीवट्टाणमिह मिच्छत्तविलेभिद्जीवपमाणपरुवणे कीरमाणे
रुधादिपतेरसगुणट्टाणमेत्तेण अवणयणरामिणा होदवरमिदि ।

३ २५०

३ एत्थ वि जीवट्टाणे XX बुत्ताओ ।

३ २७८

६ तत्त्वार्थभाष्य

१ उक्त च तत्त्वार्थभाष्ये—उपपादो जन्म प्रयोजनमेया त इमे भौपपादिका । १ १०३

७ तत्त्वार्थसूत्र

१ ' घनरूपत्यन्तानामेकम् ' इति तत्त्वार्थसूत्राद्वा ।

१ २३९

१ ' छमिपिपीलिफाभ्रमरमनुष्यादीनामेकेकवृद्धानि ' इति अस्मात्तत्त्वार्थसूत्राद्वा ।

१ २५८

८ तिलोपपण्णत्ती

१ ' दुग्गुण दुग्गुणो दुग्गो निरतरो तिरियलेगे त्ति तिलोपपण्णात्तिमुत्तादो ।

३ ३६

२ ' ...

३ ३६

९ परियम्भ

- १ 'अम्भि जम्भि अणताणत्तय मग्गिज्जदि तम्भि तम्भि अजहणमणुक्कस्सअणताणत्तस्सेव गहण' इदि परियम्भवयणादो । ३ १९
- २ 'जहणअणताणत्त वग्गिज्जमाणे जहणअणताणत्तस्स द्वेद्धिमवग्गणट्टाणेहिंत्तो उवरि अणत्तगुणधम्मट्टाणाणि गतूण सव्वजीवरासियग्गसल्लागा उप्पज्जदि' त्ति परियम्भे सुत्त । ३ २४
- ३ ण च तदियवारधम्मिदसव्वग्गिदरासियग्गसल्लागाओ द्वेद्धिमवग्गणट्टाणेहिंत्तो उवरि परियम्भउत्तअणत्तगुणधम्मट्टाणाणि गतूणुप्पण्णाओ । ३ २४
- ४ 'अणताणत्तविसए अजहणमणुक्कस्सअणताणत्तेणेव गुणगारेण भागदारेण वि द्वेद' इदि परियम्भवयणादो । ३ २५
- ५ 'अत्तियाणि वीवसामरूवाणि ज्जूदोवछेदणाणि च रूवाहियाणि' त्ति परियम्भसुत्तेण सह विद्वज्जइ । ३ ३६
- ६ ज त गणणासत्तेज्जय त परियम्भे सुत्त । ३ ९९
- ७ 'अम्भि जम्भि असस्सेज्जासस्सेज्जय मग्गिज्जदि तम्भि तम्भि अजहणमणुक्कस्सअसत्तेज्जासस्सेज्जस्सेव गहण भवदि' इदि परियम्भवयणादो । ३ १२७
- ८ 'अट्टरूव वग्गिज्जमाणे वग्गिज्जमाणे असत्तेज्जाणि वग्गट्टाणाणि गतूण सोहम्मीसाणधियत्तमसूह उप्पज्जदि । सा सह वग्गिदा णेरहयविकत्तमसूह ह्वदि । सा सह वग्गिदा भवणवासियविकत्तभरमूर् ई ह्वदि । सा सह वग्गिदा घणगुलो ह्वदि' त्ति परियम्भवयणादो । ३ १३४
- ९ पदासिं अणहारकालपरूयगादासुत्तादो वा परियम्भपमाणादो वा जाणिज्जे । ३ २०१
- १० परियम्भादो असस्सेज्जाओ जोयणकोडीओ सेदोए पमानमवगदमिदि चेण, पदस्स सुत्तस्स यलेण परियम्भपवुत्तीदो । ३ २६३
- ११ परियम्भवयणादो । ३ ३३७
- १२ परियम्भवयणादो । ३ ३३८
- १३ ण च परियम्भेण सह त्तिरोदो, तस्स तदुहेसपदुप्पायणे वाजारादो । ३ ३३८
- १४ ण परियम्भदो वग्गत्तसिद्धी, तस्स तेउक्काइयअद्वच्छेदणपहिं अणोयति यत्तादो । ३ ३३९

१० पिंडिया

उत्त च पिंडियाए—

- १ लेस्सा य दव्व भाय कम्म णो कम्ममिस्सय दव्व ।
जीवस्स भायलेस्सा परिणामो अप्पो जो सो ॥ २ ७८८

११ वर्गणासूत्र

- १ कथमेतद्वयगम्यते ? वर्गणासूत्रात् । किं तद्वर्गणासूत्रमिति चेदुच्यते १ २९०

१२ वियाहपण्णत्ति

१ लोको वादपदिद्विदो त्ति वियाहपण्णत्तीवयणादो । ३ ३५

१३ वेयणासुत्त, वेदनाक्षेत्रनिधान

१ जो मच्चो जोयणसहस्सिओ सयभूरमणममुहस्स वाहिरिह्लप तडे वेयण समुघापण समुहदो काउलेस्सियाप लग्गो त्ति पदेण वेयणासुत्तेण सह विरोदो ३ ३७

२ तरुत्तोऽवसीयत इदि चेद्वेदनाक्षेत्रनिधानसूत्रात् । तद्यथा । १ २५१

३ ण, वादरेइदियओगाहणादो सुहुमेइदियओगाहणाप वेदणखेत्तविहाणादो बहुत्तोचलभा । ३ ३३०

४ सुहुमेइदियओगाहणादो वादरेइदियओगाहणाप वेदणखेत्तविहाणासुत्तादो थोत्तुयलभा । ३ ३३१

१४ सन्मतिघ्न

१ णाम उवणा इविप त्ति एस दवजट्टियस्स णिक्खेयो ।

२ भायो तु पज्जवट्टियपरुचणा एस परमत्थो ।

३ अणेण सम्मइसुत्तेण सह कधमिद यन्खाण ण विरुज्जदे ? १ १५

१५ सतकम्मपाहुड

१ एव काऊण××× सोलस पयडीओ खवेदि । तदो भतोमुहुत्त गतृण पच्च-
फक्खाणापच्चफ्फणाणचरणरोध माण माया लोभे अकमेण खवेदि । एसो सतकम्म १ २१७

२ पाहुडउवएसो

३ आइरियकइियाण सतकम्म कसायपाहुडाण १ २२१

१६ संतसुत्त (परूणा)

१ अपज्जत्तकाले पच्चिदियपाणाणमत्थित्तपटुप्पायणसतसुत्तर्त्तणादो २ ६५८

५ परिभाषिक शब्दसूची ।

सूचना— जो शब्द प्रथमें अनेकार आये हैं उनके प्रायः प्रथम एक दो पृष्ठों ही यहाँ दिये गये हैं ।

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
अ		अप्रदेशिक	३
अर्जाद्रव्य	२	अप्रदेशिकान्त	१०४
अतीतप्रस्थ	२९	अप्रदेशिकासम्भवात्	१७, १६
अधर्मद्रव्य	३	अरुपी अर्जाद्रव्य	२, ३
अधस्तनविकल्प	७२, ७४	अर्धच्छेद	२१
अधिगम	३९	अर्धच्छेदशालाना	३३५
अधस्तनविरलन	१६५, १७०	अर्धपुद्गलपरिवर्तनकाल	२६, २६७
अनन्त	११, १२, १५	अल्पबहुत्व	११४, २०८
अनन्तगुण	२६७, २६८	अवसापिणी	१८
अनन्तगुणहीन	२२, २९	अवहार	४६, ४७, ४८
अनन्तानन्त	९१, २१, २२	अवहारकाल	१६४, १६७
अनन्तप्रदेशिक	१८, १९	अवहारकालप्रक्षेपशालाना	१६५, १६६, १७१
असत्येयप्रदेशिक	३	अवहारकालशालाना	१६५
अनन्तिमभाग	२	अवहारविशेष	४६
अनागत (काल)	६१, ६२	अवहारार्थ	८७
अनागतप्रस्थ	२९	अव्ययीभावसमास	७
अनुगम	२९	अष्टरूपधारा (घनधारा)	५७
अन्तमुहूर्त	८	असत्यात्	१२१
अन्योन्यगुणकारशालाना	६७, ७०	असत्यात्तासत्यात्	१२७
अन्योन्याभ्यास	३३४	असत्येयगुण	२१, ६८
अपनयन (राशि)	२०, ११५, १२९	असत्येयगुणहीन	२१
अपनेय	४८	असत्येयप्रदेशिक	३८
अपर्याप्त	४२	असत्येयभाग	६३, ६८
अपवाद्भ्रजमाण	३३१		
	९२	आ	
	४२	आकाशद्रव्य	३

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृ
आगम	१२, १०३	कालद्रव्य	
आगमद्रव्यानन्त	१२	कालभावप्रमाण	=
आगमद्रव्यासख्यात	१२३	वृत्तयुग्मराशि	७७
आगमभावानन्त	१२३	क्षेत्रभाजप्रमाण	=
आगमभावासख्यात	१२५	कोटाकोटी	२५
आदि (घन)	०१, ९३, ९४		ख
आदेश	१, १०	स्वतित	३०, ४१, ७१
आप्त	१०		ग
आयाम	१०९, २००, २२५	गणनानन्त	१५, १८
आवलिङ्गा	६५, ६७	गणनासख्यात	१२४, १०६
		गृहीत	५४, ५७
इच्छा (राशि)	१८७, १९०, १०५	गृहीतगुणाकार	५४, ६१
		गृहीतगृहीत	५४, ५९
उच्चस	६५, ६६, ६७		घ
उत्तर (घन)	०१, ९३, ९४	घनपल्य	८०, ८१
उत्तरपडियती	९४, ९९	घनागुल	१३०, १३९
उत्सर्पिणी	१८	घनाघनधारा	५३, ५८
उपरिमर्ग	२१, २२, ५०		च
उपरिमधिकल्प	५८, ७०	चतुष्फेद	७८
उपरिमधिरलन	१६५, १७०		छ
उभयानन्त	१६	छद्द्रव्यप्रक्षिप्तराशि	१०, २६, १२९
उभयासख्यात	१२५		ज
		जगमतर	१३५, १३७
एकानन्त	१६	जघन्य अनन्तानन्त	२३
एकासख्यात	१२५	जघन्य परीतानन्त	२३
		जगध्रेणी	१३, १३५, १३७
ओ		जाति	२००
ओघनिर्देश	१, ०	जातिस्मरण	१०३
ओज (राशि)	२२०	जीवद्रव्य	७
		जगुलीप	
कर्मधारयसमास	७	प्रायश्चारीरद्रव्यानन्त	१३
कलिभोजराशि	२२०	प्रायश्चारीरद्रव्यासख्यात	१३३
कल्पकाल	१३१, ३५९		न
कारण	४३, ७२	तपुदयममाम	#

शब्द

पृष्ठ

शब्द

पृष्ठ

तद्व्यतिरिक्तकर्मान्त

१५ निगोदजीव

३५७

तद्व्यतिरिक्तकर्मासख्यात

१२४ निक्षेप

१७

तद्व्यतिरिक्तद्रव्यानन्त

१५ निरुक्ति

५१, ७३

तद्व्यतिरिक्तद्रव्यासख्यात

१०४ निर्देश

१, ८, ०

तद्व्यतिरिक्तनोर्कमान्त

१५ नोद्भागम

१३, १२३

तद्व्यतिरिक्तनोर्कमासख्यात

१२४ नोद्भागमद्रव्यानन्त

१३

तेजोहराशि

२४९ नोद्भागमद्रव्यासख्यात

१२३

त्रिकच्छेद

७८ नोद्भागमभाषान्त

१६

त्रैराशिक

९१, ९६, १०० नोद्भागमभाषासख्यात

१२५

द

न्यास

१८

वक्षिणप्रतिपत्ति

प

दिवस

९४, ९८ परस्यान (अल्पबहुत्व)

२०८

द्वेय

६७ पर्याप्त

३३१

द्रव्य

२० परिहाणि (रूप)

१८७

द्रव्यप्रमाण

२, ५, ६ परीतानन्त

१८

द्रव्यप्रमाणानुगम

८० पत्योपम

६३, १३२

द्रव्यभावप्रमाण

१, ८ पुद्गलद्रव्य

३

द्रव्यानन्त

३९ पूर्वफल

४९

द्रव्यानुयोग

१२ पृथक्त्व

८९

द्रव्यासख्यात

१ पृथिवीकायिक

३३०

द्विगुणादिकरण

१२३ पञ्चछेद

७८

द्विरूपधारा

७७, ८१, ११८ प्रक्षेप

४८, ४९, १८७

द्विगुसमास

८० प्रक्षेपराशि

४९

द्वसमास

७ प्रक्षेपशालाका

१५९

ध

७ प्रचय

९४

धर्मद्रव्य

प्रतरपत्न्य

धुधराशि

३ प्रतरागुल

७१, ७९, ८०

नय

४१ प्रत्येकशरीर

३३१, ३३३

नामानन्त

१८ प्रमाण

४, १८

नामासख्यात

१८ प्रमाण (परिमाण)

४०, ४२, ७२

नालिका

११ प्रमाण (राशि)

१८७, १९४

नाली

१२३ प्रयाह्यमान (पवाह्यमान)

९२

६५ प्राण

६६

६६ फल (राशि)

फ

१८७, १९०

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
बहुव्रीहिसमास		लब्धभवद्धार	४६
बादर	३३०, ३३१	लब्धविशेष	४६
बादरनिगोदप्रतिष्ठित	३४८	लब्धान्तर	४७
बादरयुग्मराशि	२८०	लोक	३३, १३२
		लोकप्रतर	१३३
		लोकप्रदेशपरिमाण	३
भज्यमानराशि	४७		
भव्यानन्त	१४	वनस्पतिक्रायिक	३५७
भव्यानख्यात	१२४	वर्गमूल	१३३, १३४
भागलब्ध	३८, ३९	वर्गशलाका	२१, ३३५
भागहार	३९, ४८	वर्गस्थान	१९
भागाभाग	१०१, २०७	वर्गितसवर्गित	३३
भाजित	३९, ४१	वर्गितसवर्गितराशि	१९
भाज्यशेष	४७	वर्तमानप्रस्थ	२९
भाचप्रमाण	३२, ३९	वस्तु	६
भानानन्त	१६	घादाल	२५५
भिन्नसुहृत्	६६, ६७	विकल्प	५२, ७४
भग	२०२, २०३	विरलन	१९
		विरलित	४०, ४२
		त्रिफलसूची	१३१, १३३, १३८
मानुषक्षेत्	२५५, २५६	विस्तारानन्त	१६
मुहूर्त	६६	विस्तारासख्यात	१२५
		वृद्धि (रूप)	४, १८७
मुक्तानन्त	१८		
युग्म (राशि)	२४९		
		शलाका	
		शलाकाराशि	२१
रज्जु	३३	शाद्वतानन्त	३१, ३३६
राशि	२४९	शाद्वतासख्यात	१५
राशियिशेष	३४२	श्रेणी	१५४
रूपीभजीवद्रव्य	२		५१४२
रूप	६५	समकरण	

शब्द	पृष्ठ	शब्द	
समास	६	सत्या	
समास (जोड़)	२०३	सख्यात	
सर्वपरस्थान	११४, २०८	सव्यान	५,
सर्धानन्त	१६	सद्यष्टि	८७, ११२
सर्वासख्यात	१२५	स्वस्थान अल्पबहुत्व	११४, -
सागर	१३२	स्थापनानन्त	१,
साधारणशरीर	३३३	स्थापनासख्यात	१२३
सूक्ष्म	३३१	स्तोक	६५
सूच्यगुल	१३२, १३५	द्वार	४७
सकलनसूत्र	९१, ९३	द्वारातर	४७

६ मूडवित्रीकी ताड़पत्रीय प्रतियोंके मिलान ।

अ — मूडवित्रीकी प्रतियोंके ऐसे पाठभेद जो अर्थ व पाठशुद्धिकी दृष्टिसे विशेषता रखते हैं, अतएव प्रायः हैं ।

भाग १

पृष्ठ	पक्ति	पाठ है ।	पाठ चाहिये ।
७	२	सयलत्थवत्थूण	सयलत्थवत्थाण
११	१३	अर्प-वाचक	पदार्थोंकी अवस्थाके वाचक
१८	४	समवाय निमित्त	समवायवृत्त्यनिमित्त
२४	७	मगलप्राप्ति	मगलत्वप्राप्तिः
३८	२	मगलम् । तत्र,	मगलत्वम् । न
३९	१०	देहिती कय	x
४०	७	अव्योच्छित्तिय	अव्योच्छित्तिय (ची)
४१	६	कयदेवदा	कयदेवदा
४१	१७	निबद्ध कर दिया	स्वयं किया

पृष्ठ	पक्ति	पाठ है ।	पाठ चाहिये ।
॥	७	कथदेवदा	णिरुद्धदेवदा
॥	१८ १९	देवताको जाता ह,)	अन्यकृत देवतानमस्कार निबद्ध किया जाता है,
४९	७	साधन	शोधन
४९	२०	साधन अर्थात् व्रतोंकी रक्षा	शोधन अर्थात् व्रतोंकी शुद्धि
५२	८	रत्नाभोगस्य	रत्नभागस्य
६३	७	प्राप्त्यतिशय	प्राप्तातिशय
६३	१७	निश्चय व्यवहाररूप प्राप्त हुई	निश्चय और व्यवहारसे प्राप्त अतिशयरूप
६४	३	चउक घाह तिय	तद्देव धारतिप
॥	१४	चार घानिया कर्मोंमेंमे	x
६५	६	तेण गोदमेण	तेण वि गोदमेण
॥	१४	गौतम गणधरने	गौतम गणधरने भी
६७	४	होहदि त्ति	होहदि त्ति
८०	८	चेव	चेव होंति
८३	११	द्रोष्यत्यदुद्दवत्	द्रवति द्रोष्यत्यदुद्दवत्
॥	२७	जो	जो वर्तमानमें पर्यायोंको प्राप्त होता है,
८६	५	सन्चेते	सतु ते
९७	३	पूजा विद्धान	पूजाविधिधान
॥	१३	पूजाविविका	पूजा आदि विधिका
१०१	५	णेष्यमाण	णेष्यमाण
॥	१७	ज्ञेयप्रमाण हे, क्योंकि ज्ञान- प्रमाण ही	हैं, क्योंकि ज्ञेयप्रमाण ज्ञानमात्र
१०२	१	धम्मवेसण	धम्मवसेसण
१०६	५	समयस्स	ससमयस्स
११०	४	वेइयाण	वेइया वसा
११९	६	सटाण	सटाण
॥	१४	नाना प्रकारके गलाता हे	इह प्रकारके सस्थानोंसे युक्त नाना प्रकारके शारोंसे पूरित होता है और गलाता है
१२३	८	अद्दुवम पणिधिकप्पे	अद्दुवसपणिधिकप्पे
॥	१०	वज्जप	वुज्जप
१४६	४	चिक्रमेणोपलभात्	ऽक्रमेणोपलभात्

पृष्ठ	पक्ति	पाठ है ।	पाठ चाहिये ।
१५१	४	श्रद्धानमनुरक्तता	श्रद्धानमुत्कता
१५९	१	अवधरण	अवघाण
१७१	८	जायदि	जादि
१७१	९	समिह्लियइ	समह्लियइ
१७१	२४	वेदक सम्पत्तयसे मेल कर लेता है	वेदक सम्पत्तय को प्राप्त होता है
१९४	६	सद्वापार्थवयवस्य	सद्वास्यार्थवयवस्य
१९६	६	अपौरुषेयत्वस्य	अपौरुषेयस्य
१९८	७	पुनर्नोत्पत्तिरिति	पुनर्नोत्पत्तिरिति
२०१	७	यातयति	यातयति
"	२३	गिराता है	यातना देता है
२०३	८	द्वय	द्विज
२०३	२२	द्रव्य और भाररूप	दिव्य स्वभाववाले
२१२	४	अणेणेष	अणेण
२१७	४	सखे-जदि	सखेज्जे
२२०	६	परिमाणत्तादो	परिणामत्तादो
२४३	२	उत्तिरग-	उत्तिग (उत्तिग)
"	४	घ्राणमिति	घ्राणमिति चैत्
२४८	२	भवेदिति	भवति
२५९	६	सन्निन इति	सन्निन , अमनस्का असन्निन इति
"	१९	कहते हैं	और मनरहित जीवोंको असन्नी कहते हैं
२६०	२	निष्पत्तौ	निष्पत्ते
२७०	१	कर्मस्कन्धे	नोकर्मस्कन्धे
"	१४	कर्मस्कन्धोके	नोरुर्मस्कन्धोके
२८१	२	सच्चमोस ति	सच्चमोस त
२८७	९	प्रयत्ना	सप्रयत्ना
"	३०	प्रयत्न और	प्रयत्नसहित
२९३	१	तपरित्यक्ता	परित्यक्ता
२९५	६	को ह्यौ	केष्यो
३१८	५	भूतपूर्वगत	भूतपूर्वगति
३२०	७	ताम्या	पताम्या
३२१	४	जादि	जाति
"	"	जादि	जाति

शृङ्ग	पक्ति	पाठ हे ।	पाठ चाहिये ।
३२१	५	जादि	जाति
३३१	११	नपुसकमुभया-	नपुसक उभया
३४४	३	अभिलापे	अभिलापो
३४९	८	गर्हा	गृर्हा
३४९	३०	गर्हा	गृर्दि
३६०	१	भेय च	भेयगय
३७३	७	सचित्त-	सचित्त-
३७४	६	न,	च
३७७	३	निगधनावधेयामपिप्यता	निगधनावधमपिप्यता
३८८	५	पीत	तेज
३८९	५	अप्पाणमिव	अप्पाण पिव
३९०	४	रायद्वेसा	रायद्वेसा
३९८	३	परुदेशे सत्यधिरोधत्	परुदेशोत्पत्यविरोधात्
३९८	१७	एकदेश रहनेमें	एकदेशकी उपतिमें

भाग २

४१५	४	मिच्छादृष्टी सिद्धा० चेदि	मिच्छादृष्टी० सिद्धा चेदि
४१९	४	परदियादी	अरिय परदियादी
४२७	२	भणमाणे	ओधे भणमाणे
४४४	१	सिद्धमपज्जत	सिद्धमपज्जत्त
४४४	२	सरीर पट्टवण	सरीरादवण (सरीरादवण)
४६२	६	तिण्णि सम्मत्त	तिण्णि सम्मत्ताणि
४६३	४	तिण्णि सम्मत्त	तिण्णि सम्मत्ताणि
५१३	७	द्विग्नित्यवेदा	द्विग्नित्यवेदा पुण
५३४	७	असुह ति लेस्साण गउरवण्णा भावापत्तीदो ।	असुह ति लेस्साण घवलवण्णाभावप्पसगादो, कम्मभूमिमिच्छादृष्टीण पि अपज्जत्तकाले असुह- ति लेस्साण गउरवण्णाभावापत्तीदो ।
५३४	२६	भोगभूमिया मनुष्योंके गौर वर्णका	भोगभूमिया मनुष्योंके घवलवर्णके अमानका प्रसग प्राप्त होगा । तथा, अशुभ तीनों छेद्या- वाले कर्मभूमिया मिथ्यादृष्टि जीवोंके भी अपर्याप्त कालमें गौर वर्णका

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है ।	पाठ चाहिये ।
५३५	९	तेज पद्म सुकलेस्साधो भवति । पच घण्ण रस कागरस्त	तेज पद्म सुकलेस्साधो भवति । बहुघण्णस्त जीघसरारस्त कधमेकलेस्सा जुज्जेदे ? ण, पाधण्णपदमासे-ज ' कसणो पागो ' ति पच घण्णस्त कागरस्त
५३५	२५	तेज, पद्म और शुक्लेदयाए होती हैं । जैसे पाचों वर्ण और पाचों रसगले कारुके अथा पाचों वर्णगले रसोंसे युक्त कारुके कृष्ण व्यपदेश	तेज, पद्म और शुक्लेदयाए होती हैं । शुक्रा—अनेक वर्णवाले जीवके शरीरके एक लेदया कैसे बन सकती है ? समाधान—नहीं, क्योंकि, प्राधान्यपदकी अपेक्षा ' कारु कृष्ण है ' इसप्रकार पाचों वर्णोंसे युक्त कारुके जैसे कृष्ण व्यपदेश
५६८	६	पघ देवगर्दी	पघ देवगर्दी समत्तो (ता)
५८९	३	तिरिक्खगदीओ ति	तिरिक्खगदि ति
५९०	१०	एव विदियमग्गणा	एवमिदियमग्गणा
५९८	४	अपज्जत्ता दुविहा	अपज्जत्तमेयेण दुविहा
६०९	१२	आधारभाचे मट्टियाए	आधारभूमिमट्टियाए
६१०	१२	आधारके होनेपर मट्टीके	आधारभूत भूमिकी मट्टीके
६११	३	यादरकाइयाण	यादरनेउकाइयाण
६४८	८	केयलीण	सयोगवेचलीण
६४८	२०	केत्रला जिनके	सयोगिनेवली जिनके
६५३	३	भावगद् पुब्बगर्द्द च	भूदपुब्बगद् च
६५३	१७	मानमनोगत पूर्वगति अर्थात् भूतपूर्व न्यायके	भूतपूर्वगति न्यायके
६५७	४	मिच्छाइट्ठीण	मिच्छाइट्ठीण च'
६५९	२	समणा भवदि	सभगो भवदीदि
६५९	७	प्राणोंका सञ्ज्ञान हो जाता है,	प्राणोंका होना समभव है,
६६०	४	घारिद जीव पदस.ण	घा डिदजीवपदेसाण
६६०	१६	व्याप्त जावके	स्थित जीवके

पृष्ठ पक्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

६६०	५	एव बधद्वरस्त	एव दद्वरस्त (डद्वरस्त)
"	१८	विशिष्ट बधको धारण करनेवाले शरीरके	इस छोटे शरीरके
८२३	२	चढमाणा	चढमाणाण
८२३	३	उवसमसम्मत्तेण	उवसमसम्मत्ते
"	१५	श्रेणि चटनेके पूर्वमें ही परिहार- शुद्धिसयमके नष्ट हो जाने पर उपशमसम्यक्करणके साथ परिहार- विशुद्धिसयमीक्षा	श्रेणिसे उतरनेके पश्चात् ही उपशमसम्यक्करणके नष्ट हो जाने पर परिहारविशुद्धिसयमीक्षा ।
८४६	२	पञ्जत्तापञ्जत्ता आलाया	पञ्जत्तापञ्जत्ता वे आलाया
"	११	पर्याप्त ओर अपर्याप्तकालसन्धी आलाप	पर्याप्त और अपर्याप्तकालसन्धी दो आलाप

भाग ३

१४	३	धनुर्धृतायामेवाय	धनुर्धृतावस्थायामेवाय
२०	३	पुणो	पुणो वि
२६	९	अत्रट्टाणादो	अव्वट्टाणादो
"	२५	वह पदार्थ प्रमाणसे अनस्थित है ।	प्रमाणसिद्ध पदार्थकी पुन प्रमाणसे परीक्षा करने पर किसी भी पदार्थकी व्यवस्था नहीं हो सकती है ।
२८	१०	ण अयद्धिरिज्जत्ति	मा अयद्धिरिज्जत्तु
३०	७	रूवसवपुधत्त	रूवदसपुधत्त, रूवदसमपुधत्त
"	२६	शतप्रयक्त्वरूप	दसपृयक्त्वरूप
३४	४	पति	रासी
"	१५	यह जगच्छ्रेणीका सातवा भाग आता है ।	यह राशि जगच्छ्रेणीके सातवें भागप्रमाण है ।
३६	५	पदस्त समचट्टाणादो ।	पदस्त धम्मजाणस्त सम्मचट्टाणादो ।
३९	१	णाणपमाणमिदि	णाण पमाणमिदि

पृष्ठ पक्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

५३५	९	तेज पद्म सुकलेस्साभो भवति । पञ्च वण्ण रस कागस्स	तेज पद्म सुकलेस्साभो भवति । बहुवण्णस्स जीयसररस्स षड्धमेक्कलेस्सा जुज्जे पाधण्णपदमानेज्ज ' कसणो कागो ' त्ति पञ्च वण्णस्स कागस्स
५३६	२५	तेज, पद्म और सुकलेस्याए होती हैं । जैसे पाँचों वर्ण और पाँचों रसनाले काफ़के अथवा पाँचों वर्णनाले रसोंसे युक्त नाफ़के वृष्ण व्यपदेश	तेज, पद्म और सुकलेस्याए होती हैं । शुक्ला—अनेक वर्णवाले जीवके शरीरके एक लेस्या कैसे बन सकती है ? समाधान—नहीं, क्योंकि, प्राधान्यपदकी अपेक्षा ' काक कृष्ण हे ' इसप्रकार पाँचों वर्णोंमें युक्त काफ़के जैसे वृष्ण व्यपदेश
५६८	६	एव देवगदी	एव देवगदी समत्तो (ता)
५८९	३	तिरिक्खगदीओ त्ति	तिरिक्खगदि त्ति
५९०	१०	एज विदियमग्गणा	एजमिदियमग्गणा
५९८	७	अपज्जत्ता दुविद्वा	अपज्जत्तभेयेण दुविद्वा
६०९	१२	आयारभावे मट्टियाए	आधारभूमिमट्टियाए
६१०	१२	आयारके होनेपर मट्टीके	आधारभूत भूमिकी मट्टीके
६११	३	वादरफाइयाण	वादरतेउफाइयाण
६४८	८	केवलीण	सयोगकेवलीण
६४८	२०	केउला जिनके	सयोगिकेवली जिनके
६५३	३	भावगद्द पुव्वगई ष	भूदपुव्वगद्द ष
६५३	१७	भाउमनोगत पूर्वगति अर्थात् भूतपूर्व यापके	भूतपूर्वगति यापके
६५७	४	मिच्छाइट्टीण	मिच्छाइट्टीण ष'
६५९	२	समणा भवदि	समघो भवदीदि
६५९	७	प्राणोक्का सज्जान हो जाता है,	प्राणोक्का होना समव है,
६६०	४	घारिइ जीव पदसाण	घर तिदजीवपदेसाण
६६०	१६	व्याप्त जाके	स्थित जीवके

पृष्ठ पक्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

१०८	२२ असर्यात खड	सर्यात खड	-
१०८	८ सखेजेसु	असखेजेसु	-
॥	२३ सर्यात खड	असल्यात खड	
२१७	६ ओघपडिवणणेदि	ओघगुणपडिवणणेदि	
२३२	३ भवणादियाण	भवणादियाण देवाण	
२७८	२ पटिसेहट्ट ।	पटिसेहट्ट । पदरस्स असयेज्जदिभागो ते मि चञ्जाइट्ठी हाति त्ति उच्च ।	
॥	१४ कहा है ।	कहा ८ । भवनासी मिथ्यादृष्टि देव जगप्रतरके असर्यातत्रै भागप्रमाण हैं, यह इस कथनका ता पर्य है ।	
२७५	६ ओघपरुवणाए	देवओघपरुवणाए	
२७५	१ वचमिच्छाइट्ठिरासिं	देवमिच्छाइट्ठिरासिं	
२८३	१० असखेज्जगुणा	सखेज्जगुणा	
॥	२७ हुए भी वे असल्यातगुणे	हुए भी वे सर्यातगुणे	
२८६	४ सखेदेवरासिमसखेज्जखडे	सखेदेवरासिं सखेज्जखडे	
॥	१५ असर्यात खड	सर्यात खड	
२९५	६ सेसमसखेज्जखडे	सेस सखे ज्जखडे	
॥	२२ असर्यात खड	सर्यात खड	
२९८	१० भवणवासियदेवि त्ति	भवणवासियदेवेत्ति	
॥	२९ देवियोंके	देवोंके	
३६१	११ उपरिमहेट्ठिमसखेज्जवियप्पा	उपरिमहेट्ठिमसखे वियप्पा	
॥	२५ असर्यात निरुल्प	सर्ग निरुल्प	
३८६	१० त्ति	वेत्ति	
३९८	५ रासी	रासी सो	
४०३	६ कायजोगरासीओ	-कायजोगरासी होदि	
४१४	९ इत्थिपेदभवहारकालस्स भागहारो	इत्थिपेदभवहारकालो	
४१९	६ उयसामगा केवटिया, पयेनेण	उयसामगा दग्घपमाणेण केवटिया, पयेसणेण	
॥	१९ जान कितने हैं ?	जान द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?	
४२६	६ भागभागहाररासिग्घि	-भागधुवरासिग्घि	
॥	२१ चौथे भागकी भागहार रासिमें	चौथे भागरूप धुवरासिमें	

पृष्ठ पक्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

३९	१२ अधिगम और ज्ञानप्रमाण ये दोनों	अधिगम, ज्ञान आर प्रमाण ये तीनों
३९	२ द्रव्यविधिसंज्ञा	द्रव्यविधिसंज्ञा
॥	१५ द्रव्योंके अस्तित्व विषयक	द्रव्यविधयक
३९	५ साद्विषयप्रमाणाभावे	मुद्रियप्रमाणाभावे
३९	६ अर्थधारणसिद्धसाधनभावाद्दे ।	अर्थधारणसमर्थसाधनभावाद्दे ।
॥	२१ करनेवाजे शिष्योंका	करनेमें समर्थ शिष्योंका
३९	६ अथवा एव	अथवा एव
॥	२३ अथवा, इस भागप्रमाणका कथन करना चाहिये ।	अथवा, भागप्रमाणका कथन इसप्रकार करना चाहिये ।
४०	१ एगखटगद्दिदे	एगखट गद्दिदे
४४	४ खड	दो खड
४८	२ अवहारो	अवहारो
५४	४ केण कारणेण ?	केण कारणेण ? जेण
५६	५ सरूवेद्दि	रूवेद्दि
५८	२ तिगुणिरूचेण	तिगुणिरूचेणूणेण
६४	१ मिच्छाद्विस्सिच	मिच्छाद्विस्सिच
६५	३ अत्थपरूचण	अत्थपरूचण
॥	२४ कालका प्ररूपण	अर्थका प्ररूपण
६७	९ जाय उरसासो	जायेगुरसासो
६८	६ अचहारकालो	अचहारकालो आगलियाय
९७	५ परूचिदसव्वसज्जद	परूचिदसव्वसज्जद
१२५	४ सग्गातीदादो ।	सग्गातीदादो ।
१७८	७ असखेज्जविभाग	असखेज्जविभाग व
१९१	६ तिण्णि	तिण्णि तिण्णि
॥	२० तीन सरयाको	तीन तीन सरयाको
१९१	९ अणत्तद्व्यपण्ण	अणत्तद्व्यपण्णरूचार्ण
२०८	४ असखेज्जेसु	सखेज्जेसु
॥	१८ असरयात् खड	सरयात् खड
२०८	४ सखेज्जेसु	असखेज्जेसु
॥	१९ सरयात् खड	असरयात् खड
२०८	७ असखेज्जेसु	सखेज्जेसु

पृष्ठ पक्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

२०८ २- असख्यात खड

सरयात खड

२०८ ८ सखेजेसु

असखेजेसु

” २३ सरयात खड

असरयात खड

२१५ ६ ओघपडिचण्णेहि

ओघगुणपडिचण्णेहि

२३२ ३ भवणादियाण

भत्रणादियाण देवान

२७१ २ पट्टिसेहट्ट ।

पट्टिसेहट्ट । पदरस्स असखेज्जदिभागो ते मि
च्छाइट्ठी होंति त्ति उच्च ।

” १४ कहा है ।

कहा है । भवनरासी मिथ्यादृष्टि देव जगप्रतरके
असरयातमें भागप्रमाण हैं, यह इस कथनका
ता पर्य है ।

२७५ ६ ओघपरुवणाए

देवओघपरुवणाए

२७५ १ द्व्वामिच्छाइट्ठिरासिं

देवमिच्छाइट्ठिरासिं

२८३ १० असखेज्जगुणा

सखेज्जगुणा

” २७ हुए भी वे असरयातगुणे

हुए भी वे सख्यातगुणे

२८६ ४ सचदेवरासिमसखेज्जखटे

सखदेवरासिं सखेज्जखटे

” १५ असरयात खड

सरयात खड

२९५ ६ सेसमसखेज्जखटे

सेस सखेज्जखटे

” २२ असरयात खड

सरयात खड

२९८ १० भवणवासियदेवेत्ति

भवणयानियदेवेत्ति

” २९ देरियोंके

देवोंके

३६१ ११ उपरिमहेट्ठिमसखेज्जवियप्पा

उपरिमहेट्ठिमसखे वियप्पा

” २१ असरयात निरुत्प

सर्व निरुत्प

३८१ १२ त्ति

वेत्ति

३९८ ५ रासी

रासी से

४०४ ६ कायजोगरासीओ

नायजोगरासी होदि

४१४ ९ इत्थियेदअनहारकालस्स भागहारो

इत्थियेदअनहारकालो

४१९ ६ उचसामगा पेघडिया, पघेसेण

उचसामगा द्रव्यपमाणेण केउटिया, पघेसेणेण

” १९ जान कितने हैं ।

जात्र द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?

४२६ ६ आगभागहाररासिंदि

आगधुधरासिंदि

” २१ चौथे भागकी भागहार राशिमें

चौथे भागरूप धुधराशिमें

पृष्ठ	पक्ति	पाठ है ।	पाठ चाहिये ।
४२७	४	देवगदिअज्ञाण	देवगदिकसाइअज्ञाण
४३०	६	मूलो उवसतफसायरासी	मूलोघुवसतफसायरासी
४३६ १०	११	दुधिद्वणाणविरद्विय	दुधिद्वणाणविरद्विय
४३६	२८	दोनों प्रकारके ज्ञानोंसे	दोनों प्रकारके अज्ञानोंसे
४४०	३	चेव	तद्धि चेव
४४२	१	लडिसपण्णरासाण	लडिसपण्णरिसीण
,	१२	राशिया बहुत नहीं हो सकती हैं ।	ऋषि बहुत नहीं हो सकते हैं ।
४४२	६	सेसमसखेज्जघ्णे	सेसमणतम्बे
"	२०	असख्यात खड	अनन्त खड
४४४	२	मदि सुदअण्णाणोसु	मदि सुदअण्णाणमिच्छाइद्वीसु
"	१४	गानी जाणोंमें	ज्ञानी मिध्यापि जाणोंमें
४४५	९	विसेसाहिया २८ ।	विसेसाहिया २८ । आभिणि सुदणाणिवसामगा सखे-जगुणा । खयगा सखेज्जगुणा ।
"	२५	अईस हैं । मन पर्यपज्ञाना अप्रम- त्तसयत जीव अवधिज्ञाना क्षपकोंसे	अईस हैं । आभिनिर्गोधिक और श्रुतज्ञानी उप- शामक जीव अवधिज्ञानी क्षपकोंसे सरयातगुणे हैं । गतिज्ञाना और श्रुतज्ञानी क्षपक जीव उक्त उपशामकोंसे सरयातगुणे हैं । मन पर्यपज्ञानी अप्रमत्तसयत जीव उक्त क्षपकोंसे
४४६	३	दुणाणिअसजद	आभिणिणाणि सुदणाणिअप्पमत्तसजदा सखे ज्जगुणा । तत्थेय पमत्तसजदा सखेज्जगुणा । दुणाणि असजद
"	१६	अवधिज्ञानी प्रमत्तसयतोंसे	अवधिज्ञानी प्रमत्तसयतोंसे आभिनिर्गोधिक और श्रुतज्ञानी अप्रमत्तसयत जीव सरयातगुणे हैं । इहीं दो ज्ञानोंमें प्रमत्तसयत जीव उक्त अप्रमत्त सयतोंसे सरयातगुणे हैं । इनसे
४५४	३	अनसुदसणद्विदीप	अनसुदसणमिच्छाइद्विदीप
"	१५	अक्षुदर्शनमी	अक्षुदर्शनी मिध्यापिणोमी
"	३	असखेज्जदिमाए चर्फिसदियपट्टि भागे	असते चर्फिसदियपडिघादे

पृष्ठ पक्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

- ४५४ १७ चनुदर्शनवाले मिथ्यादृष्टियोंका अन- चूकि चनुइन्द्रियके प्रतिघातके नहीं रहने पर
हारकाल सूच्यगुलके असल्यातवें
भागरूप आक्षेपका परिहार यह है
कि चूकि
- ४५१ ११ तउलोस्सियभवहारकालो देवतेउलेस्सियभवहारकालो
" २६ तेजोलेइयासे युक्त जीवराशिका तेजोलेइयासे युक्त देवोंका
४५३ २ सयलाइरियजयप्पसिद्धादो । सयलाइरियजियप्पसिद्धादो ।
" १४ यह सर्व आचार्य जगत्मे प्रसिद्ध हे । यह कथन सर्व आचार्योंके वचनोंसे सिद्ध है ।
४५८ ९ मिच्छाइद्विभाजिद्वत्तवग्ग मिच्छाइद्विरासिभजिद्वत्तवग्ग
४५६ १ सपग्ग सपेज्जगुणा । सजोगिकेवली आहा
रिणो सपेज्जगुणा ।
" १३ अप्रमत्तसयत जीव क्षपकोंसे सयोगिकेवली आहारक जीव क्षपकोंसे सरयान-
गुणे है । इनसे अप्रमत्तसयत जीव

ब-मूडविद्नीकी प्रतियोंके ऐसे पाठभेद जो शब्द और अर्थकी दृष्टिसे दोनों शुद्ध हैं, अतएव जो सम्भवत प्राचीन प्रतियोंमें चैरुत्पिपरूपसे निबद्ध पाये जाते हैं ।

भाग १

- | | | |
|-----|------------------------------|----------------------------|
| १३ | २ साह पसाहा | साहपसाहा |
| ३२ | १ त्रिमिति | त्रिमर्थ |
| ७१ | ६ तदो | पुणो |
| ९४ | ५ ओरालिय सररीर णिज्जर | ओरालिय णिज्जर |
| १०८ | ३ स्वेष्टरुद्धैतिकायन | स्विष्टिकुद्धैतिकायन |
| १०८ | ११ स्वेष्टकृत् | स्विष्टिकृत् |
| ११० | ४ जिणहरादीण | जिणहराण |
| ११० | १६ जिनालय आदिका | जिनालयोंका |
| ११२ | १ चउण्हमहियाराणमत्थि | चउण्हमहियाराणमत्थ |
| ११५ | १४ चार अधिकारोंका नामनिर्देश | चार अधिकारोंका अर्थनिर्देश |
| ११५ | ६ छ अहिय | छद्धि अहिय- |
| " | ७ धान्सस्कारकारण | सस्कारकारण |

पृष्ठ	पक्ति	मुद्रित पाठ	मूडविद्राफा पाठ
११८	१	साद्यनादीनौपशामिकादीन्	साद्यनादीन् भावान्
११८	१५	भादि ओर अनादिरूप ओपशामिक आदिभावोक्ता	सादि और अनादि भावोक्ता
१२५	९	जेयव्या	णायचा
"	२३	निषेध कर देना	निषेध जानना
१४७	१	ब्रह्मावप्रमगान्	ब्रह्मावसजनात्
"	५	इति चेत्	इति चेत्
"	२२	ऐसा शका करना ठाक नहीं है, क्योंकि,	क्योंकि,
१५६	६	वण्णओ	वण्णओ
१५८	५	तेहिंनो	तेहि
१८६	५	तदेक्त्वोपपत्ते	तदेक्त्वोक्ते
"	२०	एकता बन जाती है ।	एकता कही है ।
२०९	१	प्रतिपादकार्पात्	प्रतिपादनार्पात्
२२८	४	मिश्रणमवगम्यते	मिश्रतेह्यवगम्यते
"	१३	जीवाके साथ मिश्रण	जावोके साथ यहा मिश्रण
२५४	९	शक्तेर्निमित्तानामाप्ति	×
"	२६	परिणमन करनेरूप शक्तिमे रने हुए आगत पुद्गलस्वरुधोक्ता प्राप्तिको	परिणमन करनेकी शक्तिकी पूर्णताको
२५५	०	औदारिकादिशरीरव्यपारिणाम शक्त्युपेताना ऋधानामवाप्तिः	आदारिकादिपरिणमनशक्तेर्निष्पत्ति
"	१३	परिणमन करनेवाले औदारिक जादि तान शारोका शक्तिमे युक्त पुद्गलस्वरुधोका प्राप्तिको	औदारिक आदि शरीररूप परिणमन करनेरूप शक्तिकी पूर्णताको
"	४	ब्रह्मणशक्त्युत्पत्तेर्निमित्तपुद्गल प्रचयावाप्ति	ब्रह्मणशक्तेर्निष्पत्ति
"	१६	ब्रह्मण करनेरूप शक्तिकी उत्पत्तिके निमित्तभूत पुद्गलप्रचयकी प्राप्तिको	ब्रह्मण करनेरूप शक्तिकी पूर्णताको
"	६	निमित्तपुद्गलप्रचयावाप्ति	×

पृष्ठ	पक्ति	मुद्रित पाठ	मूडविद्दीका पाठ
२५५	२०	शक्तिकी पूर्णताके निमित्तभूत पुद्गल- प्रचयकी प्राप्तिको	शक्तिकी पूर्णताको
„	८	निमित्तनोर्कर्मपुद्गलप्रचयायासि	×
„	२३	शक्तिके निमित्तभूत नोर्कर्म पुद्गल- प्रचयकी प्राप्तिको	शक्तिकी पूर्णताको
„	९	मनोवर्गणास्क्न्धनिष्पन्नपुद्गल प्रचय अनुभूतार्थस्मरणशक्ति निमित्त मन.पर्याप्ति द्रव्य- मनोवष्टम्भेनानुभूतार्थस्मरण- शक्तेरुत्पत्तिर्मन पर्याप्तिर्वा	मनोवर्गणाभिनिष्पन्नद्रव्यमनोवष्टभेनानुभूत- स्मरणशक्तेरुत्पत्ति. मन पर्याप्ति
„	२५	अनुभूत अर्थके स्मरणरूप शक्तिके निमित्तभूत मनोवर्गणाके स्क्न्धोंसे निष्पन्न पुद्गलप्रचयको मन पर्याप्ति कहते हैं । अथवा, द्रव्यमनको	मनोवर्गणाओंसे निष्पन्न द्रव्यमनके
२५६	३	निष्पत्ते कारण	निष्पत्ति
„	१५	पूर्णताके कारणको	पूर्णताको
२५७	४	इति चेन्न, पर्याप्तिना	इति चेच्छक्तीना
„	२२	पर्याप्तियोंकी अपूर्णताको	शक्तियोंकी अपूर्णताको
२८३	३	परिस्पन्दरूपस्य	×
„	१४	मनके निमित्तसे जो परिस्पन्दरूप प्रयत्नविशेष	मनके निमित्तसे जो प्रयत्नविशेष
३०३	७	ज्ञानानुधादेन	ज्ञानानुधादे
३८३	९	आसजननात्	आसजनात्
४००	२	आसजननात्	आसजननात्

भाग ३

३	७	लोगसमाग	लोगसमाग
१६	७	त पद्रागारेण आगास	त पद्रागारेण
२५	८	सव्यजीवरासिचग्गासलागाओ	×
३१	३	तेरसगुणद्वानमेत्तेण	तेरसगुणद्वान-
३६	४	अं मद्दत्त	अ मद्दत्त

पृष्ठ	पक्ति	मुद्रित पाठ	मूडविदीका पाठ
४६	६	अवहारविसेसेण य	अवहारविसेसेण
५१	४	पय थड	पयरड
५५	७	भागच्छदि स्ति ।	भागच्छदि ।
६०	७	"	"
६८	४	गुणिदे	गुणिदे द्वि
१०९	३	हेट्टिमविरलणाप	हेट्टिमविरलणाण
११८	१	गुणगारो रासी	गुणगाररासी
११९	३	असखेज्जगुणाप सेदीप	असखेज्जगुणसेदीप
१२६	६	भणिज्जमाण	यणिज्जमाण
१३०	७	छंडिय	छंडिय
१३२	५	अप्पिदत्तादो	पदिदत्तादो
१४२	१	पगसेदी	पगा सेदी
१६२	१	विसेसामावादो	विसेसाभावा
१८४	६	पेच्छामो	पच्छामो
१८५	८	"	"
१९१	५	उवरिमविरलणरुव	उवरिमविरलण
१९२	७	सो	एसो
१९३	८	इच्छाप	मिच्छाप
१९८	४	परुवय	परुवण
२०१	४	वेवेसु ॥ ६७ ॥	वेवेसु (६७) इदि
२१५	७	ट्टियणप	ट्टियणप पुण
२१६	१	अवलविज्जमाणे ओघपरुवणादो	अवलविओघपरुवणादो
२१८	१	सुत्तस्स वि	सुत्तस्स
२२४	७	होदि ।	आगच्छदि ।
४२६	२	अटुक्कसाए	अटुक्कसाए
४४१	४	ओघत्त	ओघत्ते
४४७	६	खया	खयगा
४४८	८	विय	वेय
४७६	७	पदे दो वि	पदेणाधि

सं—मूडविदीप ताडपत्रीय प्रतियाकं वे पाठ भेद जो उच्चारण भेदसे सबन्ध रखते हैं, अतएव उनमेंसे किसीके भी रखनेमें कोई आपत्ति नहीं है ।

भाग १

६ ३ विधिद्विदि
" ५ गमोह

विधिद्विदि
गयोह

पृष्ठ पक्ति मुद्रित पाठ

मूढविद्वितीका पाठ

७	१ पुष्कयत	पुष्कयत
"	३ भूययलिं	भूययलिं
"	५ हेऊ	हेऊ
"	६ आहरियो	आहरियो
५	२ "	"
९	१ पययथ	पययथ
११	२ भणियो	भणियो
१२	१ पज्जय	पज्जय
१५	२ सुकुक्कि	सुयकुक्कि (किष्)
१६	८ मोली	मउलि
१८	७ अणण णिमिच्चतर	अणण णिमिच्चतर-
२०	१ णिवददि	णिवददि
२६	२ घायेणियरेण	घायेणियरेण
४०	२ आदायसाण	आदि अवसाण
५१	३ मायव	मायव
६२	७ उयमाप्पिणीय	उयमाप्पिणीये
६३	२ दसण णाण चरित्ते	दसण णाण चरित्ते (णाणच्चरित्ते)
६६	१ जयूसामी य	जयूसामी च
७०	३ णिवुइकरे ति	णिवुइकरेत्ति
७१	७ जिणपालिदस्स	जिणपालिदस्स
"	१० पय	पय
७७	२ द्रामिल	द्राविल
८१	१० जाणुग	जाणग
९९	३ पण्हवायरणं	पण्हवाहरण
१०३	३ किष्कयिल	किष्कयिल
१०८	८ दिट्ठिवादादो	दिट्ठिवायादो
११२	५ सध्वेहिं	सध्वेहि
"	१३ उप्पाय	उप्पाय
११४	१ पऊण	पऊण
"	८ अणियोग	-यणियोग-
११९	६ सुह	सुह
१२१	८ वि सय	वि सय
१२२	३ वि सय	दु सय

श्रुत	पक्ति	मुद्रित पाठ	मूढत्रिद्रीका पाठ
"	५	लोक	लोक
१२३	३	अत्याधियारो	अत्याधियारो
१२४	४	चयण	चयण
१२६	४	पुच्छा	पच्छा
१२७	५	भर्षति	हयति
१३०	११	सपदि	सपदि
१५७	२	संतमत्य	सनरथ
"	७	परिसेसादो	पारिसेसादो
१५८	५	तेर्हितो	तेदि
१७०	५	पुद्द भाव	पिद्द भाव
१८६	९	हुययद्द	हुद्वयद्द
२०२	७	सुवियद्द	सुवियद्द
२१७	९	उयपसा	उयपसे
२२२	९	मेत्ति	मेत्ति (मेत्ती)
२४३	१	पिपीलिक	पिपीलिय
२५२	१	घणप्फदि	घणप्फद्द
२६४	६	आदधाना	दधाना
३१३	७	पचेंदिया त्ति	पचेंदिय त्ति
३४३	७	णयुसयवेदा	णयुसगवेदा
३४७	११	सम्मूच्छिम	सम्मूच्छित
३५०	८	द्वारिद्द	द्वलिद्द
३५८	८	उयपसा	उयदेसा
३६४	१०	ओधिणाणं	ओधिणाणं
३७३	६	ज्झरिय	ज्झडिय
३९४	२	णिगोद्द	णियोद्द
४०७	४	मयराजिद्द	मयराद्द

भाग २

४१७	७	घत्तारि (३ घार)	घारि (३ घार)
४१९	९	छल्लेसामो	छल्लेसामो
४२१	५	घा	घ
"	" "		"
"	६	सपदि	सपदि
४३४	४	एगो	एगो

मूडनिर्दीप्ती ताडपत्रीय प्रतियोगे मिलान

शृष्ठ	पक्ति मुद्रित पाठ	मूडनिर्दीप्तीका पाठ
४४८	२ मूलोघालावा समत्ता	मूलोघालापो समत्ती
"	८ सुदु कणहेत्ति	सुदु कसणेत्ति
४५२	५ असजम	असजमो
४५३	३ असजम	असजमो
४५६	४ काऊ काऊ काऊ	काउ काउ तद्व काओ
४७१	३ पचविधा भयति	पचविधा हयति
४९३	२ आहारिणी अणाहारिणी	आहारिणीओ अणाहारिणीओ
४९७	७ तार्लि चव	तार्लि
५०३	२ पेक्खिऊण	पेक्खियूण
५२८	७ मणुत्तिणीसु	मणुत्तिणी
५५९	७ परिणमिय	परिणामिय
५६३	८ कापिट्ठ	काधिट्ठ
५६६	७ मणुस्साण च	मणुसाण च
५६९	२ अदीदपज्जत्तीओ	अदीदपज्जत्तीओ
५९०	९ अर्णिदियाण	अर्णिदिया
५९१	७ छावा	छावा
"	" "	"
५९३	६ अट्टारस	अट्टारद
५९७	१ घेत्तूण	×
५९८	१० पक्खावण	पक्खावण
६००	१ पदे	पद
६०४	२ मूलोघम्मसुत्त	मूलोघम्मि उत्त
६२९	१ पेक्खिय	पेक्खिऊण
६८८	१ सासणसम्माराद्धिपहुडि	सासणसम्माराद्धि पहुडि
६९९	८ ओघालावा मूलोघभगा	ओघालाओ मूलोघभगो
८५३	२ उवसहरिद	उवसघरिद

भाग ३

१	२ णमियूण	णमियूण
"	" द्दव्यणिओग	द्दव्यणियोग
१	५ दुविहो	दुविओ
३	१० हेऊ	हेऊ

पृष्ठ पक्ति मुद्रित पाठ

मूढनिर्दीक्षा पाठ

५, ६	२, ३, ५, ७, ८	दुंद
६	१२	तद्व्याभावाद्वा
१३	४	द्व्याणत चेदि
"	११	जाणुगसरीर
१४	२	दुक्त्रेज्जेत्ति
१४	२	गहेयद्य
१७	२	तद्वादसणाद्वा
१९	७	अद्वया
२९	५	घवहारजोगो
३०	५	अणादिस्स
३२	७	जधा
३२	७	मिणिज्जदि
३२	८	लोपण
३७	५	घेयणासुत्तेण
३८	७	होति
४०	४	पगरुय
४०	९	भाजिद्
४३	४	विरलणय
६३	६	मवहिरिज्जदि
६३	५	अट्ठीस
६७	१०	सेसुस्सासे वि
७१	२	पलिदोग्गे
९०	२	तेणउदी
९८	१०	भायमापणण
"	९	खउसट्ठी
१००	१	णघणउदी
१००	२	अट्ठाणउदी
१००	१२	उणतीसा
११४	२	भवदि त्ति
१२३	३	सद्य भावा
१४२	९	सूचीदो
१५७	९	स्सरण
१७३	१	आणेयद्वयाओ

५६	तद्व्याभावाद्वा
	द्व्याणतमिदि
	जाणुगस्स सरीर
	दुक्त्रेज्जेत्ति त्ति
	गहेयद्य
	तद्वादसणाद्वा
	अथवा
	घवहारजोगो
	अणादिस्स
	जधा
	मिणिज्जदे
	लोपण
	घेयणसुत्तेण, घेयणसुत्तेण
	द्वयति, भवति
	पग रुय
	भाजिद्
	विरलण
	मवहिरिदि
	अट्ठीस
	सेसुस्सासासो वि
	पलिदोग्गे
	तेणउदा
	भायमापणण
	खउसट्ठा
	णघणउदा
	अट्ठाणउदा
	उणतीसा
	भवदिदि
	सद्य भावो
	सूचीदो
	सरण
	आणेद्वयाओ

पृष्ठ प्रक्ति सुदित पाठ

मूडविद्रीका पाठ

१९०	२ एगुणबीसेदि	एनकूणबीसेदि
२०१	३ दुग	दुय
२१०	१० षेद्व्यो	णयव्यो
२१३	४ अट्टम	-अट्ट-
२१९	७, ९ विसय	विसय
२२३	१ भागेण	भाएण
"	५ भागे	भाए
२२४	१ सपदि	सपदि
२२८	२ कप्पमाणपरूवणा	कप्पयमाणपरूवणादो ।
२३९	१४ भाणेद्व्या	भाणिद्व्या
२४२	७ सेसगरपडिसेधो	सेसगरपडिसेधो
२४५	५ मिच्छाइट्टीण	मिच्छाइट्टीण
२४२	१२ वियद्विचारे	वभिचारे
२४२	१० पदरस्सेदि	पदरस्सेत्ति
२४३	३ विरोहादो	विरोहा
२४७	३ अणूणाहियाओ	अणूणाहियाओ
२५५	२ चउग्गइ	चउग्गइ
३३०	२ मकाइत्त	मकाइयत्त-
३३७	६ गुणेज्ज	गुणिज्ज
३३७	६ पवेसमाण	पविसमाण-
३३७	३ भादओ	भुदओ
३६०	१ पज्जत्तरासिणा	पज्जत्तरासिपदि
३७५	३ पनन्नेविय	पक्खिणिय
३७९	१ पविसिद्वन्नाणि	पवेसिद्वन्नाणि
३९०	३ जोगरासि	-जोगरासीओ
३९७	१ तमद्धाप गुणगारेण	तमद्धागुणगारेण
३९७	१३ कायजोगिम्हि	कायजोगिम्हि
४०७	५ मणेयतमिदि	मणेयतियमिदि
४१०	२ पवेसणविधी	पवेसणविधी
४२५	११ परिवाहीप	परिवाहीप

८—मूढबिंद्रीकी ताडपत्रीय प्रतिधोंके ये पाठ जो पाठ या अर्थकी दृष्टिसे अशुद्ध प्रतीत हुए ।

नोट—जिन पाठोंके सबधमें कुछ विशेष कहना है वह नीचे पाद टिप्पणमें देविये । जो पाद पाठ या अर्थकी दृष्टिसे स्पष्ट अशुद्ध प्रतीत हुए उनके ऊपर कोई टिप्पण देनेकी आवश्यकता प्रतीत नहीं हुई ।

भाग १

पृष्ठ	पाकि मुद्रित पाठ	मूढबिंद्रीका पाठ
८	३ अरिहताण	अरहंताण
१३	१ उजुमुद्	उजुमुद्
१६	४ नियत	चियत (!)
"	८ तस्यायुक्तं	तस्याप्युक्त
२१	१ अणुयजुत्तो	अणुयजुत्तो
३१	५ विपर्यस्ययोः	विपर्यस्ययो
४४	४ अरिहता	अरिहत
"	५ "	"
५३	५ तत्करणादप्युप	तत्करणादप्युप
५८	११ अणुच्छिद्यण	अणुच्छिद्यण
६०	३ व्याकुलता	व्याकुल
६४	६ दिव्यज्जुणी	दिव्यज्ज्ञाणे
६८	५ पादमूलमवगया	पादमूलमवगया
८२	१० जीघट्टाणे	जीघट्टाण
८३	८ जीघट्टार्ण	जीघट्टाणे

८ ३ पृष्ठ ४२ पर जो नामोकार सूत्रका अर्थ प्राप्त किया गया है वही ' अरिहताण ' पाठ ही ग्रहण किया गया है और मूढबिंद्री प्रतिधोंसे भी वही कोई पाठांतर प्राप्त नहीं हुआ । उसके अर्थ करनमें मा धवलाकारदे ' अरिमोह ' इत्यादि पदांश ग्रहण किया है । इससे अनुमान होता है कि धवलाकारक समुच्च ' अरिहताण ' पाठ ही रहा है । ' अरिहताण ' पद ग्रहण करनसे प्राकृत नियमांनुसार उसका ' अरि+ता ' व ' अर्हत् ' दोनों अर्थ हो सकते हैं (यद्यपि हम प्राकृत व्याकरण ८, २, १११) कि तु अरहत से केवल अर्हत् अर्थ हा निकल सकता है ' अरिहता ' नहीं ।

२१, ५ ' विपर्यस्ययो ' पाठ तो व्याकरणसे छद्द है ही नहीं, किंतु यदि उसक स्थान पर ' विपर्यस्ययोः ' पाठ हो तो प्रायः हा सप्रता है, क्योंकि उसका वही अर्थ निकल आता है जो प्रकृतोपयोगी है ।

४४, ४ ५ इसका विचार हम पड़ने ही कर सके हैं । देखो षट्छाण्डगम, भाग १, धूमिका पृ १२/४-५

पृष्ठ	पक्ति	मुद्रित पाठ	मूडनिर्दीका पाठ
९०	३	वियोगापायस्य	वियोपायस्य
९७	१	पुरिस च	पुरिस च
१०१	१	कदाथो	×
"	२	सुद्धिं करेती	सुद्धिम करेती
१११	२	उत्त च	उत्ता च
११२	३	हचइ	×
१२२	१२	णाम कम्माण	णाम कम्माण
१५८	४	जमतित्थत्त	जमतित्थत्त
१८६	८	जेस्सि	जस
२१९	६	तो वि	ते वि
२२०	३	अब्बद्धिय	अव्वद्धिय
२२२	४	णिवट्ठति	पिण्डुदित्ति (?)
२६२	९	असक्षिप्रभृतय	सक्षिप्रभृतय
२९८	६	नेप	नेप दोप
३१५	०	वाधा	वाधात्
३२६	१०	महच्चदाइ	महच्चदेसु य
३०८	८	तत्रैतासा	तत्रैतेपा
३३३	१	अस्मादेवापात्	यस्मादेवापात्
३३९	१	सइयुवसमिय	खदियुवसमिय
३६३	७	इदि ॥ ११९ ॥ अत्रैक	इत्यत्र परु
३६६	५	स्थितम्	स्थित
३७५	७	पचयम	पचयमा
"	८	"	"
३८०	११	चभुपा	चभुपो
३९२	८	तद्	ते

भाग २

४०२	५	क्षयोपशमापेक्षया	क्षयोपशमापेक्ष्य
४१३	३	मैथुनसहाया	मैथुनसहाया
"	"	विशेषलक्षण	विशेषलक्षण
"	५	आलीढवाह्यार्था	आलीढवाह्यार्थ
४१४	१०	वेदमार्गणाप्रभेद	वेदमार्गणाप्रभेदा
४१७	११	आणप्पाणपाणा	आणपाणप्पाण

श्रुष्ट	पाठ	मुद्रित पाठ
४२०	७	सिद्धगदी
४३३	३	-सण्णा
४४३	६	मणिच्चमिदि
४५३	३	तिण्णि अण्णाण
४९३	३	पज्जत्तजोणिणीण
५१३	७	तेणित्थियेदे पि
६०९	११	रत्ताअय
६५३	५	सत्तभुवगमादो घा
८२३	३	ओदिण्णाण

सिद्धगदी पि
सण्णाओ
मणिच्चमि तेण
तिण्णि णाणाणि
पज्जत्तजोणिणी
तेणित्थियेदो पि
घत्ताअय
सत्तभुवादो घा
उदिण्णाण

भाग ३

२	७	सपरप्पगासओ
५	११	-मनेक्घा
६	७	द्व्वपमाणाण
७	२	पूर्वमव्ययीभावस्य
१२	१	भेदकम्मोसु
१८	८	अण्णभेदस्स
२२	१	अणतगुणाओ
२५	१०	णट्टनस्स
२६	६	तत्तियमेत्तो
२७	९	पय महती
२८	२	मोगादे
२८	८	अवहिरिज्जमाणे सव्वे
३२	३	अणताणता
३८	२	अह्दियत्थयिसय
५२	५	सव्वजीवरासिणा तस्स घणो
५८	३	अट्टपरुवणा

सपरप्पगासदि
मनेक्घा
द्व्वपमाणाण परुवणाण
पूर्वमव्ययीभावस्य ^१
भेदकम्मोसु
उत्पण्णभेदस्स
अणतगुणाओ
णिट्टतस्स
तत्तियाणिमेत्तो
पम्महती
मोगादे
अवहिरिज्जमाणे सव्वे समैया अवहिरिज्जमाणे
सव्वे
अणता ^१
अह्दियत्थयिसयो
सव्वजीवरासिणा पुणो
अट्टरुवणा

१ सस्त्रत व्याकरणक नियमानुसार 'अव्ययीभाव' ही होता है, किन्तु छदकी रक्षाके हेतु वहाँ 'हस्व' कर दिया जान पता है।

२ आगे इन्द्रिय आदि मागगाओंमें, जिनका प्रमाण क्षेत्रकी अपेक्षा अनन्तानन्त है, उनका प्रमाण 'अणताणता' इसी रूपमें बतलाया गया है। देखो सूत्र ७६, ९७ व १८९

शुद्ध	पाकि	मुद्रित पाठ	मूडविद्रीका पाठ
६७	४	-मुहुत्तभुपगमादो ।	-मुहुत्तभुगदो
७०	३	-समुद	-सजत्त
९९	९	छासट्टि-	छावत्तरि
"	"	परिमाणं	पमाण'
१००	५	अट्टसमयादिय	अट्टसमयाचिय
१०५	७	अथ वेरूयादिय	अथवा रूवादिय-
१२३	४	फट्टुक्कम्मादिसु	फट्टुमादिसु
१३१	१	ओगादे	ओगाडे
१३३	७	जडादि	जदादि
१९१	९	अवणिदसेसपमाण	अवणिदे सेसपमाण
१९१	९	हेट्टिमविरलणाप	विरलणाप
१९२	२	पुञ्चट्टिविदयेति-	पुञ्चट्टिविदजेत्ति-
१९७	६	सोधिदे	सोधिदे
१९९	३	अण्णोण्णमासेण	अण्णोण्णभासो
२०९	४	पदरम	पदम-
२२७	४	अदीय	अदीद
२३२	३	अवणादियाण	अणादियाण
२३२	८	छ-जोयण	तिण्णिजोयण
२३६	१०	तत्तस्स वग्ग	तत्तस्स वग्ग
२४३	१	पज्जत्तअवहारकालो	पज्जत्तामिस्सअवहारकालो
२४	७	असखे-जदि-	असखेज्जादि-
२६०	६	कोडाकोडाकोडाकोडीप	कोडाकोडाकोडीप
२६२	११	तदियवग्गमूलगुण्णिदेण	तदियवग्गमूलगुण्णिदेण । तिस्से सेदीए अयामे असखेज्जाओ जोयणकोडीओ'
२६३	१	णेय	खेय
२६८	३	असखेज्जासखेज्जादि	असखेज्जासखे-जाओ
२७५	५	अहुत्ताधिरोहो	अहुत्ताधिरोहो
२७९	६	अण्णघारुण्ण-	अण्णघारुण्ण
३०७	२	अघव्व-णागादि	अघव्वणिगादि
३०७	४	ओच्छेज्जति	ओच्छेज्जतो

१ 'पमाण' पद रखनेसे अर्थमें कोई भेद न पडते हुए भी बदोर्मग दोष हो जाता है ।

२ ' तिस्से सेदीए ' आदि पाठ ऊपरसे पुनरावृत्त हागया है ।

पृष्ठ	पक्ति	मुद्रित पाठ	मूढनिर्दीका पाठ
३४१	२	घणाघणे	धेरुधे
३४२	१०	द्विये	द्वे
३५३	५	आगच्छदि ।	आगच्छदि त्ति गुणेऊण भागग्गहणं वद ।
३५९	७	सेसरासिणा	सेसरासि
३७०	३	सरीरपज्जत्तेण	सरीरपज्जत्त
३८१	१२	त्रिमद्विओ ऊणो	त्रिमादीओ ऊणा
३८२	३	यादरवाउपज्जत्त	यादरवाउपज्जत्त
३८४	१	द्वमसखेज्जगुण	द्वमणतगुण
३८६	९	जदो	जादो
४०४	४	पुणरवि ओदरमाणा	पुण दृवियोदरमाणा
४१२	१	मोसवच्चिजोगि सच्चवच्चिजोगि	मोसवच्चिजोगि सभवदि
४१४	२	सखेज्जगुणाओ	असखेज्जगुणाओ
४२५	८	भागमेत्तो	भागमेत्ते
”	९	ण च	णव
”	९	णिग्गम पवेसाण	णिग्गमपवेसण
४३०	४	अकसाइणा ण	अकसाइणा
४४८	११	चेवज्जवसाया	चेदज्जवसाया
४५४	६	चअबुदसणट्टिदी	चअबुदसणट्टिदीओ
४७४	६	पसो	पगो
४८१	३	णामहत्त	ण भहत्त
४८४	१०	आणाहारिअसज्जद	आहारिअसज्जद-
४८६	१०	(खयगा समेज्जगुणा)	वधगा सखेज्जगुणा



